Saurashtra University
Re – Accredited Grade 'B' by NAAC
(CGPA 2.93)

Solanki, Hansa M., 2009, *शिवानी के उपन्यासों में नारी चेतना*, thesis PhD, Saurashtra University

http://etheses.saurashtrauniversity.edu/id/eprint/175

Copyright and moral rights for this thesis are retained by the author

A copy can be downloaded for personal non-commercial research or study, without prior permission or charge.

This thesis cannot be reproduced or quoted extensively from without first obtaining permission in writing from the Author.

The content must not be changed in any way or sold commercially in any format or medium without the formal permission of the Author

When referring to this work, full bibliographic details including the author, title, awarding institution and date of the thesis must be given.

Saurashtra University Theses Service
http://etheses.saurashtrauniversity.edu
repository@sauuni.ernet.in

© The Author

शिवानी के उपन्यासों में नारी चेतना

✫✫✫

सौराष्ट्र विश्वविद्यालय की पीएच.डी. (हिन्दी)
उपाधि के लिए प्रस्तुत

शोध–प्रबंध

✫✫✫

✫ *प्रस्तुतकर्त्री* ✫

प्रा. हंसा एम. सोलंकी

कुमारी आन्या बिनोयभाई गार्डी ग्रामविद्या महाविद्यालय
मांगरोल, शारदाग्राम

✫✫✫

✫ *निर्देशक* ✫

डॉ. एस. पी. शर्मा

पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष,
हिन्दी भवन,
सौराष्ट्र विश्वविद्यालय,
राजकोट

✫✫✫

वर्ष २००६

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **प्रा. हंसाबहन एम. सोलंकी** ने सौराष्ट्र युनिवर्सिटी, राजकोट की पीएच.डी. (हिन्दी) उपाधि के लिए मेरे निरीक्षण और निर्देशन में **''शिवानी के उपन्यासों में नारी चेतना''** शीर्षक शोध–प्रबंध तैयार किया है । इस शोध–प्रबंध में इन्होंने उक्त विषय का यथाशक्ति अध्ययन–अनुशीलन एवं शोधपरक विश्लेषण – विवेचन करके वैज्ञानिक ढंग से मौलिक निरूपण किया है । साथ ही, यह शोध–प्रबंध अथवा इसका कोई अंश अब तक न तो प्रकाशित हुआ है और न ही इसका कहीं कोई उपयोग हुआ है ।

राजकोट
दिनांक :

निर्देशक

डॉ. एस. पी. शर्मा
पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष,
हिन्दी भवन,
सौराष्ट्र विश्वविद्यालय,
राजकोट

भूमिका

शिवानी के उपन्यासों में नारी चेतना

(१) पूर्वसूत्र :

मेरे घर में सदैव शैक्षणिक – साहित्यिक माहौल रहा । कहानियाँ – उपन्यास पढ़ने में मेरी विशेष रुचि रही । हिन्दी भाषा–साहित्य की छात्रा होने से मेरा रुझान उपन्यास पढ़ने की ओर रहा ।

वर्ष २००३–०४ में शास्त्री मैदान, राजकोट में आयोजित पुस्तक प्रदर्शनी में मुझे शिवानीजी का 'कालिंदी' उपन्यास, निरव प्रकाशन, दिल्ली के स्टोल से मिला, पुरानी किताब थी, दो–तीन पन्ने वहाँ ही खड़े–खड़े पढ़े । खास करके स्त्री विषयक – नायिका प्रधान उपन्यास, काव्य मुझे विशेष रूप से अपनी ओर आकर्षित करते थे ।

'कालिंदी' उपन्यास भी 'कालिंदी' शीर्षक देखकर खरीद लिया । पढ़ने के बाद लगा कि इसमें तो ऐसी घटनाएँ हैं जो समाज में कहीं न कहीं घटित हुई हैं और आज भी घटित हो रही हैं – पहाड़ी ग्राम्य परिवेश, रीति–रिवाज, श्रद्धा, अंधश्रद्धा, जाति–भेद, बोली, परिवार, दहेज प्रथा, विवाह और प्रकृति वर्णन – ऐसा जीवंत चित्रण था कि दृश्य बिलकुल निगाहों के सामने आ गया । कतिपय ऐसे वर्णन थे जिन्हें प्रत्येक स्त्री ने उसके स्त्री होने के नाते भुगते हों ।

समाज में स्त्री का स्थान, भूमिका सदैव महत्त्वपूर्ण रही । समाज में पारिवारिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, शैक्षणिक और राजनीतिक आदि सभी

क्षेत्रों में नारी ने योगदान दिया है । कोई भी उसे नकारने का साहस नहीं कर सकता ।

समाज में भारतीय नारी से विभिन्न प्रकार की भूमिकाओं की, उत्तरदायित्वों की अपेक्षा की जाती है, जिसमें नारी सफल रही है ।

कालक्रमानुसार नारी के स्थान – स्थिति में परिवर्तन होते रहे हैं, कारण चाहे कोई भी हो, मगर आज हमारे सामने स्त्री सशक्तीकरण का ख्याल आया है, स्त्री भ्रूण हत्या की समस्या समाज में व्याप्त है । इस संदर्भ में नारी के अमूल्य योगदानों को याद करके नारी की महत्ता को फिर से समाज के सामने रखना आवश्यक है ।

आजादी के बाद भारतीय संविधान ने स्त्री–पुरुष को समान अधिकार देकर भारतीय नारी की अस्मिता को, हैसियत को नया मोड़ दिया । फिर भी लोगों की मानसिकता में नारी के दोयम दर्जे का ख्याल अब भी मौजूद है । परिणामस्वरूप समस्याएँ फिर से नए रूप में खड़ी हुई हैं ।

१९६० के दशक को हम वैश्विक रूप से नारीवादी आंदोलन का समय मानते हैं – परिणाम स्वरूप नारी से संबंधित विभिन्न समस्याओं और नारी दृष्टिकोण को लेकर विभिन्न किताबें लिखी गईं । उसमें महिला लेखिकाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है । महिला लेखिकाओं ने नारी के विभिन्न रूपों, स्थान, योगदान, आशा–आकांक्षाओं एवं महत्त्वाकांक्षाओं को अपने कृतित्व के माध्यम से अभिव्यक्त किया है । कई किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं । कई अनुसंधित्सुओं ने नारी जीवन, समस्या – विमर्श – विषयक शोध प्रबंध तैयार किए हैं, संख्या बढ़ती ही जा रही है ।

१९६० में नारीवादी लेखन की प्रक्रिया पूरे जोर–शोर से हुई । शिवानीजी १९६० के दशक की नारीवादी महिला लेखिका हैं । डॉ. सुमन राजे के शब्दों में कहें तो ''अपनी समकालीनों से शिवानीजी का रचनात्मक व्यक्तित्व

विशिष्ट है । उनकी रचनायात्रा लम्बी है । लोकप्रियता के जो मानक उन्होंने बनाये हैं वे विरल हैं । भाषा की काव्यात्मकता की सक्षम अभिव्यंजना की लालित्यपूर्ण कालिदासीय शैली एवं कथानकों के आभिजात्य की आंचलिक गरिमा की व्याख्याता हैं शिवानी ।'' (हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास, डॉ. सुमन राजे, पृष्ठ –२८७–२८८)

शिवानीजी के प्रायः सभी उपन्यास स्त्री–जीवन विषयक हैं, स्त्री जीवन की समस्याओं की गाथा है । प्रत्येक स्त्री–पात्र सुंदर देदीप्यमान, देवोपम सुंदरता वाला है । कहीं पर भी सुंदरता का सस्ता प्रकटीकरण नहीं हुआ है । शालीनता – सभ्यता – मानसिक – बौद्धिक – वैचारिक गरिमा की ऊँचाई उनके पात्रों में इतनी घुलमिल गई है कि पढ़कर पाठक उसे मान–सम्मान दिये बिना नहीं रहता । सब उसकी और खींचे चले जाते हैं ।

शिवानीजी ने अपने उपन्यासों में नारी पात्रों के द्वारा शिक्षा और आर्थिक आत्मनिर्भरता की हिमायत की है । समाज में व्याप्त हर समस्या के सामने शिवानीजी के पात्र अपने पूरे अस्तित्व के साथ संघर्ष करते हैं, समाधान भी पाते हैं । ऐसा समाधान कि जिसकी जड़े वास्तविक जिंदगी के साथ, सामान्य से लेकर उच्चतर लोगों के साथ जुड़ी हों । बहुत ही शालीन भाव से प्रत्येक भूमिका में शिवानीजी के पात्रों ने अपना स्थान प्रस्थापित किया है । अपने व्यक्तित्व की चेतना जताई है । प्रत्येक पात्र हमें मौलिक संदेश दे जाता है ।

शिवानीजी ने मनोवैज्ञानिक, व्यक्तिगत, आर्थिक, पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक प्रत्येक क्षेत्र में नारी के योगदान, समस्या और संघर्ष को चित्रित किया है । इन्हीं क्षेत्रों के साथ जुड़े हुए नारी पात्रों की चेतना को रूपायित करने के लिए ''शिवानी के उपन्यासों में नारी चेतना'' शोध प्रबंध का प्रणयन किया गया है ।

(२) शोध–विषय चयन :

प्रकृति के दो रूप हैं – नारी और पुरुष । नारी सृष्टि के मानवों के लिए रहस्यपूर्ण रही । पुरुषों ने नारी को शक्ति–देवी, माँ, करुणामूर्ति, सहचरी, मायाविनी, ठगिनी, आदि अनेक रूपों में देखा । एक तरफ नारी को ऊँचे आसन पर बिठाया तो दूसरी तरफ शुद्रों की भांति, मारना, ताड़ना, प्रतारणा–शोषण भी किया । जो श्रद्धावान पुरुष मंदिर में देवीमाँ की मूर्ति की पूजा करता है, श्रद्धा व्यक्त करके नत–मस्तक होता है वहीं श्रद्धावान धर में, समाज में स्त्रियों को सिर्फ भोग्या या उपेक्षा की वस्तु मानता है । ऐसी दोहरी मान्यताओं से नारी को सदैव सहन करना पड़ा ।

जीवन–संदर्भ में नारी को सबकुछ समझा जाता है, परंतु मानव नहीं समझा जाता । और पुरुष प्रधान समाज स्त्री विषयक परिवर्तन को सहजता से स्वीकार नहीं कर पाता ।

प्रत्येक जिम्मेदारी को पूरे अस्तित्व एवं प्रामाणिकता के साथ वहन करने के बाद भी नारी को मिलती है प्रतारणा, अविश्वास, अपमान और दोयम दर्जे की स्थिति ।

नारी होने के नाते मैंने, ऐसी दोयम दर्जे की विडम्बनाओं से ग्रस्त नारियों के दुःखों को देखा है । नारी होने के नाते कभी कभार मैं स्वयं भी भुक्तभोगी रही हूँ ।

अतः मेरे मन में सदैव नारी विषयक साहित्य पर काम करने की इच्छा थी । मेरे कई स्नेही प्राध्यापक मित्रों ने मुझसे कहा था ''नारी विमर्श, नारी चेतना को लेकर काम हो चुका है, ऐसा शोध विषय क्यों ले रही हो ?'' मगर जिन विषमताओं को लेकर स्त्रियाँ आज भी शोषित हैं उन समस्याओं को बारबार, हजारबार नये नये ढंग से समाज के सामने रखना होगा ।

मैंने अपने मान्य गुरुवर डॉ. एस. पी. शर्मा साहब के सामने मेरी उक्त इच्छा रखी । अंततः दोनों ने मिलकर ''शिवानी के उपन्यासों में नारी चेतना'' विषय तय किया । मेरे शोध की सुविधा के लिए शिवानीजी के १८ उपन्यासों की संख्या निश्चित की गई ।

(३) शोध-विषय : महत्त्व :

विश्व को चलायमान, गतिशील रखने में नारी का जो योगदान है वह महत्त्वपूर्ण तो है ही - साथ ही अति आवश्यक भी है । यहाँ तक कि हमारे वैदिक साहित्य ॠग्वेद में स्त्री को अत्युच्च स्थान दिया गया है । वैदिक काल में कुमारी या विवाहित स्त्री दोनों का ही बहुत सम्मान था, उन्हें धार्मिक, सामाजिक कार्यों में पुरुषों के समान स्थान प्राप्त था । उपनिषद की महिला सांसारिक सुखों को त्याग कर आत्मज्ञान या ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने हेतु प्रयत्नशील रहती थी ।

नारी का सम्मान करना भारतीय संस्कृति का महत्त्वपूर्ण जीवनमूल्य रहा है । मनु भगवान ने यहाँ तक कहा है कि जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है वहाँ देवता रमण करते हैं । जहाँ इनकी पूजा नहीं होती है वहाँ सारी क्रियाएँ निष्फल हो जाती हैं । इस प्रकार सृष्टि का मूलाधार नारी है । भारतीय स्त्री की कहानी उत्थान एवं पतन की कहानी है । समय के दर्पण में भारतीय नारी का प्रतिबिम्ब उसके उत्थान एवं पतन की कहानी कहता है । रामायण में सीता-त्याग, महाभारत में द्रौपदी को जुए में दावँ पर लगाना नारी के सम्मान के पतन की करुण कहानी है । कैकेयी का चरित्र महान है - फिरभी उसे स्वार्थी मानकर प्रताड़ित किया गया है । भक्तिकाल में भक्तों ने नारी की समानता के प्रयास किये हैं । कबीर ने-नारी से दूर रहना और साथ ही मान-पूजा करना दोनों बातें कहीं है । मीरा ने सामन्ती परिवार में जन्म लेने

के बाद भी नारी को दासी समझी जानेवाली संस्कृतियों को चुनौती दी है – तो यह भी नारी विमर्श – चेतना ही है ।

वैदिक काल से आज तक साहित्य की सभी विद्याओं में महिलाओं ने पुरुषों के समान अपनी सर्जनात्मक शक्ति का परिचय दिया है । विश्व इतिहास साक्षी है कि इस पुरुष–प्रधान समाज में नारी प्राचीन काल से ही सामाजिक, नैतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक एवं राजनीतिक बंधनों से जकड़ी हुई है । सामाजिक खौफ से गुजरते हुए स्त्री खुद से डरकर खुद में विभाजित और शक्तिहीन हो जाती है । पुरुष ने स्त्री की जिस एक चीज को कुचला या पालतू बनाया है, वह है उसकी स्वतंत्रता, अपनी अखंडता और सम्पूर्णता में नारी दुर्जेय है । पुरुष ने हर सम्भव कोशिश की है कि उसे परतंत्र और निष्क्रिय बनाया जाय ।

एक पतिव्रत का पालन करना और वात्सल्य की प्रतिमूर्ति बनने में ही उसके जीवन की महत्ता मानी जाती है । उसकी कोई स्वतंत्र पहचान नहीं । आज नारी अपना अस्तित्व– अस्मिता एवं अपनी परवशता के प्रति जागृत हो गई है ।

स्वतंत्रता के आंदोलन में भी गांधीजी के विचारों से प्रभावित होकर कई नारियों ने राष्ट्रीय संघर्ष में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई । झाँसी की रानी, सरोजिनी नायडू, अरुणा आसफ अली, विजया लक्ष्मी पंडित, सुचित्रा कृपलानी, ईंदिरा गांधी प्रभृति नारियाँ आज भी स्मरणीय है ।

१९७० के बाद नारी–विश्व–चेतना, नारीवाद का ख़याल पश्चिम से आया है । वहाँ पर स्त्रियाँ अपने अधिकारों को लेकर लड़ रही है । हमारे यहां तो स्वतंत्रता के बाद नारी को अधिकार मिल ही गए है । कुन्दनिका कापड़िया रचित – ''सात पगलां आकाशमां'' उपन्यास में नारी विमर्श का भाव ही है जो काफी चर्चास्पद रहा । सदियों से स्त्रियाँ कहीं न कहीं दबाई गई हैं –

प्रताड़ित की गई हैं । साहित्यकारों ने अपने साहित्य में स्त्रियों के अधिकार, अस्तित्व आदि प्रश्नों को लेकर बातें कीं, फिर भी कोई ठोस समाधान नहीं मिला । साहित्य की विविध विद्याओं में उपन्यास सर्वाधिक लोकप्रिय विद्या है । इसके मूल में मानवजीवन को निकट से देखने की प्रवृत्ति रही है । शिवानीजी के आलोच्य १८ उपन्यासों के नारी चरित्रों में नारी चेतना निहित है । उनके उपन्यास मनोविश्लेष्णात्मक और व्यक्तिवादी, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक विचारधारा से संबंधित हैं । हिन्दी में जैनेन्द्र, अज्ञेय, इलाचंद्र जोशी, आदि ने मनोवैज्ञानिक भाव को शिखर तक पहुँचाया । फ्रायड, युंग आदि का प्रभाव भी मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में है । शिवानी के उपन्यासों में नारी चरित्र कुंठा–सहानुभूति, जिजीविषा, संदेह, भावुकता, विश्वास, विद्रोह, द्विधा आदि मानसिक भावों को लेकर अपने–अपने लक्ष्य तक पहुंचते हैं, यही नारी चेतना है । नारीपात्र पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, जिम्मेदारियों को वहन भी करते हैं, और इन बातों में वे पुरुषों से भी आगे हैं । धार्मिक व आर्थिक ऊँचाइयों पर नारी स्थित है । राजनीतिक दावँपेंच में शामिल होने के बाद भी अपना अस्तित्व अक्षुण्ण बनाया है – यह बात शिवानीजी के उपन्यासों में हमें देखने को मिलती है । आज नारी अपने अस्तित्व की सुरक्षा के लिए परंपरागत मूल्यों से लड़ रही हैं । महिला लेखिकाओं ने स्त्री को केन्द्र में रखकर अनेक समस्याएँ प्रस्तुत की हैं । महिलाएँ धीरे–धीरे यह महसूस करने लगी हैं कि इन्सान के रूप में उनका भी एक निजी व्यक्तित्व है । वह आर्थिक रूप से स्वावलंबी नारी है । प्रत्येक क्षेत्र में वह काम कर रही है । परिस्थितियों से लड़ती है । उषा प्रियंवदा, ॠता शुक्ल, कृष्णा अग्निहोत्री, कृष्णा सोबती, चित्रा मुद्गल, नासिरा शर्मा, पद्मा सचदेव, मन्नू भंडारी, मालती जोशी, मेहरुन्निसा परवेज, मैत्रेयी पुष्पा, मृदुला गर्ग, मृणाल पांडेय, शशिप्रभा शास्त्री, शिवानी जैसी विदुषी–नारियाँ समाज निर्माण के कार्य से जुड़ी हुई हैं । भारतवर्ष में स्त्री

संदर्भित समस्याओं, जैसे अंधविश्वास, तलाक, विधवा–विवाह, कुरीतियाँ, बलात्कार, जैसी महत्त्वपूर्ण बातों का चित्रण शिवानी के उपन्यासों में भी हुआ है ।

जैविक भिन्नता के बावजूद नारी–पुरुषों से कमजोर नहीं है । जब नारी अपने कामिनी भाव का त्याग करेगी, स्त्री–पुरुष में सहज मैत्रीभाव रहेगा, अधिकारों के साथ कर्तव्य पालन करने की दृढ़ इच्छा शक्ति होगी तो उत्पीड़न से नारी मुक्ति पा लेगी । उसके अधिकार न भिक्षावृति से मिले हैं, न मिलेंगे क्योंकि वे आदान–प्रदान योग्य वस्तुओं से भिन्न है । पुरुषों का विरोध करके, उन्हें मिटाकर या उनके बंधन को अस्वीकार करने से नारी–मुक्ति संभव नहीं है । सिमोन बोउवा का मानना है कि स्त्री और पुरुष के बीच कुछ मौलिक अंतर तो रहेंगे ही, उसकी संवेदनशीलता की दुनिया अलग है, यह तो पुरुष को स्थापित करना है कि स्त्री की इस दुनिया में स्वाधीनता का आधिपत्य रहे । कालजयी रचनाकार जयशंकर प्रसाद का मानता है कि – नर–नारी के संबन्धों के भावनात्मक तंतु सौहार्द और सामंजस्य पर टिके हुए हैं –

मनु तुम श्रद्धा को गये भूल,
उस पूर्ण आत्मविश्वासमयी को उड़ा दिया था समझ तूल,
तुम भूल गए पुरुषत्व मोह में, कुछ सत्ता है नारी की,
समरसता है, संबंध बनी, अधिकार और अधिकारी की ।

– कामायनी

आचार्य रजनीश के अनुसार अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए पुरुष को मिटाना नहीं है – आगे पीछे – नहीं चलना है । समानान्तर साथ–साथ युगपत चलना है ।

उपर्युक्त परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत शोध–विषय का महत्त्व स्वयं स्पष्ट हो जाता है । शिवानी के उपन्यासों में चित्रित नारी–पात्रों में प्रतिबिंबित नारी अस्मिता के स्वरों–तत्त्वों का आकलन करना तथा उनके आलोक में नारी–व्यक्तित्व

को प्रमाणित करने की दिशा को प्रशस्त करना प्रस्तुत शोध–प्रबंध का प्रतिपाद्य विषय है ।

(४) सामग्री संकलन :

शोधकार्य एवं तत्संबंधी सामग्री संकलन करना श्रमसाध्य, गुरुतर कार्य है । विशेषकर अहिन्दी भाषी प्रदेशों के लिए तो हिन्दी में शोधकार्य करना और तत्संबंधी पुस्तकें एवं साहित्य प्राप्त करना अति कठिन कार्य है ।

पूरे एक साल तक मुझे सामग्री संकलित करने में बहुत तकलीफें उठानी पड़ीं । १९६० के दशक की साहित्यकार शिवानीजी की कृतियों को प्राप्त करने के लिए बहुत पत्राचार करना पड़ा । दिल्ली के दो–तीन किताबघरों से निराशाजनक उत्तर मिले । कुछ प्राचीन प्रकाशक अब बन्द हो चुके थे और कुछने अपना नया नामकरण कर लिया था ।

मगर बाद में मुझे सबसे ज्यादा सहयोग मिला मेरी छात्रा पानसुरीया परीज्ञा से, जो २००५ में गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद में ह्युमन रीसोर्स डेवलोपमेण्ट का कोर्ष कर रही थी । जैसे ही मैंने उसे फोन पर मेरी तकलीफ सुनाई, एक सप्ताह में उसने मुझे गुजरात विद्यापीठ के ग्रंथालय से शिवानीजी के १० उपन्यास निकलवाकर फोटोकोपी करवा के, कुरियर द्वारा भेज दिये ।

दूसरे मेरे छात्र हैं मेहता मातंग और जादव योगेश, वे भी गुजरात विद्यापीठ में अध्ययन कर रहे थे, उन्होंने मुझे तीन उपन्यासों की फोटोकोपी करवाके कुरियर द्वारा भेजे । इन तीनों की मैं बहुत ऋणी हूँ ।

बाकी के पाँच उपन्यास मैंने –

(१) हिन्दी पॉकट बुकस – दिल्ली ।

(२) बुक–काफे – दिल्ली से प्राप्त किये ।

तीन संदर्भ पुस्तकें आदरणीय शर्मा साहब ने मुझे दीं ।

(१) साहित्यक अनुसंधान के आयाम – डॉ. रवीन्द्रकुमार जैन

(२) गुजरात में हिन्दी शोध का विकास – डॉ. अम्बाशंकर नागर

(३) शिवानी के उपन्यास – कथ्य और शिल्प – डॉ. रेणु हिंगोरानी

इस शोध-प्रबंध के लिए मैंने जिन ग्रंथालयों से संदर्भ पुस्तकें ली हैं उनके नाम नीचे दिये गये हैं –

(१) गुजरात विद्यापीठ ग्रंथालय – अहमदाबाद ।

(२) सैराष्ट्र विश्वविद्यालय ग्रंथालय – राजकोट ।

(३) कंपाणी आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज – मांगरोल, शारदाग्राम ।

(४) हिन्द पोकेट बुक्स– दिल्ली ।

(५) बुक काफे, दिल्ली

(६) राजकमल एवं वाणी प्रकाशन – दिल्ली ।

(७) कु. आन्या बिनोयभाई गारड़ी, ग्रामविद्या महाविद्यालय-शारदाग्राम ।

(५) प्रस्तुत शोध-प्रबंध द्वारा प्रस्तावित योगदान :

(१) प्रकृति के दो- शाश्वत रूप – स्त्री और पुरुष हैं । मानव जीवन को प्रभावित करनेवाली प्रेरणाप्रद जीवनदायिनी शक्ति के रूप में स्त्री की महत्त्वपूर्ण भूमिका को स्पष्ट करना ।

(२) स्त्री प्रेरणास्त्रोत – जीवनदायिनी है फिर भी उसके अस्तित्व को मिटाने की कोशिश क्यों ? यह जागरूकता समाज के समक्ष रखना ।

(३) भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टिकोण से शिवानी के उपन्यासों की नारी चेतना को चित्रित करना ।

(४) शिवानीजी के उपन्यासों में चित्रित मानसिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, पारिवारिक, धार्मिक धरातल पर स्त्री की सक्षम भूमिका को बताना ।

(५) घर को छोड़कर बाहर के क्षेत्रों में काम करने वाली – कामकाजी नारी के चरित्र में ही नारी चेतना है या गृहस्थी संभालने वाली नारी में भी नारी चेतना है – इस बात को शिवानीजी के उपन्यासों के नारीचरित्रों के माध्यम से बताना ।

(६) नारी चेतना के आंदोलनों से स्त्रियाँ क्या चरितार्थ करना चाहती हैं ? मानववाद या समाज के साथ अपने आपको जोड़कर अपने अधिकारों की मांग ? या सिर्फ विरोध – देखा–देखी से नारी आंदोलन – अपने अधिकारों की मांग ?

(७) उपभोक्तावादी पूंजी बाजार और मीडिया ने मिलकर नारी का वस्तुकरण कर दिया है । सौंदर्य स्पर्धा और भ्रूणहत्या जैसी धटनाएँ होती ही रहती हैं । तब नारी चेतना क्या चाहती है ? ऐसे विचारों के प्रति समाज/पाठकों को जाग्रत करना ।

(६) शोध– प्रबंध– परिचय :

"शिवानी के उपन्यासों में नारी–चेतना" प्रस्तुत शोध–प्रबंध छः अध्यायों में विभक्त किया गया है –

(१) प्रथम अध्याय :–

इस अध्याय में प्रकृति के रचयिता के शाश्वत और अनिवार्य दो – स्वरूप – स्त्री –पुरुष, भारतीय संस्कृति में स्त्री का स्थान, स्त्री की आवश्यकता, गति–प्रगति और आज की स्थिति का विश्लेषण किया गया है ।

(२) द्वितीय अध्याय :-

इस अध्याय में नारी चेतना माने क्या ? परिभाषा - शब्द - अर्थ - स्वरूप - इसके समर्थन में अन्य चिंतकों के, महिला रचनाकारों के विचार, भारतीय और पाश्चात्य अभिगम - आदि का विश्लेषण किया गया है ।

(३) तृतीय अध्याय :-

इस अध्याय में शिवानीजी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व (१८ उपन्यासों का कथ्य) का संक्षेप में अनुशीलन - विश्लेषण किया गया है ।

(४) चतुर्थ अध्याय :-

इस अध्याय में शिवानी के उपन्यास साहित्य में मनोवैज्ञानिक व व्यक्तिगत विचारधारा से सम्बन्धित उपन्यासों के पात्रों में मौजूद कुंठा, सहानुभूति, जिजीविषा, जिज्ञासा, संदेह, भावुकता, दंभ, विश्वास, विद्रोह, द्विधा, स्पर्धा, अकेलापन आदि मानसिक भावों के होते हुए भी अपना अस्तित्व किस प्रकार बनाये रखते हैं । इसका विस्तृत विश्लेषण नारी चेतना की दृष्टि से किया गया है ।

(५) पंचम अध्याय :-

इस अध्याय में शिवानी के पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं राजनीतिक विचारधारा से सम्बन्धित उपन्यासों के नारी-चरित्र - किस प्रकार अपना अस्तित्व कायम रखते हुए सामाजिक स्तर पर स्थापित होना - विषमताओं का सामना करना, पारिवारिक जिम्मेदारियों का वहन करना, आर्थिक स्वावलंबन होने के बाद भी समाज-परिवार के लिये अपना त्याग कर देना, सामाजिक दंभ का सामना करना, धार्मिक राजनीतिक हथकंडों में शामिल होने के बाद भी अपना चरित्र - अपना अस्तित्व बनाये रखते हैं, इन सारी बातों का विश्लेषण-विवेचन किया गया है ।

(६) षष्ठ अध्याय :

इस अध्याय में शिवानी के आलोच्य उपन्यासों में चित्रित नारी–पात्रों में प्रतिबिंबित नारी–चेतना के विभिन्न रूपों का समग्रतया मूल्यांकन करते हुए दर्शाया गया है कि वर्तमान नारी–विमर्श के संदर्भ में शिवानी के उपन्यास नयी दिशाएँ प्रशस्त करते हैं । अतएव प्रस्तुत शोध–कार्य की साहित्यिक एवं सामाजिक उपादेयता असंदिग्ध है ।

(७) उपसंहार :

प्रस्तुत शोध–प्रबंध के अंत में 'उपसंहार' है, जिसमें पूर्व विवेचित तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष–निष्पादन करते हुए उपन्यासकार शिवानी के महत्त्व एवं साहित्यिक अवदान को रेखांकित किया गया है ।

(७) कृतज्ञताज्ञापन

"शिवानी के उपन्यासों में नारी चेतना" शीर्षक विषय पर काम करना मेरे जीवन का ध्येय बन गया था । इस मंज़िल तक पहुँचने में कई हितचिन्तकों ने मेरी सहायता की है, जिनके प्रति मैं आभारी हूँ ।

सबसे पहले सृष्टि के रचयिता परमतत्त्व को करबद्ध वंदन करती हूँ जिनसे मेरा अस्तित्व है ।

प्रस्तुत शोध–प्रबंध परमादरणीय गुरुवर डॉ. एस. पी. शर्मा, पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष, हिन्दी भवन, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय के सुयोग्य निर्देशन में तैयार किया गया है । विषयचयन से लेकर शोध–प्रबंध की पूर्णता तक समय–समय पर उन्होंने जो अमूल्य निर्देश दिये हैं, उसी के फलस्वरूप यह शोध–प्रबंध इस रूप में प्रस्तुत हो सका है । इसके लिए मैं हृदय से उनकी अनुगृहीत हूँ ।

मेरे कॉलेज के प्रिन्सीपाल डॉ. दिलीपभाई मर्थक तथा हिन्दी भवन (सौराष्ट्र विश्वविद्यालय) के वर्तमान अध्यक्ष डॉ. बी. के. कलासवा, पूर्व प्रोफेसर

डॉ. जी. जे. त्रिवेदी एवं रीडर डॉ. शैलेश मेहता के प्रति आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने मेरा हैसला बढ़ाया ।

मेरे कॉलेज के अंग्रेजी विषय के अध्यापक डॉ. इन्द्रवदनभाई पुरोहित सदैव मुझे ''जल्दी शोध-प्रबंध पूरा करो'' कहते रहे । दूसरे हैं क्षेत्र व्यवस्था के अध्यापक धीरेनभाई वंद्रा । आपकी बेटी अहमदाबाद पढ़ती थी और आप उससे मिलने जाते, मैं जो भी किताबें मंगवाती, आप ले आते, आपके प्रति भी आभारी हूँ ।

मेरे उन छात्रों के प्रति भी कृतज्ञ हूँ जो मुझे पढ़ते देख ''यहाँ मेडम पढ़ रही हैं चलो यहाँ से'' कहकर चले जाते और मुझे शांति प्रदान करते ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध की सामग्री संकलित करने में जिन ग्रंथालयों से मुझे सहायता मिली है उनके नाम नीचे दिये गये हैं -

(१) गुजरात विद्यापीठ ग्रंथालय - अहमदाबाद ।

(२) सौराष्ट्र युनिवर्सिटी ग्रंथालय - राजकोट ।

(३) हिन्द पॉकेट बुक्स - दिल्ली ।

(४) बुक काफे - दिल्ली ।

(५) श्री कंपाणी आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज - मांगरोल-शारदाग्राम ।

(६) कु. आन्या बिनोयभाई गार्डी, ग्राम महाविद्यालय - मांगरोल-शारदाग्राम ।

इन सभी ग्रंथालयों के ग्रंथपालों के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करती हूँ । मैं सबसे ज्यादा ऋणी हूँ मेरे वंदनीय माता-पिता की, जिन्होंने मुझे जन्म देकर, पालन कर शिक्षा प्रदान की और इस मुकाम पर पहुंचाया । ईश्वर से मेरी करबद्ध प्रार्थना है कि वह मेरे पूज्य - माता-पिता को सुख-समृद्धि, शांति और निरामय आयुष्य प्रदान करे ।

मैं अपनी प्यारी-प्यारी सुंदर बेटियों - चि. डोली (हिमानी), चि. रोजी (कशिश) को कैसे विस्मृत कर सकती हूँ । जब मैं पढ़ने बैठती हूँ तो वे उम्र

के हिसाब से ज्यादा सयानी और बड़ी हो जाती थीं । दूसरे कमरे में जाकर खेलतीं, होमवर्क करतीं – उनकी परवरिश का पूरा समय मैंने शोधकार्य में दिया है । मेरे पति दक्षेशकुमार मकवाणा की मूक संमति मुझे मिली । मेरी बड़ी बहन श्रीमती गीता दिव्येशकुमार मकवाणा जिन्होंने कभी–कभार मेरी बेटियों को संभाला है उनके प्रति भी आभार प्रकट करती हूँ । सौराष्ट्र विश्वविद्यालय – राजकोट ने मुझे पीएच.डी. की शोध–छात्रा के रूप में स्वीकारा, इसके लिए मैं हृदय से आभारी हूँ ।

अंत में मैं उन सभी – गुरुजनों, सहकार्यकर मित्रों, सहृदय शुभचिंतकों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ जिन्होंनें मुझे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में इस कार्य में सहायता प्रदान की है ।

मांगरोल : विनीता

दिनांकः ७ जनवरी २००६ *हंसा सोलंकी*

अनुक्रमणिका

शीर्षक		पृष्ठ क्रमांक
प्रथम अध्याय : प्रकृति के शाश्वत और अनिवार्य स्वरूप : स्त्री और पुरुष		१-४५
(अ)	वैदिक काल	२
(ब)	पुराणकाल	५
(क)	थेरी गाथाएँ	८
(ड)	संस्कृत महाकाव्य काल	९
(इ)	मध्यकाल	१५
(ई)	ब्रिटीशकाल में महिलाओं की स्थिति	१७
(उ)	आधुनिक काल	२४
(ऊ)	इक्कीसवीं सदी में नारी	३६
द्वितीय अध्याय : नारी चेतना		४६-७६
(क)	नारी चेतना – भूमिका	४७
(ख)	नारी चेतना – मुक्ति, ऐतिहासिक संदर्भ	५०
(ग)	अमरिका में नारी मुक्ति आंदोलन	५१
(घ)	भारतीय और पाश्चात्य अभिगम, दृष्टिकोण	५४
(ड)	नारी चेतना से तात्पर्य	५६
(च)	नारी चेतना, विषयक विभिन्न दृष्टिकोण	५८
तृतीय अध्याय : शिवानी का जीवन एवं व्यक्तित्व		७७-१२८
१.	शिवानी का जीवन : व्यक्तित्व	७९
२.	शिवानी का साहित्यिक व्यक्तित्व	८३

३.	शिवानी का साहित्य :	८५
१)	कहानी संग्रह	८५
२)	उपन्यास	८६
३)	*लघु उपन्यास एवं कहानियों पर आधारित संकलन*	८६
४)	यात्रावृत्त	८७
५)	संस्मरण	८७
४.	शिवानी के उपन्यासों का संक्षिप्त अनुशीलन	८८
१)	मायापुरी	८८
२)	चौदह फेरे	९०
३)	भैरवी	९२
४)	कृष्णकली	९४
५)	स्मशान चंपा	९७
६)	सुरंगमा	९९
७)	चल–खुसरो घर आपने	१०१
८)	कालिंदी	१०४
९)	दो सखियाँ	१०६
१०)	स्वयंसिद्धा	१०८
११)	गैंडा	१०९
१२)	माणिक	१११
१३)	विषकन्या	११२
१४)	कैंजा	११५
१५)	रतिविलाप	११६
१६)	किशनुली	११९
१७)	कृष्णवेणी	१२०
१८)	रथ्या	१२२

चतुर्थ अध्याय : शिवानी के मनोवैज्ञानिक एवं वैयक्तिक विचारधारा से संबंधित उपन्यासों में नारी चेतना		१२६-२२०
१.	'गैंडा' लघु उपन्यास के नारी पात्र	१३६
(१)	*राज :*	१३६
(१)	*ईर्ष्या–स्पर्धा, विद्रोहीभाव रखनेवाली*	१३६
(२)	*स्पष्टभाषिणी*	१४०
(३)	*सौंदर्यवान नारी*	१४०
(४)	*होशियार, दंभी, कामकाजी नारी*	१४१
(५)	*पति की उपेक्षा करनेवाली नारी*	१४२
(६)	*लग्नेतर संबंध–अैय्याश नारी*	१४२
(७)	*असत्यवादिनी*	१४३
(८)	*फूड–पोइजिनींग से मृत्यु*	१४३
(२)	*सुपर्णा :*	१४४
(१)	*शांत, सुखी–आतिथ्यभाववाली गृहिणी*	१४४
(२)	*अदर्शी सौत को पहचाननेवाली*	१४४
(३)	*व्यवहारकुशल नारी*	१४५
(४)	*बुद्धिमान नारी*	१४५
(५)	*दुःखी पत्नी*	१४६
(६)	*प्रतिशोध लेनेवाली नारी*	१४७
(७)	*प्रायश्चित करनेवाली नारी*	१४७
(८)	*त्यागी नारी*	१४७
२.	'माणिक' लघु उपन्यास के नारी पात्र	१४८
(१)	*नलिनी :*	१४८
(१)	*जिम्मेदारी उठानेवाली नारी*	१४९
(२)	*अच्छी आर्किटेकट*	१४९
(३)	*संयमी दीर्घदृष्टिवाली व्यवहारपटु नारी*	१४९
(४)	*सामाजिक रिवाज – रूढ़ियों में विश्वास*	१५०

(५)	कठोर अनुशासिका	१५०
(६)	मातृत्व के गुणों से युक्त	१५१
(७)	कुंठाग्रस्त एकाकिनी नारी	१५१
(२)	दीना बाटलीवाला :	१५२
(१)	मोहक व्यक्तित्ववाली	१५२
(२)	सौंदर्यवान	१५२
(३)	धूर्त, ढोंगी, दिखावेवाली नारी	१५२
(४)	क्रूर, चोर, ठग, पैशेवर हत्यारिन	१५३
(३)	रंभा :	१५४
(१)	तेज तर्रार आजाद खयालोंवाली	१५४
(२)	सुखी, संतुष्ट गृहस्थी	१५४
(३)	स्पष्टवक्ता	१५४
(४)	जागृत नारी	१५५
(५)	मानसिक अंतर्द्वन्द्व से पीड़ित	१५५
३.	'किशनुली' लघु उपन्यास के नारी पात्र	१५६
(१)	काखी :	१५७
(१)	आदर्श गृहिणी	१५७
(२)	स्त्री रक्षा की हिमायती	१५८
(३)	समाज की रूढ़ियों को तोड़नेवाली	१५८
(४)	मातृत्वभाव वाली	१६०
(५)	पति के प्रति अपार श्रद्धा	१६१
(६)	पति का मान प्राप्त करनेवाली	१६१
(२)	किशनुली	१६२
(१)	उन्मादिनी और सुंदर	१६२
(२)	शास्त्रीजी के प्रति लगाव	१६३
४.	'कृष्णवेणी' लघु उपन्यास के नारी पात्र	१६५
(१)	कृष्णवेणी	१६५
(१)	श्याम–सुंदरी नारी	१६५
(२)	दिव्य दृष्टि प्राप्त नारी	१६६

(३)	लाड़ली बेटी	१६६
(४)	रूढ़ि परंपरा का विरोध करनेवाली	१६६
(५)	आदर्श प्रेमिका	१६७
(६)	स्पष्टवक्ता	१६७
(७)	जागृत और स्वच्छताप्रिय नारी	१६८
(८)	परिस्थितियों से लड़नेवाली	१६८
(९)	वफादार नारी	१६९
५.	'विषकन्या' लघु उपन्यास के नारी पात्र	१७०
(१)	कामिनी :	१७०
(१)	चंचल शरारती	१७०
(२)	कुशल ऑरहोस्टेस	१७१
(३)	उपेक्षा, कुंठा, ईर्षा से पीड़ित	१७१
(४)	मायाविनी शक्तिवाली	१७२
(५)	प्रेम में निराशा–उपेक्षा	१७२
(६)	प्रतिशोध–विद्रोह	१७३
(७)	प्रेमिकारूप	१७४
(८)	आत्ममंथन करनेवाली	१७४
(९)	संदेह की शिकार	१७५
(१०)	आत्मग्लानि	१७६
(२)	दामिनी	१७७
६.	'मायापुरी' उपन्यास के नारी पात्र	१७७
(१)	शोभा :	१७८
(१)	शिक्षा, पढ़ाई में होशियार	१७८
(२)	आशावादी – व्यवहारिक नारी	१७८
(३)	सुंदरता	१७८
(४)	मिलनसार सेवाभावी	१७९
(५)	हीनता – लघुता की ग्रंथि से पीड़ित	१७९
(६)	प्रस्ताहिम्मत – प्रेमिका	१८०

(७)	कर्तव्य वचनपालक आज्ञाकारिणी	१८१
(८)	सेक्रेटरी के पद पर	१८२
(२)	सविता	१८२
(३)	गोदावरी, मंजरी	१८३
७.	‘कृष्णकली’ उपन्यास के नारी पात्र	१८४
(१)	कृष्णकली :	१८४
(१)	अवैध संतान	१८४
(२)	उच्च शिक्षा प्राप्त	१८५
(३)	माता–पिता की तलाश	१८५
(४)	विद्रोहिणी स्पष्टवक्ता	१८६
(५)	सुंदरता	१८७
(६)	मॉडलिंग, रिसेप्शनीस्ट का व्यवसाय	१८८
(७)	प्रेमिका कली	१८८
(८)	प्रामाणिक कली	१८९
(९)	निराशा और जागृति	१९०
(१०)	मृत्यु	१९०
(२)	पन्ना	१९१
(३)	डॉ. रोजी पेट्रिक	१९२
८.	‘चल खुसरो घर आपने’ उपन्यास के नारी पात्र	१९३
(१)	कुमुद :	१९३
(१)	छोटे भाई–बहन से परेशान	१९४
(२)	पारिवारिक जिम्मेदारी उठाना	१९५
(३)	उच्च शिक्षा प्राप्त कामकाजी नारी	१९५
(४)	भीरु–डरपोक फिर भी स्पष्टवक्ता	१९६
(५)	माता का विश्वास और उपेक्षा	१९७
(६)	त्यागमयी नारी	१९८

९.	'स्वयंसिद्धा' लघु उपन्यास के नारी पात्र	१९६
(१)	*माधवी :*	१९६
(१)	*रूढ़िवादी परवरिश*	१९६
(२)	*शादी*	१९६
(३)	*गलतफहमी, वहम, भ्रम की शिकार*	१९६
(४)	*पिताजी–मौसी से तिरस्कृत*	२००
(५)	*उच्चशिक्षा प्राप्त, स्वाभिमानी, आत्मनिर्भर*	२०१
(६)	*विद्रोही ईर्षालु निराशावादी*	२०२
(७)	*पति की मृत्यु, आत्महत्या*	२०२
१०.	'कैंजा' उपन्यास के नारी पात्र	२०४
(१)	*नंदी :*	२०४
(१)	*उच्च कुल में जन्म*	२०४
(२)	*उच्च शिक्षा प्राप्त–आत्मनिर्भर*	२०४
(३)	*विवाह–संबंधी संकीर्णता*	२०४
(४)	*सुरेश भट्ट की प्रेमिका के रूप में*	२०५
(५)	*नंदी का प्रेम*	२०६
(६)	*कुंठा, नैराश्य, विवशतायुक्त सुरेश*	२०६
(७)	*सेवाभावी नंदी*	२०७
(८)	*मातृत्वभाव वाली नंदी*	२०७
(९)	*त्यागमयी नारी*	२०८
पंचम अध्याय : शिवानी के पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं राजनीतिक विचारधारा से संबंधित उपन्यासों में नारी चेतना		२२१-३१२
	आलोच्य उपन्यास	२२६
१.	'चौदह फेरे' उपन्यास के नारी पात्र	२२६
(१)	*नंदी*	२२६
(१)	*सेवा भावी – कम पढ़ी–लिखी*	२२६

(२)	सहनशीला नारी	२३०
(३)	तिरस्कृत नारी	२३१
(४)	मजबूर नारी	२३१
(५)	उपेक्षिता नारी	२३१
(६)	गंवार–फूहड़ नारी	२३२
(७)	पति के व्यवहार से दुःखी	२३४
(८)	पति पर अधिकार	२३४
(९)	त्यागी, आध्यात्मिक नारी	२३५
(२)	मल्लिका	२३६
(१)	कामकाजी नारी	२३६
(२)	सुंदर–कुशल सेक्रेटरी	२३६
(३)	मातृत्वभाववाली	२३७
(३)	अहल्या	२३८
(१)	अभावपूर्ण बचपन	२३८
(२)	उच्च शिक्षा प्राप्त	२३८
(३)	आधुनिक, आज्ञाकारिणी	२३९
(४)	पस्तहिम्मत प्रेमिका	२३९
(४)	सुभद्रा ताई	२४०
(१)	गृहिणी	२४०
(२)	मुँह–फट उद्दंड़ औरत	२४१
(३)	मातृत्वभाववाली नारी	२४१
(४)	हिम्मतवान – विद्रोही नारी	२४२
२.	‘श्मशान चंपा’ उपन्यास के नारी पात्र	२४३
(१)	चंपा	२४३
(१)	उच्च शिक्षा प्राप्त, उच्च विचार, सुंदर नारी	२४३
(२)	पारिवारिक जिम्मेदारी उठानेवाली	२४४
(३)	आज्ञाकारिणी पुत्री	२४४
(४)	सामाजिक संकीर्णता की शिकार	२४४
(५)	जागृत नारी	२४५

(६)	स्पष्टवक्ता, सावधान नारी	२४६
(७)	मधुकर से पुनः मिलन	२४६
(८)	परिस्थितियों से शरणागति	२४७
(२)	भगवती	२४८
(१)	परंपरागत भारतीय नारी	२४८
(२)	प्रायश्चित करनेवाली	२४८
(३)	परिस्थिति से समाधान	२४९
(४)	संतानों का भला चाहनेवाली	२४९
(५)	दुःखी नारी	२४९
(३)	कमलेश्वरी	२५०
(१)	नृत्यांगना की बेटी	२५०
(२)	मनोरोगिणी	२५०
(३)	गृहिणी–चिंतित माँ	२५१
(४)	समृद्ध नारी	२५१
(५)	उदार नारी	२५२
(४)	जुही	२५२
(१)	चंचल शरारती	२५२
(२)	अंतरजातीय विवाह और दुःखी	२५२
(३)	केब्रे डांसर, खूनी नारी	२५२
(५)	मयूरी	२५३
३.	'कालिंदी' उपन्यास के नारी पात्र	२५४
(१)	अन्नपूर्णा	२५४
(२)	कालिंदी	२५५
(१)	समृद्ध बचपन, उच्च शिक्षा प्राप्त	२५५
(२)	कर्तव्यपरायण, उच्च विचार	२५५
(३)	स्पष्टवक्ता, हिंमतवान	२५५
(४)	दहेज प्रथा का विरोध	२५६
(५)	पुरुषविरोधी, विद्रोही नारी	२५७
(६)	सेवाभावी नारी	२५८

(७)	जिद्दी–अभिमानी	२५९
(८)	माँ–मामा की सीख	२५९
४.	'सुरंगमा' उपन्यास के नारी पात्र	२६१
(१)	गौहर जान	२६१
(२)	राजलक्ष्मी	२६२
(३)	सुरंगमा	२६३
(१)	समृद्ध बचपन	२६३
(२)	माँ–पिता का वैमनस्य	२६४
(३)	उदास धीर–गंभीर / उच्च शिक्षा प्राप्त	२६४
(४)	आर्थिक अभाव / कामकाजी नारी	२६५
(५)	दो–रंगी मंत्री का संपर्क	२६५
(६)	स्वमानी, सुंदर, विवाह विरोधी	२६६
(७)	स्पष्टवक्ता – सावधान नारी	२६७
(४)	विनीता	२६७
(१)	उच्च शिक्षा प्राप्त	२६८
(२)	स्त्री–शिक्षा की हिमायती	२६८
(३)	महत्त्वाकांक्षिणी नारी	२६८
(४)	अंतरजातीय विवाह	२६८
(५)	अहम् वाली नारी	२६९
(६)	पति पर अधिकारभावना	२७०
(७)	मंत्री–पत्नी के रूप में	२७०
(८)	भावुक पत्नी	२७१
(९)	दुःखी पत्नी	२७२
(१०)	प्रतिशोध लेनेवाली नारी	२७२
५.	'रतिविलाप' लघु उपन्यास के नारी पात्र	२७३
(१)	अनसूया	२७४
(१)	उच्च शिक्षा प्राप्त, कलाकार	२७४
(२)	जिम्मेदारी उठानेवाली	२७४
(३)	मामा के द्वारा धोखा	२७४

(४)	विवाहिता अनसूया	२७५
(५)	समाधानकारी वृत्ति वाली नारी	२७५
(६)	विधवा अनसूया	२७६
(७)	कामकाजी नारी	२७७
(८)	सेवाभावी, कर्तव्यपरायण नारी	२७७
(९)	हीरा के षड्यंत्र की शिकार	२७७
(१०)	हिम्मतवान नारी	२७८
(११)	उदार, क्षमाशील नारी	२७८
(२)	हीरा	२७९
६.	'रथ्या' लघु उपन्यास के नारी पात्र	२८०
(१)	जीवंती बूआ	२८०
(२)	वसंती	२८१
(१)	अनाथ वसंती	२८१
(२)	मुग्धा किशोरी	२८१
(३)	शरारती चंचल	२८२
(४)	गुमशुदा नायिका	२८२
(५)	निराश प्रेमिका के रूप में	२८२
(६)	शारीरिक शोषण की शिकार	२८३
(७)	विमल से मिलन	२८४
(८)	दंभी-विमल का व्यंग्य	२८४
(९)	स्पष्टवक्ता वसंती	२८५
७.	'भैरवी' उपन्यास के नारी पात्र	२८६
(१)	राज-राजेश्वरी	२८६
(१)	नादान किशोरी	२८६
(२)	अनमेल विवाह	२८६
(३)	सहनशीला नारी	२८७
(४)	चेतनासभर कामकाजी नारी	२८८
(५)	मातृत्व	२८९

(२)	चंदन	२८६
(१)	शादी	२८६
(२)	भैरवी चंदन	२६०
(३)	सुंदर नारी	२६०
(४)	अपराध बोध से युक्त	२६०
(५)	अघोरी की चुंगाल से भाग जाना	२६१
(३)	मायादीदी	२६२
(१)	शिव की शक्ति बनने की इच्छा रखनेवाली	२६२
(२)	व्यसनी मायादीदी	२६३
(३)	ईर्षा–अधिकार भाव	२६३
(४)	मायादीदी की मृत्यु	२६४
८.	'दो सखियाँ' उपन्यास के नारी पात्र	२६४
(१)	सखुबाई	२६५
(१)	हिंमतवान–चेतनापूर्ण नारी	२६५
(२)	उच्चशिक्षा प्राप्त कामकाजी नारी	२६५
(३)	बेटे के द्वारा उपेक्षा	२६६
(४)	वृद्धाश्रम में आगमन	२६६
(५)	उच्चविचार, बुद्धिमान नारी	२६७
(६)	तटस्थ विचारोंवाली	२६८
(२)	आनंदी	२६८
(१)	सुघड़ स्वच्छताप्रिय नारी	२६८
(२)	पारिवारिक कलह	२६६
(३)	बेटियों के घर रहना	२६६
(४)	वृद्धाश्रम में आगमन	३०१
(५)	सहिष्णु भावनाशील नारी	३०१
(६)	लापरवाह बेटियाँ, मृत्यु	३०१

षष्ठ अध्याय : शिवानी के उपन्यासों में नारी चेतना : समग्र मूल्यांकन		३१३-३६०
१.	*"शिवानी के उपन्यासों में नारी चेतना" समग्र मूल्यांकन*	३१४
२.	*शिवानी की भाषा*	३५०
३.	*उपलब्धियाँ और सीमाएँ*	३५२
उपसंहार		३६१-३६७
ग्रंथानुक्रमणिका		३६८-३७६
१)	आधारग्रंथ सूची (उपन्यासकार शिवानी के उपन्यास)	३६९
२)	सहायक ग्रंथ सूची	३७१
३)	पत्र–पत्रिकाएँ	३७६
४)	शब्दकोश	३७६

प्रथम अध्याय
प्रकृति के शाश्वत और अनिवार्य स्वरूप : स्त्री और पुरुष

(अ) वैदिक काल
(ब) पुराणकाल
(क) थेरी गाथाएँ
(ड) संस्कृत महाकाव्य काल
(इ) मध्यकाल
(ई) ब्रिटीशकाल में महिलाओं की स्थिति
(उ) आधुनिक काल
(ऊ) इक्कीसवीं सदी में नारी

प्रथम अध्याय
प्रकृति के शाश्वत और अनिवार्य स्वरूप : स्त्री और पुरुष

(अ) वैदिक काल

सृष्टि से वृष्टि तक की सभी वस्तुएँ प्रकृति परक हैं । अपूर्णता से पूर्णता एवं शाश्वत व आनिवार्य स्वरूप प्रकृति और पुरुष के मेल से ही है नारी वास्तव में विधाता की अद्‌भुत कृति है । वैदिक काल में नारी को सर्वोच्च स्थान की प्राप्ति हुई है ।

'ऋग्वेद' मंत्रों का संकलन है । मंत्र द्रष्टा ही ऋषि है । ऋषिका शब्द का प्रयोग परवर्ती है । ऋग्वेद में स्त्री–पुरुष दोनों के लिए ही 'ऋषि' शब्द का प्रयोग किया गया । कृतित्व के आधार पर ऋषियों के भी दो वर्ग हैं, एक तो एकाकी – दूसरे पारिवारिक । एकाकी ऋषि वे हैं । जिन्होंने स्वयं मंत्र रचना की, और पारिवारिक में अन्य मंत्र द्रष्टा भी हैं । इस दृष्टि से देखा जाए तो अदिति, अदिति दाक्षायणी, उर्वशी, गोधा, बहूब्रह्मजाया, रोमशां, वागाम्भृणी, श्रद्धा, कामायनी, सरमा देवशुती एवं सूर्या–सावित्री जुहु – एकाकी ऋषिकाएँ हैं ।[१]

वैदिक काल में नारी को सर्वोच्च स्थान की प्राप्ति हुई है । मैत्रेयी, गार्गी जैसी विदुषी नारियों ने अपने जीवन को एक यज्ञ की भाँति जिया है । वेदों के सहस्त्रों मंत्रों में नारी की गरिमामयी छवि को अंकित किया गया है । ऋग्वेद में स्त्री को यज्ञ में ब्रह्मा का स्थान ग्रहण करने योग्य स्वीकार किया गया है ।

सरस्वती, देवयन्तो, हवन्ते, सरस्वतीमध्वरे तायमाने,
सरस्वती सुकृतो अहुयन्त सरस्वती दाशुषे–वार्यदात् ।''[२]

देवी गुणों के इच्छुक मनुष्य, देवी सरस्वती का आह्वान करते हैं, यज्ञ के विस्तारित होने से, वे देवी सरस्वती की स्तुति करते है । श्रेष्ठ पुण्यात्माओं के द्वारा देवी सरस्वती का आह्वान करने से वे दानियों की आकांक्षाओं को परिपूर्ण करती हैं ।

अर्थात् दिव्य गुणों की कामना करनेवाली, विदुषी देवी को हम आमंत्रित करते हैं । यज्ञों के अवसर पर सरस्वती रूपी सुगठित देवी को हम बुलाते हैं । उत्तम कर्मवाली सन्नारी को हम आहूत करते हैं । वह ज्ञानशील व्यक्तियों को उत्तम ज्ञान देती है ।

वैदिक संहिताओं में नारी के गौरव तथा महत्त्व को सर्वत्र प्रस्थापित किया गया है तथा उस विदुषी को गृहस्थ आश्रम की एक धुरी के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है । वेदों में नारी को गृहस्थी की गुरूत्तर धुरा को वहन करने की प्रेरणा तो दी ही है, समय पड़ने पर स्त्री को वीर भावनाओं से युक्त होकर प्रचंड कर्मों में लग जाने का भी आदेश दिया है । ऋषिका-शची पौलोमी, वेद की इस ऋचा की ओजस्वी वाणी स्त्री की गरिमा को प्रकट करती है ।

''उदसौ सूर्यो अगदुध्यं माम को भगः ।
अहं तदिद्वका पतिमभ्यसाक्षि विषासहिः ।।''[३]

द्युलोक में सूर्यदेव का उदय मेरे लिए ही है – उदय के साथ-साथ मेरे सौभाग्य की भी वृद्धि हो रही है । सूर्य की शक्ति से ही मैं अपने पति देव को प्राप्त करके विरोधियों को पराजित करने वाली, तथा सहनशीला बनी सपत्नियों को हरा दिया ।

''अहं केतुरहं मूर्धाहमुग्रा विवाचनी ।
ममदेनु क्रतुं पतिः सेहानाया उपाचरेत ।''[४]

स्त्री स्वीकार करती है तथा वह पूरे आत्म सन्मान के साथ कहती है मैं केतु (ध्वजा) तुल्य हूँ, समाज की मूर्धास्थानीय हूँ, तेजस्विनी बनकर सभाओं में

भाषण देनेवाली हूँ । मेरा पति, मेरी इच्छा, ज्ञान और कर्म के अनुरूप आचरण करता है ।

वैदिक स्त्री सुमंगला है । वह केवल स्वयं तक ही सीमित न रहकर अपने पति व संतान की शुभेच्छा एवं उन्नति की पराकाष्ठा तक पहुँचती है । उसका हृदय एवं मन सुकामनाओं एवं सुभावनाओं से परिपूर्ण है । वह 'स्वयं' है लेकिन केवल 'स्वयं' नहीं है । वह 'स्वाभिमान' से ओतप्रोत है परंतु अभिमान की सीमारेखा तक पहुँचने से पूर्व ही वह अपने मर्यादित संयम के गौरव को संभाल सकती है । इसीलिए वह पूज्य है ।

प्रत्येक–वस्तु में कारण निहित होता है । इस स्त्री के पूज्या होने में भी प्रमुख कारण है, उसका मर्यादित होना । मर्यादा में रहकर कोई भी कार्य सहनीय होता है... तथा मर्यादा की रेखा से बाहर जाकर वही कार्य अशोभनीय बन जाता है । वैदिक काल की यही स्त्री सशक्त है । ''उपनिषदों के समय की गार्गी जनक की सेना में याज्ञवल्क्य के दर्शन एवं अध्यात्म पर गंभीर संवाद करती है । गार्गी का उपनाम वाचक्वनी है । वे वचक्तु ऋषि की विदुषी पुत्री है । परंतु अनेकों विद्वानों द्वारा यह स्वीकार किया गया है कि वचकतु की पुत्री होने के कारण गार्गी का उपनाम वाचक्वनी नहीं पड़ा वरन् अपने समय की अत्यंत विदुषी एवं प्रखर वक्ता एवं वाद–विवाद में अप्रतिम योग्यता प्राप्त करने के कारण उनका नाम वाचक्वनी पड़ा । यहाँ पिता के कारण पुत्री को नाम व यश की प्राप्ति नहीं हुई वरन् पुत्री के कारण पिता को यश की प्राप्ति हुई ।

गार्गी के जैसी ही मैत्रेयी का प्रसंग भी उपनिषद में प्राप्त होता है । महिला विदुषियाँ मोक्ष अथवा अमरत्व प्राप्त करने तक के लिए सचेष्ट थीं । उपनिषद की महिला सांसारिक सुखों को त्यागकर आत्मज्ञान या ब्रह्मज्ञान की और उत्कृष्ट दिखाई देती है ।

याज्ञवल्क्य की एक पत्नी मैत्रेयी तथा दूसरी पत्नी का नाम कात्यायनी है । दोनों पत्नियों में अत्यंत विरोधाभासी स्वभाव निहित है । मैत्रेयी जहाँ विदुषी व दार्शनिक है वहीं दूसरी ओर कात्यायनी घरेलू, बुद्धि की अल्पभाषी स्त्री है । जब याज्ञवल्क्य को वैराग्य उत्पन्न हुआ तो उन्होंने अपनी संपत्ति को दो हिस्सों में बाँटने का निश्चय किया । कात्यायनी चुप रही परंतु विदुषी दार्शनिक पत्नी मैत्रेयी ने पूछा कि क्या संसार की समस्त संपत्ति मुझे अमरत्व दिला सकती है ? याज्ञवल्क्य का उत्तर था 'नेति' अर्थात् कभी नहीं, ''धन से सब प्रकार के सुख मिलते हैं, लेकिन अमरत्व तो नहीं मिल सकेगा ।'' मैत्रेयी ने कहा कि ''अहं तेन कुर्याय देनाहं ना मृत श्याम'' अर्थात् उस वस्तु का मैं क्या करूँ जो मुझे अमरत्व प्रदान न कर सके, मुझे अमरत्व प्राप्त करने का मार्ग बताये ।''[५]

(ब) पुराणकाल

पुराण साहित्य भी स्त्री उदाहरणों का खजाना है । पुराण अठ्ठारह हैं तथा वे उपनिषदों के कई गुना बड़े हैं । मदालसा भी अपने समय की अत्यंत विदुषी स्त्री हुई है । उनकी सोच, उनका चिंतन एवं दर्शन बिलकुल ही भिन्न था । अपने पुत्र अर्लक को स्वयं मदालसा ने ही धर्म–दर्शन नीति एवं वाग्व्यवहार की शिक्षा प्रदान की और मदालसा एवं ॠतुध्वज के इस पुत्र अर्लक ने ही बहुत उन्नति की ।

यदि गंभीरता पूर्वक चिंतन किया जाय तो हम देखेंगे कि अधिकांशतः आदरणीय एवं गरिमामय शब्द स्त्रीलिंग के हैं । भाषा स्वयं में स्त्रीलिंग है । वाणी के बारे में तो कितनी ही बातें समक्ष आती हैं । ॠग्वेद से लेकर कबीर तक वाणी की सुघडता के बारे में कितनी ज्ञान से ओतप्रोत बातें कही गई हैं ।

कबीर का यह दोहा तो सर्वविदित है ही, ऐसी बानी (वाणी) बोलिए, मन का आपा खोय, औरों को शीतल करे, आपहुँ शीतल होय ।"[६]

यह स्त्रीलिंग 'वाणी' न केवल स्त्री वरन् पुरुष के लिए भी उतनी ही सुखद एवं शीतल है, जितनी स्त्री के लिए । जीवन की गाड़ी के पहिए स्त्री एवं पुरुष दोनों के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है । हमने ऊपर देखा कि स्त्री को कितना महत्त्वपूर्ण स्वीकार किया गया । आगे भी हम कुछ अन्य स्त्रियों के प्रति समादार ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करेंगे, परंतु एक बात बीच में यह कहने की आवश्यकता महसूस हो रही है कि स्त्री जननी है तो पुरुष जनक । दोनों के योग से ही इस सृष्टि की रचना संभव है । सर्वविदित है कि पुरुष पिता के सहयोग एवं समभाव से ही स्त्री माँ के गर्भ से सृष्टि के नायक पुरुषों ने जन्म लिया तथा विश्व को एक नवीन, दिशा–दी । उन्होंने स्त्री के व्यक्तित्व को समुचित आदर प्रदान किया एवं गरिमामय पद पर प्रतिष्ठित किया । वास्तव में प्रकृति एवं पुरुष दोनों ही एक–दूसरे के पूरक हैं, दोनों एक–दूसरे के बिना अधूरे हैं । परंतु जब पुरुष प्रत्येक क्षेत्र में स्त्री पर हावी होने का प्रयास करता है तब परेशानी पैदा होती है । जब स्त्री केवल भोग्या बनती है तब मानसिक तनाव की शिकार होती है, जब कठपुतली की भाँति पुरुष के हाथ की डोरी पर नाचती है । तब से कचोट होती है जब वह समर्थ होने के बावजूद भी अपने निर्णय स्वयं नहीं ले पाती । तब उसे अपनी निरीहता पर बेचारगी का अहसास होता है ।

"पुरुष विष्णु है – स्त्री लक्ष्मी । पुरुष विचार है स्त्री भाषा । पुरुष धर्म है स्त्री बुद्धि । पुरुष तर्क है स्त्री भावना । पुरुष रचयिता है, स्त्री रचना । पुरुष मंत्र है, स्त्री उच्चारण, पुरुष धैर्य है, स्त्री शांति... ।"[७]

पुरुष प्रधान समाज तो सदियों से है । हमने कुछ चर्चा वैदिक युग की की है । इस पुरुष समाज ने उन्हें गौरव दिया व सम्मानित पद प्राप्त कराएँ । ऋृषिकाएँ, ऋृषि पत्नी न होकर वे विदुषी स्त्रियाँ थीं । जिन्हें वेदों की

ऋचाएँ बनाने का गौरव प्राप्त हुआ । ''प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद में ऋषियों के साथ–साथ अनेक ऋषिकाओं के उल्लेख भी मिलते हैं । महत्त्वपूर्ण बात यह है कि दोनों के संबंध में विवरण बराबर है । ऋग्वेद के प्रथम मंडल में रोमशा (सू. १२६) लोपामुद्रा (सु. १७६) एवं ममता(सू. १०) का उल्लेख है, दूसरे–तीसरे, और चौथे मंडल में किसी ऋषिका का नाम नहीं है । पंचम मंडल में विश्वारा (सू. २८) आठवें मंडल में अपाला (सू. ६१) एवं शाश्वती (सू. ३४) के मंत्र है । दशम मंडल में सबसे अधिक ऋषिकाएँ सम्मलित की गई हैं । श्रद्धा कामायनी (सू. १५१) यमी वैवस्ती (सू. १५४) धोषा (सू. ३६–४०), वाक् (१२५) एवं सूर्या (१०८२) की रचनाएँ हैं । ये सब स्त्री ऋषिकाएँ हैं ।''[८]

विदुषी स्त्रियों के अतिरिक्त घोषा, अपाला तथा सूर्या सावित्री आदि कई विदुषी स्त्रियों के द्वारा रचित सेंकड़ों मंत्रों को बड़े सम्मान सहित वेदों में सम्मिलित किया गया । ऐसी गुणवंती स्त्रियों को पुरुषों ने न केवल सम्मान प्रदान किया तथा अपने समक्ष बैठाया वरन् उन्हें उनके उत्तर के अनुरूप उच्च पद भी प्रदान किये गये । यहाँ पर सूर्या सावित्री के बारे में चर्चा करना उचित रहेगा । इन्होंने विवाह सूक्त की रचना की । उनके द्वारा रचित ४७ मंत्रों में से आज भी कई मंत्र विवाह के अवसर पर दोहराये जाते हैं । वर–वधू को शुभाशीर्वाद देते समय सूर्या सावित्री द्वारा रचयित मंत्र ही पढ़ा जाता है ।

सुमंङ्गलीरियं वधूरिमां समेत पश्यत ।
सौभाग्यमस्यै दत्वायाथास्तं वि परेतन ।।[९]

(यह नववधू मंगल चिह्न से सुसज्जित है । आर्शीवाद देने वाले सब आये, उसके दर्शन करें, इस विवाहिता को उत्तम सौभाग्यवती होने की शुभाशीष देने के बाद, सब अपने अने घर जायें)

सूर्या–सावित्री ने अपने पिता की पसंद के सोम से विवाह न करके पूषा से विवाह किया ।

दो ऋषिकाओं का व्यक्तित्व अलग से उभरकर सामने आता है । वीरता की दृष्टि से मुदगल पत्नी जिसने केवल एक बैल को गाड़ी में जोतकर चोरों का पीछा किया और चोरी गयी गाएँ वापस लौटायी । और दूसरी है – रोमशां जो अपने पति की गर्वोक्तियों के बाद कहती है – मेरे कार्यों को (काम को) अपने से छोटा मत समझो संभवतः यह नारी अस्मिता की प्राचीनतम आवाज है ।"[१०]

(क) थेरी गाथाएँ

ऋग्वेद के बाद, महिला लेखन के नमूने हमें थेरी गाथा के रूप में मिलते हैं । प्रथम भारतीय नवजागरण काल ई. पू. ४०० वर्ष माना जाता है । इस समय तक वैदिक धर्म कर्मकांड की सीमा तक पहुँचकर समाज की चुनौती को स्वीकार करने में असमर्थ हो चुका था ।"[११]

थेरी गाथाएँ ५२२ गाथाओं का संकलन है । जिसमें लगभग सौ थेरियों के उद्गार हैं । थेरी गाथा में विभिन्न वर्गों एवं वर्णों की महिलाएँ शामिल हैं, जिन्होंने भिक्षुणी बन अपने जीवन के संचित अनुभवों को इन गाथाओं में गाया है । खेमा, सुमना, शैला और सुमेधा – कौशल – मगध और आलवी के राजवंशों की महिलाएँ थीं । महाप्रजापती, तिष्या, अभिरूपा, नंदा, सुंदरी, जेंती, सिंहा, घीरा, मित्रा, भद्रा, उपथमा और अन्यतरा, उत्तमा, चाला, उपचाला, शिशूपचाला, रोहिणी, सुंदरी, शुभा, भद्रा, कापिलायिनी, मुक्ता, नंदा, सकुला, चंदा, गुप्ता, दन्तिका और सोमा, ब्राह्मण वंश की थीं । गृहपति और वैश्य–वर्ग की महिलाओंमें, पूर्णा चित्रा, श्यामा, उर्वरी, शुक्ला, धम्मदिन्ता, उतमा, भद्रा, कुंडलकेशा, पटचारा, सुजाता और अनोपमा के नाम लिये जा सकते हैं ।

अडदजासी, अभयमाता, विमला और अम्बपाली, गणिकाएँ है । सुभा सुतार की पुत्री है – और पूर्णिका दासी की ।

थेरी गाथाओं की अपनी पहचान है, यह पहचान अनेक मुखी है । सबसे पहली पहचान स्त्री होने की है । इसकी शुरुआत बाह्य प्रकृति के लगाव से होती है । थेरी गाथाएँ अपने भीतर की यात्राएँ हैं, जिसमे उनकी पूर्व स्मृतियाँ भी जुड़ी हैं ।''[१२]

(ड) संस्कृत महाकाव्य काल

रामायण–महाभारत युग, अर्थात् महाकाव्य युग की नारी भी कम शक्तिशाली एवं सम्माननीया नहीं है । दोनों महाकाव्य वैदिक युग की परंपरा को लेकर ही चलते हैं । मंथरा, कैकेयी तथा दशरथ कैकेयी प्रसंग इस तथ्य के परिचायक हैं कि स्त्रियों में विलक्षण तर्कशीलता होती है । रामायण की कैकेयी प्रसंग में अवश्य–दुर्घटना रोपण प्रदर्शित होता है । परंतु कैकेयी की तर्कशक्ति स्त्री की समर्थता का भी प्रदर्शन करती है । मंदोदरी का अपने पति रावण को समझाना, सुलोचना का राम से तर्क–वितर्क करना, सभी स्त्री की समृद्ध, परिकृष्त मानसिकता को प्रर्दशित करते हैं ।

महाभारत की स्त्री भी उसी वेदिक परंपरा से ओतप्रोत है – अर्थात् बुध्दिशालिनी है । यों तो समयानुसार अनेकों बदलाव आते रहते हैं । इसीलिए प्रत्येक युग में बदलाव दिखाई देते हैं । महाभारत स्वयं में संपूर्ण साहित्य है । सावित्री–सत्यवान का उपाख्यान आदि अत्यंत महत्त्वपूर्ण घटनाक्रम है ।

''नारदजी ने जब सावित्री सत्यावान को बताया कि एक वर्ष के बाद उसका (सत्यवान) आयुष्य समाप्त होता है – दूसरा वर ढूंढो ।'' सावित्री ने उत्तर दिया कि ''मैंने जिसका वरन किया है वो भले ही अल्पायु हो की दीर्घायु पर वहीं ही मेरा पति होगा, प्रथम मन से निश्चय करके, मैंने वाणी से कहा है – वहीं निश्चयात्मक है ।''[१३]

सावित्री अपनी इच्छाशक्ति एवं दृढ़ विश्वास के बल पर असंभव को संभव करने के लिए सत्यवान से विवाह कर लेती है । इस समस्त कथा में सावित्री ही सर्वत्र छाई रहती है । उसकी चतुराई, विवेक, संवाद वाग्मिता पूरे घटनाक्रम पर हावी रहती है । सावित्री बारंबार दोहराती है कि जहाँ मेरा पति है, वहीं मेरी गति है ।

सावित्री यम को कहती है कि आपने मुझे पुत्र प्राप्ति का वरदान दिया – मगर बिना पति के वो पूर्ण नहीं होगा, आप मेरे पति को जीवित कीजिए । पति बिना पतिव्रता स्त्री का जीवन निरर्थक है । सावित्री पर प्रसन्न होकर, सत्यवान को जीवित करके, यमराज चारसो साल का आयुष्य किर्ती का वरदान देकर चले गये ।''[१४]

सत्यवती, गांधारी, कुंती, द्रौपदी एवं उत्तरा भी निश्चय ही श्रेष्ठ नारीत्व की पहचान है । गांधारी की वाक्पटुता एवं चरित्र के पहलु को इस दृष्टांत से पहचानने की चेष्टा करते हैं । दुर्योधन ने जब अपने पिता धृतराष्ट्र से कहा कि वे फिर से युधिष्ठिर को जूआ खेलने का आदेश भेजे । पुत्र मोह से भ्रमित पिता ने यह त्रुटिपूर्ण कार्य किया, परंतु गांधारी ने अपने पति को बड़ें कटु शब्दों में चेतावनी दी ।

गांधारी ने पुत्र दुर्योधन को युद्ध के मार्ग से जाते हुए रोका, पुत्र ! तू मेरी बात सुन ले, तुम समझोगे ऐसी मुझे श्रद्धा नहीं है, क्योंकि स्वार्थवृत्ति से तुझमें धर्म के दर्पण में देखने की क्षमता नहीं है । कर्ण, दुःशासन अपने–अपने स्वार्थ से तुझे साथ देते हैं । उसे तेरे कल्याण में रस नहीं है । अपने स्वार्थ के लिए युद्ध खेलने अति तत्पर है ।

जिसे तुम राजधर्म कहते हो, वह राज्य से किया हुआ महा अधर्म है । द्रौपदी के संग किया अधर्म आचरण के बाद मेरा जीवन दुःखी हो गया है । धरती फट क्युं नहीं गई । तुम्हारी यह अधर्म–इच्छा कामना तुम्हारे अधर्मी–दुराचारी मानस की प्रतिध्वनि है ।[१५]

स्पष्ट है कि पत्नी न केवल पत्नी वरन् आवश्यकता पड़ने पर प्रत्येक क्षेत्र में पति की सहभागिनी दृढ़ विश्वासी, पति की गुरु भी बन सकती है । पति पुत्र को सुमार्ग पर ले जाने का प्रयत्न भी करती है । यह भी सत्य है कि स्त्री किसी भी युग की क्यों न हो समय आने पर वह अपने अधिकार के लिए दृढ़ बनी रही है ।

स्त्री बुद्धिहीन पति को भी जिस प्रकार विद्वान बनने पर विवश कर देती है, यह कालिदास के विद्वान बनने की घटना से सहज ही प्रत्यक्ष हो जाता है । महापंडिता विद्योत्तमा से अपमानित पराजित होकर ब्राह्मणों ने महामूर्ख कालिदास का विवाह विद्योत्तमा से करा दिया । विद्योत्तमा को जैसे ही मधुयामिनी से पूर्व ही पति की मूर्खता के बारे में ज्ञात होता है, वह क्रोध में भरकर पति को घर से बाहर फैंक देती है । माता काली की कृपा से कठिन परिश्रम द्वारा कालिदास जैसा महामूर्ख पंडित बनता है । तथा अपने आप को पत्नी के समक्ष खड़ा होने योग्य बनाने के पश्चात् ही वह पत्नी के पास आते है । विद्योत्तमा पूछती है – को भवान् ? के उत्तर में कालिदास 'अहं कालिदासोविम्' सुनकर पत्नी क्रोधित हो जाती है वह फिर से पूछती है ''अस्ति कश्चित् वाग् विशेष? (वाणी में कुछ विशेषता आई कि नहीं ?) इसके प्रत्युतर में इस महाकवि ने जो उत्तर दिया वह ग्रंथों के रूप में समस्त विश्व के समक्ष आज भी गौरव ग्रंथों के रूप में सुप्रतिष्ठित है – 'कुमारसंभवम् – मेघदूतम्, रघुवंशम्, तथा ॠतुसंहारम् । पत्नी पति की मार्गदर्शिका एवं गुरु के रूप में सुप्रतिष्ठित हुई है ।

तुलसीदास की पत्नी रत्नावली के धिक्कार से राम कथा का जन्म हुआ । तुलसीदास के बाद सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' को उनके स्तर का कवि माना गया है । 'राम की शक्ति पूजा' एवं 'तुलसीदास' जैसी रचनाओं के रचयिता को पहले बिलकुल भी हिन्दी का ज्ञान नहीं था, उन्हें उनकी धर्मपत्नी ने भाषा की शिक्षा दी । सन् १९३६ में जब निराला ने अपनी 'गीतिका' का

समर्पण लिखा तब अपनी पत्नी–मनोहरा देवी को अपनी हिन्दी काव्यसाधना की प्रेरणा के रूप में स्वीकार किया । मीरा हो या महादेवी वर्मा सब ने अपने आपको एक सशक्त स्त्री के रूप में प्रतिष्ठित किया है ।

नारी को अमरकोष कार ने ४३ पर्यायवादी शब्दों से अलंकृत किया है । स्त्री, पोषित, अबला, योषा, धोषा, सीमन्तिनी, वधू, प्रतीपदर्शिनी, वामा, वनिता, महिला, अंगना, भीरु कामिनी, वामलोचना, प्रमदा, मानिनी, कांता, ललना, नितंम्बिनी, सुंदरी, रमणा, रामा, कोयना, भामिनी, चंडी, वरारोहा, मतकामिनी, वरवर्णिनी, वृतामेषिका, महिषी, भोगिनी, पत्नी, सहधर्मिणी भार्या, कुटुम्बिनी पुरन्ध्री, अध्यूदा, अधिमिया, स्वयंवरा, पतिवरा, कुलपालिका ।[१६]

इस प्रकार विविध शब्दालंकारों से अलंकृत नारी की अस्मिता को गौरव प्रदान किया गया तथा उसके विविध स्वरूपों को सराहा गया । माता के रूप में उसे आदर प्रदान कर प्रथम गुरु की उपाधि से विभूषित किया गया । माता के रूप में नारी ने वंशवृद्धि की तथा परिवार को सशक्त बनाया । माता के रूप में प्रथम गुरु को श्रद्धा, स्नेह, विश्वास, करुणा, त्याग व ममता की मूर्ति के रूप में सराहा गया । माता का रूप सदैव ही आदरणीय निंदा मुक्त रहा है ।

चरित्र निर्माण का मूलाधार माता को ही स्वीकार किया गया । आदिकाल से लेकर आद्यपर्यंत एक उच्च पद पर आसीन रखा गया । स्त्री का कोई भी रूप कुछ मुटिपूर्ण हो सकता है परंतु माता का रूप सदा ही अपने बालकों के दिल रहता है । स्त्री को संप्रयास माता का पद संभालने की आवश्यकता नहीं होती वह माँ है जो प्रकृति प्रदत्त है । नारी की उपमा धरती से की जाती है । नारी भी अपनी संतानों का भार अपने में समाए रखती है । किंवदंती है कि दस बालक अपनी एक माँ का बोझ नहीं संभाल पाते जबकि एक माँ अपनी दस संतानों का बोझ हँसते–हँसते संभाल लेती है । कभी–कभी यह बात सुनकर मन असंयमित हो उठता है कि आज की स्त्री के चरित्र व

व्यक्तित्व पर कुठाराघात होता है । समय परिवर्तनशील है, यह तो वास्तविकता है, परंतु आवश्यक नहीं कि परिवर्तनशीलता ''माँ'' की परिभाषा ही बदल डाले ।

यदि ईश्वर के मन में नर एवं नारी के प्रति कोई भेदभाव की भावना होती तो वह नारी को केवल एक मशीन की ही भाँति पैदा करता, न कि एक मनुष्य की भाँति । जब हम मानव अथवा प्राणी की बात करते हैं । तो उस में सभी आत्माओं का समावेश हो जाता है ।

Human being उसमें स्त्री–व–पुरुष दोनों सम्मिलित होते हैं । फिर आखिर ऐसी क्या स्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं कि नर–नारी में भेदभाव उत्पन्न होने लगता है । एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न है कि यदि समाज केवल पुरुष बल पर ही चल सकता तो आखिर स्त्री की आवश्यकता समाज में क्यों और किसलिए है ?

सर्वविदित है कि माता के रूप में नारी का सम्मान इसीलिए श्रेष्ठ स्तर पर है क्योंकि नारी के बिना सृष्टि की रचना ही संभव नहीं है । पुरुष श्रेष्ठ हो अथवा अधम नारी कोख से ही उत्पन्न होता है । वह राजा हो अथवा रंक माँ की कोख से ही अंकुरित होता है, और एक नाजुक पौधे के समान पोषित–पल्लवित होता है । यदि माँ ही नहीं है तो सृष्टि का कोई भी प्राणी किस प्रकार अपनी पहचान बना सकता है ? इस प्रकार माता ''मातृत्व'' पुरुष की भाँति एक स्वतंत्र व्यक्तित्व की, अस्तित्व की अधिकारिणी है ।

या देवी सर्वभूतेषु, श्रद्धा रूपेण संस्थिता,

नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमो नमः ।[१७]

स्त्री को विद्या – धन – संतुष्टि, बुद्धि, शक्ति, आदि अनेकों अलंकारों से विभूषित किया है । यह स्त्री–दुर्गा माँ है जो समस्त प्राणियों में विभिन्न प्रकार से विद्यमान है । इस दुर्गा माँ की पूजा अर्थात् स्त्री की पूजा तभी प्रारंभ की गई होगी जब उसकी आवश्यकता महसूस की गई होगी ।

भारतीय सभ्यता के उषाकाल का सूत्रपात प्रागैतिहासिक काल में भारतीय संस्कृति के अभ्युदय को माना जा सकता है । सिंधु घाटी से प्राप्त अवशेषों से तत्कालीन मानव समाज की प्रगति का उल्लेख प्राप्त होता है । आधुनिक युग तक पहुँचते–पहुँचते नारी के मार्ग में जितने ही प्रस्तर पड़ाव आये ।

‘‘द्वितीय भारतीय नवजागरण के साथ–साथ प्राकृत और संस्कृत की कुछ कवयित्रियों के छींटे साहित्येहास पर पड़े हैं । इसी युग में रामायण–महाभारत को अंतिम रूप प्रदान किया गया । स्मृतियों की रचना हुई, लघु उपनिषद एवं पुराणों को स्थान मिला । विभिन्न वर्गों को समाज में निर्धारित स्थान दिया गया, अवतारवाद की धारणा का विकास हुआ ओर एक बार फिर ब्राह्मण धर्म को प्रभुत्व प्राप्त हुआ । इस काल की विशेषता थी– गंभीर राजनीतिक बौद्धिक धार्मिक और कलात्मक सक्रियता । नव जागरण का प्रमुख संवाहक भाषा बनी संस्कृत भाषा । छह ब्राह्मण दार्शनिक संप्रदायों का जन्म हुआ, कालिदास, भारवि, बाणभट्ट, कुमारदास, दंडी और विशाखदत्त । मथुरा विदिशा सारनाथ और नालंदा की कला अस्तित्व में आई । गुप्तकाल तथा उसके बाद की तीन शताब्दियों में भारतीय जनता की संरचना में तेजी से परिवर्तन आया । साथ–साथ संप्रदायों तथा हिन्दू, बौद्ध और जैन दर्शन प्रणालियों की आश्चर्यजनक वृद्धि हुई । इस प्रकार नवब्राह्मण, नवजागरण का उद्‌देश्य था दुःखकातर–पृथ्वी पर सुव्यवस्था स्थायित्व, दारुण मलेच्छों को पराजित कर जन साधारण की सर्वोन्मुखी उन्नति और समृद्धि ।’’[१८]

‘‘गुप्त काल के समाप्त होने तक सामन्तीकरण एवं सांस्कृतिकीकरण की प्रक्रिया पूर्ण हो चुकी थी । संस्कृत भाषा को साहित्यिक प्रभुत्व प्राप्त था, किन्तु अपभ्रंश भाषाएँ विकसित हो रही थी । प्राकृत काल (१–५५० ई.) संस्कृत कविता का स्वर्ण युग है, ‘गाथा सप्तशती’ में लगभग सोलह कवयित्रियों की रचनाओं के उल्लेख टीकाकारों ने किये है । लगभग सभी कवयित्रियाँ सुशिक्षित राज–घरानों से संबंध रखती हैं ।’’[१९]

(इ) मध्यकाल

"उतर भारत में हर्षवर्धन (सन् ६०६–६४७ ई.) और दक्षिण में पुलकेशिन द्वितीय (सन् ६१०–६४२ ई.) के बाद भारतीय उपमहाद्वीप में केन्द्रीय सत्ता कमजोर हो गयी थी । तेरहवीं सदी का पूर्वार्द्ध, दिल्ली पर सल्तनत सत्ता का क्रमशः मजबूत होने का समय है । हुमायु ने (१५५५ ई.) ने मुगल शासन को सुदृढ़ किया । उतर भारत खास तौर पर हिन्दी भाषी प्रदेश उनके सबसे अधिक प्रभावित हुआ ।"[२०]

हर्षवर्धन के साथ उसकी बहन राज्यश्री शासन में सहयोग करती थी – और दरबार पर उसकी काफी पकड़ थी ।

मुसलमान राजघरानों में भी स्त्रियों की पकड़ राजनीति और सत्ता पर थी । रजिया सुल्तान का नाम तो प्रसिद्ध ही है जिसने गद्दी पर बैठते ही सारी शक्ति अपने हाथों में ले–ली थी । जलालुद्दीन खिलजी की पत्नी मलेकजहाँ ने अपने दामाद अलाउद्दीन खिलजी को अपने नियंत्रण में रखने का प्रयास किया था । इस समय हिन्दू मुस्लिम विवाह की शुरुआत भी हो चुकी थी । स्वयं अलाउद्दीनने अपना प्रथम विवाह कमला देवी और दूसरा विवाह देवगिरि के शासक रामचन्द्र देव की पुत्री से किया था । फीरोज तुगलक की माँ एक हिन्दू महिला थी ।[२१]

मुगल काल में भी यह परंपरा चलती रही । कहा जाता है कि तैमूर की सेना में स्त्रियाँ भाला, तीर और तलवार चलाती थीं । बाबर की माँ कुतलुक निगार खानम सदैव अपने पुत्र के साथ रही और उसकी पत्नी महीम बैगम, उसकी मृत्यु के बाद भी राजनीति में भाग लेती रही । बाबर की पुत्री गुलबदन बेगम सबसे शिक्षित महिला थी, जिसने 'हुमायूँनामा' लिखा ।[२२]

सोलहवीं शताब्दी से लेकर १८वी शताब्दी तक का समय मध्यकाल में रखा जा सकता है । इस काल में महिलाओं की स्थितियों का जितना पतन हुआ उतना कभी नहीं हुआ ।

इस युग के स्मृतिकारों ने बार–बार इस बात पर जोर दिया कि पत्नी के लिए सबसे बड़ा धर्म पति की सेवा है ।[२३]

मत्स्यपुराण का कहना है कि ''पत्नी को सुधार ने के लिए उसे रस्सी से अथवा बाँस की फराटीं से पीटा भी जा सकता है । किन्तु चोट सिर पर या पीठ पर नहीं होनी चाहिए ।''[२४]

विधवा महिला की स्थिति में यह परिवर्तन अवश्य हुआ था कि उन्हें परिवार की संपत्ति में हिस्सा मिलने लगा था । इन सबके अतिरिक्त महिलाओं की स्थिति उत्तरोत्तर खराब होती गई । अतः धर्म की दृष्टि से वे शुद्रवत हो गई । महिलाओं के विवाह की उम्र ८ से १०, शिक्षा नहीवत् थी, उन्हें पूर्ण रूप से पति पर आश्रित रहना पड़ता था । ''माता का स्थान सन्माननीय था ।[२५]

११वीं शताब्दी के प्रारंभ से ही भारतीय समाज पर मुसलमानों का प्रभाव बढ़ने की वजह से हमारी संस्कृति की रक्षा करना जरूरी हो गया था । इसलिए ब्राह्मणों ने संस्कृति की रक्षा, महिलाओं के सतीत्व तथा रक्त की शुद्धता बनाए रखने के लिए महिलाओं के संबंध में नियमों को अधिक कठोर बना दिया । लेकिन वे इस बात को भूल गए कि महिला जिसका समाज एवं संस्कृति में अपना एक विशेष महत्त्व है उसके चेतना शून्य हो जाने पर समाज एवं संस्कृति अपने आप स्वतः ही समाप्त हो जाएँगे । सती प्रथा को धार्मिक आवरण प्रदान कर बढ़ावा दिया गया ।

इस प्रकार महिलाएँ अपने अस्तित्व के लिए पूर्णतया पुरुषों पर निर्भर हो गयी । अज्ञान के वशीभूत भारतीय समाज में इन्हीं कुरीतियों ओर मिथ्यावाद को भारतीय संस्कृति का अंग समझा गया ।

(ई) ब्रिटीशकाल में महिलाओं की स्थिति

अंग्रेजी शासन काल में भारतीयों द्वारा समाज सुधारने के अनेक प्रयत्न किए गए, लेकिन सरकार की ओर से महिलाओं का शोषित बने रहना अंग्रेजों के लिए भी लाभप्रद था । इसी का परिणाम यह हुआ कि २०वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक महिलाओं की निर्योग्यताओं के आधार पर उनकी दयनीय स्थिति थी ।[२६]

अंग्रेजों के आगमन का एक परोक्ष प्रभाव यहाँ स्त्रियों की स्थिति पर पड़ा । अंग्रेज पादरी अपने धर्म प्रचार के लिए हिन्दु धर्म की कुछेक कुरीतियों पर प्रहार करते थे । दूसरी तरफ अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार-प्रसार से यहाँ के कुछ लोग पाश्चात्य साहित्य एवं दर्शन से परिचित हुए । अतः अपने धर्म एवं समाज की रक्षा हेतु कुछ धार्मिक सामाजिक आंदोलन हुए जिनके कारण स्त्रियों की स्थिति में कुछ सुधार हुए । ऐसे महानुभावों में राजा राममोहनराय, केशवचंद्र सेन, दयानंद सरस्वती, महादेव गोविंद रानडे, गोपालकृष्ण गोखले, नवीन चंद्र राय आदि मुख्य है । बाद में ज्योतिबा फूले, महात्मा गाँधी तथा डॉ. बाबा साहब आँबेडकर आदि भी इस क्षेत्र में आये ।[२७]

सामाजिक क्षेत्र में महिलाओं को शिक्षा प्रदान करने, स्वतंत्र रूप से अपने अधिकारों की माँग करने और व्यवहार-नियमों में किसी प्रकार का परिवर्तन करने का अधिकार नहीं था । अज्ञानता ज्यादा थी साक्षरता का प्रतिशत ६ से भी कम था । शिक्षा भी केवल कामचलाऊँ ही थी । किसी भी महिला द्वारा बाल-विवाह अथवा पर्दा प्रथा का विरोध करना उसके चरित्र के लिए एक कलंक समझा जाता था । महिला के संबंध क्षेत्र, माता- पिता- परिवार- धर्म- परंपरा तक था । धार्मिक दायित्वों का निर्वाह करना ही उनके मनोरंजन का एक मात्र साधन था ।[२८]

परिवार में महिलाओं के अधिकार समाप्त हो गये थे । वह गृहकार्य करनेवाली संचालिका थी । सभी अधिकार-परिवार के 'प्रमुख कर्ता' पुरुषों को

प्राप्त हो गए । विवाह बहुत–छोटी आयु में हो जाने से उसका जीवन आरंभ में परंपरागत निषेधों और रूढ़ियों से युक्त हो गया । वैदिक काल की साम्राज्ञी अब सास की 'सेविका' बन गयी । परिवार में महिला का एक मात्र कार्य बच्चों को जन्म देना और पति के सभी संबंधियों की सेवा करना रह गया । दहेज द्वारा शोषण, गृहकार्यों में शोषण, धार्मिक कार्यों को लेकर महिला का शोषण, एक सामान्य–सी बात हो गई । सब से बड़ा दुर्भाग्य तो यह था कि महिलाएँ स्वयं भी इस अत्याचार को अपने पूर्वजन्म के कर्म का फल मानकर इससे संतुष्ट रहती थीं । इससे उनकी स्थिति में निरंतर ह्रास होता गया ।[२९]

आर्थिक क्षेत्र में उन्हें संयुक्त परिवार की संपत्ति में से हिस्सा प्राप्त करने से वंचित नहीं रखा गया – बल्कि महिलाओं को अपने पिता की संपत्ति में भी अधिकार नहीं था । महिलाओं के द्वारा कोई आर्थिक क्रिया करना एक अनैतिक कार्य के रूप में देखा जाने लगा, कुलीनता – स्त्रीत्व के विरुद्ध माना गया । परिणाम स्वरूप उन्हें पुरुषों की दया पर निर्भर रहना पड़ता था । आत्महत्या इस निर्भरता का एक मात्र समाधान रह गया ।[३०]

डॉ. के. एम. पनिकर ने लिखा है, कि हिन्दू समाज में पुत्री के अधिकार को कानून द्वारा समाप्त कर दिया गया था । पत्नी पति के परिवार का एक अंग बन गई थी – और विधवाओं को मृतक के समान माना जाता था ।[३१]

राजनीति में महिलाओं का कोई स्थान नहीं था । घर में पुरुष शोषण करता, वही पुरुष अंग्रेजों का गुलाम था । यद्यपि १९१९ के बाद महिलाओं को मताधिकार देने के प्रयत्न किए गए लेकिन इसमें कोई व्यावहारिक सफलता नहीं मिल सकी । सन् १९३७ के चुनाव में पति की शिक्षा और संपत्ति के आधार पर बहुत थोड़ी – सी महिलाओं को मताधिकार – प्रदान किया गया । महात्मा गांधी के नेतृत्व में सन् १९१९ के पश्चात् कुछ महिलाओं ने राजनीति में भाग अवश्य लिया, लेकिन कुलीन परिवार इसका सदैव विरोध करते रहे ।[३२]

महात्मा गांधी द्वारा चलाए गए विविध आंदोलनों में कुछ स्त्रियों ने भाग अवश्य किया था, परंतु वे तमाम स्त्रियाँ प्रायः उच्च वर्ग से संबंधित थीं । इसाई धर्म प्रचार के विरुद्ध जो पुनरुत्थानवादी, प्रवृत्तियाँ विकसित हुई । उसके कारण स्त्रियों को कुछ राहत मिली ।[३३]

धर्म के नाम पर स्त्रियों का शोषण हुआ दक्षिण के कई मंदिरों में 'देवदासी' प्रथा चलती थी । मठो, अखाड़ो में स्त्रियों का शोषण होता था ।

निम्न सामान्य दलित जाति की स्त्रियों का शोषण होता था, एकतरफ निम्नजाति शुद्र अश्पृश्य मानी जाती थी दूसरी तरफ उससे शारीरिक संबंध रखने मजबूर किया जाता था ।

डॉ. के. एम. पनिकर ने तो स्त्रियों की निम्न स्थिति के लिए संयुक्त परिवार प्रथा को ही उतरदायी माना है । संयुक्त परिवार में नारी चेतना को कुंठित करने वाली स्थितियाँ विद्यमान थीं । आज भी बहुत से माँ–बाप अपनी बेटियों के लिए छोटे परिवार या विभक्त परिवार पसंद करते है यह अकारण नहीं है ।[३४]

इसाई धर्म के साधु–पादरी अपने धर्म का प्रचार करते और दलित जातियों का शोषण करके धर्म परिवर्तन करवाते । इसे रोकने के लिए कई संस्थाओं ने विरोध किया, आंदोलन हुए, आंदोलनों में ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, आर्यसमाज, थियोसोफिकल सोसायटी आदि प्रमुख हैं ।

इतने उच्चपद पर आसीन स्त्री अथवा माता का जब अपमान होने लगा उसे तिरस्कृत किया जाने लगा, उसकी आवश्यकता जब शनैः शनैः फीकी पड़ते लगी, यद्यपि, ऐसा होना संभव ही नहीं था क्योंकि माता के बिना सृष्टि ही असंभव थी, परंतु जब ह्रास होने लगता है, विचारों में संकीर्णता आने लगती है, जब किसी भी व्यक्ति के 'अहं' के कारण समाज में पक्षपात होने लगता है वहाँ कटुता का पनपना स्वाभाविक हो जाता है । वह पुरुष को जन्म दे उसे

शक्तिशाली बनाने में पूर्ण सहयोग दे और फिर उसी के द्वारा पूरी उम्र प्रताडित होती रहे ? फिर आखिर क्यों आवश्यक है नारी ?

क्योंकि वह माता है – गर्भ पाल पोषकर पहले गर्भ में, फिर प्रसव पीड़ा में, और उम्र भर मानसिक तनाव में टूटती जुड़ती रहे उसी का नाम नारी, माता, बहन–बेटी या फिर केवल उपभोग्या ?

स्त्री भी इसको स्वीकार करती है कि उसे विभिन्न अवस्थाओं में विभिन्न पदों को संभालना होता है, अथवा कहें कि अपने बहुमुखी व्यक्तित्व से वह हृदयों को जीत सकती है । परंतु जैसा सर्वविदित है कि कोई भी मनुष्य संपूर्ण नहीं है – स्वभावतः नारी भी आवश्यक नहीं कि ऊपरोक्त समस्त गुणों से परिपूर्ण ही हो परंतु पुरुष समाज में कोई भी उसके व्यक्तित्व एवं अस्तित्व की आवश्यकता पर प्रश्न चिन्ह क्यों लगा देते हैं ? आखिर क्यों, या तो स्त्री को आसमान पर बिठा दिया जाता है – अथवा जमीन पर पटक दिया जाता है ।

यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवताः । उक्त पंक्ति में यही भाव है ।

आज की नारी स्वयं को देवी समझकर ध्यानावस्थित होकर बैठने की मानसिक स्थिति में नहीं है । और देवता कौन ? वह पुरुष वर्ग जब जब चाहे स्त्री को बना दे और जब चाहे उसे पतिता का आभूषण पहना दे ।

हमने क्रमशः नारी की स्थिति, उसकी अस्मिता के बारे में देखने का प्रयत्न किया है । यों तो नारी को महाभारत काल तक पर्याप्त आदर प्राप्त हुआ । यदि हम इस बात को इस प्रकार विश्लेषित करें कि यहाँ केवल नारी की बात न कर पूर्ण मानवजाति के संदर्भ में विचार करने पर देखेंगे कि कोई भी मनुष्य जब अपने धर्म से विमुख होता है, तब वह अनादर का पात्र होता है । यहाँ आपत्ति यह नहीं है कि यदि स्त्री त्रुटिपूर्ण कार्य करे, तब भी उसे समादर प्राप्त होना चाहिए । नहीं, कदापि नहीं । सीमाएँ तोड़ने का अधिकार तो किसी को नहीं है ये सीमाएँ समाज ही बनाता है और पुरुष और स्त्री

दोनों ही समाज की महत्त्वपूर्ण आवश्यक इकाइयाँ हैं । परंतु यदि एक इकाई किसी सीमा का उल्लंघन करती है तो उस पर दोषारोपण होता है, उसे दंडित किया जाता है, परंतु दूसरी इकाई पर किसी की दृष्टि ही नहीं पड़ती और यदि पड़ती भी है तो उसे अनदेखा कर दिया जाता है ।

वास्तव में परंपराएँ तो वही चली आ रही हैं । हम वैदिक युग से चलते हुए ही तो इस युग में पर्दापण कर रहे हैं । मानस मन वही है, सोच वही है, चिंतन वही है, बदलाव आया है समय में – जो स्वाभाविक ही है । हर समय में कुछ न कुछ बदलाव आते ही हैं – जो कुछ अच्छे लगते हैं, कुछ बुरे । कुछ गलत लगते हैं तो कुछ सही, कुछ उन्नति के मार्ग की ओर अग्रसर करते हैं तो कुछ अवनति की ओर । महाभारत ग्रंथ में नारी के सभी रूपों का चित्रण किया गया है । उस युग में नारी का 'गौरव पूर्ण' रूप तथा समस्त पाप का मूल दोनों रूपों में बड़ा स्पष्ट चित्रण प्राप्त होता है । नारी जहाँ एक ओर प्रशंसा की पात्र रही वहीं दूसरी और निंदित भी बनी रही ।

हिन्दी साहित्य कोश के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति के द्वारा धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की उचित रीति से प्राप्ति हेतु जिन विधि, निषेधमूलक – सामाजिक – व्यावहारिक, धार्मिक, राजनैतिक आदि–नियमों का विधान देशकाल तथा पात्र के संबंध में किया जाता है, वह नीति है । समाज के संतुलन हेतु नीति की आवश्यकता को स्वीकार किया गया है । नीति अर्थात् जो कर्तव्य एवं अकर्तव्य को स्पष्ट करती है । वही नीति होती है ।

नीतिकाल की परंपरा अत्यंत प्राचीन है तथा संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, आदि लगभग सभी भाषाओं में नीति विषयक सूक्तियों की रचना हुई है । शुक्रनीति में नारी की निंदा ही की गई ।

पुरुष को आवश्यकता पड़ने पर अपने शरीर सुख को भोगने के लिए नारी चाहिए भी और बाद में उसे नरक में ले जानेवाली मानकर उसका तिरस्कार भी । एक ओर उसे चंचल अपवित्र, नरक कुंड आदि कहा जाता

है । तो दूसरी ओर मीरा सहजोबाई तथा दयाबाई की भक्ति के उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं । आखिर स्त्री की महत्ता क्या ? क्या चाहता है समाज उससे ? अपनी कठिनाइयों की सीढ़ियों को पार करती हुई स्त्री जब अपने उद्देश्य को प्राप्त कर लेती है । तब भी उस पर कोई न कोई दोषारोपण कर ही दिया जाता है ।

आधुनिक युग में भी अनेकों बुराइयों, उपालंभों के बावजूद भी मातृत्व की महिमा को सही समझा गया । परिवार की महत्ता, माता अथवा स्त्री की आवश्यकता, एवं उसके बिना घर परिवार न होने के बराबर समझा गया । कितने लोगों ने समझा व कितनों ने विरोध किया अभी इसी बात पर चर्चा करना अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं है । नारी की स्थिति का अधिक सपष्ट रूप से अवलोकन करना यहाँ अभीष्ट है ।

यदि हम सिद्ध साहित्य में दृष्टिपात करें तो वहाँ नारी का भिन्न रूप देखने को मिलता है । प्रायः सिद्ध लोग अपनी वाणी को पहेली के रूप में प्रस्तुत करते थे । वाम मार्ग में पंचमकार साधना प्रचलित थी, पंचमकारों में मद्य का प्रमुख स्थान था । वारुणी के अतिरिक्त मैथुन इस साधना का दूसरा महत्त्वपूर्ण अंग है । इस दृष्टि से समाज की निम्न स्तर की स्त्रियों को साधन बनाया जाता था ।

उपनिषदों में ब्रह्मानंद के सुख के परिणाम का अंदाज कराने के लिए उसे सहवास सुख के समान बताया गया । इसका प्रतीक युगनद्धरूप माना गया । शक्तियों सहित देवताओं के युगनद्ध स्वरूप की भावना यथा और उनकी नग्न मूर्तियाँ सहवास की अनेक अश्लील मुद्राओं में बनने की सिद्धि प्राप्त करने के लिए किसी स्त्री, किसी शक्ति – योगिनी या महामुद्रा का–योग–या सेवन आवश्यक हो गया । इस प्रखर सिद्धों की देखा देखी जनसाधारण के लिए धर्म के नाम पर अनाचार फैला हुआ था ।[३५]

अपभ्रंश काल में नारी का सौंदर्य रहन–सहन, स्वभाव, नखशिख नायिकाभेद, आभूषण सज्जा, भोग निर्वाण, मिलन, हाव–भाव, विवाह, विरह वर्णन व सुखी घर में नारी के योगदान के साथ–ही कुत्सिता नारी की निंदा भी की गई है । तथा सदाचरण पर बल दिया गया है । इसके साथ ही नारियों के सामाजिक अधिकार तथा मातृवात्सल्य का अंकन भी किया है ।

''आदि काल में सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थिति को देखें तो विभिन्न धर्म पंथ इस संक्रांति काल खंड में नानारूप धारण कर मूल सिद्धांतों से विचलत होकर जनता के बीच आया है ।

बौद्ध मत से महायान, सहजयान, व्रजयान, मंत्रयान आदि भेदापभेद पैदा हुए । शाक्तो में आनंद भैरवी, त्रिपुर सुंदरी, ललिता आदि की अर्चना प्रणालियाँ, जैन संप्रदाय की नीतिक वामाचार पद्धति अंगीकार कर विकृत हो रहा था । अलौकिक शक्तियों की प्राप्ति और उनका प्रदर्शन सिद्धि समझा जाने लगा । विशेषकर निम्न वर्ग की स्त्रियों से भोग आदि, पंचमकारों की साधना स्वीकृत होने लगी । अर्थात् धर्म की आड में पाप पनपने लगा ।

नारी की पौराणिक अवधारणाओं में अंतर आ गया था । वह भोग्या मात्र रह गई थी तथा क्रय–विक्रय और अपहरण की सामग्री बन गई थी । विदेशी–स्वदेशी राजाओं, सामंतों और उनके कारगुजारों से नारी की इज्जत बचाने हेतु उस पर बंधन कडे हो गए थे । शिक्षा का अवसर नहीं दिया जाता था वह घर की दीवारों में बंद होकर रह गई । सती प्रथा और जौहर प्रथाएँ इसी काल में जनम लेने लगीं ।[३६]

परंतु इसी युग में वीरगाथाओं के माध्यम से नारी के वीरांगना रूप के दर्शन होते हैं । डिंगल काव्य में भी नारी का गरिमापूर्ण रूप चित्रित हुआ है तो ब्रजभाषा के वीरकाल में सहज रूप के भी दर्शन होते हैं ।

महाकवि तुलसीदास ने भारतीय संस्कृति की पावन विचारधारा के उजाले में नारी के मातृ स्वरूप का चित्रण किया है । 'रामचरितमानस' में नारी की

विभिन्न अवस्थाओं का चित्रण किया गया है । सत्–असत् गौण, प्रधान, राक्षसी–मानवी, दैवी, ऋषि, वानरवर्गीय नारी पात्रों का हृदयस्पर्शी वर्णन, अहल्या, मंथरा, कैकेयी, तारा–मंदोदरी के पात्रों के माध्यम से किया गया है । कौशल्या, सीता, पार्वती, सुमित्रा, सुनयना आदि स्त्री पात्रों को कवि की लेखिनी ने अपनी श्रद्धा एवं विश्वास से चित्रित किया है । मातृस्वरूप का चित्रण–भारतीय संस्कृति के आलोक से सुरभित है तथा अच्छे–बुरे सभी पात्रों के चित्रण में संतुलन बनाकर एक स्वाभाविक गरिमा का प्रत्यारोपण किया है ।

(उ) आधुनिक काल

इस प्रकार भारतीय स्त्री प्रारंभिक एवं मध्यकालीन दौर से गुजरते हुए आज आधुनिक युग में अपने अस्तित्व को तलाश रही है । किसी भी युग में नारी की आवश्यकता के बारे में संशय किया ही नहीं जा सकता । उसकी आवश्यकता समाज को सृष्टि के प्रारंभ से ही है तथा जब तक दृष्टि रहेगी अथवा कहा जाय कि जब तक यह संसार रहेगा तब तक उसके 'होने' उसके 'व्यक्तित्व' को नकार पाना कठिन नहीं, असंभव है ।

यह बात अलग है कि नारी के 'स्वयं' को, उसके अस्तित्व को – किस दृष्टि से परखा जाय, देखा जाय तथा जहाँ स्थापित किया जाय । हमने देखा कि नारी को सदा ही समय के हिंडोले में झुलना पड़ा है । वह कभी ऊपर है तो कभी नीचे झूलती ही रही है । सटीक बात तो यह है कि नारी व पुरुष प्रत्येक वस्तु में एक दूसरे के भागीदार बनकर रहें । जिस प्रकार पुरुष भी पूर्ण संपन्न नहीं, नारी भी गुणों व दोषों से परिपूर्ण है । गृहस्थ जीवन में पति या पत्नी दोनों को एक दूसरे से संतुष्ट रहने की आवश्यकता है । कहीं पर पति गुरु पद पर आसीन होता है तो आवश्यकता पड़ने पर पत्नी भी पति को सहयोग देकर उसकी प्रेरणा बनती है ।

आधुनिक नारी की स्थिति के बारे में महर्षि दयानंद सरस्वती की चिंता सर्वोपरि रही । यह वह आधुनिक युग था, जब नारी की स्थिति सर्वथा नगण्य हो चुकी थी । सूर्यकांत त्रिपाठी निराला उन्होंने भी अपनी पत्नी मनोहरा को गुरु के रूप में स्वीकार कर नारी की बुझती हुई मंद रोशनी के दीपक में घृत डालकर उस ज्योति को जलाए रखा ।

डॉ. रामविलास शर्मा – 'निराला की साहित्य साधना' में लिखते हैं 'तुलसीदास को ज्ञान मिला, पत्नी के उपदेश से, निराला को हिन्दी सेवा के लिए प्रवृत्त किया मनोहरा देवी ने ।'[३७]

आत्मविश्वास से परिपूर्ण नारी किन विवशताओं के बीहड़ वनों में भटकने लगी । नारी की दुर्दशा से व्यथित महर्षि दयानंद तथा उनके द्वारा स्थापित 'आर्य समाज' ने नारी की प्रगति के लिए जो कार्य किये वे अत्यंत प्रशंसनीय तो हैं ही, विश्व इतिहास में उनका प्रतिष्ठित एवं अनूठा स्थान है । जब–जब समय में बदलाव आया है, एक इतिहास की रचना हुई है । स्वामी दयानंद का समय अत्यंत, ऊँच–नीच, बुराइयों, असंयमितताओं, अन्यायों, सामाजिक, कुरीतियों का समय था । सर्वविदित है कि अंग्रेजी शासन में महिलाओं पर कितने अत्याचार हो रहे थे । इससे पूर्व मुस्लिम–शासन में बुरखा (नकाब) गुलामी ने स्त्रियों को अपनी लपेट में ले रखा था ।

दयानंद सरस्वती ने स्त्री को पुरुष के समान ही यज्ञादि की वेदी पर बैठने की न केवल आज्ञा दी की वरन् उन्हें प्रोत्साहित किया । कि वे स्वयं को पहचाने । स्त्री ही घर व समाज की मुरध्वजा है । उसे मंत्र द्वारा वेदादि समस्त विद्याओं का अध्ययन करने का अधिकार प्रधान किया गया है । महर्षि दयानंद स्त्री अधिकारों का पक्ष लेते हुए पुरुष समाज को उनके विचारों को बदलने का आदेश दिया है । उन्होंने बड़े स्पष्ट शब्दों में नारी को बेचारी, बोझ, त्याज्य आदि उपालंभों के स्थान पर शक्ति एवं भक्ति की विचारधारा से सुशोभित किया है । स्वामी दयानंद ने अनेकानेक अवरोधों के बावजूद स्त्रियों

के लिए नई प्रकाशमयी, अलौकिक, सुबह का उजाला फैलाया । उनके व उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज के ठोस प्रयत्नों के फलस्वरूप विश्व का प्रथम कन्याविद्यालय पंजाब के हरियाणा – ग्राम में खोला गया । दयानंद स्वामी की सोच एवं श्रम के फलवस्वरूप ही स्त्रियों को बालहत्या, बाल विवाह, सती–प्रथा, आदि कुरीतियों से छुटकारा प्राप्त हुआ । तथा विधवाओं को पुनः विवाह करके पुनः प्रसन्नता प्राप्त करने का अधिकार प्राप्त हुआ ।

"आर्य समाज सर्वधर्म समानता का पक्षघर है – उसमें पुरुष–स्त्री आदि की कहीं अपेक्षा–उपेक्षा नहीं है । यह हमें ज्ञात ही है । आर्य समाज ने तो पूरी श्रद्धा एवं विश्वास से स्त्री को पुरुष के समान एक इकाई मानकर उसे जगाया । प्रयास किया कि जिस प्रकार ईश्वर ने स्त्री व पुरुष दोनों को ही एक आत्मा के रूप में उत्पन्न किया है उसी प्रकार वे दोनों इस भौतिक संसार में भी सहयोग से प्रेम से चलते रहे ।

ब्रह्म समाज के स्थापक राजा–राममोहन राय भारतीय जन–जागरण तथा आधुनिक चेतना के अग्रदूत माने जाते हैं । उन्होंने पूर्व और पश्चिम की वैचारिक, सामाजिक, धार्मिक प्रवृत्तियों के बीच एक मध्य मार्ग का निर्माण किया, सती प्रथा, बाल–विवाह का विरोध किया, विधवा विवाह को प्रोत्साहन दिया, बहुविवाह प्रथा एवं कुलीन विवाह प्रथा दोनों का विरोध किया । उन्होंने नारी अभ्युत्थान तथा उसकी आर्थिक स्वाधीनता के लिए भी आंदोलन किया । राजा राममोहन राय को विश्व मानवता का वृत बहुत अधिक विस्तृत है । पराधीन, समृध्द, दलित और निषपेषित जातियों के लिए एक समान था ।"[३८]

"प्रार्थना समाज नामक संस्था के भी चार उद्‌देश्य थे । (१) जाति प्रथा का विरोध, (२) विधवा विवाह का समर्थन, (३) स्त्री शिक्षा का प्रचार (४) बाल–विवाह का विरोध । अतः प्रार्थना समाज के सुधारवादी नेताओ ने सर्व प्रथम इन चार मुदों पर ही अपना ध्यान केन्द्रित किया । ब्रह्म समाज के केशवचंद्र सेन जब बम्बई गये तो उनकी प्रेरणा से परमहंस संस्था ने प्राथना

समाज नामक संस्था की स्थापना की। उन्हीं दिनों में पंडित रमाबाई ने शारदासदन नामक एक संस्था स्थापित की थी जो स्त्रियों में नयी चेतना जगाने के उद्देश्य से शुरू हुई थी ।"[३९]

"थियोसोफिकल सोसायटी – इसकी स्थापना हैलेना पेत्रोवता ब्लेवास्की नामक एक रुसी महिला ने सात सितम्बर १८७५ ई. में की थी । यह संस्था संपूर्ण मानवता के हित में कार्य करने लगी । श्रीमती एनी बेसंट महान विदुषी थी । इन्होंने भारत में स्त्रियों की स्थिति को ऊपर उठाने में तथा उन्हें दिन–प्रतिदिन अधिक शिक्षित करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है ।"[४०]

बाद में महात्मा गांधी जैसे नेताओं ने स्त्रियों की स्थिति को सुधारने के भरसक प्रयत्न किये । राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा स्त्रियों को आगे लाने की यथेष्ट चेष्टाएँ हुईं जिनके कारण कई महिला नेता सामने आयीं, जिनमें कस्तूरबा, अरुणा आसफअली, विजया लक्ष्मी पंडित, सुचेता कृपालानी, इंदिरा गांधी आदि प्रमुख है ।

हिन्दी साहित्य की महान लेखिका श्रीमती महादेवी वर्मा ने 'श्रृंखला की कड़ियाँ' में पूर्व एवं पाश्चात्य दोनों ही समाजों की कमजोरियों एवं स्त्री की दशा तथा समस्याओं पर प्रकाश डाला है । महादेवीजी का मानना है कि स्त्री स्वभाव से कोमल है – अतः प्रेम व घृणा जैसे दोनों ही भाव अधिक स्थायी रूप से उसके हृदय में वास करते है । लेखिका इसे स्पष्ट करते हुए कहती है कि नारी की उपर्युक्त विशेषताओं के कारण ही उसका व्यक्तित्व समाज के उन अभावों की पूर्ति करता है जो पुरुषों के द्वारा संभव नहीं है । प्राचीन काल में समाज का स्त्री के प्रति स्नेह और सम्मान प्रकट करना इसी बात का द्योतक है कि स्त्री समाज का एक महत्त्वपूर्ण अंग थी । आर्य नारी ने वैदिक काल में सहधर्मिणी के रूप में पति का अंधानुकरण किया है, ऐसे प्रमाण कहीं प्राप्त नहीं होते है । महादेवीजी कहती है –

"छाया का कार्य आकार में अपने आपको इस प्रकार मिला देना है, जिससे वह उसी समान जान पड़े और संगिनी का अपने सहयोगी की प्रत्येक त्रुटि को पूर्णकर उसके जीवन को अधिक से अधिक पूर्ण बनाना ।"[४१]

महादेवीजी का मानना है कि स्त्री सहधर्मिणी से अधिक पुरुष की छाया है, इस सोच का जन्म शायद किसी अशांत् वातावरण की देन है, जिसने पुरुष की इस आपत्ति जनक धारणा को भी सैद्धांतिक रूप दे दिया तथा अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व को भुलाकर अपनी विवेक शक्ति को समाप्त कर दिया । इसके परिणाम स्वरूप स्थिति इतनी बिगड़ गई कि स्त्री ने अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व भुलाकर अपनी विवेक शक्ति ही खो दी । उसे अपना सर्वस्व केवल पुराण में ही दिखाई देने लगा । उनका मानना है कि भारतीय नारी की मूल समस्या असंतुलन है । उसमें कहीं असाधारण दीनता है तो कहीं असाधारण विद्रोह । स्वतंत्र व्यक्तित्व भुला देने के कारण स्त्री को अपना जीवन उद्देश्य हीन तथा पिंजरे में बंद पंछी की भाँति लगने लगा । उसे लगा कि यदि वह पुरुष के समान बन जाय तो उसकी समस्याओं का हल निकल सकेगा । परंतु प्रकृति की उपेक्षा करने से समस्याओं का हल नहीं होता वरन् अधिक समस्याएँ पैदा होती हैं ।

सृष्टि के रचनाकार ने कुछ सोचकर ही तो स्त्री व पुरुष को जन्म दिया होगा । यदि उसने स्त्री में स्त्रियोंचित गुण दिए हैं तो पुरुष में पुरुषोचित गुणों का संचार किया है । जो सृष्टि के लिए दो अति आवश्यक मूलभूत आधारशिलाएँ है । परंतु जब पुरुष के गुणों को ओढ़ लेने के दंभ में नारी ने अपनी सीमाएँ तोड़ने की चेष्टा की तो उसमें पुरुषोचित गुण समाने लगे । उसकी कोमल भावनाएँ विलीन होने लगी तथा कठोर व क्रूर भावनाओं का समावेश होने लगा । शनैः शनैः स्त्री अपनी नैर्सगिक भावनाएँ दबाने लगीं, भूलने का प्रयास करने लगी । और वह भी पुरुषों जैसी बनने एवं कार्य करने में ही अपने आप को सार्थक समझने लगी । फिर भी ऊँचे पदों पर आसीन

एवं, ग्राम्य घरों में स्थित महिलाओं की मानसिकता में थोड़ा ही फर्क है । दोनों स्थानों पर कहीं ये माना जाता है कि नारी का अस्तित्व पुरुषों के लिए ही है । नारी शुरु से ही आश्रिता थी, इसका कारण परिवेश और परंपराएँ थीं । आज भी परंपराओं से ग्रस्त मानसिकता समाज में है । वैसे वक्तव्य में या स्टेज पर नारी प्रगति दिखाने के लिए किरण बेदी, इंदिरा गांधी, मायावती, ममता बेनर्जी, मेघा–पाटकर, प्रतिभा पाटील, सुनिता विलियम्स् आदि के नाम गिना सकते हैं । सब को सुनकर खुशी होती है । मगर सुनीता विलियम्स या गाँव की ग्वाल बाला दोनों ही समान हकों की अधिकारी हैं – मानसिकता यही होनी चाहिए की स्त्रियाँ भी मुक्त जन्मी हैं – उन्हें भी पुरुषों के समान ही अधिकार मिलने चाहिए ।

पुरुष वर्ग ने स्त्री वर्ग पर अपने पति होने का नाजायज फायदा उठाया है । जिस कारण स्त्रियों को समानता के दर्जे में रखने के बदले उन्हें अधीन रखने का प्रयत्न किया ओर जिस कारण स्त्रियाँ भी अपने स्वतंत्र, अस्तित्व, स्वतंत्रता, नैतिकता आदि को पुरुष रूपी पति के दृष्टिकोण से देखने लगी है केवल मातृत्व तक, भाग्य को सीमित करते हुए अपना सुख मनाने लगी । क्योंकि माँ के रूप में वह पूज्य है जितना पत्नी प्रेयसी या भोग्या के रूप में नहीं थी । मध्यकाल में शिक्षा से वंचित होने के कारण गृहकार्यों तक सीमित रह गई शोषित भी हुई । मध्यकालीन नारी की इसी दुर्दशा को देखकर ही गुप्त जी को कहना पड़ा ।

''अबला, जीवन हाय, तुम्हारी यही कहानी,
आँचल में है दूध और आँखों में है पानी ।।''

लेकिन यह स्थिति अधिक समय तक नहीं रही । भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के समय महात्मा गांधी जैसे नेताओं ने नारी को सामाजिक न्याय दिलवाने व पुरुष के समान स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए आमंत्रित किया । सदियों से जकड़ी बेड़ियाँ कट रही हैं, और कटेंगी,

प्रयास जारी है । संघर्ष जारी है, भारतीय स्त्री शासक बनने की बात नहीं कर रही, वह शोषिता बनी रहने से इन्कार कर रही है, वह अपनी अस्मिता, योग्यता, दक्षता सिद्ध कर रही है ।

स्त्री चेतना का अर्थ यही है कि स्त्री स्वतंत्रचेता हो, आत्मनिर्भर हो, आत्मविश्वासी हो, और अधिकारों के प्रति जागरूक हो । इसी का नतीजा है कि समकालीन ऐतिहासिक बुनावट में एक ऐसी वैश्विक औरत की तस्वीर उभर रही है – जो शुद्ध रूप से केवल औरत होने की माँग कर रही है ।

''नारीवाद – या नारी चेतना एक स्वस्थ दृष्टिकोण है – जो एकांकी नहीं – यह पुरुषों का नहीं, उनकी मानवीयता घटानेवाले छद्म मुखौटे का प्रतिकार है, जो उसने मर्दानगी मर्दानगी कहकर पहन लिया है ।''

श्रीमती नाथीबाई दामोदर ठाकरसी यूनिवर्सिटी को अन्य विश्वविद्यालयों के समकक्ष घोषित करते समय विधानसभा में बी. जी. खेर ने कहा था – ''मेरी दृष्टि से घर व्यवस्था, बच्चों का पालन पोषण तथा वर्तमान उपलब्धियों को सरलता से घर आंगन तक पहुँचाने में मात्र बौद्धिक श्रम की ही आवश्यकता नहीं होनी, वरन् निरंतर सेवा की आवश्यकता होती है, तथा दुःख दर्द सहन करने की असीम सामर्थ्य की आवश्यकता होती है, जो अप्रितम प्रतिभा का ही दूसरा नाम है । ऐसे क्षेत्र में महिला अभूतपूर्व शक्ति का परिचय देती है । मेरा ऐसा मत है कि रसोई तथा गृह व्यवस्था जैसे कार्यों में पुरुषों को भी हाथ बँटाना चाहिए जिससे यह विश्वास पैदा हो सके कि पुरुषवर्ग इस कार्य को निम्न या दूषित नहीं गिनते ।[४२]

प्रयाग महिला विद्यापीठ के उपाधि–वितरण–समारोह में भारत के राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने कुछ इससे मिलते–जुलते विचार व्यक्त किए थे – ''दफतर तथा कारखानों से गृहस्थी का कार्य अधिक महत्त्वपूर्ण है । महिला की संपूर्ण स्वाधीनता का अर्थ यही हो सकता है कि वह नागरिक के शारीरिक, नैतिक तथा मानसिक चरित्र–निर्माण का संपूर्ण उत्तरदायित्व अपने

ऊपर ले ले । इस कार्य को सम्पन्न करने में जो बाधाएँ समाज के सामने आएँ उन्हें दूर करके यह कार्य सुचारु रूप से सम्पन्न हो सके, उसके लिए अवसर प्रदान करें ।[४३]

महिला शिक्षा के बारे में नियुक्त राष्ट्रीय समिति के विवरण में राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्ण कहते हैं –

“गृह सर्जन महिला का सर्वोच्च व्यवसाय है, और वह व्यवसाय चलता ही रहेगा ऐसी पूरी संभावना है । किंतु उसके विश्वास को मात्र इस संबंध तक ही सीमित नहीं रखना चाहिए ।”[४४]

नारी चेतना एक जागृत दृष्टिकोण है स्वस्थ–मानवीय–दृष्टिकोण है । नारी चेतना की माँग पुरुष से मुक्ति नहीं, बल्कि उन सड़ी, गली परंपराओं, रूढ़ियों से प्रत्येक मानव (स्त्री–पुरुष) की मुक्ति की जिससे पुरुष भी उतना ही प्रभावित है ।

आधुनिकता का अर्थ है अपनी पहचान । अपने बारे में एक स्पष्ट अभिमत और उसी के अनुसार – स्वयं का व्यक्तित्व विकास, क्षमता, सामर्थ्य, कर्मठता, निर्भीकता, और आत्मविश्वास से भरा ऐसा नारीत्व कि पुरुष उसका सम्मान करे, इसके लिए अपनी कमजोरियों पर विजय, चरित्रशक्ति, संकल्प शक्ति । बौद्धिक विकास ओर वैज्ञानिक तर्क सम्मत दृष्टिकोण, जिसमें मतभेद और सुधार–परिष्कार की गुंजाइश हो, ऐसा खुल्ला–सा हीनताओं से ऊपर, कुंठा रहित, उदार चेता व्यक्तित्व ही सही मायने में स्त्री अस्मिता का अर्थ होगा, स्त्री के प्रति समाज के दृष्टिकोण में परिवर्तन, जिसमें स्त्री का खुद का दृष्टिकोण भी शामिल है । पुरुषों के बराबर अधिकार, स्त्री के चयन–वरण और नकारने की स्वतंत्रता – नारी चेतना है । जो कर्मशील, मेहनती, विश्वसनीय–उदार सक्षम पुरुष को चाहती है ।

प्रगति और मुक्ति कौन नहीं चाहता ? नारी शक्ति को व्यावहारिक धरातल पर सामाजिक स्वीकृति मिली है, फिर भी पुरुष प्रधान, समाज की

दोहरी मानसिकता है । पुरुष मनुष्य है, मानव है, व्यक्ति है तो नारी व्यक्ति क्यों नहीं ? मानव क्यों नहीं ? आज स्त्री पुरुष सहकर्मी के रूप में साथ–साथ काम करते हैं तो उनके बीच सहकर्मियों जैसे व्यवहार की, आदान–प्रदान की सहज स्थिति क्यों नहीं कायम की जाती ? मित्रता के सहज संबंध विकसित नहीं हो पाए हैं । उसकी प्रतिभा कार्यकुशलता, समाज को कुछ अधिक दे सकने की संभावना को संदेह रूपी निगाहों से देखा जाता है । स्त्री व्यक्तित्व को जिस एक जगह पर सबसे अधिक कुचला, तोड़ा और समाप्त किया गया है, वह है 'सेक्स' । इसे लेकर ही मर्यादा–नियंत्रण की अलग–अलग तरकीबे हैं । हमारी संस्कृति में स्त्री सिर्फ देह ही है । उसका मान–अपमान चरित्र पवित्रता ये सब उसके शरीर को मद्देनज़र रखकर किया है – कभी धर्म, संस्कृति, समाज, देश, परिवार और रक्षा सुरक्षा के नाम पर स्त्री देह का इस्तेमाल किया जाता है । मातृत्व को भी इसी निगाहों से देखा जाता है । मानो उससे परे नारी देह का कोई अर्थ नहीं । भारत वर्ष आज भी ज्यों का त्यों गाँवों का देश है, मगर पुरुषों की निगाहों में स्त्री बस गई तो उसके लिए आर्या, प्रिया, सावित्री, सुंदरी, साध्वी जैसे शब्द है, नहीं बसी तो बाँझ, कुल्टा, कर्कशा–उत्ध्रंखल, स्वच्छंदी, व्यभिचारिणी, गुसैल, कलहप्रिया आदि शब्द है । ये भारतीय जन मानस की परंपरा के परिचायक हैं ।

लड़कों में ही अहं या उच्चता की गुरु ग्रंथि है, ऐसा नहीं, लड़कियाँ भी उन्हें, पति–प्रेमी या मित्र के रूप में 'स्वयं' से ऊँचा ही देखना चाहती है । गिनी चुनी लड़कियाँ होंगी जो कर्मठ–उदार पुरुष को चाहती है ।

नारी शोषण या पतन के लिए पुरुष को दोषी ठहराना गलत है । स्त्रियाँ भी स्वयं शोषण का मार्ग प्रशस्त करती हैं । दहेज के लिए जलाई जानेवाली बहुओं के पीछे, सास–ननद ही होती हैं । कामकाजी महिलाएँ भी आगे बढ़ने जी महत्त्वाकांक्षा में अपने ऊपरी बोस के इशारे पर नाचती रहती रहती हैं फिर पुरुष वर्ग को ही दोषी ठहराना जहाँ तक उचित है ?

संक्षेप में कहें तो पूरा दोष न तो पुरुषों का है और न स्त्रियों का । परिवेश, संस्कार और पुरुष प्रधान समाज की मानसिकता ने स्त्री–पुरुष दोनों की विचारधारा को निश्चित दायरों में बाँध दिया है । इस संबंध में नारी या तो पुरुष पर सर्वस्व न्यौछावर करने और सामाजिक अन्याय सहते जाने की परंपरागत भूमिका निभाती है या दमन के विरुद्ध विद्रोह का रुख अपनाती है । अन्याय सहना जड़ता की निशानी है और विद्रोह विध्वंस का रूप । आवश्यकता इस बात की है कि संतुलित दृष्टिकोण से मानसिकता को बदलने का प्रयास किया जाय । लड़कर नारी आज नर (या नारी से) कुछ नहीं पा सकती ।

न अकेला–पुरुष जीवन सार्थक है न अकेला स्त्री–जीवन । दोनों एक दूसरे के पूरक हैं – फिर भी किसी एक का दमन हुआ है । एक से अधिक लड़कियों से संबंध रखनेवाले युवक भी शादी के समय समझदार, प्रगतिशील, शिक्षित पत्नी की चाह छोड़कर घरेलू – गृहिणी जैसी लड़की को पसंद करता है, उसमें पितृसतात्मक परिवार व्यवस्था में सदियों से निहित भेद कारणभूत है ।

नारी स्वयं भी सास–ननद बनकर अन्य स्त्री का शोषण करती है – स्त्री अपने ही बेटें–बेटियों में भेदभाव रखकर पुरुष के अहं को बढ़ावा देती है, घर में बेटी पैदा होने पर पुत्रवधू को सताया जाता है । जो स्त्री चूपचाप सहन करती है, वहीं गुणवान अच्छे खानदान की । जो नहीं करती वह योग्य नारी नहीं है । घर में निष्क्रिय कमजोर – आलसी – पुरुष भी अपनी पत्नी को सताने का अधिकार रख सकता है, पुत्रवधू, ऊँची, आवाज से बोल नहीं सकती क्योंकि घर का बेटा हैं घर के प्रत्येक निर्णय करने का अधिकार आलसी – कमजोर – पुरुष को है पर अच्छा या बुरा कहने का अधिकार काम करनेवाली, कमानेवाली स्त्री को नहीं, अगर ऐसा करेगी तो उसे त्यकता बनकर उपेक्षा सहने के लिए तैयार होना पड़ता है ।

'इंडियन वायोलन्ट ऐक्ट' भी तब तक सक्रिय नहीं हो सकता जब तक कोई स्त्री खुद उसका अमल कराने की इच्छा न रखे । मान लो कोई स्त्री ऐसी परिस्थितियों से, दमन के सामने लड़ने का हौंसला रखे, आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो, मगर ऐसी आर्थिक स्थिरता भी उसे लगे हुए मानसिक जख्मों पर मरहम नहीं लगा सकती ।

आजीवन वह समाज के सामने उपेक्षा, प्रश्नार्थ बन जाती है – क्योंकि समाज ने उसकी सही व्यथा–दर्द को देखा नहीं, समझा नहीं ।.... राजकीय नेताओं के खोखले नारी सम्मेलन तो नेताओं का प्रभाव दिखाने का दिखावा है । इससे कुछ नहीं होगा ऐसी स्थिति में निर्लज्ज बनकर पूजा चौहाण या रीया सोनी जैसे केस गली–कूँचों में बनते रहेंगे ।

स्त्री–भ्रूण हत्या की समस्या आज समाज के सामने है उसमें भी पुरुषों की नारी के साथ की गई जबरदस्ती है । स्त्रियों ने अगर विरोध किया तो घरेलू कलह होंगे । हालाँकि परिवारवाले अच्छी तरह से जानते हैं कि बेटा–बेटी सब ईश्वर का दिया वरदान है उसमें स्त्री से भी ज्यादा जिम्मेवार पुरुष ही है – फिर भी सताया स्त्री को जाता है । और कई परिवारों में यह मानसिकता आज भी मौजूद है । यही मानसिकता रूढ़ होकर रिवाज बन गई है ।

रजतपट पर आने वाली स्त्रियाँ मुक्त हैं ऐसा नहीं है – आर्थिक रूप से संपन्न स्त्रियों का वहाँ शोषण होता है । कभी–कभी अपनी देह को सौंदर्य, अभिनय, नृत्य आदि अलग–अलग माध्यमों से दिखाना पड़ता है । बेचना पड़ता है । इसी में पुरुषों की रुचि भी है । वर्ना सुनीता विलियम्स् के आगमन पर क्यूं कोई नेता उपस्थित नहीं रहे ? अवकाश यात्री बनी सुनिता का खुरदरापन वैज्ञानिक बातें इतनी अधिक आकर्षक नहीं लगेंगी, जितना आकर्षण शिल्पा शेटी के बीग बॉस शो के न्यूज़ में है ।

जाहिर है कि कठोर – भूमिका निभानेवाली, खुरदरे व्यक्तित्व की स्वामिनी चाहे सत्य कहे तो भी कटु लगेगा – अस्वीकार्य लगेगा । जबकि सौंदर्य मंडिता स्त्री, अपनी हँसी के जाल में गलत भाषण करेगी तो भी सब आगे पीछे घूमकर स्वीकार कर लेंगे ।

स्त्री शरीर का आकर्षण आज भी है । आज के मीडिया की प्रत्येक विज्ञप्ति और सीरीयल्स् इन्हीं बातों के गवाह हैं ।

"पुरुष को आह्लादित करने के कारण वह 'प्रमदा' है, सौंदर्य को बुनने के कारण वयति सौंदर्यम् है, रम्या होने के कारण रमणी है, पति द्वारा भरण–पोषण होने के कारण 'भार्या' है, बल रहित होने के कारण वह 'अबला' है आंगन एवं महल से संबंधित होने के कारण 'अंगना' एवं महिला है । अगर नहीं है तो 'स्त्री' या केवल मनुष्य" ।"[४५]

"इस समय हमारे समाज में केवल दो प्रकार की स्त्रियाँ मिलेंगी, एक–वे जिन्हें इसका ज्ञान ही नहीं है कि वे भी एक विस्तृत मानव समुदाय की सदस्य हैं और उनका भी एक ऐसा स्वतंत्र व्यक्तित्व है जिसके विकास से समाज का उत्कर्ष और संकीर्णता से अपकर्ष संभव है, दूसरी वे जो पुरुषों की समता करने के लिए उन्होंने दृष्टि कोण से संसार को देखने में उन्हीं के गुणावगुणों का अनुकरण करने में जीवन के चरम लक्ष्य की प्राप्ति समझती हैं । सारांश यह कि एक ओर अर्थहीन अनुसरण है तो दूसरी और अर्थमय अनुकरण और यह दोनों प्रयत्न समाज की श्रृंखला को शिथिल तथा व्यक्तिगत बंधनों को सुदृढ़ और संकुचित करते जा रहे हैं ।"[४६]

महादेवी वर्माने ठीक लिखा है –

"हमें न किसी पर जय चाहिए, न किसी से पराजय, न किसी पर प्रभुता चाहिए न किसी का प्रभुत्व । केवल वह स्थान व स्वत्व चाहिए जिनका पुरुषों के निकट कोई उपयोग नहीं है, परंतु जिनके बिना हम समाज का

उपयोगी अंग बन नहीं सकेगी । हमारी जाग्रत और साधन–सम्पन्न बहिनें इस दिशा में विशेष महत्त्वपूर्ण कार्य कर सकेंगी, इसमें संदेह नहीं ।''[४७]

''शिक्षा, चिकित्सा आदि विभागों में कार्य करनेवाली जाग्रत महिलाओं ने अपना एक भिन्न समाज बना डाला है । जिसने उन्हें गृहिणियों के प्रति स्नेह शून्य और गृहणियों को उनके प्रति संदिग्ध कर दिया है । इतनी शिक्षा, इतनी बुद्धि, इतने साधन, इतना अवकाश और स्वावलंबन पाकर भी यदि वे अन्य बहिनों की प्रतिनिधि न बन सकीं, यदि वे उनके त्यागमय जीवन को अवज्ञा से देखती रही तो सारे समाज का अनिष्ट होने की संभावना सत्य हुए बिना न रहेगी । उनके संकीर्ण समाज में प्रवेश न पा सकने के कारण अन्य स्त्रियाँ उनके गुरु उत्तरदायित्व से अनभिज्ञ रहकर केवल उनके बाह्य शांतिपूर्ण जीवन से ईर्षा कर अपने जीवन को दुर्वह बना डालती है ।''[४८]

''प्रत्येक पुरुष पत्नी के रूप में स्त्री को अंगीकार करते समय अनुभव करता है मानो यह कार्य वह केवल परोपकार के लिए कर रहा है । यदि उसे इतना अवकाश मिले कि वह आजीनव संगिनी के अभाव का अनुभव कर सके, उसे खोजने का प्रयास कर सके और उस उत्तरदायित्व के लिए अपने आप को प्रस्तुत कर सके तो यह उपकार की भावना एक क्षण भी न ठहरें जो अधिकांश घरों में दुःख का कारण बन जाती है ।''[४९]

''प्रत्येक भारतीय पुरुष चाहे वह जितना सुशिक्षित हो, अपने पुराने संस्कारों से इतना दुर नहीं हो सकता है कि अपनी पत्नी को अपनी, प्रदर्शनी न समझे । उसकी विद्या, उसकी बुद्धि, उसका कलाकौशल और उसका सौंदर्य सब उसकी आत्मश्लाघा के साधन मात्र है । जब कभी वह सजीव प्रदर्शन की प्रतिमा अपना भिन्न व्यक्तित्व व्यक्त करना चाहती है, अपनी भिन्न रुचि या भिन्न विचार प्रकट करती है, तो वह पहले क्षुब्ध, फिर असंतुष्ट हुए बिना नहीं रहता । कभी भारतीय पत्नी देश के लिए गरिमा की वस्तु रही होगी, परंतु आज तो विडंबना मात्र है । यदि समाज उसकी स्थिति को न समझेगा तो

अपनी दशा के प्रति असंतोष उसे वह करने पर बाध्य करेगा – जिससे उसकी शेष महिमा भी नष्ट हो जाये ।"[५०]

"आधुनिक भौतिकवाद प्रधान युग की नारी को यही दुःख है कि वह पुरुष के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता पाकर भी संसार के अनेक आश्चर्यों में एक बन गई है । उसके हृदय की एकांत श्रद्धा की पात्री बनने का सौभाग्य उसे प्राप्त न हो सका । संसार उसे देख, विस्मय से अभिभूत होकर चकित–सा ताकता रह जाता है, परंत नतमस्तक नहीं होता । इसका कारण उस व्यक्तित्व का अभाव है जिसके सम्मुख मानव समाज को बालक के समान स्वयं ही झुक जाना पड़ता है ।"[५१]

आर्थिक दृष्टि से आज की स्त्री को जो स्वतंत्रता प्राप्त हुई है, उसके विस्तार की असंख्य संभावनाएँ हैं । जैसे–जैसे उसके कर्मक्षेत्र की लक्ष्मण रेखा मिटती जाती है, वैसे–वैसे वह नवीन कर्तव्य संभालने की क्षमता प्राप्त करती जाती है । पर समाज की स्थिति के कारण यह आर्थिक स्वावलंबन भारतीय स्त्री को पारिवारिक सहानुभूति से वंचित अतः अकेला बनाता जाता है । पुरुष अकेला हो सकता है, परंतु स्त्री अनेक संबधों की केन्द्र होने के कारण एक संस्था के समान है । उसके लिए अकेलापन एक प्रकार का निर्वासन दंड बन जाता है, और उससे तनाव की स्थिति उत्पन्न होती है । उल्लास के साथ स्त्री शक्ति कितनी गरिमापूर्ण हो जाती है, कलान्ति या थकावट के साथ उतनी ही दयनीय ।[५२]

नए दशक में महिलाओं का स्थान इस संबंध में पश्चिम की नारी का जीवन भी द्रष्टव्य है । उसके पास शिक्षा है, स्वतंत्र जीवन है, विस्तृत कर्मबोध है, किन्तु गृह की इकाई टूट रही है और इस टूटने की रिक्तताने उसके मनोबल को भी तोड़ दिया है । आज वह जिस आत्मघाती उन्माद में क्रियाशील है, वह मानसिक निष्क्रियता का परिणाम है । भौतिक सुविधाएँ सुलभ करनेवाले कर्मक्षेत्र ने उसके जीवन को अपने भार से ही चूर–चूर कर डाला है ।[५३]

मन में सवाल उठते हैं कि हजारों सालों से यह शोषण क्यों जारी है ? प्रत्येक जाति और संप्रदाय का पुरुष स्त्री का शोषण क्यों करता है ? स्त्री को दलित अवस्था में रखने से समाज के किन उद्देश्यों एवं स्वार्थों की पूर्ति होती है ? इन प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ने का प्रयास कर रहा है स्त्रीवाद । इस आंदोलन के जरिये समाज में स्त्री की स्थिति, स्त्री जीवन के व्यापक फलक और उसकी अर्थवत्ता को समझने का प्रयास किया जा रहा है । प्राचीन काल में स्त्री–देह थी । आज भी देह ही है । और कल किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं हुआ जो वह देह–ही रहेगी । आज की व्यवस्था में भी वह सिर्फ देह ही है । स्त्री का अपमान किया जाता है, उसका चरित्र–हनन करके स्त्री से बदला लिया जाता है, उसे निर्वस्त्र, अधनंगा करके उसे बचाया जाता है, ऊपर से नीचे तक ढंक कर उसे पवित्र या अपवित्र कहा जाता है ।

इस देहवादी, उपभोक्तावादी, वस्तुवादी, मानसिकता को बताकर उसे मिटाने की कोशिश करना ही नारी चेतना है ।

१९५० में संविधान के लागू हो जाने पर संवैधानिक दृष्टि से तथा १९५० में हिन्दू कोडबिल के पारित होने पर कानूनी दृष्टि से भारतीय नारी को पुरुष की भाँति जीवन के विविध क्षेत्रों में प्रगति के समान अवसर उपलब्ध हुए । स्वतंत्रता के पश्चात् स्त्री पुरुष विवाहित अविवाहित का भेद किये बिना योग्यता के आधार पर नौकरी देने का प्रावधान करने के कारण महिलाओं में अनेक विध नौकरियों के प्रति आकर्षण बढ़ा ।[५४] प्रारंभ में महिलाओं का रुझान, डॉक्टरी, नर्सिंग, अध्यापन जैसे कार्यों को बीस प्रतिशत आरक्षण देकर सरकार ने प्रगतिशील कदम उठाया है । शिक्षा ने उसे अपनी परिस्थिति के प्रति सजग किया । वह अपने अधिकारों की माँग करने लगी । विविध नारी संगठनों की स्थापना हो गई । युग की आवश्यकता के अनुसार वह राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाने लगी । दूसरी और समाज में अपनी दोयम अवस्था का विरोध भी करने लगी ।

अतः सरकार को स्त्री संबंधी कानून बनाने पड़े, नारी को पुरुष के समान दर्जा देना पड़ा एवं स्त्री–पुरुष समानता की भावना को बल मिलने लगा । वह आत्मनिर्भर बन गई है । उसका अहं जाग्रत हो गया है । जो बात गलत है उसे मानने से वह इन्कार कर रही है । जो गलती उसने की ही नहीं है, उसके लिए वह सजा भुगतने के लिए तैयार नहीं है । पढ़ाई का कोई भी क्षेत्र उसके लिए अछूता नहीं है । कामवासना में वह पूरी रुचि रखती है । पत्रकारिता के जैसा अत्यंत चुनौतीपूर्ण कर्म भी बड़े साहस के साथ वह निभा रही है ।

(ऊ) इक्कीसवीं सदी में नारी

इक्कीसवीं सदी की पूर्व संध्या में नारी ने दीनता का रोना प्रायः बंद कर दिया है, उसका स्थान जीवन संघर्षों ने ले लिया है । उसका अबलापन बेचारगी, प्रतिशोध और विद्रोह में बदल गया है । समस्याओं को सुलझाना और उन्हें भूल जाना भी उसने सीख लिया है । बदला लेने और प्रेम करने में वह पुरुष से कहीं आगे निकल गई है । अब शादी अगर हादसा बन जाए तो उसे पुराने कोट की तरह उतार फैंका जा सकता है । जीवन की ट्रेजडी भी उसने ट्रेजडी धार्मिक रूप में लेना सीख लिया है ।[५५]

"आगामी दशक की युवती वर्तमान दशकों की बालिका है । अपने बाल्य काल में उसने जो संस्कार और अनुभव प्राप्त किए है – उन्हीं की आधारशिला पर उसके भविष्य का निर्माण होगा । अन्य देशों के ज्ञान विज्ञान उसके लिए त्याज्य नहीं होगे यह सत्य है, किन्तु भारत की धरती से उसका संबंध विच्छिन्न नहीं हो सकता । राजनीतिक, सामाजिक आर्थिक स्तरों पर उसकी स्थिति आज की महिला से उच्चतर होनी अनिवार्य है ।"[५६]

युगों से दलित पीड़ित रहने के कारण जो हीनता के संस्कार बन गए थे, उन्हें आधुनिक भारतीय महिला ने अपने रक्त और प्रस्वेद से इस प्रकार

धो दिया है कि आगामी युग की महिला को उस पर कोई रंग नहीं चढ़ाना पड़ेगा ।[५७]

''इक्कीसवीं शताब्दी में प्रवेश करते करते आजादी के बाद भारत की महिलाओं ने शिक्षा और साक्षरता के क्षेत्र में लंबी छलांग लगाई है । वर्ष १९५१ की जनगणना में जहाँ महिला साक्षरता मात्र ८.८६ प्रतिशत थी वह वर्ष २००१ में ५४.१६ प्रतिशत हो गई । आज वर्ष २००३ में लगभग एक करोड से अधिक बालिकाएँ विभिन्न कॉलेजों और शिक्षा संस्थानों में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही हैं । सरकार २००३ को महिला सशक्तीकरण वर्ष मना रही है । संविधान संशोधन द्वारा ग्रामीण और शहरी निकार्यों में महिलाओं को एक तिहाई आरक्षण मिल चुका है तथा संसद में विधान मंडलों में महिलाओं के एक तिहाई आरक्षण पर चर्चा हो चुकी है । तथा उन्हें आरक्षण मिलने की पूरी संभावना है । आज भारत में ४ राज्यों में महिला मुख्यमंत्री है तथा महिलाएँ विभिन्न प्रशासनिक और आर्थिक क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण पदों पर कार्यरत है । आज परिवार और समाज की विभिन्न संस्थाओं में महिला विरोधी परंपराओं की कठोरताओं में गंभीर रूप से शिथिलता आई है ।''[५८]

''भारतीय महिला का भविष्य जानने की जिज्ञासा होना स्वाभाविक है । भारतीय महिला के मुक्त विकास में दो बाधाएँ हैं । प्रतिक्रियावादी सामाजिक संस्थाएँ तथा रूढ़िगत रिवाज । जैसा कि पहले कहा जा चुका है, कानून की दृष्टि से महिला की स्थिति पुरुष के समकक्ष है, किन्तु दैनिक व्यवहार में जाति, पितृसत्तात्मक परिवार संस्था, धार्मिक परंपराएँ तथा सत्तावादी, सामाजिक मूल्यों का प्रभाव अभी बहुत व्यापक है तथा सब और पुरुष के प्रभुत्व दिखाई पड़ता है ।''[५९]

''नवजाग्रत महिलाओं का कर्तव्य है कि वे इन प्रतिक्रियावादी तत्त्वों के कारणों को ढूँढ कर उन्हें निर्मल करने का प्रयास करे । स्वयं अर्जित स्वतंत्रता

को सामाजिक संस्थात्मक प्रतिक्रियावादी शक्तियाँ बेकार न बना दे इसके लिए भी सतर्क अवं सावचेत रहना है ।''[६०]

''यदि स्त्रियों को मानव के प्राकृतिक एवं साहजिक अधिकार से वंचित रखना हो तो शासकों को पहले अन्याय और असंगति के आरोप से बचने के लिए यह प्रमाणित करना पड़ेगा कि स्त्रियों में बुद्धि का अभाव है, अन्यथा नया संविधान पुरुष के निरंकुश शासन का जीता–जागता प्रतीक बन जाएगा ।''[६१]

संदर्भ संकेत :

क्रम	पुस्तक का नाम –	लेखक का नाम	पृष्ठ संख्या
१	हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास	डॉ. सुमन राजे	८४
२	ऋग्वेद भाग–४, १०–१७–७ क्रमांक ८६४३	सं. श्रीराम शर्मा आचार्य	२७
३	ऋग्वेद भाग–४, १०–१५६–१, क्रमांक १०४१६	सं. श्रीराम शर्मा आचार्य	२६६
४	ऋग्वेद भाग–४, १०/१५६-२, कंमांक १०४२०	सं. श्रीराम शर्मा आचार्य	२६६
५	नारी की शाश्वत भूमिका और भविष्य का साहित्य	ज्योति शुक्ल, सरदार पटेल मेडिकल कॉलेज, बीकानेर, राजस्थान	लेख
६	पंचामृत – (कबीर दोहावली)	मनसुखराम जोबनपुत्रा शारदाग्राम, गुजरात	१७०
७	विष्णुपुराण – १–४ विष्णु भागवत ६–१६		१-४ ६-१६
८	हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास	डॉ. सुमन राजे	५२-५३
९	ऋग्वेद भाग–४, १०/८५/३३, क्रमांक ६६६६	सं. श्रीराम शर्मा आचार्य	१५५
१०	हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास	डॉ. सुमन राजे	८५
११	हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास	डॉ. सुमन राजे	८७
१२	हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास	डॉ. सुमन राजे	८६-९०
१३	महाभारत – वनपर्व क्रम २१५	नरेन्द्रकुमार मयाशंकर जोशी	२४३

१४	महाभारत – वनपर्व क्रम २१६	नरेन्द्रकुमार मयाशंकर जोशी	२४६
१५	गुजरात समाचार – धर्मलोक	कुमारपाळ देसाई	१८-१२-०४
१६	अमरकोष – द्वितीय खंड	नारायण राम आचार्य 'काव्य तीर्थ'	६१-६७
१७	दुर्गा सप्तदाती – पंचम अध्याय – श्लोक ४६		४६
१८	हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास	डॉ. सुमन राजे	१०६-११०
१९	हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास	डॉ. सुमन राजे	११०११६
२०	हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास	डॉ. सुमन राजे	१३३१३४
२१	हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास	डॉ. सुमन राजे	१३४
२२	हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास	डॉ. सुमन राजे	१३४
२३	भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र	डॉ.एम.एम. लवानिया	६
२४	भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र	डॉ.एम.एम. लवानिया	६
२५	भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र	डॉ.एम.एम. लवानिया	१०
२६	भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र	डॉ.एम.एम. लवानिया	११
२७	आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में नारी के विविध रूपों का चित्रण	डॉ. मोहम्मद अजहर ढ़ेरीवाला	२७
२८	भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र	डॉ.एम.एम. लवानिया	११
२९	भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र	डॉ.एम.एम. लवानिया	११
३०	भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र	डॉ.एम.एम. लवानिया	११
३१	आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में नारी के विविध रूपों का चित्रण	डॉ. मोहम्मद अजहर ढ़ेरीवाला	४६
३२	भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र	डॉ.एम.एम. लवानिया	१२

३३	आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में नारी के विविध रूपों का चित्रण	डॉ. मोहम्मद अजहर ढ़ेरीवाला	४६
३४	आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में नारी के विविध रूपों का चित्रण	डॉ. मोहम्मद अजहर ढ़ेरीवाला	४८
३५	हिन्दी साहित्य का समग्र इतिहास	डॉ. रमेशचंद्र शर्मा	२१-२२
३६	हिन्दी साहित्य का समग्र इतिहास	डॉ. रमेशचंद्र शर्मा	६७-६९
३७	निराला की साहित्य साधना	डॉ. रामविलास शर्मा	
३८	आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में नारी के विविध रूपों का चित्रण	डॉ. मोहम्मद अजहर ढ़ेरीवाला	५१-५२
३९	आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में नारी के विविध रूपों का चित्रण	डॉ. मोहम्मद अजहर ढ़ेरीवाला	५२
४०	आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में नारी के विविध रूपों का चित्रण	डॉ. मोहम्मद अजहर ढ़ेरीवाला	५४
४१	महादेवी साहित्य समग्र–३ श्रृंखला की कड़ियाँ	सं. निर्मला जैन	२९५
४२	भारतीय महिलाओं का समाज शास्त्र	डॉ.एम.एम. लवानिया	१३२
४३	भारतीय महिलाओं का समाज शास्त्र	डॉ.एम.एम. लवानिया	१३२
४४	भारतीय महिलाओं का समाज शास्त्र	डॉ.एम.एम. लवानिया	१३२
४५	महिला उपन्यासकार	डॉ. मधु संधु	४०
४६	महादेवी वर्मा साहित्य समग्र–३	सं. निर्मला जैन	२९५
४७	महादेवी वर्मा साहित्य समग्र–३	सं. निर्मला जैन	३०४
४८	महादेवी वर्मा साहित्य समग्र–३	सं. निर्मला जैन	३०५
४९	महादेवी वर्मा साहित्य समग्र–३	सं. निर्मला जैन	३४०
५०	महादेवी वर्मा साहित्य समग्र–३	सं. निर्मला जैन	३४४
५१	महादेवी वर्मा साहित्य समग्र–३	सं. निर्मला जैन	२९८

५२	महादेवी वर्मा साहित्य समग्र–३	सं. निर्मला जैन	३८५
५३	महादेवी वर्मा साहित्य समग्र–३	सं. निर्मला जैन	३८५
५४	महिला और मानवाधिकार	डॉ. एम.एम.अंसारी	१६३-१६५
५५	महिला उपन्यासकार	डॉ. मधु संधु	१५
५६	भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र	डॉ.एम.एम. लवानिया	२१
५७	भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र	डॉ.एम.एम. लवानिया	२१
५८	भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र	डॉ.एम.एम. लवानिया	२२
५९	भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र	डॉ.एम.एम. लवानिया	२२
६०	भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र	डॉ.एम.एम. लवानिया	२२
६१	भारतीय समाज में नारी	डॉ. नीरा देसाई	२११

द्वितीय अध्याय
नारी चेतना

(क) नारी चेतना – भूमिका
(ख) नारी चेतना – मुक्ति, ऐतिहासिक संदर्भ
(ग) अमरिका में नारी मुक्ति आंदोलन
(घ) भारतीय और पाश्चात्य अभिगम, दृष्टिकोण
(ड) नारी चेतना से तात्पर्य
(च) नारी चेतना, विषयक विभिन्न दृष्टिकोण

द्वितीय अध्याय
नारी चेतना

इस अध्याय में नारी चेतना से क्या तात्पर्य है ? नारी चेतना की परिभाषा, शाब्दिक अर्थ, स्वरूप तथा चेतना के संबंध में अन्य चिंतकों एवं महिला रचनाकारों के विचार, भारतीय और पाश्चात्य अभिगम आदि का विश्लेषण किया जायेगा ।

(क) नारी चेतना – भूमिका

साहित्य में से नारी शब्द अगर हटा दिया जाये तो समग्र साहित्य सौंदर्य रसहीन मुरझाये हुए पौधे जैसा हो जायेगा ।

नारी शब्द ही दिखाता है कि 'न विद्यते यस्याः अरिः सा नारी ।' अर्थात् दुनिया में जिसका कोई शत्रु नहीं है, वही नारी है ।

नारी के लिए दूसरा पर्याय है स्त्री । 'स्त्री' शब्द स्तृ धातु से बना है । स्तृ का अर्थ होता है – विस्तृत करना प्रसार करना, फैलाना, प्रेम को अगर प्रसारित करना है तो वह काम स्त्रियों के द्वारा ही होगा ।

''भारत में स्त्रियों को महिला भी कहा गया है – महान शक्तिमयी । हिन्दू परिवार में नारी को अनुचरी नहीं, सहचरी, मित्र माना है । ब्रह्मविद्या, श्रद्धा, शक्ति, पवित्रता, कला संसार में जो भी श्रेष्ठ है – सब कुछ नारी में विद्यमान है । अपनी सुशीलता के ऐश्वर्य से विद्या, ज्ञान की, सहनशीलता की ज्योति से समाज को उज्ज्वल करनेवाली नारी आशा उमंगों का केन्द्र, अखंड अदिति, शक्तिशालिनी, विविध रूपा, पियूष स्त्रोता, अंतःसलिला, दुष्टों को हरनेवाली प्रकृति स्वरूपा, अपराजिता नारी है ।[१]

दो मानव रूप–स्त्री और पुरुष । इस दुनिया में दोनों को, स्त्री–पुरुष को साथ–साथ रहना है – जीवन–मृत्यु के दौरान दोनों साथ हैं । जिन्दगी में आनेवाले संघर्ष, प्रेम, कर्तव्य, फर्ज, भावना, सहानुभूति, तादात्म्य और आत्मीयता इन सभी भावों को, बातों को दोनों अनुभव करते हैं और इन पर दोनों का अधिकार है ।

स्त्री पुरुष जब मिलते हैं, या साथ होते है तो दोनों को एक–दूसरे के प्रति अपेक्षा, इच्छाएँ, महत्त्वाकांक्षाएँ रहती हैं । इनमें कभी प्रेम–निवेदन है तो कभी हठाग्रह–दुराग्रह मिला हुआ होता है । विस्तृत रूप से फैले हुए, इन अभिन्न रूपों में जब किसी एक पक्ष में स्वार्थ, अहम् छल, दबाव या जबरदस्ती आ जाती है तो संघर्ष, दुःख–पीड़ा और अंत में अन्याय के विरुद्ध लड़ाई शुरू होती है । और यह लड़ाई समाज की, सब की, सार्वजनिक होती है, संकीर्ण मानसिकता, दृष्टिकोण के विरुद्ध वैचारिक उदारता–विस्तृत मानसिकता की आवश्यकता हो जाती है ।

सृष्टि में जो कुछ भी शाश्वत है उसके हकदार भागीदार स्त्री पुरुष दोनों हैं । फिर भी मानव समाज में स्त्रियों को जबरदस्ती क्यों दबाया जाता है ? इस अन्याय के प्रति आवाज ही चेतना है । किसी एक के प्रभुत्व से दूसरे का शोषण, दासत्व यह न्याय नहीं है ।

इस जीवन में स्त्री–पुरुष दोनों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है । एक अजीब सी रचना है, बाह्य रूप से दोनों के अंग–उपांग समान हैं । लेकिन उसका आंतरिक रूप भिन्न है । भीतर की रचना ऐसी है कि दोनों के शरीर की आंतरिक भिन्नता के सामंजस्य से ही तीसरे जीव को जन्म मिलता है । आश्चर्य की बात तो यही है कि दोनों के सामंजस्य के बाद भी तीसरा नया जीव दोनों में से एक ही होगा स्त्री या पुरुष । दोनों की शारीरिक भिन्नता के कारण ही एक दूसरे की जरूरत महसूस होती है । तब सहजीवन जीना अनिवार्य बन जाता है । सह जीवन के लिए शादी नामक बंधन और परिवार

नामक इकाई खड़ी हुई । जन्म हुआ समाज नामक संस्था का, दोनों की शारीरिक क्षमता भिन्न है । कमियाँ, चेतना, भिन्न है । शारीरिक रूप से पुरुष स्त्री से बलिष्ठ, स्त्री कोमल है । स्त्री–कोमलांगी है, जननी होने के कारण । पुरुष में शारीरिक क्षमता सुख–सुविधा साधन अर्जन करने हेतु है । संरक्षण और आत्मरक्षण का अधिकार दोनों को ही है । चेतना या मुक्ति की लड़ाई अधिकार या स्वामित्व पाने के लिए नहीं है । समान भाव, सम्मान, समानता के लिए है । यह जागृति या लड़ाई पुरुष की अन्यायकारी, अहंकारी, मानसिकता के प्रति जागृत होकर न्यायपूर्ण उत्तर पाने की है ।

आज के समय में ऐसा लग रहा है कि महिला किसी क्षेत्र में उपेक्षित रहना नहीं चाहती, पुरुष की स्वार्थवृत्ति उसकी समझ में आ गई है । वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समान सहभागिता चाहती है ।

“स्त्रियों की सदियों से, पुरुषों से यह अपेक्षा रही है, कि अब वह चैतन्य है प्रबुद्ध है, जो कुछ पुरुष उसे देना नहीं चाहता वह उसे लेना है, और यही जागृति ही चेतना है ।”[२]

संत विनोबा भावे का कहना है –

“स्वतंत्रता हमारा कर्म सिद्ध अधिकार है ।” आज नारी कहती है कि वह जीवन के प्रत्येक कर्म में पुरुषों के साथ सहभागी रही है जीवन के प्रत्येक पहलूओं की जिम्मेदारी समान रूप से उठाती है तो भी जीवन में उसके साथ अन्याय क्यों ?[३]

हम जानते हैं कि सदियों से पुरुषों ने ही समाज के नीतिशास्त्र बनाये, उनमें पुरुष–स्वतंत्रता, पुरुष हित प्रधान हैं । और स्त्रियों को बंधन–दबाव में रखना चाहते हैं । नारी समाज का अंग होने के बाद भी उसका एक स्वतंत्र अस्तित्व है, उसकी भी आशाएँ, आकांक्षाएँ, इच्छाएँ, होती हैं । इस मनुष्य समाज में समरस, सुंदर, सफल जीवन जीना है तो किसी एक के स्वामित्व या दूसरे के दासत्व से नहीं होगा । ऐसा होगा तो जीवन में कष्ट–कलह और

कटु वैमनस्य पैदा होता है । ऐसे संबंधों को स्थिर बना नहीं सकते और जीवन असहय हो जाता है । इस भाव को हिन्दी साहित्य के प्रबुद्ध कवि मैथिलीशरण गुप्त जी ने इस प्रकार व्यक्त किया है –

''अधिकार खोकर बैठ रहना, यह महा दुष्कर्म है,
न्यायार्थ अपने बंधु को भी, दंड देना धर्म है ।
इस तत्त्व पर ही कौरवों से, पांडुओं का रण हुआ ।
जो भव्य भारत वर्ष के, कल्पान्त का कारण हुआ ।'' (४)

(ख) नारी चेतना – मुक्ति, ऐतिहासिक संदर्भ

विश्व की सभी नारियों ने सदैव ही अपने आपको समाज, धर्म, कानून, शिक्षा, अर्थ और संस्कृति आदि क्षेत्रों में उपेक्षित समझा है । वह पुरुषों के आश्रय में परतंत्र, पराश्रित और पराधीन महूस करती है ।

यह भावना धीरे धीरे सार्वजनिक बनकर समग्र नारी जगत की आवाज बन गई । स्त्रियाँ अपने आप के लिए जाग्रत हो गईं । उस जागृति को सबसे प्रथम अभियान का रूप दिया अमरिका की साराहहेल ने – जिसे नारी मुक्ति, चेतना आंदोलन की प्रथम प्रवर्तक महिला माना गया है । साराह हेल ने 'लेडीज़ मेगेज़ीन' नामक पत्रिका प्रकाशित की । इस पत्रिका के माध्यम से साराहहेल ने नारी मुक्ति, चेतना की आवाज पूरे विश्व में पहुँचा दी ।

२४ अक्तूबर–१७८८ को न्यू हेम्पशायर में साराह हेल का जन्म हुआ । उस समय पुरुष वर्चस्ववादी समाज था । स्त्रियों को गृहणी और पति संतान की सेवा तक मर्यादित माना जाता था । पुरुष प्रधान समाज के विरुद्ध साराह हेल ने अभियान शुरू किया – फलस्वरूप एलिजाबेथ नामक अमरीकी युवती को मेडिकल कालेज में प्रवेश दिलवाया वह प्रथम लेडी डॉक्टर बनी, यहाँ पर पुरुषों के प्रभाव पर साराह हेल ने विजय प्राप्त की ।

सारह हेल ने बोस्टन प्रांत की गरीब स्त्रियों के लिए काम किया । गंदगी, भुखमरी की जिंदगी से मुक्ति दिलाने के लिए उसे जागृत करने का काम किया । और सन् १८७६ में साराह हेल की मृत्यु हुई ।[५]

''आज अमरिका में चल रहे 'नारी मुक्ति आंदोलन–विश्व की बुद्धिमान स्त्रियों की जागृति, चर्चा का विषय रहा है । जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नीति–निर्धारण करते समय पुरुष–नारियों का सहयोग ले, दोनों मिलकर सहभागी, सुखद जीवन के नियमों को सामने रखते हुए अपनी सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक, सांस्कृतिक व्यवस्था बनाये ।''[६]

(ग) अमरिका में नारी मुक्ति आंदोलन

अमरिका में नारी मुक्ति आंदोलन का नेतृत्व करनेवाली बेट्टी फ्राइडन है । – उसका कहना है कि पुरुषों ने मनोवैज्ञानिक ढंग से मानसिक दबाव डालकर नारी समाज की मौलिक प्रतिभा को कुंठित कर दिया है । स्त्रियों को सेक्स, मातृत्व और परिवार की अन्य जिम्मेदारियों को निभाने के लिए ही योग्य माना है । परिणाम स्वरूप मजबूरन स्त्रियों की अन्य प्रतिभा कुंठित हुई है ।

बेट्टी फ्राइडन ने 'द फेमिनिन मिस्टिक' किताब लिखकर राष्ट्रीय महिला संगठन, नारी अधिकार, नारी चेतना, नारी मुक्ति आंदोलन की बातों को सक्रिय बनाने में योगदान दिया । फलस्वरूप २६ अगस्त, १९७० को अमरिकन स्त्रियों को मत देने का अधिकार मिला ।

'द फेमिनिन मिस्टिक के तथ्यों से यह बात साबित हुई कि विश्व युद्ध के बाद पुरुष समाज ने स्त्रियों को सेक्स, मातृत्व और गृहिणी की जिम्मेदारियों को वहन करने के लिए मानसिक रूप से मजबूर किया ।

बेट्टी फ्राइडन का मत है कि ''जननी रूप शारीरिक दृष्टि से प्रत्येक स्त्री–से जुड़ा है – इसलिए विवाह, SEX, मातृत्व और परिवार की भूमिका ही उसका क्षेत्र है – ऐसी मर्यादा लगाकर समाज में उसका स्थान दोयम दर्जे का,

सामान्य दुर्बल और दीन–हीन न माना जाये – अगर ऐसा है तो यह मानसिकता गलत–त्रुटि पूर्ण है ।''[७]

मीडिया का प्रभाव समाज पर ज्यादा है मीडिया अच्छी तरह से जानता है कि गृहिणी और अशिक्षित स्त्रियों को बाजारुं खरीददारी में ज्यादा रुचि है । व्यवसायों में जुड़ी नारियों को नहीं । कभी–कभी शिक्षित गृहिणियाँ भी अपने अकेलेपन से उबकर, मानसिक अभावों को भरने अपने अस्तित्व की रिक्तता को भरने मौज–शौक, भोग की विविध चीजें खरीदती रहती हैं ।

''घर–परिवार–बच्चे, इन सब के बीच में मेरा अस्तित्व क्या है ? या मेरी स्थिति क्या है ? यह प्रश्न सदा ही उसके भीतरी तत्त्व को झकझोरता है । अपनी स्थिति के प्रति जागृति ही नारी चेतना है ।''[८]

श्रीमती बेट्टी फ्राइडन का मानना है कि ''नारी मुक्ति आंादेलन का नारा समान काम के लिए समान काम के लिए समान वेतन ही नहीं है, उसके साथ अपने शरीर पर अपना वश हो । सजना है मुझे सजना के लिए वाले भाव शादी गर्भाधान–गर्भपात और गृहिणीत्व की जिम्मेदारियों का बोझ उन पर न लादा जाए । अपनी जीवन शैली तय करने का अधिकार मर्दों की तरह उसे भी मिले । जागरूक होकर देखें कि शिक्षा, साहित्य, पत्रकारिता या टी.वी. मिडिया के द्वारा नारी के शरीर को ही प्रकट किया जाता है । जैसे शरीर SEX ही उसकी पहचान है अपनी सार्थकता और जीवन का उद्देश्य है, ऐसे रूप के द्वारा ही समाज में नारियों की असुरक्षा उच्छृंखलता बढ़ी है ।''[९]

स्वामी विवेकानंद ने नारी स्वतंत्रता और स्त्री शिक्षा को महत्त्वपूर्ण माना है, कहा है कि ''संसार की सभी जातियाँ, नारियों का सम्मान करके ही महान हुई हैं, जो जाति नारी का सम्मान करना नहीं जानती वह न तो अतीत में उन्नति कर सकी है, और न आगे उन्नति कर सकेगी ।''[१०]

स्त्रियों के बारे में ओशो रजनीश के विचार कुछ इस प्रकार है – ''मैं कहना चाहता हूँ कि स्त्रियाँ न तो पुरुषों से हीन हैं और न समान हैं ।

स्त्रियाँ पुरुषों से भिन्न हैं, वे बिल्कुल भिन्न हैं । न उनके नीचे होने का सवाल है, न उनके समान होने का सवाल है, स्त्रियाँ पुरुषों से बिलकुल भिन्न हैं और जबतक स्त्रियाँ अपनी भिन्नता की भाषा में, अपने अलग व्यक्तित्व की भाषा में सोचना शुरू नहीं करेंगी तब तक या तो वे पुरुष की दास होंगी, या पुरुष की अनुयायी होंगी, और दोनों स्थितियाँ खतरनाक हैं ।"[११]

महात्मा गांधी के स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन में महिलाओं ने हिस्सा लिया, अपनी हिम्मत, साहस, शौर्य से आंदोलन को सफल बनाया । माँ कस्तुरबा, स्वरूपा रानी नहेरू, कमला नहेरू, सरोजिनी नायडू, अरुणा आसफअली, विजया लक्ष्मी पंडित, सुचित्रा कृपलानी, इंदिरा गांधी, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हजरतमहल, बेगम जीन्नत महल, अनंतीबाई लोधी, मेडम कामा आदि कई अनाम नारियों ने स्वतंत्रता संग्राम को सफल बनाने में अपना योगदान दिया ।

स्त्रियों की स्थिति में परिवर्तन सुधार, जागृति की प्रेरणा स्वाधीनता के दौरान ही मिली । इन महान नारियों ने रचनात्मक कार्य भी किये ।

"ब्रिटेन में महिलाओं को १९२८ में मताधिकार मिला । भारत में मताधिकार का आंदोलन १९१७ में हुआ, १९१९ में इस अधिकार को मान्य रखा । और १९२६ में पुरुषों के समान मताधिकार मिला । इसके लिए मार्गारेट कजिन्स ओर श्रीमती ऐनी बेसंटने कार्य किया । १८ दिसम्बर १९१७ में भारत में सरोजिनी नायडू के नेतृत्व में महिलाओं के पुनरुत्थान का प्रथम कार्य शुरू हुआ । लिंग के आधार पर भेदभाव दूर हो, समान वेतन, समान मताधिकार और उन्हें भी सामान्य नागरिक माना जाए, उन्हें भी शिक्षा प्राप्त करने का हक्क, सुविधा होनी चाहिए । फलस्वरूप – सन् १९५० में भारत के संविधान में महिलाओं को पूर्ण समान अधिकार दिये गये हैं ।"[१२]

"भारतीय नारी की वास्तविक स्थिति जानने के लिए जो प्रयत्न किये उससे यही तथ्य सामने आया कि हमारे देश के महिला जगत में नैतिक प्रबुद्धता है, किंतु आत्मनिर्भरता के साधन व कुशलता न होने से स्त्रियों में

स्वावलंबन, आत्मविश्वास के भाव नहीं हैं ''सबसे अधिक दुःख की बात यह है कि भारतीय स्त्रियों का जीवन विषमता की कहानी है ।''[१३]

(घ) भारतीय और पाश्चात्य अभिगम, दृष्टिकोण

दुनिया के नारी समाज को दो भागों में विभाजित कर सकते हैं । पूर्वी देश, पश्चिमी देश । पूर्वीय देशों की स्त्रियों की परिभाषा अलग है तो पश्चिमी देशों की स्त्रियों को भी अलग रूप से परिभाषित किया जा सकता है ।

पश्चिमी देशों की पहचान है, समृद्धि, विकास । वहाँ का समाज समृद्धि की दृष्टि से संपन्न है, परिणाम स्वरूप वहाँ भोगवाद विलासिता ही जीवनशैली है । वहाँ स्त्रियों की पहचान है, स्वतंत्रता, विलासिता, भोगवाद, मुक्त यौन जीवन और स्वच्छंदता । परिणाम स्वरूप वहाँ स्त्री समाज की नैतिकता की परिभाषा ही अलग है, वहाँ के स्त्री समाज में समस्याएँ ज्यादा हैं ।

वहाँ स्त्रियाँ, उपभोग, कामुकता, मुक्त यौन जीवन को ही स्वतंत्रता, बुद्धिमत्ता और सांस्कृतिक विकास मानकर, उसे ही नारी चेतना का नाम देकर अपने जीवन में अपना रही हैं । अपने आप को आधुनिक कहलाने के लिए यौन अतिरेक, नैतिकता का विरोध, स्वार्थी क्षणिक सुख के लिए देह को ही महत्त्वपूर्ण मान रही हैं ।

जबकि पूर्वीय देशों में सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण है परिवार, परंपरा, श्रद्धा और नैतिकता । इन्हीं बातों को ही धर्म और पवित्रता का दर्जा दिया जाता है । शालीनता और संयमी अनुशासनबद्ध जीवन, मर्यादित यौन जीवन, पतिव्रत धर्म आदि बातें पूर्वीय देशों की नारियों की पहचान है ।

पूर्वीय देशों की नारियों आधुनिक युग में शारीरिक रूप से अवश्य आधुनिक हैं । पर आत्मा की दृष्टि से पुरानी नैतिकतावादी हैं, मर्यादावादी हैं । व्यभिचार को पाप माना जाता है । वह भोग विलास के लिए नहीं, त्याग तृप्ति

के लिए जीती है । चारित्र्य भ्रष्ट होने पर अपने आप को खत्म कर देती हैं ।

पश्चिम की नारियों में दैहिक नग्नता है । पुरुषों के प्रति उसका आकर्षण सिर्फ नये जूते, कपड़े, पुराने हो जाने पर उतार कर फेंक दिये जाते हैं उसी प्रकार है । पुरुष संग, दैहिक सुख, वैभवी जीवन को ही नैतिक मान रही है । पश्चिमी जगत में स्वच्छंदता, भोगवाद मुक्त यौनाचरण आदि ही संस्कार है । समाज में विकृतियाँ हैं । नारी भी कुंठा, उन्मुक्तता, अश्लीलता से ग्रस्त है । तो क्या यही नारी मुक्ति या चेतना है ?

नारी मुक्ति या चेतना में सिर्फ देह नहीं भावना, संस्कार और जिम्मेदारियाँ भी हैं । स्त्री–पुरुष दोनों एक तराजू के समान पलड़े हैं । भारत जैसे प्राचीन, सभ्य देश में नारी का शोषण, उत्पीड़न पश्चिम की तुलना में कम है । भारत में नारी सिर्फ शरीर नहीं है, वह आत्मा–मन–बुद्धि और शरीर है ।

पूर्वीय देशों और पश्चिमी देशों की नारियों की नारी चेतना की परिभाषा अलग है । दोनों के लिए समान मापदंड नहीं हैं ।

पूर्वीय देशों की स्त्रियों के पास अपने चरित्र के पवित्र संस्कार हैं । अपने अस्तित्व की पहचान के लिए, निर्भरता के लिए उसे जो न्यायपूर्ण हो, स्त्री–पुरुष दोनों को जोड़नेवाला हो, वही चाहिए । पश्चिमी देशों की नारियों के पास स्वतंत्रता, समृद्धि, समय सबकुछ है । मगर नारी चेतना मुक्ति स्वतंत्रता के नाम पर उसे जो कुछ चाहिए वह है, मुक्त यौनाचरण, भोग और स्वच्छंदता ।

जब कि भारतीय नारी अपने जीवन में पुरुष की सहधर्मिणी, सहभागी, जीवन सहचरी है । सुख में और दुःख में अपने जीवन के लिए, वह त्याग, संघर्ष करने के लिए तैयार है । पूर्वीय देशों की नारियाँ विश्व के लिए एक अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत करती हैं ।

''नारी समाज की महत्त्वपूर्ण इकाई है । अपने आप में पूर्ण व्यक्तित्व है । उसमें सज्जनता का प्रत्येक गुण मौजूद है, मनबुद्धि–आत्मा और दृढ़ संकल्प को लेकर वह ऐसा पथ प्रदर्शित करती है कि पुरुष अपने जीवन का मार्ग तय कर सके । और इसलिए आवश्यकता है कि ऐसे पूर्ण व्यक्तित्व को अभिव्यक्त होने का मौका दिया जाय ।

क्योंकि नारी जब दृढ़ संकल्पित होती है तो श्री से दुर्गा और सत्‌धर्म की रक्षार्थ वह देवी से महादेवी, महाकाली भी बन जाती है । वह साक्षात् क्रांति बन जाती है । तब विश्व का प्रत्येक जन उसकी पूजा करता है । उदाहरण के लिए मधर टेरेसा ।''[१४]

नारी भी अपने आप में वैश्विक हित की संभावना लेकर जिये, कि समाज उसके नेतृत्व से प्रेरणा ग्रहण करे, कायर पुरुषों की मानसिकता ऐसी जागृत नारियों से डर रही है । मगर तंदुरस्त मानसिकता वाला, कर्मशील, उदार, आत्मविश्वासी पुरुष नारी जागृति को अपनाता है, और नारी के साथ तादात्म्य पाकर संवाद करता है । कायर, निर्बल, कामचोर पुरुष ही परंपराओं के माध्यम से, स्त्रियों को बंधन में रखना चाहेगा । पुरुषों को अपनी संकीर्ण मानसिकता को छोड़ नारी जागृति के पक्ष में सहयोग देना चाहिए ।

(ड) नारी चेतना से तात्पर्य

नारी मुक्ति या चेतना में गांधीजी का योगदान भी रहा है । स्वतंत्रता पूर्व ही गांधीजी के नेतृत्व में राष्ट्रमुक्ति संघर्ष जब सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक पक्षों को लेकर चला तो नारी मुक्ति के लिए भी भारतीय जन–मानस में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ और इसका कारण गांधीजी की लेखनी और वाणी थी ।

''क्योंकि एकबार जब किसीने गांधीजी से पूछा कि स्त्रियों के सामाजिक कामों में आने से क्या घरेलू उत्तरदायित्वों की अवहेलना नहीं होगी ? तो

गांधीजी का उत्तर था ''मेरे विचार से महिलाओं की पारिवारिक गुलामी हमारी बर्बरता का उदाहरण है । अब वह समय है जब हमारा स्त्रित्व इन दुराग्रहों से मुक्त हो चुका है । स्त्रियों के जीवन का सारा समय पारिवारिक कर्तव्यों के लिए ही नहीं होना चाहिए ।[९५]

नारी मुक्ति स्वातंत्र्य, या चेतना की कल्पना और विचारधारा पश्चिमी चिंतन का ही प्रभाव है । नारी स्वतंत्रता का तात्पर्य यह नहीं है कि नारियों को पारिवारिक अथवा सामाजिक बंधनों से मुक्त होना है, और अपने दायित्वों से मुँह मोड़कर स्वच्छंद जीवन व्यतीत करना है, किंतु व्यक्ति स्वतंत्रता के युग में नारी को भी पुरुषों की तरह वैयक्तिक, स्वतंत्रता होनी चाहिए । अपने विचार, अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए उस पर किसी की मर्जी न लादी जाये । उसे परम्परा, रूढ़ियों की गुलामी जबरदस्ती न करनी पड़े । उसे अपने व्यक्तित्व के विकास के लिए पुरुष की भाँति ही सुविधा और अवसर प्राप्त हों । उसे भी मानवता की दृष्टि से देखा जाय उसे वस्तु की भाँति केवल उपयोग में न लाया जाये ।

नारी जागरण एवं नारी शिक्षाने नारी को जागरूक बनाया और विभिन्न व्यवसायों में पदार्पण करके नारी ने आत्मनिर्भरता प्राप्त की है । आज की कामकाजी, नौकरी पेशा व्यावसायिक नारी सिर्फ आत्मनिर्भर ही है ऐसा नहीं वरन पारिवारिक दायित्वों का भी निर्वाह करने में सक्षम है ।

महादेवी वर्मा का मानना है कि ''भारतीय नारी जिस दिन अपने संपूर्ण प्राणवेग–से जाग सके, उस दिन उसकी गति रोकना किसी के लिए संभव नहीं है । उसके अधिकार न भिक्षा वृत्ति से मिले हैं न मिलेंगे, क्योंकि वे उसकी आदान–प्रदान योग्य वस्तुओं से भिन्न हैं । समस्या का समाधान समस्या के ज्ञान पर निर्भर है ।''[९६]

''आधुनिक युग में नारी चेतना से प्रभावित नारी के पास अपने विचार है, व्यक्तित्व है, अनुभूति है, प्रश्न हैं, किंतु समस्याओं के लिए समाधान नहीं

है, किंतु अभिव्यक्ति का साहस है, यह साहस ही चेतना है, जीवंतता है जो समाधान की ओर अग्रसर है ।''[१७]

(च) नारी चेतना, विषयक विभिन्न दृष्टिकोण

प्रस्तुत अनुसंधान के विषय की केन्द्र उपन्यासकार श्री शिवानी जी ने नारी चेतना के बारे में अपना मत इस प्रकार दिया है –

''शिवानीजी का मानना है कि भारतीय नारी को वैयक्तिक स्वतंत्रता देने पर भी उसके मन में अनजाने ही परम्परागत पतिव्रत संस्कार इतने प्रबल हैं कि विषम से विषम परिस्थिति में भी वह अपनी स्वतंत्रता का दुरुपयोग नहीं करती ।''[१८]

तो यही है नारी चेतना जो स्वयं अपनी बुद्धि और भावों के द्वारा समझे, प्रत्येक वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति को तराजू में रखकर तोले, तय करे कि उसके लिए क्या योग्य है क्या नहीं !

शिवानीजी ने स्पष्ट किया है कि वर्तमान युग में नारी को पुरुष की भांति समान अवसर और स्थान मिलने लगा है । नारी पुरुष की अनुकर्ता मात्र–न होकर अपने स्वतंत्र अस्तित्व के प्रति जागरूक है । समाज के विभिन्न कर्मक्षेत्रों में आगे बढ़कर स्त्रीने परम्परागत अबला के मूल्य के स्थान पर सबला नारी के मूल्य की प्रतिष्ठा की है ।[१९]

हिन्दी साहित्य के जाने–माने लेखक राजेन्द्र यादव का मानना है कि ''आज स्त्री–सदियों के बाद एक भरपूर खुली साँस ले पाने में समर्थ है । परम्परागत समाज की नींव अगर स्त्री की शर्मिंदगी पर टिकी थी, तो वह हिल उठी है । यदि आर्थिक, आत्मनिर्भरता ही स्वाधीनता की कुंजी है तो जब तक स्त्री के पास देह है, और संसार के पास पुरुष तब तक स्त्री को चिंता की क्या जरूरत ? जरूरत है तो देह को पुरुष के स्वामित्व से मुक्त करके अपने अधिकार में लेने की क्योंकि यौन–सुचिता, पतिव्रत, सतीत्व जैसे मूल्य

स्त्री के सम्मान का नहीं, पुरुष के अहंकार का, हीनता और असुरक्षा का पैमाना तथा पितृसत्ता के मूल्य हैं – स्त्री की बेड़ियाँ हैं । जिसने ये बेडियाँ उतार दी हैं वह स्त्री विशिष्ट है ।[२०]

''डॉ. शशिप्रभा शास्त्री का मानना है कि नारी शिक्षित होने के कारण उसकी अपनी व्यक्तिगत मांगें हैं – वह अपने व्यक्तित्व को पति के साथ विलीन नहीं कर सकती, यह विलीन करना उसकी प्रकृति–से अनुकूल नहीं है । वह अपने व्यक्तित्व को अलग से रखना चाहती है ।''[२१]

नारी चेतना के बारे में लेखिका वीणा मिश्र अपने लेख में इस प्रकार उदाहरण देती है । ''चेतना की आराधना के अध्याय में नई सदी की नौ जवान लेखिका कु. ज्योति शुक्ल की रचनाओं का उल्लेख अवश्य करूँगी, राष्ट्रीय संकट के रूप में कारगिल युद्ध के बाद के समय में महिला कौन–सी भूमिका ग्रहण करना चाहती है, उसका उदाहरण है, ''एक और झाँसी की रानी'' कहानी । जिस में एक डॉक्टर स्त्री अपने पति की मृत्यु का शोक ना मनाकर, कारगिल, सैनिक, मौर्चे पर, दाह संस्कार के बाद चली जाती है उसकी अलौकिक वीरता पर उसे राष्ट्रपति पुरस्कार देते हुए कहते है कि हमने १८५७ की झाँसी की रानी को तो देखा नहीं लेकिन १६१६ की झाँसी की रानी प्रत्यक्ष है । ''इसी कहानी में नायिका अपने दृढ़ चरित्र का परिचय देती है । जो निश्चय ही आज की नारी का प्रतिबिम्ब है, वह नारी जो अन्याय नहीं सहती अपने कैरियर के प्रति सजग है, प्रेम के प्रति समर्पित तथा देश की आन–बान तथा शान के लिए आज–भी जीवन होम करने को तैयार है । इस कहानी को 'तारादेवी स्मृति' प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है ।''[२२]

गांधीजी औरत के हक का समर्थन करते हुए अपने लेख में लिखते हैं कि ''आदमी ने औरत को अपने अधीन मान लिया है, और औरत ने भी सुविधा तथा सुरक्षा जानकर इस अधीनता को स्वीकार कर लिया है । इस प्रकार दोनों के लिए पतन का पथ पकड़ लेना सरल हो गया । नारी भूले कि

वह पुरुष के भोग की वस्तु है या हो सकती है । सैद्धांतिक रूप–से स्त्री–पुरुष जैसे एक हैं वैसे ही उनकी स्मस्याएँ तथा अनुभूतियाँ भी एक हैं दोनों में एक ही आत्मा है । पर स्त्री, पुरुष से अधिक उदार है क्योंकि वह आज भी आत्मबलिदान, मौन, कष्ट सहन कर नम्रता–विश्वास और ज्ञान की प्रतिमा है । पुरुष जिन बुराइयों के लिए जिम्मेदार है, उसमें सबसे बड़ी बुराई उसके द्वारा उसकी अर्धांगिनी का दुरुपयोग है ।''[२३]

''स्त्रियों के अधिकारों के प्रश्न पर तो मैं किसी प्रकार का समझौता करने के लिए तेयार नहीं हूँ । वह तो जन्मसिद्ध है, मेरी राय में उन्हें ऐसी किसी प्रकार की भी असुविधा नहीं होनी चाहिए, जो पुरुषों के लिए नहीं है । स्त्री घर की स्वामिनी है । पुरुष रोटी कमाता है वह उसे सबको बाँटती और खिलाती है । घर का, बच्चों का पालन करती है । राष्ट्र की वह माता है । यदि वह रक्षा न करे तो सारी जाति नष्ट हो जाय । अतः अधिकारों का प्रश्न ही कहाँ उठता है ?''

नारी यह न भूले कि घर उसका पहला कार्यक्षेत्र है । उसको शिक्षा ऐसी ही और इसलिए मिलनी चाहिए कि वह घर का कुशल संचालन कर सके और अपने बच्चों को श्रेष्ठ नागरिक बनाए । जीवन में जो कुछ शुद्ध और धार्मिक है उन सब की विशेष संरक्षिका है । वे त्याग–सेवा–धर्म का मूर्तिमंत स्वरूप है, प्रतीक है ।''[२४]

''स्त्रियों में प्रचलित तत्कालीन पर्दा प्रथा का विरोध करते हुए गांधीजी ने लिखा था – पर्दा वहम ही नहीं है उसमें मुझे पाप की बू आती है, पर्दा किस–से रखे ? क्या पुरुष मात्र विषयासक्त रहते हैं ? क्या स्त्री अपनी पवित्रता बगैर पर्दा नहीं रख सकती है ? पवित्रता मानसिक बात है, जो सभी पुरुषों में होनी चाहिए । यदि इस बुद्धि प्रधान युग में स्त्री–धर्म की रक्षा करना चाहती है तो उसे दरिद्र नारायण की सेवा करनी होगी, शिक्षण लेना होगा । दरिद्र नारायण की सेवा करने का अर्थ खादी प्रचार, कांतना इत्यादि,

हरिजन सेवा का अर्थ अस्पृश्यता रूपी कलंक धोना, ये दो बड़े भगवान के कार्य हैं और विद्या पाने का कार्य, परदा रखने के साथ कभी नहीं चल सकता है । पर्दा रखकर सीता रामजी के साथ जंगलों में भटकी होंगी ? सीता से पवित्र स्त्री जगत में कभी हुई है ? बहनो पर्दा तोड़ो, धर्म रखो ।''[२५]

श्री अनुराधा देरासरी का मानना है कि आज की आधुनिक भारतीय स्त्रियों को अपने ध्येय के लिए स्त्री पुरुष के 'जेन्डर' भेदभावों को हटाकर जीवन में सक्रिय होना जरूरी है । यह जानकर भी आश्चर्य होगा कि आज २००७ में विश्व में सबसे ज्यादा वेतन प्राप्त करनेवाली ओपराहन विनफ्रे भी स्त्री हैं ।

''सामान्य भारतीय स्त्री अपनी सामान्य स्थितियों में भी दृढ़ संकल्प, खंत, विश्वास और समझदारी से काम करके चुनौतियों को भी पार कर सकती है ।''[२६]

सौंदर्य और चेतना के बारे में भी अनुराधा देरासरी का मानना है कि सौंदर्य का संबंध चेतना के साथ जुडा है । इसलिए सौंदर्य में भी आंतरिक चेतना आवश्यक है । जो स्त्रियों के आत्मविश्वास को बढ़ावा दे ।

पुराने समय में, शायद २००० तक नारीत्व की यही व्याख्या थी कि जो रोजमर्रा की पारिवारिक जिम्मेदारियों को अच्छी तरह उठाती है – वही स्त्रीत्व से परिपूर्ण नारी है । स्त्रियों का आंतरिक सौंदर्य परिवार तक ही मर्यादित था और नारी को बाह्य सौंदर्य में उसका वर्ण आता था ।

''आज स्त्री पारिवारिक जिम्मेदारियों के साथ अपने सौंदर्य के प्रति भी जागृत हो गई है । गृह, परिवार, समाज और नौकरी, इन्हीं बातों में वह संतुलन भी करने लगी है । सौंदर्य और आत्मविश्वास को चोली दामन का रिश्ता है यह वह समझ चुकी है और यह जागृति सिर्फ अमीर वर्गों तक मर्यादित है ऐसा नहीं, उच्च, मध्यम वर्ग की और सामान्य वर्ग की स्त्रियाँ भी

अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों के साथ स्वच्छता सुंदरता को महत्त्वपूर्ण मानने लगी हैं ।"[२७]

"भारत के महान–तत्त्वचिंतक ओशो रजनीशजी का मानना है कि दुनियाँ के सभी अमानवीय व्यवहार स्त्रियों के साथ ज्यादा हुए हैं रजनीशजी का कहना है कि इस समस्या का एक ही समाधान है कि शादी लग्न ही बंद कर देना ।" हजारों सालों से यातनाओं को सह रही स्त्रियाँ, स्वतंत्रता और समानता की बातें करती हैं तो वह बिलकुल साहजिक है । मगर रजनीशजी का कहना है कि अब जो स्त्री मुक्ति का आंदोलन चल रहा है मैं उसके पक्ष में नहीं हूँ । उसने प्रतिक्रियात्मक रूप ले लिया है । तो यह वास्तविक क्रांति नहीं है – यह तो पुरुषों की नकल (प्रतिलिपि) बनने का प्रयास है – याद रखना कि नकल आपको समान नहीं बनाती । नकल आपको प्रतिलिपि बना देती है । मौलिकता मौलिक ही होनी चाहिए । प्रत्येक कार्य पुरुषों की तरह करने में स्वतंत्रता अवश्य होगी लेकिन उसमें आकर्षण नहीं होगा, प्रणय नहीं होगा, काव्य नहीं होगा ।

"समानता एक बात है – समरूपता बिलकुल अलग बात है । अलग दृष्टि है । रजनीश जी ने कहा है कि स्त्रियाँ पुरुष जैसी बनने का प्रयास न करें, आपके विकास के लिए, समान अवसर उपलब्ध हैं, मगर उसका अर्थ यही है कि स्त्रियों को अद्वितीय, अलग बनकर रहना होगा आप पुरुष नहीं है और स्त्रियों को पुरुष बनने की जरूरत भी नहीं है । क्योंकि पुरुषों के पास विशेष कुछ नहीं है ।"[२८]

मनोचिकित्सक – हरेन्द्र रावल नारी चेतना के बारे में लिखने हैं कि – "विशेषज्ञों का मानना है कि स्त्रियों के दिमाग को उद्दीप्त करने के लिए चिंतित, विक्षिप्त करने के लिए कई कारण हैं – स्थितियाँ हैं । मगर आज की पढ़ी लिखी बौद्धिक स्त्रियाँ अपनी विपरीत परिस्थितियों में भी समाधान, मार्ग, हल ढूँढ़ लेती हैं । प्रथम वह बनी हुई घटना, बात पर पर्दा डाल देती

है, दूसरे वह भावना के वश में नहीं होती । तीसरे असहाय परिस्थितियों में वह स्थिर होने के लिए तैयार नहीं है । किसी भी प्रकार के अभिप्राय नहीं देती । चौथे अस्वस्थता छुपाना नहीं चाहती, पाँचवे पतिदेवों से मुक्त होना भी नहीं चाहती । लेकिन इतना जरूर कि वह असामान्य असाहजिक परिस्थितियों में लम्बे समय तक रहना नहीं चाहती ।

''तत्त्वचिंतकों का मानना है कि आज की बौद्धिक नारी कठिनाइयों से मार्ग निकालने के लिए, असामान्य से सामान्य बनने के लिए मेन्युअल वर्क (गृहकार्य) कर लेती है ।''[२६]

और जाने माने मनोचिकित्सक डॉ. हंसल भचेच कुछ इस प्रकार कहते हैं – ''मानव जाति के इतिहास से ही प्रेम की नैसर्गिक ताकत स्त्रियों के पास रही है, मगर अब स्त्रियों की मानसिकता में जो बदलाव आ रहे हैं, उससे वह यह ताकत गँवा रही है, एक निश्चित वर्ग ऐसा है जिसमें स्त्रियाँ भी शामिल हैं वह अपने दिमाग से सोचती है और यह परिवर्तन स्त्रियों को लाभदायी है – क्योंकि भावनाओं के वेग और बहकावे में जो दुःख उठाती है, उससे मुक्ति मिल जायेगी । लेकिन हमें यह याद रखना आवश्यक है कि व्यक्तित्व के पूर्ण विकास के लिए, दिमाग की नैसर्गिक स्वस्थता के लिए भावना सभर स्त्री–पुरुष संबंध अनिवार्य है ।

''वैवाहिक जीवन का अर्थ एक–दूसरे के साथ रहना–ही नहीं है, एक–दूसरे को उष्मा, हुँफ, प्रसन्नता–विश्वास देना है इसी तरह जीना ही जीवन है ऐसी मानसिकता स्त्री–पुरुष दोनों में विकसित होनी चाहिए और यह कोई कठिन कार्य नहीं है ।''[३०]

आधुनिक युग की महिला लेखिका ज्योति शुक्ल का मानना है कि '' अपने नारीत्व स्त्रीत्व के प्रति जागरूक, आग्रहशील नारी से रूढ़ीवादी लोग डरते हैं । फिर भी उसके न्यायपूर्ण अधिकारों को पुरुष प्रधान समाज ने सदियों से मान्यता नहीं दी है । उल्टा उसका शील–चरित्र स्त्रीत्व–शंका के दायरे में आ

जाता है । सामाजिक तौर पर स्त्री का स्थान उसकी नियति आदि के बारे में सोचने का सिलसिला आधुनिक युग में शुरू हुआ उसके प्रणेता समाज सुधारक ही थे । स्त्री जीवन, स्त्री अस्मिता के कई त्रासद पक्षों को उभारा गया किंतु इन सब में स्त्री सिर्फ सहानुभुति ही पा सकी है । प्रत्येक बड़ी रचनाकार के मन में स्त्री की एक आदर्श प्रतिमा ही है, जिसमें नारी जीवन के साथ, समाज, घर, परिवार है । उसमें ही स्त्री का जीवन है ।''[३१]

''नारी चेतना की पक्षधर डॉ. रंजनाजी अरगडे नारी चेतना के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखती हैं कि ''नारी चेतना की बात हिन्दी साहित्य के देशकाल में एक नई बात है एक हजार वर्षों के साहित्येतिहास में नारी चेतना की बात नई है, 'चेतना' अर्थात् अपने होने, अपने अस्तित्व के प्रति जागृति ।''[३२]

''साहित्य में नारी चेतना का अर्थ है नारी चित्रण और नारी लेखन । पुरुष रचनाकारों में व्यक्त नारी चेतना स्त्री रचनाकारों में व्यक्त नारी चेतना । आज नारी विमर्श की बोलबाला है । हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में – गद्य साहित्य में नारी चेतना की झलक कई दृष्टियों से देखने को मिली है । नारी का एक स्वतंत्र व्यक्तित्व नागरिक अधिकारों से युक्त रूप ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर एक नई घटना ही है । स्त्रियों को केवल शरीर प्रकृति और धर्म में न बाँधकर, सांस्कृतिक रूप से सीमित न करके विस्तृत सामाजिक परिवेश में देखने की आवश्यकता है ।''[३३]

हिन्दी साहित्य के साहित्यकारों ने नारी चरित्र को लेकर कलम चलाई इसके बारे में वीणा मिश्र ने इस प्रकार लिखा है – ''भारतेन्दु हरिश्चंद्र, जयशंकर प्रसाद, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी या प्रेमचंदजी आदि अनेक साहित्यकारों ने स्त्री के चरित्र पर अनेक दृष्टिकोणों से लिखा – गृहस्थी, पति–सास–ससुर–पारिवारिक जिम्मेदारी, अतिथि सेवा आदि अवधारणाओं पर कहानी, उपन्यास लिखे गए । नारी शिक्षा, विधवाओं की दुर्दशा, दहेज समस्या,

विधवा विवाह जैसे सम्यक् विषयों को लेकर हिन्दी साहित्य में लिखा गया । और समाज को सोचने के लिए मजबूर किया । सांस्कृतिक संक्रमण को लेकर साहित्य में नारी के बदले हुए स्वरूप अंतर्द्वन्द्व को प्रस्तुत किया गया । प्रेमचंदजी के साहित्य की प्रत्येक स्त्री–पात्र आदर्शवादी व्यवहारिक और गांधीजी के प्रभाव में राजनैतिक क्षेत्र में समाज सुधारक दिखाई दियो ।"[३४]

"प्रेमचंदोत्तर काल में साहित्यकारों की धारणा में परिवर्तन हुआ था । रूढ़ियाँ, सामाजिक बंधन के बोझ से स्त्रियाँ मृतः प्राय हो गई थीं । साहित्यकारों को भी इस दायित्व का भी बोध हुआ कि समाज के आधे भाग को यदि इसी प्रकार निष्प्राण होने दिया तो देश की प्रगति अधूरी ही रह जायेगी । इसलिए उन्होंने नारी जीवन की विषमताओं को चित्रित किया । जिससे उसे समाज की सहानुभूति और सराहना मिले तथा अपनी शक्ति, सामर्थ्य का उन्हें बोध हो । इस दायित्व को सर्वाधिक वहन किया नारी लेखिकाओं ने । नारी की स्मस्याओं के चित्रण में उसके जीवन के अभावों और आवश्यकताओं को मुक्त हृदय से व्यक्त किया । आर्थिक–सामाजिक पारिवारिक–सांस्कृतिक बंधनों का भी वर्णन किया ।"[३५]

और नारी लेखिकाओं ने अपनी पहचान बनाई है । आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नारी के दर्शन हो रहे हैं । उषा–प्रियंवदा, ऋता शुक्ला, श्रीमती कमल कुमार, कुसुम अंसल, कृष्णा अग्निहोत्री, चित्रा मुद्‌गल, कृष्णा सोबती, दीप्ति खंडेलवाल, नमितासिंह, नासिरा शर्मा, पदमा सचदेवा, प्रभा खेतान, मन्नूभंडारी, मंजुल भगत, मणिका मोहिनी, मालती जोशी, महेरुन्निसा परवेज, मैत्रेयी पुष्पा, मृदुला गर्ग, मृणाल पांडे, राजी सेठ, शिवानी, शशिप्रभा शास्त्री, सूर्यबाला जैसी विदुषी नारियाँ समाज निर्माण के कार्य में जुड़ी हुई हैं, भारत वर्ष में स्त्री से संबंधित समस्याओं जैसे अंधविश्वास, तलाक, विधवा विवाह, कुरीतियों और महत्त्वपूर्ण कानूनों की भूमिकाओं को लेकर लेखिकाओं ने गहन

चिंतन किया है । अपने मन को, अपनी इच्छा, अपेक्षाएँ, अस्मिता से जुड़े सवालों को, अपने जीवन संघर्षों को, अपने ढंग-से अपनी भाषा में लिखना शुरू किया । यह वास्तविकता के खिलाफ एक अभियान था । अपने वजूद के प्रति जागरूक सजग-स्त्री सामने आई । और इस प्रकार स्त्री लेखन को नई पहचान मिली, स्त्री जीवन के कई पहलू-संदर्भ मुददे उभारे गए हैं ।

नारी अस्तित्व को लेकर डॉ. हेमा देवरानी जी लिखती हैं कि - ''आज नारी अपने अस्तित्व की सुरक्षा के लिए परम्परागत मूल्यों से लड़ रही है । इन लेखिकाओं की नारियाँ आँचल में दूध और आँखों में पानी लेकर नहीं बढ़ती, इनके साहित्य की नारी अंगारों के बीच दहकती है । लेखिकाओं ने 'स्त्री' केन्द्र में रखकर अनेक स्मस्याएँ प्रस्तुत की हैं । महिलाएँ धीरे धीरे यह महसूस करने लगी हैं कि इन्सान के रूप में उनका भी एक निजी व्यक्तित्व है ।

जैसे नासिरा शर्मा के ''ठीकरे की मँगनी'' उपन्यास की नायिका कहती है - एक घर औरत का अपना भी हो सकता है - जो उसके बाप और शौहर के घर से अलग उसकी मेहनत और पहचान का हो ।''[३६]

कामकाजी नारियों के बारे में वीणा मिश्र जी कहती हैं कि - ''हालाँकि छठे दशक में भी नारियों का नौकरी करना हमारे भारतीय समाज में अच्छा नहीं माना जाता था, लेकिन फिर भी वह स्वीकार्य होने लगा था । समाज में एक वर्ग शिक्षित गृहिणी चाहता था, जो गृहिणीत्व का उत्तरदायित्व निभाये और घर में आर्थिक बोझ भी उठाये । बाहर निकलकर नौकरी करनेवाली स्त्रियों के प्रति हकारात्मक अभिगम रखा गया । नारी को घर-परिवार की चार दिवारी लाँधकर बाहर की दुनिया के कर्मक्षेत्र में पदार्पण करना पड़ा । सामान्य गरीब वर्ग की नारियाँ तो बहुत समय से अर्थोपाजन में जुड़ी हुई हैं । कई नारियों को पिता या पति का निखटू-शराबीपन, कामचोरी आदि कारणों से काम करना

पड़ता था । कामकाजी नारी की अपनी कई समस्याएँ हैं । घर, बाहर दोनों की जिम्मेदारी वह उठाती है कभी कभी पारिवारिक जिम्मेदारियों को अविवाहित रहकर भी उठाती है, यह उसका हौंसला चेतना, अस्मिता है ।"[३७]

कभी कभी महिलाएँ, अशिक्षित हों या शिक्षित घर की सारी व्यवस्था का दायित्व उठाने में वह तन–मन–से घर के लिए समर्पित होती हैं । घर में खाना बनाना, कपड़े, बर्तन, अतिथियों की व्यवस्था, स्वागत, सत्कार, सामाजिक व्यवहार, लेन–देन, सबकुछ उसे देखना पड़ता है । भारतीय समाज में उच्चशिक्षा प्राप्त करने के बाद भी स्त्रियों को ही पारिवारिक दायित्वों को वहन करना पड़ता है । घरेलू स्त्रियों की भी एक विशेषता होती है कि लेन–देन, रूपये–पैसे खर्च करने में कुशल, सावधान, जागृत होती है, दुरंदेशी होती है । साथ साथ उसमें आत्मीयता भी बिलकुल साहजिक, प्राकृतिक रूप से होती है । बनाव, शृंगार, पति, बच्चे, पास पड़ोश में व्यवहार रखती है, सास–ससुर की सेवा और बच्चों के भविष्य की भी चिंता उसे रहती है ।

अशिक्षित होते हुए भी कई स्त्रियाँ उनके नैर्सगिक संस्कारों के कारण सुशिक्षित महिलाओं से भी अधिक उदार, सहनशील और न्याय संगत हैं । ऐसी महिलाएँ अपने जीवन में संपूर्ण गरिमा और ममत्व का परिचय देती हैं अपनी भावनाओं एवं विचारात्मक स्तर पर वे कमजोर नहीं हैं । उनमें भी अपनी निजी चेतना सामर्थ्य है ।

मजदूरी करके अपना जीवन निर्वाह करने वाले वर्गों की नारियों की चेतना कुछ अलग है । कई बार पति कामचोर, आलसी, झूठा, शराबी, बेशरम, निकम्मा है, तो स्वयं तो कुछ करता नहीं, पत्नी को मारपीट करके शराब के पैसे भी उससे छीन लेता है । तब कई नारियाँ ऐसी भी है जो अपने शराबी पति को पैसे नहीं देती, वरन् घर से मार भगाती है । अपने बच्चों को मजदूरी करके, दूसरे लोगों के घरकाम करके पालती है । कभी–कभी मजदूरी

करने अपने छोटे बच्चों को कोठरी में बंद करके, या दूसरों के भरोसे छोड़कर काम करने जाती है ।

क्योंकि आर्थिक अभाव के समय में उसे अपने हाथ–पैर के अतिरिक्त उन्हें किसी का सहारा नहीं दिखाई पड़ता । दूसरों के घर का काम, घर की सफाई, खाना बनाना, खेत–खलिहानों में पिसाई, कटाई आदि सबकुछ करके परिवारवालों के लिए रोटी लाती है । पास–पड़ोस या बड़े घरों में अच्छे बुरे प्रसंग पर काम करके अपने आर्थिक अभावों को मिटाती है ।

फिर भी अब परंपरा और रूढ़िवाद, संस्कार आदि को ही सहारा मानकर जिन्दगी जीनेवाली औरत बदल चुकी है । परंपरा को भी अपने दिमाग से समझती है, दूसरों को भी समझाती है । अब सिर्फ ब्रत, अनुष्ठान, रीति–रिवाज उसके जीवन में इतने महत्त्वपूर्ण नहीं हैं । ऐसी पारंपारिक धार्मिक बातों को भी अपने समय, संजोग, जरूरतों के अनुसार ही अपनाती है । थोड़ा संघर्ष आधुनिकता और परंपरा को लेकर उसके दिमाग में है । यौन स्वतंत्रता आधुनिक युग के अंतर्गत है । किन्तु नैतिक मानदंड के आधार पर आज भी उसे जल्दी नहीं अपनाती ।

‘‘मन्नू भंडारी ने ‘बंद दराजों के साथ’ उपन्यास में मंजरी नामक पात्र से कहलवाया है कि ‘‘आज के युग में समाधान, संतोष की आशा करना ही मूर्खता है, क्योंकि आज जिंदगी का हर पहलू समस्या होकर ही आता है जिसे सुलझाया नहीं जा सकता । केवल भोगा–जा सकता है ।’’[३८]

आज भी संपूर्ण रूप से समय नहीं बदल गया पढ़ी लिखी, नौकरी करनेवाली, कामकाजी नारी और पढ़ी लिखी गृहिणियाँ भी कभी–कभी कहीं पर असंतुष्ट हैं, पति का विरोध भी करना चाहती हैं । तो सोचती है समाज, घर, परिवार, रिश्तेवालें क्या कहेंगे ? उसमें हिंमत होने के बावजूद भी ये पारंपरिक बंधन, मर्यादाएँ उसे दबाते हैं, और इन्हीं बातों को लेकर ही कभी वह रोती

है, तो कभी समाधान करती है, विद्रोह भी करती है, विद्रोह के बाद भी बच्चों को मद्‌दे नज़र रखते हुए समझौता करती है । और अपनी चेतना को ''स्त्री का जीवन तो ऐसा ही है, मानकर दबाती है । अगले जन्म में अच्छे जीवन की प्रार्थना करके इंतजार करती है, गौरतलब बात यह है कि वर्तमान में उसका जो शादीशुदा जीवन है अगर बच्चे ना होते तो उसे बदल देने में उसे कोई परेशानी नहीं होती ।

''स्वातंत्र्योत्तर कथा साहित्य में अनेक रचनाकारों ने नारी स्वातंत्र्य की विचारधारा को व्यक्त किया है । नारी स्वतंत्रता ने ही स्त्रियों को स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता प्रदान की है, चाहे वह निर्णय विवाह, केरियर, नौकरी पैशा करने का या अविवाहित रहने का हो । समाज उसे स्वीकृति दे-या न दे मगर अपने जीवन को वह जी लेती है । श्री अमृता प्रीतम ने 'गुलियाना एक खत' नामक कृति में जिस नारी स्वतंत्रता की बात कही है उसका समर्थन तो हर शिक्षित-अशिक्षित, समर्थ-असमर्थ नारी एवं प्रत्येक प्रबुद्ध व्यक्ति करेगा । उन्होंने कहा है कि ''यह सभ्यता का युग नहीं । सभ्यता का युग तब आएगा जब औरत की मर्जी के बिना कोई उसके जिस्म को हाथ नहीं लगाएगा । वह स्वतंत्रता तो नारी को मिलनी ही चाहिए ।''[३९]

''हमारे भारतीय संविधान के १५ वें अनुच्छेद में स्पष्ट घोषणा की गई है – ''राज्य किसी नागरिक के विरुद्ध केवल धर्म, मूलवंश जाति-लिंग, जन्मस्थान, अथवा इनमें से किसी के आधार पर भेदभाव नहीं करेगा'' । लोकतंत्रात्मक संविधान द्वारा घोषित इस समताधिकारने समाज और स्त्री की मानसिकता को प्रभावित किया, समाज के पारस्पारिक आर्थिक, सामाजिक और वैचारिक ढाँचे में परिवर्तन आने लगे हैं ।''[४०]

आज समय ऐसा है कि स्त्रियों में अपनी स्वतंत्रता, अस्तित्व, अस्मिता, चेतना को महत्त्वपूर्ण मानकर जागृति आई है । इसके लिए आंदोलन अभियान

शुरू किया है – अपनी मजबूरी, असहाय अवस्था और अपनी आंतरिक शक्ति दोनों के प्रति सचेत है, जाग्रत है अपने उपेक्षित जीवन से मुक्त होना चाहती है ।

फिर भी हमारी भारतीय संस्कृति के अनुसार नारी चेतना यानि सद्‌गुणों का विकास । दूसरे पक्ष से लड़ाई या स्पर्धा नहीं । अतः सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक मूल्यों में भी सहेतुक परिवर्तन वैचारिक ऊँचाई के आधार पर होना चाहिए ।

समाज का प्रत्येक व्यक्ति नारी को लेकर पुरानी जड़तावाली मान्यता के आधारपर उसे निम्न, तुच्छ, हीन न समझे, उस पर अनावश्यक दबाव न डाले । नैतिकता का प्रश्न है तो स्त्री और पुरुष दोनों ही समाज के आधार स्तंभ हैं, दोनों को नैतिकता अपनानी चाहिए । जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नारी सफल हुई है उसने अपनी सार्थकता, कुशाग्र बुद्धि का परिचय दिया है । उसने अपनी विवेकबुद्धि शक्ति, शारीरिक, मानसिक संतुलन शक्ति का परिचय भी दिया है । इसलिए नारी को स्वयं, बंधन दासता की जड़ें काटनी होंगी । पुराने ख्यालात, रूढ़िवादी मान्यता, आदर्श नहीं बंधन हैं । सबसे प्रथम परिवार में ही स्त्री जन्म को सम्मान मिलना चाहिए । नर–नारी के भावनात्मक सौजन्यपूर्ण, व्यवहार पर समाज टिका है । दोनों अपने अपने अलग अस्तित्व को बनाये रखते हुए सौजन्यपूर्ण व्यवहार संबंध रख सकते हैं । नारी चेतना, मुक्ति का शत्रु, पुरुषों का अहम्, पुरुष वर्चस्व और कई अंश तक पितृसत्तात्मक समाज रचना है । उससे भी स्त्रियों को मुक्त होना होगा ।

‘‘श्री महादेवी वर्मा का मानना है ‘‘संसार में मानव–समुदाय में वहीं व्यक्ति स्थान और सम्मान पा सकता है । वहीं जीवित कहा जा सकता है, जिसके हृदय और मस्तिक ने समुचित विकास पाया हो और जो अपने व्यक्तित्व द्वारा मनुष्य समाज से रागात्मकता के अतिरिक्त बौद्धिक संबंध स्थापित कर सकने में समर्थ है ।’’[४९]

"नेपोलियन बोनापार्ट, जो विश्व विजय का स्वप्न देखता था जिसके शब्दकोश में असम्भव शब्द नहीं था, उसने भी माता की महिमा को स्वीकारा है उसने जो कुछ कहा है वह नारी जाति के इतिहास में एक स्वर्णिम वाक्य है । मुझे एक योग्य माता दो, मैं तुम्हें एक योग्य राष्ट्र दूंगा ।"[४२]

यह मातृत्व का सन्मान है, स्त्रियों को अपने मातृत्व की योग्यता जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सिद्ध करनी होगी । माता, गृहिणी, मित्र–पत्नी प्रत्येक क्षेत्र में अपने व्यक्तित्व की गरिमा को दिखाना होगा ।

आधुनिक युग के समाज में थोड़ा बदलाव भी आया है – आज स्त्रियों ने अपनी मजबूरी को लेकर अपने आप को विवश असहाय मानना बंद कर दिया है और संघर्ष करने के लिए तैयार हो गई हैं । कोई भी स्थिति समस्या रूप लगे तो उसे सुलझाने में अपना समय बरबाद नहीं करतीं उसे छोड़ देती हैं । प्रतिशोध और प्रेम करने के मामले में वह पुरुषों से भी आगे निकल गई हैं । शादी में भी पति अगर उसकी बुद्धिमता, अस्मिता को नहीं स्वीकारता तो वह स्वतंत्र, अकेली रहने के लिए समाज से नहीं डरती ।

स्त्री विमर्श की जानी–मानी लेखिका प्रभा खेतान ने ठीक ही कहा है – "नारी आंदोलन वास्तव में व्यक्ति होने का सलीका है ।"

प्रभा खेतान का यह वाक्य साम्यवादी विचार प्रवाह का केन्द्रीय मुद्दा है – "स्त्रीवाद नारी को केवल 'नारी के रूप में देखने का तौर–तरीका सिखलाता है' जो नारी को पारंपारिक रूढ़ियों, मान्यताओं, अंध–विश्वासों के शोषण से मुक्त कर उसके स्वतंत्र व्यक्तित्व को समाज में प्रतिष्ठित करता है ।"[४३]

मृदुला गर्ग का कथन है – स्त्री कहीं की हो, किसी वर्ग की हो, पुरुष के लिए वह सिर्फ शरीर है, उसका मानसिक शारीरिक शोषण उसकी नियति है मृदुला जी का मानना है कि स्त्रियों को आत्मनिर्भर बनकर अपने बल–बूते पर स्वाभिमान के साथ जीवन जीना चाहिए ।

धैर्य और लम्बे संघर्ष तथा गहरे संकल्पों के साथ जूझने की जरूरत है स्त्री की यातना का बहुत लम्बा इतिहास है । अपनी अस्मिता की निरंतर जागृति के साथ स्त्री को सामने आना पड़ेगा । ताकि स्त्री–पुरुष दोनों समरस जीवन–जी सकें ।[४४]

''वर्तमान युग में नारीवाद की नहीं, वरन नारी चेतना की बात की जानी चाहिये, ताकि वह स्वयं के रूप को पुनर्परिभाषित कर सके । कारण यह है कि स्त्री केवल देह मात्र ही नहीं है वह देह के अलावा, मन, आत्मा, प्रज्ञा, चेतना – व विचार भी है, इस सभी से मिलकर नारी शक्ति रूपी बनती है । सत्ता द्वारा जिन मूल्यों का प्रतिपादन किया जाता है, साहित्य के माध्यम से उन्हें जाँचा परखा जाता है ।''[४५]

नारी चेतना, दमन, जड़ता और शोषण की बात विश्व की प्रत्येक स्त्री ने महसूस की है । और पूरे विश्व की स्त्रियों ने प्रत्येक देश में विविध रिवाज, अत्याचार और परंपराओं के सामने आवाज उठाई है । फैशन की दुनिया की जानीमानी मॉडल वारिस डीरीने भी उसमें अपना योगदान दिया है । स्त्री सुन्नत का विरोध करके ''स्त्री–सुन्नत नो रिवाज मुख्यत्वे आखा आफ्रिका खंडमां लगभग २८ देशोंमां प्रचलित है – युरोप अने अमेरिकामां पण आवा किस्सा नोंधाया छे. कारण के त्यां घणा आफ्रिकनो आवीने वस्या छे. आखा विश्वमां नहीं नहीं तोय १ करोड ३० लाख छोकरीओ अने स्त्रीओ आ रिवाजनो भोग बनी छे.[४६]

वारिस डीरीनुं नाम फेशन जगत मां अजाण्युं नथी, वारिस डीरी एटले रेवलोन, लेवीस जेवी ब्रान्डनो चेहरो अने जेम्स बोन्डनी हीरोइन । चाहती है कि हुं इच्छु छुं के एक दिवस आ रिवाजनो अंत आवे अने कोई स्त्रीने क्यारेय आवी यातना, पीडा भोगववी न पड़े । जे दिवसे ईश्वरे मने सिंहथी बचावी त्यारे ज मने जीवती राखवा पाछळ तेनो कोई उद्देश्य छे तेवुं मने समजायुं हतुं.

हवे तेणे मने शुं काम सोंप्यु छे ते पण समजाइ गयु छे अने ते पुरुं करवा, स्त्री–सुन्नत नामशेष करवा हुं तैयार छुं ।''[४७]

इस प्रकार दुनिया की प्रसिद्ध स्त्रियों ने नारियों की यातनाओं को मिटाने के लिए नारी–चेतना की जाग्रति पर विशेष बल दिया तथा अपनी रचनाओं के माध्यम से स्त्री–पुरुष के समान महत्त्व को उजागर करते हुए स्वस्थ, समृद्ध व सुसंस्कृत समाज की संरचना में अपना विशेष योगदान दिया ।

संदर्भ संकेत :

क्रम	पुस्तक नाम – लेखक नाम	पृ.संख्या
१	ओळख– ओळख गुजराती नवेम्बर २००७ 'वेदों में नारी के विविध रूप', हरीश भारतेन्दु शुक्ल	३३
२	महिला और मानव अधिकार एम.एम. अंसारी	३
३	महिला और मानव अधिकार, एम.एम. अंसारी	३
४	जयद्रथवध – मैथिलीशरण गुप्त	४
५	महिला और मानव अधिकार, एम. एम. अंसारी	१२
६	महिला और मानव अधिकार, एम. एम. अंसारी	११
७	महिला और मानव अधिकार, एम. एम. अंसारी	१३-१४
८	महिला और मानव अधिकार, एम. एम. अंसारी	१५
९	महिला और मानव अधिकार, एम. एम. अंसारी	१५
१०	हमारी राष्ट्रिय अस्मिता और नारी का भविष्य, डॉ. हेमा देवरानी	२
११	शिक्षा में क्रांति – ओशो रजनीश	९१
१२	महिला और मानव अधिकार, एम. एम. अंसारी	१९-२०
१३	महिला और मानव अधिकार, एम. एम. अंसारी	३७
१४	महिला और मानव अधिकार, एम. एम. अंसारी	६७
१५	आधुनिक समाज की नारी चेतना, डॉ. सुशीला वर्मा	१५४
१६	श्रृंखला की बेड़ियाँ, महादेवी वर्मा, भूमिका से	-
१७	आधुनिक समाज की नारी चेतना, डॉ. सुशीला वर्मा	१६७
१८	गुर्जर राष्ट्रवीणा – नवम्बर–२००५, डॉ. मकरन्द भट्ट स्त्री विमर्श की लेखिका शिवानी	१६
१९	गुर्जर राष्ट्रवीणा – नवम्बर–२००५, डॉ. मकरन्द भट्ट	१६
२०	हंस फरवरी – २००० राजेन्द्र यादव	

२१	हमारी राष्ट्रीय अस्मिता और भविष्य का नारी साहित्य, डॉ. हेमादेवरानी	२
२२	सांस्कृतिक संक्रमण में नारी का अंतर्द्वन्द्व और साहित्य वीणा मिश्र, का लेख	२
२३	प्राकृतविद्या अक्टूम्बर–२००७, डॉ. सत्यप्रकाश जैन, गांधीजी एवं अहिंसा विशेषांक	८
२४	प्राकृतविद्या अक्टूम्बर–२००७, डॉ. सत्यप्रकाश जैन, गांधीजी एवं अहिंसा विशेषांक	८
२५	प्राकृतविद्या अक्टूम्बर–२००७, डॉ. सत्यप्रकाश जैन, गांधीजी एवं	८
२६	गुजरात समाचार – शतदलपूर्ति – ४–७–२००७ – अनुराधा देरासरी	
२७	गुजरात समाचार – शतदलपूर्ति – २२–८–२००७ – अनुराधा देरासरी	
२८	गुजरात समाचार – असामान्य स्तंभ शतदलपूर्ति नरेश शाह, २४–१०–२००७	
२९	गुजरात समाचार शतदलपूर्ति, हरेन्द्र रावल, ७–११–७	
३०	गुजरात समाचार – शतदलपूर्ति – हंसल भचेच बुधवार ४–७–२००७	
३१	नारी की शाश्वत भूमिका और भविष्य का साहित्य, ज्योति शुक्ल का लेख	१
३२	हिन्दी कविता में व्यक्त नारी चेतना – रंजना अरगडे हिन्दुस्तानी जबान १८ एप्रिल – जून – २००१	१८
३३	हिन्दी कविता में व्यक्त नारी चेतना – रंजना अरगडे हिन्दुस्तानी जबान १८ एप्रिल – जून – २००१	१८-१९

३४	सांस्कृतिक संक्रमण में नारी का अंतर्द्वन्द्व और साहित्य डो. वीणा मिश्र	२
३५	आधुनिक समाज की नारी चेतना डॉ. सुशीला वर्मा	१८७
३६	हमारी राष्ट्रीय अस्मिता और भविष्य का नारी साहित्य, डॉ. हेमा देवरानी	२
३७	सांस्कृतिक संक्रमण में नारी का अन्तर्द्वन्द्व और साहित्य / वीणा मिश्र	२
३८	आधुनिक समाज की नारी चेतना डॉ. सुशीला वर्मा	१८६
३६	आधुनिक समाज की नारी चेतना डॉ. सुशीला वर्मा	११२
४०	महिला और मानवाधिकार, एम.एम. अंसारी	१६३-१६४
४१	महादेवी समग्र साहित्य भाग–३ संपादक निर्मला जैन	२६३
४२	महिला और मानवाधिकार – एम.एम. अंसारी	६६
४३	हंस सितम्बर–१६६६, प्रभा खेतान स्त्री विमर्श के अंतर्विरोध	२७
४४	मृदुला गर्ग के साहित्य में नारी, डॉ. रमानेवले	१०
४५	दैनिक नव ज्योति – १६ दिसम्बर १६६८, मृदुला गर्ग	६
४६	वारिस – रणमां खीलेलूं पुष्प, अनुवादक क्षमा कटारिया	३६
४७	वारिस – रणमां खीलेलूं पुष्प, अनुवादक क्षमा कटारिया	३७

तृतीय अध्याय
शिवानी का जीवन एवं व्यक्तित्व

१. शिवानी का जीवन : व्यक्तित्व

२. शिवानी का साहित्यिक व्यक्तित्व

३. शिवानी का साहित्य :
   १) कहानी संग्रह
   २) उपन्यास
   ३) यात्रावृत्त
   ४) संस्मरण

४. शिवानी के उपन्यासों का संक्षिप्त अनुशीलन
   १) मायापुरी
   २) चौदह फेरे
   ३) भैरवी
   ४) कृष्णकली
   ५) स्मशान चंपा

६) सुरंगमा
७) चल-खुसरो घर आपने
८) कालिंदी
९) दो सखियाँ
१०) स्वयंसिद्धा
११) गैंडा
१२) माणिक
१३) विषकन्या
१४) कैंजा
१५) रतिविलाप
१६) किशनुली
१७) कृष्णवेणी
१८) रथ्या

तृतीय अध्याय
शिवानी का जीवन एवं व्यक्तित्व

पूर्व अध्यायों में मानव-संस्कृति में नारी की प्रकृति, पहचान एवं महत्त्व पर ऐतिहासिक दृष्टि से दृष्टिपात करते हुए नारी अस्मिता-चेतना के स्वरूप को सुस्पष्ट किया गया है । प्रस्तुत अध्याय में आलोच्य लेखिका शिवानी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालकर उनके उपन्यासों में अनुस्यूत नारी चेतना के तत्त्वों-सूत्रों का समाकलन किया जाएगा ।

(१) शिवानी का जीवन-व्यक्तित्व :

आधुनिक महिला रचनाकारों में शिवानीजी (जिनका पूरा नाम गौरापन्त शिवानी है) का योगदान सर्जन क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण है । स्वतंत्रता के बाद के हिन्दी कथा साहित्य की वह अच्छी सशक्त लेखिका है, मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार हैं ।

गौरा पंत 'शिवानी' का जन्म १७ अक्टबर १६२३ को विजयादशमी के दिन राजकोट (गुजरात) में हुआ ।[१]

स्वयं शिवानीजी के शब्दों में देखे तो "मेरा जन्म हुआ स्वदेश से दूर, सौराष्ट्र के राजकोट नगर में । घर में गुजराती बोली जाती थी, बोल फूटते ही हमने माँ को 'बा' कहना सीखा । पहाड़ी रस-भात का स्थान गुजराती खट्मिट्ठी कोकम डली दाल ने ले लिया था । पहाड़ से साथ आये पहाड़ी नौकर भी अपनी मातृभाषा भूलने लगे थे । राजकोट की मुझे अभी भी खूब याद है । सामने ही नागर ब्राह्मणों की ऊँची हवेली की खिड़की हमारी खिड़की से सटी-सटी थी । वहीं से गुजराती गांठिया और 'गोड़केरी नुं अथाणुं' (आम

की मीठी अचारी) के साथ पहाड़ी अखरोटों का आदान–प्रदान चलता रहता । रसिकभाई, कोकिलभाई, उर्मिलाबेन और हरिच्छाबेन के गोल–लम्बे चेहरे अभी भी स्मृतिपटल पर धुँधले पेन्सिलस्केच से उभर आते हैं ।''[२]

आधुनिक अग्रगामी विचारों के समर्थक पिताश्री अश्विनीकुमार पांडे राजकोट स्थित राजकुमार कॉलेज के प्रिन्सीपाल थे । ''मेरे पिताजी राजकुमार कॉलेज में कई राजकुमारों के गार्जियन ट्यूटर थे । उन दिनों राजकुमार कॉलेज अपने ढ़ंग की अनोखी संस्था मानी जाती थी । मेरे पिताजी अपनी विदेश की शिक्षा, रोबीले व्यक्तित्व और कठोर अनुशासन के कारण प्रिन्स वर्ग में बहुत जनप्रिय थे । उन दिनों कुछ राजकुमारों को पब्लिक स्कूल की भाँति एक हाउस मास्टर के अनुशासन में रहना होता था । माणावदर, रामपुर, जूनागढ़, मैसूर, जसदन, औरछा, द्रंतिया आदि के अनेक राजकुमार उनके छात्र थे ।''[३]

''पहले पिताजी माणावदर के नवाब के यहाँ उच्च पद पर नियुक्त हुए । माणावदर रहने के पश्चात् रामपुर में पिताजी की नियुक्ति हुई गृहमंत्री के पद पर । मेरे पितामह (दादाजी) काशी विश्वविद्यालय में धर्म–प्रचारक के पद पर थे । वे कुमाऊँ के पहले ग्रेजुएट थे, साथ ही संस्कृत के धुरन्धर विद्वान अैर एक दबंग वकील । उन्हें पिताजी की इस ऊँची नौकरी से प्रसन्नता नहीं हुई । महामना मदन मोहन मालवीयजी पितामह के मित्र थे । उनकी भी इच्छा थी पिताजी राजकोट ही रहे ।''[४]

''शिवानीजी की माताजी का नाम लीलावती पांडे था । वह एक पढ़ी–लिखी महिला थी । उनके घर में हिन्दी–गुजराती और संस्कृत की किताबों का भंडार था ।''[५]

''हमारे दीवानखाने में चारों और किताबों का अम्बार चुना रहता, घर का प्रत्येक व्यक्ति पढ़ने के पीछे दीवाना था । हमारी माँ की गुजराती पुस्तकों का भंडार नित्यनवीन रहता । मुंशी, मेघाणी उनके प्रिय लेखक थे । एक बार

छिपाकर 'सरस्वतीचंद्र' पढ़ने पर माँ का जो करारा चाँटा पड़ा था, वह अब भी नहीं भूलता ।''[६]

इसी प्रकार विद्वान माता–पिता की पुत्री शिवानी की शिक्षा–दीक्षा भी अंग्रेजी और संस्कृत दोनों में हुई ।

''हम भाई–बहनों की साहिबी–शिक्षा भी पितामह के आदर्शों के विपरीत हो रही थी । नैनीताल में एक अंग्रेज गवर्नेस मिस ममफर्ड की देख–रेख में शिक्षा चल रही थी । मिसेज स्मिथ भी नित्य पढ़ाया करती थी । शिवानीजी ने सिकंदर मियाँ से घुड़सवारी की शिक्षा भी पाई ।''[७]

शिवानीजी का घर–परिवार सदैव अतिथियों से हराभरा रहता था । ''पिताजी अपने आतिथ्य और ऊँची पसंद के 'सेलर' के लिए प्रसिद्ध थे । डॉ. वहीदी, डॉ. कुरेशी, सर गिरजाशंकर बाजपेयी, सर सुल्तान अहमद पिताजी के विशेष मित्रों में से थे ।''[८]

''शिवानी के दादाजी हरिराम पांडे एक चर्चित व्यक्ति थे । अल्मोड़ा में जब विवेकानंद आए थे तब उन्हें (दादाजी को) संस्कृत भाषा में मानपत्र दिया गया था । दादाजी की इच्छा थी कि हम बच्चों की शिक्षा संस्कृत में हो और पहाड़ी संस्कृति से भी जुड़े रहे ।''[९]

''दादाजी के बार–बार आग्रह करने पर हमें अल्मोड़ा भेज दिया गया । हमारे सनातनी पितामह ने अपने अनुशासन की पकड़ और कड़ी कर दी थी । हमारी शिक्षाप्रणाली में आमूल परिवर्तन कर दिया गया था । सुबह उठते ही संस्कृतके पंडित गंगादतजी आ जाते । नित्य उन्हें अमरकोश के पाँच श्लोक कंठस्थ कर सुनाने होते । फिर हमें शांतिनिकेतन भेज दिया गया । आठ वर्ष तक केवल ग्रीष्मावकाश में ही पहाड़ जाते, पिताजी ने हमारे शांतिनिकेतन के अतिथियों के लिए छोटी–सी अतिथिशाला भी बनवा दी थी, प्रायः हमारे विदेशी मित्र वृंद, अध्यापक आते रहते ।''[१०]

''शिवानी शांतिनिकेतन में नौ बरस रहीं । सातवीं कक्षा से लेकर बी.ए. तक वहीं शिक्षा प्राप्त की । शांतिनिकेतन के सौम्य वातावरण ने उन्हें अत्यंत प्रभावित किया । शांतिनिकेतन में उन्होंने आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी से हिन्दी भाषा एवं साहित्य की शिक्षा प्राप्त की । ''उन्होंने ही मुझे मेरे कान पकड़कर लेखनी की सही पकड़ सिखायी ।'' सुप्रसिद्ध सिने कलाकार बलराज साहनी की भी छात्रा रही । सत्यजित रे जैसे सिने निर्देशक उनके सहपाठी रहे । शांतिनिकेतन में ही उन्होंने रवीन्द्र और हिन्दुस्तानी संगीत भी विधिवत् सीखा । नृत्य शिक्षक थे शांति दा तथा मृणालिनी स्वामीनाथन (अब मृणालिनी साराभाई) ।''[११]

''इस बीच पिताजी ओरछा में दीवान के पद पर नियुक्त हुए । सहसा चौबीस वर्ष की पुत्री और जवान जामाता की नैनीताल के ताल में डूब जाने से मृत्यु के धक्के से वे शोक विह्वल हो उठे । एक दिन कुमाऊँ के मोह की बेड़ियाँ काटकर हम चले गये बैंगलोर । वहाँ पिताजी कुछ दिन महर्षि रमण के साथ रहे, फिर बहुत बड़े परिवार की चिंता से उनको नौकरी करनी पड़ी । कुछ वर्ष तक वहीं पर सेक्रेटरी के पद पर रहे । वहीं सिलोन यात्रा में उन्हें कारबंकल हुआ । सैंट मार्था अस्ताल की मृदुभाषिणी नर्स भी उनकी पीड़ा दूर नहीं कर सकी । वहीं उनकी मृत्यु हुई और हम एक बार फिर कुमाऊँ लौट आये ।''[१२]

''छोटी अवस्था में ही इनका विवाह एक ऐसे पुरुष के साथ कर दिया गया जिनको आपने पहले कभी नहीं देखा था, लेकिन फिर भी लेखिका अपने वैवाहिक जीवन से संतुष्ट है । उन्हीं के शब्दों में फिर उनकी अंतिम साँस तक मुझे संतोष रहा कि शायद 'लवमैरिज' करती तो भी इतना अच्छा पति नहीं मिलता ।

उनके पति श्रीयुत पंत उत्तर प्रदेश के शिक्षा विभाग में उच्चाधिकारी थे । शिवानीजी ने लेखक कार्य को धनोपार्जन का माध्यम कभी नहीं बनाया ।

उनके शब्दों में मैंने अपने आपको कभी इस प्रकार के व्यावसायिक लेखन से जुड़ा हुआ नहीं माना । न कभी यह महसूस किया है कि मेरे लेखन से मेरे चिंतन में कोई अवरोध आया है । साहित्य और व्यवसाय दो विरोधी तत्त्व है । व्यावसायिक दृष्टिकोण कभी–किसी साहित्य को समृद्ध नहीं कर सकता ।''[१३]

शिवानीजी की तीन संतानें हैं । छोटी पुत्री मृणाल पांडे आधुनिक युग की उभरती हुई लेखिका है । साथ–साथ हिन्दुस्तान टाइम्स की संयुक्त संपादिका है । मृणालजी का नाम कथा–साहित्य के क्षेत्र में बहुचर्चित–प्रसिद्ध रहा है । इनकी रचनाएँ हिन्दी साहित्य में एक अलग स्थान रखती हैं ।

''पति के असामयिक निधन के बाद लम्बे समय तक लखनऊ दिल्ली अपनी बेटियों के पास रही, अमरिका अपने पुत्र के परिवार के बीच रही । नारी चेतना के विभिन्न स्वरों को मुखरित कर शिवानीजी २१ मार्च २००३ को दिव्य चेतना में अंतर्लीन हो गईं ।''[१४]

(२) शिवानी का साहित्यिक व्यक्तित्व :

''शिवानी की पहली रचना अल्मोड़ा से निकलने वाली 'नटखट' नामक एक बाल–पत्रिका में छपी थी । तब वे मात्र बारह वर्ष की थीं । शांति निकेतन में स्कूल तथा कॉलेज की पत्रिकाओं में बांग्ला में उनकी रचनाएँ नियमित रूप से छपती रहीं । गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर उन्हें 'गौरां' पुकारते थे । उनकी ही सलाह, कि हर लेखक को मातृभाषा में ही लेखन करना चाहिए, शिरोधार्य कर उन्होंने हिन्दी में लिखना प्रारंभ किया । 'शिवानी' की पहली लघु रचना ''मैं मुर्गा हूँ'' १९५१ में धर्मयुग में छपी थी । इसके बाद आई उनकी कहानी 'लाल हवेली' और तब से जो लेखन क्रम शुरू हुआ, उनके जीवन के अंतिम दिनों तक अनवरत चलता रहा । उनकी अंतिम दो

रचनाएँ 'सुनहुँ तात यह अकथ कहानी' तथा 'सोने दे' उनके विलक्षण जीवन पर आधारित आत्मवृत्तात्मक आख्यान है ।''[९५]

प्रेमचंद, टैगोर, जोर्की के अतिरिक्त महिला कहानीकारों में मन्नूभंडारी, मंजुल भगत, बिंदु सिंहा से भी आप प्रभावित दिखाई देती हैं । इस्मत चुगताई बचपन से ही उनकी आदर्श रही हैं ।

लेखिका को आज तक अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है । १९७९ में शिवानीजी को पद्मश्री से अलंकृत किया गया । लखनऊ से निकलनेवाले पत्र 'स्वतंत्र भारत' के लिए 'शिवानी' ने वर्षों तक एक चर्चित स्तंभ 'वातायन' भी लिखा ।''[९६]

राज्य साहित्य पुरस्कार	–	१९७०–७१
प्रेमचंद पुरस्कार	–	१९७४–७५
विशेष पुरसकार	–	१९७६–७७
स्तरीय पुरस्कार	–	१९७८–से ७९ प्रतिवर्ष
महादेवी पुरस्कार, बिहार	–	१९९० १९७९ पद्मश्री से अलंकृत
सुब्रह्मण्य भारती–पुरस्कार	–	१९९३
वीरेन्द्र स्मृति पुरस्कार	–	१९९३
बंकिम पुरस्कार, कलकत्ता	–	१९९४
यश भारतीय सम्मान	–	१९९५
अखिल भारतीय	–	–
महाराष्ट्र भारती पुरस्कार	–	१९९७

शिवानीजी कई भाषाओं को अच्छी तरह लिख–पढ़ बोल सकती हैं, गुजराती बंगला, हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी आदि पर उन्हें पूर्ण अधिकार था । इसी कारण वे जिस क्षेत्र, जिस प्रदेश को अपनी कहानी का आधार बनाती है, अत्यंत प्रभावशाली ढ़ंग से अपनी बात को जनता तक पहुँचाने में सफल हो जाती हैं । उन्होंने अपनी इस भाषा बहुज्ञता को अपनी सफलता क रहस्य

बतलाते हुए लिखा है, “मैंने बंगला के अनेक सुहावने मुहावरों से अपनी कहानियों को सँवारा है । गुजराती का पानेतर, बंदेलखंड जी कंकरेजी, कुमाऊँ की मक्खी बेल तथा सोलह पाटों का लहराता लहंगा बंगला के लाल पाड की गरद, सबकी छटाओं से अपने पाठकों को मोहने की चेष्टा मैंने की है ।”[१७]

“शिवानीजी की प्रशंसा में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है – ‘गौरा शांति निकेतन की छोटी सी मुन्नी, मेरी परम प्रिय बहिन और छात्रा । बचपन में ही बड़ी सूक्ष्म बुद्धि की थी, उसकी दृष्टि बड़ी पैनी थी । मेरे परख–पारखी मित्र और गौरा के दूसरे अध्यापक पंडित निताई, विनोद रस्तोगी कहा करते थे कि यह लड़की अवसर मिलने पर बहुत प्रतिभा शालिनी सिद्ध होगी । वे गौरा की भाषा और प्रकाशन भंगिमा को तभी बहुत दाद देते थे ।”[१८]

हिन्दी साहित्य को शिवानी का महत्त्वपूर्ण योगदान है । यहाँ आलोच्य विषय की परिधि में आनेवाले उपन्यासों का ही विश्लेषण किया गया है ।

(३) शिवानी का साहित्य :

(१) कहानी संग्रह :

१.	पुष्पहार सन्	सन् १६६६
२.	करिये छिमा	सन् १६७१
३.	लाल हवेली	सन् १६७३
४.	मेरी प्रिय कहानियाँ	सन् १६७३
५.	उपहार	सन् १६७७
६.	टोला	सन् १६८२

इनमें से पुष्पहार, मेरी प्रिय कहानियाँ, टोला और उपहार कहानी संग्रह अप्राप्य हैं, किंतु इन सभी संग्रहों में प्रकाशित कहानियाँ पूर्व प्रकाशित हैं ।

(२) उपन्यास :

१.	मायापुरी	सन् १९६१
२.	चौदह फेरे	सन् १९६७
३.	भैरवी	सन् १९६८
४.	कृष्णकली	सन् १९६९
५.	स्मशान चम्पा	सन् १९७२
६.	सुरंगमा	सन् १९७८
७.	चल खुसरो घर आपने	सन् १९८२
८.	विवृत	सन् १९८४
९.	कालिंदी	सन् १९९१
१०.	कस्तूरी मृग	सन् १९९४

(३) लघु उपन्यास एवं कहानियों पर आधारित संकलन :

१.	विषकन्या	सन् १९७०
२.	कैंजा	सन् १९७२
३.	रतिविलाप	सन् १९७४
४.	स्वयंसिद्धा	सन् १९७५
५.	रथ्या	सन् १९७७
६.	गैंडा	सन् १९७७
७.	किशनुली	सन् १९७९
८.	कृष्णवेणी	सन् १९८१
९.	उपप्रेती	सन् १९९१
१०.	माणिक	सन् १९९४
११.	मणिमाला की हँसी	सन् १९९४

(४) यात्रावृत्त :

१	बचपन की याद	सन् १६७८
२	राधिका सुंदरी	सन् १६७६
३	यात्रिक (बाल साहित्य)	सन् १६८१
४	हर हर गंगे, अल्विदा, भतअकल, आइसक्रीम महज आदि	

(५) संस्मरण :

१	आमादेर	सन् १६६१
२	अपराधिनी	सन् १६७१
३	चारदिन की	सन् १६७३,
४	झरोखा	सन् १६७५,
५	बिल्लू	सन् १६७८
६	झूला	सन् १६७६
७	मंजीर	सन् १६८०
८	क्यों ?	सन् १६८१
६	लोक साहित्य है दत्तात्रेय	सन् १६८६
१०	स्मृति कलश : सनु हुतात	सन् १६६७

इस प्रकार हिन्दी साहित्य की प्रत्येक विद्या को अपनी लेखिनी के माध्यम से उज्ज्वल करने वाली लेखिका जनप्रिय थी । ‘‘उनके लखनऊ स्थित आवास ६६, गुलिस्ताँ कॉलोनी के द्वारा लेखकों, कलाकारों, साहित्य प्रेमियों के साथ समाज के हर वर्ग से जुड़े उनके पाठकों के लिए सदैव खुले रहे थे ।’’[२०]

४. शिवानी के उपन्यासों का संक्षिप्त अनुशीलन

(१) मायापुरी :

(मायापुरी यानी धन की नगरी । आर्थिक संपन्नता–विषमता को लेकर व्यक्ति के संबंध जिस प्रकार बनते–बिगडते हैं इसका लेखा जोखा इस उपन्यास में है । अर्थ को लेकर कैसे मानसिक अंतर्द्वन्द्व होते हैं इसकी कथा इस उपन्यास में है ।)

मध्यमवर्गीय समाज का जीवन चित्रण इसमें हुआ है । इस उपन्यास की कथा का केन्द्र नायिका शोभा है ।

गरीब परिवार की शोभा के पिता की मृत्यु, लू लगने से हुई । माँ और तीन भाइयों को लेकर काठगोदाम नामक गाँव में रहती है । शोभा के पिता चाहते थे कि शोभा उच्च शिक्षा प्राप्त करे । पिता की मृत्यु के बाद माँ उसके सपने पूरे करना चाहती है । मगर घर की विपन्न आर्थिक स्थिति के कारण शोभा माँ को खेती–बारी गृहकार्य में हाथ बँटाती है । दुर्गा की लखनऊ स्थित सखी गोदावरी का पत्र आया कि शोभा लखनऊ में रहकर पढ़े । माँ के कहने पर स्वमानी शोभा लखनऊ जाती है । वहाँ वह परिवार का हिस्सा बन गई ।

गोदावरी मौसी का वैभव देखकर शोभा लघुता अनुभव करती है । गोदावरी मौसी शोभा का सौंदर्य देखकर चिंतित हो जाती है । गोदावरी के दो संतानें – सतीश और मंजरी थीं ।

सतीश डॉक्टरी पढ़ने के बाद एम.डी. करने विदेश गया, तिवारीजी की सहाय से । तिवारीजी ने अपनी बेटी सविता की शादी सतीश से हो – ऐसी लालच में सतीश को विदेश भेजा और उसके परिवार का आर्थिक ऋण अदा कर दिया । सतीश–गोदावरी दोनों ही मन ही मन शोभा को बहु के रूप में चाहते थे । मगर तिवारीजी के आर्थिक उपकारों के तले दब गये थे ।

परिणाम स्वरूप सतीश के पिता जनार्दन भी सतीश की शादी तिवारी की बेडोल पुत्री सविता से हो ऐसा चाहते थे ।

गोदावरी मौसी के कहने पर शोभा लखनऊ से काठगोदाम अपने घर चली जाती है ताकि सतीष शोभा को भूल जाय – सविता से शादी कर ले ।

शोभा जब घर पहुँची तो तीनों भाई बिमारी से मर गये थे, माँ आघात से पागल होकर मरी । शोभा मामा के घर आई । मामा ने नैनीताल के राजवंश में रानी की सेक्रेटरी की नौकरी दिलवा दी ।

शोभा को मंजरी अविनाश के पत्र मिलते है जिसने शोभा को ही कायर ठहराया था । यहाँ तक की सतीश भी – शोभा को ही निकम्मी, कायर नाहिम्मत ठहराता है । जब कि वह स्वयं माँ के सामने अपने प्यार को स्वीकार करने की हिम्मत नहीं कर सका था । फिर भी शोभा को ही कायर कहता है । नैनीताल में एक राजकीय पार्टी में मंजरी अविनाश और सतीश से शोभा की मुलाकात हुई । शोभाने जाना कि सतीश–सविता से शादी करके सुखी नहीं है – कारण है सविता का स्वच्छंदी, स्वतंत्र स्वभाव । मंजरी के पति को भी तिवारीजी की कृपा से रोकफेलर स्कोलरशीप मिली है । सतीश भी उनकी सिफारिश से दिल्ली में आ गया है और अब काबुल जा रहा है । फिर से सतीश शोभा अपने पुरानी प्यार भरी स्मृतियों में खो जाते हैं । रेडियो पर से शोभाने समाचार सुना की सतीश को लेकर काबुल जानेवाला हवाईजहाज अस्कमात–से टूट गया । शोभा रानीमाँ के साथ सतीश को देखने दिल्ली पहुँचती है । सतीश बेहोशी में भी शोभा को याद कर रहा था । और ऐसी ही अवस्था में उसकी मृत्यु हुई, शोभा को लगा कि वह विधवा हो गई । इस प्रकार आर्थिक अभाव के कारण, विषमता के कारण शोभा को अपना प्यार गंवाना पड़ा ।

(२) चौदह फेरे

(अनमेल विवाह की समस्या, पहाड़ी वैवाहिक रीति–रिवाजों को प्रस्तुत करता हुआ उपन्यास)

चौदह फेरे में नायक कर्नल शिवदत्त कुमाऊ (अल्मोड़ा) का निवासी है । एम.ए. और वकालत करने के बाद, पिताजी के विदेशी मित्र विल्सन साहब की कृपा से विदेश घूमा और सफल व्यापारी बन गया । शिवदत का नाम – 'कर्नल', उसकी छः फूटी देह कदावर शारीरिक आकृति के आधार पर पड़ा था ।

पढ़ा लिखा – आधुनिक रहन–सहन वाले कर्नल के पिताजी पहाड़ी रीति–रीवाज, परंपरा में मानने वाले थे । जिन्होंने अपने ब्राह्मण कुल में नहान की एक कम पढ़ी लिखी लड़की नंदी से बेटे की शादी की । शादी के बाद वह नंदी को अपने संयुक्त परिवार की सेवा के लिए छोड़, स्वयं अकेला, कलकत्ता चला आया । ग्रामीण नंदी आधुनिक कर्नल का मेल बहुत कम होता था, धीरे धीरे कर्नल छुट्टियों में भी घर नहीं आता था – यहाँ तक की अपनी बेटी अहल्या के जन्म पर भी घर नहीं आया । – पिताजी की मृत्यु पर घर आया । कर्नल अपनी पत्नी नंदी को साथ कलकत्ता नहीं ले जाता । बल्कि मायके भेज देता है । वहाँ नंदी और पुत्री अहल्या का भाई भाभी ने स्वागत किया मगर थोड़े दिनों बाद वह भी उपेक्षित व्यवहार करने लगे । समृद्ध पति की पत्नी नंदी और अहल्या उपेक्षित जीवन जीने लगे, भाभी के साथ नंदी का रोज कलह होने लगा ।

थककर नंदी पुत्री अहल्या को लेकर पूर्व सूचना दिये बिना कलकत्ता कर्नल के घर पहुँची ।

जो कर्नल को अच्छा नहीं लगा । पत्नी के गँवारूपन, रंगढंग, उदासी, फूहड़पन से कर्नल नाराज था । मगर पुत्री को प्यार करता था । इसलिए नंदी को बिना बताये अहल्या को मद्रास के कोन्वेट स्कूल में दाखिल कर आया ।

कर्नल नंदी को सुधारने का प्रयत्न करता है । मगर नंदी अपने रुक्ष स्वभाव–व्रत अनुष्ठानों के एकांगी आदर्श से पति से दूर होती गई ।

कर्नल अंग्रेजी रहन सहन, परिवेश का आदमी था । आये दिन उसके घर में दावत पार्टियाँ, शराब, खाना पीना चलता रहता था । ऐसी ही एक पार्टी में नंदी ने कर्नल की सेक्रेटरी मल्लिका सरकार को देखा, जो पति के अपाहिज होने के बाद कर्नल की ऑफिस में सेक्रेटरी बन गई थी । नंदी अपने आप को कर्नल की इच्छानुसार बदलना चाहती थी । मगर कर्नल मल्लिका का खिलवाड़ विलासिता सहन नहीं कर पाई । सोचा कि बेटी भी बाप के कदमों पर चलेगी – यह सोचकर कर्नल के नाम पर एक चिठ्ठी लिखकर, महल छोड़कर, गुरुजी के आश्रम में चली गई ।

मल्लिका ने कर्नल के रोजमराँ के व्यवहार संभाल लिये थे, अहल्या को वह माता जैसा ही प्यार देती है । वह चाहती है कि अहल्या की शादी उसकी बहन के पुत्र रौनन से हो, मगर कर्नल यह नहीं चाहता । वह अपनी बेटी की शादी अपने अनेक विदेशी, विधर्मी मित्रों से दूर पहाड़ पर जाकर अपने समाज में करना चाहता है ।

अपने बड़े भाई की बेटी बसंती की शादी में कर्नल अहल्या को लेकर पहाड़ जाता है, वहाँ अहल्या को कुमाउ अल्मोड़ा के ग्राम्य माहौल में समायोजित होने में थोड़ी मुश्किले आईं । ताई सुभद्रा भाभी तुहिना उससे व्यंग्य करते हैं ।

वहाँ अहल्या की भेट बसंती के मामा का बेटा राजू से हुई, जो फोजी था दोनों एक दूसरे के प्रति आकर्षित हुए ।

मगर कर्नल ने अहल्या को पूछे बिना उसकी शादी पहाड़ का ही लड़का आई.एस. सर्वेश्वर से निश्चित की । सर्वेश्वर दंभी था अहल्या उसे पसंद नहीं करती मगर पिताजी के सामने कुछ नहीं बोल पाई ।

कलकत्ता आने पर घर में शादी की तैयारियाँ होने लगीं, गाँव से आई सुभद्राताई अहल्या की उदासी जान जाती है । उसने उसे फौज से लापता – राजू की वापस आने की खबर दी और भाग जाने के लिए कहा ।

अहल्या घर छोड़ कर राजू के घर आ गई वहाँ बसंती धरणीधर की सहाय से उसकी शादी राजू से कर दी गई । राजू की पागल आमा अहल्या को राजू की पत्नी ही समझ बैठी है वह पूछती है – सात फेरे तो हो गये थे, ये दूसरी बार शादी क्यूं ? तब बसंती धरणीघर जवाब देते हैं कि राजू की भगोड़ी बहू घर में रहे, और राजू युद्ध से सलामत, बचकर आया है इसलिए दूसरी बार सात फेरे करवायेंगे । उन्मादी अम्मा बार बार दोहराती है चोदहफेरे !!!!

(३) भैरवी :

(वेश्याजीवन की समस्या और धार्मिक ढोंग, दिखावा, षडयंत्रों की समस्या ।

कुमाऊँ अल्मोड़ा के उच्च्च कुलीन ब्राह्मण महिमचंद्र तिवारी दो–शादियों के बाद भी निःसंतान थे । परिणाम स्वरूप उस समय की ख्यातनाम वारांगना रामप्यारी के यहाँ पड़े रहते थे । तीसरी शादी के बाद सुंदर कन्या रत्न (राज–राजेश्वरी) की प्राप्ति हुई । परिणाम स्वरूप – रामप्यारी को भूल–घरेलू बन गये ।

बेटी (राज–राजेश्वरी) को ईसाई मिशनरियों की विदेशी अंग्रेजी शिक्षा दी । वहाँ उसकी मित्रता रामप्यारी की बेटी चंद्रिका से हुई । महिमचंद्र तिवारी के मना करने पर भी राज–राजेश्वरी रामप्यारी के बेटे कुंदनसिंह के साथ भाग जाती है । महिमचंद्रने दोनों को पकड़वा लिया ।

सुंदर चंदन की शादी के लिए शाहजहाँपुर से राजेश्वरी पहाड़ पर लड़का ढूँढ़ने आई । एक रात पर्वतारोही–दल आँधी तूफान–से बचने उसकी कोठी पर

आश्रय पाने आया । दिल्ली के बारह पर्वतारोही लड़के थे । जिनमें एक लड़की भी थी सोनिया । चंदन और सोनिया मित्र बन गये ।

चंदन विक्रम शादी के बाद हनीमून पर निकले, घूमते घूमते एक दिन कलकत्ता जा रहे थे । किसी स्टेशन पर ट्रेन रुकी और चार फौजी जवान ट्रेन में घूसे, चंदन विक्रम के डिब्बे में बैठे, ट्रेन चलने के बाद शराब पीकर, बत्ती बुझा दी, विक्रम को मार कर बाँध दिया, और चंदन की छेडखानी करने लगे । बलात्कार की चेष्टा की । उससे बचने के लिए, अँधेरे में ही चंदन चलती गाड़ी का दरवाजा ढूँढकर गाड़ी से नीचे कूद गई ।

शिवपुकुर के महाश्मशान में बैठे लोग उसे उडती लाश समझ कर भूत भूत करके डरके मारे भाग गए । किंतु बेहोश चंदन को वहाँ आराधना करने वाले अघोरीने उठा लिया और अपनी संकरी गुफा में ले आये । जहाँ सेविका चरन ने चंदन की सुश्रूषा की । जहाँ अघोरी की साधिका मायादीदी थी, जो अघोरी गुरु की पार्वती शक्ति बनना चाहती थी । वहाँ ही गुरु ने चंदन को दीक्षा देकर नाम दिया 'भैरवी' । मायादीदी चंदन से ईर्षा करने लगी, क्योंकि वह जान गई थी कि अघोरी गुरु चंदन पर मोहित हो गये हैं अतः उसने चंदन को समझाकर भाग जाने के लिए कहा, और नहीं गई तो अपनी गुरु बहन विष्णुप्रिया के पास भेजने का प्रबंध किया ।

नित्य के समय गुरु द्वारा मंत्राभिषिक्त साँप को दूध पिलाते समय, साँपने मायादीदी को काट लिया, और वह तत्काल मर गई । मरते–मरते मायादीदी ने चंदन को अघोरी भैरवानंद के बारे में बताकर चंदन को भाग जाने के लिए कहा । गुरु मायादीदी के शब को कंधे पर उठाकर जल–समाधि देने चले गये । चंदन को भीतर से द्वार पर कुंडी लगा लेने का आदेश दे गये । स्वयं बाहर से कुंडी लगाकर गये । चंदन खिड़की से कूदकर भाग गई । जब ससुराल पहुँची तो कोई उसे गेरुए वस्त्र में पहचान नहीं पाया । वह जब विक्रम के पास पहुँची तो पता चला कि अभी–अभी उसकी दूसरी पत्नी दर्शन

ने पुत्र को जन्म दिया है । अतः वह द्वार भी उसके लिए बंद हो गये । वह दिशाविहीन चलती जा रही थी ।

(४) कृष्णकली :

(कुष्ठरोग, अवैधसंतान, वेश्या–स्त्रियों के जीवन की समस्या को चित्रित करता हुआ उपन्यास)

यह शिवानीजी का बहुचर्चित उपन्यास है । अभी वर्ष २००७ में दूरदर्शन पर सप्ताह में प्रति सोमवार ६–३० बजे सिरीयल के रूप में प्रसारित हुआ ।

कृष्णकली जो इस उपन्यास की नायिका है, साँवली होने पर भी अत्यंत सुंदर है । वह स्पष्टवकता भी है । थोड़ी स्वच्छंदी भी है । पूरी जिंदगी अपने माता–पिता कौन है ? इस रहस्य को जानने के लिए दुःखी रही ।

कली की माँ पार्वती, पिता असददुल्ला खान दोनों कुष्ठ रोगी थे । कुष्ठरोगियों के आश्रम में ही दोनों के बीच संबंध हुआ, जब असददुला खान को जब पता चला कि पार्वती गर्भवती है तो उसे छोड़कर भाग जाता है । दुःखी पार्वती बच्चे को जन्म देते ही मार देना चाहती है । किंतु ईसाई मिशनरी की उदार डॉक्टर रोझी पेट्रिक समय पर आकर बच्ची को बचा लेती है । और उसे अपनी सखी पन्ना की गोद में डाल देती है । क्योंकि दो दिन पहले ही पन्ना की गोद में मरी हुई बच्ची पैदा हुई थी । रोझी के समझाने पर पन्ना इस बच्ची को लेकर अपनी बड़ी दीदी माणिक के पास जाती है । माणिक और पन्ना दोनों कोठे पर मुजरा करने वाली स्त्रियाँ हैं । मगर दोनों के स्वभाव में अंतर है । पन्ना का प्रेमी विद्युतरंजन मजमूदार जिसको लेकर पन्नाने अपने व्यवसाय में ध्यान नहीं दिया था । विद्युतरंजन पन्ना को छोड़कर चला गया था । मगर अब इस बच्ची को लेकर पन्ना माणिक के पास गई

तो माणिक ने दोनों का सहर्ष स्वागत किया । माणिक की पीली कोठी में रहनेवाली लड़कियों ने ही बच्ची का नाम रखा कृष्णकली ।

पन्ना और रोझी के बीच पत्र–वयवहार होते रहते थे । रोझी चाहती थी कि कली की पढ़ाई ईसाई मिशनरियों वाली सकूल में हो, ताकि उसके जन्म की कलंकित कथा उज्जवल हो जाय ।

कली पाँच साल की हो गई रोझी उसे लेने आई । साथ में पन्ना भी जाना चाहती थी, माणिक को ये बात अच्छी नहीं लगी । वह कली को भी ये व्यवसाय सिखाकर बुढ़ापे का सहारा बनाना चाहती थी ।

दोनों बहनों में कलह हुआ इसी के साथ ही बिदाई हुई । कली को डॉ. रोजी ने मिशनरी स्कूल बोर्डिंग में भेज दिया । पन्ना के रहने के लिए नैनीताल के सीमांत पर देवदार की कोठी किराये पर ले ली ।

कली बोर्डिंग में पढ़ाई कम करती थी, चोरियाँ करती, लूक छिपकर दूसरों की बातें सुनती, बनने संवरनें में ज्यादा रुचि रखती । बार बार अपने डेडी के बारे में मधर को पूछती । मधर ने ये सब पन्ना को लिख भेजा परिणाम स्वरूप पन्ना दुःखी होती है ।

सिनीयर केम्ब्रिज की पढ़ाई पूर्ण कर कली जब घर आई, माँ से भी अपने पिता के बारे में पूछती रहती । पन्ना अलग अलग बातें बताकर उसे शांत करती मगर कली अंतर्द्वन्द्व से पीड़ित रहती ।

एक दिन पन्ना को छोड़कर चले जाने वाला प्रेमी विद्युत रंजन पन्ना को मिलने आया । पन्ना जब गर्भवती थी तब विद्युतरंजन ने उसे छोड़ दिया था । उसे मिलते ही पन्ना फिर से पुरानी यादों में बह गई वह अपनी अवस्था, मृत बच्ची, दीदी से कलह और कली के जन्म का इतिहास सारी बातें विद्युत रंजन को बता रही थी कि अचानक घुमने गई कली आ पहुँची और लूक–छिपकर दोनों की बातें सुनने लगी । अपने जन्म की कथा, सच्चाई, माता–पिता की जानकारी सब जानकर, अपने को कली विद्युतरंजन मजमूदार

नाम देने के लिए विद्युतरंजन का आभार व्यक्त करके, पन्ना को अकेला छोड़कर गुस्से में घर छोड़कर निकल गई । बाद में आजीविका के लिए कभी मोडलिंग, कभी रिशेप्सनियट का काम करती है । अपने मन–दुःख को शांत करने के लिए विदेशी प्रवासियों की गाईड बनकर स्मशान में भी घूमती है ।

कलकत्ता में रेवतीशरण तिवारी और उसकी सरल पत्नी अम्मा से परिचय हुआ, उसके मकान में किराये पर रहती है । अम्मा की दोनों बेटियाँ शादी सुता थी । बड़ा बेटा प्रवीर कँवारा था । छोटा बेटा सुवीर लड़ाई में मारा गया था । इसकी विधवा बहु को बेटी की तरह रखते थे मगर वह भी कीर्तन करने घर आये साधु के साथ भाग जाती है ।

कली मन ही मन अम्मा के बड़े बेटे प्रवीर को चाहने लगी थी, मगर अपने जन्म की गलित कथा से प्रवीर को कुछ कह नहीं पाई । प्रवीर भी कली से नाराज ही रहता था । प्रवीर की शादी जब कुन्नी से हो गई तो निराश कली घर छोड़ देती है ।

एक दिन प्रवीर को अपने जन्म का पूरा इतिहास बताकर लौरीन आँटी के यहाँ अलाहाबाद चली जाती है ।

प्रवीर के मन में अब कली के प्रति धारणा बदल गई थी । वह लौरींन आटीं के यहां उसे मिलने जाता है । एक दिन बुखार की वजह से पता चला की कली को कैंसर है ।

कली ने अब माँ पन्ना को भी बुला लिया । दूसरे दिन प्रवीर को मिलने बुलाया, उसे मिलने के बाद रात में अपने अभिशिप्त जीवन को समाप्त करने के लिए, किसी को कुछ कहे बिना नींद की गोलियों का ओवरडोझ ले लिया । आत्महत्या कर ली । पन्ना दुःख से स्तब्ध हो गई । विधाताने उसे फिर से संतान हीन बना दिया । सब स्मशान यात्रा की तैयारी करते है । प्रवीण अकेला गंगातट जाकर उस अनाम कुल गोत्र कली को पानी की अंजलि देता है ।

(५) स्मशान चंपा

(पारिवारिक, आर्थिक, सामाजिक संघर्षों से लड़ती हुई नारी की कथा और भ्रष्टाचार की समस्या का निरूपण)

धरणीधर की मृत्यु दो दो आघात एक साथ लगने से हुई । सरकारी नौकरी में उस पर भ्रष्टाचार और सरकारी गाडियों का दुरपयोग करने का आरोप लगाया था, परिणाम स्वरूप सस्पेंड कर दिया था । दूसरा आघात छोटी बेटी जुही अपने मुसलमान सहपाठी तनवीर बेग से शादी करके घर से चली गई ।

पत्नी भगवती और बड़ी बेटी चंपा अकेले हो गये । बड़ी बेटी चंपा डॉकटरी की पढ़ाई में व्यस्त थी । उसके लिए लड़का ढूँढ़ने भगवती अपनी ननंद को बताती है ।

रुक्की कुछ कहे बिना डॉक्टर मधुकर को लेकर रिश्ता पक्का करने आ गई । मगर अब घर की स्थिति बदल गई थी । माँ–बेटी दोनों जुही की कलंक कथा, छुपाना चाहती है । चंपा ऐसे वातावरण में रुककी बुआ को योग्य जवाब न दे सकी, होस्टेल चली जाती है ।

रुक्की बुआ जुही की अनुपस्थिति के बारे में पूछती है तो भगवती ने पैर की हड्डी टूटने पर अस्पताल में है ऐसा बहाना बता दिया ।

पति की मृत्यु के बाद भगवती ने देखा बेंक बैलेन्स शून्य है । उसने अपनी सारी संपत्ति बेचकर पति का कर्जा चुकाया, बाद में भाई के यहाँ रहने चली गई । वहाँ भाभीने उसे गृहकार्य करने वाली आया ही बना दिया ।

रुक्की एक दिन भगवती को मिलने आती है, उससे अपनी भाभी की दयनीय स्थिति देखी नहीं जाती, साथ में ये भी बताती है कि चंपा के अशिष्ट व्यवहार के बाद भी मधुकर को ये रिश्ता मंजूर है । भगवती के समजाने पर चंपा ने सगाई के लिए हाँ कह दी और रुक्की ने सगाई की आर्थिक व्यवस्था

की थी । भगवती पर कोई बोझ नहीं आने दिया । सगाई के बाद मधुकर ने चंपा को अंगूठी और कई उपहार भेजे थे । चंपा भी खुश रहने लगी ।

मगर एक दिन मधुकर के पिता रामगुप्त को जुही के मुसलमान के साथ भागकर शादी कर लेने की बात पता चल गई, धरणीधर के सस्पेंड होने का पता भी चल गया, परिणाम स्वरूप वह रिश्ता तोड देते है । रुक्की बुआ ने भी चंपा और भगवती को बुरा भला कहा ।

थककर चंपा अपने गांव, समाज से दूर बीरभूमि के सीमांत पर एक अस्पताल में नौकरी करने आ जाती है । चंपा को अस्पताल के मालिक मि. सेनगुप्त की पत्नी रानी कमलेश्वरी को संभालना था । उसे दौरे पड़ते थे, बेहोश हो जाती थी । चंपा को पहले ही मि. सेनगुप्त रहस्यमयी व्यक्ति लगा । रानी कमलेश्वरी अपनी पुत्री मयुरी को लेकर चिंतित है जो पश्चिमी रंग में रंगी हुई है । उद्दंड बन गई है

चंपा को देखकर कमलेश्वरी को अपनी माँ का चेहरा याद आ गया । वह अपने जीवन की पुरी कथा चंपा को बताती है । उसकी माँ और नानी पेशेवर नर्तकियाँ थीं । मासी के देवर सेनगुप्त घर–भर का विरोध मौल कमलेश्वरी को ब्याह कर ले आये थे । मगर कमलेश्वरी अपना अतीत नहीं भूल पाई थी । चंपा को अपनी बेटी ही मानती है ।

भगवती का स्वास्थ्य बिगड़ने लगा था चंपा उसे सेनेटोरीयम छोड़ने गई, वहाँ उसे पता चला की मधुकर की शादी रुक्की बुआ की पुत्री जया से हो गई है ।

अस्पताल वापस आने पर कमलेश्वरी चंपा को कोठी पर ले जाने आई, क्योंकि मयुरी उसे मिलना चाहती थी, मयुरी चाहती थी कि उसकी सखी का गर्भपात चंपा कर दे, मयुरी की सखी और कोई नहीं मगर जुही थी । जुही चंपा को बताती है कि वह अपने पति से असंतुष्ट है जिठानी उसे क्लबो में ले जाती है वहाँ जुही नाचती है, अनचाहे गर्भ से मुक्त होना चाहती है ।

चंपा ऐसे अनैतिक कार्यो में साथ नहीं देती । मुंबई चली जाती है ट्रेन में चंपा को बुखार आया, वहाँ ट्रेन में ही उसकी मधुकर से मुलाकात हो जाती है । वह उसकी परवरिश करता है ठीक होने पर चंपा वापस अस्पताल आती है । उसे खबर मिली की जुही की तबियत बिगड़ गई थी, डॉ. मिनी ने बचा लिया । मयुरी और सेनगुप्त जुही को लेकर दिल्ली जा रहे थे वहाँ ट्रेन अकस्मात में मारे गये ।

कमलेश्वरी ने अपनी सारी संपत्ति चंपा के नाम कर दी । और उसको कोठी में रहने ले आई । एक दिन चंपा को पत्र मिला की जुही ने अपने प्रेमी की हत्या कर दी, क्योंकि उसने विश्वासघात किया था परिणाम स्वरूप जुही जेल में थी । चंपा चाहे तो पैसा खर्च करके छुडवा सकती थी । मगर चंपा कुछ नहीं करती, क्योंकि खूनी की बहन कहलाना नहीं चाहती ।

चंपा और कमलेश्वरी दोनों लम्बी तीर्थयात्रा पर निकल गयी थीं । एक दिन मधुकर के पिता ने आकर उसे वेश्या की बेटी बनने का, जुही की कलंक कथा और पिताजी के सस्पेंशन की बात याद करवाके बहुत ही अपमानित किया । मधुकर का पीछा छोड़ देने के लिए कहा ।

दुःखी चंपा अपनी बाँह पर लिखती है कि –

श्री श्री गुरु केनाराम की अधम दासी चंपा ।

(६) सुरंगमा

(वेश्याजीवन, अवैधसंतान, राजनैतिक हथकंडे, भ्रष्टाचार, अनमेल विवाह आदि समस्याओं का निरूपण करता उपन्यास)

सुरंगमा के जीवन की करुण गाथा इस उपन्यास में चित्रित है । राजा प्रबोधरंजन पत्नी पुत्री लक्ष्मी के साथ वैभवपूर्ण जीवन जी रहे थे । बीमार पत्नी की सेवा के लिए विदेशी नर्स रखी थी जो लक्ष्मी पर कडा अनुशासन रखती और पूरा घर संभालती थी ।

लक्ष्मी को संगीत की शिक्षा दिलवाने के लिए राजा प्रबोधरंजन ने गौहरजान नामक गायिका का संगीत मास्टर गजानन को नियुक्त किया । गजानन नाबालिग राजलक्ष्मी को फँसाकर साथ लेकर भाग जाता है । लक्ष्मी को थोड़े दिनों में ही गजानन की शोषित, दुष्ट मनोवृत्ति का पता चल गया । जो उस पर संदेह करता था, शराब पीकर मारता था । उससे छूटने के लिए लक्ष्मी खिड़की से कूद कर आत्महत्या करने ट्रेन की पटरी पर चली जाती है । मगर वहाँ भी उसे ट्रेन का गार्ड बचा लेता है और अपनी बहन बेरोनिका के घर ले जाता है । बेरोनिका निदोर्ष लक्ष्मी को घर में आने देती है मगर उसे पता चला कि वह गर्भवती है, माँ बनने वाली है तो उसकी अवैध संतान को बचा लेने के लिए रोबर्ट को लक्ष्मी के साथ शादी कर लेने के लिए कहती है ।

शादी के बाद लक्ष्मी आगे पढ़ाई करके एम.ए. करती है, स्कूल में ही अध्यापिका बन जाती है । एक बेटी को जन्म देती है जिसका नाम सुरंगमा रखा, रोबर्ट सुरंगमा को बहुत ही प्यार करता था, सुरंगमा भी रोबर्ट को ही अपने डैडी समझ रही थी ।

एक दिन अचानक शराबी गजानन लक्ष्मी को ढूँढ़कर रोबर्ट के घर आ पहुंचा, मारपीट गाली–गलोच किया । और राजलक्ष्मी – सुरंगमा को जबरदस्ती अपने साथ ले गया । राजलक्ष्मी बिलकुल निर्जीव, चूप बनकर गजानन के साथ उसके घर में रहती है, क्षय रोग से बिमार हो जाती है । परिणामस्वरूप मृत्यु हुई, माँ के मरने के बाद सुरंगमा अकेली हो गई ।

माँ की मृत्यु के बाद सुरंगमा बैंक में नौकरी करने लगी । और अपनी सखी मीराँ के पिता की सिफारिश से मंत्री दिनकर की बेटी मीनी के टयुशन भी मिले । सूंरगमा के सौंदर्य ने दिनकर को आकर्षित किया, दिनकर की पत्नी विनीता जो समाज सेविका थी, जिसके सहारे ही दिनकर मंत्री बना था । विनीता सुरंगमा पर संदेह करने लगी थी ।

पत्नी के विदेशगमन पर दिनकर मीनी और सुरंगमा को लेकर नैनीताल घूमने जाता है । वहाँ सुरंगमा के सामने अपना प्यार व्यक्त करता है । मंत्री बनने से पहले छोटे से गाँव में रहनेवाले दिनकर की शादी बचपन में एक बदसूरत लड़की से हुई थी । जिसे छोड़कर भाग आया था और मंत्री बन गया । मंत्री बनने के बाद वह अपनी बदसूरत पत्नी को असमय पदोन्नति करवा देता है । श्रेष्ठ शिक्षिका का एवोर्ड भी दिलवा देता है । मगर इसी षड्यंत्रों में ही उसके पी. ए. ने उसकी बदसूरत पत्नी को जहर देकर मार डाला । यह बात दिनकर नहीं भूल पाया था ।

दिनकर अपने आपको मित्र के रूप में स्वीकार कर लेने लिए, सुरंगमा से निवेदन करता है । वह आधी–आधी रात उपहार लेकर सुरंगमा के घर पहुंच जाता है । विदेश से लौटी विनीता को जब ये बात पता चली तो वह सुरंगमा के घर पहुँची और सुरंगमा को धमकी दे आई कि अगर उसने दिनकर का पीछा नहीं छोड़ा तो, वह उसका खुबसूरत चेहरा तेजाब डलवा कर खराब करवा देगी ।

जब वह जाने लगी तो सुरंगमा ने दिनकर के दिए हुए उपहारों की गठरी थमा दी । जिसका उपयोग सुरंगमा ने कभी नहीं किया था ।

सबकुछ छोड़कर दूर चली जाने का निर्णय सुरंगमा करती है और जब घर लौटती है तो दरवाजे के पास किसी गठरी से टकरा गई वह और कोई नहीं गजानन नशे में चूर बेहोश पड़ा था ।

(७) चल खुसरो घर आपने

(पारिवारिक, आर्थिक समस्या में स्त्री के योगदान की कथा)

इस उपन्यास में एक ऐसी लड़की की कथा है जो पिता की मौत के बाद माँ, भाई–बहन पूरे परिवार की जिम्मेदारी अपने कंधों पर ले लेती है । नायिका का नाम है कुमुद । पढ़ी लिखी होने के कारण अध्यापिका की नौकरी

कर लेती है साथ में टयुशन भी कर लेती है । घर में लकड़ी से लेकर अनाज, भाई बहन की फीस, किराया, बिजली का बिल, बाबूजी का पेंशन, सब कुछ कुमुद करती है । इतना ही नहीं छोटी बहन उमा के म्यूज़िक का शौक भी पूरा करती है । मगर कभी अपने बारे में नहीं सोचती ।

कुमुद की माँ सदैव उमा–लालू की ही फिक्र किया करती थी । कुमुद के बारे में कभी नहीं सोचती, माँ के लाड़ प्यारने ही लालू को आवारा बना दिया । कॉलेज में दो मास से फीस नहीं दी, जब कि घर से ले गया था । सीगारेट जुए में मस्त रहता है, इम्तहान में भी कई विषयों में फैल होता है ।

एक दिन पुलिस घर पर आकर बताती है कि कुख्यात अड्ड़े पर छापा मारने से चार लड़कियाँ पकड़ी गईं, जिनमें एक उमा है । कुमुद जिस माथुर साहब की बेटियों का टयूशन करवा रही थी, उन्हीं के प्रयत्नों से उमा को छुड़वा लिया गया, बाद में माथुर साहब ने टयूशन के लिए मना कर दिया ।

बाद में माँ को उमा के विवाह की चिंता रहा करती थी । कुमुद अपने प्रति माँ की लापरवाही देख बहुत दुःखी होती है । घर के सदस्यों के लिए कुमुद ने अपने जीवन के बारे में नहीं सोचा, मगर माँ का ज्यादा लाड़प्यार ही उमा–लालू को पथभ्रष्ट कर देता है । कुमुद उमा को मामा के घर छोड़ देती है । उसके लिए घर का माहोल दमघोंटू हो गया था । इसलिए माँ के नाराज होने पर भी वह लखनऊ राजा कमलसिंह की बीमार पत्नी मालती की सेवा करने की नौकरी स्वीकार कर लखनऊ चली जाती है ।

यहाँ कुमुद के लिए उन्मादिनी मालती को संभालना बहुत कठिन है । राजा साहब को भी ज्वर की वजह से सन्निपात हो गया, कुमुद दोनों की सेवा एक साथ करती है । सन्निपात में राजा साहब ने कुमुद को मालती समजकर गले लगा लिया । मालती इस दृश्य को देखकर जल उठी । वह कुमुद का गला दबाने लगी मगर राजा साहब ने उसे बचा लिया ।

कुमुद अपने मन में नौकरी छोड़ देने की बात सोचती है, उससे पहले आने वाली डॉ. मरियम ने यहाँ आत्महत्या कर ली थी । ऐसी बातें वह नौंकरों से सुन चुकी थी । मगर कुमुद को बार–बार अपने घर की स्थिति और माँ के कृतज्ञता भरे आशीर्वाद याद आये । क्योंकि इस नौकरी के बाद कुमुदने माँ को घर को, बहुत ही सुख दिया था

इतना सबकुछ करने के बाद भी माँ कुमुद को छोड़कर, उमा के विवाह की तैयारियाँ करती है, कुमुद को ये कहकर समझाती है कि मुझे विश्वास है कि तू ऐसे वैसे कोई गलत काम नहीं करेगी, तेरी और से में निश्चिंत हूँ । उमा के विवाह के लिए कुमुद राजा साहब से पैसे माँगती है, पिताजी के बीमे की रकम मिलते ही चुका देने का वादा करती है ।

राजा साहब अपने भाइयों के साथ कोठी की संपत्ति को लेकर सदैव चिंतित रहते – कलह होता रहता । ऐसे दुःख में वह एक दिन कुमुद के कमरे में चले आये । अपने जीवन की कथा बताकर कुमुद से प्यार की याचना करने लगे अपने साथ रहने का वचन माँगने लगे ।

कुमुद घबरा गई, रात्री के समय राजा साहब का कमरे में आना उसे अच्छा नहीं लगा । वह तुरंत संभलकर उसे समझा बुझा कर उसके कमरे में भेज देती है । रात में ही उसने एक पत्र लिखकर तैयार किया जिसमें उसने राजा साहब से क्षमा मांगी थी और उससे लिए हुए पैसे चुका देने का वादा किया था ।

सुबह उठते ही नौकर को ये पत्र दिया कि राजा साहब तक पहुँचा दे और किसी से कुछ कहे बिना चली जाती है । छः मास पहले नौकरी के लिए इसी स्टेशन पर अकेली उतरी थी आज भी अकेली ही घर जा रही है ।

(८) कालिंदी

(विवाह को लेकर पहाड़ी कायदे–कानून और दहेज प्रथा आदि रूढ़ियों के सामने जूझती हुई नायिका की जीवंत कथा)

इस उपन्यास में दहेज की समस्या के सामने लड़ने वाली नारी की कथा है । अन्नपूर्णा का विवाह हुआ मगर पति के अन्य गायिका स्त्री से संबंध थे । परिणाम स्वरूप अन्नपूर्णा मायके आई । उसकी कुंडली में भी परित्यक्ता होने का दोष था ।

पिताजी ने उसे पढ़ाया–लिखाया, अन्नपूर्णा ने पिताजी की खेतीबारी, भाइयों की परवरिश आदि संभाल लिया, उसने सुंदर लड़की को जन्म दिया नाम रखा कालिंदी ।

अन्नपूर्णा के दूसरे भाई–भाभी देवेन्द्र–शीला निःसंतान थे । फलस्वरूप कालिंदी को गोद लिया । संपन्न घर में कालिंदी की परवरिश हुई । पुलिस अफसर बनने के बाद देवेन्द्र, पत्नी–बहन–पुत्री कालिंदी को लेकर दिल्ली चला आया । वहाँ कालिंदी को डॉक्टरी की उच्च शिक्षा दिलवाई । बड़ी होने पर उसके लिए लड़का ढूंढ़ने लगे ।

कैनेडा स्थित भारतीय डॉक्टर से कालिंदी का रिश्ता तय किया । कालिंदी माँ–मामा–मामी की कृतज्ञता के लिए हाँ कहती है । मगर वह विवाह करना नहीं चाहती थी ।

विवाह के दिन ही कालिंदी के पिता शराब पीकर आये और हंगामा मचाने लगे । अपनी बेटी का हक माँगने लगे । कालिंदी ने अपने मामा देवेन्द्र भट्ट को ही अपना पिता बताया । और देवेन्द्र ने उस शराबी व्यक्ति को पुलिस के हवाले कर दिया ।

विवाह के दिन ही कालिंदी को किसी ने बताया कि वर के पिता द्वारचार के समय ही ५० हजार रुपया दहेज लिये बिना विवाह करने राजी

नहीं है । देवेन्द्रमामा–मामी, माँ हाथ–जोड़े उसके सामने खड़े है, मामा रुपयों की व्यवस्था करने घर के भीतर आये ।

तभी ही सिंहनी जैसी कालिंदी द्वार पर आई, मामा को रोककर बारात को लौट जाने के लिए कहा, वर के पिता को बताया कि ''हमें आपका बेटा नहीं खरीदना है जहाँ उसके मुँह माँगे दाम मिलें, जाकर बेच आइए ।''

समाचार पत्रों में कालिंदी के अपूर्व साहस की खबर छपी ।

कालिंदी जैसे कुछ नहीं हुआ हो, ऐसी स्वस्थता से दिल्ली जाकर नौकरी करने लगी ।

देवेन्द्र मामा–मामी माँ पहाड़ पर अपने पुश्तैनी मकान में रहने आये । अब कालिंदी को पुरुषों के प्रति घृणा हो गई थी । एक घटना ऐसी बनी कि वह पुरुष विरुद्ध विद्रोहिणी बन गई ।

कालिंदी की डाकटर सखी माधवी का मंगेतर अखिलेश वर्मा माधवी की अनुपस्थिति में कालिंदी को बाँहों में भर लेता है । जब कि माधवी और अखिलेश दोनों प्रेम विवाह करने वाले थे ।

कालिंदी के नाराज होने पर, अखिलेश ने कालिंदी के विरुद्ध माधवी के कान भरे । परिणाम स्वरूप माधवी अखिलेश की बात मानकर कालिंदी को भला बुरा कहती है ।

कालिंदी थोड़े दिन छुट्टी लेकर मामा के पास आ गई । छुट्टियों में गाँव में रहकर वृद्ध–बुजुर्गों की सेवा करना चाहती है । पहाड़ पर कालिंदी के दिन अच्छे व्यतीत होने लगे, बचपन के मित्र बिरजू से मुलाकात हुई । माँ को कुछ आशा बंधी । मगर कालिंदी उसे अपना मित्र, भाई ही समझती थी, बिरजू की मौत भी अकस्मात से हो गई ।

पहाड़ पर देवेन्द्र मामा के मित्र, वसंत मामा का बेटा पिन्टू विदेश से विवाह–विच्छेद करके लौटा है । उसने कालिंदी के समक्ष विवाह का प्रस्ताव रखा, कालिंदी उसे स्वीकार नहीं करती ।

एक दिन शाम को मंदिर से लौटी कालिंदी ने देखा कि डॉ. जोशी विदेश से ३० हजार रूपये, जो दहेज में एडवान्स लिये थे लौटाने, वापस देने आये थे । कालिंदी को पता चला कि दहेज की लेन–देन में डॉ. जोशी का कोई दोष नहीं है, जो कुछ किया था उसके पिताजी ने किया था । फिर भी कालिंदी उससे अच्छा व्यवहार नहीं करती । दिल्ली पहुँचती है तब डॉ. जोशी के कई पत्र आये थे, जिसमें उसने अपने निर्दोष होने की बात बताई थी । कालिंदी सभी पत्रों को बिना पढ़े फाड़ देती है ।

एक दिन अन्नपूर्णा अकेली कालिंदी के पास दिल्ली आई । वह उसे ये समझाना चाहती थी कि संसार की कोई भी स्त्री मायके का सुख भोगने पर भी एक दिन उबने लगती है । अहँकार को अपना शत्रु मत बनने देना । इसीलिए जो भी निर्णय करें, सोच समझकर करें ।

अंत में अन्नपूर्णा अपना भविष्य देखनेवाली यक्षिणी माता से प्रार्थना करती है कि ''उसकी ललाट लिपि उसकी पुत्री के ललाट पर मत उतारो माई ।''

(६) दो सखियाँ – लघु उपन्यास

(पारिवारिक असंतोष, प्रेम का अभाव – परिणाम स्वरूप – वृद्धाश्रम की कथा)

सखुबाई और आनंदी की भेंट वृद्धाश्रम में हुई । दोनों अपनी संतानों के होते हुए भी वृद्धाश्रम में अकेली जीवन व्यतीत करती है । सखुबाई संसार से उबकर, प्रिंसीपाल के पद से स्वेच्छा से अवकाश ग्रहण कर, किसी को कुछ कहे बिना आश्रम में चली आई थी ।

सखुबाई पति की मृत्यु के बाद पिता के घर चली आई । पढ़ लिखकर अपने पैरों पर खड़ी हो गई । बेटे को पढ़ा लिखाकर विदेश भेजा । माता पिता की सेवा की, सुख दिया ।

विदेश स्थित बेटा विदेश में ही माँ को पूछे बिना तीन–तीन शादियाँ करता है । तीसरी शादी एक हब्शी काली महिला से की । परिवार में दो बेटे हुए । बेटे के परिवार की तस्वीर देखकर नाराज होकर सखुबाई आश्रम में चली आई ।

आनंदी को अपनी दो बेटियाँ राधा–रुकमनी ही वृद्धाश्रम में छोडने आई थी । उसे अपने बेटे – बेटीयों की याद सताती है । विधवा आनंदी को एक बेटा था, जिसकी बहू आनंदी ने ही पसंद की थी । मगर शादी के बाद बहू का राधा–रुकमनी से निर्वाह नहीं हो सका । कलह से तंग आकर पुत्र अपनी पत्नी सास–ससुर को लेकर विदेश चला गया । कभी माँ को याद भी नहीं करता । आनंदी अकेली ही किराये पर रहने लगी । जिनका पूरा खर्चा बेटियाँ उठाती है ।

बेटियाँ अब माँ से तंग आकर बारी–बारी माँ को अपने घर पर रखती है । जहाँ आनंदी दोनों जामाता और उनके पुत्र–पुत्रियों को अवरोध लगती है । फल स्वरूप दोनों बेटियोंने उसके लिए ‘आश्रय’ आश्रम ढूंढ़ निकाला ।

‘आश्रय’ वृद्धाश्रम में आनंदी–सुखबाई एक ही कमरे में रहती है । दोनों के बीच मित्रता हो जाती है । आनंदी इश्वर भकत, श्रद्धावान नारी है । सखुबाई तटस्थ, बौद्धिक, स्वच्छताप्रिय नारी है । आनंदी भी स्वच्छताप्रिय है । अपने जीवन की प्रत्येक बात दोनों एक दूसरे से कहती हैं ।

आनंदी को मृत्यु से पहले अपनी मृत्यु का स्वप्न आता है और वह सखुबाई को सोने के दो भारी गोखरु दोनों बेटियों को देने के लिए देती है । और माणिक की अंगूठी सखुबाई को देती है ।

आनंदी ने जिस प्रकार चाहा था उसी ही प्रकार सखुबाई ने मृत्यु के समय बिदा दी ।

आनंदी के मृत्यु पर उसकी दोनों बेटियों को बुलाया मगर वह परिवार के साथ कहीं घूमने गई थी । बाद में उसका सामान लेने आती है । मगर

अपनी माँ की सखी–सखुबाई को जानते हुए भी अनजान बनी रही, अपनी माँ के बारे में एक शब्द भी नहीं पूछा ।

सखुबाई दुःखी हुई । गुस्से में उसने गोखरु बेटियों को नहीं दिये । दूसरे दिन सखुबाई गोखरु थैली में रखकर उस समुद्र तट पर आई जहाँ दोनों बैठकर अंतरंग बातें किया करती थीं । दोनों गोखरुओं की थैली पत्थर से बाँध कर समुद्र की लहरों में बहा दिया । तब तक देखती रही जब तक वह पानी में विलीन न हो जाय, अंगूठी सखुबाई ने अपनी सखी को याद करके अंगुली में पहन ली । आनंदी के मृत्यु के बाद अकेली हो गई थी । परिणामस्वरूप आनंदी की मृत्यु पर भी न रोनेवाली, लौहस्तंभ सी मास्टरनी सखुबाई फूट फूट कर रोने लगी ।

(१०) स्वयंसिद्धा (लघु उपन्यास)

(आत्मसम्मानी – जिद्दी नारी की कथा)

इस लघु उपन्यास में एक आत्मसम्मानी नारी की कथा है । माधवी का विवाह कौस्तुभ के साथ कुंडली देखकर ही हुआ था । स्वयं कौस्तुभ के माता–पिताने माधवी को देखकर पसंद किया था ।

माधवी की मौसी कह रही थी कि आषाढ़ में जिस नारी का ब्याह होता है वह दुःखी होती है, पिताने एक भी बात नहीं सुनी विवाह हो गया ।

मगर माधवी को विवाह की पहली रात ही आधात मिला । पहली ही रात एक अनाम चिटठी मिली कि ''तुम्हारे पति को मैं पहले ही अपने रूप की शराब पिलाकर अपना बना चुकी हूँ'' – राधिका । कौस्तुभ माधवी को बहुत ही समझाता है । कौस्तुभ कहता है ''मैं राधिका को बचपन से जानता हूँ उसे उटांगपटांग मजाक करने की आदत है । मैं जरूर जानता था कि वह मूर्ख तुम्हें कुछ लिखेगी । मगर माधवी उसकी बात का विश्वास नहीं करती और जिद में कौस्तुभ को छोड़कर पिता के घर आ जाती है ।

रात्रि में पति के घर से आनेवाली बिन माँ की पुत्री को पिता घर में नहीं आने देते । माधवी माँ को याद करके रोने लगती है । बाद में मौसी के घर जाती है – उन्होंने भी उसे घर में नहीं आने दिया । फलस्वरूप माधवी अपनी सहपाठीनी रचेल एन्ड्रुज के घर गई, वह उसे अपने घर रखती है । रचेल के पिताने माधवी की एम.ए. की पढ़ाई का एडमिशन ले दिया ।

बुद्धिशाली माधवी पढ़लिखकर स्वयं अपने पैरों पर खड़ी हो गई । उसने अपने रिश्तेदारों से संबंध काट दिये । सबकुछ होने पर माधवी के पास शांति नहीं है । वह अकेलापन महसूस करती है । अतीत की बातें उसे अनिद्रा की रोगी बना देती हैं । माधवी को कभी कभी अपनी गलती पर पश्चाताप होता है । वह नींद की गोलियाँ खाने लगती है ।

एक दिन उसे पिताजी का पत्र मिला, जिसमें कौस्तुभ की बिमारी की खबर थी । पिताजी चाहते थे कि वह कौस्तुभ को देखने जाय । माधवी को ट्रेन में ही कौस्तुभ से मुलाकात हुई थी जो पत्नी के साथ सफर कर रहा था । उसे लगा कि कौस्तुभ निर्दोष था उसने अकारण ही उस पर संदेह किया था । बिजली चली जाने पर कौस्तुभ उसे चुंबन कर देता है । यह बात माधवी को पिताजी का पत्र मिलने पर याद आ गई ।

वह ससुराल जाती है । घर पहुँची तो देखा कौस्तुभ के घर भीड़ विचित्र विलाप कर रही थी । मृत पति को वह एकटक देखती ही रही उसे आँसू बहाने का कोई अधिकार नहीं था । वहाँ से निकलकर घर आई और नींद की गोलियां खाकर कभी–न टूटने वाली निद्रा में डूब गई ।

(११) गैंडा – लघु उपन्यास

(इस लघु उपन्यास में स्पर्धा का मानसिक अंतर्द्वन्द्व और अंत में मौत प्राप्त करती राज की कहानी है ।)

राज–सुपर्णा बचपन से कालेज तक पढ़ाई, खेलकूद इम्तहान, संगीत, सौंदर्य प्रत्येक में एक दूसरे की प्रतिस्पर्धी रहीं । राज–सदैव विजयी बनती । फिर भी दोनों सखियाँ थीं । मैत्री बनी रही ।

मगर वैवाहिक जीवन के क्षेत्र में सुपर्णाने राज को हरा दिया था । क्योंकि सुपर्णा का पति खूबसूरत राजकुमार जैसा था । जबकि राज का पति काला बदसूरत बौने कद का था । जिसे राज गैंडा कहकर बुलाती थी ।

विवाह के बाद दोनों सखियाँ पहली बार सपरिवार मिलीं । और तब से दोनों के जीवन का दूसरा अध्याय शुरू हुआ ।

राज के ससुराल वाले, पति, धनिक होने के बाद भी राज होटलों में रिसेप्शनिष्ट की नौकरी करती थी, सिर्फ समय व्यतित करने के लिए । अपनी दोनों बेटियाँ अपने माता–पिता के यहाँ छोड़ आई थी । बेटियाँ भी पिता जैसी बदसूरत थी जिसे राज नफरत करती थी । राज पर पश्चिमी दुनिया का प्रभाव था । उसके रंग–ढंग पहनावा रुचि में आभिजात्य, पश्चिमीकरण की छाप थी ।

सुपर्णा भारतीय घरेलू गृहिणी थी बेटा–बेटी दो संतान थे । पति उसके लिए सबकुछ था, वह राज की तरह स्वच्छंदी, स्वतंत्र नहीं है । दोनों की मैत्री फिर से हुई ।

राज धीरे–धीरे सुपर्णा के सास–ससुर बच्चों का मन जीत लेती है । बच्चों को मिठाई – प्यार देती है सुपर्णा के सास ससुर की सेवा करती है । यहाँ तक की रोहित को भी राज अच्छी लगने लगी थी । सुपर्णा को इस बात का पता चला गया था । राज के पति वेद का तबादला हो गया तब सुपर्णा उसे समझाती है कि वह राज को साथ ले जाय । वह भी यही चाहता था मगर राज नहीं जाती ।

वेद के जाने के बाद राज सुपर्णा के घर उसके बच्चों के कमरे में रहने आ जाती है । और राजने अपनी होटेल में ही एक कमरा बुक करवा

के रखा था जहाँ राज–रोहित दोनों मिलते हैं । यह बात पास पड़ोशवाले भी जानते थे । राज ने एक दिन सुपर्णा को नवरत्नों का सेट दिखाया । तब सुपर्णा को पता चला कि राज ने उसके पति को जीत लिया है । सुपर्णा के पूछने पर राज किसी जौहरी का नाम बता देती है ।

सुपर्णा इतना बड़ा आघात–विश्वासघात, राज की स्पर्धा सहन नहीं कर पाई । और एक मौलवी से मंत्रित ताविज ले आती है । उसके घातक असर से फूड पोइजींनींग से राज की मृत्यु हो जाती है । रोहित को संदेह था कि राज को सुपर्णा ने ही मारा था । सुपर्णा रोहित का दिया हुआ नौरत्न हीरों का सेट, गरीब मौलवी की बेटी के ब्याह के लिये उपहार में दे आती है ।

(१२) माणिक – लघु उपन्यास :

(यह एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है)

माता–पिता की मृत्यु के बाद नलिनी मिश्रा अपनी छोटी बहन रंभा मिश्रा के माता और पिता बन जाती है । नलिनी शांत, एकांत प्रिय, विवेकी, बुद्धिमान है । रंभा चंचल, जिद्दी मिलनसार है ।

नलिनी नौकरी करती है अपनी अवकाश प्राप्ति के पहले ही अपने आवास 'वाटिका' की व्यवस्था कर लेती है । निर्जन स्थली में वाटिका होने से एकांत की आदि बन जाती है वह विवाह करना नहीं चाहती । पिता ने भी नलिनी के विवाह की ओर ध्यान नहीं दिया था । धन संचय में ही लगे थे ।

नलिनी रंभा की प्रत्येक इच्छा, शौक पूरा करती है । संगीत का शौक भी पूरा करती है । मगर रंभा, जब संगीत मास्टर के साथ भाग जाती है तो उसे समझा बूजाकर घर लाती है और रमेन्द्र के साथ उसकी शादी कर ढेर सारे गहने दिये ।

अपनी इच्छा, अपना प्रेम कभी भी नलिनी ने छोटी बहन के सामने नहीं रखा । मकान भी रंभा के नाम कर दिया । रंभा के जब बेटा पैदा हुआ तो

उसे भी अपने घर ले आई उसकी पढ़ाई, बोर्डिंग स्कूल का खर्चा, स्वयं उठाती थी ।

एक दिन बारिस में दीनाबाटली वाला नामक अनजान स्त्री नलिनी के घर आई, नलिनी उसे अपने अकेलेपन का सहारा बना लेती है । दीना अपने व्यक्तित्व के जादू, अंग्रेजी भाषा, कला मर्मज्ञता से नलिनी को जीत लेती है ।

यहाँ तक की नलिनी अपनी प्यारी बहन रंभा को भी भूल जाती है । आजन्म कौमार्य वैरागी नलिनी की प्रत्येक बात में परिवर्तन आ गया था । खाने–पीने कपड़ों में भी परिवर्तन आ गया था । मानो नलिनी ने प्रकृति को जो चुनौती दी थी उसका प्रतिशोध ले रही थी प्रकृति, दीना को भेजकर ।

दीना नलिनी के आगे–पीछे घुमा करती थी । और धीरे धीरे दीना नलिनी का बैंक बेलेन्स, गहनें और एक दिन नलिनी की हत्या करके, रंभा के हिस्से में गई माणिक की अंगूठी में से माणिक लेकर फरार हो जाती है । पुलिस को पता चला कि वह एक पेशेवर हत्यारिन थी, और सात साल पहले पति की हत्या करके उसका बीमा लेकर भागी हुई स्त्री है दीना बाटलीवाला ।

(१३) विषकन्या : (लघु उपन्यास)

कामिनी–दामिनी दोनों जुडवाँ बहनें थीं । दोनों के रूप में समानता होने के बावजूद स्वभाव में बहुत विरोधाभास था । दामिनी शांत, विनम्र, सुसंस्कृत, आस्तिक – माता पिता की प्यारी थी । इससे कामिनी ईर्षा करती थी । ईर्षा ने उसके दिल में विद्रोह भर दिया था । वह जिद्दी हठ्ठी, असभ्य, अशिष्ट बन गई थी ।

कामिनी अपनी बड़ी बहन की हमशकल होने का फायदा उठाती थी । बिना पूछे पिकचर देखने जाना, अपने सहपाठी मित्रों द्वारा दी गई दावतों के निमंत्रण में जाना । प्रत्येक बात में छल कपट से कामिनी बाहर निकल जाती । माता–पिता के द्वारा पकड़े जाने पर वह साफ इन्कार कर देती ।

माता–पिता चिंता में डूब जाते कि दोष, सजा किसे दें ? दामिनी सबकुछ जानती थी पर कभी माता–पिता से कामिनी के विरुद्ध शिकायत नहीं करती ।

कामिनी के स्वभाव में एक विशेष शक्ति जुड़ी थी, वह जिस वस्तु, व्यक्ति की प्रशंसा करती, प्रेम से देखती, उसका सर्वनाश हो जाता । उससे माँ सदैव डरती रहती–कहती है कि तेरी जबान काली है बेटी ! सब चीजें कामिनी की नजरों से बचा कर रखती थी । माँ की शिफोन की साड़ी की प्रशंसा की, आया ने उसे इस्त्री से जला दिया । बुआ के खूबसूरत चेहरे की प्रंशसा की, तीसरे दिन प्रेशर कुकर का ढकना उड़कर मुँह पर गिरा, चेहेरा बदसूरत हो गया ।

इस अद्‌भुत शक्ति पर विश्वास कर कामिनी को प्लेन अकस्मात के समय हुआ । कामिनी एर होस्टेस होने से उसे पायलोट डिसुजा के साथ आये दिन जाना पड़ता । डिसुजा कामिनी को वासना–लोलुप दृष्टि से देखता था । प्लेन अकस्मात में दोनों एक जंगल में गिरे, वहाँ लाशों के ढेर के बीच डिसुजा कामिनी को पाना चाहता है । कामिनी कुछ क्षण उस पर मोहित हो गई – उसकी तारीफ कर दी ‘‘तुम कितने सुदंर हो जोन !!’’ डिसुजा प्यास लगने पर झील पर गया वापस आकर कामिनी के पैरों के पास दम तोड़ दिया । कामिनीने माना कि झील–का पानी गंदला–विषैला होगा, मगर जब उसने पिया तो स्फूर्ति का अनुभव हुआ । कामिनी आराम करने लंबी छुटियाँ लेकर घर आई ।

घर पहुँच कर देखा कि उसके बचकर आने का कोई महत्त्व नहीं है । घर में सब बड़ी दीदी दामिनी के विवाह की तैयारियाँ कर रहे थे । उस लड़के रोहित के साथ कि जिसे देखकर कामिनी भी उसे मन ही मन चाहने लगी थी । कामिनी बहुत दुःखी होती है, माँ भी शादी की सब चीजें कामिनी की नजरों से बचाकर रखती है ।

दामिनी शादी के बाद ससुराल चली गई । कामिनी अपने काम पर गई । कई दिनों के बाद कामिनी – दामिनी के ससुराल उससे मिलने गई तो देखा की दामिनी मम्मी डैडी से मिलने मायके गई है ।

नौकर उसे मालकिन समझकर स्वागत करता है । रोहित भी उसे दामिनी समझकर बाँहों में भर लेता है । कामिनी बहन के प्रति ईर्षा की वजह से कोई स्पष्टता नहीं करती । थोड़े दिनों वह रोहित के साथ पत्नी बन कर रहती है ।

दामिनी जब मायके से आई, कामिनी को देखकर सारी बातें समझ गई । बहुत दुःखी हुई । कामिनी के समझाने पर भी वह फिर से घर छोड़ मायके चली गई ।

यहाँ पर कामिनी से रोज कोई न काई गलती होती रहती है । यहाँ तक की रोहित को भी धीरे धीरे संदेह होने लगा । उसे दूर करने वह कामिनी को झील में तैरने ले जाता है । कामिनी पानी में नहीं जाती वह जानती थी कि दामिनी को पानी से डर लगता था । मगर रोहित उससे बहाना बताता है कि तीन महीने पहले मैंने ही तुम्हें तैरना सिखाया है भूल गई क्या ? जैसे ही कामिनी पानी में उतरी रोहित को पता चल गया कि वह उसकी पत्नी दामिनी नहीं कामिनी है । कामिनी वहाँ रोहित की खुली देह देखकर उस पर मोहित हो जाती है । रोहित कामिनी को दूर कर के किनारे पर आता है । वहाँ कहीं से कोबराने आकर उसे डँस लिया । रोहित बेहोश हो जाता है कामिनी अपने माँ–पिता–बहन को खबर कर देती है ।

दामिनी अपने पति की छाती पर सिर रखकर रोते हुए उसकी पत्नी होने का प्रमाण देती है । रोहित की मृत्यु हो जाती है माता–पिता को सारी बातें बाद में समझ में आती हैं कि यह सब कामिनी की अभद्रता थी ।

कामिनी भी अपने प्रेमी का शोक मनाना चाहती थी मगर वह रो नहीं पाई । क्योंकि बहन परिवार तथा समाज ने उसे समझने की कोशिश नहीं की सब गलत ही समझते थे ।

कामिनी किसी से कुछ कहे बिना घर छोड़ देती है जंगल में किराये पर एक कोठी लेकर रहने लगती है ।

वह दामिनी और उसके बेटे के सामने नहीं जाना चाहती । शायद बेटा भी उसे अपनी माँ समझने की गलती कर दे । बिलकुल अपने पिता की तरह तो ?

(१४) कैंजा (सौतेली माँ) लघु उपन्यास

(पहाड़ के वैवाहिक कायदे कानूनों का लेखा जोखा, रीति-रिवाज, परंपरा को प्रस्तुत करता हुआ लघु उपन्यास । पूरी कथा नायिका नंदी के जीवन से जुडी है ।)

मातृहीना नंदी सर्वगुणसंपन्न है । मगर उसकी कुंडली में वैधव्य योग होने के कारण पिताजी उसकी शादी करना नहीं चाहते, पढ़ा लिखाकर आत्मनिर्भर बनाना चाहते हैं । नंदी डॉक्टर बन जाती है और पिताजी की बातों को आदर्श पुत्री बनकर स्वीकार कर लेती है ।

गाँव का युवान सुरेश भट्ट बचपन से नंदी को चाहता है । वैधव्य योग होने के बाद भी नंदी से शादी करना चाहता है । मगर नंदी के पिताजी उसे शराबी जुआरी कह के निकाल देते है । नंदी के पिता की ओर से निराशाजनक उत्तर प्राप्त करके सुरेश भट्ट और भी गुनाह करने लगता है, वह सेक्स मैनियाक हो जाता है । एक भी गलत कर्म उससे नहीं छुटा - रेप, हत्या, शराब, जुआ, बलात्कार ।

गाँव की मालदारिन की पागल बेटी पर बलात्कार करके भाग जाता है । वह लड़की माँ बनने वाली है । नंदी उसके बेटे को महा प्रयत्न से बचा

पाई । मगर पगली की मृत्यु हो गई । अनाथ अवैध बच्चे को नंदी ले आई । माता–पिता दोनों का प्यार दिया । उसे लेकर दूर गाँव में डॉक्टरी करने चली जाती है ।

नंदी को सदैव ये डर लगता है कि रोहित को इसी बात का पता न चल जाय कि वह उसकी सगी माँ नहीं है । मगर हुआ यही । दस साल के रोहित को स्कूल में सब पूछने लगे कि तेरे पिता कौन है ? वह नंदी से अपने पिता के बारे में पूछता है । नंदीने नाम बता दिया सुरेश भट्ट ।

अब नंदी रोहित को लेकर गाँव आई वह सुरेश भट्ट से शादी कर लेना चाहती थी क्योंकि रोहित को वह माता और पिता दोनों का प्यार देना चाहती थी ।

सुरेश भट्टने शराब–पी–पीकर अपनी हालत और भी खराब कर दी थी, नंदी को उसके प्रति दया भी है प्रेम भी है । विवाह मंडप में ही वह बार बार उसका इलाज करती है । मगर सुरेश भट्ट अचेत हो जाता है । नंदी अपने आपको विधवा हालत में पाती है ।

अचानक नंदी के सामने पगली की माँ मालदारिन आ गई । यानी रोहित की नानी जिसने अपने पति को जहर देकर मारा डाला था । वह रोहित को बता देती है कि नंदी उसकी सगी माँ नहीं है कैंजा है । रोहित यह सुनकर आघात से शीशा तोडने लगता है रोता है मगर फिर भी दसवर्षीय बालक अपनी माँ नंदी के साथ रहने के लिए तैयार हो जाता है ।

(१५) रतिविलाप (लघु उपन्यास)

(संपत्ति के लालच में नैतिक मूल्यों से गिरावट, अनमेल विवाह की समस्याओं का चित्रण)

नायिका अनसूया पटेल शांति निकेतन की छात्रा है । कुशल नृत्यांगना, अभिनय कुशला है । श्रीमंत व्यापारी पिता की पुत्री है । मगर पिताजी की

मृत्यु के बाद घर और व्यापार का उत्तरदायित्व अपने कंधों पर उठा लेती है । थोड़े दिन मामा ने सहकार दिया मगर बाद में उनकी कुदृष्टि भानजी की संपत्ति पर पड़ी ।

अनसूया को दूर करने के लिए मामाने उसका विवाह अपने मित्र के उन्मादी, पागल पुत्र से तय कर दिया । अनसूया को सिर्फ लड़के की तस्वीर दिखाकर रिश्ता स्वीकार करवा लिया । अनसूया कुटिल मामा पर भरोसा करती है उसकी चाल नहीं समझ पाई ।

विवाह की पहली रात अनसूया को पता चला कि उसका पति मानसिक रूप–से स्वस्थ नहीं है । आघात से मुढ़ हो गई ।

पश्चाताप से ससुरजी ने सारी संपत्ति अनसुया के नाम कर दी । उन्मादी पति को कमरे में कैद करके रखा जाता था । ससुरजी उसे पुत्रीवत् स्नेह करते थे । एक दिन उसका पति अनसूया को बाँहों में भरकर छत की ऊँची मुंडेर पर चढ़ जाता है । वह अनसूया को लेकर नीचे कुद जाने की धमकी देने लगा । पिताजी ने अनसूया को पाँव खींचकर बचा लिया मगर विक्रम छत के नीचे जा गिरा और प्राण गँवा दिये ।

रिश्तेदार बातें करने लगे स्वरूपवान युवा बहु से रंग रेलियाँ मनाने पुत्र को मार दिया । फलस्वरूप अनसूया को लेकर करशनदास भोगीदास कापडिया मुंबइ चले आये । वहाँ अनसूया को साड़ियों का बुटिक 'इन्द्रधनुष' खोल दिया । ऊँचे घराने की समृद्ध स्त्रियाँ अनसूया की ग्राहक थीं । घर का काम पिताजी संभालते, अनसूया व्यवसाय ।

मगर पिताजी की तबियत का ख्याल करके उसकी परवरिश के लिए अनसूया हीरा नामक लड़की को नौकरानी के रूप में घर ले आई । जिसने अपनी १८ वर्ष की उम्र में अपने वृद्ध आतताई पति की हत्या करके जेल काटी थी ।

हीरा की सेवा लेना पिताजी मना करते थे । मगर बाद में मान गये, हीराने अपनी वाक्पटुता, काम-से अनसूया तथा पिताजी को जीत लिया था । और अनसूया को सहाय करने दुकान पर भी जाती थी ।

अनसूया हीरा पर विश्वास करके घर-दुकान-पिताजी को हीरा के हवाले करके, फरजाना बेग की साड़ियाँ खरीदने दक्षिण चली गई ।

हीरा का जीवन अभावों में बीता था, खानेपीने की चीजें, बनाव श्रृंगार के लिए उसका मन लालायित रहता था । अनसूया साड़ियाँ लेकर वापस आई तो दामी साड़ियाँ देकर हीरा के मनमें लालच जगा । उसने साड़ियाँ दुकान पर नहीं भिजवाई । फरजाना बेग घर पर ही लेगी, ऐसा फोन आया था ऐसा बहाना किया । दोपहर में तबीअत का बहाना करके घर चली आयी । अनसूया ने घर आकर दरवाजे पर ताला देखा तो आश्चर्य लगा । दूसरी चाभी से दरवाजा खोला, कुछ अशुभ बनने का संदेह हुआ । घर में भीतर जाकर देखा कमरे में पिताजी नहीं थे । आलमारी में साड़ियाँ नहीं थीं, हीरा दोनों को लेकर भाग गई थी । पिताजी की चिट्ठी में हीरा के प्रति प्रेम होने से जाने की बात लिखी थी । अनसूया फिर से अनाथ हो गई । मगर अपने आप को संभाल लेती है ।

कुछ महिनों बाद अनसूया को पुलिस से सूचना मिली कि उसके ससुर का शब होटल के कमरे में से मिला । उसके साथवाली लड़की गायब हो गई है । होटल से मिली डायरी में से अनसूया का पता मिला था । अनसूया ने जाकर पिताजी के अंतिम संस्कार किये ।

एकबार अनसूया साड़ियाँ खरीदने दिल्ली गई । वहाँ एक होटल में उसकी नजर एक युवती पर गई, साथ में एक युवक और छोटा बच्चा था जो खाना खा रहे थे । युवती ने जो दामी साड़ी पहनी थी उसे पहचान कर पता लग गया कि वह हीरा ही थी । छोटा बच्चा खेलता-खेलता अनसूया के टेबल के पास आया, जिसकी शकल बिलकुल पिताजी से मिलती थी । अनसूया समझ

गई कि हीरा का बेटा उसके ससुर का ही बेटा है । हीरा अपने बेटे को ढूंढ़ती हुई उसे लेने आई तो अनसूया को देखकर साथवाले युवक और बच्चे को लेकर भाग निकली ।

अनसूया चाहती तो पुलिस में खबर कर सकती थी मगर वह अपने नन्हें देवर को मातृहीन अनाथ बनाना नहीं चाहती थी ।

(१६) किशनुली (लघु उपन्यास) :

(अवैध संतान, बलात्कार, पंत–पांडे ब्राह्मणों के धार्मिक ढोंग की कथा ।)

यह एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है । किशोरवय की एक उन्मादिनी, पगली, सुंदर किशोरी समाज की घटिया मनोवृत्ति का शिकार हुई है । गली गली में पगली ठोकरें खाती है गाँव के मनचले लड़के उसे देखकर सीटी बजाते, उसे चिढ़ाते रहते हैं । छेडँते रहते थे ।

गांव के संस्कृत पढ़ाने वाले पंडित परमानंद पांडे की पत्नी पगली किशनुली को बचाती है, प्यार से किशना नाम देती है । नहला–धुलाकर सँवार देती है । शास्त्रीजी अपनी निःसंतान पत्नी की भावना को नहीं समझते । किशनुली को रखने से मना करते हैं ।

मगर काखी उसकी बात नहीं सुनती, घर में रखती है । नहाने बैठे शास्त्रीजी को किशनुली देखा करती है, शास्त्रीजी उसे मार भगाते हैं । एक दिन किशनुली किसी को कुछ कहे बिना चली गई । जब वापस आई तो उसे सात महनिों का गर्भ था । काखी ने उसे घर में रखा, समाजवालों ने उससे व्यवहार बंद कर दिया था । किशनुली को बेटा हुआ काखी उसे संभाल लेती है नाम रखा था कर्ण ।

शास्त्रीजी छुप–छुपकर कर्ण को उठाते, प्यार करते, गले लगाते, आंसू बहाते थे । काखी उसे ममता, पश्चाताप के आँसू समझती है । मगर व्यथा शास्त्रीजी जानते थे कर्ण अपना बेटा था मगर पतिव्रता पत्नी को कुछ कहने की

हिंमत नहीं कर पाते । एकबार रात में किशनुली काखी–शास्त्रीजी के बीच में आकर सो गई । काखी बताती है कि आपसे पिताजी जैसा प्यार करती है उस पर पंडित उसे थप्पड़ मार देते हैं । काखी को कुछ समझ में नहीं आया । और शास्त्रीजी कुछ कहे बिना घर छोड़कर चले जाते हैं । किशनुली बीमार हो जाती है । दवाइयों से कुछ फायदा नहीं हुआ और चल–बसी । कर्ण भी पढ़–लिखकर बड़ा अफसर बन गया जो काखी को शहर में बुला रहा है । मगर काखी अपने पूर्वजों का घर छोड़कर जाना नहीं चाहती ।

लेखिका को शास्त्रीजी का पत्र मिला उसमें कर्ण अपना बेटा है, ऐसी सारी बातें लिखी थीं, काखी को बताने को कहा था मगर लेखिका काखी की श्रद्धा, विश्वास तोड़ नहीं पाई ।

(१७) कृष्णवेणी (लघु उपन्यास)

(मन की दिव्यदृष्टि से भविष्य को देखना, समृद्धि प्राप्त करना, मगर प्रेम में निराशा प्राप्त करनेवाली युवती के मनोद्वंद्व की कथा ।)

इस लघु उपन्यास में नायिका कृष्णवेणी को ऐसी दिव्य दृष्टि प्राप्त है कि वह आँखें बंद करके किसी का भविष्य देख सकती है ।

कृष्णवेणी समृद्ध पिता आई.सी.एस. ऑफिसर नटराजन् की बेटी थी । जिनकी अपनी टर्क कलब थी, अपना अस्तबल था, प्रतिवर्ष अपने घोडों को रेस में लगाने का उन्हें शौक था ।

वेणी को अपनी दिव्यदृष्टि का ज्ञान आठ साल की थी तब हुआ । थोड़े दिन पहले उसके मामा को सामान्य एपेंडिकस की वजह से अस्पताल में भर्ती किया था, यह सब जानते थे ।

नींद में वेणी ने जो देखा उठकर कहने लगी । आवाज बदल गई थी । एकदम भारी होगई थी ''मामी बेहोश पड़ी है । मामा के शरीर पर सफेद चादर ढांक दी है । सब रो रहे है । माता–पिता ने जाकर देखा कि

वही बातें, दृश्य था, जो वेणी ने बताया था । मगर पिता नटराजन के कहने पर ये बातें छिपा-दी गईं, ताकि बेटी तमाशा न बन जाय ।

थोड़े दिनों बाद पिताने वेणी को पूछा कि कौन-सा घोड़ा रेस में लगाया जाय ? जो जीतकर आये । वेणीने आँखें बंद करके कहा "ब्लैक प्रिन्स" जो अस्तबल का सबसे दुर्बल घोड़ा था । वेणी के कहने पर रेस में लगाया और जीतकर आया । बाद में वेणी की दिव्यदृष्टिने अपने समृद्ध पिता को और भी समृद्ध बना दिया । नटराजन्‌ने नौकरी छोड़ दी और घोड़ों की रेस के पीछे भागने लगे ।

वेणी के जन्म के तीसरे साल दक्षिणी परंपरा के अनुसार उसका रिश्ता उसके मझले मामा से तय कर दिया था । जो विदेश स्थित थे । बड़ी होने के बाद वेणी ने उसका विरोध किया । मगर थोड़े दिनों के बाद माँ ने वेणी को मामा के वैभव को लेकर उसके प्रति आकर्षित करने के लिए भविष्य को देखने के लिए कहा । वेणीने देखा कि मामा बड़ी बड़ी लोह श्रृंखला को पकड़े, सलाखों के पीछे खड़े हैं । वस्त्र अस्तव्यस्त हैं । दूसरे ही वर्ष, मामा को पागल हो जाने से पागल खाने में भर्ती करवाना पड़ा ।

कृष्णवेणी शांतिनिकेतन में पढ़ने गई । वहाँ उसकी मुलाकात एक निर्धन कलाकार छात्र भास्करन् से हुई । बंशी बजाने वाला भास्करन् चित्रकार था । वेणी उसे प्यार करने लगी । मगर उसकी गरीबी के कारण पिता को उसका रिश्ता मंजूर नहीं था । और भास्करन् के माता-पिता को कोढ़ था ।

वेणी इस कुष्ठ रोग की बात से बहुत उदास हो जाती है अपना ख्याल रखती है । मगर भास्करन् से ही शादी करना चाहती है । परिणाम स्वरूप पिताजी उसे वहाँ ले जाते है, जहाँ भास्करन् के माता-पिता रहते थे । रोग-हद से आगे बढ़ गया था । भास्करन् भी गायब था ।

माँ के कहने पर वेणी भास्करन् का भविष्य देखती है, वह अल्मोड़ा के कुष्ठाश्रम में टीन की बैरेक में बैठा है । चेहरा बीभत्स हो गया है । बंशी नहीं उठा पाता । मगर वेणी यह बात माँ को नहीं बताती ।

सब का भविष्य देखनेवाली वेणी अपना भविष्य नहीं देख पाती जब देखती है, तो अंधेरा ही दिखाई पड़ता है । और एक दिन तेज रफतार में गाड़ी चलाते वक्त किडनी रच्चर से गाड़ी गहरी खाई में जा गिरी । वेणी की मृत्यु हो गई । एक महीने के बाद पिताजी भी लाखों की संपत्ति छोड़कर चल बसे । माँ दृष्टिहीन हो गई । नौकर चाकर सब काम करते थे ।

(१८) रथ्या – लघु उपन्यास

(कुंडली में विवाह योग नहीं होने से निराश युवती डांसर बन गई ।)

उपन्यास की नायिका बसंती के पिता जुए में सबकुछ हार गए । परिणाम स्वरूप नदी में कूदकर जान दे देते है । माँ भी उसके पीछे आत्म हत्या कर लेती है । अनाथ बसंती की परवरिश विधवा जीवंती बूआ करने लगती है ।

बचपन से बसंती बिमार ही रहती है । मगर उसके व्यक्तित्व में एक विशेषता है कि वह खरगोश की तरह भागती है उसके शरीर में से कस्तुरी जैसी सुगंध आती है । गाँव के वैद्यजी बसंती का इलाज करते हैं । बसंती बार–बार उससे चूरन माँगने जाया करती है । वैधजी का बेटा विमल बचपन से ही वसंती का मित्र था । दोनों बड़े होने पर एक–दूसरे के प्रति आकर्षित होते हैं ।

बूआ ने बसंती की कुंडली वैद्यजी को दिखा दी । अगर विमल की कुंडली से उसका मेल हो गया तो दोनों की शादी करके जिम्मेदारी से मुक्त होना चाहती है ।

वैद्यजी ने दोनों की कुंडली देखी, दोनों में कोई विवाह योग नहीं था । निराश वसंती भी बाद में कभी वैद्यजी से चूरन मांगने नहीं गई । और ना ही विमल से मिली ।

अल्मोड़ा में एक दिन सरकस का खेल आया । तीन दिन तक लगातार बसंती और बूआ देखने जाते है । चंचल वसंती शेर के पिंजड़े के पास खड़ी होकर उसे चिढ़ाती रहती है । एक दिन विमल ने यह देखा और ऐसा करने से मना किया । मगर बसंती उसकी बात सुनती ही नहीं ।

एक दिन विषैली जंगली सब्जी खाने पर सरकस के कई सदस्यों की मौत हो जाती है । मेनेजर ने अपना खेल समाप्त करने डेरा तंबू उठा लिया, चला गया । मगर तब से बसंती भी गायब हो गई । लोग मानने लगे कि उसे शेर खा गया है बूआ भी रो–धोकर भूल गई । मगर बिमल का दिल यह बात स्वीकार नहीं कर सकता था ।

बड़े वैद्यने बिमल की शादी गाँव की मोटी–बदसूरत सुरसती से कर दी, क्योंकि उसके पिताने दहेज में तीन भैंसे दी थीं । बदसूरत सुरसती का गृहिणीरूप खूबसूरत था । बिमल भी संस्कृत पाठशाला में अध्यापक बन गया था । उसके घर पर भी सात साल का बेटा था ।

एक दिन अचानक बूआ के नाम बंसती ने मनीओर्डर भेजा, मिठाइयाँ कपड़े, शाल सब कुछ था । गाँववालों को प्रणाम कहा था । विमल के लिए उपहार में चुड़ियाँ भेजी थीं, विमल समझ गया था कि प्रेम में निराश वसंती ने उसकी कायरता पर व्यंग किया था ।

विमल ने मर्नीओर्डर की चिट्ठी पर से बसंती का पता लिख लिया । जब राज्य के श्रेष्ठ शिक्षक का एवोर्ड पाने दिल्ली गया, तब वसंती को भी ढूँढ़ निकाला, उससे मिलने गया ।

विमल बसंती का वैभव देखकर चकित रह गया और अपने आप पर लघुता अनुभव करने लगा । बसंतीने विमल की अच्छी खातिरदारी की । दूसरे

दिन बाजार जाकर ढेर सारे उपहार, कपड़े, मिठाइयाँ, जूते ले आई । रात में अपने जीवन की सारी आपबीती बताई । सर्कस के मैनेजर ने उसका शारीरिक शोषण किया था । वहाँ से भागकर डाँस सिखा, अलग अलग नाम धारण करके, बड़े–बड़े शहरों में नाचती है । उसे चाहनेवाले अनेक है । तेज गाड़ी चलाती है । हवाई जहाज में उड़ती है । मगर विमल को नहीं भूल पाई थी । उसी रात विमल बसंती दो मिटकर एकदूसरे में समा गये ।

दूसरे दिन आधुनिक बनी बसंती, अपना नृत्य दिखाने विमल को साथ ले गई । दंभी विमल को वहाँ अच्छा नहीं लगा । घर आकर गाँव जाने की तैयारी करता है । बसंती को भी साथ आने के लिए कहता है । बसंती ने उसे बहुत समझाया कि अब वह संभव नहीं, गाँव वालों के सामने तुम मेरा स्वीकार नहीं कर पाओगे । हमारे रास्ते अलग है । मैं कुछ नहीं चाहती तुम्हारी स्मृति में मेरे घर तक आनेवाली कच्ची सड़क पककी बनने वाली है उसका अच्छा नाम देते जाओ ।

जवाब में विमल ने कहा कि नाम तो विधाता ने रखा है – 'रथ्या'' । यानी वेश्या के घर तक जानेवाली कच्ची सड़क को रथ्या कहते हैं । अंत में विमल बसंती का अपमान करके, दुःख पहुँचाकर अपने दंभ को व्यकत–कर धुल भरी रथ्या को कुचलता हुआ चला जाता है ।

संदर्भ संकेत :

क्रम	पुस्तक नाम, लेखक नाम	पृष्ठ क्रमांक
१	'कालिंदी' उपन्यास के फलैप पर से – शिवानी	-
२	'चौदह फेरे' उपन्यास – शिवानी	६
३	'चौदह फेरे' उपन्यास – शिवानी	७
४	'चौदह फेरे' उपन्यास – शिवानी	७
५	शिवानी के कथा साहित्य में नारी का अस्तित्व – डॉ. रुबी जुत्शी	१
६	'चौदह फेरे' उपन्यास – शिवानी	६
७	'चौदह फेरे' उपन्यास – शिवानी	८
८	'चौदह फेरे' उपन्यास – शिवानी	६
६	शिवानी के कथा साहित्य में नारी का अस्तित्व – डॉ. रुबी जुत्शी	२
१०	'चौदह फेरे' उपन्यास – शिवानी	११-१२
११	शिवानी के कथा साहित्य में नारी का अस्तित्व – डॉ. रुबी जुत्शी	२
१२	'चौदह फेरे' उपन्यास – शिवानी	१२
१३	शिवानी के कथा साहित्य में नारी का अस्तित्व – डॉ. रुबी जुत्शी	२
१४	'कालिंदी' उपन्यास – शिवानी – फलैप पर से	-
१५	'कालिंदी' उपन्यास – शिवानी – फलैप पर से	-
१६	'कालिंदी' उपन्यास – शिवानी – फलैप पर से	-
१७	शिवानी के कथा साहित्य में नारी का अस्तित्व – डॉ. रुबी जुत्शी	३

१८	शिवानी के कथा साहित्य में नारी का अस्तित्व – डॉ. रुबी जुत्शी	३
१६	शिवानी के कथा साहित्य में नारी का अस्तित्व – डॉ. रुबी जुत्शी	३
२०	‘कालिंदी’ उपन्यास – शिवानी – फलैप पर से	-

१. शिवानी के कथा साहित्य में नारी का अस्तित्व ।
डॉ. रुबी जुत्शी–२००३
प्रकाशक : मोहित पब्लिकेशन्स नई दिल्ली ११०००२

१. मायापुरी उपन्यास – शिवानी – २००६
प्रकाशक : शिवानी साहित्य प्रकाशन प्रा. लि.
राधाकृष्ण प्रकाशन दरियागंज, नई दिल्ली ११०००२

२. चोदह फेरे उपन्यास – शिवानी – १६६२
प्रकाशक : विश्व विद्यालय प्रकाशन चौक, वाराणसी २२०००१

३. भैरवी उपन्यास – शिवानी – १६७० – द्वितीय संस्करण
प्रकाशक : शवदकार, २२०३ गली डकौतान, तुर्कमान गेट दिल्ली–६

४. कृष्णकली – उपन्यास – शिवानी – सत्रहवां संस्करण
प्रकाशक : भारतीय, ज्ञानपीठ १८, इन्स्टीटयुशन वरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली ११०००३

५. श्मशान चंपा – उपन्यास – शिवानी – नवीन संस्करण २००२
प्रकाशक : हिन्दी पोकेट बुकस, प्राईवेट लि. दिलशाद गार्डन शाहदरा, जी.टी. रोड, दिल्ली ६५

६. सुरंगमा : उपन्यास – शिवानी – २००३
प्रकाशक : हिन्दी पोकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, दिलशाद गार्डन शाहदरा, जी.टी. रोड दिल्ली–६५

७. चल खुसरो घर आपने – उपन्यास – प्रथम – १६८२
प्रकाशक : सरस्वती विहार, २१–दयानंद मार्ग, दरियागंज,
नई दिल्ली ११०००२

८. कालिंदी – उपन्यास – शिवानी प्रथम संस्करण – २००६
प्रकाशक : राधाकृष्ण प्रकाशान, दरियागंज नई दिल्ली ११०००२

६. दो सखियाँ – लघु उपन्यास – शिवानी – उपप्रेती संकलन
प्रकाशक : हिन्द पोकेट बुक्स प्राइवेट लिमीटेड, जे–४० जोरबाग लेन,
नई दिल्ली–०३

१०. स्वयंसिद्धा – लघु उपन्यास – शिवानी – १६८७
प्रकाशक : सरस्वती विहार, जी.टी. रोड शाहदरा, दिल्ली ३२

११. गैंडा – लघु उपन्यास – शिवानी – तृ. सं. १६८६
प्रकाशक : सरस्वती विहार, जी.टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली ।

१२. माणिक – लघु उपन्यास – शिवानी – २००२
प्रकाशक : हिन्द पोकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड जे–४०, जोरबाग लेन,
नई दिल्ली–०३

१३. विषकन्या – लघु उपन्यास – शिवानी – १६६०
प्रकाशक : हिन्द पोकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, दिलशाह गार्डन, शाहदरा,
जी.टी. रोड दिल्ली ६५

१४. कैंजा – लघु उपन्यास – शिवानी – १६६३
प्रकाशक : हिन्द पोकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, दिलशाद गार्डन, शाहदरा,
जी.टी. रोड दिल्ली–६५

१५. रति–विलाप – लघु उपन्यास – शिवानी – १६६४
प्रकाशक : राजपाल एंड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली

१६. किशनुली – लघु उपन्यास – शिवानी – प्र. सं. १६६६
प्रकाशक : सरस्वती विहार दरियागंज नई दिल्ली–१

१७. कृष्णवेणी – लघु उपन्यास – शिवानी – २००३
प्रकाशक : हिन्द पोकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, दिलशाद गार्डन, शाहदरा, जी.टी. रोड, दिल्ली ९५

१८. रथ्या – लघु उपन्यास – शिवानी – १९८९
प्रकाशक : सरस्वती विहार, जी.टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली–३२

चतुर्थ अध्याय
शिवानी के मनोवैज्ञानिक एवं वैयक्तिक विचारधारा से संबंधित उपन्यासों में नारी चेतना

१. 'गैंडा' लघु उपन्यास के नारी पात्र

(१) राज :

(१) ईर्षा–स्पर्धा, विद्रोहीभाव रखनेवाली
(२) स्पष्टभाषिणी
(३) सौंदर्यवान नारी
(४) हाखशियार, दंभी, कामकाजी नारी
(५) पति की उपेक्षा करनेवाली नारी
(६) लग्नेतर संबंध–अैय्याश नारी
(७) असत्यवादिनी
(८) फूड–पोइजिनींग से मृत्यु

(२) सुपर्णा :

(१) शांत, सुखी–आतिथ्यभाववाली गृहिणी
(२) अदर्शी सौत को पहचाननेवाली
(३) व्यवहारकुशल नारी
(४) बुद्धिमान नारी
(५) दुःखी पत्नी
(६) प्रतिशोध लेनेवाली नारी
(७) प्रायश्चित करनेवाली नारी
(८) त्यागी नारी

२. 'माणिक' लघु उपन्यास के नारी पात्र

(१) नलिनी :

(१) जिम्मेदारी उठानेवाली नारी
(२) अच्छी आर्किटेकट
(३) संयमी दीर्घदृष्टिवाली व्यवहारिक नारी
(४) सामाजिक रिवाज – रूढ़ियों में विश्वास
(५) कठोर अनुशासिका
(६) मातृत्व के गुणोंसे युक्त
(७) कुंठाग्रस्त एकाकिनी नारी

(२) दीना बाटलीवाला :

(१) मोहक व्यक्तित्ववाली
(२) सौंदर्यवान
(३) धूर्त, ढोंगी, दिखावेवाली नारी
(४) क्रूर, चोर, ठग, पैशेवर हत्यारिन

(३) रंभा :

(१) तेज तर्रार आजाद खयालोंवाली
(२) सुखी, संतुष्ट गृहस्थी
(३) स्पष्टवक्ता
(४) जागृत नारी
(५) मानसिक अंतर्द्वन्द्व से पीड़ित

३. 'किशनुली' लघु उपन्यास के नारी पात्र

(१) काखी :

(१) आदर्श गृहिणी
(२) स्त्री रक्षा की हिमायती
(३) समाज की रूढ़ियों को तोड़नेवाली
(४) मातृत्वभाव वाली
(५) पति के प्रति अपार श्रद्धा
(६) पति का मान प्राप्त करनेवाली

(२) *किशनुली*

(१) *उन्मादिनी और सुंदर*

(२) *शास्त्रीजी के प्रति लगाव*

४. 'कृष्णवेणी' लघु उपन्यास के नारी पात्र

(१) *कृष्णवेणी*

(१) *श्याम–सुंदरी नारी*

(२) *दिव्य दृष्टि प्राप्त नारी*

(३) *लाड़ली बेटी*

(४) *रूढ़ि परंपरा का विरोध करनेवाली*

(५) *आदर्श प्रेमिका*

(६) *स्पष्टवक्ता*

(७) *जागृत और स्वच्छताप्रिय नारी*

(८) *परिस्थितियों से लड़नेवाली*

(९) *वफादार नारी*

५. 'विषकन्या' लघु उपन्यास के नारी पात्र

(१) *कामिनी :*

(१) *चंचल शरारती*

(२) *कुशल ॲरहोस्टेस*

(३) *उपेक्षा, कुंठा, ईर्षा से पीड़ित*

(४) *मायाविनी शक्तिवाली*

(५) *प्रेम में निराशा–उपेक्षा*

(६) *प्रतिशोध विद्रोह*

(७) *प्रेमिकारूप*

(८) *आत्ममंथन करनेवाली*

(९) *संदेह का शिकार*

(१०) *आत्मग्लानि*

(२) *दामिनी*

६. 'मायापुरी' उपन्यास के नारी पात्र

(१) शोभा :

(१) शिक्षा, पढ़ाई में होशियार

(२) आशावादी – व्यवहारपटु नारी

(३) सुंदरता

(४) मिलनसार सेवाभावी

(५) हीनता – लघुता की ग्रंथि से पीड़ित

(६) प्रस्ताहिम्मत – प्रेमिका

(७) कर्तव्य वचनपालक आज्ञाकारिणी

(८) सेक्रेटरी के पद पर

(२) सविता

(३) गोदावरी, मंजरी

७. 'कृष्णकली' उपन्यास के नारी पात्र

(१) कृष्णकली :

(१) अवैद्य संतान

(२) उच्च शिक्षा प्राप्त

(३) माता–पिता की तलाश

(४) विद्रोहिणी स्पष्टवक्ता

(५) सुंदरता

(६) मॉडलिंग, रिसेप्शनीस्ट का व्यवसाय

(७) प्रेमिका कली

(८) प्रामाणिक कली

(९) निराशा और जागृति

(१०) मृत्यु

(२) पन्ना

(३) डॉ. रोजी पेट्रिक

८. 'चल खुसरो घर आपने' उपन्यास के नारी पात्र

(१) कुमुद :

(१) छोटे भाई–बहन से परेशान
(२) पारिवारिक जिम्मेदारी उठाना
(३) उच्च शिक्षा प्राप्त कामकाजी नारी
(४) भीरु–डरपोक फिर भी स्पष्टवक्ता
(५) माता का विश्वास और उपेक्षा
(६) त्यागमयी नारी

९. 'स्वयंसिद्धा' लघु उपन्यास के नारी पात्र

(१) माधवी :

(१) रूढ़िवादी परवरिश
(२) शादी
(३) गलतफहमी, वहम, भ्रम की शिकार
(४) पिताजी–मौसी से तिरस्कृत
(५) उच्चशिक्षा प्राप्त, स्वाभिमानी, आत्मनिर्भर
(६) विद्रोही ईर्षालु निराशावादी
(७) पति की मृत्यु, आत्महत्या

१०. 'कैंजा' उपन्यास के नारी पात्र

(१) नंदी :

(१) उच्च कुल में जन्म
(२) उच्च शिक्षा प्राप्त–आत्मनिर्भर
(३) विवाह संबंधी संकीर्णता
(४) सुरेश भट्ट की प्रेमिका के रूप में
(५) नंदी का प्रेम
(६) कुंठा, नैराश्य, विवशतायुक्त सुरेश
(७) सेवाभावी नंदी
(८) मातृत्वभाव वाली नंदी
(९) त्यागमयी नारी

चतुर्थ अध्याय
शिवानी के मनोवैज्ञानिक एवं वैयक्तिक विचारधारा से संबंधित उपन्यासों में नारी चेतना

प्रस्तुत अध्याय में शिवानी के आलोच्य उपन्यासों एवं लघु उपन्यासों का शोधपरक अनुशीलन करते हुए उनमें प्रतिबिंबित नारी चेतना को रेखांकित करना शोधार्थी का अभीष्ट है ।

शिवानी के उपन्यासों का कथ्यपक्ष मनोवैज्ञानिक, वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक विचारधारा से अनुप्राणित है ।

इन सभी में नारी पात्र जिस प्रकार अपनी चेतना, शक्ति कायम रखते हैं यह बताना मेरा अभीष्ट है ।

नारी सहज एवं कोमल तो है ही, विभिन्न परिस्थितियों के सामने वह अपने प्रकृतिदत्त स्वरूप के बलबूते ही जूझती है, संघर्ष करती है ।

आलोच्य उपन्यासों में चित्रित नारी पात्रों में कुंठा, सहानुभूति, जिजीविषा, जिज्ञासा, संदेह, भावुकता, दंभ–विश्वास, विद्रोह, द्विधा, स्पर्धा, अकेलापन आदि भाव मन के साथ जुड़े हैं । इन मानसिक भावों के प्रति नारी चरित्र किस प्रकार व्यवहार करते हैं, इनसे प्रभावित होकर अपना अस्तित्व किस प्रकार बनाये रखते हैं इसका विस्तृत विश्लेषण करना प्रस्तुत अध्याय का प्रतिपाद्य है ।

गैंडा, माणिक, किशनुली, विषकन्या, कृष्णवेणी स्वयंसिद्धा – आदि लघु उपन्यासों एवं मायापुरी, कैंजा, कृष्णकली, चल खुसरो घर आपने, आदि उपन्यासों में कुंठा, सहानुभूति, संदेह, जिजीविषा, भावुकता, विश्वास आदि भावों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया गया है । साथ ही जीवन के कई पहलुओं

जैसे कि व्यक्तिगत विचार, विवाह, दाम्पत्यजीवन, नारी का एकांकी जीवन, व्यक्ति की स्वच्छंदता, यौन स्वच्छंदता, निष्फल (असफल) प्रेम, सुंदरता और दिव्य, गूढ़शक्ति चमत्कार आदि पर प्रकाश डाला है । कृष्णकली, चलखुसरो घर आपने, गैंडा मायापुरी, किशनुली, स्वयंसिद्धा, कृष्णवेणी आदि उपन्यासों में नारी चरित्रों का व्यक्तिवादी दृष्टिकोण ज्यादा उभरकर सामने आया है । इन नारी पात्रों ने समाज का डटकर मुकाबला करके, संघर्ष करके प्रेम, सेक्स, नैतिकता, रूढ़ियों, परंपराओं, रिवाजों में परिवर्तन की कामना करते हुए नई दिशाएँ प्रशस्त की हैं ।

''उपन्यास अब समाज की बाह्य घटनाओं को अंकित करने में ही काव्य की इतिश्री न मानकर व्यक्ति के मनोव्यापार, चेतना अंतःप्रेरणा व्यक्ति की समस्या आदि के सूक्ष्म अवलोकन का पथग्रहण करता है – ऐसे उपन्यासकारों में जैनेन्द्र अग्रणी माने जाते हैं । अतः इन्हें अंतर्मन का कलाकार कहना अधिक संगत लगता है ।

चरित्र चित्रण में मनोविश्लेषण की ओर हिन्दी में सर्वप्रथम जैनेन्द्र ही अग्रसर हुए हैं ।''[१]

इलाचंद्र जोशी, जैनेन्द्र, भगवतीप्रसाद वाजपेयी जैसे उपन्यासकारों ने प्रेमचंद युग में रहकर भी स्वतंत्र पथ निर्माण का श्री गणेश किया । उन्होंने चित्रण की शैली को युग के अनुरूप रूप देने का प्रयास किया ।

इलाचंद्र जोशी तथा जैनेन्द्र के कथ्य को स्पष्ट प्रभावशाली बनाने के हेतु, फ्रॉयड, युंग, एडलर, गेस्टाल्ट आदि मनोवैज्ञानिक संप्रदायों तथा सिद्धांतों का आधार ग्रहण किया ।

लगभग सन् १९३० के आसपास जैनेन्द्र का हिन्दी उपन्यास साहित्य में आगमन हुआ, उन्होंने लघु उपन्यास की विद्या को नवीन जीवन प्रदान किया । शिल्प की दृष्टि से इस विद्या में तात्त्विक सौष्ठव की उपलब्धि जैनेन्द्र के आगमन पर ही संभव हो सकी ।

जैनेन्द्र को हिन्दी के सर्वप्रथम लघु उपन्यासकार कहा जा सकता है । उनके आगमन से युगीन परिस्थितियों के परिवर्तन तथा मनोविज्ञान एवं यथार्थ के प्रभाव के कारण हिन्दी लघु उपन्यास के शिल्प में क्रांतिकारी परिवर्तन आया ।[२]

अंग्रेजी शासन का प्रभाव, मशीनी तकनीकी हमारे जीवन का अंग बन गई । मशीनीकरण के युग में महाकाव्य के स्थान पर उपन्यास और पद्य के बदले गद्य की लोकप्रियता बढ़ने लगी । इसके साथ–साथ उपन्यास का आकार भी घटने लगा । प्रारंभ में उपन्यास अपने युग के संपूर्ण प्रतिबिंब होते थे । उपन्यास के लिए यह आवश्यक भी था ‘‘मानव जीवन की समग्रता एवं यथार्थ परिवेश ही उपन्यासों में चित्रित होते हैं और एक विराट कैनवास में युगीन एवं समकालीन जीवन चिंतन के विविध पक्ष उसमें कलात्मक अभिव्यक्ति पाते हैं ।’’[३]

इस कारण उपन्यास का आकार बड़ा होता था । परंतु आज का जीवन सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक क्षेत्रों में टूटकर बिखरता जा रहा है । अतः अराजकता का यह संपूर्ण परिवेश अपनी समग्रता के साथ एक उपन्यास में समेटा नहीं जा सकता । डॉ. इन्द्रनाथ मदान के मतानुसार –

‘‘आधुनिक जीवन में जो अकुलाहट छटपटाहट, कसमसाहट है, इसे आंशिक अभिव्यक्ति मिल रही है । और आंशिक इसीलिये कि इसकी समग्रता को आज के उपन्यास में अभी तक समेटा नहीं गया ।’’[४]

कहा जा सकता है कि साहित्यकार का युगीन दृष्टिकोण समाज सापेक्ष न होकर व्यक्ति सापेक्ष बनता गया । कई सामाजिक विकृतियों का निदान–व्यक्ति मानस में मिल सकता है । पहले व्यक्ति का जीवन संपूर्ण वर्ग का इतिहास प्रस्तुत करने में सक्षम था, किन्तु आज व्यक्ति के जीवन में कई समस्याएँ, पहलू हैं, उसके व्यक्तित्व के भी कई पहलू है, खंडित व्यक्तित्व है – परिणाम स्वरूप उपन्यास में भी घटना, रचना, शिल्प, विषय, बोध नीति–उद्देश्य को लेकर परिवर्तन आयेगा ।

आज का पाठक अधिक परिपक्व हो गया है । किसी स्थिति अथवा घटना को समझने हेतु उसके लिये संकेत मात्र ही पर्याप्त होता है । उपन्यास में वर्णनात्मकता घटने लगी है । मनोविश्लेषण वैयक्तिकता, खंड जीवनानुभूति, लेखन रुचि आदि विभिन्न कारणों से उपन्यास के आकार, और शिल्प में विशेष परिवर्तन हो गया है ।

''उपन्यास तथा लघु उपन्यास में सबसे पहला तथा महान अंतर संपूर्ण तथा खंड जीवन के प्रतिबिंब का है ।''[५]

लघु उपन्यास में उपन्यास की अपेक्षा वैयक्तिकता अधिक होती है । ''लघु उपन्यास रचयिता के जीवन में घटित होने वाली किन्हीं विशिष्ट घटनाओं का संवेदनशील और अनुभूतिबद्ध लेखा-जोखा होता है । इस दृष्टि से बृहद उपन्यास उससे भिन्न हो जाता है क्योंकि, उसमें वैयक्तिकता का समावेश और उसकी प्रधानता भले ही हो परंतु आनुपातिक दृष्टि से वह उस मात्रा में नहीं रहती जितनी लघु उपन्यासों में ।''[६]

आचार्य विनय मोहन शर्मा लघु उपन्यास की परिभाषा देते हुए लिखते हैं – ''कुछ उपन्यास ऐसे होते हैं जो जीवन की व्यापकता का बंधन स्वीकार नहीं करते । वे जीवन के एक अंग का ही तनिक विस्तार पाकर उपन्यास बन जाते हैं । इन्हें अंग्रेजी में 'नावलेट' और हिन्दी में ''लघु उपन्यास'' कहते है । इनमें पात्रों की सख्या बहुत कम होती है, उनका संकेतात्मक चरित्रांकन होता है, वातावरण के घटाटोप से कथा बोझिल नहीं हो पाती और उनकी घटना बहुत छोटी और मामूली भी हो सकती है ।''[७]

जैनेन्द्र कुमार के सभी उपन्यासों का कथानक बहुत ही संक्षिप्त है । कहना चाहें तो कह लें कथानक है ही नहीं उन्होंने कुछ घटनाएँ ऐसी चुन ली हैं, जिनके बीच अपने पात्रों को बहा देते हैं – और उन घटनाओं के थपेड़े सहते हुए उनके मानसिक घात-प्रतिघात को स्पष्ट करना ही उनका लक्ष्य होता है ।[८]

मनोवैज्ञानिक खोजों से पूर्व उपन्यासों में समाज एवं वर्ग–संघर्ष के चित्रण की प्रधानता थी । मध्य युग में प्राचीन जीवन मूल्यों में आस्था, संगठन में विश्वास और मनोवृत्तियों की एकता के कारण पारिवारिक जीवन समृद्ध था, वैज्ञानिक विकास एवं औद्योगिक क्रांति की बौद्धिकता और विभिन्न अन्वेषणों के प्रभाव से व्यक्ति पुरातन जीवन मूल्यों एवं नैतिकता के प्रति विरक्त होकर स्वातंत्र्य की आवश्यकता अनुभव कर रहा है ।

मनुष्य की आस्था अपने परिवेश, समाज वर्ग तथा परिवार से हटकर अपने में ही केन्द्रित होती गई । उसकी बहिर्मुखता घटने लगी, और वह अंतर्मुखी होता गया । उसके जीवन में व्याप्त बाह्य संघर्ष का स्थान मानसिक संघर्ष ने ले लिया ।[६]

हिन्दी में मनोवैज्ञानिक उपन्यासों का जन्म जैनेन्द्र के आगमन से हुआ तथा इलाचन्द्र जोशी एवं अज्ञेयजी ने इसे उच्चता के शिखर तक पहुँचाया ।

मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में समाज की समस्याओं से अलग व्यक्ति की मूल चेतना को अभिव्यक्त किया जाता है । मनोवैज्ञानिक व्यक्ति को समाज के आधिपत्य से छुटकारा दिलाना चाहता है, इसमें मनुष्य का मन केन्द्र में होता है, उपन्यासकार व्यक्ति के आंतरिक जीवन को उजागर कर उसमें निहित शक्ति को पहचानने का प्रयास करता है ।

महिला उपन्यासकारों ने व्यक्ति की भावनाओं, कुंठा, विद्रोह, तनाव, संदेह, विश्वास, प्रेम आदि का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया है । नारी स्वातंत्र्य की चेतना से यौन मान्यताओं के प्रति विद्रोह व्यक्त किया जाने लगा है । नारी पुरुष का पारस्परिक आकर्षण और उनकी परस्पर व्यवस्था मानवजीवन का मूलाधार है । इन्हें विधिवत बनाए रखने के लिये ही समाज में विवाह संस्था को विकसित किया गया था, किन्तु प्रेम–जैसे मानसिक भावों के संबंधों में नारी का दृष्टिकोण स्वतंत्र एवं स्वच्छंद भी हो गया है । शिवानी के उपन्यासों में हमें यह विचारधारा देखने को मिलती है ।

आलोच्य उपन्यासों के नारी पात्र विभिन्न मानसिक भावों के प्रति अपना बिलकुल अलग दृष्टिकोण रखते हैं ।

१. 'गैंडा' लघु उपन्यास के नारी पात्र :

इस लघु उपन्यास में मानसिक (मनोवैज्ञानिक) समस्या है, स्पर्धा का भाव । प्रत्येक इन्सान सदैव विजयी रहना चाहता है । सबकुछ पाना चाहता है । हमने आजतक युद्ध की, कॉम्पीटीशन की, व्यवसाय की, उन्नति की बातें सुनी हैं । जिनमें अक्सर पुरुष विजयी रहना चाहता है, या विजयी होता है । जीवन का कोई भी क्षेत्र हो – धर्म राजनीति, अर्थव्यवस्था, समाज या परिवार उसमें पुरुष अग्रता पर रहना चाहता है । यह भाव स्पर्धा का भाव है ।

उक्त लघु उपन्यास में दो अंतरंग सहेलियों की कथा है, जो जीवन के हर क्षेत्र में पढ़ाई से लेकर विवाह तक प्रतिस्पर्धी रहीं, स्त्रियों की मानसिकता भी विजयी होने की होती है । अपने स्वभाव, चेतना, शक्ति से चाहे छल कपट से, या मित भाषी बनकर भी वह विजयी होना चाहती है । सदैव आगे रहनेवाली राज–महेरा विवाह के क्षेत्र में सुपर्णा के सामने हार जाती है । बाद में राज में यह स्पर्धा का भाव ईर्षा–विद्रोह बनकर सुपर्णा का जीवन बरबाद करता है, और सुपर्णा भी तीव्र प्रतिशोध की ज्वाला में जलकर नागिन–सा तीक्ष्ण डंक देकर बदला लेती है ।

(१) राज :

(१) ईर्षा–स्पर्धा, विद्रोहीभाव रखनेवाली राज

सुपर्णा का सुंदर पति देखकर राज का मन विद्रोह कर उठा । किसी भी प्रकार रोहित को हासिल करना, राज ने मन से निर्णय कर लिया था । सदैव प्रथम रहनेवाली राज को सुपर्णा कैसे हरा सकती है ? । राज महेरा चालाकी, होशियारी से मितभाषी बनकर, वह सुपर्णा के सास–ससुर की सेवा

करती है । बच्चों को चोकलेट, मिठाइयाँ देकर, रोहित को मनचाहे व्यंजन खिलाकर अपना बना लेती है ।

राज रोहित को फसाने अपनी घरेलू, व्यावहारिक, सेवाभाव की चेतना का उपयोग करती है ।

“चतुरा, व्यवहारपटु राज कभी खाली हाथ नहीं आती थी । रोहित की प्रत्येक दुर्बलता को वह जैसे डायरी में नोट करके घर ले जाती, उसके लिए डिब्बे में रोस्ट मुर्ग, प्रौन्ज, बच्चों के लिए दामी उपहार, मिठाइयाँ, माता–पिता के लिए बंगाली व्यंजन, बंगाली मछलियाँ, टेबल पर सजा जाती, बुजुर्ग माता–पिता का भी मानना था कि “तुम्हारी सखी कैसी लक्ष्मी है बहू, जैसा रूप वैसे ही गुण ।””[१०]

(२) स्पष्टभाषिणी

शिवानीजी ने राज को आधुनिक नारी बताया है । स्पष्ट भाषण भी राज के व्यक्तित्व का सबसे बड़ा आकर्षण था । पति की बदसूरती को लेकर अपना आक्रोश इस प्रकार निकालती है, “दोनों चुडेलें बाप पर पड़ी हैं, बेटा भी होता तो क्या पता बाप पर ही पड़ता, एक और उन्हें गेंडे को पृथ्वी पर लाकर करती भी क्या ?”[११]

सौंदर्य प्रतियोगिता में प्रथम आनेवाली राज अपने पति, पुत्रियों की बदसूरती से नाराज है । नफरत उदासी का भाव रखती है । इसलिए अपनी दोनों पुत्रियों को नाना–नानी के पास केनैडा में छोड़ देती है । आधुनिका राज का यह दुर्बल मातृपक्ष है ।

(३) सौंदर्यवान नारी

स्कूल से लेकर कॉलेज की सौंदर्य प्रतियोगिता में राज सदैव विजयी रही है । शादी के बाद दो बेटियों की माँ बनने के बाद भी राज सुंदर ही रही

है । अपनी सुंदरता के आधार स्तंभ पर ही रोहित को अपने जाल में फँसाती है ।

''राज के शरीर से आती मन मोहक सुंगध, साड़ी के अमरीकी ज्योंजट, अँगुली में चमकती विदेशी हीरों की प्लाटिनम अंगूठी, आँखों के नकली पश्म, हाथ में झूल रहा धूप का चश्मा प्रत्येक प्रसाधन में आधुनिक आभिजात्य की सुस्पष्ट छाप थी ।''[१२]

(४) होशियार, दंभी कामकाजी नारी

गैंडा उपन्यास अस्सी के दशक में लिखा गया है । अस्सी के दशक में स्त्रियाँ घर से बाहर निकल कर ऊँचे पदों पर नौकरियाँ करने लगी थीं । गैंडा की राज बिलकुल आधुनिका नारी है । राज घर में रहना नहीं चाहती, समय व्यतीत करने के लिए ही होटल में रिसेप्शनीस्ट की नौकरी करती है ।

''यह नौकरी मैंने वक्त काटने के लिए ले ली है 'सू' । वैसे वेद की फर्म की नौकरी में हमें सब सुख हैं । फ्री फर्निश्ड बंगला, शोफर ड्रिंवन कार, पर मेरा तो दिन काटे नहीं कटता था, इसीसे वक्त काटने के लिए यह नौकरी ले–ली यहाँ फाइव स्टार होटल है, उसी में रिसेप्टनिस्ट हूँ ।''[१३]

''होटल वाले ही मुझे सर आँखों पर रख लेंगे । वहाँ मेरी स्थिति अब इतनी मजबूत है, 'सू' कि अपना मूहमाँगा दाम माँग सकती हूँ । अंग्रेजी, हिन्दी, पंजाबी, बंगला, फ्रेंच, सुहाली, भाषा जानने वाली मुझ जैसी लिंगिवस्ट रिसेप्शनिस्ट कहाँ जुटेगी उन्हें ? राज की दम्भी मुस्कान से पूरा चेहरा दमक उठा ।''[१४]

प्रमिलाकपूर ने अपने अध्ययन में बताया है कि ''आर्थिक लाभ की वजह से स्त्रियाँ नौकरी नहीं करतीं, बल्कि इसके पीछे अन्य दूसरे सामाजिक, मनोवैज्ञानिक कारण भी हैं, जैसे अपनी प्रतिभा का सदुपयोग करना, अपने लिये उच्चदर्जा प्राप्त करना, आर्थिक रूप से स्वावलंबी होना, लोगों से मिलने–जुलने

की स्वतंत्रता प्राप्त करना, घर की चार दीवारी के ऊबने वाले वातावरण से राहत पाना, समाज के लाभार्थ काम करना, अपने विशेष व्यवसाय के प्रति मोह, अपना मनचाहा, पेशा अखित्यार करने की भावना की पूर्ति आदि ।''[१५]

(५) पति की उपेक्षा करनेवाली नारी

राज को अपने पति के प्रेम की कोई कीमत नहीं है वह उसे निर्वीय, दब्बू, गैंडा समझती है ।

''बदसूरत पति की पत्नी होने में जो सुख है वह तू कभी समझ ही नहीं सकती, कोई भी फरमाइश मुँह से निकलते ही पूरी !! हाथ की हथेली में पति ऐसे उठाकर चलता है, जैसे काँच की गुड़ियाँ हूँ ।''[१६]

पति वेद की नौकरी का तबादला अफ्रीका हो गया, और वेद की तबीयत भी ठीक नहीं तो भी इस प्रकार लापरवाह रहती है ।

''हमने वेद से कह दिया है, हम अपनी नौकरी नहीं छोड़ेंगे । अरे चिंता मत कर 'सू' ''मेरे गैंडे का चमड़ा भी निखालस गैंडे का है ।''[१७]

मगर राज के पति वेद का मानना था कि बड़ी मेहनत करनी पड़ती है बेचारी को, एकदम थककर चूर हो जाती है । रात को दो बजे लौटेगी तो मुझे जगा जगाकर आफत कर देगी, 'दूध पिया या नहीं, इन्सुलिन लिया था ? गरम वेस्ट पहनी है या नहीं ?

(६) लग्नेतर संबंध, अैय्याश नारी

पढ़ी-लिखी, स्वतंत्र, आधुनिक, स्वछंदी नारी का प्रतिनिधित्व राज ने किया है । अपनी इच्छानुसार मनचाहे व्यक्तियों से शारीरिक संबंध रखती है । राज, सुपर्णा के सुंदर पति को देख नहीं सकी । मन से उसे फँसाने की चाल करती है । वेद अकेला ही अफ्रिका चला गया । राज गिरगिट की तरह रंग बदलना जानती है । बच्चों के कमरे में उसके साथ रहने लगी, शांत-शिष्ट, सौम्य बन जाती है । मगर रंगे हाथों पकड़े बिना, सुपर्णा को बंगाली पडोशन

ने बताया कि अपने होटल के कमरे में ही एक रूम रोहित के लिए बुक करवा के रखा था ।

मिलटरी अस्पताल की डॉक्टर पदमा बर्वे के रीपोर्ट ने बताया था कि राज गर्भवती है । ''पिछले पाँच महीनों में न उसका पति अफ्रीका से उससे मिलने आया था, न वह उससे मिलने गई थी । रोहित से उसकी प्रगाढ़ मैत्री का रहस्य खुल गया था ।''[१८] फोन करके बताती है कि आज घर नहीं आऊँगी, तीन चार दिन के लिए बाहर जा रही हूँ । अपने अनचाहे गर्भ से मुक्ति पाकर घर आई थी ।

(७) असत्यवादिनी

रोहित से संबंध रखने के बाद राज असत्य भी बोलने लगी थी, ताकि सुपर्णा संदेह न करे । मगर अंत में सही बात सुपर्णा के सामने आ ही गई थी । एक दिन नवरत्न जड़े रिवर्सिबल मीना का जयपुरी सेट पहनकर राज ने सुपर्णा को दिखाया । कहा कि चौक के जोहरी की दुकान से लिया है । सुपर्णा ने मखमली केस से पता पाकर दुकान का पता लगाया तो वह रोहिताश्‍व दत्ता ने खरीदा था । इस प्रकार झूठ बोलकर सुपर्णा का संदेह मजबूत करती है ।

(८) फूड-पोइजिनींग से मृत्यु

सुपर्णा का गाड़ा हुआ तावीज राज लाँध जाती है । और होटल से फोन आया था कि फूड पोइनिंग से मृत्यु हुई है ।

समाज में राज-जैसी स्वछंदी स्त्रियों ने अगर अपनी मर्यादा तोड़ दी तो परिणाम बुरा आता है ।

(२) सुपर्णा :

सुपर्णा राज की सखी है । दोनों एक दूसरे की स्पर्धक रही थीं । मगर शादी के बाद वह अच्छी गृहिणी बनकर सुख पाती है । मगर पति रोहित और राज धोखा देते हैं तो बदला लेने की जागृति भी है उसमें ।

(१) शांत, सुखी–आतिथ्यभाववाली गृहिणी

मेजर जनरल रोहितश्व दत्ता की सुदीर्घ देह की छाया में राज के बौने कदर्य, गंजे पति को देख, सुपर्णा को एक पल को गहरा आत्मिक संतोष हुआ था, जिस प्रतिद्वंदिनी ने उसे शैशव से लेकर कैशोर्य की प्रत्येक प्रति द्वंद्वता में पछाड़ा था, वह आज उसके वैवाहिक जीवन में हार गई थी ।''[१९]

मगर सुपर्णा आतिथ्य भावना से राज और उसके पति को घर ले आती है । धीरे–धीरे राज और वेद उनके परिवार के अंग बन गये थे । वेद रोहित के लिए 'जीन' (ड्रींक) का इंतजाम भी करती है । मगर कभी वह अपने एकांत को तरसने लगती थी । क्योंकि राज ने उसके जीवन को अशांत कर दिया था । और इसी चिंता में वह अपने सुदर्शन बेटों के प्रति भी लापरवाह हो गई थी ।

(२) अदर्शी सौत को पहचाननेवाली

मेजर रोहिताश्व दत्ता राज के पति को इस प्रकार मानते है । ''ऐसा मेरुदंड हीन अतिथि क्या पहले कभी आया था ? मेरे यहाँ, सुपर्णा देख लेना, एक दिन तुम्हारी राज के इस गैंडे को पुरुष बनकर जीना सीखा दूँगा ।''[२०]

मगर वेद को पुरुष बनाने में मेजर रोहिताश्व दत्ता, स्वयं पशु बन जाते है । आधुनिक सुंदर स्त्री कठोर पुरुष को भी अपने जाल में फँसा लेती है । रोहित उसका उदाहरण है ।

सुपर्णा की सास राज को लक्ष्मी जैसी कहकर तारीफ करती है । मगर सुपर्णा ने इस लक्ष्मी के असली रूप को देख लिया था, ''सुपर्णा ने देख लिया था कि पति के नथुने केवल सुव्यंजनों की सुगंध पाकर ही ऐसे नहीं फडक रहे

हैं, उन्हें नारी देह गंध ने भी व्याकुल कर दिया है । संसार की मूर्खनारी भी अपनी अदर्शी सौत की देह गंध को नर भक्षिणी शेरनी की ही भाँति बड़ी दूर से सूंघ लेती है ।"[२१]

कहा जाता है कि स्त्रियों में पुरुषों की वृत्तियों को जानने की अतिन्द्रिय शक्ति जागृत होती है । सुपर्णा को आनेवाली विपत्ति का ज्ञान हो गया था यही उसके गृहिणी रूप की जागृति, चेतना, अनुभव है ।

(३) व्यवहारकुशल नारी

राज के पति वेद का तबादला हो गया, और राज साथ जाना नहीं चाहती, राज–रोहित का लगाव सुपर्णा जान गई है । इसलिए वह वेद को समझाती है कि राज को भी साथ ले जाओ और नारी की चितवृत्ति के बारे में बताती है ।

"वेद नारी कभी कायर का प्रेम स्वीकार नहीं करती । उसके जीवन में पति के लाड दुलार का जितना महत्त्व है, उसके पैर की ठोकर का भी उतना ही महत्त्व है । वेद केवल मीठा ही मीठा खाने में किसे आनंद आ सकता है ?"[२२]

(४) बुद्धिमान नारी

सुपर्णा कालेज का शिक्षण प्राप्त की हुई, सुखी संपन्न नारी है । अपने व्यक्तित्व की गरिमा, सौम्यता, गृहिणीपन का अनुभव दाम्पत्य जीवन के अनुभव के आधार पर अपने जीवन में आनेवाले तूफान का पता लगा देती है ।

"डॉक्टर बर्वे के रीपोर्ट ने राज को गर्भवती बताया तब से वह राज की हाल–चाल गतिविधियों के पीछे जागृत रही है । राज ने जब फोन करके बताया कि दिन चार दिन बाहर जा रही है । वापस आने पर सुपर्णा को लगा कि उसकी मतली, कै करना, चेहरे का पीलापन, अलस अंगडाईयाँ, न जाने किस शून्य में विलीन हो गई थी । पीठ से लगा पेट, उत्फुल चेहरा,

स्निग्ध दृष्टि कहीं भी संभवित मातृत्व का कोई चिन्ह नहीं था । जब वह चार पाँच दिन के लिए बाहर गई थी, तब ही अपने बोझिल शरीर को भार मुक्त कर आई थी ।''[२३]

''इतनी बड़ी प्रवंचना ! निर्लज्जा, बेहया, बेशर्म । जिसकी थाली में खाया उसी में छेद ! कौन नहीं जानता था कि पिछले पाँच महीनों में न उसका पति उसे मिलने आया था, न वह गई थी ।''[२४]

रोहित से राज की मैत्री है – इसका रहस्य दूसरे प्रमाण से मिल गया । राज ने नवरत्न जड़े रीवर्सिबल मीना का जयपुरी सेट पहनकर सुपर्णा को दिखाया था । कहा था चौक में से किसी जौहरी की दुकान से लिया है ।

सुपर्णा शिकारी कुत्ते जैसी उसके पीछे लगी रहती, राज के कमरे में से सेट का मखमली पता मिला वह दुकान अमीना बाद में थी, जौहरी ने बताया कि वह राज ने नहीं रोहिताश्व दत्ता ने खरीदा है ।

सुपर्णा की बँगाली सखी राज–रोहित को होटल के कमरे में से उसे रंगे हाथ पकड़ लेने की सीख देती थी । मगर सुपर्णा को घर बैठे ही पति के दिये हुए धोखे के दो–दो प्रमाण मिल जाते हैं ।

''ओफ ! इतना बड़ा विश्वास घात और इस निर्लज्ज सौत की ऐसी स्पर्धा !!! उसी के पति के उपहार के माध्यम से क्या वह उसे ही अंगूठा दिखाने आई थी ।''[२५]

(५) दुःखी पत्नी

सुपर्णा को अपने आप पर ही गुस्सा आता है, उसने ही राज–वेद को अतिथि बनने का निमंत्रण दिया था । अब क्या लाभ ? दुःखी सुपर्णा प्रतिपल अपने सौभाग्य को भस्मीभूत होते देख रही थी । ''छप्पन व्यंजनों का थाल सजाए वह जिसकी प्रतीक्षा में स्वयं भूखी बैठी रहती थी, वह किस किस की जूठी पत्तलों की जूठन खाकर ऐसी परम परितृप्ति में डूबा सो रहा था ।''[२६]

(६) प्रतिशोध लेनेवाली नारी

भारतीय नारी सबकुछ बाँट सकती है । मगर अपने पति का बँटवारा नहीं होने देती पति दूसरी स्त्री के पास जाता है तो वह मारने – मरने तैयार हो जाती है । दुःखी मन वाली सुपर्णा का दया, करुणा संयम का बाँध टूट गया । प्रतिशोध की तीव्र ज्वाला लपलपा उठी । मौलवी बाबा से अभिमंत्रित तावीज ले आई । दरवाजे के बाहर ही गाड़ दिया । राज का होटल से आने का समय था । राज ने उस लक्ष्मण रेखा को लांघ दिया । दोपहर के बाद होटल से फोन आया, डॉक्टरों ने उसे फूड पौइजनिंग की वजह से मृत्यु घोषित की ।

(७) प्रायश्चित करनेवाली नारी

सुपर्णा ने अभिमंत्रित तावीज से अपने दुःख का बदला ले लिया । मगर रोहित को सदैव संदेह रहा । ‘‘सुपर्णा तुमने कहीं इसे कुछ खिला तो नहीं दिया था ।’’[२७] वह बार–बार अपने पति से कहती है कि मैं निर्दोष हूँ । वैसे सुपर्णा राज की मृत्यु तो नहीं चाहती थी । पति के संदेह को मिटाने । सुपर्णा ने तय किया कि ‘‘पति के पाप का प्रायश्चित अब मुझे ही करना होगा, तब ही शायद मेरे अंदर में उठ रहा यह घृणा का चिंता दाह शांत होगा ।’’[२८]

भारतीय नारी प्रतिशोध लेने पर खुश नहीं होती, मगर जो प्रतिशोध उसे अनिवार्य रूप से लेना पड़ा है । उसका प्रायश्चित भी करना जानती है । किसी को सताना वह नहीं जानती, त्याग करना ही जानती है ।

(८) त्यागी नारी

होंगकोंग से तीन दिन बाद राज का पति–वेद आया । उसने ही कहा था ‘‘राज की सब चीजें गरीबों में बाँट देना ।’’[२९] सुपर्णा ने सब कुछ दे दिया था । ‘‘मगर वो सेट नहीं दिया था । रोहित के उस उपहार की अधिकारी अब वह थी ।’’[३०] वहीं नवरत्न हीरों का सेट लेकर वह मौलवी बाबा के घर

आई उसे यह कहकर देती है – कि "जब आप की बेटी की शादी हो मेरी और से उसे पहना देना ।"[३१]

इस प्रकार सुपर्णा ने अपने पति का उपहार पाकर भी अपनी नुमाइश के लिए नहीं रखा । मगर गरीब को ही दे दिया ।

श्री रामदरश मिश्र ने ठीक लिखा है "महिला लेखिकाओं द्वारा इधर जो उपन्यास लिखे गए हैं । उनका विशेष महत्त्व है । उन्होंने अपने अनुभवों के आधार पर आज की नारी की सामाजिक नियति और मानसिकता को बड़ी गहराई से उभारा है । न तो ये लेखिकाएँ पुरुष लेखकों की तरह नारी को महिमान्वित करती और न उन्हें नकली रूप में पीड़ित । अपनी समूची परिणतियों के साथ एक विशेष दायरे की, आज जो नारी है उसकी पहचान ये उभारती हैं ।"[३२]

समाज में आज भी राज रोहित जैसे संबंध होते हैं । घटनाएँ होती रही हैं । सुपर्णा जैसी स्त्रियाँ अपनी गंभीरता शक्ति अनुभव से व्यवहार करती हैं । दुःखी होने के बाद भी अपने घर में रहती हैं ।

२. 'माणिक' लघु उपन्यास के नारी पात्र :

(१) नलिनी :

यह मनोवैज्ञानिक लघु उपन्यास है । नलिनी, रंभा, दिना बाटलीवाला तीन पात्र हैं । तीनों के स्वभाव, प्रकृति, चेतना जागृति अलग–अलग है । हमारे समाज से जुड़ी हुई कथा है । परिवार या छोटे भाई–बहनों की जिम्मेदारी उठाने के लिए बड़ी बहन अपनी जिंदगी की खुशियाँ त्याग दे या दबा दे । मगर छोटी बहन की शादी हो जाती है तो वह अकेलापन नहीं सहन कर पाती और कोई न कोई सहारा ढूँढ लेती है ।

(१) जिम्मेदारी उठानेवाली नारी

नलिनी के पिता जब तक जीवित थे । धन कमाने में ही ध्यान दिया । नलिनी की शादी के बारे में सोचा ही नहीं । दोनों बहनें पढ़ रही है – साथ में शादी करेंगे । इस प्रकार लापरवाह रहे । मगर पिताजी के मृत्यु के बाद नलिनी बेटे जैसा कर्तव्य अदा करती है । घर का पूरा कार्यभार यहाँ तक की छोटी बहन रंभा के माता–पिता बन जाती है । स्वयं नौकरी करके रंभा का प्रत्येक शौक पूरा करती है ।

(२) अच्छी आर्किटेकट

नलिनी स्कूल में प्रिन्सीपाल के पद पर है । साथ–साथ एक अच्छी आर्किटेकट भी है । जो आजकल की पढ़ी लिखी आधुनिक नारी का गुण है । जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में वह पूरे प्लानिंग आयोजन के साथ चलती है । ‘‘अपने अवकाश के दिनों के पहले ही उसने आवास ‘वाटिका’ का अद्‌भुत नकशा कितनी रातें जाग–जागकर बनाया था कि लोग आश्चर्य चकित रह गये । अंधविश्वासों में वह विश्वास नहीं रखती, बिना गृहपूजन के ही नये गृह ‘वाटिका’ में प्रवेश कर लेती है ।’’[३३]

डॉ. जयश्री भट्ट ने ठीक ही कहा है – ‘‘नारी को शिक्षित करने से पूरा परिवार शिक्षित होता है, इसी तरह किसी समाज में नारी की स्थिति को ज्ञात करने के लिए नारी की शिक्षा की स्थिति को देखकर उसे ज्ञात किया जा सकता है । शिक्षा के समान अवसर, नारियों की सम्मान जनक स्थिति दर्शाता है ।’’[३४]

(३) संयमी दीर्घदृष्टिवाली व्यवहारपटु नारी

नलिनी अपनी बहन रंभा के प्रत्येक शौक पूरा करना चाहती है । संगीत की शिक्षा दिलवाना चाहती है । मगर नादान रंभा अपने संगीत मास्टर के साथ भाग जाती है । तो मानो कुछ नहीं हुआ जैसे उसे होस्टेल से वापस ला रही

है उसी प्रकार घर ले आती है । आज भी आम परिवार में मानो ऐसी घटना होती तो हंगामा मच जाता है – खुद परिवार वाले भी बात को गुप्त नहीं रख सकते । मगर यहाँ शिवानीजी के शब्दों में ''किसी को कानों तक खबर नहीं हुई । ''बड़े संयम से काम लेती है, और परिस्थितियों की गंभीरता जानकर एक अच्छे लड़के से शादी करवा देती है ।''[३५]

(४) सामाजिक रिवाज – रूढ़ियों में विश्वास

नलिनी अपने जीवन की स्थिति को जान गई है । और सबसे बड़ा त्याग कर देती है । नलिनी ने रंभा की जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए अपना निजी जीवन बिलकुल शुष्क सादगीपूर्ण बना दिया था । जैसे – ''कभी किसी ने रंगीन चट्‌ख साड़ी पहने नहीं देखा ।''[३६]

वह सदैव रंभा की खुशी के लिए सोचती है । इसलिए सब गहने रंभा के नाम कर देती है ।

''एक–एक गहना रंभा को पहनाकर बिदा करेगी, जिससे सोने से लदी, सोने की उस प्रतिमा को उसका दूल्हा जीवनभर पूजता रहे ।''[३७]

(५) कठोर अनुशासिका

नलिनी कॉलेज में प्रिन्सीपाल है । वह कठोर अनुशासन के पक्ष में है । उसके कठोर अनुशासन के कारण कॉलेज का एक–एक सदस्य सहमा सहमा रहता था । लड़कियाँ छिछोरे कपड़े पहनकर नहीं आ सकती थीं । ऐसा करने पर कठोर सजा देती । ''पदोन्नति के बाद वह जिस जिल्ले में जाती वहाँ एक ही सप्ताह में उसके तबादले के लिए मनौतियाँ मनाई जातीं । शासन करने का गुण उसमें मौजूद हैं ।''[३८]

(६) मातृत्व के गुणों से युक्त

स्वभाव से उदार नलिनी में मातृत्व भाव कूट–कूट कर भरा है । वह माता–पिता विहीन रंभा की माँ बन जाती है । मगर बाद में ''रंभा के बेटे बिन्नू को भी अपना ही मानती है । बिन्नू के दामी पब्लिक स्कूल का पूरा खर्चा नलिनी ही उठाती थी । यही नहीं उसके स्कूल के लेजर, दर्जनो गर्म पैंट, कंबल, उसके स्कूल के विदेशी पादरियों के लिए मौसमी फल के पेक भेजने का पूरा कर्तव्य भार जिस औदार्य से नलिनी ने आजतक निभाया था वह शायद कोई माँ भी नहीं निभा सकती थी ।''[३९]

रंभा जब भी घर आती नलिनी टेबल पर मनचाहे व्यंजन खाने के लिए रख देती थी ।

(७) कुंठाग्रस्त एकाकिनी नारी

रंभा के चले जाने के बाद जिंदगी के अकेलेपन से नलिनी उब गई थी । पढ़ी लिखी नलिनी अपनी दबाई गई प्रकृति दत्त इच्छाओं के सामने हार जाती है । भावुक मानसिकता वाली एकाकिनी नलिनी उदार बनकर अपरिचित दीना को घर में आने देती है ।

''अपरिचित पारसी युवती को बिना उसका अतीत टटोले, कैसे अपने साथ रहने का निमंत्रण दे दिया, इसकी कैफियत यदि वह स्वयं भी अपने हृदय से माँगती तो नहीं पा सकती थी ।''[४०]

पहले दीना को दीवानखाने में प्रवेश दिया, थोड़े ही दिनों में अपने शयन खंड तक ले गई । कभी उसका सिर गोदी में रखती, कभी गले में बाँहे डाल देती ।

अंत में वही दीना उसकी हत्या करके चली जाती है ।

(२) दीना बाटलीवाला :

दीना का पात्र इस उपन्यास में एक ठग पात्र है । इसके अनुसार उसने भूमिका अदा की । मानो शिवानीजी ने आधुनिक समय में आने वाले धारावाहिकों की खलनायिकाओं का चित्रण किया है । वह सुंदर तो होती है, मगर भूमिका नकारात्मक, धूर्त, ढोंगी, ठग और चोर की निभाती है । संस्कार, स्वभाव – प्रकृति का सुंदरता के साथ कोई संबंध नहीं है । व्यक्ति के मन में चल रहे भावों को, दुष्ट विचारों को सुंदर शरीर से नहीं जाना जा सकता । सुंदर दीना के मन में बैठे शत्रुचोर को पढ़ी लिखी नलिनी नहीं जान पाई ।

(१) मोहक व्यक्तित्ववाली

‘‘दीना बाटलीवाला मोहक व्यक्तित्व की स्वामिनी है । अपने जाल में नलीनी को फँसा देती है । उसकी लच्छेदार अंग्रेजी, उसकी कला मर्मज्ञता, उसका गहन अध्यन, सबकुछ ने मिलकर उसे लाखों में एक बना दिया था ।’’[४१]

(२) सौंदर्यवान

रंभा भी दीना को देखकर लघुता अनुभव करती है ‘‘कितनी सुंदर थी कमबख्त, सुंदर चेहरा, वह संगमरमर से तराशी गई देह–सी कोमलता, सौकुमार्य और भी उसके कपड़े पहनने का सर्वथा अनूठा लटका, किसी के भी निरामिष भोजी सात्विकी पति को आमिष भोजी बनाने मं समर्थ था ।’’[४२]

(३) धूर्त, ढोंगी, दिखावेवाली नारी

दीना बाटलीवाला ने एक कुशल मनोवैज्ञानिक की भाँति, अपने दिखावे, ढोंग, प्यार, झूठी सहानुभूति से एकांकिनी नलिनी के मन और अकेलेपन को जीत लिया था ।

"दीना ने केवल उसके दीवानखाने की सज्जा को ही नहीं बदला था, समय से पूर्व ही बूढ़ी हो रही, स्वामिनी के शरीर पर लगे उदासीनता के, मकड़ी के से जालों को भी एक ही झटके से झाड बुहार कर दूर फैंक दिया था ।"[४३]

और नलिनी को भी विश्वास हो गया था कि "जीवन की म्लान गोधूलि में ही क्या विधाता ने उसे नलिनी के कलातृषित चित की तृषा बुझाने इस अरण्य में भेजा था ?"[४४]

नलिनी को दीना पर इतना भरोसा था कि अपने जीते जी बैंक में रहे रूपये दीना के नाम कर देती है । वैसे भी जीवन के उत्तरार्ध में प्रतिष्ठा, पैसा सबको छोड़कर, अकेलापन मिटाने की, सहानुभूति की सहकार सलामती की भावना ज्यादातर बलवत्तर होती है ।

नलिनी ने रंभा को भी दीना का परिचय अपनी छोटी वहन कहकर दिया । धूर्त दीना को पता चल गया कि अपनी चाल में वह कामयाब होती जा रही है । तो रंभा और नलिनी को जरा भी अकेला नहीं छोड़ती, स्टेशन तक रंभा को छोड़ने वह नलिनी के साथ साथ रही ।

(४) क्रूर, चोर, ठग, पैशेवर हत्यारिन

नलिनी को दीना पर विश्वास था पर दीना के मन में चोर था, वह सदैव मौके की तलाश में रहती है । उदार भोली प्रौढ़ा नलिनी के प्रति उसे जरा भी दया नहीं । वह मौका मिलते ही नलिनी और नौकरानी लक्ष्मी की हत्या कर देती है ।

"डॉक्टर का कहना था कि गला घोंटकर नलिनी की हत्या की गई है । लक्ष्मी को भी आघात से दिल का दौरा पड़ा था । मृत्यु हुई ।"[४५]

दीना बाटलीवाला का कहीं पता नहीं था । ''नलिनी के कला कोष का बहुमूल्य झाड़ फानूस, इधर–उधर से बटोरी गई अलभ्य देवमूर्तियाँ भी गायब थीं । पूरा बैंक बैलेन्स अंगूठी का माणिक भी गायब था ।''[४६]

''ढूँढ़ने पर पता लगा कि मद्रास की पुलिस उसे सात सालों से ढूँढ़ रही है । सात साल पहले वह पति का भारी बीमा हथियाकर त्रिपुर में पति की हत्याकर गायब हो गई थी ।''[४७]

(३) रंभा :

(१) तेज तर्रार आजाद खयालोंवाली

रंभा नलिनी की छोटी बहन है । लाड़ प्यार में पली है । अपनी आज़ादी के कारण कौशोर्य में संगीत मास्टर के साथ भाग गई थी ।

(२) सुखी, संतुष्ट गृहस्थी

आजाद स्वछंदी रंभा शादी के बाद अपनी गृहस्थी में सुखी संतुष्ट है । कैसे ? यह तो नलिनी की समझ में भी नहीं आता । नलिनी ने कभी रवीन्द्रनाथ टैगोर की एक कहानी में पढ़ा था, नारी को आम तौर पर तीन वस्तुएँ विशेष रूप से प्रिय होती हैं ।

''कच्ची अमिया, तीखी तैज मिर्ज और कठोर पति शायद यही कारण था कि रंभा अपनी गृहस्थी में इतनी सुखी संतुष्ट थी ।''[४८] शिवानीजी ने रंभा के माध्यम से उन आधुनिक, आजाद लड़कियों का चित्रण किया है जो युवावस्था में चंचल हिरनी की तरह अपने युवा मित्रों के साथ भागती हैं । मगर शादी के बाद पति की ही होकर स्थिर हो जाती हैं ।

(३) स्पष्टवक्ता

नलिनी ने जब दीना बाटलीवाला के घर में छोटी बहन का स्थान दे दिया था । तब अपनी बड़ी बहन के प्यार का बँटवारा उसे अच्छा नहीं लगता, वह नलिनी को कहती है ।

"तुमने बुढ़ौती में एक नई बहन को गोद लिया है । लगता है सगी बहन से उब गई हो ।"[४९]

(४) जागृत नारी

रंभा बम्बई में पली–बड़ी हुई है । नलिनी से छोटी होने के बाद भी अनजान व्यक्तियों को लेकर जागृत है ।

"जीजी तुम मुझ से बहुत बड़ी हो, उपदेश देना उचित नहीं लगता, पर तुम्हारी अफसरी ने तुम्हें शायद जीवन की वह अभिज्ञता नहीं दी । जो तुम से छोटी होने पर भी बड़े शहरों के प्रवास ने मुझे दी है ।

मैं भी बम्बई में दस साल गुजार चुकी हूँ । जीजी । बम्बई संतों की तीर्थभूमि नहीं है, इतना ही याद रखना ।"[५०]

रंभा के कथनों में बड़े शहरों की वास्तविकता और बड़े शहरों में बसने वाले लोगों की मानसिकता का परिचय मिलता है और अकेली रहनेवाली स्त्रियों के लिए उपदेश है ।

(५) मानसिक अंतर्द्वन्द्व से पीड़ित

जब रंभा नलिनी से मिलने आती है । तब सोचती रही है कि छोटी बहन का स्थान पानेवाली स्त्री कौन–कैसी होगी ?

"कम से कम उस दस्यु कन्या को तो अपनी आँखों से देख लेगी, जिसने दो सगी बहनों को अपनी मैत्री की आरी से चीरकर दूर पटक दिया था ।"[५१]

रंभा ने जब देखा दीदी का सिर दीना की गोदी में है, दीदी की बाँहे दीना के गले में है । अपनी दीदी का यह परिवर्तित रूप और दीना के व्यक्तित्व को संदेह की नजरों से देखती है ।

“कहीं यह नारी का छलना मय रूपधारी कोई प्रवंचक युवक तो नहीं था ? जीजी ने अविवाहित रह कर प्रकृति को जो चुनौती दी थी, उसी का प्रतिशोध ले रही थी क्या प्रकृति ।”[५२]

अपने मन, शरीर के प्राकृतिक भावों को, इच्छाओं को इन्सान जितना दबा दे, बाद में प्रकृति–विकृति बनकर उसे ही ड़सती है । अविवाहित नलिनी के माध्यम से ऐसी नारियों को ये समझना चाहिए की विवाह एक बायोलोजिकल नेसेसीटी है । और ये तथ्य नैसर्गिक रूप से स्त्री–पुरुष दोनों को लागू होता है ।

रंभा के घर चली आने के आठ महीने बाद तार आया था “फौरन चली आओ, कलरात नलिनी और लक्ष्मी की हत्या कर दी गई है ।”[५३]

अब तक ऐसा ख्याल था कि डकैती, लूट, चोरी, हत्या अक्सर लुटेरे पुरुष ही करते हैं । और दीखने में डरावने होते हैं । मगर सुंदर चेहरे, शरीरवाली दीना का मन कितना असुंदर था ? आजतक न्यूझ पेपर में ऐसी ठगिनी स्त्रियों के वृत्तांत आते ही हैं ।

इस उपन्यास के पात्रों के माध्यम से कुंठा संदेह कामविकृति, अकेला पन, ढोंग, भावुकता आदि मानसिक भावों के सामने, इन नारी पात्रों ने सामान्य मानवीय व्यवहार किया है ।

३. ‘किशनुली’ लघु उपन्यास के नारी पात्र :

इस उपन्यास में अवैद्य संतान और बलात्कार की समस्या है । जिसका निर्माण समाज में पूजनीय पंडित (शास्त्री) ब्राह्मण ने किया है । पंडितजी की पत्नी काखी (पंडिताइन) और किशनुली के द्वारा अपने आप को आभिजात्य समझनेवाले ब्राह्मण कुल की धज्जियाँ उड़ाई गई हैं । समाज जिसे सिरमौर, गुरु सम्मानीय ब्रह्मदेवता समझता है, उसी ब्राह्मण ने पगली किशनुली का शारीरिक

शोषण किया है । अवैद्य संतान समाज को दी है । और पश्चाताप से जीवन से पलायन किया है । पगली किशनुली का वह गुनहगार है ।

हमारे समाज में ऐसी झूठी संकीर्ण मान्यता है कि धार्मिक पंडितो को धर्मगुरुओं को, साधुओं को स्त्रियों से दूर रहना चाहिए । मगर दूर रहने से उन लोगों की शारीरिक इच्छाएँ मर नहीं जातीं । मौका मिलते ही वह अपनी मानवता, धार्मिकता छोड़कर अपने आवेगों को संतुष्ट कर लेते हैं । इन्हीं समस्याओं के सामने उपन्यास में आनेवाले नारी चरित्रों ने अपनी जागृति दिखाई है ।

(१) काखी :

(१) आदर्श गृहिणी

शास्त्रीजी परमानंद पांडे की पत्नी काखी में भारतीय नारी के संस्कार भरे हैं । उसके व्यक्तित्व में प्रेम, विश्वास, सहानुभूति, त्याग, मानवता, मातृत्व आदि सद्गुण मौजूद हैं ।

''काखी ऐसे पहाड़ी स्वादिष्ट व्यंजन बनाती इससे स्वादिष्ट और कोई व्यंजन हो ही नहीं सकता । काखी की कोई पुत्री होती तो अपरूप सुंदरी होती । पूरे शहर में काखी अपने उदार स्नेही स्वभाव के लिए प्रख्यात थी । ''मित भाषण, हसमुख काखी का सबसे बड़ा गुण था । नये – नये आभूषणों की शौकीन थी ।''

दूसरे के घर आये अतिथियों को भी अपना मेहमान मानती थी । और खाना वहाँ क्यों खाएँगे ही, दो जनों की रोटी बनाने में क्या तेरी काखी के हाथ छिल जाएँगे ।''[५४]

गृहिणी का कार्यभार अच्छी तरह से निभाना भी नारी शक्ति चेतना का उदाहरण है । ''भारतीय नारी जीवन के गौरव का सीमांकन करते हुए प्रो. राधाकृष्णन् यह लिखते हैं कि प्रत्येक पीढ़ी में भारत में ऐसी करोड़ों स्त्रियाँ

होती रही हैं, जिन्हें यद्यपि कोई यश नहीं मिला, फिर भी जिनके दैनिक अस्तित्व ने जाति को सभ्य बनाने में सहायता की है, जिनके हृदय की शक्ति आत्मसर्मपण, आडंबर हीन निष्ठा और जब कि उन्हें कठिनतम परीक्षाओं में से गुजरना पड़ा तब भी कष्ट सहने में सशक्त, हमारी इस प्राचीन नारी जाति के गौरव की वस्तुओं में से एक है ।''[५५]

(२) स्त्री रक्षा की हिमायती

काखी गाँव में आई पगली किशनुली को गाँव के मनचलों से बचाने के लिए गालियाँ भी देती हैं ।

''अरे हरामी के जनो, क्या तुम्हारे घर में माँ बहने नहीं हैं ? अगर कल तुम्हारी जवान बहनें ऐसे पगलाकर नंगी उघाड़ी सड़कों पर भागने लगीं तो नामर्दो ! क्या तुम ऐसे ही सीटियाँ बजाओगे ? ये पंत–पांडे जोशियों का महोल्ला है, जिनके घरों में शंख–घंट बजते हैं सीटियाँ नहीं ।''[५६]

जिस काखी को अपने पंत–पांडे के मुहल्ले पर गुमान था – उसमें रहने वाला उसका पति किशनुली का सर्वनाश कर देता है यह उसे पता ही नहीं । प्राकृतिक आवेगों पर पंत पांडे, ब्राह्मण या सामान्य व्यक्ति कोई भी काबू नहीं रख सकता, मनुष्य के मन की कोई परख नहीं होती ।

(३) समाज की रूढ़ियों का सामना करनेवाली

काखी में नारीत्व का भाव कूट कूट कर भरा है । किशनुली की स्थिति के प्रति समवेदना, सहानुभूति है । न्याय के लिए समाज बिरादरी का विद्रोह करके पूरी शक्ति से लड़ने के तैयार हो जाती है ।

मगर काखी के पति परमानंद शास्त्री किशनुली का तिरस्कार करते रहते थे । ''जा भाग, बदजात, हडिहडि यह साली हरामजादी शहर भर के छोकरे छोकरियों को मारने–महामारी सी यहाँ आई है । आज ही पुलिस में खबर कर थाने में बंद न करवाया तो मेरा नाम परमानंद पांडे नहीं ।''[५७]

स्त्री के शरीर की पागल अवस्था के पीछे, समाज उसे ही जिम्मेदार मानता है । पंडित शास्त्री जैसे लोग भी उसकी अवहेलना करते हैं । कक्का उसे दूर ही भगा देते हैं । मगर ''जब पगली वापस आई तो उसके छरहरे शरीर का आकार परिवर्तित हो गया था । पगली की वापसी और लज्जास्पद अवस्था का समाचार पूरे शहर में हवा के झोंके-सा फैल गया था । गाँववालों ने विरोध किया - अगर अब पन्याणी ज्यू ने (पंडिताइन ने) उस बेहया को अपने यहाँ आश्रय दिया तो, शास्त्रीजी को अपनी यजमानी से हाथ धोना होगा ।''[५८]

''भाड़ में जाए तुम्हारे यजमान और तुम्हारा समाज क्या अपनी इस अवस्था के लिए अकेली किसना ही अपराधिनी है ? जिन हरामजादों कमीनों ने इस नाबालिग, असहाया, उन्मादग्रस्त छोकरी का सर्वनाश किया है, उसे ढूँढ़कर पकड़ लाए, तुम्हारा समाज तब मैं जानूँ । दोष किसी का और दंड कोई और भोगे, यह कहाँ का न्याय है जी ? किशनुली कहीं नहीं जाएगी, मैं पालूंगी उसकी संतान को भले ही तुम्हारी बिरादरी हमारा हुक्का पानी बंद कर दे ।''[५६]

काखी पढ़ी-लिखी उच्च शिक्षा प्राप्त नारी नहीं है वह आदर्श गृहिणी है । मगर अपनी नैतिकता के बल पर एक निराधार निःसहाय युवती को सहाय करती है - उसे किसी के बहुमत की जरूरत नहीं है - छोटे-छोटे गाँवों में आज भी ऐसी दृढ़, जुझार, व्यक्तित्व संपन्न नारियाँ मिलती हैं । यही है सही नारी चेतना ।

इस काखी की चेतना का दंड शास्त्री ने भुगता ।

''जिस शास्त्री को देखते ही समृद्ध गृहों के यजमान भी विनम्रता से दोहरे हो जाते हैं और 'गुरु चरणन तल' कह नतमस्तक खड़े रहते थे, वे ही उन्हें देखते ही बड़ी अवज्ञा से मुँह फेरने लगे ।

समाज की अवहेलना मनुष्य को शीघ्रता से श्री हीन बना देती है, उतना श्रीहीन शायद असाध्य विषम रोग का प्रचंड प्रकोप भी नहीं बनाता ।''[६०]

(४) मातृत्वभाव वाली काखी

मातृत्व की संभावना प्रत्येक स्त्री में होती है मगर मातृत्व का भाव वैश्विक है । अपनी संतान होने पर दूसरे की संतान को मातृहृदया स्त्री स्वीकार कर लेती है । ''जैसे बिल्ली को बोरे में बाँध, कोई दयालु हितचिंतक उसे किसी हलवाई की दुकान के आगे छोड़ आता है, ऐसे ही उसे शायद जानबूझकर ही कोई निःसंतान उदार काखी के द्वार पर छोड़ गया था ।''[६१]

और काखी भी बहुत खुश है । ''खुद ही जब आकर मेरे आंगन में पसर गई है तो साफ जाहिर है कि भगवान ने ही इसे यहाँ भेज दिया है । आज तक जिसने संतान सुख नहीं दिया, उसने आज स्वयं ही मेरी रीति गोद भर दी ।''[६२]

''मोहल्लों वालों से बचाकर पगली को नहला धुला साड़ी पहनाकर, माँग पट्टी की थी, नया नाम धरा था किसना, जो लाड़ से किशनुली हो गया । काखी की आँखों में वात्सल्य की तरंगें उठ गिर रही थी ।''[६३]

कक्का के धमकाने से पगली जब चली जाती है तो ''किसना किशनुली लौट आये इसलिए काखी ने भैरवनाथ का उचैंणा (मनौती) माना था ।''[६४]

''पगली आई काखी को इजा (माँ) कहकर पुकारा तो, काखी ने उसे जोर से छाती से चिपटा लिया, अरी मारु तेरे दुश्मनों को चल जल्दी तेरे कपड़े बदल हूँ । चोट लगी थी पगली को और रो रही थी काखी ।''[६५]

काखी ने किशनुली का अवैद्य बेटा भी अपना माना था । जी जान से उसकी परवरिश करने लगती है । स्वयं पगली से भी बचा बचाकर रखती है । नाम दिया था कर्ण । कर्ण को लेकर उसका दिल सदैव ममता, शुभ–आशिषों से भरा है ।

''उसके पैर में काँटा न गडे, कलकटरी का इम्तहान पास कर लिया है । उसका खुब बड़ा बंगला, नौकरी, अर्दली, सबकुछ है । हर हफते चिठ्ठी लिखता है । इजा तू यहाँ चली आ कब आऊँ लेने ?''[६६]

(५) पति के प्रति अपार श्रद्धा

काखी को अपने पति के प्रति अपार श्रद्धा है । भारतीय गृहिणी की दृष्टि में उसका पति ही परमेश्वर है । शास्त्रीजी पगली से नाराज रहते हैं । यह अवश्य जानती है मगर यह नहीं जानती कि पगली के अवैद्य बच्चे के जनक उसके पति ही हैं । शास्त्रीजी को कर्ण के प्रति प्यार है वह इन शब्दों में व्यक्त करती है । ''यह डलिया में सो रहा था । पानेज्यू इसे डलिया से उठा गाल से लगाए आँखे बंद लिए चुपचाप दुलार रहे थे । और जानती है । टप-टप बड़े-बड़े आँसू गिरा रहे थे । नाम भी उसने रखा था कर्ण ।''[६७]

''पांडे जी देवमूर्ति से पवित्र, औरत-जात से भड़कते थे, उस पर वह ना समझ छोकरी हाथ धोकर उनके पीछे पड़ी रहती थी । मैंने समझाया तुम्हें बाप समझकर ही लाड़ दूलार करती है । पंडितजी ने तन्न से मेरे गाल पर एक झापड घर दिया । मुझे मारने का गहरा पश्चाताप ही उसे गूंगा बना गया । न मुझ से कुछ कहा, न करन से चुपचाप वैसे ही सर झुकाए निकल गए और कभी नहीं लौटे ।''[६८]

करन जब काखी को अपने पास बुलाता है - तो गृहस्वामिनी इसलिए नहीं जाती कि - ''कैसे छोड़ दूँ ? पुरखों की देहरी ! लगता है, उस कमरे में पानेज्यू संध्या कर रहे हैं, अभी कहेंगे चाय लाओ पन्याणीज्यू । इतनी दूर चली गई तो कहाँ ढूँढ़ेगी उसकी आत्मा, मुझे उस परदेश में ?''[६९]

श्रद्धावान काखी अंत तक नहीं जान सकी कौन से पश्चाताप में शास्त्रीजी ने घर छोड़ दिया ।

(६) पति का मान प्राप्त करनेवाली

धार्मिक, पवित्र कक्काने पगली किशनुली को माँ बना दिया था । मगर मन से भीरु थे । डर गये थे । किशनुली, किसी को कुछ कह न दे । और

पत्नी के सामने अपना अपराध कबुल नहीं कर पाते । मानसिक अंर्तद्वंद्व से पीड़ित थे । ''किशनुली ने एक दिन बड़े अधिकार से तेरी काखी के सामने ही मुझे पकड़कर कहा, आज से मैं अलग कमरे में नहीं सोऊँगी, मुझे सहमकर लगता है । सुलाओगे ना अपने पास ? उसी भयावह प्रस्ताव से सहमकर मैंने उसी दिन गृह त्याग दिया ।''[७०]

काशी हिमालय जाने पर भी आत्मग्लानि नहीं मिटती । फलस्वरूप लेखिका को पत्र में सबकुछ लिखते हैं ।

''किशनुली के ढाँट का जनक ये तेरा अधम कक्का ही है । अपनी काखी से कहना, विधाता के दंड का मुझे अब भय नहीं है । वह तो इसी लोक में मिल गया । पुत्र के रहते आज–तर्पण पिंड की अतृप्त लालसा लिये जा रहा हूँ । यही क्या किसी ब्राह्मण के लिए कुछ कम दंड है ? किंतु उस सती लक्ष्मी ने यदि मुझे हृदय से क्षमा दान नहीं किया तो, कभी मेरी प्रेत मुक्ति नहीं होगी । उसका क्षमादान ही मेरी चितादाह शमनार्थ तिलांजलि बनेगा ।''[७१]

इसी प्रकार दूसरों को धर्म का उपदेश देनेवाले धार्मिक क्रिया कर्म करने वाला ब्राह्मण अंत में आत्म ग्लानि के भाव से पीड़ित है । धर्म के नाम पर गलत कार्य करने वाले अनेक अपराधी यहाँ आज भी मौजूद होंगे ।

(२) किशनुली

(१) उन्मादिनी और सुंदर

किशनुली उन्मादिनी है । सही गलत की उसे समझ नहीं है । काखी जब उसे नहाधुला कर नया कुर्ता पहनाती है तो तडातड उसके बटन तोड़ देती है । कपड़े फाड़ देती है । शास्त्रीजी जब उसे दुत्कारते हैं, भगाते हैं तो उसका अधबुना स्वेटर खोलकर जला देती है । और कक्का ने जब उसका शोषण किया तो कुछ कहे बिना दूर चली जाती है । गाँव के मनचले छोकरे

उसे परेशान करते रहते हैं । दूर चली जाने पर कक्का अपराध भाव महसूस करते हैं । पढ़ाते–पढ़ाते अन्य मनस्क हो दूर–दूर फैली पर्वत श्रेणियों को शून्य दृष्टि से देखते रहते थे ।

पगली किशनुली इतनी सुंदर है कि परमानंद पांडे (शास्त्रीजी) स्वीकार करते हैं कि ''दोष केवल मुझ दारात्मा का नहीं था । उत्कट उन्माद के क्षणों में भी अभागिनी किशनुली मेनका–सी ही साक्षात् रति रूप में आकर मुझे विवेक भ्रष्ट कर गई थी ।''[७२]

श्री मन्मथनाथ गुप्तजी लिखते हैं कि – ''सुंदर स्त्री और प्राकृतिक आवेगों के सामने धर्म का बंधन ज्यादा देर तक टिक नहीं सकता । ''यौन संबंधों पर धार्मिक रोकों के कारण दृश्यमान रूप में उसकी मर्यादा घटने पर भी हमारे अवचेतन में उसका प्रभाव इतना प्रबल हुआ है कि ऐसे लोग दुनिया में मौजूद हैं, जो गंभीर रूप से यह समझते हैं कि यौन संबंध ही हमारे सारे कार्यों का उत्सस्थल है ।''[७३]

(२) शास्त्रीजी के प्रति लगाव

पगली किशनुली को शास्त्रीजी भ्रष्ट करके भगा देते हैं । मगर उसके दिमाग के अजागृत स्तर पर यह जागृति अवश्य है कि इसकी इस स्थिति के जिम्मेदार शास्त्रीजी हैं । इसलिए मातृत्व के संकेत मिलते ही काखी के पास रक्षा के लिये आ जाती है । शास्त्रीजी को ही अपना मानती है । उसके पास ही रहना–सोना चाहती है । बिलकुल शांत हो जाती है ।

शास्त्रीजी के घर छोड़ने पर किशनुली साँझ होते ही द्वार पर खड़ी हो जाती, कलेजा दहल जाय ऐसा विलाप करने लगती । परिणाम स्वरूप बुखार हुआ, टी.बी. हुआ । मृत्यु हुई ।

किशनुली के मरने पर काखी करती है "एक वह थी कि बाप के पीछे बिछोह (विरह) में घुल–घुल कर प्राण त्याग दिए । उनके जाने की खबर सुनकर भी मैं अब तक नहीं जा पाई ।"[७४]

सुनकर स्वयं लेखिका लिखती है – "कुछ नहीं कह पाई, किस साहस से भस्म कर दू इस पतिव्रता के पति की वसीयत ।"[७५]

इस प्रकार इस लघु उपन्यास के दो पात्र काखी किशनुली श्रद्धावान, नारी पात्र है । पगली माता किशनुली अपने बेटे के जनक के पीछे घूट घूट कर मरती है, उसे कोई नहीं जान पाया ।

इस उपन्यास में जूठे धार्मिक ढोंग पाखंड, समाज और अवैद्य संतान की समस्या चित्रित हुई । ऐसे धार्मिक देवतातुल्य व्यक्ति अकेली, असहाय उन्मादिनी स्त्रियों को भ्रष्ट कर के अपराध–से मुक्त होना चाहते हैं । पगली चली जाती है तब कक्का स्वयं कहते हैं – "चलो अच्छा हुआ फोडा स्वयं फूट गया । मुझे चीरा नहीं लगाना पड़ा ।"[७६]

शास्त्रीजी जब काखी उसे घर पर रखने के लिए कहती है तब कहते हैं – "पगला गई है क्या ? एक तो बद्ध उन्मादिनी, उस पर न जात का पता न कुल गोत्र का ठिकाना ।"[७७]

कक्का को पगली का शारीरिक शोषण करते हुए कुल गोत्र जाति नहीं याद आई थी । कितने ढोंगी है हमारे धार्मिक पंत, पांडे, शास्त्रीजी । लगता है हमारे समाज में रहे सब साधु पंडित पुजारी ऐसी ही मानसिकता रखते हैं ।

शिवानीजी ने अवैद्य संतान को लेकर हकारात्मक सुझाव दिये हैं ऐसे बच्चे लावारिस बनकर समाज में ठोकरे खाते हुए फिरते हैं, उसका जीवन दयनीय हो जाता है । मगर काखी ने किशनुली के बेटे को गोद ले लिया तो अफसर बन सका । फिर भी समाज वालों ने विरोध किया ।

"कितना क्रूर है हमारा समाज इसी अभागे नवजात शिशु का गला घोंट, यदि कपड़े में लपेट, किसी घूरे में फैंक दिया जाता तो शायद समाज को

आपत्ति न होती । किन्तु किसी दयालु सहृदया संतानहीना गृहिणी ने उसे अपनी रीति गोद में समेट लिया तो समाज ने बंदूक तान ली ।"[७८] इस प्रकार सामाजिक समस्या का चित्रण किया है ।

डॉ. विमला भास्कर ने लिखा है – "उपन्यास के जिस रूप ने हिन्दी गद्य साहित्य को सबसे अधिक शक्ति संपन्न बनाया है वे ऐसे समस्या मूलक उपन्यास है । जिनका जन्म भी समाज के बीच में हुआ है, और पालन तथा पोषण भी उसी की क्रोड में हुआ है ।"[७९]

४. 'कृष्णवेणी' लघु उपन्यास के नारी पात्र :

(१) कृष्णवेणी

पूरे लघु उपन्यास में आदि से अंत तक नायिका को लेकर ही कथा लिखी गई है । कृष्णवेणी एक संपूर्ण पात्र है । स्त्रियों के कई रूप होते हैं, अद्भुत, अलौकिक, गृहिणी रूप, ललना, वीरांगना, छिन्नमस्ता आदि ।

नायिका कृष्णवेणी के व्यक्तित्व को समझने के लिए शिवानीजी के शब्द ही देखें –

"संसार में दो ही प्रकार के व्यक्ति तुम्हें मिलेंगे । एक वे जिनसे मिलते जुलते बीसियों चेहरे तुम्हें जीवन भर मिलते रहेंगे । जिन्हें विधाता एक ही ठप्पे से थोक की बिक्री के लिए गढ़ता है । दूसरे वे जिन्हें गढ़ते ही वह उनका ठप्पा तोड़कर फेंक देता है । कृष्णवेणी उसी भाग्यशाली मौलिक ठप्पे की देन थी ।"[८०]

(१) श्यामसुंदरी नारी

एकदम काली सुचिककन देहकांति, कटि से झूल रही मोटी चोटी । कृष्णवेणी नास्तिक बुद्धिवान नारी है । और अपनी सुंदरता के बारे में कृष्णवेणी भी जानती है । यह आत्मविश्वास भी नारी चेतना की ही देन है ।

(२) दिव्य दृष्टि प्राप्त नारी

''कृष्णवेणी को व्यक्तियों का भविष्य देखने की दिव्य शक्ति प्राप्त थी मगर दिव्य दृष्टि का वरदान ही तो उसके जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप था ।''[८१]

मानसिक दैवी शक्ति नायिका के लिए एक घुटन बन गई है । ''जब वह आठ वर्ष की थी तब नींद से जागकर उसने बताया कि ऐपेंडिक्स की वजह से मंजले मामा की मौत हुई थी । और ये घटना जैसा कहा था वैसी सही निकली ।''[८२]

(३) लाड़ली बेटी

कृष्णवेणी समृद्ध पिता की इकलौती बेटी थी । उसके पिताजी आई.एस. ऑफिसर थे । उसका अपना निजी अस्तबल था । नौकरों की फौज उसके आगे पीछे घूमती है । वह सुबह एक गाड़ी में स्कूल जाती तो शाम को दूसरी गाड़ी में वापस लौटती । दिव्यदृष्टि वाली बात जब सही निकली तो उसके डेडी ने स्पष्ट मना कर दिया था कि यह बात किसी को न बताई जाए ताकि उसकी बेटी तमाशा न बन जाए ।

''कुछ वर्षों के बाद उसके डेडी ने खेल –खेल में पूछा कौन सा घोड़ा रेस में लगाया जाय ? कृष्णवेणी ने कहा 'ब्लेकप्रिंस' । और दुर्बल ब्लेकप्रिंस ही जीता । बाद में पुत्री के मन की शक्ति ने उन्हें वैभव से ऐसा लादा कि, ऊँची नौकरी छोड–घोड़ों की रेस के पीछे भागते रहे ।''[८३]

(४) रूढ़ि–परंपराओं का विरोध करनेवाली

दक्ष होशियार वेणी रूढ़ि परंपराओं का विरोध करती है । ''दक्षिण की परंपरा के मुताबिक बचपन में उसका रिश्ता उसके छोटे मामा से तय हुआ था । तब वह स्पष्ट कहती है यह कैसे हो सकता है ? मैं नहीं करूँगी ऐसा विवाह, वह स्पष्ट मना कर देती है । यह नारी चेतना है । माँ ने उसे विदेश

स्थित छोटे मामा का भविष्य देखने को कहा, शायद वेणी का मन मामा की संपत्ति देखकर मान जाय, वेणी ने देखा ''लूंगी सिर पर लपेटी है, बढ़ी हुई दाढ़ी और लोहे के सलाखों के पीछे हैं । नीचला बदन नंगा, उनके जैसे कई वहाँ पर थे, कोई हँस रहा था, कोई गा रहा था ।

और सचमुच ही दूसरे वर्ष छोटे मामा को रस्सियों से बाँधकर घर में रखना असंभव हो गया । तब राँची के पागल खाने में भर्ती करवा दिया ।''[८४]

(५) आदर्श प्रेमिका

नारी के दिल में प्रेम की भावना होना – सहज स्वाभाविक है । वेणी भी सच्ची प्रेमिका है । ''वेणी अपने साथ पढ़नेवाला केरल का छात्र, कलाकार, चित्रकार, बंसीवादक भास्करन से प्रेम करती है । एक न एक बहाना करके वह उसे मिलने लगी ।''[८५]

''कृष्णवेणी ने अपने वीतरागी, गरीब प्रेमी को उपहारों से लाद दिया मगर उसका हुलिया नहीं बदल सकी ।''[८६]

(६) स्पष्टवक्ता

वेणी सच्ची प्रेमिका है । वह भास्करन से शादी करना चाहती है । मगर वेणी के पिता नहीं चाहते क्योंकि भास्करन गरीब है और उसके पिताजी को गलित कुष्ठ हुआ था । अपने प्रेम के लिए वह क्रोधी – स्पष्टभाषिणी बन जाती है । अपने डेडी को भी स्पष्ट रूप से कह देती है ।

''आप नहीं चाहते कि मेरी शादी हो, वह व्यक्ति चाहे भास्करन हो या और कोई, सोने के अंडे देनेवाली बतख हूँ आपकी, भला आप मुझे इस घर से कैसे जाने देंगे ।''[८७]

स्पष्टवक्ता होने के बाद दृढ़ निर्णय शक्तिवाली है । वह दृढ़ता से कहती है कि ''कुष्ठ तो उसके पिताजी को है, यदि उसे भी होता तब भी मैं उसे नहीं छोड़ती । मैं विवाह उसीसे करूँगी ।''[८८]

(७) जागृत और स्वच्छता प्रिय नारी

आधुनिक नारी वेणी जागृत और स्वच्छता प्रिय भी है । वेणी को पता चला कि भास्करन के पिता को पोजीटिव लेप्रसी गलित कुष्ठ है – ''तब कृष्णवेणी स्वयं उबला हुआ पानी पीती है । बाहर की आइसक्रीम नहीं खाती । फलों को पोटाश के पानी में धोकर खाती है, बस में कोई आम आदमियों के साथ नहीं बैठती, रेजगारी को हमेशा डेटोल में धोकर पर्स में डालती है ।''[८६]

डॉ. शीलप्रभा वर्मा मनोवैज्ञानिक उपन्यासों के बारे में लिखती हैं कि ''मनोवैज्ञानिक उपन्यासों का मुख्य तत्त्व पात्रों का मनोविश्लेषण है । उपन्यास के अन्य तत्त्व इसी केन्द्रीय तत्त्व से संचालित होते हैं । उपन्यास की कथा पात्र अथवा पात्रों की मानसिक गतिविधियों का उद्घाटन करती है । अंतर धारणाओं में एक–सूत्रता खोजती है । और स्फुट घटनाओं के साथ पात्र अथवा पात्रों के मानस की संगति बैठती है । पात्रों की मनोभूमि का व्यक्तीकरण मनोवैज्ञानिक उपन्यास का उद्देश्य होता है ।''[९०]

(८) परिस्थितियों से लड़नेवाली

कृष्णवेणी परिस्थितियों से हार माननेवाली नारी नहीं है । भास्करन उसे कुछ बताये बिना चला जाता है तो कई चिट्ठियाँ लिखती है । डेडी को लेकर भास्करन के पिता करुणाकरन को मिलने जाती है । जिसे कोर्पोरेशन वाले ले गये थे । भास्करन की माँ गुरु वायुर के मंदिर मैं बैठ गई थी । फिर भी वह हार नहीं मानती, दूसरी बार अपनी माँ को लेकर गुरुद्वारे के मंदिर में भास्करन की माँ को ढूँढने पहुँची, उसने भी भास्करन के बारे में नहीं बताया । तो अंत में विदेश जाने के लिए तैयर होती है । वहाँ पीएच.डी. करना चाहती है । वेणी अपने प्रेमी भास्करन का अलगाव नहीं सहन कर सकती ।

''प्रेम कुदरत की अमूल्य देन है । प्रेम के सहारे ही मनुष्य जिंदगी के महत्त्वपूर्ण क्षण गुजारता है । प्रेम सृष्टि की चिरंतन आदि शक्ति है । साधारणतः प्रेम से जो अर्थ हम लेते हैं वह है स्त्री और पुरुष का पारस्परिक प्रेम, जो रूपाकर्षण के माध्यम से उत्पन्न होता है । तथा जिसके मूल में वासनाजन्य शारीरिक भूख विद्यमान रहती है, प्रेम मानव मन की वह स्वाभाविक स्वच्छंद वृत्ति है, जो प्राकृत तथा सामाजिक बंधनों का स्वीकार करना नहीं चाहती ।''[६१]

(६) वफादार नारी

माँ के कहने पर वेणी भास्करन का भविष्य देखती है । ''देखा, चारों और ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों से घिरी नीची घाटी में, टीन के कई बैरक है । सामने हैं एक गिरजाघर, ऊँचे-ऊँचे देवदार के पेड़ों से सायं-सायं हवा चल रही है । यह है अल्मोड़ा का कुष्ठाश्रम (कुष्ठाश्रम) एक अंधेरी बैरक में भास्करन बैठा है । पास पड़ी बंशी नहीं उठा सकता, नहीं बजा सकता । क्योंकि उसके दोनों हाथों की अँगुलियाँ सड़कर, दो अधूरी मुठियाँ मात्र रह गई हैं । होठ विहीन उसका चेहरा बिभत्स बन गया है पलकहीन अंगारे-सी आँखें दप-दप जल रही है ।''[६२]

प्रेमिका वेणी भास्करन की ये दशा सहन नहीं कर पाती, अपने प्रेमी की स्थिति के बारे में लिखना नहीं चाहती । मृत्यु तक माता-पिता की दृष्टि में अपने प्रेमी को सामान्य दरिद्र दिखाना नहीं चाहती । कृष्णवेणी की चेतना में स्वाभिमानी नारी का वफादार रूप नज़र आता है । अपनी माँ को भास्करन के बारे में लिखना छोड़ अपने जीवन के बारे में लिखती है ।

''मैंने देखा है माँ, मैं तेजी से कार चलाती जा रही हूं । तुम्हारी ही दी हुई पीली धर्मवरम् की साड़ी पहनी है । तुम्हारा ही दिया माणिक पोखराज का कंगन मेरे हाथों में है । सहसा तीखी घाटी के तीखे मोड़ पर चकराकर

मेरी कार सरसराती नीचे चली जाती है । सैंकडों मीटर की गहराई में चली जाती है – फिर अंधेरा ही अंधेरा...

यही है मेरा भविष्य माँ ।"[६३]

डॉ. विमला शर्मा लिखती हैं कि "नारी जब प्रेम करती है तो अपना सर्वस्व न्यौछावर करने में ही अपने प्रेम की पूर्णता मानती है ।"[६४]

सब का भविष्य जाननेवाली नारी अपने बारे में कुछ स्पष्ट नहीं बता सकती । किडनी रच्चर से उसकी मृत्यु हुई थी । और मृत्यु के बाद अंधेरा ही होता है । वेणी ने लेखिका को मृत्यु के बाद मुलाकात देकर यह कथा कही थी । उसकी मौत की खबर तो लेखिका उसके घर जाती है तब चलती है । यह भी मन की गुढ शक्ति है । मगर वेणीने अपनी शक्ति का प्रयोग सदैव ही सकारात्मक किया था ।

५. विषकन्या लघु उपन्यास के नारी पात्र :

इस उपन्यास में दो जुड़वा बहनों की कहानी है । माता–पिता की उपेक्षा भरी, भेदभाव भरी परवरीश से कामिनी में ईर्षा, कुंठा, प्रतिशोध, विद्रोह के भाव पनपते हैं । और कामिनी अपनी ही बहन दामिनी का जीवन बरबाद करती है । विषकन्या उपनाम अपनी माँ से ही कामिनी को मिला है । वैसे कई माता–पिता को इस उपन्यास से सीख भी मिलेगी कि अपने बच्चों के प्रति भेदभाव, उपेक्षा न रखें ।

(१) कामिनी :

(१) चंचल शरारती

कामिनी, दमिनी दोनों जुड़वाँ बहनें थीं । दोनों में इतना साम्य था कि माँ भी कभी–कभी पहचान ने में धोखा खा जाती । और इस बात का नायिका फायदा उठाती है । "चोरी छिपे इधर–उधर भागने, बिना पूछे पिक्चर

देखने,या अपने सहपाठी छोकरे मित्रों के उदार निमंत्रण स्वीकारने में बड़े छल–बल से डूबकी लेती रहती ।''[६५]

(२) कुशल ॲरहोस्टेस

कामिनी सुंदर भी है और ऍरहोस्टेस की अच्छी नौकरी करती है । अपने मनोद्वंद्व की कथा लेखिका को बताते हुए कहती है । ''मैं किसी आत्मश्लाघा की भावना से प्रेरित होकर नहीं कह रही हूँ । विभाग की एक असाधारण परिचारिका के रूप में ही मेरा अधिकारी वर्ग मुजे जानता है, क्योंकि अनुभवी चालक भी संतुलन खो बैठता था, तब अपनी साहसी सूझबूझ का विलक्षण परिचय दिया है मैंने ।''[६७] अपने व्यवसाय में साहसी कामिनी को घर से ही प्यार नहीं मिलता । जिसका उसके मन पर बुरा प्रभाव पड़ा है । अनजाने में ही माता–पिता ही उसके मन में उपेक्षा भेदभाव ईर्षा का जहर भरते हैं ।

(३) उपेक्षा, कुंठा, ईर्षा से पीड़ित

''दीदी क लिए मम्मी डैडी दोनों के हृदय में एक नरम–नरम गुद–गुदा कक्ष, सदा सजा–सँवरा रहता है यह मैं खूब जानती थी ।

कौन कहता है कि माँ–बाप के लिए अपने सब बच्चे पाँचों अँगुलियों की ही भाँति समान हैं ? फिर आप ही बताइए किस मनुष्य की पाँचों अँगुलियाँ एक–सी होती हैं ।''[६८]

दीदी (दामिनी) दोनों की आँखों की पुतली, और मैं थी उनकी आँखों की किरकिरी, दीदी आज्ञाकारिणी, नम्र, शिष्ट और में विद्रोहिणी अभद्र अशिष्ट नास्तिक थी । दोनों के स्वभाव की विशेषता से ही दोनों को अलग पहचाना जाता था । इसी प्रकार शैशवावस्था में ही माता–पिता ने कामिनी के हृदय में ईर्षा का, भेदभाव का अंकुर बो दिया था ।

(४) मायावी शक्तिवाली

कामिनी के व्यक्तित्व में एक और बात जुड़ी थी, माँ, दीदी कहती ‘‘बेबी तेरी जबान बड़ी काली है । तू जिसे अच्छा कहती है – उसी को ले डूबती है’’ – ‘‘कल तूने मेरी शिफौन की साड़ी की प्रशंसा की, इस्त्री में जल गई । तुमने बूआ के सौंदर्य की प्रशंसा की तीसरे दिन प्रेशर कुकर के ढ़कने से जलकर बुआ का चेहरा बीभत्स बन गया ।

भगवान के लिए है विषकन्या तू किसी को मत डसना । नायिका कहती है कि इस घातक शस्त्र का विष तब प्रभावशाली हो सकता है, जब मेरे अंतर से निकला, प्रशंसा का स्वाभाविक उच्छ्वास ‘वाह’ बनकर मेरे होठों पर फिसले ।’’[११०]

‘‘इंडियन एरलाईन्स के कितने अतिथियों को मैंने डंसा, इसकी गणना भी आज मेरे लिए संभव नहीं है, किंतु अपनी इस अद्भुत मायाविनी दैवी शक्ति का आभास पाते ही मैंने स्वेच्छा से डंसा था पायलट डिसूजा को । हडके कुत्ते सा विषैली भार टपकाता सदैव मुझे काट खाने को दौड़ता इसी को डँसकर मैंने पाप नहीं किया ।’’[१०१]

प्लेन क्रश होने पर लाशों के ढ़ेरों के बीच डिसूजा जिंदा था । जो कामिनी को प्रणय निवेदन करता है । कामिनी ने अपने आपको बचाने जान–बूझकर घातक विष का प्रयोग किया था ।

‘‘तुम सुंदरलग रहे हो ज्होन’’[७२] डिसूजा की मौत झीलके पानी से नहीं कामिनी के डंक से हो गई ।

(५) प्रेम में निराशा–उपेक्षा

लम्बी छुट्टियाँ लेकर कामिनी घर आई तो किसी को आश्चर्य नहीं लगता – दीदी के विवाह की तैयारियाँ चल रही हैं । ‘‘तीन महीने पहले हवाई यात्रा के दौरान उस लुभावने, सलोने चेहरे की स्मृति आज भी उसके दिल से कोई

नहीं मिटा पाया । जिसकी दुधियाँ हँसीने उसके अविवेकी चित को बाँधा था, वह आज घर आया और मम्मी–डैडी ने दामिनी के लिए पसंद कर लिया । दीदी भी प्रसन्न चित उससे बातें करती थी ।''[१०३]

कामिनी को अपनी माँ–बाप की दोहरी हिदायतें याद आती हैं । ''सब कुछ दीदी को ही मिलेगा क्या ? मम्मी डैडी का दुलार, नानी का लाड़, प्रणयी का प्रेम और पति का साहचर्य ।''[१०४]

एक ही – से दो चेहरे हैं तो क्यों पहले देखे जाने पर भी एक को मान्यता नहीं मिली, और दूसरे को घर बैठे ही स्वर्ग की निधि स्वयं मिल गई क्यों ? आखिर क्यों ?

कामिनी की माँ सब चीजों से कामिनी को दूर रखना चाहती है, उसे डर है कि कहीं उसे भी ड़स ना ले ।

शादी के बाद तीसरे दिन वह चुपचाप निकल गई थी ।

घर से ही उसे अपमान अवहेलना मिलती है ।

(६) प्रतिशोध–विद्रोह

नारी अपने प्रथम प्यार, अपनी चाहत को नहीं भूल सकती । कामिनी भी उससे मुक्त नहीं है ।

''हृदय की सारी कुढ़न हृदय में दबाकर मैंने दीदी की बारात देखी, फेरे देखें । मुझे न जाने किस शैतान ने प्रेरणा दी और मैं फिर स्वदेश लौट आई । क्यों न सीधे दीदी की ससुराल जाकर उनसे मिल लिया जाए ?

उससे एकांत में पूछू ''जिसे अनजान में हृदय निवेदन किया था, क्या उसी को प्रणय निवेदन भी कर सके थे मूर्ख ?''[१०५]

दामिनी मैके गई थी । नौकर उसे ही मालकिन समझकर साहब को खबर करने गया ।

(७) प्रेमिका रूप

नौकर उसे दामिनी समझा था, स्वयं उसके साहब ने भी उसे दामिनी ही समझा था ।

"और स्वयं साहब अपनी शर्बती आँखों में स्वागत का जो मदमाता जाम भरकर मेरे सम्मुख खड़ा हो गया, उसे पीते ही मैं लड़खड़ा गई ।"[१०६]

कामिनी उससे बचना चाहती है मगर "उसी सोपान के मायावी अस्तित्व की ओर मेरी अंतरात्मा ने बार–बार मेरा ध्यान आकर्षित किया, किंतु फिर भी में किसी सुपर सोनिक जेट की तीव्र गति में बंधी, निसीम गगन की रिक्तता में किसी विहंगम नन्हे, अस्तित्व का–सा–छोटा बिंदु बनती बनी अदृश्य हो गई ।"[१०७]

"वह मुझे प्रेम के रस सागर में डूबकियाँ दिलाता यथार्थ के धरातल से किसी जन शून्य एकांत में खींच के ले गया, जहाँ किसी शून्य महल–से टप–टप टपकती अमृत बूंदों से नहाकर मैं निकली तो वह कगार बड़ी दूर छूट चुकी थी । जहाँ इतने वर्षों से मैं किसी ठूंठ वृक्ष–सी खड़ी थी ।"[१०८]

"तब मैं क्या जानती थी कि पुरुष संयमी संस्कारी होने पर भी रात्रि की नीरव निःस्तब्धता में कभी सुंदरी सहचरी का साहचर्य पाते ही बन उठता है वार–वनिता सा दुष्ट मुखर एवं निर्लज्ज ।"[१०९]

आज की स्थिति में प्रेम और ईर्षा जैसी भावनाओं से रिक्त व्यक्ति और समाज की कल्पना करना बहुत कठिन ही नहीं, करीब करीब असंभव भी है । ये मनोवैज्ञानिक सत्य कामिनी के मन में है ।

(८) आत्ममंथन करनेवाली

कामिनी ने सदैव रोहित के घर से चले जाना चाहा । वह सोचती है कि जो हो गया सो हो गया । वह दीदी को थोड़ा छुपाकर बताएगी । मगर इतने में दामिनी अपने घर में आ गई और सारी बातें जानकर रोना–धोना

शुरू कर देती है । और कामिनी के समझाने के बाद भी वह फिर से मैके चल जाती है । डॉ. साधना अग्रवाल लिखती हैं कि – ''पत्नी, प्रेयसी के रूप में नारी पुरुष के संबंधों को नई अर्थवत्ता मिली है । किन्तु नारी के मौलिक संस्कार उसे आज भी त्याग, सहनशीलता तथा धर्म की अनुगामिनी मानते हैं ।''[११०]

भारतीय सभ्यता – संस्कृति संस्कार से बिलकुल अलग व्यवहार कामिनी ने किया है । वहाँ से तकलीफें शुरू हो जाती हैं ।

साधना अग्रवाल ने लिखा है –

''नारी पुरुष की सहधर्मिणी पारंपारिक अर्थों में न बनकर युगीन संदर्भानुरूप बनने को उत्सुक है । फलतः वह प्रेम काम और विवाहों को किन्हीं गत मानदंडों में बाँधकर रखना नहीं चाहती । इस मनोवृत्ति से उसने एक ओर तो प्रेम और विवाह तथा यौन संबंधों की परंपरागत सीमा रेखा का उल्लंघन करने का साहस किया, वहीं उसके और पुरुष साथी के संबंधों में अनेक कटुताओं और विषमताओं को भी सहज ही जन्म दिया ।''[१११]

(६) संदेह का शिकार

दामिनी कितना ही समझाने के बावजूद घर छोड़कर चली गई । कामिनी को रोजमर्रा के कार्यों में अपनी सही पहचान को छिपाना पड़ता था । और कहीं न कहीं गलती हो जाती थी । रोहित को उस पर संदेह हो जाता है । वह प्रमाण चाहता है । वह उसे झील पर तैरने ले जाता है । कामिनी जानती थी कि दीदी को तैरना नहीं आता । वह मना करती है, मगर रोहित ने उसे ये कहकर फँसा दिया था कि तीन महीने पहले तो मैंने तुम्हें सिखाया है । कामिनी पानी में उतरी तब ही रोहित के संदेह को प्रमाण मिल गया । वहाँ कामिनी रोहित पर मोहित हो जाती है, प्रशंसा करती है कि –

"तुम कितने सुंदर हो रोहित !!" मगर रोहित कहता है "तुमने मुझे छला, तुम वह नहीं हो । रोहित जब किनारे पहुँचा तो झाडियों में से कोबरा निकलकर रोहित को डंस लेता है ।

"तभी उसके नीले पड़ रहे चेहरे को देखते ही मेरे मन का चोर जाग गया । इसे कोबरा ने नहीं तूने ड़सा है विष कन्या कोबरा तो निमित मात्र था ।"[११२]

साधना अग्रवाल लिखती हैं कि –

"नारी पुरुष के दाम्पत्य सूत्रों में पड़ी गाँठ तथा विवाह जैसी प्राचीन सामाजिक संस्था का बहिष्कार, आज की नारी की युग चेतना के परिणाम कहे जा सकते हैं । मगर पति–पत्नी के संबंधों की आधारशिला तो पारस्परिक विश्वास है । पति–पत्नी के बीच एक मानसिक समझौते की भावना होती है । उसके खत्म हो जाने से ही विवाहित जीवन में दरार पड़ जाती है ।"[११३]

(१०) आत्मग्लानि

बेहोश रोहित मृत्यु के अंतिम क्षणों में दामिनी को पहचान जाता है । मम्मी–डैडी सब को कामिनी के करतूतों का पता चलता है । दामिनी रोहित की छाती पर सिर टिकाकर रो रही थी । कामिनी भी आत्मग्लानि, पश्चाताप महसूस करती है । वह भी रोना चाहती थी । रोहित को कहना चाहती थी । "रोहित दोष मेरा नहीं था, मुझे माफ कर दो रोहित मैंने भी तुम्हें प्यार किया था । पर मेरी चिंता ही किसे थी ? मुझे लगा, जैसे मैं रामायण की मंथरा हूँ ।"[११४]

और वह घर से निकल जाती है दामिनी को रोहित जैसा सुंदर बेटा हुआ मगर वह घर जाना नहीं चाहती क्योंकि बेटे को देखते ही मुँह से 'वाह' निकल गया तो ? "धरा थी मेरी जन्म की बैरिन और उदार आकाश था मेरे विपत्ति काल का मित्र ।"[११५]

नारी अपने जीवन की प्रणय कथा को नहीं भूलती । इस कथा को लेकर वह बार–बार तड़पती है । और कामिनी लेखिका को खाने पर बुलाकर अपने मन की बातें कहती है । यह निवेदन भी बड़ी हिम्मत होती है तब होता है । यह भी नारी चेतना है । कामिनी के मन का खुलापन, मुक्तता है ।

प्रेम जैसे नैर्सगिक भाव जितना पुरुष अनुभव करते हैं उतना ही स्त्री अनुभव करती है । कामिनी का चरित्र हमें तभी ही समज में आयेगा कि जब नारी को जिंदा इन्सान माना जाय । मर्यादा, संसार के नियमों के बाद भी व्यक्ति अपने आवेगों पर ज्यादा काबू नहीं कर सकता । प्रकृति पुरुष दोनों ही इन आवेगों से बंधे हैं । खींचे हुए हैं ।

(२) दामिनी :

दामिनी कामिनी की बड़ी जुड़वाँ बहन है । वह शांत, शिष्ट, सौम्य, आज्ञाकारिणी है । और इसलिए माता–पिता के दिल में उसका स्थान है । रोहित से उसकी शादी हुई । मगर जब कामिनी की शरारत का उसे पता चला तो वह फिर से अपने मायके चली जाती है । वह भारतीय संस्कार रूढ़ि –रिवाज, मर्यादा को मानने वाली परंपरागत ख्यालोंवाली नारी है । अपनी बहन कामिनी से बड़ी नाराज है । रोहित की मृत्यु होने पर विधवा होती है । और सबको सही बात का पता चलता है । वह एक सुंदर बेटे की माँ भी है । अपने मम्मी–डेडी के साथ रहती है ।

६. ‘मायापुरी’ उपन्यास के नारी पात्र :

आर्थिक असमानता की वजह से माया की नगरी में नायिका अपने प्रेम को नहीं प्राप्त कर सकी । पूरी जिंदगी, संघर्षों में व्यतीत करती है – मगर कहीं पर किसी के साथ धोखा नहीं करती । अपनी नैतिकता नहीं खोती । आर्थिक समस्या का चित्रण करनेवाला उपन्यास ।

(१) शोभा :

(१) शिक्षा – पढ़ाई में होशियार

शोभा ने जब अठारह वर्ष में ही बी.ए. कर लिया तो उसके पिताजी बोल उठे, ''एक दिन पूरे कुल का नाम रोशन करेगी'' । मगर पिताजी की मृत्यु के बाद नायिका शोभा खेतों में भी काम करती है । मगर मन में सदैव संघर्ष चलता है कि एम.ए. की पढ़ाई नहीं होती । जब एम.ए. में प्रवेश मिला तो इतिहास उपनिषद संस्कृत पढ़ती है । राजनीति की चर्चा भी करती है ।

(२) आशावादी – व्यवहारपटु नारी

शोभा और उसकी माँ दुर्गा दोनों में व्यावहारिक समझ है । विपरीत परिस्थितियों में भी वह आशा नहीं खोती । दुर्गा की सखी गोदावरी का पत्र जब मिला की शोभा लखनऊ उसके घर रहकर पढ़ाई पूर्ण कर सकती है । तो दोनों ये स्वीकार कर लेती है । शोभा सोचती है कि मौसी के घर रहकर मौसी के घर का काम, करेगी, पढ़ेगी और नौकरी भी पा जाएगी क्योंकि मौसी के समधी बड़े नेता है । दिनरात–सेवा करके मौसी के उपकारों का मूल्य चुका देगी ।

(३) सुंदरता

शोभा में नैसर्गिक सुंदरता कूट–कूट कर भरी है । जब वह गोदावरी मौसी के घर पहुँचती है तो मौसी भी उसे देखकर सोच में पड़ गई ''इतना सौंदर्य क्या इस घर में समा पाएगा ?''[११६]

प्रत्येक स्त्री अपनी भावि पुत्रवधू सुंदर ही चाहती है । गोदावरी भी सुंदर शोभा की तुलना भावि पुत्रवधू सविता से करने लगी । ''मंत्री तिवारीजी की कन्या सविता पहले इतनी बेडोल नहीं थी, दुबली पतली गोरी सी लड़की हठात् आवश्यकता से अधिक मोटी हो गई है ।''[११७]

सतीश की बहन मंजरी भी ''शोभा की सुंदरता देखकर उसका नाम रखती है ।

''Marble Princess''[११८]

सतीश के मित्र अविनाश ने शोभा की सुंदरता देख उपमा दी थी ''कितना सुंदर कोम्पलिमेंटेशन है, सतीश ।......

बिल्कुल मिल्क एंड हनी !!!!''[११९] यहाँ तक की सविता के पिता मंत्री तिवारी जी भी शोभा की सुंदरता देख अपनी बेटी के भविष्य के लिए चिंतित हो जाते हैं ।

(४) मिलनसार सेवाभावी

शोभा के चरित्र में त्याग का गुण है । जैसे ही वह गोदावरी मौसी के घर जाती है तो उसके परिवार के साथ घुल–मिल जाती है । घर का काम भी संभाल लेती है । परिवार के प्रत्येक सदस्य को अपना ही मानती है । सभी की भावना जीत कर वह परिवार का हिस्सा बन गई । सतीश के पिता जी का प्यार भी उसे मिलता है । मंजरी, अविनाश का प्रेम, सहानुभूति भी शोभा को मिलती है ।

(५) हीनता – लघुता की ग्रंथि से पीड़ित

आर्थिक असमानता इस उपन्यास की प्रमुख समस्या है । और आर्थिक असमानता की वजह से ही शोभा हिनता–लघुता से पीड़ित है । यह मानसिक विकार है । व्यक्ति अपने जीवन में किसी चीज की कमी, या स्वयं में कुछ कमी, अपनी आर्थिक स्थिति, व्यक्तित्व से व्यक्ति जब संतुष्ट नहीं होता तब हीनता का शिकार होता है ।

''शोभा मौसी के घर पर पहुँचकर अपने चप्पल साड़ी को लेकर हीनता अनुभव करती है, गाँव की गँवार, शहरी लड़कियों जैसी चुलबुली नहीं हो पाती । सविता के सामने भी लज्जा अनुभव करती है । जैसे के सविता बड़ी

है, मैं इस गृह की आश्रिता । निराशा, कुंठा, अभाव, असंतोष की भावना से शोभा पीड़ित है । सतीश जब विदेश से आता है तो सब के साथ वह उसके सामने जाने की हिंमत नहीं करती ।

सतीश भी स्वार्थी है वह भी शोभा को गँवार दरिद्र ही समझता था ।

(६) त्रस्तहिम्मत – प्रेमिका

शोभा में सब सद्गुण है । मगर हिंमत नहीं है परिणाम स्वरूप अपने प्रेम का इजहार नहीं कर सकती । अपने पिता के साथ आई, मोटी भदी सविता को देखकर सतीश की दृष्टि सविता से हटकर शोभा पर पड़ती है, सौम्य, शांत, सुंदर शोभा । मगर अविनाश कायर सतीश को सीख देता है "एक अबोध अनाथ सरला को क्यों व्यर्थ में स्वर्ग का द्वार दिखाते हो, जब उसके लिए प्रवेश सर्वथा निषिद्ध है ।"[१२०]

सतीश शोभा को कहता है "शोभा मैं आज एक बात स्पष्टरूप से कहने आया हूँ । मैं तिवारीजी से संबंध तोड़ने का संकल्प कर चुका हूँ । पिता जी के सम्मुख तुम्हें रखकर कहूँगा मैं तुमसे प्यार करता हूँ ।"

सतीश अपने मन की व्यथा सिर्फ माँ कोही कह पाया – "माँ यदि मैं यह विवाह न करूँ तो ?"[१२१]

माँ बोली "पिता के सामने स्वप्न में भी ऐसे शब्द मत निकालना, जिन की कृपा से हमारा दस हजार का कर्जा धीरे–धीरे चुक गया, उनसे ऐसे विश्वास घात का ध्यान भी कैसे आया तुझे ? मैं इसी पलंग पर प्राण त्याग दूँगी । हम गर्गगोत्री ब्राह्मण है, हमारे वचन का मूल्य हमारे प्राणों से भी अधिक है ।"[१२२]

मौसी के उपकारों के बोज तले दबी शोभा अपने मन की सही बात नहीं बता सकती, तब सतीश कहता है "कायर कहीं की इतना साहस नहीं था

तो क्यों आई थी, मेरे जीवन में तूफान लेकर ? अब क्यों नहीं देती हो साथ बोलो ?''[१२३]

(७) कर्तव्य, वचनपालक, आज्ञाकारिणी

शोभा में भारतीय नारी के संस्कार है । वह कर्तव्यनिष्ठ, वचनपालक है । गोदावरी के दिल में भी पुत्र के सुख–सम्मान संपत्ति महत्त्वाकांक्षा के बीच संघर्ष चल रहा है । वह शोभा को कहती है – ''मुझ–से कुछ छिपा नहीं है, मेरी ही भूल थी जो मैंने आग घी साथ रखा ।''[१२४]

शोभा तू उसे अपने बंधन से मुक्त कर दे बेटी । तू अविलम्ब घर चली जा, तू सामने न होगी, तो मैं उसे मना ही लूँगी । वह, आज भी मेरे सम्मुख भय से काँपता है । मेरी आज्ञा का उल्लंघन करे, ऐसा साहस उसमें नहीं है । सतीश को चाहते हुए भी शोभा को अपना प्यार त्यागना पड़ा । ऐसी विषम परिस्थिति में शोभा उपकारों से दबी है मगर अपना कर्तव्य नहीं भूलती ।

''मौसी में आप को वचन देती हूँ परीक्षा समाप्त होते ही मैं चली जाऊँगी । किसी को कुछ कहे बिना ही घर से निकल जाती है ।''[१२५] यहाँ तक की मंजरी और अविनाश भी उसे उपालंभ देते हैं कि ''शोभा थोड़े से अपमान और मिथ्या कृतज्ञता ने तुम्हें कायर बना दिया । सतीश को बाल्य काल से ही माँ के कठोर शासन ने आत्म विश्वास का पाठ भुला दिया है । वह अब कभी माँ के विरुद्ध नहीं जाएगा ।''[१२६]

मंजरी ने लिखा था ''सच कहना मार्बल क्या तुमने स्वयं ही शहीद बनना नहीं चाहा ?''[१२७] इस प्रकार सब शोभा को उपालंभ देते हैं मगर किसी ने उसकी पीड़ा को समझने की कोशिश नहीं की ।

(८) सेक्रेटरी के पद पर

सतीश और मौसी के घर से निकलकर शोभा माँ के पास आई, वहाँ अपने दोनों भाइयों, माँ की मृत्यु की खबर मिलती है । मामा की सहाय से पढ़ी-लिखी शोभा नेपाली वंश की रानी की सेक्रेटरी की नौकरी करती है । एक दिन किसी पार्टी में सतीश से उसकी मुलाकात हुई ।

सतीश उसे कहता है ‘‘यह हमारी ट्रेजेडी रहेगी शोभा । क्षमा तो मुजे माँगनी ही थी, शोभा । मैं ही कायर था, उसी का फल तो भोग रहा हूँ तुम क्या सोचती हो कि मैं तुम्हें भूल गया हूँ ।’’[१२८]

‘‘तुम्हें पता है, मैं कल जा रहा हूँ । मार्बल इसके बाद कभी तुम्हें देख भी सकूँगा संदेह है ? केवल तुम्हारी मंजुल मूर्ति को हृदय में लिए जा रहा हूँ । यही मेरा पाथेय होगा ।’’[१२९]

दूसरे दिन वायुयान दुर्घटना में सतीश का प्लेन क्रश हो गया । दिल्ली के अस्पताल में होश में आनेपर शोभा को याद करता था । अंत में मृत्यु हुई । शोभा भी रानी माँ के साथ दिल्ली पहुँची अपना सिर सतीष की छाती पर रखकर अचेत हो गई ।

इस प्रकार आर्थिक असमानता, विषमता से भरे समाज में अपनी आर्थिक स्थिति को लेकर लघुता अनुभव करती प्रेममयी नारी अपने अस्तित्व की समग्र चेतना से जूझती रही ।

(२) सविता

मायापुरी उपन्यास में आनेवाला दूसरा स्त्री पात्र सविता, मंत्री तिवारीजी की इकलौती बेटी है । बचपन में सुंदर थी मगर बड़ी होने पर मोटी बदसूरत बेडोल हो जाती है । अपने पिता की संपत्ति के आधार पर वह किसी को भी खरीद सकती है । शोभा को भी वह अनाथ आश्रिता मानती है । सतीश से

उसकी शादी हुई । मगर उसके अन्य पुरुष मित्र भी है । संपत्तिवान आधुनिक, स्वच्छंदी, नारियों की पहचान है सविता ।

(३) गोदावरी, मंजरी

इस उपन्यास में शोभा के बाद दूसरा सक्षम पात्र है गोदावरी । गोदावरी दया भाव रखनेवाली नारी है । अपनी सखी के साथ मित्रता का भाव रखती है । परिणामस्वरूप शोभा को अपने घर पढ़ाती है ।

मंत्री तिवारीजी के प्रति कृतज्ञता का भाव रखती है । मंत्रीजी की कृपा से उसके कर्ज का बोझ टल गया था । बेटा विदेश पढ़ने गया था । बदले में मंत्री पुत्री सविता से उसकी शादी होने वाली थी ।

गोदावरी महत्त्वाकांक्षिणी समय को परखने वाली, व्यवहारकुशला नारी है । अपने पुत्र, परिवार का हित सदैव चाहती है । इसलिए शोभा की सुंदरता देखकर चिंतित हो जाती है । फिर भी सतीश की शादी सविता से करवाना चाहती है । उसके अनुशासन की वजह से सतीश अपनी माँ के सामने कुछ नहीं बोल सकता और हाँ में हाँ मिलाता है । जैसे ही गोदावरी को पता चला कि सतीश शोभा एक दूसरे के प्रति आकर्षित है वह शोभा को अपने किये हुए उपकारों की याद दिलवा के घर भेज देती है । ताकि सतीश शादी करने से मना न करे ।

मंजरी सतीश की बहन शोभा के प्रति प्यार रखती है । उसे शोभा की सुंदरता अच्छी लगती है, वह चाहती है शोभा की शादी सतीश से हो मगर यह हो न सका ।

उपन्यास का नायक सतीश भी कायर, स्वार्थी, लालसी, धूर्त है । वह मान, सन्मान, पद, प्रतिष्ठा, संपत्ति, सुंदरता सब कुछ एक साथ चाहता है । अवसरवादी सतीश को पहले शोभा गँवार लगी थी । मगर जैसे ही बदसूरत सविता को देखा तो वह शोभा के प्रति आकर्षित हो जाता है । स्वयं कोई

निर्णय नहीं ले सका और दोष शोभा को देता है । शिवानीजी ने कायर पुरुष की मानसिकता का चित्रण किया है । उसकी कायरता की वजह से ही शोभा को अपना प्यार गँवाना पड़ा ।

७. 'कृष्णकली' उपन्यास के नारी पात्र :

(१) कृष्णकली :

भारतीय ज्ञानपीठ, पुरस्कार इस उपन्यास को मिला है । इसमें कुष्ठरोग, अवैध संतान, वेश्या समस्या को निरूपित किया गया है । बिल्कुल विपरीत सामाजिक परिस्थितियों में कृष्णकली का जन्म हुआ । चेतना सभर, स्वमानी, विद्रोही व्यक्तित्व की स्वामिनी है कृष्णकली । उसने दुनिया को अपने अलग अंदाज से देखा है । कहीं पर समाधान नहीं किया । इस तरह यह एक प्रकार से व्यक्तिवादी उपन्यास है । मगर कली के मनोद्वंद्व का लेखा–जोखा है इसलिए मनोवैज्ञानिक उपन्यास भी है ।

वर्ष २००६–२००७ में प्रति सोमवार ६–३० बजे दूरदर्शन पर धारावाहिक के रूप में कृष्णकली उपन्यास प्रसारित हो गया है । डॉ. शशिबाला पंजाबीने लिखा है – ''कृष्णकली'' की कथा नितांत मौलिक है । कदाचित हिन्दी कथा साहित्य में कुष्ठरोग की समस्या को कथा भूमि का आधार बनाकर इतना विस्तृत और मानवीय संवेदना से पूर्ण लिखा गया यह प्रथम उपन्यास है ।''[१३०]

उपन्यास की नायिका कली के चरित्र को हम विभिन्न पहलुओं से देखेंगे ।

(१) अवैद्य संतान

कृष्णकली अल्मोड़ा के कुष्ठ रोगी पार्वती और असदुल्ला खान की अवैद्य संतान है । पार्वती ने उसके अंधकारमय भविष्य के बारे में सोच कर उसे

मारना चाहा । मगर डॉ. रोजी पेट्रिक उसे बचा लेती है । और तवायफ पन्ना को दे देती है । जिसे सात दिन पहले मरी हुई बच्ची पैदा हुई थी । ‘‘माँ का दूध न मिलने पर यह कभी नहीं जी पाएगी । सिर्फ एक वर्ष तुम इसे पाल दो, पन्ना, बाद में मैं इसे मिशन को दे दूंगी । ईश्वर ने शायद तुम्हें इसी महान पुण्य का भागी बनाने यहाँ भेजा है ।’’[१३१]

‘‘यह रोग पैतृक ही होता है ऐसी धारणा गलत है । मेरे पास कई कुष्ठ रोगियों की स्वस्थ संतान का पूरा रिकार्ड धरा है ।’’[१३२]

इस प्रकार कली को पन्ना ने स्वीकार कर लिया । नाम रखा कृष्णकली ।

(२) उच्च शिक्षा प्राप्त

कली पाँच साल की हो गई तो डॉ. रोजी ने उसे मिशनरी स्कूल में शिक्षा दिलवाई । केम्ब्रिज की पढ़ाई पूर्ण की । पढ़ाई के आधार पर ही अलग-अलग व्यवसायों में उच्च स्थान पर रहती है । आत्मनिर्भर बनती है । अवैद्य संतान कली को पढ़ाकर आत्मनिर्भर नारी के रूप में दिखाया है । इसके द्वारा शिवानी ने स्त्री-शिक्षा का प्रचार किया है ।

(३) माता-पिता की तलाश

मिशनरी स्कूल में कली को अपने माता-पिता कौन है ? यह रहस्य परेशान करता है । मधर से पूछती है । ‘‘स्कूल के स्पोर्ट डे में सब के डैडी आते है, हर बार मेरी मम्मी ही अकेली क्यों आती है ?’’[१३३]

भावुक कली संपत्तिवान बन जाती है तब अपने माता-पिता के प्रति फर्ज अदा करना चाहती है । मगर चाहते पर भी नहीं कर सकती । जिसे देखती है उसमें उसके पिता की तस्वीर ढूँढने लगती है ।

‘‘मैं हमेशा सोचती थी – कि मेरे डैडी भी विवियन के डैडी से ही होंगे ? उसके अगले हाथ में दबी होगी सिगार । तब मैं क्या जानती थी कि

में हाथ में सिगार थमा भी देती तब भी शायद मेरे डैडी अपनी अंगुलियों के ठूंठ से उसे पकड नहीं पाते । पिताजी की इस इमेज को बनाने में अठारह साल लगे थे, वह तीन मिनट में मिटकर रह गई ।''[१३४]

''देश विदेश में जब – जब मेरे सौंदर्य को पुष्प पत्र समर्पित होते, उसी मद में झूमती होटल के कमरे में लौटती, अकेले में मुझे लगता मेरे दीन–दरिद्र पंगु माता–पिता मेरे सिरहाने खड़े होकर मुझे फटकार ने लगे है ।[१३५]

''वैभव विलास ऐश्वर्य से अंधी लड़की तेरे मां–बाप गली गलियों में भीख माँग रहे है । उनके अमरीकी दूध के खाली डिब्बे के भिक्षा पात्र में एक नया पैसा भी खनकता हो तो उनकी आँखें चमकने लगती हैं और तुझ पर ऐसे विदेशी डोलर बरस रहे है । क्या तुझे शर्म नहीं आती ?''[१३६]

कली अवैद्य संतान है । इसलिए लोग उसे उपेक्षित भाव–से देखते हैं । तिरस्कृत होने के मानसिक भाव से कली दुःखी हो जाती है । दर–दर की ठोकरें खाने से बचती है क्योंकि आत्मनिर्भर है ।

(४) विद्रोहिणी – स्पष्टवक्ता

माता–पिता के प्रेम के अभाव में कली क्रूर विद्रोहिणी बन जाती है । लुक–छिपकर बातें सुनना, चोरी करना, पढ़ाई के बदले बनने सँवरने में ज्यादा रुचि रखती है । प्रखर बुद्धि है मगर माता–पिता के अभाव में हीनता–लघुता अभाव महसूस करती है ।

मधर रेवरन्ड ने भी रोजी को लिखा था, मिसेज मजमुदार से उसे सब कुछ मिला, थैला भर चोकलेट, पुस्तकें, फ्रोक गुड़ियाँ पर माँ का प्यार नहीं ।

पढ़ाई करने के बाद घर आई कली एक दिन छिपकर पन्ना और विद्युतरंजन की बातें सुन लेती है ।

"एक बार जी में आता है, साफ–साफ कह दूँ तेरा पिता है कोढ़ी और माँ कोढ़िन, जो गलियों में भीख माँगते फिर रहे होंगे । कोढ़ियों की पतंग में ही तुझे तेरा पिता अंगुलियों के ठूंठ चमकाता मिल जाय, या नंदा देवी के मेले में कोढ़ियों की भीड़ में तुझे तेरी अंधी माँ ।"[१३७]

कली स्पष्ट वक्ता है सब सुनने के बाद विद्युतरंजन मजमुदार को अपनी सरनेम देने के लिए थैंकस कह ले निकल जाती है ।

(५) सुंदरता

कृष्णकली पन्ना के साथ उसकी बहन माणिक के कौठे पर रही । श्याम सुंदर होने से उसका नाम कृष्णकली रखा गया था ।

पाँच साल की देवांगना–सी सुंदर बालिका कली को रोझी निहारती ही रही गई ।

"काले रंग में ऐसा लावण्य बहुत कम देखने में आता है । वह चेहरा उसकी हंसी से ऐसा उद्‌भाषित हो उठता था, जैसे कोई फूल खिल गया हो ।"[१३८] लोरीन आंटी के शब्दों में कहें तो –

"किसी का खून भी कर दोगी, तब भी अदालत तुम्हें छोड़ देगी, ऐसा निर्दोष चेहरा, ऐसी निष्पाप आँखें और देशी अस्तरे की धार–सी तेज अँगुलियाँ ।"[१३९]

"अब यह बघनखा हमारी कली को दूसरे नर–भक्षिकों से बचाता रहेगा, इसके साथ हमेशा पीली साड़ी पहनना, एकदम कुमाऊँ की खुंखार शेरनी लगेगी ।"[१४०]

इस प्रकार कृष्णकली श्याम सलौनी सुंदर है । इस सुंदरता के आधार पर वह विविध व्यवसाय करती है ।

(६) मॉडलिंग, रिसेप्शनीस्ट का व्यवसाय

विद्रोहिणी कली में बुद्धिमत्ता और सुंदरता दोनों हैं । घर छोड़कर कलकत्ता में साबून, साड़ियाँ आदि के लिए मोडलिंग करती है । भारतीय चीजों की प्रदर्शनी के लिए विदेश भी जाती है । लौरीन आँटी के यहाँ कली बम्बई मद्रास, अलाहाबाद में सोना स्मगलिंग करती है । विदेशी अतिथियों की गाईड बनकर घुमाने ले जाती है । और इस प्रकार समृद्ध, संपत्तिवान, आत्मनिर्भर बन जाती है ।

''डॉ. शशीबाला पंजाबी ने लिखा है कि ''कृष्णकली उपन्यास के अंतर्गत जीवन के नए दबाव, चेतना तथा संबंधों के नए प्रतिफलन के कारण उसका कथानक नए-नए भाव लोक और अनुभूति के स्तरों का चित्रण करने में पूर्ण रूपेण सफल रहा है ।''[१४१]

(७) प्रेमिका कली

सहकार और पारिवारिक भावना भी कली में मौजूद है । कलकत्ता में एक बंगाली परिवार रेवतीशरण तिवारी के यहाँ किराये पर रहती है । वहाँ सबकी प्यारी हो जाती है । और अम्मा के बड़े पुत्र प्रवीर को मन ही मन चाहती है ।

''जब कली ने सुना कि प्रवीर ने शादी करने के लिए हाँ कर दी तो उसे लगा जैसे समग्र ब्रह्मांड कली को लिए गोल-गोल घूम रहा है । और रविवार को भी सुबह भूखी-प्यासी अपने विदेशी अतिथिओं को श्मशान दिखाने ले जाती है । निराशा की वजह से प्रवीर की मंगेतर कुन्नी जैसी ही साड़ी पहनती है ।

''चलते चलते उसे भी दिखा देगी, ये मिस्टर ! देख-लो, कौन अधिक सुंदर लगती है, गोरी या काली ?''[१४२]

प्रवीर को मिलकर भी कहती है – ‘‘मैं क्यों मसान साधती हूँ, क्यों गांजे–चरस का दम लगाती हूँ । यह जानने की कोशिश की तुमने ?’’[१४३]

जिस दिन तुम्हें पहली बार देखा था, उसी दिन मुझे लगा था, कि यही मेरा सिद्धि सोपान है । जिस दिन इस दुरूह व्यक्तित्व दुर्ग की चारुता, संयम और दर्प की दीवारों को अपने सौंदर्य डायनामाइट से उडाकर इस सिद्धि सोपान पर बैठ पाऊँगी, उसी दिन मेरे हृदय में जन्म से सुलग रही विद्रोहिणी अग्नि स्वयं ही ठंडी हो जाएगी । जब भीतर ही भीतर दहकने लगती हूँ तभी मसान साधती हूँ गांजे की दम लगाती हूं ।’’[१४४] इस प्रकार कली अपने प्रेम के भावों को अपने ढंग से व्यक्त करती है ।

सुष्मा धवन ने व्यक्तिवादी उपन्यासों के संबंध में लिखा है – ‘‘व्यक्तिवादी उपन्यास के प्रायः सभी प्रधान पात्र सामाजिक रूढ़ियों के प्रति विद्रोह की भावना रखते हैं, प्रेम तथा विवाह के प्रति उनका सामाजिक दृष्टिकोण परंपरावादी न होकर वैयक्तिक स्वतंत्रता के विचारों से प्रभावित है । इन पात्रों के जीवन में सबसे जटिल समस्या प्रेम तथा विवाह की है । पाप तथा पुण्य में अंतर दिखाने की है । नैतिकता तथा अनैतिकता को नवीन कसौटी पर परख ने की है, सामाजिक बंधनों तथा वैयक्तिक आकांक्षाओं के मूल्य को आँकने की है ।’’[१४५]

(८) प्रामाणिक कली

कली प्रेम प्राप्त करना चाहती है । मगर किसी को धोखे में रखना नहीं चाहती । निर्दोष, निखालिस है, जिससे ही प्रेम का आभास मिलता है – अपना दुःख दिल खोलकर रख देना चाहती है । परिणाम स्वरूप निराशा मिली है । प्रवीर को बताती है कि ‘‘मैं चाहती तो एक विदेशी लक्षाधिपति को छलकर उसकी अगाध संपत्ति हथिया सकती थी । मेरे प्रेम में पागल था, उसने विवाह का प्रस्ताव रखा और मैंने अपने जन्म का टेप–खोल दिया ।

फिर अभागे ने पलटकर नहीं देखा ।''[१४६] कली को संसार की धूर्तता का पता नहीं है यहाँ अवैद्य संतान समाज के नाम पर गाली है । चाहे संतान ने कोई अपराध न किया हो ।

(६) निराशा और जागृति

इस प्रकार कली सदैव ही अपने जन्म के गलित–इतिहास, माँ–पिता की तलाश भूल नहीं पाती, मानसिक हिनता, महसूस करती है । निराशा के कारण वह कुष्ठ रोग के प्रति जागृत हो जाती है । कली एकान्त कमरे में घंटों अपनी त्वचा को टटोलती है ।

''क्या पता कहीं पैतृक रोग किसी कोने में कुटिल शत्रु-सा दुबक कर बैठा हो । जहाँ भी कुष्ठ रोग का लिटरेचर मिलता दीमक की भाँति चाट जाती । हर तीसरे महीने अपने रक्त की जाँच करवाती है ।''[१४७]

जब बुखार आता है – असहय पीड़ा होती है तो जागृत कली जान जाती है कि यह पीड़ा और ऐसा मदहोश करने वाला विषम ज्वर साधारण नहीं हो सकता । तुरंत प्रवीर को पत्र लिखती है – ''तुम्हें एक बार फिर देखना चाहती हूँ । मूर्ख डॉक्टर सोचते हैं, मुझे कुछ पता नहीं है, पर बम्बई के टाटा कैन्सर अस्पताल में लोग हनीमून मनाने नहीं जाते, इतना मैं भी जानती हूँ ।''[१४८]

(१०) मृत्यु

मृत्यु के अंतिम समय भी वह चुहलबाज रही, प्रवीर उसे जल्दी मिलने आते रहने का वादा करता है तो कहती है –

''मत आना, मुझे तुम्हारी मिस्ट्रेस नहीं बनना है ।''[१४९] और स्वमानी संघर्षशीला, कली मृत्यु को अपने पर हावी नहीं होने देती । और स्लीपिंग पिल्स की पूरी शीशी खाली कर मृत्यु को समर्पित हो जाती है । डॉ. शशिबाला पंजाबी ने लिखा है ।

"इस उपन्यास की नायिका कृष्णकली जाति, धर्म, संस्कार, गौत्र आदि सबसे ऊपर उठकर मानव मात्र की सहानुभूति प्राप्त करती है । इसके कथानक की महत्त्वपूर्ण विशेषता यह भी है कि इसमें नाटकीय तत्त्व का भी अच्छा निर्वाह हुआ है ।"[१५०]

(२) पन्ना

पन्ना कोठे पर नाचने वाली वेश्या स्त्री है । उसका जन्म वेश्या के कोठे पर हुआ था । मगर पन्ना ने इस पैशे को अपनाया नहीं था । विलासी जीवन के प्रति आकर्षण, पन्ना की बहन माणिक को है । मगर पन्ना को नहीं, वह अपने व्यवसाय, संपत्ति, एशो आराम सबकुछ ठुकराती है । उसे देखने पर वह आदर्श गृहिणी जैसी लगती है । जैसे – "स्वच्छं–दंतपंक्ति पर पान के धब्बे नहीं लगने दिये थे । शांत चेहरे पर कलुषित पेशे के धुंधले हस्ताक्षर भी नहीं मिलते थे । जैसे किसी सुखी गृहस्थ की लक्ष्मी स्वरूपा गृहिणी हो ।"[१५१]

डॉ. त्रिभुवन सिंह लिखते हैं कि "वास्तव में वेश्याएँ जन्म से वेश्या नहीं होतीं बल्कि वे परिस्थितियों द्वारा बनाई जाती हैं, तथा अपनी कुत्सित वृत्तियों के कारण हो जाती हैं ।"[१५२]

डॉ. रामदरश मिश्रजी ने लिखा है कि – "नारी के स्वाभिमान को कुचला जाना तथा विलासी जीवन के प्रति आकर्षण उसे वेश्यावृत्ति की ओर खींच ले जाते हैं ।"[१५३]

डॉ. रोजी ने अवैद्य संतान कली के लिए पन्ना को समझाया था । उसके मातृत्व को जगाया था । क्योंकि पन्ना में मातृत्व मौजूद है । डॉ. रोजी पन्ना की शक्ति को भावना को जानती थी ।

"तुछे, माता, तुछे दाता, तुछे रजनी, तु छे नारी नारयणी, तु छे मातृशक्ति, तुछे दैविशक्ति, तु छे जगस्वामीनी शक्ति, शक्ति, शक्ति, शक्ति,"[१५४]

इस प्रकार वेश्या कुल में जन्म लेकर भी संस्कारों की दृष्टि से पवित्रता व शिष्टता को अपनाए हुई है पन्ना ।

पन्ना एक आदर्श प्रेमिका है । अपने व्यवसाय के विरुद्ध वह उसके प्रेमी विद्युतरंजन मजमूदार के सिवा अन्य किसी को कभी नहीं मिलती । यहाँ तक की विद्युतरंजन के बच्चे की माँ बनने वाली थी – तभी ही विद्युत रंजन उस पर संदेह करके छोड़कर चला जाता है । और तब भी अपनी बड़ी दीदी से झगडा मौल के उस संतान को जन्म देना चाहती है । मगर उसे मरी हुई बच्ची पैदा हुई ।

इसलिए रोझी उसे कली का स्वीकार करने के लिए समझाती है । मगर कली को लेकर भी वह अपने कोठे पे जाना नहीं चाहती । उसकी परवरिश अच्छे माहौल में करवाना चाहती है । सब कुछ छोड़ नैनीताल में देवदार की कोठी किराये पर लेकर अकेली रहती है । यही है नारी चेतना, जो जागृत पन्ना में है ।

अपने प्रेमी विद्युत रंजन द्वारा दिया गया – सूनापन, अकेलापन, विद्रोहिणी कली का विद्रोह सब कुछ अकेले ही झेलती है । मगर वापस उस कौठे के माहौल में नहीं जाती ।

कली को जब कैंसर हो जाता है तो उसके बुलाने पर तुरंत चली जाती है । और शिवानीजी ने अंत में यह भी बताया है कि पन्ना हररोज मंदिर जाती है । इसी प्रकार पन्ना वेश्या कुल में जन्म लेने के बाद भी वेश्या नहीं है, उसके संस्कार, भावना, जागृति, त्याग अलग हैं ।

(३) डॉ. रोजी पेट्रिक

डॉ. रोजी पेट्रिक इसाई मिशनरीयों में काम करने वाली उदार हृदया नारी है ।

डॉ. रोजी के व्यक्तित्व में स्त्रीत्व, मानवता, सेवा और मातृत्व ये सारे सद्‌गुण मौजूद हैं । एक स्त्री दूसरी स्त्री के अनाथ बच्चे को बचा ले, यही चेतना है, जागृति है ।

डॉ. रोजी शिक्षा के प्रति जागृत नारी है, वचन पालक भी है । वह चाहती है कि पाँच साल की हो जाने के बाद कली की पढ़ाई ईसाई मिशनरियों के स्कूल में हो और पाँच साल के बाद उसे लेने अवश्य आती है । पन्ना की बहन माणिक उसका अपमान करती है मगर रोझी अपना कर्तव्य निभाती ही है । इस प्रकार अवैद्य संतान, बेटा हो या बेटी ईश्वर की अनूपम देन है । रोजी जैसी उदार नारियाँ उस बच्चे को स्वस्थ बनाकर समाज में रखेगी ।

तभी कली सुंदर, शिक्षा प्राप्त, आत्मनिर्भर नारी बनी है ।

८. 'चल खुसरो घर आपने' उपन्यास के नारी पात्र :

(१) कुमुद :

परिवार की आर्थिक परिस्थितियों को लेकर व्यक्तिगत जीवन के संघर्ष की गाथा इस उपन्यास में चित्रित हुई है । मध्यमवर्गीय युवती का पारिवारिक आर्थिक मानसिक संघर्ष चित्रित है । उपन्यास में वर्णित कटु यथार्थ, परिवार की मानसिकता, आर्थिक अभाव इन सभी कारणों से नायिका को अपने प्रत्येक अरमान का गला घोंट देना पड़ता है । उपन्यास में चित्रित समस्या कहीं न कहीं कितने ही भारतीय परिवारों को लागू होती है ।

मगर अपने अस्तित्व की नैतिकता कायम रखते हुए जिस प्रकार नायिका संघर्ष करती है वह सराहनीय है । और यह सब भारतीय नारी ही कर सकती है ।

उपन्यास की नायिका कुमुद को निम्नलिखित पंक्तियाँ समर्पित करने को जी चाहता है –

“चंचल मन प्यासी आशाएँ, दूर कहीं ले जाना चाहें,
मिलकर भी क्यूं मिल ना पायें, मुझे मेरे सपनों की राहें,
मृगतृष्णा मन को छल जाये, सांसों की डोरी उलझाये,
नैनों से उजियारा रूठा, अंधियारा बढ़ता ही जाये ।”[१५५]

नायिका के चरित्र की चेतना को हम निम्नांकित पहलुओं से देखेंगे ।

(१) छोटे भाई–बहन से परेशान

पिता की मृत्यु के बाद कुमुद माँ छोटे भाई बहन का सहारा बन जाती है । “मगर उद्‌दंड भाई–धर्मभीरु माँ, आवारा बहन, उसे लगने लगा था कि भाई–बहन, माँ, प्रतिवेशी सब उसके दुश्मन बने हैं । अगर ज्यादा दिन घर में रही तो मानसिक संतुलन खो बैठेगी ।”[१५६]

ऐसे भाई–बहनों की माँ सदैव तरफदारी करती थी उसका उसे दुःख था । उसे अपने भाई का आवरापन याद आता है । जो फिस के रुपये कहीं उडा देता है – कॉलेज नहीं जाता । गांजा, चरस, सिगरेट लेने लगा है । उसके आवारा मित्र घर पर बुलाने आते रहते हैं । लालू जब फिस के रुपये उड़ा देता है तो माँ कहती है – “बड़े बड़े आदमियों के बीच लड़का उठता बैठता है, उसका भी तो मन करता होगा, बुरा भला खाने को ।”[१५७]

उमा भी बाजारू लड़कियों से मित्रता कर लेती है । “एकदिन रात को देर तक उमा घर नहीं लौटी, एक कुख्यात अड्डे पर से पकड़ी गई । कुमुद जिन माथुर साहब की बेटियों के टयूशन करवाती थी, उनकी सिफारिश से उमा बच गई । मगर कुमुद को टयूशन से हाथ धोना पड़ा ।[१५८]

इन सब पारिवारिक स्थितियों से कुमुद कहीं दूर चली जाना चाहती है । और उसने लखनौ से दूर राजा साहब के यहाँ नौकरी स्वीकार कर ली । जाते वक्त अम्मा कहती “कुमुद मैं जानती हूँ, तू हम से रूठकर जा रही है । अभागों ने तेरी ही थाली में खाकर उसी में छेद किया है, अच्छा लड़का मिलता तो मैं इस कुल बोरनी को तो बिदा ही करा देती ।”[१५९]

ऊपर्युक्त कथनों में अभावग्रस्त, कलहयुक्त, मध्यमवर्गीय भारतीय परिवार की स्थिति है । एक विधवा माँ अपने परिवार को एक बनाये रखना चाहती भी है और अपने स्वच्छंदी संतानों से नाराज भी है ।

डॉ. चंद्रिका रावल, शैलजा ध्रुव लिखती हैं कि ''स्त्रीओ प्रत्ये आचरवामां आवती क्रूरता के अत्याचार ए व्यक्तिगत, अंगत के कौटुंबिक घटना करतां समग्र समाजमां स्त्रीना मानव हक्क ने छीननारी घटना छे, एम कही शकाय, आजे ते वैश्विक सामाजिक समस्या बनी रही छे, वधु ने वधु विकृत स्वरूप धारण करती रही छे.''[१६०]

(२) पारिवारिक जिम्मेदारी उठाना

राजा साहब के यहाँ जाकर कुमुद अस्पताल में डॉक्टर की जिम्मेदारी संभाल लेती है । जाते वक्त दुःखी माँ को इस प्रकार सांत्वना देकर निकली थी ।

''माँ तुम्हें मेरी चिंता नहीं करनी है । मैं हर महीने तुम्हें मेरी पुरी तनख्वाह भेज दिया करूँगी, छोटे-मोटे काम कॉलेज का चपरासी कर देगा, लालू उमा को मैंने बड़ा सबक सिखा दिया है, मामा से कहकर उमा के लिए अच्छा लड़का ढूँढती रहना ।''[१६१]

और राजा साहब के यहाँ नौकरी करते हुए उमा की शादी के लिए राजा साहब से रुपये माँगती है – अपने वेतन से और बाबूजी के बीमे की रकम से कर्ज चुका देने का वायदा करती है । इस प्रकार कलह में भी कुमुद अपने परिवार के प्रति कर्तव्य को भूल नहीं पाई है ।

(३) उच्च शिक्षा प्राप्त कामकाजी नारी

कुमुद ने डाक्टरी की शिक्षा पाई है । इसलिए अपने पिताजी की मृत्यु के बाद परिवार में, घर में, पुरुष का जो कर्तव्य होना चाहिए वह सब कुमुद करती है । बेटे का फर्ज अदा करती है । यही उसके स्त्रीत्व की व्यक्तित्व

की पहचान है । राजेन्द्र यादव इस प्रकार लिखते हैं – "बींसवी शताब्दी के उत्तरार्ध में दुनिया भर में जो उपनिवेश, भौतिक और मानसिक रूप से स्वतंत्र हुए उनमें स्त्री नामक उपनिवेश भी है । दलित हमारे घरों और बस्तियों के बाहर होता है । स्त्री हमारे भीतर है, इसलिए उसका संघर्ष ज्यादा जटिल है ।"[१६२]

शिक्षित पढ़ी लिखी कुमुद ने नौकरी की, पाँचसौ रुपये के ट्यूशन करवाये, तीन सौ रूपये बाबूजी की पैंशन, सब मिलकर बड़ी कठिनाई से घर चलाती थी और अपने भाई बहन को पढ़ाती थी । इस प्रकार रोजमर्रा के घर खर्च का आयोजन एक शिक्षित, जागृत नारी ही कर सकती है ।

डॉ. जयश्री भट्ट ने लिखा है कि – "किसी भी युग में सभ्यता एवं संस्कृति के निर्माण तथा विकास में कन्या पत्नी और माता तीनों रूपों में नारी का योगदान महत्त्वपूर्ण होता है, इसलिए किसी भी युग की सामाजिक स्थिति का आकलन उस युग की नारी की शैक्षणिक स्थिति से कर सकते हैं ।"[१६३]

(४) भीरु–डरपोक फिर भी स्पष्ट वक्ता

कुमुद जब नौकरी करने राजा साहब की कोठी पर आई तो राजा साहब के रुआब के सामने आँख मिलाकर बात नहीं कर सकती । कोठी के विचित्र माहौल, नौकरों के व्यवहार से भीतर ही भीतर डरती है । जब राजा साहब ने स्पष्टता की "वर्षों से मानसिक रूप से बिमार उसकी पत्नी के लिए परिचारिका, डॉक्टर की आवश्यकता थी, इसलिए विज्ञापन दिया था ।

तब कुमुद स्पष्ट बताती है कि "तो आप इन्हें पागलखाने में क्यों नहीं रखते ? यह आपका अन्याय है सर ? आप यदि सब अपने पिछले पत्र में भी मुझे बता देते तो मैं अपनी अच्छी–खासी नौकरी से इस्तीफा देकर एक पागल की देखभाल करने यहाँ क्यों आती ?"[१६४]

इस प्रकार जरूरत मंद कुमुद में स्पष्ट वक्ता का गुण भी मौजूद है ।

(५) माता का विश्वास और उपेक्षा

राजा साहब के यहां नौकरी करके कुमुद ने बेटे का फर्ज निभाया घर की आर्थिक स्थिति अच्छी बना दी । परिवार की गरीब स्थिति सुधर गई, तब माँ लिखती ''तूने मुझे जो सुख दिया है कुमू, वह सुख तेरे बाबूजी भी मुझे कभी नहीं दे पाए, इसके हाथ में इतने पैसे रहते ही कब थे, आज तेरी कमाई ने सब सुख साधन हमारे करतल पर रख दिये हैं । तब ये सुख देखने तेरे बाबूजी नहीं हैं ।''[१६५]

कुमुद परिवार को आर्थिक सुख दे पाई है । माँ अपनी इस तेजस्वी पुत्री से मन ही मन डरती भी है । फिर भी कुमुद को माँ का भेदभाव अच्छा नहीं लगा । ''बड़ी पुत्री के कौमार्य को बड़ी उदासी से लाँध, वह छोटी के विवाह की योजना बड़े उत्साह से बनाने लगी थी – यह माँ का अन्याय नहीं तो क्या था ? और माँ सदैव यह कहकर कुमुद को समझाती रहती कि ''तेरी और से मैं निश्चित हूं मैं जानती हूं तू कभी कोई ऐसा काम नहीं करेगी, जिससे हमारे कुल पर आँच आए ।''[१६६]

''बचपन से ही उसे आदर्श की सर्वोच्च वेदी पर बिठाकर उसके साथ कैसा अन्याय किया गया है ? धीरे–धीरे उसकी निरंतर दबाई गई तृष्णा अब विद्रोह का रूप लेने लगी थी । क्या जीवन भर उसे दूसरे के लिए जीना होगा ?''[१६७]

आज भी भारत में कई ऐसी युवा लड़कियाँ हैं जिनके आर्थिक उपार्जन से पूरा परिवार, छोटे भाई बहन या बूढ़े माता–पिता का निर्वाह होता हो । मगर उसकी अपनी भी कोई निजी इच्छाएँ होती हैं – यह बात परिवार वाले भूल जाते हैं । यह भी मानसिक शोषण का ही एक प्रकार है । बाद में वह शादी करना ही नहीं चाहती या उम्र बीतने से पहले बूढ़ी हो जाती है ।

डॉ. शैल रस्तोगी लिखते हैं – ''मध्यम वर्ग इस शोषण को अधिक महसूस करता है, क्योंकि घर का वातावरण एवं बाह्य जीवन के संघर्ष व्यक्ति

की विवशताओं को बढ़ाते हैं । आर्थिक विषमताओं, सामाजिक मान्यताओं और कुंठाओं के कारण व्यक्ति ह्रासोन्मुख प्रवृत्ति की और झुका है । 'चल खुसरो घर आपने' की उमा इन्हीं आर्थिक विषमताओं के कारण मौज शौक के अभावों के कारण पैशा करती है और पकड़ी जाती है ।"[१६८]

(६) त्यागमयी नारी

कुमुद ने अपने पारिवारिक दायित्वों के सामने अपनी निजी इच्छाओं, जीवन के बारे में तर्क–वितर्क करना छोड़ ही दिया था । उसके लिए प्रेम यानि पारिवारिक प्रेम, काम यानी पारिवारिक कर्तव्य । वह अपने काम में लग जाती है ।

राजा साहब पारिवारिक कलह षडयंत्रों से ऊब कर तीव्र ज्वर में कुमुद को मालती समझकर उसका हाथ पकड़ लेते हैं । तब नौकर और मालती उसे संदेह की नजरों से देखने लगते हैं । कुमुद के पहले आई हुई डॉ. मरीयम जोसेफ राजा साहब के भाइयों के षडयंत्रों का शिकार हुई थी, उसका शारीरिक शोषण हुआ था । उसने आत्महत्या की थी । ये बात भी कुमुद नौकरों से सुनती है । कुमुद को यहाँ भी अपनी सलामती नहीं लगती । वह नौकरी छोड़कर चले जाने का निर्णय करती है । श्री राजेन्द्र यादव के शब्द इन परिस्थितियों को समझने के लिए योग्य है –

"भारतीय समाज में न नारी का अपना कोई व्यक्तित्व रहा है न जाति । वह ऐसा 'रत्न' है जिसे कहीं से भी उठाया जा सकता है और जिसके पास है, उसी की संपत्ति है – वे व्यक्ति नहीं 'चीज' है । जिन्हें लूटा, छीना और नष्ट किया जा सकता है । खरीदा और बेचा जा सकता है सारा इतिहास इन उदाहरणों से भरा है ।"[१६९]

रात में ज्वर ग्रस्त राजा साहब कुमुद के पास चले आते है । अपने पास रहने का आग्रह करते है । प्रेम की याचना करते हैं । कुमुद उसे

समझा–बुझाकर उसके कमरे में छोड़ आती है । दूसरे दिन माँ की बिमारी का बहाना करके राजा साहब के नाम एक लिफाफा लिखकर किसी को कुछ कह बिना चली जाती है । ‘‘आपका कर्ज बाबूजी का रूपया मिलते ही में चुका दूँगी ।’’[१७०]

इस प्रकार नायिका पूरे उपन्यास में अपने कर्तव्य, त्याग, बुद्धि, समर्पण सेवा से आनेवाली हर परिस्थितियों का सामना करती है ।

६. ‘स्वयंसिद्धा’ लघु उपन्यास के नारी पात्र :

(१) माधवी :

‘स्वयंसिद्धा’ २३ पन्नों का सुंदर वैयक्तिक लघु उपन्यास है । एक सुंदर तेजस्वी, बुद्धिमान और साथ–साथ जिद्‌दी अहंकारी नारी, माधवी का जीवन थोड़ी गलत फहमियों, भ्रम, जिद्‌, अहंकार से नष्ट हो जाता है । पारिवारिक, सामाजिक रूढ़ियों का चित्रण करनेवाला उपन्यास है ।

(१) रूढ़िवादी परवरिश

माधवी मातृहीना है, मौसी और पिताजी की परवरिश उसे जिद्‌दी बना देती है । ज्योतिष, कुंडली आदि में उसका परिवार विश्वास करता है ।

(२) शादी

डॉ. कौस्तुभ के पिता देवज्ञ मार्तेंड ने स्वयं वीस कन्याओं की कुंडलियों में से माधवी की कुंडली देखकर पसंद किया था । माधवी ने भी लड़का देखा था ।

(३) गलतफहमी, वहम, भ्रम का शिकार

शादी के बाद मधुयामिनी के वक्त राधिका नामकी लड़की के मजाक ने माधवी को बहका दिया, अपने पति पर उसे संदेह हुआ । राधिका की चिट्ठी

में था । “तुम बड़ी भूल कर रही हो माधवी, अपने रूप के मद में मत रहना, तुमसे पहले अपने रूप की वारुणी पिलाकर मैं तुम्हारे पति को बहुत ही मदालिस बना चुकी हूँ । इसका मैंने टोना टोटका अनुष्ठान सब कुछ कर दिया है ।”

ससुराल में भी माधवी का साक्षात्कार राधिका से हुआ, उसकी बातों से माधवी की शंका दृढ़ हो जाती है । उसके आत्म सन्मान को धक्का लगता है । वह अपने घर जाने को तैयार हो गई ।

कौस्तुभ ने उसे समझाया “तुम पढ़ी–लिखी हो, किसी से कुछ उल्टा सीधा सुन लो, इससे सच बात मैं ही तुम्हें दिखाऊँगा, वह बज्रमूर्खा तुम्हें अंडा–बंड लिख देनी यह मैं क्या जानता था ?”[१७१]

पति की बातों का उस पर कोई असर ना पड़ा । “रूढ़िवादी संस्कार में पली मातृहीना माधवी को पिता, मामा मौसी के प्यार ने जिद्दी बना दिया था । वह पिता के घर निकल गई ।”[१७२]

(४) पिताजी, मौसी से तिरस्कृत

माधवी के पिता ज्योतिष, कुंडली, धर्म, रूढ़ि–रिवाज आदि में माननेवाले परंपरावादी व्यक्ति थे । बेटी का ससुराल से पहले ही दिन वापस आना उसके लिए प्रतिष्ठा का सवाल था । घर आई माधवी को पिता ने भी कह दिया ।

“निकल जा बाहर आज से न तू मेरी पुत्री है, न मैं तेरा पिता ।”[१७३] उस दिन माधवी अपनी बिन देखी माँ को याद करके, घर के बाहर सारी रात रोई । मगर पिताजी को जरा भी दया नहीं आई । उसके लिए माधवी का कोई महत्त्व नहीं था । समाज और प्रतिष्ठा का ज्यादा था ।

इस शोषण की स्थिति को राजेन्द्र यादव के शब्द और भी स्पष्ट करते हैं – “कभी–कभी मुझे आश्चर्य होता है कि क्या मनोवैज्ञानिक या सामाजिक कारण रहे हैं कि पितृसत्ता स्थापित होते ही पुरुष ने सब कहीं स्त्री को

कुचला है । दलितों को प्रायः शस्त्र से, स्त्रियों को शास्त्र से, अर्धनारीश्वर की पूजा करनेवाला क्यों स्त्री को हत्या और आत्महत्या के बीच जीने को मजबूर करता गया ? जिसे माँ बेटी, बहन, प्रिया कहकर गले लगाता है । उसे ही तथा–कथित शास्त्र पोषित सामाजिक मर्यादाओं या विश्वासों के नाम पर नृशंस होकर मार डालता है – कभी उसके पैदा होते ही तो कभी वय प्राप्त करने पर ।[१७४]

पिता से तिरस्कृत, बिना माँ की पुत्री मौसी के घर आई तो वहाँ भी सुनने मिला ''मधुली, तो–हम सब की नाक ही कटवा दी । पूरे शहर में तेरी चर्चा है । मौसी का मानना था कि आषाढ़ मास में शादी होने से नारी दुःखी ही होती है । और ऐसा ही हुआ ।''[१७५]

(५) उच्चशिक्षा प्राप्त, स्वाभिमानी, आत्मनिर्भर

और स्वाभिमानी नायिका माधवी ने कभी हार नहीं मानी थी, वह भी पिता को एक दिन दिखा देगी कि वह स्वयं भी अपने पेरों पर खड़ी हो सकती है ।

वह मद्रास अपनी सखी रचैल ऐंड्रुज के घर पहुँचती है, वहाँ एम.ए. करती है, और स्वयं अपने पैरों पर खड़ी होकर आत्मनिर्भर बन जाती है । स्त्री शिक्षा की प्रगति को लेकर पाणिकरन का यह कथन समुचित प्रतीत होता है ।

''स्त्री शिक्षा की प्रगति को देखते हुए श्री पाणिकरन (१९६५) ने यह निष्कर्ष दिया कि स्त्री शिक्षा ने विद्रोह की उस कुल्हाडी की धार तेज कर दी है जिससे हिन्दू सामाजिक जीवन की जंगली झाड़ियों को साफ करना संभव हो गया है ।''[१७६]

''माधवी कर्मठ रोबदार अफसर बन गई थी । अर्दली भी थे, सज्जा सँवरा बंगला था । आत्मीय स्वजनों के मोह की डोर कुछ इन्हीं की उदासीनता

ने काट दी थी, और कुछ उसने स्वयं ही बड़ी निर्ममता से तोड़–मरोड़कर दूर फैंक दी थी । किन्तु शांति नहीं थी । उसे अपना जीवन व्यर्थ लगता है ।''[१७७]

शिवानीजी ने कई ऐसी आत्मनिर्भर एकाकिनी नारियों की स्थिति के प्रति–संकेत किया है ।

(६) विद्रोही, ईर्षालु, निराशावादी

एकाकिनी माधवी को मानसिक व्यथा विद्रोही बना देती है । अपने रुखे स्वभाव से, ईमानदारी – कार्यपटुता से वह सर्वोपरि थी । पुरुष सहकर्मियों से गजभर की दूरी रखती थी ।

''जान–बूझकर ही हाथ में आई शक्ति का दुरुपयोग करने में उसके अशांत चित्त को अनोखी शांति मिलती थी । जहाँ किसी सुखी दंपति को एक ही जिल्ले में नियुक्त देखती, अपने कानूनी आदेश में पत्नी का तबादला किसी दुरस्थ जिल्ले में कर देती थी ।''[१७८]

एक दिन ट्रेन में अचानक कौस्तुभ की मुलाकात हो गई । जिसने दूसरी शादी कर ली थी । साथ में उसकी थुलथुला मोटी पत्नी थी । जिसे देखकर माधवी के विद्रोही दिमाग को संतोष हुआ क्योंकि सौत के व्यक्तित्व में गँवारूपन था ।

माधवी के अचेतन दिमाग में प्रतिस्पर्धी राधिका की मूर्ति कहीं न कहीं खड़ी रहती है । वह अनिद्रा की रोगी बन जाती है । नींद की गोलियाँ लेने लगी है ।

(७) पति की मृत्यु और आत्महत्या

बीस साल बाद उसके पिताजी का पत्र आया था, जिससे वह अतीत में खो गई । पिताजी ने लिखा था, कौस्तुभ बीमारी की वजह से मृत्यु शैया पर है । न आशीर्वाद, न क्षेमकुशल न तुम्हारा पिता, केवल लिखा था 'शिवदत्त' । माधवी ने अपनी जिद्द स्वाभिमान अपने पिता से ही विरासत में पाया था ।

“किंतु नारी कैसे ही पाषाणी क्यों न हो, पावन अग्नि के फेरे क्या सहज में ही भूल सकती है ।”[१७९]

“माधवी पति के घर गई, चादर से ढँकी देह अचल पड़ी थी । माधवी, रोती हुई सौत को चुपचाप देखती थी, उसे न कौस्तुभ की छाती पर रोने का अधिकार था, न अपने वैधव्य के लिए आँसू बहाने का । वह वापस अपने घर आ जाती है । पिताजी को क्षमायाचना का अंतिम पत्र लिखकर ढेर सारा पैथेडीन का डोझ ले लेती है ।”[१८०]

माधवी जैसी हजारों स्त्रियों की व्यथा को राजेन्द्र यादव इस प्रकार न्याय देते हैं कि – “कोई भी औरत आत्महत्या या अध्यात्म का चुनाव स्वेच्छा से नहीं करती । उसके पीछे हमेशा सामाजिक और आर्थिक मजबूरियों के जाने–अनजाने दबाव होते हैं । बचाव का जब कोई रास्ता नहीं होता तो उसे इन्हीं दोनों विकल्पों में मुक्ति दिखाई देती है ।”[१८१]

इस प्रकार सामाजिक रचना, सामाजिक मूल्य इतने संदिग्ध कठोर थे कि बहुत होशियार, स्वाभिमानी नारी घर और समाज में स्थान न मिलने से प्रायश्चित के रूप में पेथेडीन का डोज़ लेती है । यह व्यक्तिवादी उपन्यास है । नंददुलारे वाजपेई के अनुसार “जिसमें व्यक्तिगत जीवन, घटना, व्यक्तिगत चरित्र, व्यक्ति जीवन समस्या का निरूपण या निर्देश सर्वोपरि रहता है – वही व्यक्तिवादी उपन्यास है ।”[१८२]

कठिन संघर्ष, विपरीत सामाजिक परिस्थितियों को हँसकर माधवी ने गले लगाया था । और मौत को भी अपनी इच्छा से गले लगाती है । ऐसी हिम्मतवान नारी है । क्योंकि समाज से न्याय पाने की आशा नहीं थी ।

१०. 'कैंजा' उपन्यास के नारी पात्र :

(१) नंदी :

इस उपन्यास में पहाड़ी समाज के कठोर वैवाहिक बंधन, जातिप्रथा, अवैद्य संतान आदि समस्याओं को चित्रित किया है । इन समस्याओं के सामने नायिका ने अपने चरित्र की उच्चता, विशेषता से संघर्ष किया है ।

नंदी तिवारी अपने एकपक्षीय प्रेमी सुरेशभट्ट की पगली स्त्री से उत्पन्न अवैद्य संतान को माता की ममता देती है । मगर समाज उसे कैंजा (सौतेली माँ) के रूप में ही पुकारता है ।

(१) उच्च कुल में जन्म

उपन्यास की नायिका नंदी के पिता हेमचंद्र तिवारी गणमान्य राज घराने के ज्योतिष है । उसे अपनी जाति ब्राह्मण कुल का अभिमान था । अपनी पुत्री नंदी की कुंडली में घोर वैधव्य योग के कारण शास्त्रीजी उसकी शादी करवाना नहीं चाहते, उसे पढ़ा-लिखाकर आत्मनिर्भर बनाना चाहते हैं ।

(२) उच्च शिक्षा प्राप्त आत्मनिर्भर

नंदी के ज्योतिषी पिता पुरुषार्थवादी थे । वह अपनी पुत्री नंदी को कहते हैं - ''तुझे मैं पढ़ा-लिखाकर एक दिन ऐसी बना दूँगा कि जीवनभर किसी पुरुष के कंधे का सहारा तुझे नहीं लेना होगा ।''[१८३] भाग्यवादी फिर भी समझदार पिता नंदी को डॉक्टर बनाना चाहते थे । पिताजी की आज्ञा को मानकर शहर पढ़ने चली जाती है । पिताजी के आदर्शो का पालन करनेवाली दृढ़ नंदी डाक्टरनी बन कर शहर से दूर गाँववालों की सेवा करती है ।

(३) विवाह-संबंधी संकीर्णता

''विवाह संबंधी कुमाऊँनी कायदे-कानून कठोर थे, संकुचित वैवाहिक दायरे में विवशता से घूमते माता-पिता कभी भी अपने से नीचे, वर्जित कुल में

लाख समृद्ध होने पर भी पुत्री को ब्याह ने की धृष्टता नहीं कर सकते थे । चाहे वह चिर दरिद्र ही क्यों न हो, चाहे पुत्री जीवनभर अन्न दाने को ही क्यों न तरसती रहे ।

जामाता यदि अपने उच्च कुल गौत्र का वीसा प्रस्तुत कर देता तो किल्ला फतह था । जाति, वर्ण–व्यवस्था, कुंडली आदि पर आधारित समाज रचना में विवाह का क्षेत्र सीमित ही हो जाता था । सुरेश भट्ट का कुल गौत्र सौ फीसदी विशुद्ध था ।''[१८४]

(४) सुरेश भट्ट की प्रेमिका

सुरेश भट्ट ने एम.ए. पास करके वकालत की है । उसे जुआ, शराब का शौक है । वह नंदी को एक पक्षीय प्रेम करता है । और स्वयं शास्त्रीजी के पास प्रस्ताव लेकर आता है ।

''शास्त्रीजी मैं आप की कन्या से विवाह करना चाहता हूँ – मैं उसके वैधव्य योग के बारे में सब सुन चुका हूँ – और मुझे कोई आपत्ति नहीं है ।''[१८५]

ऊँची जाति, कुंडली में विश्वास रखनेवाले तिवारीजी ने रिश्ता ठुकरा दिया । ''किसी शराबी जुआरी अकर्मण्य को अपनी पुत्री का हाथ थमाने से मैं उसे ब्रह्मकुंड की धारा में बहाना अच्छा समझता हूँ ।''[१८६]

सुरेश भट्ट के प्रेम का अस्वीकार हुआ । अहम, निराशा, स्पर्धा, प्रतिशोध का भाव उसमें आ जाता है । ''मैं भी देखता हूँ कि कुमाऊँ के किस साले पंत पांडे की छाती में इतने बाल हैं जो आपकी इस राजकन्या को ब्याह कर ले जाए ।''[१८७]

ब्राह्मण जाति के समाज में भी अंदरूनी उप जातियों में ऊँच नीच के भेद होते हैं । नंदी के पिता और सुरेश भट्ट इसके उदाहरण हैं ।

जाति को लेकर राजेन्द्र यादव लिखते हैं कि "भारतीय हिन्दू समाज में आत्मा पर खुद इस ठप्पे का नाम है 'जाति' या वर्णव्यवस्था । तारीफ करनी होगी कि कितने कौशल से जाति का यह अहसास जन-जन के खून में भर दिया है कि मौत से पहले आदमी को इससे निजात का रास्ता नहीं मिलता । पहले सारे समाज को काम के लिहाज से ऊँच-नीच में बाँटना, इस बँटवारे को धर्म और प्रारब्ध से जोड़ना, फिर पीढ़ी दर पीढ़ी इसे स्थायित्व देना, इतना ही नहीं, हर ऊँचे को नीचे के लिए यातना व्यवस्थापक का स्वनियुक्त अधिकार प्रदान करना ।"[१८८]

(५) नंदी का प्रेम

भाग्यवादी उच्च-नीच जाति में माननेवाले पिता नंदी की कुंडली समझ पाये थे मगर पुत्री का दिल नहीं समझ पाये । नंदी भी सुरेश भट्ट को मन ही मन चाहती है । मगर पिताजी के सामने बोल नहीं पाई । मन ही मन घबराती है । पिताजी के निर्णय का विरोध नहीं कर पाती इसलिए ईश्वर से प्रार्थना करती है ।

"इस चित्त विकार से मुझे मुक्ति दो प्रभो ! ऐसे पापी दुराचारी के प्रति मेरा दिन प्रतिदिन प्रखर होता जा रहा यह कैसा मोह है ।"[१८९]

नंदी उदास होकर पढ़ने चली जाती है ।

(६) कुंठा, नैराश्य, विवशतायुक्त सुरेश

"प्रेम का अस्वीकार, नंदी की उदासीनता ने सुरेश भट्ट को कुंठाग्रस्त, नैराश्य, विवश बना दिया । वह सचमुच ही दुस्साहसी बन, वेश्या दुराचारिणी पार्वती को ब्याहलाया, मगर उसे भी मारपीट करके मृत्यु तक पहुँचा दिया । सुरेश भट्ट 'लेडी किलर' बन गया ।"[१९०]

निराशा की वजह से सेक्स मेनियाक बन जाता है । वह नंदी को कहता है । "नंदी तिवारी मेरे एक-एक पाप के पीछे स्वयं तुम खड़ी हो,

तुम्हारे पिता ने मेरा प्रस्ताव स्वीकार कर लिया होता तो मेरी यह दुर्दशा न होती । मैं शराबी हूँ, जुआरी हूँ, और प्रेमोदधि में मैंने कई बार रस की डुबकियाँ लगाई है । संसार भर की युवतियों के मोहक बाहुपाश, लक्ष–लक्ष नारी अधरपुट भी मेरे नारी लोलुप हृदय की प्यास को नहीं बुझा सकते क्यों ? चाहने पर बुझाने वाली उसे एक ही घुँट में बुझा सकती थी ।

मोंपासा कहता है – ''नारी और जल की तृषा जब कभी घातक रूप से तीव्र हो उठती है तो उसे बुझाने के लिए मनुष्य जघन्य से जघन्य अपराध भी कर सकता है ।''[१६१]

एक भी कुकर्म सुरेश भट्ट ने नहीं छोड़ा था । मैं पापी हूँ, घोर पापी मर्डर, रेप, हत्या, चोरी जुआ । इस प्रकार सुरेश भट्ट के व्यक्तित्व के पीछे नंदी जिम्मेदार थी ।

(७) सेवाभावी नंदी

डॉक्टर बनी नंदी में सेवा भाव का गुण मौजूद है । गाँव की मालदारिन की उन्मादिनी पगली लड़की का सर्वनाश करके सुरेश गाँव छोड़ चला जाता है । ऐसे कुकर्मी सुरेश भट्ट के संतान की माँ बनने वाली थी पगली कुमुली । तब नंदी उसे सहाय करने चली जाती है । ''मृत्यु को दोनों हाथों से धकेलकर ही नंदी उस जीवित शिशु को पृथ्वी पर अवतरित करा पाई थी । मगर उसकी माँ को नहीं बचा पाई थी, और मालदारिन भी कहीं गायब हो गई थी ।''[१६२]

(८) मातृत्व भाववाली नंदी

पगली कुमुली को बेटा हुआ था – कोई भी इस अवैद्य पुत्र को ग्रहण करने नहीं तैयार था । नंदी ने ही उसे पालना चाहा उसे लेकर कहीं दूर चली गई ।

''वैसे गंभीर सौम्य मूर्ति, नंदी ने कभी रोहित को पिता का अभाव नहीं खटकने दिया था, कौन से ऐसे कपड़े, मिठाइयाँ, कहानियों की किताबें, खिलौने

हों जो रोहित के पास न हों, फिर भी नंदी को यही लगता कि उसे कुछ देना रह गया है ।''[१६३]

''दस साल के रोहित ने अपनी माँ नंदी से प्रश्न किया । मेरे डैडी कहाँ हैं माँ ? स्कूल में सब अपने नाम के साथ अपने डैडी का नाम लिखते हैं ।''

''नंदी निर्दोष रोहित को स्पष्टता करके शांत कर देती है । कहती है – तुम्हारे डैडी पहाड़ में हैं – और चार पाँच दिनों में ही हम उन्हें लेने पहाड़ जा रहे हैं । तेरे डैडी का नाम है सुरेश कुमार भट्ट ।''[१६४]

पुत्र की इस घोषणा के बाद नंदी के लिए पहाड़ यात्रा अनिवार्य हो उठी थी ।

प्रभावती जडिया ने नंदी जैसी विशिष्ट नारियों के लिए ही लिखा है । ''आज के समय में स्त्रियों द्वारा हिन्दू जीवन के सिद्धांतों का पुनः परीक्षण हिन्दू समाज के लिए सबसे बड़ी चुनौती है । समाज की बदलती हुई आवश्यकताओं के प्रति उनकी जागरूकता, धर्म की आड़ में उन्हें समस्त अधिकारों से वंचित कर देने वाले असंतोष जनक आदर्शों के प्रति क्षोभ, शिक्षा से उत्पन्न होनेवाली महत्त्वाकांक्षाएँ और राष्ट्रीय संघ के विकसित होनेवाले अनुभवों ने उन्हें हिन्दू जीवन के आदर्शों का पुनः विवेचन करने की प्रेरणा दी है ।''[१६५]

(६) त्यागमयी नारी

नंदी ने अपनी जिंदगी की रंगीन इच्छाओं का त्याग कर दिया है । पहाड़ आई नंदी सब जानती है कि शराबी, जुआरी सुरेश भट्ट ने अपनी हालत खराब कर दी है । समाज की लाँछना, व्यंग झेलकर वह रोहित के पिता को पति बनाकर ले जाएगी । बच्चे को लेकर परिस्थिति के साथ नंदी का समाधान हिंमत और नैतिकता से परिपूर्ण है ।

सुरेश भट्ट को समझाकर रोहित से मिलाती है । गाँववालों के समक्ष अपना निर्णय घोषित करती है । रोहित को नैनीताल घुमाने भेज देती है । सुरेश भट्ट से शादी करने तैयार हो जाती है ।

"शायद संसार में कभी पहले ऐसा विचित्र विवाह नहीं हुआ होगा । कई बार विवाह वेदी से उठकर वधू ने उसकी नब्ज देखी, सप्तपदी से अग्नि की आँच में ही सिरिंज उबाल इंजेकशन दिये । वर विहीन वधू पीले-पटुके को अपने आँचल से बाँध अकेली ही पावन अग्नि की प्रदक्षिणा कर गई ।" धीरे धीरे मृत्यु की और जा रहे अचेत सुरेश के पास बैठकर कहती है – "मैंने जीवन में तुम्हीं से प्यार किया था ।"[१६६]

मातृत्व समझदारी का मर्म न जानने वाली मालदारिन आकर रोहित से कहती है – "तेरी माँ तो पगली थी, मैं हूँ तेरी नानी, तू जिसे माँ कहता है वह तो तेरी कैंजा है । मानो पुत्री की सौत के प्रति ईर्षा-द्वैष और क्रोध से बदला ले लिया हो ।"[१६७]

समाज ने हर प्रकार से नंदी की परीक्षा लेनी चाही । इस प्रकार आदर्शवादी, संयमी, विचारशील, त्यागी नारी समाज की रूढ़ियों की शिकार होते होते अपने जीवन के संघर्षों से लड़ती रही । नारी शक्ति को चित्रित करनेवाली कथा है ।

इस प्रकार शिवानीजी ने अपने उपन्यासों में विभिन्न स्तर के पात्र लिए है, चाहे अल्मोड़ा, कुमाऊँ, नैनीताल, गुजरात हो या सौराष्ट्र प्रत्येक जगह समस्या और लोगों की मानसिकता एक जैसी ही देखने को मिलती है ।

प्रस्तुत अध्याय में आनेवाले उपन्यासों के नारी पात्र जीवन, परिवार, स्पर्धा, समाज, अर्थ, प्रेम, ममता आदि को लेकर मानसिक संघर्षों से घिरे हुए हैं । आंतरिक-बाह्य संघर्ष कभी-कभी उन्हें तोड़ देता है फिर भी अपना वजूद, पहचान नहीं खोते, कर्तव्य निभाते हैं ।

प्रभा खेतान के विचार बहुत ही योग्य हैं, ''यह समाज तो कई–कई मुकामों पर औरतों को उनकी पंगुता महसूस करवाता है । औरत के लिए प्यार की काफी नहीं । व्यक्ति बनने के लिए उसे और भी बहुत कुछ चाहिए । धन, मान अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सभी कुछ । जीवन शुरू करने के लिए उसे भी पुरुष के बराबर की जमीन चाहिए और इस जमीन को समाज से छीनकर लेना पड़ता है । महज अनुनय विनय से काम नहीं चलता ।''[१६८]

संदर्भ संकेत :

क्रम	पुस्तक का नाम –	लेखक का नाम	पृष्ठ संख्या
१	उद्धृत : शिवानी के उपन्यास : कथ्य और शिल्प	डॉ. रेणु हिंगोरानी	५१
२	उद्धृत : शिवानी के उपन्यास : कथ्य और शिल्प	डॉ. रेणु हिंगोरानी	५३
३	उद्धृत : शिवानी के उपन्यास : कथ्य और शिल्प	डॉ. रेणु हिंगोरानी	४१
४	उद्धृत : शिवानी के उपन्यास : कथ्य और शिल्प	डॉ. रेणु हिंगोरानी	४१
५	उद्धृत : शिवानी के उपन्यास : कथ्य और शिल्प	डॉ. रेणु हिंगोरानी	४२
६	उद्धृत : शिवानी के उपन्यास : कथ्य और शिल्प	डॉ. रेणु हिंगोरानी	४३
७	उद्धृत : शिवानी के उपन्यास : कथ्य और शिल्प	डॉ. रेणु हिंगोरानी	४४
८	उद्धृत : शिवानी के उपन्यास : कथ्य और शिल्प	डॉ. रेणु हिंगोरानी	५४
९	हिन्दी उपन्यासों के सौ वर्ष	डॉ. रामदरश मिश्र	६४
१०	गैंडा	शिवानी	२३
११	गैंडा	शिवानी	१८
१२	गैंडा	शिवानी	१७
१३	गैंडा	शिवानी	६
१४	गैंडा	शिवानी	२५

१५	हिन्दू नारी कार्यशीलता के बदलते आयाम	डॉ. प्रभावती जड़िया	१८
१६	गेंडा	शिवानी	१८-१६
१७	गेंडा	शिवानी	२५
१८	गेंडा	शिवानी	१३
१६	गेंडा	शिवानी	१५
२०	गेंडा	शिवानी	२२
२१	गेंडा	शिवानी	२३
२२	गेंडा	शिवानी	२७
२३	गेंडा	शिवानी	३०
२४	गेंडा	शिवानी	१३
२५	गेंडा	शिवानी	३१
२६	गेंडा	शिवानी	४०
२७	गेंडा	शिवानी	४१
२८	गेंडा	शिवानी	४४
२६	गेंडा	शिवानी	४४
३०	गेंडा	शिवानी	४४
३१	गेंडा	शिवानी	४५
३२	हिन्दी उपन्यासों के सौ वर्ष	रामदरश मिश्र	६४
३३	माणिक	शिवानी	११-१२
३४	समाज कल्याण नारी दीक्षा	डॉ. जयश्री एस. भट्ट	भूमिका से
३५	माणिक	शिवानी	३०-३१
३६	माणिक	शिवानी	११

३७	माणिक	शिवानी	३१
३८	माणिक	शिवानी	११
३९	माणिक	शिवानी	३६
४०	माणिक	शिवानी	१६
४१	माणिक	शिवानी	१७
४२	माणिक	शिवानी	४१
४३	माणिक	शिवानी	१६
४४	माणिक	शिवानी	१७
४५	माणिक	शिवानी	४४
४६	माणिक	शिवानी	४४
४७	माणिक	शिवानी	४७
४८	माणिक	शिवानी	३६
४९	माणिक	शिवानी	२१
५०	माणिक	शिवानी	२१
५१	माणिक	शिवानी	२५
५२	माणिक	शिवानी	२८
५३	माणिक	शिवानी	४३
५४	किशनुली	शिवानी	१२-१३
५५	हिन्दू नारी कार्यशीलता को बदलते आयाम	डॉ. प्रभावती जड़िया	२०
५६	किशनुली	शिवानी	१६
५७	किशनुली	शिवानी	६
५८	किशनुली	शिवानी	२६
५९	किशनुली	शिवानी	२७

६०	किशनुली	शिवानी	२७
६१	किशनुली	शिवानी	१८
६२	किशनुली	शिवानी	१७
६३	किशनुली	शिवानी	१६-१७
६४	किशनुली	शिवानी	२२
६५	किशनुली	शिवानी	२३
६६	किशनुली	शिवानी	३४
६७	किशनुली	शिवानी	२६
६८	किशनुली	शिवानी	३६
६९	किशनुली	शिवानी	३५
७०	किशनुली	शिवानी	३२
७१	किशनुली	शिवानी	३१-३२
७२	किशनुली	शिवानी	३१
७३	स्त्री–पुरुष संबंधों का रोमांचकारी इतिहास	मन्मननाथ गुप्त	३४७
७४	किशनुली	शिवानी	३८
७५	किशनुली	शिवानी	३८
७६	किशनुली	शिवानी	३२
७७	किशनुली	शिवानी	१८
७८	किशनुली	शिवानी	२८
७९	उद्‌धृत : शिवानी के उपन्यास : कथ्य और शिल्प	डॉ. रेणु हिंगोरानी	२५२
८०	कृष्णवेणी	शिवानी	८
८१	कृष्णवेणी	शिवानी	१५

८२	कृष्णवेणी	शिवानी	१७
८३	कृष्णवेणी	शिवानी	१८-१९
८४	कृष्णवेणी	शिवानी	२०
८५	कृष्णवेणी	शिवानी	२४
८६	कृष्णवेणी	शिवानी	२५
८७	कृष्णवेणी	शिवानी	२८
८८	कृष्णवेणी	शिवानी	३०
८९	कृष्णवेणी	शिवानी	२९
९०	महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में बदलते सामाजिक संदर्भ	शीलप्रभा वर्मा	२६३
९१	उद्धृत : शिवानी के उपन्यास : कथ्य और शिल्प	डॉ. रेणु हिंगोरानी	१८८
९२	कृष्णवेणी	शिवानी	३४
९३	कृष्णवेणी	शिवानी	३४
९४	साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों में नारी के विविध रूप	डॉ. विमला शर्मा	८८
९५	विषकन्या	शिवानी	२०
९६	विषकन्या	शिवानी	२२
९७	विषकन्या	शिवानी	२५
९८	विषकन्या	शिवानी	२२
९९	विषकन्या	शिवानी	२९
१००	विषकन्या	शिवानी	३१
१०१	विषकन्या	शिवानी	२०
१०२	विषकन्या	शिवानी	३४
१०३	विषकन्या	शिवानी	३६

१०४	विषकन्या	शिवानी	३६
१०५	विषकन्या	शिवानी	३८
१०६	विषकन्या	शिवानी	३६
१०७	विषकन्या	शिवानी	४०
१०८	विषकन्या	शिवानी	४१
१०६	विषकन्या	शिवानी	४०
११०	वर्तमान हिन्दी महिला कथा लेखन और दाम्पत्य जीवन	साधना अग्रवल	४०
१११	वर्तमान हिन्दी महिला कथा लेखन और दाम्पत्य जीवन	साधना अग्रवल	३६
११२	विषकन्या	शिवानी	५२-५३
११३	वर्तमान हिन्दी महिला कथा लेखन और दाम्पत्य जीवन	साधना अग्रवल	२५-३६
११४	विषकन्या	शिवानी	५५
११५	विषकन्या	शिवानी	५५
११६	मायापुरी	शिवानी	१४
११७	मायापुरी	शिवानी	१४
११८	मायापुरी	शिवानी	१८
११६	मायापुरी	शिवानी	३१
१२०	मायापुरी	शिवानी	३८
१२१	मायापुरी	शिवानी	४०
१२२	मायापुरी	शिवानी	४०
१२३	मायापुरी	शिवानी	७२
१२४	मायापुरी	शिवानी	८३
१२५	मायापुरी	शिवानी	८४

१२६	मायापुरी	शिवानी	६३-६४
१२७	मायापुरी	शिवानी	६५
१२८	मायापुरी	शिवानी	१४७
१२६	मायापुरी	शिवानी	१६१
१३०	शिवानी के उपन्यासों का रचना विधान	डॉ. शशीबाला पंजाबी	१५
१३१	कृष्णकली	शिवानी	६
१३२	कृष्णकली	शिवानी	६
१३३	कृष्णकली	शिवानी	४८
१३४	कृष्णकली	शिवानी	१८२
१३५	कृष्णकली	शिवानी	१८२
१३६	कृष्णकली	शिवानी	१८२
१३७	कृष्णकली	शिवानी	५६
१३८	कृष्णकली	शिवानी	१५-१६
१३६	कृष्णकली	शिवानी	७५
१४०	कृष्णकली	शिवानी	११६
१४१	शिवानी के उपन्यासों का रचना विधान	डॉ. शशीबाला पंजाबी	१५
१४२	कृष्णकली	शिवानी	१४२
१४३	कृष्णकली	शिवानी	१८०
१४४	कृष्णकली	शिवानी	१८१
१४५	उद्धृत : शिवानी के उपन्यास : कथ्य और शिल्प	डॉ. रेणु हिंगोरानी	१६२
१४६	कृष्णकली	शिवानी	१८३
१४७	कृष्णकली	शिवानी	१८२
१४८	कृष्णकली	शिवानी	२०७

१४६	कृष्णकली	शिवानी	२१६
१५०	शिवानी के उपन्यासों का रचना विधान	डॉ. शशीबाला पंजाबी	१५
१५१	कृष्णकली	शिवानी	१३
१५२	उद्धृत : शिवानी के उपन्यास : कथ्य और शिल्प	डॉ. रेणु हिंगोरानी	२६६
१५३	हिन्दी उपन्यासों के सौ वर्ष	डॉ. रामदरश मिश्र	६४
१५४	स्त्री–भृण हत्या अटकावीए (गुजराती)	डॉ. आरती कस्वेकर	१८
१५५	गृहदाह – सीरीयल दूरदर्शन – प्रति गुरुवार रात ६–३० बजे २००७	शरतचंद्र चट्टोपाध्याय दिनांक १६–६–०८	
१५६	चल खुसरो घर आपने	शिवानी	१
१५७	चल खुसरो घर आपने	शिवानी	३२
१५८	चल खुसरो घर आपने	शिवानी	४१
१५६	चल खुसरो घर आपने	शिवानी	७-८
१६०	नारी व्यथा (गुजराती)	डॉ. चंद्रिका रावल	११
१६१	चल खुसरो घर आपने	डॉ. शैलजा ध्रुव	८
१६२	आदमी की निगाह में औरत	शिवानी	भूमिका से
१६३	समाज कल्याण नारी दीक्षा संस्कृति	राजेन्द्र यादव	१
१६४	चल खुसरो घर आपने	डॉ. जयश्री एस. भट्ट	१८
१६५	चल खुसरो घर आपने	शिवानी	६१
१६६	चल खुसरो घर आपने	शिवानी	६३
१६७	चल खुसरो घर आपने	शिवानी	६३
१६८	हिन्दी उपन्यास में नारी	डॉ. शैल रस्तोगी	२६८
१६६	आदमी की निगाह में औरत	राजेन्द्र यादव	३३
१७०	चल खुसरो घर आपने	शिवानी	८६

१७१	स्वयंसिद्धा	शिवानी	१५
१७२	स्वयंसिद्धा	शिवानी	१७
१७३	स्वयंसिद्धा	शिवानी	११
१७४	आदमी की निगाह में औरत	राजेन्द्र यादव	२३
१७५	स्वयंसिद्धा	शिवानी	११
१७६	हिन्दू नारी कार्यशीलता के बदलते आयाम	डॉ. प्रभावती जड़िया	२०
१७७	स्वयंसिद्धा	शिवानी	१२
१७८	स्वयंसिद्धा	शिवानी	१७-१८
१७६	स्वयंसिद्धा	शिवानी	३०
१८०	स्वयंसिद्धा	शिवानी	३०-३१
१८१	आदमी की निगाह में औरत	राजेन्द्र यादव	१६
१८२	उद्धृत : शिवानी के उपन्यास : कथ्य और शिल्प	डॉ. रेणु हिंगोरानी	१४४-१६१
१८३	कैंजा	शिवानी	२१
१८४	कैंजा	शिवानी	१५
१८५	कैंजा	शिवानी	२०
१८६	कैंजा	शिवानी	२०
१८७	कैंजा	शिवानी	२०-२१
१८८	आदमी की निगाह में औरत	राजेन्द्र यादव	३२
१८६	कैंजा	शिवानी	१७
१६०	कैंजा	शिवानी	१३
१६१	कैंजा	शिवानी	२४
१६२	कैंजा	शिवानी	३३

१६३	कैंजा	शिवानी	१०
१६४	कैंजा	शिवानी	११-१२
१६५	हिन्दू नारी कार्यशीलता के बदलते आयाम	डॉ. प्रभावती जडिया	२६
१६६	कैंजा	शिवानी	४४-४७
१६७	कैंजा	शिवानी	५०
१६८	अन्या से अनन्या	प्रभा खेतान	२५७

पंचम अध्याय
शिवानी के पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं राजनीतिक विचारधारा से संबंधित उपन्यासों में नारी चेतना

१. आलोच्य उपन्यास

(१) 'चौदह फेरे' उपन्यास के नारी पात्र

(१) नंदी

(१) सेवा भावी – कम पढ़ी लिखी

(२) सहनशीला नारी

(३) तिरस्कृत नारी

(४) मजबूर नारी

(५) उपेक्षिता नारी

(६) गंवार–फूहड़ नारी

(७) पति के व्यवहार से दुःखी

(८) पति पर अधिकार

(९) त्यागी, आध्यात्मिक नारी

(२) मल्लिका

(१) कामकाजी नारी

(२) सुंदर–कुशल सेक्रेटरी

(३) मातृत्वभाववाली

(३) अहल्या

(१) अभावपूर्ण बचपन
(२) उच्च शिक्षा प्राप्त
(३) आधुनिक, आज्ञाकारिणी
(४) पस्तहिम्मत प्रेमिका

(४) सुभद्रा ताई

(१) गृहिणी
(२) मुँह–फट उज्जड़ औरत
(३) मातृत्वभाववाली नारी
(४) हिम्मतवान – विद्रोही नारी

(२) 'श्मशान चंपा' उपन्यास के नारी पात्र

(१) चंपा

(१) उच्च शिक्षा प्राप्त, उच्च विचार, सुंदर नारी
(२) पारिवारिक जिम्मेदारी उठानेवाली
(३) आज्ञाकारिणी पुत्री
(४) सामाजिक संकीर्णता की शिकार
(५) जागृत नारी
(६) स्पष्टवक्ता, सावधान नारी
(७) मधुकर से पुनः मिलन
(८) परिस्थितियों से शरणागति

(२) भगवती

(१) परंपरागत भारतीय नारी
(२) प्रायश्चित करनेवाली
(३) परिस्थिति से समाधान

(४) संतानों का भला चाहनेवाली
(५) दुःखी नारी

(३) कमलेश्वरी
(१) नृत्यांगना की बेटी
(२) मनोरोगिणी
(३) गृहिणी–चिंतित माँ
(४) समृद्ध नारी
(५) उदार नारी

(४) जुही
(१) चंचल शरारती
(२) अंतरजातीय विवाह और दुःखी
(३) केब्रे डांसर, खूनी नारी

(५) मयुरी

(३) 'कालिंदी' उपन्यास के नारी पात्र

(१) अन्नपूर्णा

(२) कालिंदी
(१) समृद्ध बचपन, उच्च शिक्षा प्राप्त
(२) कर्तव्यपरायण, उच्च विचार
(३) स्पष्टवक्ता, हिंमतवान
(४) दहेज प्रथा का विरोध
(५) पुरुष विरोधी, विद्रोही नारी
(६) सेवाभावी नारी
(७) जिद्दी अभिमानी
(८) माँ–मामा की सीख

(४) 'सुरंगमा' उपन्यास के नारी पात्र

(१) गौहर जान

(२) राजलक्ष्मी

(३) सुरंगमा

(१) समृद्ध बचपन

(२) माँ–पिता का वैमनस्य

(३) उदास धीर–गंभीर / उच्च शिक्षा प्राप्त

(४) आर्थिक अभाव / कामकाजी नारी

(५) दो–रंगी मंत्री का संपर्क

(६) स्वमानी, सुंदर, विवाह विरोधी

(७) स्पष्टवक्ता – सावधान नारी

(४) विनीता

(१) उच्च शिक्षा प्राप्त

(२) स्त्री–शिक्षा की हिमायती

(३) महत्त्वाकांक्षिणी नारी

(४) अंतरजातीय विवाह

(५) अहम् वाली नारी

(६) पति पर अधिकार भावना

(७) मंत्री–पत्नी के रूप में

(८) भावुक पत्नी

(९) दुःखी पत्नी

(१०) प्रतिशोध लेनेवाली नारी

(५) 'रतिविलाप' लघु उपन्यास के नारी पात्र

(१) अनसूया

(१) उच्च शिक्षा प्राप्त, कलाकार
(२) जिम्मेदारी उठानेवाली
(३) मामा के द्वारा धोखा
(४) विवाहिता अनसूया
(५) समाधानकारी वृत्ति वाली नारी
(६) विधवा अनसूया
(७) कामकाजी नारी
(८) सेवाभावी, कर्तव्यपरायण नारी
(९) हीरा के षडयंत्र की शिकार
(१०) हिम्मतवान नारी
(११) उदार, क्षमाशील नारी

(२) हीरा

(६) 'रथ्या' लघु उपन्यास के नारी पात्र

(१) जीवंती बूआ

(२) वसंती

(१) अनाथ वसंती
(२) मुग्धा किशोरी
(३) शरारती चंचल
(४) गुमशुदा नायिका
(५) निराश प्रेमिका के रूप में

(६) शारीरिक शोषण की शिकार
(७) विमल से मिलन
(८) दंभी–विमल का व्यंग्य
(९) स्पष्टवक्ता वसंती

(७) 'भैरवी' उपन्यास के नारी पात्र

(१) राज–राजेश्वरी
(१) नादान किशोरी
(२) अनमेल विवाह
(३) सहनशीला नारी
(४) चेतनासभर कामकाजी नारी
(५) मातृत्व

(२) चंदन
(१) शादी
(२) भैरवी चंदन
(३) सुंदर नारी
(४) अपराध बोध से युक्त
(५) अघोरी की चुंगाल से भाग जाना

(३) मायादीदी
(१) शिव की शक्ति बनने की इच्छा रखनेवाली
(२) व्यसनी मायादीदी
(३) ईर्षा–अधिकार भाव
(४) मायादीदी की मृत्यु

(८) 'दो सखियाँ' उपन्यास के नारी पात्र

(१) सखुबाई

(१) हिंमतवान चेतनासभर नारी
(२) उच्चशिक्षा प्राप्त कामकाजी नारी
(३) बेटे के द्वारा उपेक्षा
(४) वृद्धाश्रम में आगमन
(५) उच्चविचार, बुद्धिमान नारी
(६) तटस्थ विचारोंवाली

(२) आनंदी

(१) सुघड़ स्वच्छताप्रिय नारी
(२) पारिवारिक कलह
(३) बेटियों के घर रहना
(४) वृद्धाश्रम में आगमन
(५) सहिष्णु भावनाशील नारी
(६) लापरवाह बेटियाँ, मृत्यु

पंचम अध्याय
शिवानी के पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं राजनीतिक विचारधारा से संबंधित उपन्यासों में नारी चेतना

शिवानी के उपन्यासों की नारियाँ अपने सोच–विचार, अपना चिंतन, अपनी प्रतिभा, अपनी संवेदनशीलता के कारण पाठकों पर अमिट छाप छोड़ती हैं । इनके उपन्यासों के नारी पात्र अपनी समस्याओं के साथ लीक से हटकर नया मार्ग ढूँढ़ रहे हैं । इस मार्ग पर चलने की हिम्मत, विश्वास उनमें है, वे कर्म में विश्वास करनेवाली कर्मठ नारियाँ हैं । उच्चवर्ग तथा संपन्न मध्यमवर्गीय परिवार की स्त्रियाँ हैं । उपन्यासों में देखा गया है कि प्रायः उनके नारी पात्रों की शिक्षा अंग्रेजी स्कूलों में, विशेषतः कॉन्वेट स्कूलों में हुई है । और फर्राटेदार अंग्रेजी बोलती हैं, वे व्यवसायों में सफल रही हैं ।

जैसे 'कृष्णकली' में कली, 'चौदह फेरे में अहल्या', 'श्मशान चंपा' में चंपा, नलीनी, दीना, 'माणिक' में भैरवी, अनसूया, 'कैंजा' की नंदी, 'विषकन्या' की कामिनी, 'कालिंदी' उपन्यास की डॉक्टर कालिन्दी, 'गैंडा' उपन्यास की राज, 'मायापुरी' की शोभा, माधवी मल्लिका आदि, अलग–अलग व्यवसायों से जुड़ी कामकाजी नारियाँ हैं । और साथ–साथ इन उपन्यासों में कामवाली बाइयों का चित्रण भी हुआ है । जिन घरों में वे काम करती हैं, उनके प्रति भी उनके मन में वफादारी का भाव मिलता है । जिनका अपनी मालकिनों से काफी लगाव पाया जाता है । गृहिणियों का चित्र भी अंकित हुआ है मगर कहीं पर भी खेतिहर, या मजदूरिन का चित्र अंजित नहीं हुआ । इन सभी नारी पात्रों में अपने वैयक्तिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, नैतिक मूल्य एवं आदर्श हैं ।

डॉ. गणेशन ने ठीक ही कहा है – 'उपन्यास मनुष्य के सामाजिक, वैयक्तिक अथवा दोनों प्रकार के मनुष्य के रोचक साहित्यिक प्रति रूप है । जो प्रायः एक कथा सूत्र के आधार पर निर्मित होता है ।'[१]

आलोच्य उपन्यास :

(१) 'चौदह फेरे' उपन्यास के नारी पात्र

(१) नंदी (२) मल्लिका (३) अहल्या (४) सुभद्राताई

अनमेल दाम्पत्य जीवन, कुमाऊँ अंचल मे ब्राह्मण जाति की परंपरा, विवाह आदि की रूढ़िवादिता, आर्थिक समस्या आदि संदर्भों में नारी–चेतना मुखरित है ।

'चौदह फेरे' उपन्यास में ग्रामीण और नगरीय, कुमाऊँ, कलकत्ता का मिला–जुला परिवेश है ।

(१) नंदी

(१) सेवाभावी – कम पढ़ी–लिखी

नंदी कम पढ़ी–लिखी, सेवाभावी, त्यागी, सहनशील, वैराग्यभाव रखनेवाली नारी है । इन्हीं सद्‌गुणों की वजह से उसके आधुनिक पति कर्नल के साथ, अपने बेमेल दाम्पत्यजीवन में तनाव पैदा हुआ है । दोनों के स्वभाव, संस्कार, परवरिश, रुचि जीवन जीने का तरीका भिन्न भिन्न है ।

"कर्नल के परंपरावादी पिता ने एकदम देशी कन्या ढूँढकर इसका वाग्दान कर दिया । कर्नल को अपने कुल की मर्यादा और समाज का अंकुश सदा जाग्रत रखता था । नंदी सुंदर होने से कोई आपत्ति नहीं हुई ।"[२]

"पुत्र–बहू को सास–ससुर की सेवा के लिए ब्याह कर लाता था, प्रणय निवेदन की सार्थकता के लिए नहीं, कुमाऊँ की इस सामाजिक, पारिवारिक मान्यता को ध्यान में रखते हुए कर्नल अकेला ही कलकत्ता चला जाता है ।"[३]

(२) सहनशीला नारी

नंदी परिवार की सेवा जी–जान से करती है । पति की अनुपस्थिति में भी सास–ताई पितामहों की सेवा करती है । ताने सहन करती है । परिवार के प्रति सर्मपित है । वह कुमाऊँ की अनपढ़ सहनशीला नारियों के दायरे में आती है ।

‘‘जिस दिन पितामह की सधी गालियों की बौछार नहीं होती, उसे वह दिन–अधूरा सा ही लगता है ।’’[४]

नंदी सुंदर अवश्य थी पर चेहरे पर लावण्य नहीं था । एक रुखा–सा भाव उसके चेहरे पर फैल जाता था । वर्ष में एकबार कर्नल घर आता, मगर छुट्टी शेष होने से पूर्व ही वह स्वयं छुट्टी पूर्ण कर कलकत्ता चला जाता । नंदी के मौन प्रणय निवेदन या परिवार के प्रति सर्मपित भाव की कोई कीमत कर्नल को नहीं थी । क्योंकि नंदी कुशल गृहिणी अवश्य थी – मगर कुशल प्रेमिका नहीं । प्रगति सक्सेना ने ठीक ही लिखा है – ‘‘लगभग सभी पुरुष जबरन बने गुलाम की अपेक्षा स्वेच्छा से बने गुलाम को चाहते हैं, अर्थात् महज एक दास नहीं, बल्कि एक प्रियदास । इसलिए उन्होंने स्त्रियों के विभाग को गुलाम बनाने का पूरा प्रयास किया है । बचपन से उन्हें सिखाया जाता है कि उनका आदर्श चरित्र पुरुषों जैसा आत्मनिर्भर नहीं और आत्मसंयमी नहीं, बल्कि दूसरों के प्रति सर्मपित होनवाली, दूसरों पर निर्भर रहनेवाली होना चाहिए । दूसरों के प्रेम में अपनी जगह बनाना और स्वयं को पूरी तरह नकार देना ही उनका परम कर्तव्य है, ये दूसरे यानी कि पति बच्चे और पिता ।’’[५]

नंदी के जीवन में शादी के बाद गुलामी ही है । पुत्री के जन्म के समाचार देने पर भी कर्नल घर नहीं आता – मृदुला गर्ग के ये वाक्य इस स्थिति को और भी स्पष्ट कर देते हैं, ‘‘प्रेमहीन शरीर संबंध जो भारतीय विवाह पद्धति की स्वाभाविक स्थिति है जो भयानक आत्म पीड़न के अलावा कुछ नहीं है ।’’[६]

(३) तिरस्कृत नारी

नंदी का पति ही उसके परिवार में उसका दुश्मन था । सदैव तिरस्कृत करता है – पिता के मृत्यु पर घर आया कर्नल नंदी को ये कहकर साथ नहीं ले जाता । ''मुझे दिनरात दौरे पर रहना पड़ता है, न हो तो थोड़े दिन मायके रह आओ, सुविधा होने पर तुम्हें बुला लूंगा ।''[७]

इस प्रकार कर्नल पत्नी पुत्री को सदैव तिरस्कृत करता रहा उसके प्रेम जिम्मेदारियों के प्रति लापरवाह रहा । यह उसके बेमेल जीवन की विडंबना थी । मायके में थोड़े दिनों के बाद नंदी की उपेक्षा, तिरस्कार होने लगा । एक–स्त्री दूसरी स्त्री के दुःख पीड़ा को समज ने के लिए तैयार नहीं है । भाभी सदैव ताना देती, ''कोई न कोई बात तो हुई ही होगी जो खसम ने दूध की मक्खी–सा फेंक दिया । ऐसी शरम थी तो भाई की छाती पर मूंग दलने क्यों आ गई ।''[८]

(४) मजबूर नारी

अपमानित होते होते नंदी का स्वाभिमान भी मर गया और वह मजबूरन पुत्री को लेकर कलकत्ता आ गई । यह निर्णय करके की अगर पति ने स्वीकार नहीं किया तो हुगली नदी में डूब मरेगी । ऐसे वैवाहिक जीवन के लिए मीना पंड्या ने ठीक लिखा है, ''कुछेक लोगों का विचार है – विवाह संस्था क्षतिपूर्ण साबित हुई है । विवाह पूरी जाति को विकृत करने में, प्रेम से शून्य परिवार बनाने में, मनुष्य को विकृत करने में अधार्मिक बनाने में हिंसक बनाने में सबसे बड़ी संस्था साबित हुई है ।''[९]

(५) उपेक्षिता नारी

पति के वैभवी आलिशान बंगले में भी नंदी का कोई स्थान नहीं है । कर्नल उसका स्वागत इस प्रकार करता है । ''देखो, आ गई हो, अब भुगतना भी पड़ेगा । आने से पहले एकबार पूछ भी नहीं सकती थी । मुझे अक्सर

दौरे पर बाहर रहना पड़ता है । रात, आधी रात मेरे कमरे में दसियों तरह के मिलने वाले आते रहते हैं । तुम्हें इसी कमरे में रहना होगा । मेरे किसी काम में तुम दखल नहीं दे सकोगी अगर इस समझौते के लिए तुम तैयार हो तो शौक से रहे ।''[१०]

पुरुष अपने घर, बंगले में अपनी इच्छानुसार पत्नी को उसमें रखेगा । भारतीय मानसिकता में लड़की को सदेव 'परायाधन' माना जाता है । शादी के बाद भी उसे कोई अपना नहीं दूसरे घर की मानता है । स्त्री का अपना घर कहाँ है ? इस प्रश्न का उत्तर ढूँढ़ने के लिए ही नारी चेतना जरूरी है ।

शिवानीजी ने लिखा है कि – ''जिस निर्विकार भाव से नंदी ने आप ही अपने दुर्भाग्य का वरण किया वह वास्तव में स्तुत्य था । दिनभर अपने कमरे में बैठी रामायण पढ़ती । कलकत्ता आये एक माह से ऊपर हो गया था । और वह कर्नल को केवल एक ही बार देख पाई थी ।''[११]

नंदी कलकत्ता आने पर भी अपनी मानसिकता बदल नहीं पाई । अपने ढंग से रहती है । ''मैं इन चीनी के बर्तनों में चाय-शाय नहीं पीवे हूँ । बिटिया दूध पी लेगी और चीजें उठा लो, आज तो मेरी एकादशी है । मैं तो फल खाँऊ सो ही ले आईयो ।''[१२]

डॉ. विमला शर्मा ने लिखा है – ''पति उपेक्षा, अधिकार भावना, अविश्वास, कलह, नये-पुराने विचारों का संघर्ष, पतिव्रत का एकांगी आदर्श, आदि महत्त्वपूर्ण कारण कहे जा सकते हैं जो परिवार में नारी के प्रति असहिष्णुता की भावना रखते हैं ।''[१३]

(६) गंवार फूहड़ नारी

नंदी के साथ वैवाहिक जीवन के तनाव के लिए कर्नल सोचता ''काश ! नंदी में कहीं भी उसके सामाजिक स्तर को ग्रहण करने की गुंजाइश होती । जब कभी कर्नल उसे अपनाने का, उसे सुधार ने का संकल्प लेकर आगे

बढ़ता नंदी अपने फूहड़ पहनावे और बोलचाल के हथियार से उसे दूर ढकेल देती । कर्नल ने अब धोखा ही छोड़ दिया था, किन्तु पुत्री के भविष्य को वह किसी भी प्रकार नंदी के हाथों नहीं छोड़ सकता था ।"[९४]

पुत्री अहल्या की परवरिश के प्रति लापरवाह नंदी का दुर्गुण यह था कि जब पति उस कुछ कहता नंदी अहल्या को मारने लगती, गालियाँ देती । शिवानीजी ने लिखा है "पति का क्रोध संतान पर निकालना, स्त्री जाति का स्वभाव सिद्ध अवगुण है ।"[९५]

कर्नल अहल्या को मद्रास की कॉन्वेट स्कूल में दाखिल कर आया । नंदी के विषाद को देखकर उसे घृणा, गुस्सा आया कहता है – "रो धोकर कोई लाभ नहीं, जिस स्कूल में मैंने अहल्या को डाला है, वहाँ का एक महीने का खर्चा ही दो सौ रुपया है । नंदी के प्रति उसे ऐसी नफरत न जाने क्यों थी, न वह उसकी कोई कैफियत पाता था, न पाना चाहता था ।"[९६]

कर्नल ने सिनियर केम्ब्रिज करके विदेश में पढ़ाई की है । वापस आकर विल्सन साहब का व्यवसाय संभाल लेता है । उसके स्वभाव में दंभ, अहम्‌है । कर्नल सफल व्यवसायी, अंग्रेजी भाषा, अंग्रेजी लिबास का आग्रही है । समृद्ध व्यावसायिक परिवारों में उसने इज्जत प्रतिष्ठा पाई है । आधुनिक परिवेश रहन–सहन, शानो–शौकत, बुफे पार्टी पिकनीक, शराब में रुचि लेने वाला इन्सान है ।

नंदी के चरित्र के प्रति सहानुभति होते हुए भी, हमें प्रतीत होता है कि कभी–कभी नारी स्वयं अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार लेती है । अपने अनपढ़ होने की, ग्राम्य–गँवार होने की स्थिति को आगे रखकर सब की सहानुभूति जीतना चाहती है । मगर जब उसे अपने आपको सुधारने का, सँवारने का मौका मिलता है, तब भी वह रुखाई से पेश आती है, मौका गँवा देती है । इतनी जागृति नंदी में नहीं है । पुरुषों का विरोध करना ही चेतना नहीं है उससे सहयोग, संवाद भी दाम्पत्य जीवन में जरूरी हो जाता है । नंदी कर्नल

के दाम्पत्य जीवन पर डॉ. हेमराज निर्मम के ये वाक्य सटीक बैठते हैं, ''विवाह के पश्चात् दाम्पत्य जीवन की मुख्य समस्या है जो नारी के सामने आती है । पति–पत्नी में यदि सामंजस्य न हो तो दाम्पत्य जीवन में अशांति बराबर बनी रहती है । पति पत्नी को दोषी ठहराता है और पत्नी उस अशांति का संपूर्ण उत्तरदायित्व पति पर डाल देती है ।''[१७]

(७) पति के व्यवहार–से दुःखी

कर्नल सदैव नंदी से नाराज क्रोधित रहता है । नंदी से हरबार मिले असहयोग उसे सदैव इस संदेह में रखता कि कहीं उसका काम, पार्टी, बिगड़ न जाय । और नंदी के परंपरागत स्वभाव, रुचि, खान–पान को लेकर–कठिन शब्दों में बात करता है ।

''तुमसे मैंने पहले ही दिन कह दिया था कि तुम मेरे किसी काम में दखल नहीं दे सकोगी । कल मैंने दावत दी है तुम्हें भी दावत में आना पड़ेगा । दावत में तुमने अगर किसी तरह का पाखंड किया, या कच्ची, पक्की रसोई का बवेला उठाया तो मुझ से बुरा कोई न होगा ।''[१८]

(८) पति पर अधिकार

अनपढ़ गँवार नंदी के दिल में पति के प्रति प्रेम है । भारतीय नारी अपने पति का बँटवारा किसी से नहीं कर सकती । पार्टी में मेहमानों से हाथ कैसे मिलाया जाय यह शिष्टाचार कर्नल नंदी का हाथ पकड़ कर सिखाता है । तब नंदी ने महसूस किया कैसी भूल थी उसकी, पति की ममता उसने त्याग दी ? पार्टी में कर्नल मल्लिका की घनिष्ठता, खिलवाड देखकर नंदी दुःखी हो जाती है ।

''संसार में कौन–सी पत्नी होगी जिसका हृदय अपने पति के पार्श्व में बैठी सौत को देखकर खिन्न नहीं हो उठता ।[१९] ''अपने जिस हृदय को वह

शुष्क समझ बैठी थी, वह तो अभी–भी रस से छलक रहा था । ईर्षा से वह काँप उठी, सौतिया डाह उसकी माँस–मज्जा को दग्ध कर उठा ।''[२०]

''अपने सौंदर्य भोगी पति पर, नंदी को सहसा घृणा हो आई, कसकर मल्लिका और कर्नल को चाँटा मारने को वह व्याकुल हो उठी पर बड़ी चेष्टा से उसने अपने को रोक लिया ।''[२१]

(६) त्यागी, आध्यात्मिक नारी

नंदी अपने पति को ही परमेश्वर मानने वाली, एकांगी अधिकार रखनेवाली भारतीय नारी है । ससुराल, मायका, भाई, भाभी द्वारा की गई उपेक्षा, पति द्वारा की गई शाब्दिक कटु आलोचना किसी को लेकर वह इतना दुःखी, क्रोधित नहीं हुई थी । मगर मल्लिका कर्नल की घृष्टता देखकर उसका गुस्सा, स्वमान, चेतना जागृत हो गयी । और उसने निर्णय ले लिया अब वह पति के घर में नहीं रहेगी ।

''गुरुदेव अस्सी साल के हो चुके हैं, आपकी सेवा यथेष्ट कर ली, फिर आपकी सेवा करनेवाले बहुत हैं । गुरु के चरणों में रहकर दिन काट लूंगी ।''[२२] इस प्रकार अपने अस्तित्व की जागृति स्वाभिमान की रक्षा इतनी संपत्ति वैभव विलास को छोड़कर चली जाती है ।

जिद्‌दी दंभी कर्नल ने भी धीरे–धीरे समाज में यह समाचार फैला दिया की ''मिसेज पांडे ने संन्यास ग्रहण कर लिया है ।''[२३]

श्री मधुसंधु ने लिखा है – ''विवाह संस्था अब परिस्थिति जन्य संतुलन चाहती है । वैवाहिक जीवन में अब पति को पत्नी की इच्छाओं, आकांक्षाओं, उसकी रुचि, अरुचि, उसके विरोध सर्मथन को ध्यान में रखना ही होगा । अन्यथा दाम्पत्य जीवन में दरारें पड़ने लगेंगी, और किसी तीसरे के प्रवेश के लिए जगह मिलेगी । कोई भी इन्सान ऊब भरी जिंदगी जीना नहीं चाहता ।

अपने आपको जिंदा रखते हुए जीना ही वास्तव में जीना होता है । स्त्री भी मनुष्य है । और वह भी अपने को जिंदा रखते हुए ही जीना चाहती है ।''[२४]

(२) मल्लिका

मल्लिका आधुनिक युग की पढ़ी-लिखी स्मार्ट, कामकाजी नारी है । जो विचार-व्यवहार से स्वतंत्र है । अपने परिवार के आर्थिक अभाव के लिए कर्नल के यहाँ सेक्रेटरी की नौकरी करती है ।

(१) कामकाजी नारी

''मल्लिका के पति का एकसीडंट हो जाने के बाद वह ही कर्नल की प्राईवेट सेक्रेटरी है । कर्नल के सारे कारोबार की जड़े मल्लिका की मुट्ठी में थी ।''[२५]

घर में सास-ननंद के ताने सहन करती थी । और घर के बाहर नंदी, शांता, नौकरों द्वारा उसकी अपकीर्ति फैलाई जाती थी । इस प्रकार अपने साथी कर्मचारियों के साथ ज्यादा मेल-जोल स्वतंत्रता मुक्तता उसे बदनाम कर देती है । चाहे वह कितनी कार्यकुशल क्यों न हो ।

(२) सुंदर, कुशल सेक्रेटरी

मल्लिका में कोर्पोरेट जगत की सूझ-बूझ पुरुष की इच्छा को पहचानने का हुनर, सहयोग, त्याग, तत्परता है । कर्नल की शानो-शौकत पार्टी-डिनर शराब में सहयोग देती है । इन सभी सद्‌गुणों ने कर्नल को जीत लिया था ।

''मल्लिका के पास निजी सौंदर्य पहले भी सामान्य ही था । किंतु इसी ईंट-पत्थर से उसने अपने सुरुचि पूर्ण श्रृंगार प्रसाधन की मित्ति पर ही अपने व्यक्तित्व का सुदर्शन महल खड़ा किया था ।''[२६]

''पुरुष को क्या केवल नारी का सौंदर्य ही बाँधता है ? कभी-सुंदरी पत्नी, पति को वश में नहीं कर पाती और कभी-काली, कलुटी, चुडैल-सी

बदशकल स्त्री भी सुंदर पुरुष को अपने काले चरणों का दास बनाकर छोड़ देती है ।"[२७]

"मल्लिका की मादक रसीली आँखों ने उसके मादक यौवन की बागडोर सम्हाल ली थी । उस चंचल मुखरा रमणी के कटाक्षों में, हंसी में, आचरण में, कहीं भी संयम का अंकुश नहीं था । कर्नल उसकी और देखता तो आँखों में लाड़ छलक उठता ।"[२८]

मल्लिका कर्नल नंदी के बीच आकर उसके दाम्पत्य जीवन को तोड़ने का कारण बन गई । मगर मल्लिका में सद्गुण भी है ।

(३) मातृत्व भाववाली

कर्नल की बेटी अहल्या को वह माता की तरह प्रेम करती है । "जिस बच्ची अहल्या से उसके रक्त मांस का भी कोई रिश्ता नहीं था, उसीके लिए वह कभी रात-भर बैठी रहती । उसके लिए खाना बनाती, कपड़े खरीदती, अपनी एक से एक दामी साड़ियाँ, आभूषण उसने अहल्या को उपहार में दे डाले थे । कर्नल की पार्टी, दावत, अहल्या की पार्टी का वह आयोजन करती ।

"अहल्या भी मल्लिका के स्नेह-शासन-व्यक्तित्व से बँधी हुई थी । मल्लिका के शासन में कहीं भी कठोरतापूर्ण स्वामित्व की भावना नहीं थी । वह था केवल स्नेह का शासन । मल्लिका अब श्रृंगार की नहीं, वात्सल्य की मूर्ति थी ।"[२९]

मल्लिका कर्नल के जीवन की घड़ी की चाबी थी, उसके बिना उसके कोई कार्य सार्थक नहीं होते फिर भी कर्नल के जीवन में उसका स्थान दोयम दरज्जे का ही रहा था । वह उसे अपने पहाड़ी समाज बिरादरी से दूर रखता था । अर्थाभाव से मल्लिका बिक्री की चीज मानी गई, खरीददार है कर्नल । मन से इन संबंधों की आवश्यकता, गहराई माननेवाला पुरुष समाज

के सामने अपने इन संबंधों की स्वीकृति नहीं देता । क्योंकि सद्गुणों के रहते हुए भी कर्नल ने मल्लिका को उपयोग की दृष्टि से देखा है । ऐसी अवस्था में समाज के तानों और आपत्तियों का सामना स्त्री को ही करना पड़ता है ।

(३) अहल्या

(१) अभावपूर्ण बचपन

अहल्या ने बचपन में ही माता पिता के तनावपूर्ण संबंध देखे थे । मामा के घर, बालिका अहल्या का शैशव अभावों में बीता था । वह माँ के जीवन की करुण कहानी अपने गुड्डे-गुड्डियों से कहा करती थी ।

नंदी उसे लेकर जब कर्नल के पास कलकत्ता आ पहुँची तब अहल्या खाने-पीने की चीजों पर टूट पड़ती है । नंदी जब मना करती तो कहती है - ''मामने दाल मोठ ले दी थी, बिस्कुट थोड़े ही ले दिये थे ? आहा इनके बीच मीठा भरा है । चुन्ना-मुन्ना दीपा आयेंगे तो धूता दूंगी सालों को ।''[३०]

पिता उसके लिए कानकट्टा, उल्लू का पठ्ठा, साला था । कुछ कहने पर रोती हुई पूरे घर में कुहराम मचा देती । ऐसी गंवार लड़की को ठीक करने कर्नल उसे मद्रास कोन्वेट स्कूल में भर्ती कर देता है ।

(२) उच्च शिक्षा प्राप्त

कॉन्वेट स्कूल में मादाम ने अहल्या के व्यक्तित्व को घिस-माँजकर परिस्कृत कर दिया था । वह अंग्रेजी रहन-सहन, पहनावा - अपना लेती है । ''अहल्या जब छुट्टियों में घर आई तो, उसने एक ही बार अपनी माँ के लिए पूछा, उसके मानस पटल से नंदी की मूर्ति धीरे-धीरे धुँधली पड़ शून्य में विलीन हो गई थी और उसका स्थान ले रही थी मल्लिका ।''[३१]

अहल्या के मित्र वृंद में ज्यादात्तर विदेशी-विधर्मी मित्र हैं । कर्नल ने अहल्या को पूरी स्वतंत्रता दी थी ।

(३) आधुनिक आज्ञाकारिणी

स्वतंत्रता होने के बाद भी अहल्या में आंतरिक संस्कार–समझदारी ज्यादा है । मल्लिका से पूछे बिना बाहर पाँव नहीं रखती । और कर्नल–मल्लिका के संबंधों को भी उदार दृष्टि से देखती है ।

“आधुनिक अहल्या को पिता और मल्लिका के अद्‌भुत रिश्ते का ज्ञान नहीं था । ऐसा नहीं था, किन्तु वह भी मल्लिका को सचमुच प्यार करती थी ।”[३२]

पढ़ी–लिखी–अहल्या में निर्दोषता, निखालसता है । वह पहाड़ के व्यंग्य ताने, समझ नहीं पाती, इसलिए सुभद्राताई और तुहिना के द्वारा बात–बात पर व्यंग्य करने से त्रस्त हो जाती ।

“पर्वतीय समाज ने उसे दूध की मक्खी – की भाँति निकाल कर फैंक दिया था । अब क्या वह फिर कभी पहाड़ आ सकेगी ?”[३३]

अहल्या धार्मिक पाखंड, अंधश्रद्धा, साधुओं पर विश्वास नहीं करती । पहाड़ पर घुमते वक्त उसने दो साधुओं की बात चीत सुनी “वैसे तो साली दूसरी छोकरी ही तमंचा था । यहीं से एक पहाड़ी छोकरी को ले जाकर मैंने हैदराबाद मैं सात हजार में बेचा था ।”[३४]

जंगल में अपनी बुद्धि हिंमत से रास्ता निकालकर बचके निकल जाती है ।

(४) पस्तहिम्मत प्रेमिका

परंपरावादी, दंभी कर्नल अहल्या का रिश्ता उससे पूछे बिना पहाड़ के शिरोमणि पंत के लड़के सर्वेश्वर से तय कर देता है – जो आइ.ए.एस. था । जबकि अहल्या वसंती के मामा का लड़का राजू को मन ही मन चाहती है । आधुनिक अहल्या को आधुनिक पिता कर्नल के दोहरे व्यक्तित्व का सामना करना पड़ा ।

"बेटी मेरी आर्थिक स्थिती अब उतनी सुविधाजनक नहीं रही । कितने ही उद्योगपतियों पर कीचड़ उछाला जा रहा है । मैं भी चपेट में आ जाऊँ कह नहीं सकता । सर्वेश्वर अधिक योग्य लड़का है । कुछ ही दिनों में वह सेक्रेटरी के पद पर पहुँच जायेगा । तुम्हें वे सब सुविधाएँ दे सकता है, जिनका तुम्हें अभ्यास है । तुम बहुत समझदार लड़की हो । तुम्हें मैंने ऐसी शिक्षा दी है कि मेरी आज्ञा का उल्लंघन तुम कभी नहीं करोगी ।"[३५]

अहल्या पढ़ी लिखी होने के बाद भी पिता के रक्तचाप का ख्याल करके कुछ नहीं बोलती । कितने ही विदेशी मित्रों के साथ रहते हुए भी उसका दिल किसी पर नहीं आया । वह पहाड़ पर राजू को मन ही मन प्यार करने लगी है ।

मीना पंड्या ने लिखा है – "वास्तव में नारी के भीतर एक नारी होती है शाश्वत नारी । पुरुष के भीतर एक पुरुष होता है शाश्वत पुरुष । यह शाश्वत पुरुष और शाश्वत नारी आत्मा के धरातल पर एक–दूसरे से मिलने, एक दूसरे को पाने के लिए चिरकाल से एक–दूसरे की तलाश करते आये है ।"[३६]

अहल्या के मन की उदासी, प्रेम सुभद्राताई जान जाती है । वह अहल्या को बहुत समझाकर उसके प्रेमी के पास चली जाने के लिए भगा देती है ।

(४) सुभद्रा ताई

(१) गृहिणी

सुभद्राताई कर्नल के बड़े भैया की पत्नी है । पहाड़ पर उसकी घर गृहस्थी में उसका चलन है । उसका व्यक्तित्व ऐसा रोबिला है कि इसके प्रभाव के कारण ही तीन–तीन पढ़ी लिखी, बहुओं पर अपना काबू रख सकी है । और अपने घर की मर्यादा परंपराओं का पालन उससे करवाती है । सास–बूआ–ताइयों, पितामहों, दादियों आदि के विस्तृत परिवार में रहकर उसने

गृहिणी का कर्तव्य निभाया है । अपनी कितनी ही निजी–इच्छाओं अरमानों का गला घोंटा है ।

(२) मुँह–फट उज्जड औरत

सुभद्रा का बात करने का अंदाज ही कुछ और है । पहली बार पहाड़ आई अहल्या का सिर आते–जाते वक्त संकरे दरवारों से टकरता है । तब वह बोली, कैसे छोटे छोटे दरवाजे हैं पापा ? तब सुभद्राताई जवाब देती है ।

“ये इसीलिए छोटे बनाये गये हैं बेटी, कि घर में आयी हमारी अंग्रेजी पढ़ी–लिखी बहू–बेटियाँ भी सिर झुकाकर चलना सीख सकें ।”[३७]

उसके व्यंग्य में पहाड़ी समाज की मर्यादा है । गृहस्वामिनी होने के नाते तीन–तीन फेक्टरियों के मालिक कर्नल को भी डाँटती है । “क्यों लल्ला हमारी बंगाली देवरानी को नहीं लाये ? घर की लक्ष्मी को तो तुम बहा आये सुख ही होता तो बेचारी आज इस खुशी के दिन सर मुंडाये सुंडमसुंड जोगियों के पीछे थोड़े ही भागती ।”[३८]

सुभद्रा को नंदी के प्रति अवश्य सहानुभूति है । मगर विस्तृत परिवार के मर्यादावादी पुरुषों के सामने वह नंदी के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठा पाई । इसलिए अपने संपत्तिवान देवर को व्यंग्य करके अपना आक्रोश निकालती है । डॉ. विमला शर्मा ने लिखा है – “पुरुष प्रधान समाज की रचना होने के कारण भारतीय नारी के दाम्पत्य जीवन का स्थायित्व और अस्थायित्व आज भी पुरुष के ही हाथों में है । पुरुष जब चाहे नारी को जीवन साथी या सहचरी के रूप में अपनाए जब चाहे उसे त्याग कर अन्य दिशा में गतिमान हो जाए ।”[३९]

(३) मातृत्व भाववाली नारी

मुँहफट, कटु जबान सुभद्रा में मातृत्व का भाव भी मौजूद है । रूढ़िवादी कर्नल ने अहल्या का रिश्ता बिना पूछे ही कर दिया तब अहल्या का दुःख

सुभद्रा जान जाती है । पूछती है ''सच-सच बताना बिट्टो में तेरी माँ से बढ़कर हूँ । राजू से तेरा ब्याह कर दिया जाए तो कैसा ? मन का मेल न हो तो शादी ब्याह जिंदगीभर का पाप है । अपनी माँ को देख, आज-अभागी होती तो क्या न चाहने पर भी तुझे जिस किसी के गले ढोल सा बाँध दिया जाता ?''[४०]

(४) हिम्मतवान - विद्रोही नारी

पस्तहिम्मत अहल्या को सुभद्रा समझाती है कि ''तू क्या मोम काँच की गुडियाँ है जो जहाँ जाये गोदी में उठाकर ले जाए ? तीन दिन में आदमी चाहने पर आजकल सात-समुद्र पार भी उड सकता है । मेरे पास कुछ रुपये घरे है, तू ले चूपचाप चली जा ।''[४१]

''कहती हूँ, एक बार तेरे फेरे फिर जायेंगे, फिर क्या डर ? बदनामी होगी यही ना ? होने दे । उस ऊँचे ब्राह्मण कुल में जाकर किसी बहु की आजतक बदनामी नहीं हुई ? तू चली जा, मैं सब भुगत लूँगी । अपने बाप की बेटी हो तो कल इस घर में तुझे ना देखूँ ।''[४२]

सुभद्रा ताई के शब्दों में, भावना में विद्रोह भरा है । ऊँचे ब्राह्मण कुल के विस्तृत परिवार की जिम्मेदारियों को निभाते-निभाते नंदी और सुभद्रा ताई का शोषण ही हुआ है । इसी खानदान की बेटी को भगाकर अपना विद्रोह संतुष्ट करती है । अहल्या को उसका प्यार प्राप्त करवाने में सहाय करके ढोंगी दंभी, मर्यादावादी कर्नल को भी सबक सिखाती है ।

तीन दिन के बाद राजू के साथ अहल्या के फेरे हो गये । इस प्रकार गृहिणी सुभद्रा से मर्यादा, शोषण, हटाने का काम शिवानीजी की लेखिनी ने किया है । अपने निर्णय का कोई दुःख अहल्या को नहीं है । मृदुला गर्ग ने ठीक कहा है -

“होश–हवास में पूरे विवेक के साथ किया गया निर्णय, यह बात समाज के उन मुखौटों को उतारती है, जिसने आज तक स्त्री को छला है । अब स्त्री सही क्या है गलत क्या है ? इसका निर्णय खुद करती है । इसका विवेक जागृत है । विवेक से लिया गया कोई भी फैंसला अपराध कैसे निर्माण कर सकता है ?”[४३]

इस प्रकार बेमेल दाम्पत्य जीवन, रूढ़ियाँ, आर्थिक असमानता, अभावों के सामने चारों नारी पात्रों ने अपने अपने अस्तित्व को लेकर जागृति दिखाई है ।

(२) ‘श्मशान चंपा’ उपन्यास के नारी पात्र

आर्थिक असमानता अभाव के कारण पारिवारिक समस्या और पहाड़ी समाज की वैवाहिक संकीर्णता, सामाजिक समस्या के सामने नायिका की चेतना ।

इस उपन्यास में आर्थिक असमानता अभाव से सामाजिक समस्या उत्पन्न हुई है । फूल जैसी नायिका चंपा की जिंदगी स्मशान की तरह रसहीन हो जाती है ।

(१) चंपा

(१) उच्च शिक्षा, प्राप्त उच्च विचार, सुंदर नारी

चंपा धरणीधर की पुत्री है, डॉक्टरी की पढ़ाई कर ली है । अंतरजातीय विवाह को लेकर चंपा का दृष्टिकोण हकारात्मक है । “अपने समाज में यदि सुयोग्य पात्र नहीं जुटता तो दूसरे समाज को अपनाने में भला क्या दोष है ? अपने ही समाज में कन्यादान निभाने की मूर्खता के पीछे हमारा कुमाऊँ कैसा चौपाट हुआ जा रहा है । यदि हमारा दृष्टिकोण ऐसा ही संकीर्ण बना रहा तो एक से एक मौरोन को जन्म देंगी हमारी पर्वत कन्याएँ ।”[४४]

चंपा के विचारों में कुमाऊँ समाज की वैवाहिक, रूढ़िगत सामाजिक संकीर्णता के सामने खुला विद्रोह है । भगवती ने उस विचार से डरकर चंपा के लिए लड़का ढूँढना शुरू कर दिया था ।

(२) पारिवारिक जिम्मेदारी उठानेवाली

चंपा के पिता धरणीधर भ्रष्टाचार की वजह से सस्पेंड हुए । छोटी बहन ने मुसलमान लड़के से भागकर शादी कर ली । आघात की वजह से पिता की मृत्यु हुई । ऐसे समय में चंपा अपनी शादी की कोई संमति नहीं देती । और पूरे परिवार की आर्थिक जिम्मेदारी अपने कंधो पर उठा लेती है । अस्पताल में डॉक्टर की नौकरी करने लगती है ।

(३) आज्ञाकारिणी पुत्री

चंपा में यह सद्गुण है कि वह अपनी इच्छाओं को छोड़कर सदैव परिवार की स्थितियों के बारे में सोचती है । भगवती अपना स्वास्थ्य बिगड जाने पर चंपा को शादी के लिए समझाती है । ''जब तूने शादी का प्रस्ताव सुनकर ही मना कर दिया था । तब तेरे पिता थे । अब नहीं है । जुही का कलंक एकबार प्रकट हो गया तो नुकशान होगा । हमारे रूढ़िगत पर्वतीय समाज की मनोवृत्ति तू जानती है । हमारी परिस्थिति अनुसार निर्णय लेना ना भूलना ।''[४५]

चंपा मां की इच्छा पूर्ण करने के लिए मधुकर का रिश्ता स्वीकार कर लेती है । दोनों एकदूसरे को प्रेम का उपहार भेज देते हैं ।

(४) सामाजिक संकीर्णता की शिकार

चंपा को एक दिन अपनी बूआ के पत्र से मालूम हुआ कि मधुकर के पिता ने रिश्ता तोड़ दिया है ।

''तुम माँ बेटियों ने मिलकर जुहीवाली बात छिपाई क्यूं ? मधुकर के पिता तुम्हारी माँ का दिया हुआ सगुन वापस दे गये हैं । पूरे पहाड़ में यह

बात फैल चुकी है ।''[४६] चंपा के साथ साथ भगवती बहुत दुःखी हो जाती है । ''जुही के अपराध ने मुझे भी बिरादरी से अपमानित कर दूध की मक्खी–सा ही निकालकर दूर पटक दिया है । तेरी सगाई टूट गई है । जी में आता है तुझे लेकर किसी अरण्य में चली जाऊँ । बेटी जहाँ हमारे हृदयहीन समाज का चेहरा हमें न देखे ।''[४७]

चंपा भगवती को लेकर बर्दवान की वीर भूमि के एकांत अस्पताल में डॉक्टर पद पर चली जाती है । जहाँ अपनी बहन की कलंक कथा, अपनी सगाई टूटने की बात, पिताजी के सस्पेंशन की बात छिपा सकती थी ।

डॉ. उषा यादव ने ठीक लिखा है – ''समाज की घिसी–पिटी रूढ़ियाँ जड संस्कार, और मृतः प्रायः मान्यताएँ भी पारिवारिक जीवन के लिए अभिशाप बन जाती हैं ।''[४८]

(५) जागृत नारी

चंपा मध्यम वर्ग की उन नारियों में आती है जिन्हें परिवार की आर्थिक परिस्थिति की वजह से अपनी इच्छाओं को त्यागकर घर से दूर कमाने जाना पड़ता है ।

अस्पताल बंगला शहर से सौ कि.मी. दूर था । ''बंगाल के प्रसिद्ध जमींदारों में सेनगुप्त की गणना होती थी । व्यवसाय के संदर्भ में उसे लम्बे दौरे पर बाहर रहना पड़ता था । उसकी उपस्थिति या अनुपस्थिति में कभी उसकी चिर रुग्णा पत्नी को दौरा पड़ गया तो उन्हें देखने अविलम्ब ही जाना होगा, यही उसके शर्तनामे की शर्त थी ।''[४९]

चंपा जागृत नारी है – पहली नजर में उसे मि. सेनगुप्त का व्यक्तित्व हिन्दी फिल्मों में आये खलनायक जैसा लगा । वह हर समय सावधान रहती है ।

(६) स्पष्टवक्ता, सावधान नारी

चंपा के साथ नौकरी करनेवाली मीनी चंपा को डॉ. शीला जोसेफ के बारे में बताती है । जिसका शारीरिक शोषण सेन गुप्त ने किया था । और शीला ने आत्महत्या कर ली थी । मीनी के विधवा होने के बाद मि. सेनगुप्त ने उसका भी शोषण किया था । ''मेरे वैधव्य का अशोच भी दूर नहीं हुआ था, और मैं बड़ी कोठी से सिसकती निकली थी । नर व्याघ्र मि. सेनगुप्त के उस बघनखे आघात को मैं क्या कभी भूल सकती हूँ ?''[५०]

मगर चंपा ने स्पष्ट कह दिया था । मेरे साथ यह नहीं चल सकता । मि. सेनगुप्त की उदंड पुत्री मयुरी अपनी सखी रिनी (जुही) का ऐबोर्शन करवाना चाहती है तो उसे भी स्पष्ट कह देती है कि ''आपके पिता अपनी कोठी में यही धंधा करवाने डाक्टरनियों की नियुक्ति करते है ।''[५१]

पैसों के बल पर संपन्न सेनगुप्त अधिनस्थ स्त्री डॉक्टरों का शोषण करता था । तसलिमा नसरीन इस समस्या को लेकर लिखती हैं कि – ''घर में रही स्त्री निरंतर बलात्कृत हो रही है । और घर के बाहर रास्ते या कार्यक्षेत्र में महानिर्देशक के दफतर में भी वह बलात्कृत होती है । स्त्री की सुरक्षा कहाँ है ? कहाँ जाकर खड़ा होने पर स्त्री के बलात्कृत होने की आशंका नहीं है । कहाँ है इस दुनिया में वह स्थान ?''[५२]

यदि कहा जाए कि दुनिया का शायद ही कोई हिस्सा हो, जहाँ नारी शोषण से मुक्त हो तो, कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी ।

(७) मधुकर से पुनः मिलन

नारी के जीवन में सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण, अत्यधिक प्रभावित करनेवाली संस्थाओं में विवाह संस्था तथा परिवार संस्था है । इन दोनों संस्थाओं के माध्यम से ही समाज में नारी का स्थान, महत्त्व, योगदान निर्धारित होता है । अंतरजातीय विवाह, इसमें भी लड़की किसी मुसलमान के साथ भाग

गई, यह बात पहाड़ी समाज जल्दी स्वीकार नहीं करता । जाति, समाज, बिरादरी के बाहर कर देते हैं । चंपा अतीत को लेकर जितना ही भागने की कोशिश करती अतीत उसके पीछे ही आता है ।

बम्बई मीटींग में जाने के लिए ट्रेन में सफर करते वक्त चंपा की मधुकर से मुलाकात हुई । वह अब भी उसे चाहता है । चंपा को बुखार था – साथ घर लाया । वहाँ जया के पत्र द्वारा चंपा को पता चला कि मधुकर के पिताजी के आग्रह पर जया की शादी मधुकर से तय हुई है । चंपा वापस बम्बई आ जाती है ।

(८) परिस्थितियों से शरणागति

चंपा को किसी अनजान पत्र से सूचना मिली की ''आप की बहन एक मर्डर केस में इन्वोल्व हो गई है । जिसने उसे विश्वास दिलाया था । कि जुही के डाईवोर्स होते ही वह उससे शादी कर लेगा । उसी के विश्वास घात पर जुही ने उसके सीने में गोलियाँ दाग दीं । बाद में पुलिस को सर्मपित हो गई है । आप अच्छा वकील रखकर उसे बचा सकती है ।''[५३]

एक दिन मधुकर के पिता रामदत्त भी आकर कहने लगे ''नौकर ने मुझे सब कुछ बता दिया है । मधुकर की सगाई जया से हो गई है । तो फिर तू इस पर डोरे डालने बम्बई क्यूं पहुँची ? यहाँ आकर तेरी सब किर्ती सुन ली । वेश्या ने दतक बनाकर रही सही कसर पूरी कर ली क्यों ? वाह ! क्या आदर्श कुल है ? पिता नौकरी से निकाले गए, बहन मुसलमान के साथ भागी और हत्या के अपराध में जेल काट रही है । स्वयं कन्या कुँवारे लड़कों पर डोरे डाल–डालकर अपने नये पेशे की शिक्षा ले रही है । तू चंपा नहीं श्मशान चंपा है । आज से आठवें दिन मेरे बेटे का विवाह है । इस बीच मेरे पुत्र का अनिष्ट मत करना समझी ?''[५४]

इतनी दूर भी कुमाऊँ की सनातनी ब्राह्मणों की परंपरा, मर्यादा चंपा का पीछा नहीं छोड़ती । डॉ. उषा यादव ने ऐसी परिस्थितियों के बारे में लिखा है कि – ''आज नारी नौकरी की तलाश में घर से बाहर निकलती है । जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरुष के साथ सक्रिय, भूमिका निभा रही है, बाहरी परिवेश में समायोजित हो रही है । किंतु एक और संस्कारों की पारंपारिक गरिमा, दूसरी और बदलती हुई बाहरी दुनिया में बढ़ती असुरक्षा उसे तलवार की धार पर चलने जैसी अनुभूति होने लगती है ।''[५५]

दोहरी जिम्मेदारी उठाने के बाद भी उसकी समस्या नहीं मिटती । दोषी ही मानी जाती है । और चंपा अपने आपको परिस्थितियों के शरण में रखकर हाथ पर लिखती है – श्री गुरु केनाराम की अधम दासी चंपा । परिस्थितियाँ सदैव उसके पक्ष में न होने के बाद भी चंपा ने सदैव संघर्ष किया ।

(२) भगवती

(१) परंपरागत भारतीय नारी

भगवती मध्यमवर्गीय गृहिणी है, जो सदैव पति, परिवार, बुजुर्गों की, पैसों की चिंता करती रहती है । अपने भरे पूरे परिवार की अचानक हो गई विषम स्थिति के पीछे भगवती को अपने श्वसुर का श्राप याद आया । विदेशगामी धरणीधर अपने बूढ़े माँ–पिता, जीर्णघर, कँवारी बहन के प्रति कर्तव्यों को भूल चुका था । तब बूढ़े पिता ने लिखा था । ''कुलांगार जितना कष्ट, जितनी ज्वाला तूने मुझे दी है, उसका द्विगुण तू पाएगा यही संसार का नियम है ।''[५६]

(२) प्रायश्चित करनेवाली

धरणीधर जैसे पुरुष आर्थिक स्थिति अच्छी होने पर आसमान में उड़ने लगते हैं । वास्तविक धरती पर से पाँव ऊपर उठा लेते हैं । और पूरे परिवार को कठिनाइयों में डाल देते हैं । अपने पद की महिमा में झूठे गर्व, दंभ से भर जाते हैं । अर्थ के पीछे ही भागते रहते हैं । पिता की मृत्यु के

बाद धरणीधर सिर के बाल कटवाने के लिए भी तैयार नहीं था । तब आत्मीय स्वजनों की भीड़ में एक बुजुर्ग ने अपनी जिह्वा के तीखे प्रहार से धरणीधर को तिलमिलाकर रख दिया था । "तुमने बाल नहीं कटाए तो हमारी बिरादरी का एक भी कँधा तुम्हारे पिता की अर्थी को स्पर्श नहीं करेगा । किसी डोम चांडाल को बुलाकर घाट पहुँचा आना । बड़ी शांति मिलेगी बूढ़े बाप को ।"[५७]

इस प्रकार धरणीधर के अहम, दंभ की वजह से भगवती को सदैव सहन करना पड़ा है । भ्रष्टाचारी पति को वह अंत तक माफ नहीं कर पाई क्योंकि पति ने बैंक के, फंड के सब पैसे कोठी बनाने में उड़ा दिये थे । सब का कर्ज चुकाने के लिए भगवती ने कोठी बेच दी थी ।

(३) परिस्थिति से समाधान

भगवती परिस्थितियों से समाधान करनेवाली भारतीय नारी है । पति की मृत्यु के बाद भाई के घर जाकर गृह कार्य करना स्वीकार कर लेती है । अपना स्वास्थ्य, बिगड़ने पर चंपा को भी शादी कर लने के लिए समझाती है ।

(४) संतानों का भला चाहनेवाली

भगवती भारतीय माँ है । अपने बेटे-बेटियाँ जो भी करें, वह सदैव उनका भला ही चाहती है । पति की मृत्यु पर आई अपनी ननद रुक्की बुआ जब जुही के बारे में पूछती है तो बड़े छल-बल से जुही के कारस्तानों की बात छुपा देती है । "वह तो अस्पताल में पड़ी है, पैर की हड्डी जो टूट गई है ।"[५८]

(५) दुःखी नारी

भगवती अपनी जाति बिरादरी के बहिष्कार, से जुही के कलंक, पति की मृत्यु आदि कारणों से दुःखी हो गई है । वैधव्य, निर्धनता आदि कारणों से

भाई के घर गृहकार्य करने वाली आया बन गई है । धीरे धीरे क्षय रोग लागू होता है और मृत्यु प्राप्त हुई ।

(३) कमलेश्वरी

कमलेश्वरी मिः सेनगुप्त की पत्नी–रानी कमलेश्वरी है ।

(१) नृत्यांगना की बेटी

कमलेश्वरी की नानी, मौसी, माँ, पैशेवर नृत्यांगनाएँ थीं । मगर कमलेश्वरी इस व्यवसाय से सदैव दूर रही है । मि. सेनगुप्त घर भर का विरोध मोलकर उसे ब्याह लाये थे । तब से वह रानी कमलेश्वरी बन गई है ।

(२) मनोरोगिणी

चंपा को रानी कमलेश्वरी के इलाज के लिए ही रखा है । चंपा ने उसे ऐनिमिक घोषित किया था, मगर कमलेश्वरी मनोरोगिनी है । उसे अक्सर दौरे पड़ते थे । जागने पर वह स्वयं बताती है कि यह रोग तन का नहीं, मन का है । मुझे मेरी स्मृतियों का बोझ ही मारे डाल रहा है । माँ ने पेशा छोड़कर गुरु की शरण ली । घर भर का विरोध मोल ये मुझे ब्याह लाये । अब यही मेरी काशी है चंपा ।''[५९]

(३) गृहिणी, चिंतित माँ

कमलेश्वरी, सुंदर, स्वस्थ, गृहिणी बन गई है । मगर विदेशियों के रंग में रंगी अपनी बेटी मयुरी की सदैव उसे चिंता रहती है । मयूरी के रहन–सहन व्यवहार की उसे सदैव चिंता है । उसे चिंता है कि ''हे भगवान बाप, बेटी दोनों ही एक–दिन मुझे घाट पहुँचाकर ही मानेंगे ।''[६०]

(४) समृद्ध नारी

आर्थिक असमानता ही इस उपन्यास में प्रमुख समस्या है । इसकी वजह से ही समृद्ध सेनगुप्त के यहाँ चंपा को नौकरी करने आना पड़ता है । चंपा जब मिसेज सेन गुप्त को देखने जाती है तो मि. सेनगुप्त के शयन खंड की सजावट देखकर ठगी–सी खड़ी रह गई । ''लगता था वह शयन खंड नहीं लाखों की लागत से तैयार किया गया कोई फिल्मी सेट है । कमरे में बिछे बहुमूल्य कारपेट के गुद–गुदे मलमल में उसके पैर ऐसे धँसे जाते, जैसे वह बालू के टीले पर खड़ी हो । द्वार पर लगे लेस के पर्दे बड़े करीने से अर्थ विभक्त कर सुनहरे फीतों में बाँध दिये गए थे । बीच में बारहसिंगे की सींगों पर टिकी मेज पर धरा डिचेंटर धरा था । गुलाबी रेश्मी–मसहरी, ऊपर उठी थी । जहाज से पलंग पर मिसेज सेनगुप्त सो रही थी ।''[६१]

इतना ऐश्वर्य होने के बाद कमलेश्वरी दुःखी थी ।

(५) उदार नारी

कमलेश्वरी को चंपा का चेहरा अपनी माँ के चेहरे जैसा लगता है । और इसलिए वह चंपा को कहती है अब मुझे छोड़कर कहीं मत जाना ।

जब मयूरी और मि. सेनगुप्त रेल अकस्मात में मारे जाते हैं । तब रानी कमलेश्वरी डॉ. मीनी से कहती है कि – ''उसे बुला दो मिनी, अब सारी संपत्ति उसी के नाम कर मैं कहीं दूर चली जाऊँगी ।'' वह स्वयं चंपा का सामान उठा के घर ले आती है । कहती है – ''ईश्वर ने मुझे एक ही संतान दी थी । किन्तु फिर उसी की इच्छा हुई, मैं अभागी कोखवंध्या ही न रह पाऊँ उसे भी छीन लिया । आज से तुम ही मेरी मयूरी बनोगी । आज लक्ष्मी ने तुम्हारा वरण किया है बेटी । मेरे गुरु की यही इच्छा हुई है । मैं अपनी चल–अचल संपत्ति आज ही तुम्हारे नाम कर दूँ, यही गुरु का आदेश है मुझे ।''[६२]

(४) जुही

(१) चंचल शरारती

जुही चंपा की छोटी बहन है । भगवती अपनी इस लड़की की शरारत से सदैव परेशान है । जुही के मित्र अकसर घर आते रहते थे । आधुनिक युग की पढ़ी–लिखी लड़की का चित्र जुही में देखने मिलता है । उसने अपने मुसलमान सहपाठी तनवीर बैग से भागकर शादी की थी ।

(२) अंतरजातीय विवाह और दुःखी

जुही अंतरजातीय विवाह तो कर लेती है, मगर बाद में दुःखी हो जाती है । चंपा को मिली तब अपनी दास्तान इस प्रकार बताती है । ‘‘ससुराल का वैभव देखकर मैं एकदम मूर्च्छित हो – गई थी । मगर मेरा अकर्मण्य पति मुझे कुछ भी नहीं दे पाया । उसकी जिंदगी केवल पुरुषों तक ही सीमित थी । उसके मित्रों को लिखे गए कुत्सित पत्रों की भाषा पढ़कर मैं घृणा से सिहर उठी, जो पुरुष किसी दूसरे पुरुष को प्रेयसी कहकर संबोधित कर सकता है, वह क्या कभी स्त्री से प्रेम कर सकता है ।’’[६३]

जुही की दास्तान में पुरुष को पुरुष के साथ संबंध (Homosexual), की समस्या, निष्फल प्रेम संबंध की कथा है । जुही का प्रेम क्षणिक आवेश है । डॉ. ज्ञानचंद्र शर्मा के कथनासुसार ‘‘प्रेम का अर्थ अब आत्मिक मिलन या जन्म जन्मांतर का साथ नहीं है । अब वह दैहिक भोग या क्षणिक आवेश का पर्याय रह गया है ।’’[६४]

(३) केब्रे डांसर, खूनी नारी

जुही पति से दुःखी है, जेठानी उसे क्लबों में ले जाती है । क्योंकि उसके पति को भी अफीम की लत थी । वहाँ जुही ने बैल डांस सिखा । रीनीखान नाम धारण किया । और भारत के प्रसिद्ध होटलों में नाच ने लगी, वह चंपा को बताती है कि ‘‘तनवीर वॉझ ए जेंटिलमेन । उसने पूरी आजादी

दे दी है । ''दीदी कैसा ही जैंटिलमेन क्यों न हो तनवीर, वह क्या कभी दूसरे की संतान ग्रहण करेगा ।''[६५]

और जिसने जुही का विश्वास किया था । वह दूसरे व्यक्ति का कलब में ही खून कर देती है । जेल की सजा भुगतती है ।

(५) मयूरी

मयूरी मि. सुनगुप्त रानी कमलेश्वरी की इकलौती बेटी है । आधुनिक शिक्षा सुविधाओं में पली स्वच्छंदी, उददंड युवा लड़की है । किसी की भी बात की गंभीरता उसे नहीं है । बड़े बुजुर्गों से ठीक ढंग से पेश नहीं आती । अपनी माँ का भी हर वक्त मजाक उड़ाती रहती है । ''माँ–बाप हमारे कपड़ों कप्तान, पहनावे की चिंता ना करे । ऐसे ही कप्तान मैंने जर्मन एम्बेसी में पूरे सातसौ में बेचे थे ।''[६६]

विमेन्स होस्टेल में रहनेवाली आधुनिका मयूरी अपनी सखी रिनीखान का एबोर्शन करवाना चाहती है । ''मैं ही उसे यहाँ ले आई हूँ । इतनी बड़ी कोठी में किस कमरे में क्या हो रहा है, यहाँ किसी को पता ही नहीं चलेगा । बीमारी इतनी घातक है जो हम जैसी कँवारी लड़कियों के लिए कैंसर साबित हो ।''[६७] आधुनिक युग की स्वछंद युवा नारी मयूरी है । जिसे माता–पिता सबकुछ दे पाये हैं मगर संस्कार नहीं दे पाये ।

वह चंपा से भी उद्धताई से बात करती है । ''गुरुजन ? माँ इन से तुम गुरुजन कहती हो ? क्यों जी डाक्टरनी साहिबा कितने साल की है आप ? क्या आपने गर्भ से भूमिस्थ होते ही भागकर मेडिकल कालेज ज्वाइन कर लिया था ।''[६८]

छोटी उम्र में ही वह एबोर्शन आदि के बारे में जानने लगी है । उसे अपने पिता की संपत्ति का अभिमान है । संपत्ति की वजह से ही सब कुछ

खरीदना चाहती है । ऐबोर्शन जैसी मूल्यहीनता की बात उसके लिए साहजिक है । उसके शब्दों में "अब तो ऐबोर्शन लीगेलाइज्ड हो रहा है ।"[६६]

इस प्रकार मयूरी जैसे युवा-युवतियाँ ही समाज में दूषण फैला रहे हैं । मगर चंपा उसे भी मना कर देती है ।

उपन्यास के नारी पात्र अपनी अपनी भूमिका के अनुसार कर्तव्य निष्ठ है और कर्तव्य निभाते-निभाते अपनी चेतना बनाये रखते हैं ।

(३) 'कालिंदी' उपन्यास के नारी पात्र

दहेज प्रथा, पहाड़ी वैवाहिक बंधन, रीति रिवाज की आँचलिकता का वर्णन इस उपन्यास में हुआ है ।

(१) अन्नपूर्णा

कालिंदी की माँ अन्नपूर्णा ज्योतिष-कुंडली के आधार पर परित्यक्ता हुई थी । अन्नपूर्णा की कुंडली के ग्रह अच्छे नहीं हैं इसलिए ससुराल वाले अत्याचार करते हैं । परिणाम पिता के घर वापस आ गई । गाँव की पंचायत भी बैठी मगर अन्नपूर्णा के स्वमानी पिता उसे नहीं भेजते । १५ वर्षीय अन्नपूर्णा ने भी स्पष्ट कह दिया । "मैं अब वहाँ कभी नहीं जाऊँगी ।"[७०]

१५ वर्षीय आयु में ही अन्नपूर्णा अपने ससुराल वालों की अन्याय पूर्ण स्थिति के प्रति जागृत है और विरोध करती है । यह उसकी चेतना-जागृति है ।

कुंडलियों में अच्छे-बुरे ग्रहों के कारण लड़कियों को, बहुओं को इन्सान ही नहीं माना जाता । पहाड़ी समाज के उच्च जाति के ब्राह्मणों की यह संकीर्ण मानसिकता थी ।

अन्नपूर्णा तेजस्वी, बुद्धिमान स्त्री है । अपनी समवयस्क लड़कियों के मानसिक स्तर से ऊपर थी । रहस्यमयी भाषा, ग्रह-नक्षत्रों, कला एवं ॠतु, वेदांत पढ़ती थी । पिताजी की मृत्यु के बाद घर का कार्यभार, भाइयों को

पढ़ाने की जिम्मेदारी संभाल लेती है । एक बेटी को जन्म दिया । अन्नपूर्णा के पुलिस अफसर भाई देवेन्द्र संतान हीन थे । कानूनी कार्यवाही करके बेटी को गोद ले लेते हैं । नाम रखा कालिंदी ।

(२) कालिंदी

(१) समृद्ध बचपन, उच्च शिक्षा प्राप्त

कालिंदी के मामा दिल्ली में बहुत बड़े अफसर थे । उन्होंने कालिंदी को गोद लिया, बहुत लाड प्यार से परवरिश की । मामा ने उसे मेडिकल का अध्ययन करवा के डॉक्टर बनावाया ।

(२) कर्तव्यपरायण, उच्च विचार

कालिंदी व्यवहारकुशल, कर्तव्यपरायण, बुद्धिमान स्त्री है । मामा–मामी उसके लिए डॉक्टर लड़का ढूँढ़ते हैं । रिश्ता तय हुआ तब वह अपनी सखी माधवी को बताती है कि ‘‘सच कहूँ तो मुझे अपने इस रिश्ते के लिए न उत्साह है न कौतुहल, मामा मामी, अम्मा की परेशानी समझकर मैंने यह रिश्ता मंजूर किया है ।’’[७१]

कालिंदी कामकाजी नारी है विवाह के समय सजना संवरना उसे अच्छा नहीं लगता ‘‘मुर्दा चीरने में भी ऐसा डर नहीं लगता, न जाने क्यों भीतर से थरथराती हूँ – यह सब नौटंकी मुझे अच्छी नहीं लग रही है ।’’[७२]

(३) स्पष्टवक्ता, हिंमतवान

कालिंदी स्पष्ट वक्ता, निडर नारी है, अपनी नैतिक हिंमत से अन्याय–अन्यायी व्यक्ति का सामना करती है । विवाह के वक्त हल्दी लगाने की रश्म पर पंडितजी जब पिता का नाम पूछते हैं तो कालिंदी अपने मामा देवेन्द्र भट्ट का नाम बताती है । क्योंकि उन्होंने ही कालिंदी की परवरिश की है ।

अपनी माँ और अपने आपको, वर्षो से भूल गये पिताजी शादी के समय ही बाधा डालने आये तब, निर्भीक होकर कहती है – ''बाप का कौन सा कर्तव्य निभाया है आपने ? जो आज अचानक आप बाप बनने चले आये ? मेरे बाप ये हैं देवेन्द्र भट्ट !!''[७३]

(४) दहेज प्रथा का विरोध

कालिंदी के लिए उसके मामा ने केनेडा स्थित डॉक्टर लड़का ढूँढ़ा । लड़की विदेश जायेगी, शादी में गृह उपयोगी चीजें ना देकर कैश देना चाहा । कालिंदी इस व्यवस्था से बेखबर थी ।

द्वाराचार के समय ही लड़केवाले पचास हजार रुपयों की माँग करते हैं । मामा घर के भीतर पैसे लेने के लिए जाते हैं । तब कालिंदी रास्ता रोककर कहती है । ''आपने तो कहा था कि एक संभ्रात कुल के ब्राह्मण स्वयं हाथ फैलाकर, मुझे माँगने इतनी दूर से चले आए हैं । आपने यह नहीं बताया था कि एक दरिद्र शराबी, भिखारी अपना बेटा बेचने आ रहा है ।''[७४]

''श्रीमान आपका बेटा हमें नहीं खरीदना जहाँ आपके पुत्र का मुँह माँगा दाम मिले, वहीं जाकर बेच आइए । इसी क्षण अपनी बारात लौटा के ले जाइए ।''[७५]

अतिथियों से क्षमा माँगते हुए कहती है कि ''मुझे इस लेन–देन की शर्त के बारे में ज़रा भी पता होता तो मैं यह घड़ी कभी आने ही न देती ।''[७६] इस प्रकार निर्भीक हिम्मतवान कालिंदी ने अपनी पूरी चेतना, जागृति के साथ दहेज की प्रथा का विरोध किया । दहेज ने नारी के जीवन को नर्क बना दिया है । पैसों की लालच में देहज रूपी राक्षस फैला है । अर्थ संपन्न लोग भी इस. लालच को मिटा नहीं सकते । इस उपन्यास में वर्षो से विदेश पढ़ा पला लड़का अपने पिता के सामने कुछ नहीं बोल पाता । बिना दहेज लड़की को जलाया जाता है । अथवा यह बारात लौटाई जाती है । दहेज को मिटाने के

लिए मानवतायुक्त विस्तृत खुल्ली मानसिकता चाहिए । दहेज की वजह से ही लड़की का जन्म उपेक्षणीय है । कालिंदी जैसी पढ़ी-लिखी आत्म निर्भर नारी इसका सामना अवश्य कर सकती है ।

डॉ. सुष्मा धवन लिखती हैं कि "वैयक्तिक व्यक्तिपरक उपन्यासों में सामाजिक मूल्यों, सामाजिक व्यक्तित्व और सामाजिक जीवन की भी अभिव्यक्ति होती हैं, उसमें उपन्यासकार का प्रधान लक्ष्य व्यक्ति के व्यक्तित्व उसके वैयक्तिक मूल्यों और उसकी स्वतंत्रता को प्रतिष्ठित करने का रहता है ।"[७७]

(५) पुरुष विरोधी विद्रोही नारी

कालिंदी को अपना विवाह टूटते जरा भी नैराश्य, छलना, प्रवंचना नहीं हुई थी । वह दिल्ली जाकर अपना डॉक्टरी का व्यवसाय संभाल लेती है । मगर उसे दुःख, प्रवंचना क्रोध अपनी सखी माधवी के प्रेमी अखिलेश के दुर्व्यवहार से होता है - जो माधवी की अनुपस्थिति में उसे बाँहों में भर लेता है । कालिंदी माधवी को कुछ नहीं बताती मगर अखिलेश ही माधवी को कालिंदी के बारे में उल्टी-सीधी बात बताता है । माधवी कालिंदी को बुरा भला कहने लगी । तब से वह पुरुष मात्र की विद्रोही बन जाती है ।

"उसी क्षण पुरुष मात्र की शत्रु बन उठी थी कालिंदी । छिः छिः ऐसी प्रवंचना, थोथे प्रेम का ऐसा ओछा प्रदर्शन क्या कभी नारी कर सकती है ।"[७८]

कालिंदी थोड़े दिन पहाड़ पर अपने घर आती है - अपने बचपन के मित्र बिरजू के साथ घूमती है । उसकी माँ अन्नपूर्णा को कुछ आशा हुई थी । मगर यहाँ भी गाँव के लोगों की संकीर्ण मानसिकता से नहीं बच पाती । गाँव की स्त्री अन्नपूर्णा को इसके बारे में खबर करते हुए कहती है - "यह तो अल्मोड़ा है लली यहाँ तो लोग ऐसी ही बातों से पेट भरते हैं । दाल भात से नहीं ।"[७९]

मगर कालिंदी तो बिरजू को अपना भाई–मित्र ही मानती है । दहेज को लेकर बारात ठुकराने वाली साहसी कालिंदी को कई नफरतों का सामना करना पड़ा । पहाड़ी समाज के कायदे कानून से अनजान कालिंदी मामा से पूछती है – क्या आपने सचमुच उन्हें बीस हजार एडवांस देकर पचास हजार फिर देने का वायदा किया था ? तब मामा बताते हैं – ''पहाड़ी लड़कों ने तो जैसे पहाड़ की लड़कियों से शादी न करने का संकल्प किया है । कब से दिया जलाकर हम दोनों तेरे लिए लड़का ढूंढ रहे थे । बता दे, मुझे ऐसा कोई पहाड़ी परिवार जहाँ एक न एक बंगाली, पंजाबी, इसाई या मुसलमान बहू न हो ? तेरे लिए यदि अच्छा–योग्य पात्र जुटा और उसकी किंमत भी हमें चुकानी पड़े तो हमें कोई आपत्ति नहीं थी ।''

हमारे समाज की कटु वास्तविकता का यहाँ चित्रण हुआ है । संपत्तिवान लोगों को मानवीय मूल्यों की कोई कीमत नहीं होती । लड़की का मूल्य भी दहेज की लेन–देन के आधार पर करते हैं । मिथ्यांडबर ऐसे संपत्तिवान लोगों का दुर्गुण है । कालिंदी की बारात लेकर आये लड़के के पिता कहते हैं ।

''ए लड़की तेरी यह स्पर्धा ? मैं दुबई में इस समय सबसे समृद्ध भारतीय हूँ । स्विमिंग पूल मेरा है । आलीशान महल है । मकराना से संगेमरमर मंगवाकर फर्श बनाया है, चार्टड प्लेन है ।''[८१]

कालिंदी को यह संपत्तिवान इन्सान प्रभावित नहीं कर सका । उसका मानना है – ''बड़े मामा आजकल हम पहाड़ियों को यही विदेशी ललक तो खाए जा रही है । ग्रीन कार्ड का होल्डर है तो बस टूट पडेंगे । भले ही वर के कान–नाक न हो ।''[८२]

(६) सेवाभावी नारी

कालिंदी दिल्ही से आकार थोड़े दिन पहाड़ पर रहकर गाँववालों की सेवा करती है । अपने मामा के मित्र वसंत मामा की सेवा करती है । वसंत मामा

का विदेश स्थित बेटा–विवाह–विच्छेद करके भारत लौटा तो उसने भी कालिंदी से विवाह का प्रस्ताव रखा मगर उसे भी मना करती है ।

(७) जिद्दी अभिमानी

निडर, निर्भीक कालिंदी में धीरे–धीरे अभिमान और जिद आ गये हैं । उसका व्यवहार वर्तन सामान्य न रहते हुए असामान्य बनता जा रहा है । दिल्ही में उस पर डॉ. जोशी के, माफी माँगते हुए कई पत्र आ चुके हैं, मगर उसे भी बिना पढ़े फाड़ देती है । यहाँ तक डॉ. जोशी पहाड़ पर उसके मामा से माफी माँगने और उसे पिताने लिये हुए पैसे वापस लौटाने आये । तब उसे भी अपमानित करती है । ‘‘आज तक इनके डैडी थे, इसी से आने की हिम्मत नहीं हुई । अब नहीं रहे तो शायद दहेज की रकम में दयावश कुछ कटौती कर हम पर कृपा करने पधारे हैं ।’[८३]

डॉ. जोशी जवाब देते हैं – ‘‘सोचा था कि यही पितृऋण चुकाकर आप सबसे उस अपराध के लिए क्षमा भी माँग लूँगा, जो मैंने कभी किया ही नहीं था । मुझे कुछ भी पता नहीं था, कि डेडी ने आप से कोई ऐसी बेहूदा माँग भी की है ।’’[८४]

डॉ. जोशी के इन शब्दों से पता चलता है कि रूढ़ि रिवाज की लालच से बुजुर्ग लोग भी अपनी पढ़ी–लिखी संतानों के जीवन में रोड़ा बन जाते हैं ।

(८) माँ, मामा की सीख

शिवानीजी स्त्री पुरुष समभाव समन्वय में विश्वास करनेवाली लेखिका है । कालिंदी जैसी कई सुधारावादी दृष्टिकोण रखनेवाली नारियों में अहम् जिद आ जाते हैं । वह पुरुष विरोधी ही बनती जाती है । तब उसके माँ–पिता को अपनी बेटी को पुरुष स्त्री के रिश्ते की अनिवार्यता को समझाना चाहिए । यहाँ पर कालिंदी के मामा–माँ यह कार्य करते हैं ।

कालिंदी के चरित्र का चित्रांकन करते हुए, शिवानीजी के विचार यहाँ रखना चाहूँगी, जो नारी जाति के लिए अनिवार्य हैं ।

''पुरुष और नारी में एक अंतर अवश्य है, एक दूसरे से उनकी तुलना करना मूर्खता है, क्योंकि न एक से दूसरे को बड़ा सिद्ध किया जाएगा, ना दोनों को भिन्न । नारी में यदि अहंकार है भी तो, वह एक न एक दिन उसके उस अहंकार को शासित करने वाले की स्वयं कामना करने लगती है । इसीलिए विवाह एक बायलोजिकल नेसेसीटी है । एकांकिनी, संगीहीन नारी फिर जीवन के सूर्यास्त से पहले ही धीरे-धीरे नारी का लालित्य खो बैठती है । और ऐसी ही विडंबना की लोग यह कह कर प्रशंसा करते है कि देखो, कैसे अद्‌भुत जीवट की लड़की है, क्या हिंमत से जिंदगी से जूझी है यह मर्दानी लड़की !!!!''[८५]

नारी मुक्ति या नारी चेतना का अर्थ यह नहीं की नारीत्व के लिए पुरुष के अस्तित्व को अस्वीकार करें । कालिंदी की माँ, अन्नपूर्णा कुंडली आदि में पूरा विश्वास रखती है । उसे अपना भाग्य दोष पूर्ण नजर आ रहा है । न अपने भाग्य में पति का सुख है न बेटी के भाग्य में । इसलिए वह कालिंदी को जो सीख देती है । वह प्रत्येक आत्मनिर्भर नारियों के लिए पाथेय है । ''संसार की कोई भी स्त्री मायके के सहस्त्र सुख भोगने पर भी एक दिन ऊबने लगती है । अपनी शक्ति, अपनी सामर्थ्य ही उसे डंक देने लगती है । इसलिए बेटी जो भी कदम उठाओगी, सोच समझकर उठाना अपने अहंकार को अपना शत्रु मत बनने देना ।''[८६]

अपनी बेटी के लिए यक्षिणी देवी माँ को भी प्रार्थना करती है - ''तुम जहाँ भी हो माई, मेरी पुत्री की रक्षा करो, मेरी ललाट लिपि उसके ललाट में मत उतारो माई ।''[८७]

इस प्रकार पूरे उपन्यास में हम आदि से अंत तक कालिंदी के व्यक्तित्व की चेतना को देखते हैं ।

(४) 'सुरंगमा' उपन्यास के नारी पात्र

राजनेताओं के राजनैतिक दाँवपेच, वेश्याजीवन, सत्ता का दुरुपयोग, भ्रष्टाचार, आदि समस्याओं के सामने नारी चेतना मुखरित है ।

उपन्यास में इन सभी समस्याओं से जुड़ी हुई है नायिका सुरंगमा के जीवन की कथा । जो सदैव जटिल परिस्थितियों में संघर्ष करती रही है ।

स्वयं शिवानीजी ने 'सुरंगमा' उपन्यास के बारे में लिखा है – "मैंने आजतक जितने उपन्यास लिखे उनमें कोरी कल्पना ही नहीं यथार्थ भी है ।"[८८]

कथानक में जिज्ञासा, सुसंगठितता, प्रभावोत्पादकता, मौलिकता, यथार्थता विद्यमान है ।

(१) गौहर जान

राजा प्रबोधरंजन राय चौधरी अपनी राजकीय प्रतिष्ठा के अनुसार कलकत्ता की मुजरा करनेवाली तवायफ गौहरजान को खरीदकर घर ले आते हैं । वेश्या होने पर भी गौहरजान गुणानुरागी, कलाकार, कला पारखी है । राजलक्ष्मी की माँ मर जाने के बाद वह राजलक्ष्मी को माँ–का प्यार देती है । अपने म्युज़िक टयुटर गजानन जोशी से राजलक्ष्मी को संगीत की शिक्षा दिलवाना चाहती है ।

गजानन की नैर्सगिक प्रतिभा देखकर, उसे कोठेवालियों दूर रखना चाहती है । "देखो गजानन, तुम उन कमीनियों को नहीं जानते, वहाँ पहुँचे तो एक ही कोठे के बनकर नहीं रह पाओगे, तुम्हारी दशा, भूखे, कुत्तों के बीच कौवे की गिराई गई हड्डी–सी हो जाएगी । सब तुम पर टूट पडेगी, फिर कोई सौतिया डाह से जली भुनी कमीनी, तुम्हें दूर किसी गडढ़ों में गाड़ देगी, और कुछ दिनों में खुद ही भूल जाएगी कि तुम्हें कहाँ गाडकर रखा है । अशरफ वहीं किशोर गायक था, जिसे उसी बदनाम बस्ती की हृदय हीन गायिकाओं ने ईर्षावश पान में पारा खिलाकर कूड़े के ड्रम में ठूँस दिया था ।"[८९]

गौहर जान के इन शब्दों में वेश्यानारी जीवन की हृदयहीनता, गंदगी, ईर्षा और मजबूरी दिखाई पड़ती है ।

(२) राजलक्ष्मी

नादान किशोरी राजलक्ष्मी राजा प्रबोधरंजन राय चौधरी की इकलौती बेटी थी । मातृप्रेमवंचिता राजलक्ष्मी गजानन की बातों में फँसकर उसके साथ भाग जाती है ।

गजानन के पिता एवं दादा वेश्यागामी थे । वह भी घाट–घाट का पानी पीकर घाघ बन गया था । ‘‘कुछ ही दिनों में राजलक्ष्मी को अपने जीवन की सैद्धांतिक भूल का आभास हो गया था । जिस व्यक्ति के चेहरे और सुकंठ के माधुर्य पर रीझकर पिता का राजसी वैभव छोड़ आई थी । तीसरे महिने उसका नवीन सहचर उसके श्याम वर्ण को लेकर कटु व्यंग्य कर गया था, उससे राजलक्ष्मी का कोमल चित्त बुरी तरह आहत हो गया था ।’’[६०]

‘‘जिस नैन–नकश की उसकी गौहर मासी लाख–लाख बलैया लेती थी, उसी की दिन–रात खिल्ली उठा–उठाकर उसने लक्ष्मी को ऐसी हीन भावना से त्रस्त कर दिया था कि वह घंटो उस रत्नखचित दर्पण में अपना चेहरा देखती रहती । क्या वह सचमुच ही इतनी कुत्सित है ?’’[६१]

मंदिर में पूजा करनेवाला गजानन अनेक कुकर्म करके शराब पीकर राजलक्ष्मी को मारता रहता है ।

‘‘पति–पत्नी का रिश्ता जब एक के चरित्र की दुर्बलता से टूटता है, तब टूटे दर्पण की ही भाँति फिर कभी–संपूर्ण रूप से नहीं जुड़ता ।’’[६२]

कोमलहृदया, निर्दोष, राजलक्ष्मी मौका मिलते ही भाग जाती है ।

मृदुला गर्ग ने ऐसे विवाहों को लेकर ठीक ही लिखा है ‘‘विवाह के पहले स्त्री और पुरुष अपने कल्पनालोक में वैवाहिक जीवन को लेकर एक

सुंदर सपना पालते हैं जब यह सपना यथार्थ के खुरदरेपन से टकराने लगता है तो संबंधों में दरार–दीवार निर्माण होने लगती है ।"[६३]

अपने गर्भ में शिशु अंश की संभावना पाकर राजलक्ष्मी ट्रेन के नीचे आत्महत्या करना चाहती है । गार्ड रौबर्ट म्युरी उसे बचाकर अपनी बहन बैरोनिका के यहाँ ले जाता है ।

बैरोनिका करुणामयी, दयावान, मानवता प्रिय, सेवाभावी, उदार डॉक्टर है । राजलक्ष्मी को कहती है – "लक्ष्मी, डॉट–क्राई माई चाइल्ड । अब तुम्हें कोई भय नहीं है । शायद इसुने जान–बूझकर ही तुम्हें मेरे पास भेजा है । आज तक चारसौ निन्यानबे शिशु पृथ्वी पर लाई हूँ । पाँचसौ पूरे करने के पहले शायद वह मेरी कठिन परीक्षा लेना चाह रहा है । तुम्हें अब कहीं नहीं जाना होगा । तुम मेरे पास ही रहोगी ।"[६४]

उदार दिल–मनवाली बैरोनिका ने लक्ष्मी की संतान को समाज की मान्यता देने के लिए रोबर्ट सेठ उसकी शादी करवाई । पढ़ा लिखाकर एम.ए. करवा दिया । स्कूल में अध्यापिका बना दिया । जन्मी हुई बेटी का नाम दिया सुरंगमा ।

(३) सुरंगमा

(१) समृद्ध बचपन

सुरंगमा की माँ एक आत्मनिर्भर कामकाजी नारी है । पढ़–लिखकर नौकरी करने लगी थी । वह बैरोनिका, रोबर्ट के साथ रही वहाँ, सुरंगमा की परवरिश अच्छी तरह से हुई । मगर राजलक्ष्मी बैरोनिका के घर ज्यादा दिन नहीं रहना चाहती ।

"नौकरी से राजलक्ष्मी के चेहरे पर स्वयं ही एक अनोखा, आत्मविश्वास आ गया था, वह स्वयं बैरोनिका से कहती है – आपने मुझे अब इस योग्य

बना दिया है कि मैं स्वतंत्र रह सकूँ, मुझे आज्ञा दीजिए तो मैं कालेज के पास ही एक छोटा–सा मकान ढूँढ लूँगी ।"[६५]

(२) माँ–पिता का वैमनस्य

सुरंगमा, राजलक्ष्मी, रोबर्ट बैरोनिका के साथ घुल–मिल गई थी । सुरंगमा के कुटिल पिता गजानन राजलक्ष्मी को ढूँढकर हंगामा मचाकर, उसे घसीट के ले जाता है । बाद में आत्मनिर्भर बनी लक्ष्मी से माफी माँगता रहता है – "मुझे माफ कर दो लक्ष्मी, मैं नशे में था, जो कुछ हुआ है – उसे अब भूल जाओ अब तुम्हें कोई चिंता नहीं रहेगी, मुझे म्युजिक कालेज में बड़ी अच्छी नौकरी मिल गई है ।"[६६]

मगर पति का सहसा बदला सात्विकी चोला लक्ष्मी को आश्वस्त नहीं कर पाया था । "उसी के चेहरे को अब पाँच वर्ष का अंतराल किसी दैवी तेज से तेजोमय बना गया था, उसकी आत्म निर्भरता गजानन को दब्बू बना गई थी । गजानन समझ गया कि वह लाख संत बन जाय, अपनी रहस्यमयी पत्नी का शरीर ही पा सकता था, हृदय नहीं ।"[६७]

प्रभा खेतान ने 'सैकंड सेक्स' में लिखा है – "औरत की पहली लडाई अर्थ की दुनिया से शुरू होती है । मैंने भी जीवन जीते हुए यही सीखा कि पैसे कमाने से स्त्री निर्णय लेना सीखती है – निर्णय की क्षमता उसके संघर्ष को मजबूत करती है ।"[६८]

मानिनी राजलक्ष्मी अपने दुःख दर्द दिल में दबाकर सुरंगमा के भविष्य की तैयारी, बैंकिग की परीक्षा में लग जाती है ।

(३) उदास धीर–गंभीर / उच्च शिक्षा प्राप्त

माँ–पिता के वैमनस्य ने सुरंगमा को धीरे–धीरे अस्वाभाविक रूप से उदासीन बना दिया था । यही उदासीनता उसके चेहरे को एक तटस्थ अहंकार के रंग से रंग गई थी । यही उसका सबसे बड़ा आकर्षण था ।

"जिस उम्र में लड़कियाँ ओढ़ने पहनने के पीछे दिवानी होती है – वह इस वयस में वितरागी, भिक्षुणी – सी बन गई थी ।"[९९]

सुरंगमा अपनी माँ की बिमारी की परवरिश के लिए रुपये इकट्ठे करती थी । गजानन उसे चुराकर घर-से गायब हो जाता है । मृदुलागर्ग ने लिखा है । "स्त्रियों की स्वतंत्रता, अस्मिता, आत्मसन्मान का एक ही शत्रु है पति । एक ही खलनायक पुरुष, एक ही दुष्ट राक्षस आदमी । न पूँजीवाद, न सामंतवाद, न धर्म, न बाजार व्यवस्था, न राजनीति, केवल पति, केवल पुरुष ।"[१००]

सुरंगमा ऐसी कठिनाइयों का सामना करती है, अपनी सखी मीरां से पैसे उधार लेकर माँ की परवरिश करती है, माँ की मृत्यु पर बेटे की तरह शव को अग्निदाह भी देती है ।

जानी-मानी लेखिका सिम्मी हर्षिता ने भी अपने उपन्यास 'संबंधों के किनारे में' लिखा है – "संसार में हर तरह के अन्याय और गुलामी का अंत हो जाएगा पर औरत की गुलामी और अन्याय कभी खत्म नहीं हो सकेगा । सारी आधुनिकता और शिक्षा प्रसार के बावजूद, बल्कि ज्यों-ज्यों रोशनी बढ़ेगी, यह अंधेरा, और धना होगा नए-नए ढंग से ।"[१०१]

(४) आर्थिक अभाव / कामकाजी नारी

अपनी माँ की मृत्यु के बाद सुरंगमा की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होने से मंत्री पुत्री के टयूशन करवाने पड़ते हैं । मेथ्स, फिजीकस केमेस्ट्री आदि । मंत्री वहाँ उसे आदेश देता है, मिस जोशी ! आप ही बेबी को पढाएगी यह प्रदेश के वरिष्ठ मंत्री का आदेश है ।

(५) दो-रंगी मंत्री का संपर्क

सुरंगमा मंत्री की पुत्री मिनी को पढ़ाने जाती है । वहाँ मिनी के आग्रह पर उसके साथ नैनिताल घूमने जाती है । वहाँ उसे मंत्री दिनकर के दोहरे

व्यक्तित्व का अनुभव हुआ, बारिश में, अकेले में दिनकर सुरंगमा को बाँहों में भर लेता है – और अपनी पुत्री आ जाने पर गिरगिट की तरह रंग बदल लेता है । ''लीजिए मिस जोशी, आप इसे ओढ़ लीजिए, एकदम कंबल सी गर्मी मिलेगी ।''[१०२]

सुरंगमा ने माता–पिता के वैमनस्य को देखकर युवानी उदासी, आर्थिक अभाव में व्यतित की । जीवन में पहलीबार किसी पुरुष का प्रेमालाप उनके मन को गुद–गुदाता है यह स्वाभाविक है । प्रकृति सहज है ।

''जिन शब्दों को सुनकर उसके तन–बदन में आग लगनी चाहिए थी, वे ही शब्द उसके कानों में अमृत वृष्टि कर गए थे ।''[१०३]

सुरंगमा को जल्दी ही दिनकर के दोहरे व्यक्तित्व का पता चल जाता है । जब ऑफिस के बाहर बैठे पी.ए. लोगों के सामने दिनकर यह कहता है । ''कैसी बेवकूफी की बातें करती हो, बेबी तुम ! जानती हो तुम्हारी माँ के मामा कलकत्ता के सबसे बड़े उद्योगपति हैं । वहाँ मैं तुम्हारी उस सड–बिल्ली मास्टरनी को लेकर कैसे जा सकता हूँ । फिर बहुत मुँह लगाने से ये मास्टरनियाँ कभी–कभी अपनी औकात भूल जाती हैं ।''[१०४]

ऐसे राजनेता, मंत्रियों ने अपनी आवश्यकता अनुसार स्त्रियों को मान–दिया, उपयोग किया मगर उसे मनुष्य समझने के लिए तैयार नहीं हुए ।

(६) स्वमानी, सुंदर, विवाह विरोधी

स्वमानी सुरंगमा मंत्री के ये शब्द सुनकर मीनी को पढ़ाने नहीं जाती, उसकी सखी मीरां उसे शादी करने के लिए समझाती है । ''सुरंगमा तू किसी सत्ताधारी निरंकुश सम्राट की रक्षिता बन यह मैं नहीं चाहती, इश्वर ने तुझे अपकृपण हस्त से सौंदर्य दान दिया है । तुझे किसी सम्राट के हृदय की एक छत्र साम्राज्ञी बनाने के लिए समझी ।''[१०५]

मगर दृढ़, एवं दुःखी सुरंगमा का मानना है कि ''पुरुष कितना ही कामी कुटिल क्यों न हो जब तक नारी नहीं चाहती, कोई उसका सर्वनाश नहीं कर सकता, फिर मेरी स्थिति भी तो तुम से छिपी नहीं है । कब मेरे पिता सहसा घुमकेतु से प्रकट हो जायेगें । इसका कुछ ठीकाना नहीं मैं आजन्म कुंआरी रहूँगी, बैंक की नौकरी करूँगी पुरुष कभी मेरा पति नहीं बन सकता ।''[१०६]

(७) स्पष्टवक्ता – सावधान नारी

सुरंगमा अपने पुरे अस्तित्व के साथ संघर्षों का सामना करती है । दिनकर अपनी बेटी की उम्र की लड़की सुरंगमा को अपनी प्रेमिका बनाना चाहता है । मगर सुरंगमा को पहले से ही दिनकर के दोरंगी व्यक्तित्व का पता चल गया है । और मीरा उसे सावधान कर गई है । ''इन मंत्रियों का क्या कोई ठिकाना रहता है ? कुछ साल पहले इसी नैनीताल में एक जर्जर मंत्री पर खूब कीचड़ उछाला गया था । अपने अधीनस्थ अफसर की जबान बीबी को लेकर नैनीताल घूमने गया था । उसको ये योजना महंगी पड़ी थी ।''[१०७] इसलिए जब दिनकर उससे प्रेम की याचना करता है ''मैं अपने इन्हीं उदास रिक्त क्षणों को कभी–कभी तुम्हारे साथ बिताना चाहता हूँ । एक हितैषी मित्र के रूप में मुझे, इस एकांत में कभी–कभी स्वीकार करोगी ।''[१०८] सुरंगमा का जवाब था, ''आप क्या चाहते हैं, मैं आपकी मिस्ट्रेस बनकर रहूँ । जाइए आप इसी क्षण बाहर निकल जाइए ।''[१०९]

और जब विनीता उसे धमकी देने आई थी, तब दिनकर के दिये हुए उपहार भी वापस लौटा देती है जिनका उसने कभी उपयोग नहीं किया था । न मँगवाए थे ।

(४) विनीता

विनीता इस उपन्यास में आनेवाला सक्षम नारी पात्र है । शिवानीजी ने विनीता के माध्यम स्त्रियों का राजनीति में योगदान और उसकी चेतना को

बताया है । दिनकर और विनीता के माध्यम से राजनीति में होने वाले राजनेताओं के भ्रष्टाचारों चित्रण किया है ।

(१) उच्च शिक्षा प्राप्त

विनीता समृद्ध मारवाड़ी परिवार की इकलौती पुत्री है । कलकत्ता युनि. में एम.ए. करती है । अंग्रेजी, बंगला, मारवाड़ी भाषा पर इसका अद्भुत काबू है । अंग्रेजी लिटरेचर में गोल्ड मेडल जीता था ।

(२) स्त्री–शिक्षा की हिमायती

विनीता मातृहीना लड़की है, अत्यंत तेजस्वी पुत्री से उसके पिता स्वयं डरते थे । समृद्ध परिवार के कितने रिश्ते जब उसके पिताजी ने बताये तब वह पुत्र–पुत्री की परवरिश में भेद मानने वाले पिताजी के साफ कह देती है । ‘‘बिना शिक्षा पूरी किए विवाह की मूर्खामी नहीं करेगी । क्या विवाह ही लड़कियों की अंतिम नियति है ? मैं आप का बेटा होती तो आप मुझे पढ़ाने विदेश नहीं भेजते ?’’[११०]

(३) महत्त्वाकांक्षिणी नारी

विनीता अपने पिता को स्पष्ट कहती है ‘‘मैं राजनीति से विवाह करूँगी, एक दिन आप देखेंगे कि भारत के प्रत्येक समाचार पत्र में आपकी बेटी का चित्र छपा है । मेरी गर्दन फूलों के हारों से झुकी है, आप हँसकर कहेंगे कि यह मेरी बेटी है भाइयो, मैं इसका पिता हूँ ।’’[१११]

(४) अंतरजातीय विवाह

विनीता सुंदरी तो नहीं थी, अपने शृंगार की अलग शैली से दिनकर को बाँधती है । उससे प्रेम करने लगती है । पिता अपने स्वतंत्र विचारोंवाली पुत्री को समझाते हैं । ‘‘बेटी तुम तो जानती हो कलकते के मारवाड़ी समाज में आज तक मेरी कैसी प्रतिष्ठा है । तुम राजनीति में नाम कमाना चाहती हो,

सुनाम बिना राजनीति कभी टिक नहीं सकती तुम तो राजनीति में अपना स्थान बनाने से पहले ही अपना रेप्युटेशन का गुण गँवा रही हो ।''[११२] मगर अपने व्यवसायी पिता की चिंता को अपनी बुद्धि छल-बल से दूर कर देती है । यहाँ तक की अंतरजातीय विवाह का विरोध करने वाले पिता भी उसका समर्थन करने लगे ।

मंदिर में जाके दिनकर से शादी कर लेती है । ''लो पापा अब कुछ भी कहे तुम्हारा समाज, मैंने सबका मुँह बंध कर दिया है ।''[११३] पिताजी कहने लगे थे ''ऐसा दामाद मुझे अपने समाज में जुट सकता था भला ? न सिगरेट न शराब । हमारे समाज का वैभव ही तो हमारे कुलदीप को स्वयं अधःपतन के गर्ते में ढकेल देता है । मेरे इस दामाद को लिजीए सड़क के लैम्प पोस्ट के उजाले में पढ़-पढ़ कर हाईस्कूल पास किया पर सब विषयों में डिंस्टीक्शन, कुमाऊ सेनेटरी का सोने का तमगा जीता । ऐसी आग में तपा खरा सोना भला किस कसौटी पर नहीं चमकेगा ।''[११४]

(५) अहम् वाली नारी

महत्त्वाकांक्षी नारी विनीता का राजनीति के प्रति मोह उसके पारिवारिक जीवन को बिखेर देता है । शादी के बाद विनीता का आधुनिक मुक्त स्वच्छंदी रूप नजर आता है ।

''पैतृक संपत्ति का अहम्, पति के प्रति उसकी उदासीनता बढ़ती-बढ़ती उसे उद्देश्यहीना यायावर बना चुकी थी । न जाने कितनी बार वह विदेश हो आई थी । बोर्डिंग स्कूल में पल रही पुत्री को न जन्मदायिनी जननी के प्रति मोह था ना जननी को उसकी कोई चिंता थी ।''[११५]

पति चाहता है कि विनीता घर में रहे तब वह कह देती है । ''आप भी एकदम दकियानूसी बातें करते हैं, मैं घर पर कैसे रह सकती हूँ ? न्युट्रिशन केटरिंग के मकान की नींव डालने जा रही हूँ ।''[११६]

विनीता मे आधुनिक युग की समृद्ध स्वतंत्र नारी का स्वच्छंदी रूप नजर आता है ।

(६) पति पर अधिकार भावना

विनीता इंडियन फेडरेशन ऑफ युनिवर्सिटी वीमेन ऐसोशियेशन की चैयर मेन थी, इंडियन काउन्सिल ऑफ वाइल्ड चाइल्ड वेलफेर की एक्जीक्युटिव सदस्या थी । इतनी पढ़ी लिखी नारी में अपने पति को लेकर अधिकार भावना, शंका, संदेह थे । तब उसका पारंपरिक रूप नजर आता है । ‘‘पार्टी हो या कोई उत्सव सुंदरी चुलबुली दर्शनीय महिलाएँ जहाँ कहीं उसके सुदर्शन पति को घेर कर हँसने, ईठलाने लगतीं, वह चट से वहाँ पहुँच अपनी उपस्थिति की छाप से उन्हें आतंकित कर रंगीन भीड़ के मोहक घेरे को तितर बितर कर देती, वह स्वभाव से ही शंकालु थी ।’’[११७]

(७) मंत्री-पत्नी के रूप में

आकर्षक व्यक्तित्व ओजस्वी वाणी रहस्यमयी मुस्कानवाले दिनकर की पत्नी थी विनीता । जो सरकारी वाहनों और अपनी सत्ता का दुरुपयोग सदैव करता था । बाल्यावस्था में दिनकर का विवाह बदसूरत गँवार दुर्बल स्त्री से हो जाता है । उसे छोड़कर भाग आया था । मंत्री बनने पर उस गँवार पत्नी को स्कूल की हेड मिस्ट्रेस, प्रदेश की उत्तम शिक्षिका का स्टेट ऍवोर्ड भी दिलवा देता है । मगर जब मिलने आती है तो पी.ए. को सूचना दे देता है – ‘‘देखो इन्हें जो भी कठिनाई हो दूर करो, जहाँ तबादला चाहे करवा दो, यह भी स्पष्ट कर दो कि आर्थिक या विभागीय सहायता का प्रश्न है मैं इनकी पूरी मदद करने को तैयार हूँ । पर इन्होंने अपने हक्क को लेकर मेरा पहुँचा पकड़ने की कोशिश की तो फिर तुम्हें पता है तुम्हें क्या करना होगा ।’’[११८]

तीसरे ही दिन स्कूल में उस पर्वतीय हेडमास्टरनी के आकस्मिक मृत्यु की छुट्टी घोषित हुई थी जो जंगली गुच्छा की सबजी खा जाने से असमय ही अवकाश ग्रहण कर गई थी ।''[११६]

अपनी राजनीतिक सत्ता का दुरुपयोग मंत्री करते हैं उसकी और संकेत है ।

गाँव के गँवार दिनकर में मंत्री बन जाने पर यह फर्क आया है । चतुर कुटिल दिनकर विनीता को अपनी कुटिल चालों से छलता रहता है । विदेश से लौटी विनीता को नैनीताल वाली घटना को लेकर इस प्रकार मना लेता है ''मेरी महत्त्वाकांक्षा राजनीति है, मेरा यह अश्वमेध यज्ञ कैसे संपन्न होगा, विनीताजी, यदि तुम स्वयं ही मेरे अश्व की लगाम पकड़ उसे रोक लोगी । जो पति पत्नी का विश्वास नहीं पा सकता, उस अभागे का संसार में अकर्मण्य से अकर्मण्य व्यक्ति भी विश्वास नहीं करता ।''[१२०]

शिवानीजी ने लिखा है – ''पुरुष नारी की इसी दुर्बलता को पहचान गया है, और दिन–रात सत्ता ले मगर, जहाँ उसे बाहों में भरकर पाँच मृत्युवंशी शब्दों का पंचवित पिलाया – ''मैं तुम्हें प्रेम करता हूँ'', वहीं नारी अपनी हृदय की बड़ी से बड़ी व्यथा भूल जाती है ।''[१२१]

(८) भावुक पत्नी

कुटिल दिनकर की बातों में आकार विनीता रूठी हुई सुरंगमा को मनाने जाती है ।

''देखो सुरंगमा तुम्हें उनके कहने का बुरा नहीं मानना चाहिए । तुम तो देख ही रही हो वह क्या हमारी–तुम्हारी तरह उठ–सो पाते हैं ? न समय पर खाना–पीना, न आराम । रात–रात भर जागकर फाइल देखते रहते हैं । जिनके सर पर दिनरात काँटों का ताज धरा रहे वह यदि कभी चिड़–चिड़ाकर

कुछ कह दे तो उसे अन्यथा नहीं लेना चाहिए ।''[१२२] मगर दिनकर विनीता को छलता ही रहता है ।

(९) दुःखी पत्नी

दिनकर सुरंगमा से कहता है – ''तुम नहीं जानती सुरंगमा, कंठ में दिन–रात शत–शत पुष्पहारों को धारण करनेवाला प्रदेश का यह महिमामय मंत्री कितना अकेला है । पत्नी, पुत्री, इष्टमित्र, सब मेरे मंत्री पद के इर्दगिर्द मंडराते नक्षत्र गण मात्र हैं ।''[१२३] अकेला हो जाने का अहसास दिनकर को हो जाता है – सुरंगमा को समझाते हुए कहता है । ''किसकी मिस्ट्रेस नहीं थी ? रुज्वेल्ट नेपोलियन, और कहो तो अपने देश की विभूतियों के नाम गिनवा दूँ ?''[१२४]

दिनकर के ये शब्द हमारे राजनेताओं के चरित्र का पर्दाफाश करते हैं । पत्नी के अलावा दूसरी स्त्री से संबंध रखना अपनी प्रतिष्ठा इज्जत एवं अनिवार्यता समझते हैं ।

(१०) प्रतिशोध लेनेवाली नारी

दिनकर बार–बार प्रेम का नाटक करके विनीता को नहीं छल सकता । अगर विनीता पति के प्रेम को लेकर उसके दोष भूल जाती है तो पति के लिए नागिन की तरह प्रतिशोध लेने के लिए तैयार है । पति और सुरंगमा के संबंधों के बारे में पता चला तो सुरंगमा को धमकी चेतावनी देती है । ''अब तुम नहीं चेती तो तुम्हें कुचलकर मिट्टी में मिला देने की क्षमता विनीता में है । जिस चेहरे पर तुम्हें इतना गुमान है, उसे मैं तेजाब डलवाकर विकृत बना सकती हूँ । बीसियों गुंडे से नुचवाकर तुम्हारी लाश गोमती में डलवा सकती हूँ ।''[१२५]

विनीता को अपने पति से धोखा मिला है, पति की मूर्खता का पता इन्हें चल जाता है । ''वह मूर्ख तुम्हें प्यार नहीं करता तो क्या अपनी

राजनीतिक महत्ता को भी ऐसे भूल बिसर जाता ? मैंने तुम्हारी बदली का प्रबंध कर दिया है । सात–आठ दिन में ही यहाँ से तुम्हारा मुँह काला हो जाएगा और तब तक तुम्हारा एक–एक कदम का हिसाब मेरे वहीं खाते में लिखा जाता रहेगा ।''[१२६]

विनीता दिनकर के चरित्र पर डॉ. प्रेम कुमार वर्मा के ये शब्द ठीक बैठते हैं, ''आज के समय में राजनीति के महत्त्वपूर्ण प्रभाव को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता । स्वतंत्र मनुष्य का विचारशील मन प्रत्येक दिशा में अपना हानि–लाभ सोचता है । कितना ही सालस, संयमी, पवित्र, मनुष्य क्यूं न हो राजनीति के पंजे में वह शुद्र, स्वार्थी, भ्रष्टाचारी, आचरण, पतित, सत्ता लोलुप बन ही जाता है ।''[१२७]

इस उपन्यास में आनेवाला प्रत्येक स्त्री पात्र कर्मठ संघर्षशील ऊर्जापूर्ण है ।

(५) 'रतिविलाप' लघु उपन्यास के नारी पात्र

अर्थ के कारण मूल्यहीनता, अनमेल विवाह के सामने नारी संघर्ष, चेतना की कथा ।

गुजरात प्रदेश, गुजराती समाज की पटेल जाति के पारिवारिक रीति–रिवाज परंपरा, धार्मिक मान्यता, व्यापार, अनमेल विवाह, दाम्पत्य जीवन की समस्या आदि को लेकर यह 'रतिविलाप' उपन्यास लिखा गया है । शिवानीजी ने इस उपन्यास में परिवार के ऐसे रिश्तों का चित्रण किया है, जो संपत्ति, धन के लिए, मानवीय मूल्य गवाँ देते हैं । और अन्य सदस्यों की जिंदगी के साथ धोखा करते हैं ।

यह उपन्यास स्त्री को अपनी शक्ति सामर्थ्य से परिचित कराता है । और स्त्री अपने जीवन की सार्थकता के लिए नया मार्ग भी ढूँढ़ सकती है ।

(१) अनसूया

(१) उच्च शिक्षा प्राप्त, कलाकार

उपन्यास की नायिका अनसूया पटेल लेखिका की सहपाठिनी थी । जो हँसमुख, चंचल, नृत्य प्रवीणा है । नृत्य में उसकी अद्भुत प्रतिभा देखने मिलती । नृत्य नाटिका में जब कामदेव की भूमिका करती थी – तब लेखिका का मानना था, कि किसी शाप–भ्रष्ट गंधर्व कन्या–सी ही देवदत्त प्रतिभा थी ।

(२) जिम्मेदारी उठानेवाली

अनसूया जिम्मेदारियों को सम्हालने वाली नारी है । पिताजी की मृत्यु के बाद माँ, भाई और मामा की मदद से पिता का विस्तृत कारोबार संभाल लेती है । गुजरात में पटेल जाति की कृषक स्त्रियाँ समय आने पर खेतों में बैल गाडियाँ, हल चला लेती हैं । वह पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर खेतों में काम भी करती हैं ।

(३) मामा के द्वारा धोखा

अनसूया के मामा की निगाह भानजी की संपत्ति पर थी । परिणाम स्वरूप, सुंदर, प्रतिभावान अनसूया का विवाह अपने समृद्ध मित्र के, उन्मादी अकर्मण्य पुत्र से तय कर देते हैं । तस्वीर में लड़के का सुदर्शन चेहरा देखकर अनसूया रिश्ता स्वीकार लेती है, ''मगर पति विवाह की पहली रात्रि में अपने उन्मत्त अट्टहास और उससे भी अधिक उन्मत्त व्यवहार से उसे सहमा कर, जीवनभर पुरुष मात्र के लिए पत्थर बना देता है ।''[१२८]

स्त्री के जीवन की अनेक विवशताओं में विवाह भी ऐसी विवशता ही है । जिसकी वजह से स्त्री को सब कुछ सहन करना पड़ता है । भारतीय परिवारों में संपत्ति के लालच में कभी–कभी जान–बूझकर प्रतिभा संपन्न लड़कियों को कुए़ में धकेल दिया जाता है । पात्र की योग्यता नहीं देखी जाती, अथवा तो धोखे में रखकर अनमेल विवाह कर दिया जाता है । यह परिवार

के बुजुर्गों की घटिया मानसिकता है । लड़की की जिम्मेदारी का बोझ उतारने की शांति का भाव है ।

(४) विवाहिता अनसूया

अनसूया के ससुर करसनदास भोगीलाल कापड़िया समृद्ध संपन्न व्यक्ति है । अनसूया को बताते हैं कि उसके पुत्र को बचपन में मिरगी के दौरे पड़ते थे, दो सालों से बंद हो गये थे, सोचा कि सुशील सुंदरी लड़की को वधू के रूप में पाकर वह निश्चय ही मानसिक रूप से स्वस्थ हो उठेगा ।

''तुम्हारे मामा ने बताया था कि तुम्हें कोई आपत्ति नहीं, तुमने कहा था – मेरे कुल में भी तो दोष है, कौन करेगा मुझसे विवाह ?''

''तुम्हारे दादा ने तुम्हारी दादी को सीधे मुजरे से खींचकर अपने गृह में प्रतिष्ठित किया था । अन्नप्राशन के समय भी नाचने बुलाया था । यही चोट अनसूया को पंगु बना गई । आँखों में आँसुओं के साथ ।''[१२६]

मगर अनसूया के ससुर संपन्न व्यक्ति हैं, पैसों का लोभ नहीं है, घर में ही पंगु पुत्र की वजह से मानवीयता उसमें मौजूद है । अनसूया को सुरक्षित कर देते हैं ।

''पुत्र की माया ममता मोह से विधुर होने के बाद संसार नहीं छोड़ा है । मगर साधनामय जीवन व्यतीत किया है । ''जब तक मैं हूँ बेटी । तुम्हारा कोई बाल बाँका नहीं कर सकेगा ।'' मेरी इस अटूट संपत्ति की एकमात्र अधिकारिणी तुम हो, जैसे चाहे रहो ।''[१३०]

(५) समाधानकारी वृत्ति वाली नारी

अनसूया अपने अनमेल विवाह को समाधान की दृष्टि से देखती है । वह अपनी कोमल भावनाओं को जीवित रखकर भी कठिन से कठिन उत्तरदायित्व का निर्वाह करती है वह अपने पति के परिवार, रिश्तेदार, रीति–रिवाज को अपना लेती है ।

गाँव की फुफिया सास स्वयं अपने हाथों से लाल पानेतर साड़ी पहनाती है । उदास अनु के बिंदी विहीन भाल पर कंकु का बड़ा सा ठेठ गुजराती चांदला लगाकर उसके ससुर को बोली ''करसनिया ! हवे तू प्रायश्चित कर मारा पीटया ।''[१३१]

(६) विधवा अनसूया

उन्मादी होने पर भी अनसूया को अपने पति के प्रति लगाव है – उसका दिल व्यथा से भर जाता है । एक–दिन नौकरों के हाथों से छुटकर अनसूया का पागल पति उसे उठाकर छत की ऊँची मुंडेर पर चढ़ गया । उसे नीचे लाने की कोशिश में उसका पाँव खींच कर समझाया गया । उसने अनसूया को नीचे छोड़ दिया मगर पाँव फिसलने से वह नीचे गिर कर मर गया ।

अनुभवी उद्योगपति करसनदास कापड़िया अपनी पुत्री समान पुत्रवधू को लांछना से बचाना चाहते थे । समाज की संकीर्ण, कुटिल मानसिकता से परिचित थे । ''तुम्हें अभी हमारे कुटिल समाज की घृणात्मक मनोवृत्ति का अनुभव नहीं है, मेरा वैभव, तुम्हारी कच्ची उम्र का वैधव्य, तुम्हारा सौंदर्य कभी भी हम दोनों पर घातक हथगोला फैंक सकता है । मेरे नमकहराम भृत्य मेरे ही गले पर छुरी फेर रहे हैं । जान बुझकर ही तो रंडुए, बूढ़ेने पागल लड़के को छत से ढकेल दिया, जिससे उम्र भर सुंदरी जवान बहू के साथ गुलछर्रे उड़ा सकें, पूरी जायदाद भी तो लिख दी है, पाटन की पटरानी के नाम ।''[१३२]

ऐसी सामाजिक घटनाओं में समाज की घटिया मानसिकता से पहले व्यक्ति को स्वयं के परिवार, रिश्तेदारों की घटिया मानसिकता का शिकार होना पड़ता है । और तब उसे दूर जाकर अपने जीवन का सुख ढूँढ़ना पड़ता है । इस स्थिति के लिए शिवानीजी के ये शब्द योग्य प्रतीत होने हैं । ''समाज रचना में भले ही क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हों, नारी की मूल भूमिका

आज भी वही है, पुरुषाश्रिता, पुरुष परायण, यदि वह पति के आश्रय में है तो समाज उसे अनायास मान्यता दे देता है, भले ही उसका पति, कामी, कुटिल, कुकर्मी, कुबुद्धि, पागल हो, किन्तु यदि वह पति के साहचर्य से वंचित है – तो वह बलि का बकरा है । उसका माँस कोई भी खा ले क्या दोष ?''[१३३]

(७) *कामकाजी नारी*

अनसूया बुद्धिमान नारी है परिस्थितियों को स्वीकार कर के, अपने दुःख को भुलाने के लिए काम करना उसे आता है । जब खुद को पति की, और ससुर को पुत्र की स्मृतियाँ परेशान करने लगीं, तब घर बेचकर बंबई चले आते हैं । समाज की कुटिल मानसिकता का शिकार होने से पहले अनसूया को उसके पिताजी ने बम्बई में साड़ियों का बुटिक 'इन्द्रधनुष' खोल दिया । देशी विदेशी, ट्रेडिश्नल साड़ियों की दुकान थी । समृद्ध परिवारों की गृहिणियाँ, फेशनेबल स्त्रियाँ अनसूया की दुकान से खरीददारी करती थी ।

(८) *सेवाभावी, कर्तव्यपरायण नारी*

जिस ससुरजी ने अपनी सारी संपत्ति का अधिकारी अनसूया को बनाया, सब कुछ त्यागकर अपने पैरों पर खड़ी कर दिया, उसके प्रति अपना कर्तव्य, कृतज्ञता ज्ञापन करना चाहती है । वह जब दुकान जाती पिताजी घर सँभालते तो उसे यह अच्छा नहीं लगता, पिताजी को सहाय करने वह हीरा नाम की लड़की को नौकरानी के रूप में लाई । अनसूया ने हीरा पर विश्वास रखकर इसको पिताजी और घर की जिम्मेदारी सौंप दी थी ।

(९) *हीरा के षडयंत्र का शिकार*

अनसूया को 'इन्द्रधनुष' बुटिक के लिए विभिन्न प्रांत की साड़ियों की खरीददारी के लिए अकसर बाहर जाना पड़ता था । एक अभिनेत्री की दामी साड़ियाँ लेकर एक दिन वह घर आई और काम की वजह से बटिक चली

गई । शाम को घर लौटकर देखा कि दामी साड़ियाँ और पिताजी नहीं है । एक पत्र से मालूम हुआ कि – ''इस वयस में मुझे इस निर्दोष किशोरी का पावन प्रेम मिला, यह प्रभु का दान है । ऐसी स्थिति में इसे लेकर अब तेरी छत के नीचे हम दोनों का रहना उचित नहीं है । तेरा सबकुछ, शेयर पास–बुक पहले ही तुझे सौंप चुका हूँ मेरा सामान इसके लिए ले जा रहा हूँ ।''[१३४]

अनसूया का संरक्षण कर्ता चला गया । जिसके विश्वास पर, प्रेम पर अनसूया अपनी युवानी को वैधव्य, प्रौढ़ता में बदल कर जीने लगी थी । वही व्यक्ति कि जिसे दाँत की जगह डेंचर लगाना पड़ता है, उसे ऐसी उम्र में प्रेम की जरूरत हुई । ऐसा अनुभवी पुरुष भी छला गया, एक सामान्य नारी से ।

मान लो अनसूया ने ही जान बुझकर विपत्ति को अपने घर बुलाया था ।

(१०) हिम्मतवान नारी

कितने दुःख झेलने के बाद अनसूया में अब दुःखों को सहन करने की हिंमत आ गई है । अनसूया का अवलम्बन छीना गया था । पिताजी सुख चैन सबकुछ लेकर चले गये । ऐसे दुःखों को सहते हुए अनसूया फिर से कर्मठ बन जाती है । एक दिन जब यु. पी. के गुप्तचर विभाग द्वारा उसे सूचना मिली, किसी होटल के कमरे में पिताजी की हत्या की खबर मिली । हत्या करके लड़की गायब थी । डायरी में से मिले हुए एड्रेस पर से अनसूया का संपर्क हो पाया था । नायिका वहाँ भी गई, अंत्येष्ठि का दुरूह भार वहन किया अपने हाथों शव को मुखाग्नि दी । बहू होकर बेटे का कर्तव्य निभाया ।

(११) उदार, क्षमाशील नारी

पिताजी की हत्या को लेकर पुलिस हत्यारिन युवती को ढूँढ न पाई । मगर एक दिन दिल्ली के रेस्टाँराँ में बैठे युगल में स्त्री ने जो साड़ी पहनी थी

उस पर से अनसूया जान गई कि वह हीरा ही है । एक बच्चा हीरा के टेबल से खेलता–खेलता अनसूया के टेबल के पास आया तो अनसूया ने देखा कि बच्चे की आँखें शक्ल–सूरत पिताजी से मिलती थी ।

बच्चे को ढूँढ़ती हुई हीरा आई उसने जब अनसूया को देखा तो बच्चे को लेकर होटल छोड़ भाग गई ।

सब कुछ समझने जानने के बाद भी अनसूया कुछ नहीं करती । वह क्षमाशील नारी है । साड़ियों की किम्मत और पिताजी की हत्या से ज्यादा अब वह हीरा के उस बच्चे को अनाथ देखना नहीं चाहती । शीर्षक ठीक है स्त्री (रति) के जीवन की रसमयी कविता के बदले करुण विलाप है रतिविलाप है ।

(२) हीरा

हीरा उम्र में बहुत छोटी है, निम्न स्तर, सामान्य जाति में से आती है । चौदह साल की उम्र में अपने वृद्ध पागल आततायी पति को मारकर आठ साल जेल काट आई थी ।

ओढ़ने पहनने, खाने–पीने का शौक है । बहुत ही चतुर नाटकीय प्रकृति का जीव है । अनुकरण करने में माहिर है । कर्मठ, व्यवहारकुशल और मधुरभाषिणी है अपने इन सद्गुणों के आधार स्तंभ पर वह अनसूया और पिताजी का विश्वास जीत लेती है । उसने घर–बुटिक (दुकान) में आनेवाली आभिजात्य वर्ग की स्त्रियों के रहन–सहन, शैली, लक्षण जल्दी ग्रहण कर लिये थे । अपनी वाक्पटुता से ग्राहकों का मन मोह लेती है । अनपढ़ होने के बाद भी उसमें आंतरिक समझ, सबकुछ सीखने की, ग्राह्य करने की क्षमता है ।

अनसूया के शब्दों में ‘‘आरंभ से अंत तक वह अभिनय कुशल नटिनी, अपने बहुरूपी व्यक्तित्व से मुझे छलती ही रही । हृदय की मलिनता उसके

चिकने चिपुडे चेहरे पर कभी नहीं उभरी । जाने के दिन तक मुझे निरंतर मूर्ख बनाती रही ।"[१३५]

एक ख्यात फिल्म नायिका की साड़ियाँ लेने अनसूया को दक्षिण जाना पड़ा । दामी साड़ियों देखकर दोपहर में हीरा सेहत का बहाना करके घर आ गई । और साड़ियों के साथ ससुरजी (अनसूया के पिताजी) को लेकर भाग जाती है । शाम को अनसूया को पता चला कि अभिनेत्री को साड़ियाँ पहुंची ही नहीं थीं ।

विवेकशील पुरुष को भी कभी–कभी नारी अपनी नन्हीं तर्जनी पर कैसे नचा सकती है । मानव के मन की दुर्बलताएँ किसी भी उम्र में उसे कमजोर बनाती हैं । हीरा ने जिस थाली में खाया उसी में छेद किया था, पहनने–ओढ़ने की इच्छाएँ, आर्थिक अभाव के कारण संतुष्ट नहीं हुईं । दामी साड़ियाँ देखकर मालकिन के प्रति कर्तव्यपरायणता का मूल्य बदल गया था । दंतविहीन बूढ़े को प्रेमी बना कर भाग गई । करसनदास कापड़िया छोटी उम्र में विधुर हुए, पागल बेटे के संग उदास रहे, इतनी उम्र में भी स्त्री शरीर के प्रति लालायित रहे, उसे हीरा का प्रेम पावन लगा । अनसूया का विश्वासघात करके चले गये । मगर अंत में हीरा ने उसकी भी हत्या कर दी ।

आर्थिक असमानता, अभाव के कारण यह समस्या उत्पन्न हुई ।

(६) 'रथ्या' लघु उपन्यास के नारी पात्र

प्रेम का अभाव, परवरिश की लापरवाही, कुतूहल, जिज्ञासु नारी को धोखे से वेश्या बनाया गया है, जिसका बचपन अभावों में बीता है उस नारी की कथा है ।

(१) जीवंती बूआ

जीवंती बूआ सामान्य ग्रामीण नारी के दायरे में आती है । जो अपना और वसंती का जीवन यापन करने के लिए दूसरे लोगों के घर काम करती

है । किसी के घर शादी ब्याह के प्रसंगों पर पहुँच जाती और काम के वक्त मिठाइयाँ, घी, तेल की चोरी भी करती । तीज, त्यौहार, जन्म केशमुंडन, प्रसव, जनेऊ आदि पर स्त्रियाँ उन्हें बुलाती हैं । जो कुछ देती हैं । उनमें से अपना और वसंती का जीवन निर्वाह करती है ।

अपनी भतीजी वसंती की शादी गाँव के वैद्य के पुत्र विमल से करवाना चाहती है । और वैद्यजी को बसंती की कुंडली दे आती है । मिल गई तो घर बैठे चारों धाम की मानसिकता रखती है । मगर नहीं मिलने पर वसंती निराश होकर घर से चली जाती है । और बाद में बूआ के लिए पैसों का मनीओर्डर, उपहार भेजती रहती है । जीवंती बूआ बीमार होकर मर जाती है ।

(२) वसंती

(१) अनाथ वसंती

वसंती के माता–पिता बचपन में ही स्वर्ग चले गए हैं । बचपन में माता–पिता के प्यार से वंचित बसंती बूआ के साथ शादी, ब्याह, तीज–त्यौहारों में जाती है तो, खाने की चीजों पर टूट पड़ती है । कितना ही खाये उसका शरीर दुर्बल ही रहता है – मगर उसके व्यक्तित्व की एक विशेषता थी स्कूल की खेल कूद प्रतियोगिता में खरगोश की तरह भागती है । उसके दुर्बल शरीर में से सदा कस्तुरी की मादक सुंगध आती है ।

(२) मुग्धा किशोरी

जीवंती बूआ वसंती की परवरिश गाँव के वैद्य से करवाती है । वैद्य के पुत्र विमल से बसंती को लगाव है । मगर वसंती और विमल की कुंडली में कोई साम्य नहीं है । ‘‘जब दोनों की कुंडली में साम्य नहीं तो कैसे गहरी नदी में दोनों को ढकेल दूँ ।’’[१३६]

विमल को भी वसंती के प्रति लगाव है – वह भी पिताजी को कहना चाहता था कि ‘‘कैसी भी गहरी नदी क्यों न हो, हम दोनों एक दूसरे को खींच खींचकर पार कर लेगें । मगर विमल कुछ कह नहीं सकता । और निराश, स्वमानी बसंती विमल को मिलना बंद कर देती है ।

(३) शरारती चंचल

पहाड़ी ग्राम्य जीवन में मनोरंजन के साधनों का सर्वथा अभाव होता है, मनोरंजन के पीछे आबालवृद्ध दिवाने बन जाते हैं, अल्मोड़ा में पहली बार सर्कस पार्टी आती है तो बूआ बसंती को लेकर निरंतर तीन दिन तक सर्कस देखने गई । शरारती वसंती बार–बार भागकर शेर के पिंजड़े के सामने खड़ी हो जाती और उसे चिढ़ाती रहती है ।

(४) गुमशुदा नायिका

सर्कस चले जाने के बाद वसंती गुम हो गई थी, ग्राम लोगों की धारणा थी कि उसे शेर खा गया । मगर विमल का मानना था कि वसंती के पलायन के पीछे, उसके रिश्ते के लिए पिता की अस्वीकृति का ही हाथ था । अपने प्रेम का स्वीकार करने की हिंमत विमल में नहीं है । विमल के पिताजी ने कुंडली और दहेज को महत्त्वपूर्ण माना । और विमल की शादी गाँव की कम पढ़ी–लिखी सुरसती से कर दी गई । जिसके पिता ने दहेज में दो – दो भैंसे दी थीं क्योंकि पुत्री साँवली थी । सुरसती का शारीरिक रूप कुरूप था, गृहिणी रूप उतना ही सुघड़–उज्ज्वल था । पति–ससुर की सेवा करती, पति को उसका वारिश बेटा देती है ।

(५) निराश प्रेमिका के रूप में

घर से पलायन करनेवाली वसंती सात सालों के बाद भी विमल को नहीं भूली थी । बूआ के लिए जो मेवे, मिठाइयाँ वस्त्रों के पार्सल भेजती है । उसमें विमल के नाम चुड़ियाँ का पार्सल भेजती है । उसे विमल ही जानता था

कि "अतीत के व्यर्थ प्रेम निवेदन की व्यथा वसंती इतने वर्षों में भी नहीं भूली थी ।"[१३८]

(६) शारीरिक शोषण का शिकार

शेर-भालुओं के पिंजड़ों में छिपाकर सर्कस का मैनेजर उसे उठा ले गया, नाचना, गाना, अंग कसरत के दाव सीखे, नाम कमाया । मगर "एक रात वसंती को बेटी-बेटी करनेवाला रक्षक ही उसका भक्षक बन जाता है । दिन भर मेरा मुँह हाथ पैर बाँध कर ताले में रखता रात को शोषण करता ।"[१३९]

खरगोश जैसी चपला वसूली मौका मिलते ही भाग जाती है, और विधवा नैली मैंकेजी की कोठी पर पहुँच जाती है । जहाँ उसके नृत्य-स्कूल में पूर्व पश्चिमी शैली के नृत्य लड़कियों को सिखाये जाते थे, और लड़कियाँ नाचने के साथ-साथ पुरुषों की भी अपनी अंगुलियों पर नचाती थी ।

प्रतिभा संपन्न, होशियार बसंती ने दक्षिण के नृत्य गुरुओं से तालिम ली । बड़े बड़े होटलों में केब्रे करने लगती है । मगर वहाँ भी उसका आर्थिक शोषण होने लगा । उसे त्याग कर अपना स्वतंत्र व्यवसाय करती है । बड़े-बड़े शहरों में अलग नाम धारण करके नाचती है । विश्व प्रसिद्ध समीक्षक बँट्रेड रसेल ने भी इस सत्य का समर्थन करते हुए लिखा है –

"पुरुष की भोगवादी दृष्टि ही नारी को वेश्या बनाती है । कोई भी नारी अपनी इच्छा से वेश्या का रूप स्वीकार नहीं करती । उसके पीछे पारिवारिक, आर्थिक, सामाजिक कारण कार्य कर रहे होते हैं या पुरुष मात्र उसे उपभोग करके छोड़ देता है ।

वेश्यावृत्ति नारी जीवन से जुड़ी ऐसी समस्या है, जो हर युग में प्रवर्तमान रही है । यही कारण है कि हर युग में, प्रेमचंद कालीन उपन्यासों से लेकर आज तक के उपन्यासों में इस समस्या का जिक्र किसी न किसी रूप में होता रहा है । दो राय नहीं कि प्रायः कोई भी स्त्री अपनी खुशी से

वेश्यावृत्ति को नहीं अपनाती । इसके पीछे अधिकत्तर पुरुषों की धोखाधड़ी अथवा गरीबी ही मुख्य कारण होते हैं ।''[१४०]

(७) विमल से मिलन

विमल जब दिल्ली वसंती के पास पहुँचता है – तब सुंदर-राजसी वैभवी वेशभूषा वाली वसंती को देखकर विमल को अपने आप पर लधुता महसूस होती है । वह अपनी व्यथा दुःख इन शब्दों में कहती है – ''तुम मुझे ऐसे न ठुकराते, छोटे वैद्य तो शायद मैं उस दिन अपना इतना बड़ा सर्वनाश न करती ।''[१४१]

जीवन व्यापन करने नाचती है । बचपन के मित्र, प्रेमी विमल को भी अपना डांस दिखाने ले जाती है । ढेर- सारे उपहार भी ले आती है । विमल उससे कहता है – ''तू यह सब छोड़ वसुली, मेरे साथ गाँव चल, मैं उससे कहूँगा मैं वसंती के बिना जी नहीं सकता सुरसती, तू, इसे अपनी सौत मानकर नहीं, छोटी बहन मान कर स्वीकार कर, उसे कभी आपत्ति नहीं होगी, हमारे पहाड़ में कितने ही बड़े-बड़े आदमियों की दो पत्नियाँ हैं ।''[१४२]

वसंती मूर्ख, कायर विमल से भी समाज की संकीर्णता से परिचित है । कहती है – ''हाय रे मेरे गोबर गणेश संसार की कौनसी स्त्री आज तक सौत को छोटी बहन मानकर स्वीकार कर सकी है ? एक यह ही ऐसा रिश्ता है – छोटे वैद, जिस में हिस्सा बाँट नहीं चलता समझे ।''[१४३]

(८) दंभी-विमल का व्यंग्य

वसंती समाज की मानसिक संकीर्णता जानती है । वह अपने कायर निर्वीर्य प्रेमी से कुछ नहीं चाहती । मगर दो दिन उसके साथ रहने आया – उसकी स्मृति के रूप में, उससे कुछ नाम चाहती है । ''मेरे घर तक आती कच्ची सड़क महीने भर में संगेमरमर की तैयार हो जायेगी । इसके लिए अच्छा नाम रखते जाना'' तब विमल कहता है – ''इसका नाम तो विधाता ने

रखा है 'रथ्या' वेश्याओं के मुहल्ले तक जानेवाली पतली सड़क को 'रथ्या' कहते हैं ।''[१४४]

वसंती जान गई थी उसका नृत्य देखकर विमल नाराज हुआ है । कहती है – ''नाचने ना जाऊं तो खाऊँ क्या ? तुम खिलाओगे मुझे ?'' ''छिपकर जूठन खाना सहज है, छोटे वैद भाई बिरादरी के सामने जूठी पतल में खा–पाओगे ? बोलो ?''[१४५]

महादेवी वर्मा ने ठीक लिखा है – ''स्त्री के जीवन की अनेक विवशताओं में प्रधान और कदाचित सबसे अधिक जड़ बनानेवाली अर्थ से संबंध रखती है, और रहेगी, क्योंकि अर्थ सामाजिक प्राणियों की अनिवार्य आवश्यकता है ।''[१४६]

(६) स्पष्टवक्ता वसंती

वसंती विमल के व्यंग्य से दुःखी तो होती है । क्योंकि उसके साथ रहनेवाला व्यक्ति भी उसके आत्मसन्मान को ठेस पहुँचाता है । स्थिति ऐसी हो गई है कि वेश्याओं के पास रहने सब आते हैं – मगर किसी के पास उसके दुःखों का समाधान नहीं है । विमल की तुलना में वसंती का व्यक्तित्व ज्यादा तेजस्वी, खुल्ला, साफ है । जो स्थिति है उसके प्रति वह बिलकुल स्पष्ट है । ''पाप–पुण्य की चिंता मुझे अब नहीं है । मैं बड़े सुख में हूँ और इसी सुख में रहना चाहती हूँ । तुम्हें मेरा अंगूठा पकड़ ने की बात बड़ी देरे से सूझी छोटे वैद । अब हमारा तुम्हारा रास्ता अलग है ।''[१४७]

और विमल ''वह धूल भरी 'रथ्या' को अपने चमरौधों की कड़ी कड़क से रौंदता तीरसा निकल गया ।''[१४८] विमल जैसे दंभी, भारी जूते पहनकर तेजस्वी वेश्याओं के द्वार पर आते हैं । और चोट पहुँचाकर चले जाते हैं ।

(७) 'भैरवी' उपन्यास के नारी पात्र

वेश्या जीवन, प्रतिशोध, निष्फल प्रेम, अनमेल विवाह, बलात्कार, धार्मिक ढोंग, पाखंड की कथा ।

(१) राज राजेश्वरी

(१) नादान किशोरी

राज राजेश्वरी के पिता महिमचंद्र तिवारी निःसंतान होने पर रखैल राम प्यारी के यहाँ पड़े रहते थे । और रामप्यारी भी इस ब्राह्मण का प्रेम पाकर गृहिणी बन गई थी । राजेश्वरी के जन्म के बाद उसके पिता घरेलू बन गये । और रामप्यारी को भूल गये थे । सुंदर पुत्री को मिशनरी स्कूल की शिक्षा दिलवाई । वहां उसकी मित्रता – रामप्यारी की बेटी–बेटे से हुए ।

रामप्यारी ने आयोजन बद्ध होकर तिवारी को सबक सिखाने अपने बेटे और राजराजेश्वरी को भगा दिया था । तिवारीजी ने दोनों को पकड़ लिया और बेटी को ताले में बंध कर दिया – क्योंकि पहाड़ी समाज की दृष्टि में उसका अपराध जघन्य था । बाद में "अपनी पुत्री का रिश्ता तय करने, तिवारीजी अपने सामान्य मित्रों के पैरों में टोपी रखकर गिड़गिड़ाए मगर सबने जैसे उसके मुँह पर थूंक दिया – गरीब है तो क्या हुआ हम जूठे पत्तलों को चाट ले ?"[१४६]

(२) अनमेल विवाह

सामाजिक बंधन व्यक्तियों को अपराध करने पर कड़ी सजा देते हैं और उसे वह सजा श्रीहीन कर देती है ।

तिवारीजी ने अपना जामाता ढूँढ लिया, "दुहाजू संतान हीन जामाता की शाहजहाँपुर में मिठाई की दुकान थी, पतिल केश, भग्न दंतपंक्ति, काला स्याह चेहरा, चीकटधोती, बनियान, पचास वर्षीय जामाता को देखकर राजेश्वरी की माँ

जोर–जोर से रोने लगी । राजेश्वरी की डोली नहीं किसी, प्राणहीना की अर्थी उठी थी ।''[१५०]

जिस वेश्या के पास जाने से तिवारीजी प्रतिष्ठा पाते थे उसी के बेटे के साथ कैशौर्य की नादानी में भागने की गलती की सजा राजेश्वरी को इतनी भयंकर दी गई । पितृसत्तात्मक परिवार के स्वेच्छाचार का उदाहरण है यह अनमेल विवाह ।

(३) *सहनशीला नारी*

ब्राह्मण कुल की राज–राजेश्वरी अपना जीवन ही बदल देती है – वह सहनशीला बन गई ।

''पचास वर्षीय पति के साहचर्य से वह कुछ दिनों में जान गई थी, कि उसकी कलंक कथा यहाँ पहुँच गई है । ''वह सावधान बन गई न कभी हँसती न कभी सँवरती, घर, आंगन, छत, यहाँ तक की आईने के सामने भी खड़ी नहीं रहती ।''[१५१]

अपने आपको मारकर जीना सीख लेती है । ''शंकालु पति ताले में बंद करके रखता है । पुत्री के जन्म पर भी उसे शंका होती है – क्यों जी ये मेरी पुत्री है ना ? कहीं पानी तो नहीं मिलाया दूध में ?''[१५२]

राजेश्वरी और ज्यादा सहन करती रहती ''परिश्रम से मीठी मुस्कान बिखेरती, उसके जीमें आता, उस ठिगने ठुस्के दंत हीन कलूटे को उसी की मिठाइयों की चाश्नी में डूबो कर रख दे । लेकिन सहना जैसे उसके लिए प्रायश्चित करना था । वह अपने आप को ब्रत अनुष्ठानों में डूबोकर रखती । बूढ़ा पग–पग पर उसकी परीक्षा लेता ।''[१५३]

कभी–कभी खाँसते–खाँसते वह थाली में ही थूंक देता और थाली पत्नी की और खिसकाकर कहता ''इसी में खा लेना, और वह चुपचाप दंड भोग

लेती । थाली में बची–खुची जूठन, चरी भूसा निरीह गैया की भाँति निगल जाती ।''[१५४]

बूढ़ा पति अपनी पत्नी को इन्सान मानने तैयार ही नहीं । महादेवी वर्मा ने स्त्रियों की ऐसी स्थिति के लिए लिखा है –

''भारतीय नारी की सबसे बड़ी विडंबना यही रही है अदृष्टि की । उसे या तो मनुष्य लौकिक या दिव्य की श्रेणी में बैठाकर पूजार्थ समझने लगता है या वह तुच्छ समझी जाकर उपेक्षा या अवहेलना की शिकार बनती है । भारतीय नारी को इन दोनों अवस्थाओं का पूर्ण अनुभव हो चुका है । वह पवित्र देव मंदिर की अधिष्ठात्री देवी भी बन चुका है और अपने गृह के महिलन कोने की बंदिनी भी ।''[१५५]

(४) चेतना सभर कामकाजी नारी

राजेश्वरी को पुत्री हुई दो वर्ष के बाद ज्वर में बूढ़ा पति मर गया, संपत्ति के नाम पर राजेश्वरी को बड़ी हवेली और अंधी बहरी सास मिली । श्वसुर गृह में आकर राजेश्वरी को कोई सुख मिला हो तो इतनी बड़ी हवेली में रहने का सुख ।

पति की तेरहवी के बाद तीन कोठरियाँ रखकर उसने पूरी हवेली गर्ल्स स्कूल बनवाने दान कर दी । और स्वयं राजेशवरी ने भी वैधव्य रिपु को पूरी शक्ति लगाकर धकेला । एम.ए.एल.टी. कर वह प्रधानाध्यापिका बन गई । रहने को सरकारी बंगला था । एक दर्जन अध्यापिकाएँ उनके रौब से दिन रात थर थर काँपती रहती थीं । नौकर चपरासी सबकुछ थे । पति के जीते जी वह गुलाम जैसी जिंदगी जीती थी, उसके मरने के बाद उसकी चेतना जागृत हो गई ।

(५) मातृत्व

राजेश्वरी सुंदर पुत्री को दिन रात आँखों में मुंद कर रखती है, यौवन की जिस देहरी पर उसने स्वयं एक घातक ठोकर खाई थी । लड़की भी ठोकर खाकर गिर न पड़े, इसका वह दिन रात ध्यान रखती थी । अपनी नौकरी से लम्बी छुट्टियाँ लेकर पहाड़ पर पुत्री के लिए वर ढूंढने आई थी ।

"किसी भी समय में रूपवती पुत्री की माँ के लिए जामाता ढूँढ़ना कोई बड़ा सिरदर्द नहीं होता, ऐसी भाग्यवती सास को दामाद ढूँढ़ने नहीं पड़ते, दामाद स्वयं उसे ढूँढ लेते हैं ।"[१५६]

पहाड़ पर बर्फ की बारिश हो रही थी । एक दिन दिल्ली के पर्वतारोही दल के १२ सदस्य रात में आश्रय के लिए राजेश्वरी के दरवाजे पर आये । राजेश्वरीने करुणा, मातृत्व, दया भाव से अंदर लिया । दल में सोनिया नामक लड़की से चंदन की मित्रता हो गई । सोनिया के भाई विक्रम को भी चंदन पसंद आ गई । दिल्ली जाकर माता-पिता को भेजकर शादी ब्याह पक्का करवाया ।

(२) चंदन

चंदन राजेश्वरी की सुंदर बेटी है, उपन्यास में बाद में भैरवी बनती है । उपन्यास का शीर्षक उससे संबंधित है ।

(१) शादी

चंदन शादी के बाद ससुराल में खुश थी, पति के साथ कलकत्ता घूमने जाती है । स्टेशन पर गाड़ी रुकी और तीन चार फौजी युवान अफसर घुस आये । ट्रेन चलने लगी और उन लोगों ने शराब पीकर, विक्रम को बाँधकर मार मारा, चंदन से अभद्र आचरण किया । हिम्मतवान चंदन रेल गाड़ी का द्वार ढूँढ़कर नीचे कूद गई ।

वहाँ से शुरू हुई उसके वैरागी, भैरवी के जीवन की कथा ।

(२) भैरवी चंदन

रेल से कूद कर चंदन श्मशान में अघोरियों के आश्रम के पास गिरी थी । उसकी सेविका चरन बताती है कि जलती चिता के श्मशान के पास तुम गिरी, लोग भूत-भूत कहकर भागे, साधना रत गुरु तुझे उठाकर ले आये, ललाट पर चिता भस्मी देकर नाम धरा भैरवी ।

''गुफा में कई गेरुआ पोटलियाँ, झुल रही थी, रुद्राक्ष की मालाएँ, कमंडल, सिंदूर पुते त्रिशुल, त्रिशुल के नीचे पड़े स्तुपी कृत नर मूंड ।''[१५७]

ऐसे अघोरी साधक कहीं से मिली या चली आई स्त्रियों को अपने धर्म पंथ में मिला देते हैं । चंदन सोचती है कि धीरे धीरे चलकर अकेली होने पर बाहर निकलने का रास्ता ढूँढ लेगी । ऐसा आत्मविश्वास वह रखती है ।

(३) सुंदर नारी

भैरवी बनी चंदन की सुंदरता देख उसके अघोरी गुरु भी उसे देखते रहते है । मायादीदी ईर्षा करने लगती है । ''यहाँ हम ऐसी रूपवती भैरवीको भला कैसे रख पायेगी ? यह है अघोरी गुरु का आश्रम । दस तरह के औघड अवधूत जुटते रहते हैं ऐसी दहकती आँच में भला हम घी रख सकती है ?''[१५८]

वह अपने मार्ग में अवरुद्ध बनी चंदन को समझाती है ।

''अनजाने में किया गया पाप, पाप नहीं भैरवी, तुम मूरख हो ऐसा चेहरा देखकर कोई पत्थर दिल मरद भी तुम्हारे सात खून माफ कर देता फिर वह तो तुम्हारा रूप पिपासु पति था ।''[१५६]

(४) अपराध बोध से युक्त

चंदन में अपराध बोध की भावना भर जाती है । बलात्कार की वजह से वह विचार शून्य हो गई थी । माया दीदी उसे कहती है किसी को कागज चिट्ठी लिखकर बुलाना चाहो तो कहना हो जायेगा । मगर चंदन सोचती है क्या

अब वह पति या माँ के द्वार पर जा सकेगी ? जिस माँ बिदा के वक्त उसकी डोली के पीछे पछाड़ खाती हुई, आई थी वह क्या उसका स्वीकार करेगी ? ''यहीं तो सुख है, इस अनजाने वैराग्य के तहखाने में डूबने का यहाँ कभी कोई नहीं जान पायेगा कि वह कौन है ? विवाहिता, कुमारी ? या रेल से क्यूं गिरी थी कैसी विपत्ति पड़ी थी उस पर !!!!''[१६०]

मगर मायादीदी उसे समझाती है, ''तू तो एकदम भोली हो भैरवी । पर अनर्थ होने देरी नहीं लगती । मरद का मन चाहे वह लाख साधे, औकात में होता है एकदम देशी कुत्ता !!! सामने हड्डी रख दो तो कितना ही सिखाया पढ़ाया हो, कभी लार टपकाई बिना रह सकता है ?''[१६१]

अघोरियों के अघोरी समाज का भी एक दायरा है वहाँ शुद्ध धर्म को कोई स्थान नहीं होता, योगी–योगिनी एक–दूसरे की कमजोरियों को जानते ही हैं ।

मंदिरों, मठों और आश्रमों में धार्मिकता की ओट में स्त्रियों का दैहिक शोषण होता है । बाबा तथा मठ से जुड़े हुए सभी लोग इन स्त्रियों का लैंगिक शोषण करते हैं । चंदन, चरन, माया दीदी के पात्रों से यह स्पष्ट होता है । भैरवी बना के अन्य युवतियों को भी फँसाते हैं ।

(५) अघोरी की चुंगाल से भागजाना

अघोरी गुरु की शिव–शक्ति माया दीदी के मरने के बाद गुरु मायादीदी की लाश वहन करने जाते हैं । तो चंदन को द्वार के भीतर से कुंडी लगा लेने का आदेश दे जाते हैं । मगर खुद भी बाहर से कुंडी लगाकर कैद करके जाते हैं । चंदन को जबरदस्ती, बलात भैरवी बनाना चाहते हैं । योगियों में, अघोरियों में रही वासना ईर्षा, स्पर्धा का यह उदाहरण है ।

चंदन को मायादीदी का अंतिम संदेश ''उन्हें तुम कापालिक गुरु भैरवानंद मत बनने देना । भैरवी तुम भाग जाना, दूर चली जाना, बहुत दूर ।''[१६२]

और चंदन खिड़की से कूदकर भाग जाती है । मगर पति के साथ रह नहीं पाती उसका सुख देखकर चली जाती है । इस प्रकार समाज की अंधश्रद्धा और कठोर नियमों से अघोरियों के पाखंड बढ़ते हैं । प्रजा में निहित अंधश्रद्धा को निर्मूल करने में इन चरित्रों से प्रेरणा प्राप्त हो सकती है ।

(३) मायादीदी

मायादीदी चालीस की उम्र में घर परिवार छोड़, गुरु की शिव–शक्ति बनने श्मशान में आई थी । सदैव गुरु के पीछे पीछे घंटों तक मसान साधने लगी रहती है ।

धूनी नारी है मायादीदी । सामान्य नारियाँ ऐसे अघोरियों से डरती रहती हैं, मायादीदी कई अघोरी गुरुओं के साथ घूमती रहती है ।

(१) शिव की शक्ति बनने की इच्छा रखनेवाली

"नंगे अवधूत की सच्ची, सहचरी, महामाया, मायादीदी मायाविद्या न वह ज्ञान की उपासिका थी, न लोक–की, न वेद की । कुंडलिनी जागरण, षटचक्र जप–साधना, सब के बाध मारकर अब वह बाघाम्बर पर बैठी चुकी थी, किंतु जीवन का सबसे बड़ा दुःख तो छाती पर शीला बनकर दिन–रात उसे धरातल में धँसा रहा था । गुरु थे सिद्धामृत मार्ग के अनुयायी । तृषा कांता योगिनी अमृत कलश को दूर से ही निहार सकती थी, निकट आकर स्पर्श कर भी लेती तो स्वामी के तेज से भस्मीभूत हो जाती ।"[१६३]

मायादीदी जैसी कई स्त्रियाँ योगिनी बनकर घूमती है, मगर उसे धर्म योग का ज्ञान कितना ? धर्म के पीछे वासनाएँ, अतृप्त इच्छाएँ होती हैं । इसलिए धर्म की ओर से लोगों का रुख कम होता जा रहा है । धर्म की पकड़ भी ढीली होती जा रही है । आजकल धर्म केवल पाखंड और अंध विश्वास का समान्तर रूप है । उसके मूल में जो संस्कृति थी, जो धार्मिक भावना थी वैसी

नहीं रही, हर तरफ धर्म की आड में पाखंड, ढोंग, शारीरिक शोषण, भ्रष्टाचार होता है ।

(२) व्यसनी मायादीदी

चालीस साल की उम्र में जीवन के कई अनुभव लेकर माया दीदी वैरागी बनने श्मशान में आई थी । मगर वैरागी नहीं बन सकी । कौन कहता है मसान में वैराग्य उपजता है ?

''श्मशान वैराग्य होता है इसी मसान में सगे छोटे भाई को फूँककर पीपल तले बैठे एक बड़े भाई बोतल खोलते हैं, चिता पर चढ़ने वाली की हड्डियों के अंगार बनने से पहले एकबार फिर दूसरे रिश्ते की तैयारी करते है ।''[१६४]

मायादीदी भी अपनी इच्छाओं को छोड़ नहीं पाई थी । गुरु के साथ वह भी गाँजे में कुकुर मुक्ता का विष मिलाकर दम मारती है, और नशे में बेहोश बनकर अपनी अतृप्त वासनाओं का नग्न नाच करती है ।

(३) ईर्षा–अधिकार भाव

आश्रम में आई नई भैरवी की सुंदरता के प्रति गुरु आकर्षित होते हैं । इसलिए अपना स्थान डगमगाने लगा है ऐसा मानकर मायादीदी को ईर्षा होती है । गुस्से में आकर गुरु भैरवानंद को भी डाँटती है । ''कहो गुरु जालंधर की शपथ खाकर, देह से पवित्र हो यह मैं जानती हूँ पर क्या मन से भी पवित्र रह पाए हो ? मैं इस आश्रम में अनाचार नहीं होने दूंगी ? समझे ? यहाँ बीस–बीस नर मूंड साधकर मैंने गुरु का त्रिशुल गाड़ा है ।''[१६५]

कभी–कभी स्त्रियाँ योगिनी बन जाने के लिए तैयार होती है । मगर योगियों के अहम्, वासनाओं की तृप्ति में जब वह अवरोध बन जाती है तो उसे अपने मार्गका काँटा समझकर मार देने में जरा भी नहीं हिचकते ।

(४) मायादीदी की मृत्यु

मायादीदी को गुरु का पालित विषैला साँप काट लेता है । मरते वक्त मायादीदी सत्य बात कहती है – ''जो कभी उनकी साधना मार्ग की पुष्प लता थी वहीं बन गई कंटकों की बेल, उखाड़कर दूर फेंक दिया ।''[१६६] और यही बात योगियों के वासना, ईर्षा, स्पर्धा का उदाहरण है । इन्हीं लोगों के पास सही धर्म नहीं है ।

(८) 'दो सखियाँ' उपन्यास के नारी पात्र

आधुनिक युग की विषम समस्या, पारिवारिक विडंबना और फलस्वरूप सामाजिक समस्या 'वृद्धाश्रम' की कथा इस उपन्यास में है ।

समाज में ऐसे कई वृद्ध व्यक्ति होंगे, जो संपन्न पुत्र–पुत्रियों के रहते हुए भी वृद्धाश्रम में अपनी जिन्दगी के अंतिम दिन काटते हैं । 'वृद्धाश्रम' पारिवारिक समस्या, प्रेम के अभाव में उपेक्षित वृद्ध माता–पिता की जिम्मदारियों को उठाने के लिए बनायी सुचारु, लज्जास्पद कुव्यवस्था है । जिसमें व्यक्ति सुख पाता है, या नहीं, मगर अकेलापन अपराध भाव जरूर महसूस करता है । हमारे समाज के गिरे हुए नैतिक मूल्यों की तस्वीर है ।

जो माता–पिता अपने पुत्र–पुत्रियों को आत्मनिर्भर बनाने में अपना पूरा जीवन व्यतीत कर देते हैं वही संतानें उन्हें बोझ समझकर वृद्धाश्रम में छोड़ आती हैं ।

स्त्री सदैव अपनी संतान, घर, उसकी मधुर स्मृतियों से बंधी होती है । ऐसी माताओं को भी मोह के बँधन काटकर वृद्धाश्रम में जाना पड़ता है । इससे साबित हो जाता है कि संतानें कितनी स्वार्थी, मूल्यहीन हो गयी हैं । ऐसी स्थिति में भी स्त्रियाँ अपनी चेतना से जीती हैं ।

(१) सखुबाई

सखुबाई और आनंदी वृद्धाश्रम में आकर एक–दूसरे के घनिष्ठ मित्र बन जाते है । निस्वार्थ मैत्री है दोनों में । दोनों के स्वभाव, व्यक्तित्व, रुचि, प्रदेश किसी में भी कहीं भी साम्य नहीं था । मगर जो बातें अपने परिवार जनों से नहीं कर पातीं वही बातें दोनों मित्र बनकर एक दूसरे से कहती हैं ।

''निःस्वार्थ मैत्री की डोर शायद जीवन की दो ही अवस्थाओं में मनुष्य को बाँध पाती है – कैशोर्य में और वार्धक्य में । मैत्री के प्रगाढ़पन के दुहे शीतोषण जल रहित दूध की असली घूंट तो हमें वार्धक्य में ही मिल सकती है ।''[१६७]

(१) हिंमतवान चेतना सभरनारी

सखुबाई इस उपन्यास की चेतना सभर नारी पात्र है । सखुबाई के पति की बस दुर्घटना में मृत्यु हो गई । गर्भवती सखुबाई को सासने बहुत सताया । ''चुड़ेल तूने ही मेरे बेटे को खाया है, लाख समझाया था, मैंने, इससे विवाह मत कर यह मंगली है, तुझे ही डंस लेगी पर अभागे पर तो तेरे रूप का भूत सवार था । जा निकल जा मेरे घर से जा अपने मास्टर बाप के पास । मगर सखुबाई चट्टान की तरह सहन करती रही । बुढिया ने जली लकड़ी से जलाया तब उसी लकड़ी का अनुभव सास को करवा के पिता के घर चली आई ।''[१६८]

(२) उच्चशिक्षा प्राप्त कामकाजी नारी

कभी–कभी स्त्री ही स्त्री की दुश्मन बन जाती है । भारतीय स्त्री को अग्नि के समक्ष जिंदगी भर का साथ देने का वचन देकर वरण किया जाता है, पति के न रहने पर असुरक्षित हो जाती है । अन्याय को सहन करना सखुबाई के स्वभाव में नहीं था । मुश्किलों से मार्ग निकालना उसे आता था । पिता के घर पढ़–लिखकर, अपने पैरों पर खड़ी हो गई । जिस कालेज में

पढ़ी थी, वहाँ ही प्रिन्सीपाल बन गई, माता–पिता को सुख दिया । अपने बेटे को डॉक्टरी पढ़ाया । उसे विदेश की छात्रवृत्ति मिली अतः उसे विदेश भेजा ।

(३) बेटे के द्वारा उपेक्षा

जीवन के गंभीर, गहरे आघातों को सहन करनेवाली सखुबाई अपने बेटे को सर्वस्व मानती है । अपने बेटे का विवाह, सुखी जिंदगी देखना चाहती है । हर माँ की यही इच्छा होती है । मगर विदेश स्थित बेटे ने एक दिन फोन पर अपने विवाह की खबर दी, जो अमरीकन लड़की से किया था । विधवा होने के बाद सखुबाई को यह दूसरा आघात लगा । अपने अकेले जीवन में जिस पर आधार रखा था, वही बेटा अपने जीवन के महत्त्वपूर्ण निर्णयों में याद नहीं करता ।

सखुबाई इस खोखले विवाहों की व्यर्थता को जानती थी । विदेशी परिवेश में पली लड़की उसके बेटे के सुख–दुःख में सच्ची सहचरी नहीं बन सकती थी ।

बाद में दूसरी, तीसरी शादी नाइजिरीया की काली कलूटी स्त्री से की, जिसने उसके जैसे ही दो पुत्र दिये थे । बेटे के परिवार की तस्वीर देख दूसरे दिन अपना मकान बेच बाचकर संसार के सर्व बंधन स्वेच्छा से तोड़, बिना किसी को कुछ बताये आश्रम में चली आई ।

(४) वृद्धाश्रम में आगमन

सखुबाई स्कूल में प्रिन्सीपाल थी, अपनी भावनाओं को योग्य रूप देना उसे आता है । उसके स्वभाव, जीवन व्यवहार में नियम अनुशासन व्यवस्था है । ‘‘वृद्धाश्रम के कमरे में अपने हाथों से गुसलखाना घिस–घिस कर चमकाये रखती, फर्श दर्पण–सा चमकता, बिस्तर में एक भी शिकन नहीं, करीने से सजाई किताबें, एक सीध में रखा चश्मा, रुमाल, चप्पल । उसके ऐसे

अनुशासित स्वभाव के कारण उसके साथ कमरे में कोई रहने के लिए तैयार नहीं है ।''[१६९]

(५) उच्चविचार, बुद्धिमान नारी

व्यवस्थित होने के साथ-साथ सखुबाई बुद्धिमान, उच्च विचारों वाली है । 'आश्रय' आश्रम में रखे गये टी.वी. सेट पर सब रामायण देखते हैं । मगर सखुबाई कभी टी.वी. देखने नहीं जाती । अपनी सखी आनंदी से भी कहती है ''अरी क्या, राम-रावण युद्ध में देखना ? क्या घर में ऐसे तीरों की नित्य टकराहट से मन नहीं भरा तेरा ?''[१७०]

स्थिर चित्त और वास्तविक धरती पर पैर रखनेवाली है सखुबाई । अपने कमरे में पलंग पर लेटी, बंट्रेड रसेल की आत्मकथा पढ़ती थी । उसी की लिखी पंक्तियों ने उसे संतान का मोह त्याग यहाँ आने की प्रेरणा दी थी । ''जब तुम अपनी संतान के जीवन में दोयम दर्जे पर आ जाते हो, चाहे कितना ही कठिन लगे केवल ग्रहण करने का माध्यम बने रहो ।''[१७१]

और सात साल में सखुबाई यही कर रही थी, इस कठिन साधना में वह खरी उतरी थी । क्योंकि सखुबाई शिक्षित नारी है ।

सखुबाई को ये उच्च विचार उसकी उच्च शिक्षा से ही मिले हैं । तसलीमा नसरीन के ये विचार योग्य है, ''स्त्री, शिक्षित हो, आत्मनिर्भर हो, तभी वह अपने अधिकार के प्रति सचेत होगी । वरना उसे क्या पाना है, और क्या नहीं, यह वह स्वयं ही नहीं जान पायेगी, जैसा की आज की अधिकतर स्त्रियाँ नहीं जान पाईं, अर्थात् स्त्रियों को अपनी दशा में सुधार लाना है तो सबसे पहले आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होना होगा, उसे अपने पैरों पर खड़ा होना होगा अन्यथा पुरुषों का आधिपत्य उन पर यूँ ही बरकरार रहेगा ।''[१७२]

सखुबाई अपने निर्णय पर जीती है किसी की मान्यता विचार पर वह आधारित नहीं है ।

(६) तटस्थ विचारोंवाली

सखुबाई आनंदी की तरह भावुक, अपराध बोध युक्त नारी नहीं है, उसे अपनी भावनाओं पर पूरा काबू है, वह आनंदी के दिये हुए गहनों की थैली लेकर समुद्र तट पर आती है । और थैली में पत्थर बाँधकर उसे अगाध जलराशि में बहा देती है ।

क्योंकि आनंदी की बेटियों के विवेकहीन, रुक्ष व्यवहार उसे पसंद नहीं है । अवकाश की और हाथ उठाकर अपनी दिवंगता सखी को प्रणाम किया । ‘‘माफ करना डोकरी तेरी अमानत तुझे ही लौटा रही हूँ । जिन हाथों ने तुझे ऐसी बेरहमी से अपने घरों से बाहर ढकेला, उन हाथों में मैं ये गोखरु नहीं पहना सकती । अंगूठी मेरी अंगुली में है । यह तो तेरी अंगुली है न ? उसे कैसे छूडा दूँ ?’’[१७३]

और अपनी भावुक सखी के अंजलि देते हुए रो पड़ती है । इस प्रकार सखुबाई कठोर, कोमल तटस्थ है । परिस्थितियों को समझकर स्वीकार करना उसके अस्तित्व की जागृति चेतना है ।

(२) आनंदी

आनंदी पाँचवीं कक्षा तक पढ़ी है, मगर गृहिणी पद का अनुभव ज्यादा है । एक बेटा, दो बेटियाँ थीं । उसकी बेटियाँ ही उसे ‘आश्रय’ वृद्धाश्रम में छोड़ने आती हैं ।

(१) सुघड़ स्वच्छता प्रिय नारी

भोली निरीह आनंदी को सखुबाई अपने कमरे में ले आती है । गृहिणी का अनुभव, आदतें उसमें हैं । श्रद्धावान, भक्तिभावना वाली नारी है । ईश्वर के प्रति श्रद्धा है । स्वच्छ, सुघड़ रहती है । वह सखुबाई को मास्टरनी, सखुबाई उसे डोकरी कहती है । दोनों एक दूसरे के सुख–दुःख के साक्षी हैं ।

(२) पारिवारिक कलह

आनंदी ने पुत्र के लिए स्वयं लड़की ढूँढी थी, मगर विवाह के बाद पुत्र वधू से उसका स्वभाव नहीं मिला, क्योंकि पुत्रवधू के माता–पिता ही घर में मुख्य बन गये । आनंदी गौण । पुत्रवधू के माता–पिता उच्च ओहदे पर स्थित थे ।

प्रत्येक भारतीय परिवारों में गृह कलह, गृहदाह में परिवर्तित होता है । ऐसा आनंदी के घर में भी हुआ । बेटियों का आना जाना पुत्रवधू को पसंद नहीं था । गृह कलह से बेटा सास ससुर के साथ बहु को लेकर विदेश गया । वहाँ ही उसका परिवार बढ़ा ।

एक माँ अपने अपने बेटे से खुलकर बात नहीं कर सकती इससे बढ़कर संबंधों में दूरी और किस प्रकार की हो सकती है । प्रत्येक भारतीय परिवार में दो पीढ़ियों के बीच दूरी देखने को मिलती है । शादी होने के बाद पुत्रवधू पति के परिवार जनों को परिवार का हिस्सा मानने के लिए तैयार नहीं होती – अधिकार भावना की मानसिकता उसमें आ जाती है ।

(३) बेटियों के घर रहना

आनंदी की बेटियाँ राधा रुकमन बारी–बारी उसकी संभाल लेती रहती हैं । मगर वह भी थक जाती है । और कहने लगी ‘‘यह कौन तुम्हारा अपना घर है अम्मा ? श्याम चिट्ठी तक तो भेजता नहीं, किराया भेजेगा ? तुम्हारे ५०० रुपये के पेंशन में चलाओगी सब खर्चा ! बिजली, पानी, महरी, सबका खर्चा तो हम दोनों बहनें उठा रही है । दो–दो खर्च हम कहाँ तक उठा पायेगी ? हमारे साथ रहने चली आओ ?’’[१७४]

‘‘आनंदी ने कोई विरोध नहीं किया, घंटो में उसकी जोड़ी गई थाती (गृहस्थी) त्वरित साफ कर दी गई ।’’[१७५] समाज में पुत्र–पुत्री में भेद है । मगर पुत्र कभी माता–पिता को नहीं सम्हालता ।

''रिश्तों की भावनात्मक डोर में बंधी नारी अपने लिए तो जी ही नहीं पाती । कभी बेटी का नाम देकर कभी 'पत्नी' कहकर, तो कभी 'माँ' के रूप में सदा वह शोषण का शिकार होती है ।''[१७६]

आनंदी बड़ी बेटी के घर रही, थोड़े दिनों में ही वहाँ स्नेह, अनुराग विलीन हो गया, बड़ी बेटी की आधुनिक पुत्रियों के मित्रों को आनंदी, अवरोध लगने लगी ''प्लीज नानी ! इतनी जोर से टी.वी. मत चलाइए, नानी ! हमारी दोस्त आती है तो प्लीज आप वहाँ मत आइए । हमें बड़ा अजीब लगता है ।''[१७७]

क्रोधी दामाद क्रोध करता तो घर सर पे उठा लेता । 'कब तक रहनेवाली है तुम्हारी अम्मा ? राधा का कोई फर्ज नहीं है ? दूसरे दिन रुकमणि लड़कियों के इम्तहान का बहाना करके माँ को राधा के पास भेज देती है ।

राधा की गृहस्थी समृद्ध संपन्न थी, मगर पति बेहद शराब पीता, उच्च रक्तचाप, लकवे का शिकार था । एक ही बेटा था । होस्टेल में रहकर पढ़ने के बदले शराब पीता ।

राधा उसके पति के बीच पुत्र को लेकर झगड़े होते थे, पति कहता ''तुम पर नौकरी का भूत सवार था । बेटे के लिए समय नहीं था । अब करो नौकरी और उसकी जेबे भरो, जिससे वह दिन रात शराब में डूब सके । मेरी माँ आती तो तुम्हारा मुँह लटक जाता है, तुम्हारी माँ को ले आई खसुट, बुढ़ियाँ ।''[१७८]

''इस प्रकार वृद्ध माँ-पिता, परिवार मैं सदैव अपमानित होते रहते हैं । किसी दूसरे इंसान को आधार बनाकर उसके सहारे जीना बहुत जोखिम का काम है । किसी भी क्षण आधारित को अरक्षित छोड़ वह ढह सकता है । उसके पास दूसरा चारा सिर्फ यह रह जाता है कि वह किसी और आधार की खोज में जुट जाएँ ।''[१७९]

(४) वृद्धाश्रम में आगमन

आनंदी को उसकी बेटियाँ ही वृद्धाश्रम में छोड़ जाती हैं । आश्रम में आने के बाद भी वह अपने परिवार को नहीं भूलती, रात-रात भर उसे याद करती है । चार सालों में दो-बार ही उसकी बेटियाँ उससे मिलने आई थी ।

सखुबाई उसे समझाती रहती है । ‘‘अरी जाहिल औरत बुढ़ापे में दो ही चीजें बुलाने से नहीं आती । मौत और नींद । क्या दिया तुम्हारे गोविंद भगवान ने बेटे-बेटियों से दूर इस कांजी हाउस में ही तो पटका ।’’[१८०]

(५) सहिष्णु भावनाशील नारी

आनंदी सहिष्णु जननी है, मृत्यु तक अपने परिवार को भूल नहीं पाती, अपनी मृत्यु से पहले ही वह अपने बेटे-बेटियों के प्रति जागरूक बनकर कर्तव्य अदा करना चाहती है । सखुबाई से कहती है - ‘‘मेरी मौत के बाद एक-एक गोखरु राधा-रुकमनी को दे देना, और ये अंगूठी तू पहनना । जब मैं नहीं रहूंगी और यह अंगूठी तेरी अंगुली में रहेगी तो तुझे हमेशा यही लगेगा कि मैं तेरी अंगुली थामे, तेरे साथ-साथ चल रही हूँ ।’’[१८१]

(६) लापरवाह - बेटियाँ, मृत्यु

आनंदी की इच्छा थी कि मृत्यु पर सखुबाई उसकी एक एक इच्छा पूरी करे । सिरहाने तुलसी का गमला । गमले पर लडडू गोपाल, मुख में तुलसी दल, गले में मोटा पुष्पहार और हँसते हुए सखुबाई उसे बिदा करे । सखुबाई ने आनंदी की एक-एक इच्छा पूरी की थी ।

आनंदी की मौत के बाद दोनों बेटियों को खबर कर दी गई थी । वह घूमने गई थी । लौटकर माँ का बक्सा लेने आई । दोनों बेटियाँ इतनी शील सौजन्य विहीन है कि जब माँ का बक्सा लेने आई तो माँ की सखी सखुबाई को बुलाया भी नहीं, पहचाना भी नहीं । आज के अर्थ प्रधान युग और मोडर्न

शिक्षा की तासीर है ये लड़कियाँ । इसमे सामान्य शिष्टाचार भी नहीं है । और ऐसे ही संतान अपने माता-पिता को वृद्धाश्रम में भेजते हैं ।

"जो इन्सान स्वयं को जन्म देनेवाले माता-पिता के प्रति अपना कर्तव्य फर्ज नहीं अदा करता, उसे न्यायधीश अथवा ऊँचे पद की कुर्सी पर बैठने की इजाजत, वर्तमान समाज व्यवस्था दे देती है । आज किसी भी स्कूल कालेजों में नीति-विषयक शिक्षा नहीं दी जाती । धर्म की बुनियाद जैसे कि अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य विनय, विवेक जैसे मूल्यों की शिक्षा नहीं दी जाती । और इसलिए वृद्धाश्रमों की संख्या बढ़ रही है । जिसका कारण नैतिक शिक्षा का अभाव है ।"[१८२]

इस प्रकार दोनों नारियों के व्यक्तित्व में अंतर होते हुए भी दोनों ने अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष किया है ।

इस प्रकार इस अध्याय में विवेचित शिवानी के उपन्यासों में चित्रित नारियों के स्वरूप में विविधता है, नयापन है, जिंदादिली है । प्रत्येक नारी पात्र, अमीर, गरीब, संपन्न मध्यम वर्ग से लिया गया है । और ये नारियाँ बड़ी आत्मविश्वासी, मानवीय संवेदनाओं से भरपूर हैं । कठोर, कोमल, कर्तव्य, घृणा के भाव रखते हुए भी उनमें बेचारगी, लाचारी नहीं, मगर संघर्ष से जूझने की शक्ति है । कुछ स्त्रियाँ दाम्पत्य तनाव को झेल रही हैं, पर अपने स्वाभिमान, अस्मिता के बदले सुरक्षित जिंदगी जीना नहीं चाहतीं । कुछ स्त्रियों ने अपनी अलग पहचान बनाई है, उनका व्यक्तित्व इतना दबंग बन गया है कि उन्हें कोई झुका नहीं सकता । अपराध बोध से वे मुक्त हो गई हैं, कई नारियों ने परिवार की जिम्मेदारी उठाने में अनावश्यक तनाव को छोड़, अपने ढंगसे जिंदगी जी है । कई नारियाँ परिवार के प्रति इतनी समर्पित है कि जीवन को भी भूल जाती है और परिवार को निभाने के लिए हर खतरे का सामना करने का हौसला रखती है । इन उपन्यासों चित्रित नारियाँ उच्च शिक्षा प्राप्त, दर्पयुक्त,

स्वस्थ, सुंदर, बुद्धिमान, तेजस्वी, आत्मविश्वासी, आत्मनिर्भर, जीवन को सार्थक करने वाली अपनी विशिष्ट पहचान बनानेवाली नारियाँ हैं ।

प्रत्येक नारी पात्र सहारा ढूँढ़ने वाला नहीं, बल्कि औरों का सहारा बनने वाले, मुसीबतों में स्वयं मार्ग ढूँढ़ने वाले नारी पात्र हैं । सभी नारी पात्र स्वस्थ विचार वाले, विवेकशील, सबलताओ–दर्बलताओं से युक्त मानवीय नारी पात्र हैं ।

संदर्भ संकेत :

क्रम	पुस्तक का नाम –	लेखक का नाम	पृष्ठ संख्या
१	उद्धृत : शिवानी के उपन्यास : कथ्य और शिल्प	डॉ. रेणु हिंगोरानी	२१३
२	चौदह फेरे	शिवानी	५
३	चौदह फेरे	शिवानी	६
४	चौदह फेरे	शिवानी	६
५	'हंस' मार्च २००१ संकलित लेख	प्रगति सक्सेना	६२
६	चित कोबरा उपन्यास	मृदुला गर्ग	
७	चौदह फेरे	शिवानी	८
८	चौदह फेरे	शिवानी	१०
९	साठोत्तरी हिन्दी नाटकों में नारी	मीना पंड्या	६२
१०	चौदह फेरे	शिवानी	१२
११	चौदह फेरे	शिवानी	१५
१२	चौदह फेरे	शिवानी	१३
१३	साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास में नारी के विविध रूप	डॉ. विमला शर्मा	४४
१४	चौदह फेरे	शिवानी	१६
१५	चौदह फेरे	शिवानी	१८
१६	चौदह फेरे	शिवानी	१८
१७	हिन्दी उपन्यास में मध्यम वर्ग	डॉ. हेमराज निर्मम	१५१
१८	चौदह फेरे	शिवानी	२०
१९	चौदह फेरे	शिवानी	२३
२०	चौदह फेरे	शिवानी	२४
२१	चौदह फेरे	शिवानी	२४

२२	चौदह फेरे	शिवानी	१-२
२३	चौदह फेरे	शिवानी	२
२४	साठोत्तर महिला कहानीकार	श्री मधु संधु	६१
२५	चौदह फेरे	शिवानी	२६
२६	चौदह फेरे	शिवानी	२७
२७	चौदह फेरे	शिवानी	२४
२८	चौदह फेरे	शिवानी	२४
२९	चौदह फेरे	शिवानी	२७
३०	चौदह फेरे	शिवानी	१३
३१	चौदह फेरे	शिवानी	२५
३२	चौदह फेरे	शिवानी	२६
३३	चौदह फेरे	शिवानी	१२१
३४	चौदह फेरे	शिवानी	१०५
३५	चौदह फेरे	शिवानी	१६५
३६	साठोत्तरी हिन्दी नाटकों की दशा और दिशा	मीना पंड्या	६२
३७	चौदह फेरे	शिवानी	५४-५५
३८	चौदह फेरे	शिवानी	५५
३९	साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास में नारी के विविध रूप	डॉ. विमला शर्मा	७३
४०	चौदह फेरे	शिवानी	२१६
४१	चौदह फेरे	शिवानी	२१६
४२	चौदह फेरे	शिवानी	२१६
४३	मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में नारी	रमा नवले	१५२

४४	श्मशान चंपा	शिवानी	११
४५	श्मशान चंपा	शिवानी	२६
४६	श्मशान चंपा	शिवानी	३८
४७	श्मशान चंपा	शिवानी	२६
४८	महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना	डॉ. उषा यादव	१६४
४९	श्मशान चंपा	शिवानी	३८
५०	श्मशान चंपा	शिवानी	१००
५१	श्मशान चंपा	शिवानी	६४
५२	नष्ट लड़की नष्ट गद्य	तस्लीमा नसरीन	५७
५३	श्मशान चंपा	शिवानी	१२४-१२५
५४	श्मशान चंपा	शिवानी	१३०
५५	हिन्दी महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना	डॉ. उषा यादव	१७७
५६	श्मशान चंपा	शिवानी	२१
५७	श्मशान चंपा	शिवानी	२२
५८	श्मशान चंपा	शिवानी	२०
५९	श्मशान चंपा	शिवानी	५८-६०
६०	श्मशान चंपा	शिवानी	५७
६१	श्मशान चंपा	शिवानी	४२-४३
६२	श्मशान चंपा	शिवानी	१२०-१२१-१२२
६३	श्मशान चंपा	शिवानी	६७
६४	आधुनिक हिन्दी कहानी में वर्णित यथार्थ	डॉ. ज्ञानचंद शर्मा	६१

६५	श्मशान चंपा	शिवानी	६६
६६	श्मशान चंपा	शिवानी	५५
६७	श्मशान चंपा	शिवानी	६४
६८	श्मशान चंपा	शिवानी	५४
६९	श्मशान चंपा	शिवानी	७४
७०	कालिंदी	शिवानी	७-८
७१	कालिंदी	शिवानी	१८
७२	कालिंदी	शिवानी	१८
७३	कालिंदी	शिवानी	२६
७४	कालिंदी	शिवानी	३६
७५	कालिंदी	शिवानी	३६
७६	कालिंदी	शिवानी	३६
७७	उद्धृत – शिवानी के उपन्यास : कथ्य और शिल्प	डॉ. रेणु हिंगोरानी	१६२
७८	कालिंदी	शिवानी	७६
७९	कालिंदी	शिवानी	१५५
८०	कालिंदी	शिवानी	३४
८१	कालिंदी	शिवानी	३७
८२	कालिंदी	शिवानी	३८
८३	कालिंदी	शिवानी	१६०
८४	कालिंदी	शिवानी	१६०
८५	कालिंदी	शिवानी	११०
८६	कालिंदी	शिवानी	१६५
८७	कालिंदी	शिवानी	१६६

८८	उद्धृत – शिवानी के उपन्यास : कथ्य और शिल्प	डॉ. रेणु हिंगोरानी	१२-७२
८९	सुरंगमा	शिवानी	७२
९०	सुरंगमा	शिवानी	१३
९१	सुरंगमा	शिवानी	१५
९२	सुरंगमा	शिवानी	१७५
९३	मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में नारी	डॉ. रमा नवले	१२९
९४	सुरंगमा	शिवानी	३५
९५	सुरंगमा	शिवानी	५१-५२
९६	सुरंगमा	शिवानी	६४
९७	सुरंगमा	शिवानी	६५
९८	'हंस' मार्च २००१ में संकलित लेख	प्रभा खेतान	९२
९९	सुरंगमा	शिवानी	८४
१००	मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में नारी	डॉ. रमा नवले	२१६
१०१	हिन्दी महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना	डॉ. उषा यादव	१६२
१०२	सुरंगमा	शिवानी	१३८
१०३	सुरंगमा	शिवानी	१३८
१०४	सुरंगमा	शिवानी	१४५
१०५	सुरंगमा	शिवानी	१५८
१०६	सुरंगमा	शिवानी	११७
१०७	सुरंगमा	शिवानी	१२०
१०८	सुरंगमा	शिवानी	१६७
१०९	सुरंगमा	शिवानी	१६७-१६८

११०	सुरंगमा	शिवानी	१०७-१०८
१११	सुरंगमा	शिवानी	१०७-१०८
११२	सुरंगमा	शिवानी	११०
११३	सुरंगमा	शिवानी	१११
११४	सुरंगमा	शिवानी	१११
११५	सुरंगमा	शिवानी	११३
११६	सुरंगमा	शिवानी	११४
११७	सुरंगमा	शिवानी	११४
११८	सुरंगमा	शिवानी	१३३
११९	सुरंगमा	शिवानी	१३३-१३४
१२०	सुरंगमा	शिवानी	१४६
१२१	सुरंगमा	शिवानी	१४८
१२२	सुरंगमा	शिवानी	१५५
१२३	सुरंगमा	शिवानी	१६७
१२४	सुरंगमा	शिवानी	१६८-१६७
१२५	सुरंगमा	शिवानी	१७२-१७३
१२६	सुरंगमा	शिवानी	१७३
१२७	उद्धृत – शिवानी के उपन्यास : कथ्य और शिल्प	डॉ. रेणु हिंगोरानी	२८७
१२८	रतिविलाप	शिवानी	१०
१२९	रतिविलाप	शिवानी	११
१३०	रतिविलाप	शिवानी	११-१२
१३१	रतिविलाप	शिवानी	३२
१३२	रतिविलाप	शिवानी	१७

१३३	कालिंदी	शिवानी	१६१
१३४	रतिविलाप	शिवानी	३१-३२
१३५	रतिविलाप	शिवानी	२५
१३६	रथ्या	शिवानी	१८
१३७	रथ्या	शिवानी	१८
१३८	रथ्या	शिवानी	२३
१३९	रथ्या	शिवानी	३४
१४०	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी के विविध रूप	डॉ. गणेश दास	१५
१४१	रथ्या	शिवानी	३०
१४२	रथ्या	शिवानी	४२-४१
१४३	रथ्या	शिवानी	४२
१४४	रथ्या	शिवानी	४४
१४५	रथ्या	शिवानी	४५
१४६	श्रृंखला की कड़ियाँ	महादेवी वर्मा	३८०-३५१
१४७	रथ्या	शिवानी	४५
१४८	रथ्या	शिवानी	४७
१४९	भैरवी	शिवानी	६०
१५०	भैरवी	शिवानी	६०-६१
१५१	भैरवी	शिवानी	६१
१५२	भैरवी	शिवानी	६०
१५३	भैरवी	शिवानी	६२
१५४	भैरवी	शिवानी	६३
१५५	महादेवी साहित्य समग्र	निर्मला जैन	२६३

१५६	भैरवी	शिवानी	६६
१५७	भैरवी	शिवानी	१२-१५
१५८	भैरवी	शिवानी	२५
१५९	भैरवी	शिवानी	२७
१६०	भैरवी	शिवानी	२६
१६१	भैरवी	शिवानी	१४२
१६२	भैरवी	शिवानी	१४७
१६३	भैरवी	शिवानी	२४
१६४	भैरवी	शिवानी	३३
१६५	भैरवी	शिवानी	१४२
१६६	भैरवी	शिवानी	१४५
१६७	दो–सखियाँ	शिवानी	३२
१६८	दो–सखियाँ	शिवानी	४१
१६९	दो–सखियाँ	शिवानी	३५
१७०	दो–सखियाँ	शिवानी	३५
१७१	दो–सखियाँ	शिवानी	३४
१७२	नष्ट लड़की नष्ट गद्य	तसलीमा नसरीन	८८-८९
१७३	दो–सखियाँ	शिवानी	६३
१७४	दो–सखियाँ	शिवानी	५१
१७५	दो–सखियाँ	शिवानी	५१
१७६	दो–सखियाँ	शिवानी	५१
१७७	दो–सखियाँ	शिवानी	५३
१७८	दो–सखियाँ	शिवानी	५५
१७९	मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में नारी	डॉ. रमा नवले	१३४

१८०	दो–सखियाँ	शिवानी	५६
१८१	दो–सखियाँ	शिवानी	६०
१८२	गुजरात समाचार 'न्युज़ फोकस' दिनांक २०–११–०८, वृद्धाश्रम का लेख	सुपार्श्व महेता	८-७

षष्ठ अध्याय
शिवानी के उपन्यासों में नारी चेतना : समग्र मूल्यांकन

१. ''शिवानी के उपन्यासों में नारी चेतना'' समग्र मूल्यांकन

२. शिवानी की भाषा

३. उपलब्धियाँ और सीमाएँ

षष्ठ अध्याय
शिवानी के उपन्यासों में नारी चेतना : समग्र मूल्यांकन

मनुष्य सामाजिक प्राणी है । प्रकृति–पुरुष दोनों ही महत्त्वपूर्ण हैं । समाज में रहकर ही दोनों अपने कार्यों, इच्छाओं, लक्ष्यों को पूरा कर सकते हैं । मनुष्य समाज को आगे बढ़ाने के लिए स्त्री–पुरुष दोनों की भागीदारी समान रूप–से आवश्यक है । दोनों में से एक भी पक्ष कमजोर हो गया तो मानव समाज का योग्य विकास नहीं होगा । बल्कि अहित होगा ।

इस शोध प्रबंध में मनुष्य समाज का आधा अंग यानि की नारी, नारी चेतना को अध्ययन का विषय बनाया गया है । विश्व में स्त्री–पुरुष हैं – मगर दोनों सदैव एक जैसे ही नहीं होते । दोनों में भिन्न–भिन्न विशेषताएँ,, विविधताएँ, कमजोरियाँ देखने को मिलती हैं । प्रत्येक स्त्री, प्रत्येक पुरुष समान नहीं होते । फिर–भी सदियों से सिर्फ नारी को ही कमजोर मानकर शोषण का शिकार बनाया गया । लाचार, असहाय विवश, दमित, दलित अवस्था में रखा गया ।

स्त्री–पुरुष दोनों में मूल–मानवगत वृत्तियाँ समान होती हैं । मगर दोनों के अनुभव–संस्कार––भिन्न होते हैं । जिंदगी में कुछ अनुभव ऐसे होते हैं – जिनसे केवल स्त्री ही गुजरती है । यह अनुभव ही उसे पुरुष से अलग एवं विशेष बनाता है । और वह विशेषता है – मातृत्व की विशेषता । पूरी मनुष्य जाति के हितार्थ मातृत्व को सफल, समृद्ध, बलवान, नीड़र, बनाने के लिए स्त्री–जागृति–चेतना–मुक्ति आवश्यक है । मातारूप सदैव माननीय रहा है ।

वैदिककाल में स्त्रियों की स्थिति बेहतर थी मगर क्रमानुसार पुराणकाल महाकाव्यकाल, मध्यकाल, तक आते आते स्त्रियों की स्थिति में गिरावट आई ।

इशाई मिशनरियाँ और ब्रिटीश शासन के प्रभाव स्वरूप हिन्दू धर्म के मूलभूत सिद्धांत, तथ्य परिवर्तित हुए । आज जो हमें स्त्रियों का बदला हुआ रूप नजर आता है वह मध्यकाल रीतिकाल की स्थितियों से कहीं बेहतर है । आधुनिक काल में नारी का शिक्षित, संघर्षशील, कामकाजी रूप नजर आता है । इसके पीछे ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, आर्य समाज, थियोसोफिकल सोसायटी, धार्मिक सामाजिक, शैक्षणिक–लोक जागरण के आंदोलनों, सुधारवादी आंदोलनों का परिणाम है ।

अमरीकी–नारीवाद–मुक्ति आदोलन के प्रभाव स्वरूप और गांधीजी के स्वतंत्रता संग्राम के आंदोलन के फलस्वरूप स्त्रियों में अपने अस्तित्व के प्रति जागृति आई । भारतीय स्त्रियों को समान मताधिकार भी अमरीकी स्त्रियों से पहले मिला । और नारी की सामाजिक जागृति बढ़ी । गांधीजी, राजाराममोहन राय, केशवचंद्र सेन, दयानंद सरस्वती, डॉ. बाबासाहब आंबेडकर, ज्योतिबा फूले, पंडित रमाबाई, एनी बेसन्ट, विजयालक्ष्मी पंडित, सरोजिनी नायडू, इंदिरा गांधी और उस काल के अनेक नामी–अनामी स्त्री पुरुषों ने स्त्रियों की स्थिति के बारे में जागृति बताई ।

समकालीन साहित्य में नारी विमर्श और दलित विमर्श की सामाजिक सांस्कृतिक, साहित्यिक स्तर पर बड़ी भारी चर्चा हो रही है, जिसके केन्द्र में नारी की अस्मिता और पहचान के साथ–साथ उसके अधिकारों एवं स्वातंत्र्य पर पुरजोश में विचार विमर्श जारी है । ऐसे में जरूरत इस बात की है कि नारी को केन्द्र में रखकर या फिर नारी के प्रति सकारात्मक रुख अपनाने वाली उन रचनाओं को भी हासिए पर नहीं रखा जाना चाहिए–जो दशकों पहले अस्तित्व में आ चुकी हैं और आज–पहले से भी ज्यादा प्रासंगिक हो उठी हैं । शिवानी जी का नारी विषयक साहित्य भी इसका अपवाद नहीं हैं ।

सिर्फ साहित्य के क्षेत्र में ही नहीं, केवल राष्ट्रीय स्तर पर नहीं बल्कि वैश्विक स्तर पर आज नारी विमर्श छाया जा रहा है । और वर्तमान दौर में

प्रायः नारी लेखकों को ही इसका यश मिल रहा है । लेकिन इस बात की आवश्यकता है कि पूरे भारत वर्ष, पूरे विश्व में उन तमाम स्त्री–पुरुष लेखकों को भी इसी नारी विमर्श–चेतना–मुक्ति के इतिहास का अंग बनाया जाय जिनकी लेखिनी ने नारी के प्रति एक सकारात्मक भूमिका अदा की है – और करते रहे हैं ।

साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचंद पूर्व काल के कई लेखकों में नारी को लेकर सुधारवादी दृष्टिकोण पाया जाता है । तो कई लेखक परंपरामूलक छवि गढ़ते हुए नारी चेतना–शिक्षा का विरोध करते रहे । मगर नारी जागृति वाला पक्ष ही प्रबल रहा है ।

प्रेमचंदकाल में नवसुधारवादी आंदोलन सर्वग्राहय हो चुके थे । फलतः प्रेमचंद तथा प्रेमचंदकाल के लेखकों की कृतियों में नारी, जीवन–संघर्ष में पुरुष की सहभागिनी रही ।

प्रेमचंदोत्तर काल में भी नारी विषयक समस्याओं, नारी विषयक नूतन दृष्टिकोण देखने को मिला । आर्थिक दृष्टिकोण से नारी की स्थिति सुदृढ़ होती गई । उसकी चेतना में गुणात्मक परिवर्तन आया ।

नारीचेतना के स्वर को मुखरित करके दृढ़ बनाने में महादेवी वर्मा और उनकी समकालीन कवयित्रियों के नाम आदर से लिये जा सकते हैं ।

नारी चेतना–मुक्ति का अर्थ यही है कि पुरुषों की संकीर्ण मानसिकता से मुक्ति और अपने आपको मानवीय अधिकारों से युक्त मानव स्थापित करना, अपने अस्तित्व की रक्षा करना ।

सन १९६० के बाद नारीवादी महिला लेखिकाओं की श्रृंखला सक्रिय हुई । इन लेखिकाओं ने हिन्दी साहित्य को ऐसी कृतियाँ दी हैं, जिनमें उन्होंने अपनी अनुभूतियों के साथ–साथ समाज की समस्याओं एवं समाज के विभिन्न वर्गों की नारियों को अपने उपन्यासों का आधार बनाया । साठोत्तरी महिला

लेखिकाओं ने नारी की टूटने–बिखरने की गाथाओं को साहित्य का विषय बनाया, समस्याएँ चित्रित कीं, समाधान भी बताये ।

रचनाधर्मिता की दृष्टि से देखें तो शिवानी १९६० के दशक की नारीवादी लेखिका हैं । आपने कहानी उपन्यास, लघु उपन्यास, यात्रावृत्त, संस्मरण आदि विद्याओं पर अपनी लेखिनी चलाई है । शिवानीजी ने अपने साहित्य का आधार विशेष रूप से नारी को बनाया है । शिवानीजी ने अपनी लेखिनी द्वारा नारी की परंपरावादी शोषित छबि का खंडन किया और नारी को उस प्रत्येक क्षेत्र में स्थान दिलवाया जहाँ पुरुष अपना एकाधिकार मानते थे । लेखिका ने नारी चरित्र के कई रूप उभारे हैं । अमीर – गरीब, शिक्षित – अशिक्षित, उच्चवर्ग – निम्नवर्ग, ग्रामीण – आभिजात्य, बाल – युवा – वृद्धा – शोषित – पीड़ित– राज – रानियाँ, वेश्याओं, गृहिणियाँ, नौकरानियाँ, आदि स्तरों पर शिवानीजी ने नारी चरित्रों की सृष्टि की है । जिससे यह तथ्य पुष्ट होता है कि लेखिका का पारिवारिक–सामाजिक जीवनानुभव अत्यंत व्यापक रहा है ।

शिवानीजी के प्रत्येक उपन्यास का शीर्षक नारी प्रधान है । आपके उपन्यासों के परिवेश में अल्मोड़ा, कुमाऊँ, बंगाल, कलकत्ता–शांतिनिकेतन, गुजरात, सौराष्ट्र आदि क्षेत्रों के परिवेश का चित्रण किया गया है । राजघराने की रहन–सहन, कोठियों, महलों, रिवाज–परंपराओं, षड्यंत्रों, आदि का चित्रण हुआ है ।

शिवानीजी के उपन्यासों की नारी सदैव नैसर्गिक सुंदरता युक्त–अनुपम सुंदरी रही है । परिवार–समाज में रहते हुए आपके नारी चरित्र विभिन्न संघर्षों से जूझ रहे हैं । शिवानीजी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से विभिन्न समस्याओं का चित्रण भी किया है – समाधान भी किया है

प्रस्तुत शोध–प्रबंध का विषय 'शिवानी के उपन्यासों में नारी चेतना' से जुड़ा है । शिवानी के १८ (18) उपन्यासों में नारी चेतना के विभिन्न स्वर हमें

दिखाई देते है । उनके व्यक्तित्व के विभिन्न विशिष्ट पहलुओं को उजागर करके उसमें निहित चेतना स्पष्ट की गई है ।

शिवानीजी के उपन्यासों में गैंडा, माणिक, किशनुली कृष्णवेणी–मायापुरी, विषकन्या, कृष्णकली, चल खुसरो घर आपने, स्वयंसिद्धा, कैंजा आदि उपन्यासों में स्पर्धा ईर्षा कुंज, प्रेम, सेक्स, बलात्कार, प्रेम, संदेह, निराशा, सहानुभूति, उपेक्षा, विद्रोह, भावुकता, द्विधा आदि मानसिक भावों के प्रति नारी–चेतना का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण हुआ है । इन भावों से गुजरते हुए पात्रों के कार्यों, क्रिया–प्रतिक्रियाओं को मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के माध्यम से उजागर किया गया है ।

व्यक्ति के विकास में समाज का महत्त्वपूर्ण योग है । परिस्थितियों के बदलाव ने, युग बदलाव ने, व्यक्ति के विचारों में, मानसिक दृष्टिकोण में, काफी परिवर्तन कर दिया है । फलतः पारिवारिक वैयक्तिक मूल्यों में परिवर्तन भी हुआ है । मानसिक अंतर्द्वन्द्व व्यक्ति के क्रिया–कलापों, भावों को प्रभावित करता है । उसका परिणाम व्यवहार पर, समाज पर होता है । व्यक्ति की सबसे महत्त्वपूर्ण जटिल समस्याएँ हैं – प्रेम–विवाह, सेक्स, पाप–पुण्य, नैतिक–अनैतिक, ईर्षा, कुंठा, लघुता इन सभी भावों–समस्याओं को शिवानी के नारी पात्रों ने परंपरा से हटकर नया अर्थ दिया है । स्वस्थ मानवीय गरिमापूर्ण वास्तविक सुझाव–दिए गए हैं ।

संघर्षप्रधान जीवन शैली से व्यक्ति बर्हिमुखी से अंतर्मुखी होता जा रहा है । परिणाम स्वरूप कुंठाग्रस्त हो गया है ।

'माणिक' लघु उपन्यास की नलिनी छोटी बहन की शादी के बाद एकाकिनी बन गई । दिना बाटलीवाला को मित्र बनाकर घर में आने दिया । ढोंगी दिनाने नलिनी की दबाई हुई प्राकृतिक वृत्तियों, भावों को उकसाया, विश्वास प्राप्त किया । और सबकुछ छीनकर हत्या करके चली गई । नलिनी

अगर चाहती तो बुढ़ापे में किसी पुरुष को भी साथी बना सकती थी । उसे बुढ़ापे में पैसा, प्रतिष्ठा के बदले में बातचीत करने वाला साथी चाहिए था । वह दिना की धूर्तता को पहचान नहीं सकती – इसलिए उसके प्रत्येक क्रियाकलाप को सहज माना जा सकता है ।

'स्वयंसिद्धा' उपन्यास स्त्री की स्वाधीनता स्वाभिमान के मर्म का उपन्यास है । पिता के तिरस्कार, अवहेलना के प्रति माधवी ने लड़ाई की । माधवी के चरित्र में दो विशेषताएँ हैं – कर्म–से उसमें पुरुष स्वभावगत विशेषताएँ हैं मगर भावना के स्तर पर उसमें स्त्री स्वभावगत विशेषताएँ हैं । माधवी पढ़–लिखकर रोबदार अफसर बन गई है । गाड़ी, बंगला, नौकर–चाकर से संपन्न है । अकेलेपन के खौफ से उसे अपना जीवन व्यर्थ लगता है । वह कुंठा–ईर्षा से भर गई है । जानबूझकर साथ में नौकरी करते हुए पति–पत्नी को अपने साहबी आर्डर से तबादला करवा के दूर कर देती है । उसके अचेतन दिमाग में कहीं न कहीं उसके अन्यायी पिता और सौत राधिका छिपी है । अंत में निंद की गोलियाँ खाकर अपना जीवन समाप्त कर देती है ।

आधुनिक युग में महानगरीय जीवन शैली में स्त्री–पुरुष एकाकीपन की व्यथा से पीड़ित हैं । खास करके आत्मनिर्भर, उच्च ओहदे पर स्थित नारियाँ अपने कार्य में उलझी हुई, अपने पद की गरिमा से सब के साथ सोची समझी दूरी रखती है । उसके अहम ने उसे एकाकी बना दिया है । फलस्वरूप या तो कुंठा ग्रस्त हो जाती है या आत्मघाती ।

'गैंडा' उपन्यास की राज अपने सामने हारती आई सुपर्णा के सुंदर पति को देखकर ईर्षा से जल उठी । उसके पति को ही अपने सौंदर्य जाल में फँसा देती है । विवाहेतर संबंध रखती है ।

'विषकन्या' की कामिनी सुंदर–कुशल एरहोस्टेस है घर में, माता–पिता बहन के द्वारा उपेक्षित हुई है । अपनी बहन के पति–से संबंध रख संतुष्ट होती है । इन दोनों नारियों की स्वतंत्रता, व्यक्तिगत विचार, स्वच्छंदता के पीछे

उसकी निजी–अतृप्ति भी है । उसके प्रेम का आधार ईर्षा–विद्रोह मूलक, वासनामूलक इच्छाएँ हैं । इसकी विलास वृत्ति के पीछे भौतिक साधनों से संपन्न जीवन शैली है । राजने वक्त काटने के लिए नौकरी कर ली । कामिनी कुशल एरहोस्टेस है । माता–पिता की भेदभाव भरी परवरिश ने उसमें कुँठा–ईर्षा, विद्रोह के बीज बोये हैं ।

१९६० के बाद के दशक की इन आधुनिकाओं के ये रूप आज भी कई नारियों में हमें देखने को मिलते हैं । उनकी कुंठा–विद्रोह ईर्षा–अतृप्ति उनके नकारात्क व्यक्तित्व को स्थापित करते हैं । मगर इसके मूल में वैयक्तिक, सामाजिक, पारिवारिक निजी जीवन के कारण उत्तरदायी रहे हैं । मनोविज्ञान का सहारा इन नारी चरित्रों के कृत्यों को क्षम्य बना देता है ।

प्रेम की अनुभूति को पुरुष की अपेक्षा नारी ज्यादा महसूस करती है । उसके लिए प्रेम यानि दो आत्माओं का मिलन । शारीरिक खिलवाड़ नहीं । हृदय की गहराइयों में प्रेम पनपता है । उसका मूल्यांकन, त्याग–समर्पण शुद्ध अद्वैत भाव में है – राजा–रानी, दास–दासी, स्त्री–पुरुष के भोग की कोटि का नहीं है ।

'कृष्णवेणी' उपन्यास में वेणी ऐसी ही–दिव्य प्रेमानुभूति करती है । नायिका वेणी भास्करन से प्रेम करती है मगर भास्करन के माता–पिता और बाद में स्वयं भास्कर गलित कुष्ठ से पीड़ित है । पिता की व्यवहारिक दृष्टि में ऐसा प्रेम योग्य नहीं है । मगर वेणी मृत्यु तक भास्करन को चाहती है । प्रेम के स्वरूप, भाव को वेणीने अपनी वैयक्तिक व्याख्या दी है । 'कृष्णकली' उपन्यास की वेश्या पन्ना भी ऐसे ही दिव्यप्रेम में विश्वास करती है । वेश्या के व्यवसाय से दूर रहती है । उसका प्रेमी विद्युतरंजन उसे छोड़कर चला गया मगर वह उसके बच्चे को जन्म देना चाहती है । चाहे इसके लिए उसे कितनी ही घुटन, तिरस्कार, अकेलापन सहना पड़े ।

''कृष्णकली'' उपन्यास की नायिका भी प्रेम की ऊँचाई को मानती है। उसे चाहने वाले विदेशी लक्षाधिपति को जब अपने कुष्ठरोगी माता-पिता और जनम का इतिहास बताती है तो वह उसे छोड़कर चला जाता है – अंत में प्रवीर को भी अपने जन्म का इतिहास बताती है और मृत्यु तक उसे ही मन ही मन चाहती रही। यहाँ उपर्युक्त नारियों के विचार प्रेम को लेकर अपने वैयक्तिक विचार हैं।

भारतीय समाज ने स्त्री को देवी के रूप में पूजा है। राक्षसी-चुड़ैल, डाकिनी के रूप में उसका तिरस्कार, त्याग किया है। उसे सामान्य मानव माना ही नहीं।

'कृष्णवेणी' की नायिका दिव्य दृष्टि से सबका भविष्य देखती है। दिव्यदृष्टि से उसके समृद्ध पिता ज्यादा समृद्ध बने। मगर वही पिता अपनी पुत्री के सामान्य प्रेमी को स्वीकार नहीं करते।

'विषकन्या' की कामिनी में मायावी शक्ति है। वह जिसकी प्रशंसा करे उसका नाश हो जाता था। परिणामस्वरूप परिवारवालों एवं माता-पिता ने सदैव उसकी उपेक्षा की। उसकी भावनाओं, इच्छाओं के बारे में सोचा ही नहीं। परिणाम स्वरूप कामिनी ने अपनी बहन के पति रोहित से संबंध रखकर प्रतिशोध लिया।

बलात्कार और अवैद्य संतान दोनों समस्याएँ हमारे समाज में व्याप्त हैं। अवैद्य संतान के जनक उच्चवर्ग से संबंधित पंडित, शास्त्री, या पढ़ा लिखा इन्सान भी हो सकता है।

'किशनुली' उपन्यास में बलात्कार, अवैद्य संतान की समस्या सामने आई है। सुंदर स्त्री-चाहे वह पागल हो या स्वस्थ, जहाँ अकेली रहेगी, उसकी सलामती खतरे में है। वह किसी न किसी के शारीरिक शोषण या बलात्कार का भोग बनेगी। ब्रह्मदेवता शास्त्री परमानंद पांडे, समाज में जिसका स्थान देवता तुल्य था, सुंदर किशनुली को देखकर बलात्कार करते हैं। किशनुली के

बेटे का जनक शास्त्री स्वयं है । मगर समाज उसे अवैद्य संतान के नाम से पुकारता था । आत्मग्लानि–पश्चाताप से घर छोड़ – काशी – हिमालय चले गये ।

'कैंजा' उपन्यास में एम.ए. की पढाई किया हुआ सुरेश भट्ट उन्मादिनी कुमुली पर बलात्कार करके भाग जाता है । कुमुली को बेटा हुआ । मगर ऐसी समस्याओं का समाधान भी शिवानीजी ने अपनी लेखिनी से दिया । सिर्फ स्त्री–ही क्यों दंड भुगते ? दोनों की अवेध–संतानों की परवरिश, बलात्कारी व्यक्ति के घर में या उसके रिश्तेदारों से ही करवाई । किशनुली का कर्ण बड़ा अफसर बना । कैंजा की नायिका डॉ. नंदी ने सुरेश भट्ट के बच्चे रोहित की परवरिश समृद्ध संपन्न माहौल में की । 'कृष्णकली' की कली भी अवैद्य संतान है । वेश्या पन्ना ने परवरिश की, इसाई मिशनरियों में शिक्षा दिलवाई और मोडल रिसेप्शनीस्ट बनी । ऐसी संतानों को समाज में योग्य पद पर पहुंचाया ।

शिवानीजीने 'मातृत्व' भाव को बड़े विलक्षण अंदाज से महत्त्वपूर्ण बनाया है । अक्सर संतानहीना स्त्रियों को समाज में योग्य स्थान नहीं दिया गया । संतानवाली स्त्रियाँ भी अपने बच्चों को ऐसी स्त्रियों से छिपाती रहती हैं । और उसे डाकिनी, चुडैल, बुरी नजरवाली, जादूगरनी माना जाता है । मगर शिवानीजी ने जितनी भी अवैद्य संतानें हैं उनकी परवरिश ऐसी संतानहिना स्त्रियों से करवाई है । जैसे वेश्या पन्ना में मातृत्वभाव है – कली को लेकर वह अकेली रहने के लिए तैयार हुई – परवरिश की । 'किशनुली' उपन्यास की काखी ने भी – कर्ण किशनुली को लेकर समाज, बिरादरी, जाति का बहिष्कार स्वीकार कर लिया । कैंजा की नायिका नंदी को सुरेश भट्ट मन ही मन चाहता था नंदी ने रोहित की परवरिश की । क्योंकि मातृत्व का भाव तो वैश्विक है प्रत्येक स्त्री में मौजूद है । अपने बच्चे न होते हुए भी दूसरों के बच्चे को अपना बना सकती है । मातत्व का भाव स्त्री के जन्म से ही उसमें शाश्वत रूप में मौजूद होता है ।

पितृसत्तात्मक मर्यादावादी, रूढ़िग्रस्त परिवार व्यवस्था और विवाह का संकीर्ण दायरा, कुंडली, विवाहयोग, जातिपांति आदि बंधनों से युवा नारियों को अपने अरमानों का गला घोंट देना पड़ता है । आजीवन उसका शोषण होता रहता है । फिर भी नारी अपने अस्तित्व की पहचान हेतु संघर्षशील रही है ।

जैसे 'स्वयंसिद्धा' की माधवी का विवाह कुंडली के आधार पर हुआ था । राधिका ने उसके पति के साथ अपने संबंध के बारे में बताया और वह पिता के घर वापस आई । पिता ने पुत्री के बदले समाज, प्रतिष्ठा को महत्त्व दिया उसकी अवहेलना की । तिरस्कार करके घर से निकाल दिया । बाद में आत्मनिर्भर नारी अपनी प्रतिशोधमूलक कुंठाओं के कारण कितनी जिद्‌दी हो सकती है । इसका लेखाजोखा इस उपन्यास में है ।

माधवी की जिद्‌द अहंवादी स्वभाव या कुंठाएँ उसके लाड़ प्यार भरी परवरिश के कारण हों, मगर प्रतिशोध भाव के पीछे कुंडली-मेल समाज-प्रतिष्ठा- वैवाहिक बंधन में माननेवाले उसके पिता जिम्मेदार थे ।

''रथ्या'' उपन्यास की नायिका ग्रामीण परिवेश में पली मातृ-पितृ विहीन लड़की है । वैद्य-पुत्र विमल-से प्रेम करती है । विमल भी उसे चाहता है । मगर विमल के पिता ने वसंती की कुंडली में विधवायोग देखा । वसंती का प्रस्ताव नामंजूर किया । निराश वसंती घर-से भाग गई, शारीरिक शोषण हुआ और जीवननिर्वाह के लिए डांसर बनी ।

'मायापुरी' उपन्यास की शोभा को पिता की मृत्यु के बाद संपन्न गोदावरी मौसी के घर रहकर पढ़ाई पूर्ण करनी पड़ी । सतीश-शोभा एक दूसरे को चाहते थे । मगर सतीश के पिताजी का कर्ज मंत्री तिवारी जी ने उतार दिया था । इसलिए सतीश को मंत्री पुत्री से शादी करनी पड़ी । शोभा के व्यक्तित्व की अच्छाई यह है कि वह सतीश को मुक्त कर देती है । चली जाती है अपने गाँव ।

'कैंजा' उपन्यास की नायिका नंदी राजमान्य ज्योतिषी की पुत्री थी । उसके पिताजी ने उसकी कुंडली में विधवा योग देखा – पढ़ा लिखाकर आत्मनिर्भर बनाना चाहा । सुरेश भट्ट का प्रेम प्रस्ताव नामंजूर किया । नंदी भी मन–ही सुरेश को चाहती थी, मगर पिताजी की आज्ञा के सामने कुछ नहीं बोली । निराश सुरेश भट्ट ने शराब–पी पीकर अपनी हालत बिगाड़ दी थी । शादी जब हुई तब सुरेश भट्ट मृत्यु के द्वार पर खडा था । और नंदी ने सुरेश भट्ट की अवैद्य–संतान को स्वीकृत कर लिया ।

शिवानी जी परिवार की अखंडता में विश्वास करने वाली लेखिका है । परिवार को टूटता हुआ बचाने में स्त्री का महत्त्वपूर्ण योगदान है । 'चल खुसरो घर आपने' में परिवार की आर्थिक स्थिति की समस्या है । भारतीय पारिवारिक स्थिति ऐसी ही है कि कमाने का काम, अर्थ–उपार्जन का काम पुरुष के हिस्से में है । मगर जब पुरुष नहीं रहे तो स्त्री भी अर्थ उपार्जन में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकती है । नायिका कुमुद पिताजी के मरने के बाद ट्यूशन करके, नौकरी करके घर की आर्थिक स्थिति को संपन्न कर देती है । मगर कुमुद की माँ ने कभी कुमुद की शादी के बारे में सोचा ही नहीं । कुमुद चली जाय तो घर में कमाने वाला नहीं रहेगा । इस प्रकार कुमुद को अपने अरमानों को भूल जाना पड़ता है ।

आर्थिक असमानता की वजह से व्यक्ति में लघुता–हीनता का भाव पैदा हो जाता है । 'मायापुरी' की शोभा संपन्न गोदावरी मौसी के यहाँ आकर अपने वस्त्र चप्पल को लेकर हीनता अनुभव करती है । उपकारों के बोझ तले इतनी दब जाती है कि अपने प्यार–से भी पलायन कर जाती है ।

हमारे समाज में अनेक समस्याएँ मुँह बायें खड़ी हैं । समाज में व्याप्त आर्थिक समस्या, अनमेलविवाह, मूल्यहीनता, बलात्कार, भ्रष्टाचार, दहेज, जातिप्रथा, धार्मिक ढोंग, वृद्धों की अवहेलना, वेश्याजीवन और कुष्ठरोग, राजनीतिक नेताओं

के षडयंत्र आदि । उपर्युक्त सारी समस्याएँ शिवानीजी के उपन्यासों में चित्रित हुई हैं ।

शिवानीने बडी सच्चाई, ईमानदारी के साथ सामाजिक समस्याआं को उभारकर पाठकों के समक्ष रखा है । ऐसी समस्याओं को व्यक्त करने में उन्होंने कभी सच्चाई से मुँह नहीं मोड़ा ! उनके कथनानुसार ''इस उद्दंड लेखिनी ने मेरे अनेक स्वजन इष्ट मित्रों को मुझसे विलग कर दिया । मैं किसी विवाह- भोज-या सामाजिक अनुष्ठान में जाती हूँ तो एक सहमी-सी चुप्पी मुझे अपदस्थ कर देती है । मुझे लगता है नारी होकर भी स्वयं मेरी ही बिरादरी मुझे संदिग्ध दृष्टि से घूर रही है । एकबार-तो किसी मुँह फट महिलाने कह भी दिया ''अजी सम्हल के बाते करो ये कहानी लिख देंगी' ।

चौदह फेरे, श्मशान चंपा, कालिंदी, सुरंगमा, रतिविलाप, रथ्या, भैरवी, दो सखियाँ आदि उपन्यासों में आर्थिक सामाजिक पारिवारिक, धार्मिक राजनीतिक विचारधारा-से संबंधित समस्याएँ व्यक्त हुई हैं । इन सभी के सामने नारी अपना अस्तित्व बनाये हुए संघर्षरत है ।

अर्थ मानवजीवन की अति महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है । पारिवारिक, सामाजिक, राजनैतिक या धार्मिक सभी क्षेत्रों मैं अर्थ आवश्यक है । अर्थ से ही इन्सान की प्रतिष्ठा, संबंध बनते-बिगड़ते हैं । विकास-उन्नति-अवनति होती है । पारिवारिक संबंध भी अर्थ से ही बनते बिगड़ते हैं । इसलिए अर्थ की महत्ता को, आवश्यकता को कोई नकार नहीं सका ।

अर्थ के अभाव में, मूल्यहीनता, लालच, चोरी, हत्या, शोषण आदि समस्याएँ भी उत्पन्न होती हैं । आर्थिक संपन्नता से व्यक्ति के निजी, व्यक्तिगत जीवन में भी परिर्वतन होता रहता है

'चौदह फेरे' उपन्यास में अनमेल विवाह और दाम्पत्य जीवन में तनाव की समस्या है । दोनों में अदश्य रूप से अर्थ कारणभूत है । आधुनिक संपन्न-समृध्द, पढ़ा-लिखा कर्नल अपनी सुंदर परंतु गँवार पत्नी से दूर रहता

है । क्योंकि पत्नी नंदी मर्यादावादी गँवार, फूहड़ थी । और कर्नल पिकनिक– पार्टी– शराब–महफिल में रुचि रखने वाला आदमी है । आधुनिक कर्नल, चंचल– आधुनिका मल्लिका से संबंध रखता है । नंदी अपने पति का बँटवारा नहीं सहन कर सकी । संयुक्त परिवार में रहकर अपने गृहिणीत्व का कर्तव्य पहले ही अदा कर चुकी है । घर–छोड़ देती है । गुरुजी की सेवा करने के लिए संन्यास ग्रहण कर लेती है । कोई भी भारतीय नारी पति का बँटवारा नहीं चाहती । अगर कर्नल गरीब होता तो नंदी को स्वीकार कर लेता मगर समृद्ध कर्नल ऐसा नहीं कर पाता । भारत के कई समृद्ध परिवारों की यही कहानी है ।

संपत्ति को महत्त्वपूर्ण माननेवाला कर्नल अपनी बेटी की शादी भी संपत्तिवान सर्वेश्वर से करवाना चाहता है । सर्वेश्वर के व्यक्तित्व में दंभ–अभिमान ज्यादा है । इसलिए तो अहल्या को पसंद नहीं और वह घर छोड़कर अपने प्रेमी के पास चली जाती है । उसने अपनी आत्मा की आवाज को महत्त्वपूर्ण माना है ।

'रतिविलाप' उपन्यास में अर्थ के अभाव के कारण मूल्यहीनता और अनमेल विवाह की समस्या खड़ी हुई है । माता–पिता विहीन–अनसूया के मामा की निगाह उसकी संपत्ति पर थी । मामा–मानवीय मूल्यों को भूलकर अनसूया को धोखे में रखकर पागल लड़के से उसकी शादी करा देते हैं ।

'रतिविलाप' में अनसूया की नौकरानी हीरा मूल्यवान दामी–साड़ियाँ देखकर अनसूया के ससूर को लेकर भाग जाती है, साथ में साड़ियाँ भी–ले जाती है । पहनने–ओढ़ने, खाने–पीने के अभावों से त्रस्त हीरा (का चरित्र) ऐसा करे यह बिलकुल स्वीकार्य लगता है । अनसूया के चरित्र की विशेषता यह कि अनमेल विवाह के बाद साड़ियाँ का बुटिक खोल लेती है । हीरा पर भरोसा करती है । ससूर की मृत्यु के बाद बेटे की तरह अग्निदाह देती है थोड़े समय के बाद हीरा को किसी होटल में देखा, पहचान गई मगर हीरा

और पिताजी की संतान को अनाथ बनाना नहीं चाहती इसलिए पुलिस को खबर नहीं करती ।

अर्थ की असमानता, लालच में व्यक्ति भ्रष्टाचारी बन जाता है और अपने परिवार को भूल–जाता है । पूरे परिवार को मुश्किलों में डाल देता है । ''श्मशान चंपा' में धरणीधर भ्रष्टाचार की वजह से सस्पेंड हुआ । जब पद पर स्थित था तब अपने बूढ़े माँ–बाप–बहन–रिश्तेदारों को भी भूल जाता है । यह समस्या आज भी हमारे समाज में व्याप्त है । धरतीधर की मृत्यु के बाद चंपा ही घर की आर्थिक स्थिति को संभाल लेती है ।

दहेज समस्या हमारे समाज में सालों से व्याप्त है दहेज न देने के कारण कई लड़कियाँ अविवाहत रहती हैं तो कई लड़कियों को ससुराल में जलाया, मारा जाता है । रिवाज–प्रतिष्ठा के नाम पर दहेज की अनिवार्यता स्थिर कर दी गई है । पढ़े–लिखे लालची लोग अपने शिक्षित, विदेश स्थित बेटे की मुँहमाँगी कीमत लेते हैं । और योग्य पात्रों के अभाव में माता–पिता कीमत देते भी हैं । यह सामाजिक, विषमता पारिवारिक मजबूरी भी है ।

'कालिंदी' उपन्यास में नायिका दहेज के कारण ही घर–आई बारात वापस लौटा देती है । और अपने डॉक्टरी के व्यवसाय में लग जाती है । उसका दुल्हा मि. जोशी जब पैसे लौटाने वापस आता है तो इसका भी अपमान कर देती है । मगर वहीं कालिंदी अपने दुल्हे को कभी कभी याद भी करती है । इसका अर्थ यह नहीं कि कालिंदी ने दहेज प्रथा को स्वीकार कर लिया या हार मान ली । मगर शिवानी जी ने अपनी लेखिनी से यह समाधान दिया है कि स्त्री–पुरुष के संबंधों की, सहवास की एक बायोलोजिकल नेसेसीटी होती है । यहाँ कालिंदी का मानवीय नैसर्गिक स्वभाव नजर आता है । मगर अपने अहम के कारण समझौता नहीं कर पाई । कालिंदी की माँ अन्नपूणा के शब्दों में डॉ. जोशी को न्याय दिलाया है ''कोई भी निर्णय लेने से पहले बेटी अपने अहम् को शत्रु मत बनाना ।''

'विषकन्या' में कामिनी की बदसूरत भाभी ढेर सारा दहेज लेकर ससुराल आई थी । 'माणिक' उपन्यास में नलिनी भी रंभा को ढेर–सारे गहने पहनाकर बिदा करना चाहती है ताकि उसका दुल्हा उसकी पूजा करता रहे । इस प्रकार कालिंदी के सिवा पढ़ी लिखी नारियोंने भी दहेज प्रथा को स्वीकार किया है । जो सामाजिक विषमता है ।

बलात्कार की समस्या युगों से चली आ रही है । इस समस्या से सदैव स्त्री को सहन करना पड़ता है । बलात्कारी व्यक्ति के मन में रिश्तों की कोई अहमीयत नहीं रहती, उसके लिए स्त्री यानि वासना पूर्ति का माध्यम, साधन । समाज भी बलात्कार के बाद स्त्री को ही जिम्मेदार मानकर उसकी उपेक्षा–तिरस्कार करता है । बलात्कारित स्त्री के सामने दो ही रास्ते है या तो मृत्यु अवहेलना, या घर से दूर जाकर वैराग्य ।

'रथ्या' लघु उपन्यास में बसंती को बेटी बेटी करनेवाला सर्कस का मेनेजर जब पत्नी मर जाती है, बेटियाँ चली जाती हैं तो वसंती का शारीरिक शोषण करता है । उससे बचने के लिए बसंती भाग जाती है और जीवन निर्वाह के लिए डांसर बन जाती है ।

'भैरवी' उपन्यास में चंदन उसके पति के साथ ट्रेन में सफर कर रही थी । फौजी जवान विक्रम को बाँधकर, चंदन पर बलात्कार करने की कोशिश करते हैं । उससे बचने के लिए चंदन ट्रेन से कूद पड़ती है । अघोरियों के आश्रम में गिरती है वहाँ भी सलामती नहीं पाई तो वहाँ से भी भाग निकलती है । यह एक सामाजिक समस्या है कि स्त्री जिसे रक्षक मानती है वही उसका भक्षक बन जाता है । यहाँ मायादीदी का चरित्र है कि वह चंदन को बचाने में, भाग जाने में मदद करती है ।

धार्मिक ढोंग–पाखंड की समस्या शिवानी जी के उपन्यासों में व्यक्त हुई है । सदियों से धार्मिक स्थानों में, मठों में, गुफाओं–आश्रमों में मंदिरों में स्त्री

का शोषण धर्म के नाम पर होता रहा । धर्म को लेकर जबतक लोग अंधश्रद्धा रखेंगे तबतक इस शोषण के प्रति जागृति नहीं आयेगी ।

शिवानी जी के नारी चरित्र धार्मिक दंभ, पाखंड जटिलताओं का साहजिक स्वीकार नहीं करते उससे दूर रहने में या उसे उखाड फैंकने में प्रयत्नशील रहते हैं ।

'चौदह फेरे' उपन्यास में अहल्या ने दो-साधुओं की बातें छिपकर सुनीं जिन्होंने एक लड़की को उठाकर हैदराबाद में सात हजार में बेच डाला था । ''भैरवी'' उपन्यास में अघोरी भैरवानंद नई भैरवीचंदन को देखकर माया-दीदी को मार देते हैं । और चंदन वहाँ से भाग निकलने की हिंमत बताती है ।

हठयोग की साधना करने वाले अघोरी बाबाओं की साधना में स्त्री आवश्यक है । इसलिए उसके मन-से स्त्री कभी निकलती नहीं । धर्मगुरुओं के आचरण का प्रभाव समाज पर अवश्य पड़ता है । मगर धार्मिक लोगों ने ही स्त्री को मानव न मानकर योगिनी-दासी बना दिया है । स्वस्थ समाधान नहीं दिया ।

पुरुषों के शोषण का एक नया परिणाम है वेश्या व्यवसाय । वेश्या स्त्रियों को सदैव ही पुरुष समाज ने एक-चीज, वस्तु, मन बहलाने का साधन समझा । सुंदर शरीर वाली वेश्या खरीदकर रखना अपनी प्रतिष्ठा का मानदंड माना जाता था । मगर रूप-सौंदर्य उतर जाने पर उसे छोड़कर चले जाते हैं ।

''भैरवी'' उपन्यास में तिवारीजी तिसरी शादी के बाद संतान प्राप्त कर लेते है तो - वेश्या रामप्यारी को भूल जाते हैं । इतना ही नहीं - नादानियत में रामप्यारी के बेटे के साथ संबंध रखने वाली पुत्री की शादी बूढ़े दुहाजू से कर देते हैं ।

'कृष्णकली' में विद्युत रंजन को जैसे ही पता चला कि पन्ना उसके बच्चे की माँ बनने वाली है । तो तुरंत छोड़कर चला जाता है । 'रथ्या' उपन्यास

की वंसती मजबूरन डांसर बन कर आजीविका प्राप्त करती है । उसके साथ दो–तीन रातें रहने के बाद विमल उसे वेश्या कहकर चला जाता है ।

इस वेश्याओं के सद्‌गुणों को पुरुषों ने देखा ही नहीं, मगर शिवानीजी ने अपनी कलम द्वारा इन नारी चरित्रों के सद्‌गुणों को पाठकों के सामने रखकर न्याय दिलवाया है । ''सुरंगमा'' उपन्यास की गोहरजान में कला–मातृत्व है । ' 'भैरवी' उपन्यास की रामप्यारी ने तिवारीजी से प्रेम करके अपना व्यवसाय छोड दिया था । और गृहिणी बन गई थी । और अपने बच्चों को भी उच्चशिक्षा दिलवाई थी । 'कृष्णकली' में पन्ना सदैव अपने व्यवसाय से दूर रही है । उसे देखकर संपन्न घराने की गृहिणी बैठी हो ऐसा लगता है । वह कली की परवरिश में अकेली रहती है मंदिर जाती है ।

इन स्थितियों को देखकर लगता है कि स्त्री को जब अपना रक्षणकर्ता, प्यार करनेवाला मिल जाता है तो वह कभी वेश्या नहीं बनती ।

'रथ्या' में वसंती इसलिए समाज में वापस जाना नहीं चाहती कि कायर विमल उससे छिपाकर मिलना चाहता है मगर भरी बिरादरी के सामने उसका स्वीकार नहीं कर पायेगा । बसंती विमल जैसी मूर्ख, कायर नहीं है सामाजिक विषमता को अच्छी तरह से जानती है । इसलिए डांसर बनकर आत्मनिर्भर बन गई है – वेश्या भी किसी की बेटी रही होगी, मानवीय गुणों से युक्त होती है । मगर पुरुषों का ध्यान सदैव उसके शरीर पर जाता है । यह पुरुषों की मानसिक संकीर्णता है ।

हमारे समाज की ज्वलंत समस्या है, वृद्धों की अवहेलना । संयुक्त परिवार से, विभक्त परिवार और विभक्त परिवार से वृद्धाश्रम अस्तित्व में आये हैं । जीवनभर मेहनत मजदूरी करके, सुखदुःख का सामना करके जो माता–पिता अपनी संतान को उच्च शिक्षा दिलवाते हैं । वही संतानें उसे वृद्धाश्रम में भेज देती हैं । संतानें अपने वैयक्तिक जीवन में इतनी स्वार्थी हो जाती हैं ।

माता–पिता को भी अपनी संतानों को पढ़ा लिखाकर विदेश भेजने की ललक सवार होती है । विदेश जाकर विदेशी सभ्यता के अनुकरण पर व्यक्ति को अपने सेल्फ से सिवा कोई महत्त्व पूर्ण नहीं लगता, बाकी रिश्ते औपचारिक हो जाते हैं ।

संतानों से प्यार नहीं पानेवाले माता–पिता वृद्धाश्रम में अपने जैसे समदुःखी वृद्धों से मित्रता करके अपना समय व्यतीत करते हैं ।

''दो–सखियाँ'' उपन्यास में ऐसी–दो वृद्ध नारियों की कथा है कि जिसके संतानें होते हुए इन्हें वृद्धाश्रम में आना पड़ा । पति के मरजाने केबाद सखुबाई स्वयं पढ़ लिखकर प्रिन्सीपाल बन गई । बेटे को भी पढ़ा लिखाकर विदेश भेजा । बेटा उसे भूल जाता है तब स्वयं मोह के बंधन त्यागकर वृद्धाश्रम में चली आई और वृद्धाश्रम में भी बर्ट्रान्ड रसेल को पढ़ती रहती है । अपनी सखी आनंदी को भी तटस्थ बनाना चाहती है । आनंदी को अन्याय करने वाले उसके बेटे बेटियों को गहने न देकर समुद्र में बहा देती है ।

इस प्रकार सखुबाई में झूठी भावना नहीं है । उसके प्रेम में, भावना में एक प्रकार की समझदारी तटस्थता है । वह सास के अन्याय को सहन नहीं कर सकी और आत्मनिर्भर बनी थी । पढ़ाई की वजह से उसका सोचने का तरीका बदल गया है ।

जब कि आनंदी मृत्यु तक भोली, समर्पिता, प्रेममयी माता बनी रही है । दोनों के स्वभाव अलग है । वृद्धाश्रम की समस्या समाज के सामने रखने के लिए दोनों के चरित्र को उभारा गया है ।

वृद्धाश्रम का फैलता जाता विस्तृत विस्तार, बढ़ रही संख्या से यह पता चलता है कि समाज में नैतिक मूल्यों की शिक्षा इतनी कमजोर साबित हुई है कि बच्चे अपने माता–पिता को भूल जाते हैं ।

राजनीति हमारे जीवन का धर्म बन गई है । आज मनुष्य प्रत्येक संबंध, वस्तु, स्थिति को राजनीति के ढंग–से विश्लेषित कर रहा है । जहाँ केवल

स्वार्थ ही स्वार्थ नजर आता है । शिवानीजी ने अपने उपन्यासों में राजनीति में पनपते भ्रष्टाचार, राजनीतिक हथकंडे, राजनीतिक प्रभुसत्ता, दाँवपेच आदि का चित्रण किया है । जिसका प्रभाव मानवीय संबंधों पर हुआ है । सुरंगमा उपन्यास में इन समस्याओं का चित्रण किया गया है । इसके अलावा मायापुरी, चल खुसरो घर आपने, कृष्णकली, विषकन्या, आदि उपन्यासों में भी राजनेताओं के चरित्रों का पर्दाफाश हुआ है ।

राजनेता और धार्मिक नेताओं के आचरण, कथन में उचित तालमेल हो तो समाज कितनी ही विषमताओं से बच सकता है । समाज में भ्रष्टाचार की समस्या विद्यमान है और भी फैलती जा रही है । राजनेता प्रजाहित के लिए कोई काम नहीं करते बल्कि संपत्तिवान बनने, ऐश करने राजनीति में आते हैं ऐसी समझ आम प्रजा में है । राजनेताओं के चरित्रों का दुष्प्रभाव समाज पर पड़ता है ।

राजनेताओं द्वारा भ्रष्टाचार, सरकारी वाहनों का दुरुपयोग होता है । इसका उदाहरण 'श्मशान चंपा' उपन्यास में है भष्ट्राचार करने से ही धरणीधर को सस्पेंड कर दिया जाता है ।

''कृष्णकली'' उपन्यास में पन्ना का प्रेमी विद्युतरंजन पन्ना को छोड़ राजनीति में शामिल हो जाता है । विरोधी दल के सदस्य उसकी देश सेवा के नाम पर कमायी गई अपार धनराशि पर थुडी-थुडी करते हैं । कुन्नी के पिता विदेश मंत्रालय पर जोर डलवाकर प्रवीर को सेंटर बुला लेते हैं ।

''मायापुरी'' उपन्यास में तिवारीजी की कृपा से सतीश काबुल में राजदूत के महिमामय कार्यालय में एक नवीन नियुक्ति का कार्यभार वहन करता है । अविनाश को रोकफेकर शिष्यवृत्ति मिली वह भी मंत्री तिवारीजी की कृपा से ।

''विषकन्या'' में कामिनी स्वयं कहती है कि रोहित ''नई नौकरी की बागड़ोर जब चाहे तब सम्हाल सकता था । क्योंकि केन्द्रीय मंत्रि मंडल के अधिकांश मंत्री डैडी के मरिज रह चुके थे । रोहित के पिता का वैभव ऐसा

था कि वे भारत के किसी–भी मेडीकल बोर्ड को उठाकर अपनी जेब में डाल सकते थे ।

‘‘सुरंगमा’’ उपन्यास मंत्रियों के चरित्रों का लेखा–जोखा है । किसी धनवान प्रतिष्ठित आदमी के सहकार से, पत्नी के सहकार से मंत्री बना दिनकर अपनी सरकारी गाड़ी का उपयोग सुरंगमा को लेने छो़डने के लिए करने का आदेश देता है ।

पुत्री मिनी को पढ़ाने सुरगमा को कहना है ‘‘मिस जोशी, आप ही बेबी को पढ़ाएँगी समझ गई न आप । यह प्रदेश के एक वरिष्ठ मंत्री का आदेश है, मिस जोशी ! अपनी सत्ता का प्रयोग अपनी गँवार पत्नी का तबादला करवाने, उसे श्रेष्ठ शिक्षिका का ऍवोर्ड दिलवाने में करता है । उसके हुकम से पी.ए. उसकी गँवार पत्नी को मार देता है ।

दिनकर गिरगिट की तरह रंग बदलकर अपने आपको अकेला बताकर सुरंगमा को अपनी मिस्ट्रेस बनाना चाहता है । सुरंगमा जब मना करती है तो कहता है किस की मिस्ट्रेस नहीं थी, बोलो ? कहो तो नाम गिनवा दूँ ? नेपोलियन, रुझवेल्ट और अपने–अपने देश की विभूतियों के नाम दे सकता हूँ ।

दिनकर की दृष्टि में राजनीति के गरिष्ठ भोजन के बाद ऐसा पाचक (स्त्री संबंध) अनिवार्य हो उठता है ।

नारियों ने घर की चार दिवारी से बाहर निकलकर विश्व के विस्तृत भू–भाग पर कदम रखा है । इसका उदाहरण है ‘सुरंगमा’ उपन्यास की विनीता । जो राजनीति के संदर्भ कितनी ही बार विदेश हो आई है । वह इंडियन विमेन्स एसोशियन की चेयरमेन है । उसकी महत्त्वाकांक्षा ही राजनीति है । घर में रहना, बच्चों का पालन करना उसके लिए दकियानूसी बाते हैं । अपने कार्यों को लेकर, पद को लेकर, मंत्री पत्नी होने के नाते बहुत प्रसिद्ध है । नारी मंडल, समाज सेवा आदि उनकी रुचि है । विनीता के चरित्र द्वारा

शिवानी जी ने यह सिद्ध कर दिया है कि कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जहाँ स्त्रियों ने अपनी पहचान न बनाई हो । ऐसी आधुनिक महत्त्वाकांक्षिणी नारी विनीता के चरित्र का दूसरा पहलू भी हमें देखने को मिलता है । वह है पति पर एकाधिकार ।

विनीता को जब पता चला है कि उसका पति मंत्री दिनकर राजनीति की महत्त्वाकांक्षा को छोड़कर सुरंगमा के सौंदर्य जाल में फंसकर उसे प्रेम करने लगा है तो विनीता सुरंगमा के पास जाकर, तेजाब डलवाकर कुरूप बनाने की और मार देने की धमकी देकर आई । मंत्री पत्नी होने के नाते सुरंगमा का तबादला भी करवा देती है । सुरंगमा की गतिविधियों पर कड़ी निगरानी रखती है ।

जो काम एक राजनेता कर सकता है । वह काम एक महत्त्वाकांक्षिणी राजनैत्री विनीता ने भी किया । सुरंगमा जैसी निर्दोष नारी उसका शिकार बनती है । सुरंगमा सबकुछ छोड़कर चले जाने का निर्णय कर लेती है । यहाँ दोनों स्त्रियों में भारतीय नारी का पारम्पारिक रूप देखने को मिलता है ।

घर से बाहर निकल कर नारीने अर्थउपार्जन करने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है । मगर ऐसी कामकाजी नारियों को सदैव पुरुष की लोलुप निगाहों का सामना करना पडा । शिवानी के उपन्यासों की नारियों को भी इस विषमता का सामना करना पडा है । अपनी सूझबूझ–जागृति–से उसने मार्ग ढूँढ़ निकाला है ।

''कृष्णकली'' उपन्यास में कली को सदैव अपने बोस मि. शेखरन की कुदृष्टि का सामना करना पडा । मगर कली सदैव इससे दूर रही ।

''चल खुसरो घर आपने'' में पारिवारिक आर्थिक और अपने भाइयों के राजकीय षडयंत्र से त्रस्त राजा साहब प्रेम–संबंध, कुमुद से सहवास की याचना करते हैं । आर्थिक संकट होने पर भी कुमुद राजा साहब के यहाँ से त्याग पत्र देकर चली जाती है ।

"स्मशान चंपा में" मि. सेनगुप्त द्वारा चंपा के पहले आई डॉ. शीला जोसेफ का शारीरिक शोषण हुआ था । शीला ने आत्महत्या कर–ली थी मगर चंपा ने एक ही वाक्य में कह दिया था । "मेरे साथ ये नहीं हो सकता ।"

"विषकन्या" उपन्यास में सुंदर कामिनी को कुदृष्टियों से घूरने वाले पायलोट डिसोजा को कामिनी अपने विषैले डंक से काट कर मृत्यु तक पहुँचा देती है ।

"कालिंदी" उपन्यास में डॉ. अखिलेश वर्मा अपनी मंगेतर माधवी की अनुपस्थिति में कालिंदी को अपनी बाँहों में भर लेता है । कालिंदी उसे फटकार के निकल जाती है ।

"रथ्या" उपन्यास में सर्कस में काम करनेवाली बसंती का, सर्कस का मेनेजर ही शारीरिक शोषण करता है । वसंती भाग जाती है । विमल भी उसे वेश्या कहता है ।

"चौदह फेरे" में कर्नल मल्लिका कोसेक्रेटरी का पद देकर उससे शारीरिक संबंध रखता है ।

"सुरंगमा" में दिनकर सुरंगमा को अपनी बेटी को पढ़ाने का आग्रह – आदेश देता है । नैनीताल घुमाने ले जाकर प्रेमालाप करता है । सुरंगमा के मना करने पर भी उसे उपहार देता है । मित्र बनाना चाहता है ।

दिनकर अपनी गँवार पत्नी को छोड़कर भाग गया था, मंत्री बनने के बाद उसके आदेश से उसकी गंवार पत्नी की मृत्यु हुई ।

मंत्री दिनकर सुरंगमा से संबंध रखकर विनीता का भावनात्मक शोषण करता है, झूठ बोलता है, मगर विनीता दिनकर की बातों में न आकर सुरंगमा का तबादला करवा देती है ।

आत्मनिर्भरता और अधिक शिक्षा के कारण कभी–कभी नारियों में अहंकार भावना आ जाती है । इसलिए उसके दाम्पत्य जीवन में भी दरार पडती है । अथवा वह विवाह करना ही नहीं चाहती ।

''गौंडा'' उपन्यास में राज–भोगवृति, स्वतंत्रता के लिए ही नौकरी करती है, पति का तबादला हो गया मगर साथ नहीं जाती । पुत्रियों को मायके भेज देती है । परिणाम स्वरूप स्वच्छंदता का मूल्य मौत पाती है ।

''सुरंगमा'' उपन्यास में विनीता राजनीति में सक्रिय है । विदेश–आती जाती है । घर में रहना, बच्चों का पालन करना उसके लिए दकियानूसी बातें हैं । परिणामस्वरूप दिनकर सुरंगमा को चाहने लगा ।

''माणिक'' की नलिनी प्रिन्सीपाल है । शादी नहीं करके अकेली ही रहती है ।

''कालिंदी'' में नायिका दहेज की वजह से घर आई बारात तो लौटा देती है । मगर बाद में शादी ही नहीं करना चाहती ।

''स्वयंसिद्धा'' में माधवी राधिका का झूठी मजाक सही मानकर पति से रिश्ता तोड़, निकल जाती है – नौकरी करती है ।

इस प्रकार शिवानीजी ने अपने उपन्यासों में नारी विशेषताओं के साथ नारियों की कमजोरियों, दुर्गुणों को भी बताया है ।

पति–पत्नी के दाम्पत्य जीवन में तनाव, दरार, संबंध–विच्छेद आदि किसी भी कारण से संतानें मानसिक तनावों से गुजरती हैं । इस समस्या का चित्रण भी शिवानी के उपन्यासों में हुआ है । शिवानी जी परिवार की अखंडता में विश्वास रखती हैं । अगर माता–पिता का जीवन तनावपूर्ण रहा तो बच्चों का भविष्य भी बिगड़ सकता है । वह कुंठाग्रस्त होते हैं ।

कालिंदी, चौदह फेरे, स्मशान चंपा, कृष्णकली, विषकन्या, कैंजा, कृष्णवेणी आदि उपन्यासों में इस समस्या का चित्रण हुआ है । ''कालिंदी'' की माँ –अन्नपूर्णा पति के द्वारा परित्यक्ता हुई । कालिंदी का बचपन मामा के यहाँ बीता । कालिंदी अपने पिता, दुल्हा, पुरुष मात्र का विद्रोह विरोध करती है ।

'चौदह फेरे' में कर्नल के द्वारा पत्नी–नंदी, पुत्री अहल्या की उपेक्षा की गई थी । अहल्या का बचपन मामा के यहाँ अभावों में बिता । कर्नल के घर

आकर बिस्कीट, मिठाइयाँ, दूध–मेवे पर टूट पड़ती है । अपने पिता को पहचानती भी नहीं उसके लिए कर्नल कनकट्टा, उल्लू का पट्ठा, साला था ।

''स्मशान चंपा'' में भ्रष्टाचारी पति को भगवती अंत तक माफ नहीं कर पाई । धरणीधर की मौत के बाद चंपा का रिश्ता टूटा, कमाने के लिए बाहर जाना पडा ।

''कृष्णकली'' में पार्वती–असददुल्लाखान कुष्ठरोगी थी । दोनों की अवैद्य संतान कली जीवनभर अपने माता–पिता को देखने तरसती रही ।

''स्वयंसिद्धा'' में माधवी को जब पिताने घर से निकाल दिया तो माधवी उस माँ के लिए रातभर रोती रही कि जिसको उसने देखा तक नहीं था ।

''विषकन्या'' में माता–पिता दोनों कामिनी की उपेक्षा करते हैं फलस्वरूप अपनी बहन के पति रोहित–से संबंध रखकर उसे ही डंस लेती है । बाद में कभी घर नहीं जाती ।

''कैंजा'' में नंदी अपने ज्योतिषी पिता की आज्ञा मानकर कँवारी रहती है मगर माँ के कपड़े पहनकर उसे याद करती रहती है ।

''कृष्णवेणी'' में वेणी की शादी उसके पिता गरीब भास्करन् से नहीं करवाना चाहते, माँ उसके रिवाजों के मुताबिक मंझले मामा से वेणी का विवाह करवाना चाहती है । वेणी शादी ही नहीं करती मृत्यु तक भास्करन् को चाहती है ।

''गैंडा'' में राज को अपने बदसूरत पति से कोई लगाव नहीं । बेटियाँ भी पति जैसी ही हुई हैं । फलस्वरूप अपने माता–पिता के यहाँ छोड़कर अकेली नौकरी करती है ।

शिवानीजी के अधिकांश उपन्यासों में आँचलिकता की झलक मिलती है । शिवानीजी का कार्यक्षेत्र पहाड़ी अंचल रहा । जिसमें कुमाऊँ नैनीताल मुख्य है । शिवानीजी ने भ्रमण बहुत किया था । उनके पिताजी की नौकरी के संदर्भ में गुजरात–सौराष्ट्र राजकोट भी रही हैं । इस प्रदेश के रीति–रिवाजों की, शब्दों

की झलक उपन्यासों में मिलती है । बंगाल, कलकत्ता, शांतिनिकेतन के परिवेश का चित्रण भी हुआ है । प्रकृति की सुंदरता का मनोहारी वर्णन शिवानीजी ने किया है ।

मायापुरी, चौदह फेरे, किशनुली, कैंजा, भैरवी, श्मशान चंपा, चल खुसरो घर आपने, रतिविलाप, रथ्या, कृष्णकली, आदि में कुमाऊँ प्रदेश की आंचलिकता देखने को मिलती है ।

कुमाऊँ, अल्मोड़ा, नैनीताल के पहाड़ी समाज और उच्च ब्राह्मण जाति में – ज्योतिष, कुंडलीमिलाप, विवाहयोग, विधवा योग, जाँति–पाँति के बँधन विवाह के लिए पहाड़ी समाज का संकीर्ण दायरा आदि बातें मुख्य हैं ।

पहाड़ी समाज में विवाह के समय कुल–गोत्र की समस्या, और कुंडली मेल आदि प्रमुख था । अपने से निम्न वर्जित कुल में, लाख समृद्ध होने पर भी कन्या का (पुत्री का) ब्याह नहीं करते । चाहे पूरा–घर दरिद्र हो जाय, कन्या भी जन्म भर अन्न के दाने के लिए तरसती रहे ।

''कालिंदी'' उपन्यास पहाड़ी समाज के रीतिरिवाजों से भरा–पूरा है । कालिंदी की माँ कुंडली में निर्बल ग्रह के आधार पर ही परित्यक्ता हुई थी । कालिंदी की कुंडली में भी सिंह लग्न था ।

''स्वयंसिद्धा'' में माधवी की शादी कुंडली देखकर हुई थी । मौसी का मानना था कि ''आषाढ़े दुःखिता नारी'' इसलिए माधवी घर वापस आई है ।

''रथ्या'' में वसंती विमल की कुंडली में मेल नहीं होने से विवाह नहीं हुआ । ''कैंजा'' में नंदी के राजज्योतिषी पिता ने देखा पुत्री की कुंडली में विधवा योग है । इसलिए नंदी को क्वारी रखकर आत्मनिर्भर बनाते हैं । ''किशनुली'' में किशनुली की जाँतिपाँति का पता नहीं होने से कक्का उसे घर में रखने से मना कर देते थे ।

अंतरजातीय विवाह को कुमाऊ के समाज में मान्यता नहीं मिलती थी । अंतरजातीय विवाह करने पर पूरे परिवार को जाति–समाज से बाहर कर देते थे । घर में दूसरे बेटे–बेटियों के विवाह भी नहीं हो सकते थे ।

''श्मशान चंपा''में जुही ने भागकर मुसलमान लडके से शादी की, परिणामस्वरूप चंपा का रिश्ता भी टूट गया । मधुकर के पिता चंपा की माँ को सगुन वापस दे गये – बुरा भला भी कह गये । इसलिए चंपा बर्दवान चली जाती है मगर वहाँ भी ये अंतरजातीय विवाह वाली बात उसका पीछा नहीं छोड़ती ।

''चौदह फेरे'' में कर्नल को भी अपने कुमाऊँ की धरती पर बडा गर्व है वह अहल्या का रिश्ता पहाड़ पर जाकर करवाना चाहता है ।

''श्मशानचंपा'' में पिता की मृत्यु पर धरणीघर बाल कटवाना नहीं चाहता तो पूरी जाति में से कोई भी व्यक्ति उसके पिता की अर्थी को कंधा देने तैयार नहीं है ।

परतु समय के साथ साथ युवा लोगों की सोच में थोड़ा परिवर्तन आया है । ''श्मशान चंपा'' में चंपा अंतरजातीय विवाह की तरफदारी करती है । तो ''कृष्णकली'' में प्रवीर को कोई लडकी पसंद नहीं आती तो माँ उसे दूसरे समाज की लड़की के आने की इजाजत देती है ।

कुमाऊँ में बेटे के जन्म पर आनंद–मनाया जाता था । बेटे–बेटी की परवरिश में भेद किया जाता था ।

आलोच्य दोनों अध्यायों के उपन्यासों के वर्णन–से यह फलित होता है कि पहाड़ी क्षेत्र में क्षय, अस्थमा, दम, ल्युकोमिया, कुष्ठ रोग, उन्माद का रोग, मनोरोग, ज्यादा प्रभावी था । संभ्रात ब्राह्मण कुल में भी मद्यपान, माँस मछली, अंडा खाया जाता था । पहाड़ के युवावर्गो में पढ़ाई संपन्न करने के बाद विदेश गमन, घूमने फिरने की ललक दिखाई देती है ।

शिवानीजी ने नारी चरित्र की प्रत्येक भूमिका की श्रृंखला पेश की है । सिर्फ पढ़ी लिखी नारियों में ही चेतना जागृति है या उसका स्थान ही महत्त्वपूर्ण है, ऐसा नहीं है । संसार में परिवार को चलाने, परिवार को व्यवस्थित एक बनाये रखने में गृहिणीपद उतना ही महत्त्वपूर्ण है । आत्मनिर्भर नारियों के प्रति संसार आश्चर्य, नवीनता, प्रशंसा से देखता है तो गृहिणी नारियों के प्रति श्रद्धा, विश्वास से नतमस्तक होता है । सुखी–संपन्न, समृद्ध परिवार और स्वच्छ घर के पीछे गृहिणियों का अभूतपूर्व यागदान होता है । शिवानीजी के उपन्यासों की नारियों का गृहिणीरूप परम्परागत, सेवाभावी, सहनशील, समर्पित, त्यागी मर्यादित देखने को मिलता है – तो कहीं कहीं सामाजिक परंपरा मर्यादाओं को तोड़ने वाला विद्रोहीरूप भी नजर आता है ।

‘किशनुली’ में काखी बिलकुल भारतीय रोल–मोडल गृहिणी है । मगर किशनुली और उसके बेटे की रक्षा के लिए समाज, बिरादरी, जाति का बहिष्कार स्वीकार कर लेती है । किशनुली की रक्षा के लिए आवारा लडकों को गालियाँ भी देती है । अपने पति पर भी बरस पड़ती है । मगर अंत तक पति के प्रति श्रद्धा रखती हुए घर में ही रहती है । काखी के गृहिणी रूप का एक अलग अंदाज है उसके गृहिणी रूप में नारी चेतना मौजूद है ।

“चौदह फेरे” उपन्यास में समुद्राताई उच्च्य ब्राह्मण कुल की बहू है । पहाड़ी रित–रिवाज–परंपराओं को मानती है । पूरे परिवार की जिम्मेदारी उस पर है । तीन–तीन पढ़ी लिखी वहुओं को अपने अपने रोष–से, मर्यादा परम्परा का पालन करवाना सिखाती है । संपत्तिवान कर्नल को भी व्यंग्य करती है । वहीं सुभद्रा अहल्या का विवाह उसके प्रेमी के साथ हो इसलिए घर से भगाने में मदद करती है । उसके लिए विवाह दो–शरीरों का नहीं, मन का, आत्माओं का मेल है । यहाँ पर सुभद्रा के चरित्र में चेतना दिखाई देती है । जिन परम्परागत मर्यादावादी मूल्यों से नारी सदैव शोषित होती है छटपटाती है

उससे मुक्ति पाना चाहती है । अहल्या को भगाकर उच्च परिवार की मर्यादा शोषण के प्रति छुपा विद्रोह प्रदर्शित करती है ।

''चौदह फेरे'' में नंदी भी कुशल गृहिणी है । उसकी गृहिणी रूप से ही कर्नल नाराज है । नंदी सदैव कामों में उलझी रहती है । विस्तृत परिवार की जिम्मेदारियाँ उठाती है मगर रसिक प्रणय निवदन करके पति को जीत नहीं पाती । कलकत्ता आने पर मल्लिका कर्नल की घनिष्ठता देखकर ईर्षा से जल उठी । अपने पति का बँटवारा सहन नहीं कर पाई । घर छोड़कर गुरुजी के आश्रम में संन्यास ग्रहण कर लेती है । यह उसके चरित्र की आध्यात्मिक रुचि है ।

''गैंडा'' उपन्यास में मेजर रोहिताश्व दत्ता की पत्नी सुखी संपन्न समृद्ध शीलवान आतिथ्य भाववाली गृहिणी है । मगर पति की बेवफाई और राज की बेहयाई का बदला अवश्य लेती है । ''सुरंगमा'' उपन्यास में राजलक्ष्मी पति के अत्याचारों से त्रस्त होकर रोबर्ट बेरोनिका के यहां शरण लेती है । पाँच-छः सालों के बाद गजानन उसे ढूँढ़कर, घसीटकर ले जाता है । शिवानी के शब्दों में 'वह फिर पति की गृहस्थी में ऐसी बस गई की जैसे कभी गई ना हो ।'' राजलक्ष्मी के दिल में पति सदैव बहुरूपिया ठग था, वह उसके शरीर का मालिक था । राजलक्ष्मी की आत्मा का नहीं । गजानन को भी पता चल गया था कि उसकी मानिनी पत्नी का दिल कभी उसका नहीं था ।

''भैरवी'' उपन्यास में राजराजेश्वरी नादानियत में वेश्या के पुत्र साथ भागने की गलती कर बैठी, संपन्न पिता ने उसे कड़ी सजा दी । बूढ़े बदसूरत दुहाजू से शादी कर दी, जो पग-पग पर उस पर शंका करता, ताले में बंद कर देता, जूठन खिलाता राज-राजेश्वरी उसे अपना प्रायश्चित मानकर स्वीकार कर लेती । पति मर जाने के बाद कोठी बेचकर पढ़ लिखकर कॉलेज में अध्यापिका बन गई ।

‘चौदह फेरे’’ में मल्लिका, ललना, रमणी है । समय–समय पर पुरुष क्या चाहता है इस बात की समझदारी उसमें है । समयानुसार, स्वभाव, वस्त्र, बातों में परिवर्तन करना उसे आता है । उसके चरित्र की इसी विशेषता से ही वह कर्नल की सेक्रेटरी है, कर्नल से बहुत घनिष्ट संबंध रखती है । मल्लिका का गृहिणीरूप भी अच्छा है ।

‘‘कालिंदी’’ उपन्यास में अन्नपूर्णा का गृहिणीरूप भी अच्छा है ।

शिवानीजी ने अपने उपन्यासों में विधवा परित्यकता नारियों की स्थिति का चित्रण भी किया है । विधवा परित्यक्ता नारियों को पारिवारिक, सामाजिक अवरोंधों विरोधों का सामना भी करना पड़ता है । इस स्थिति का सामना करने का सामर्थ्य स्त्रियों में तब आयेगा जब वे आत्मनिर्भर हों । या अपने जीवन निर्वाह के लिए कोई–न कोई काम करती हों ।

‘‘रथ्या’’ में जीवंती बुआ पास–प्रतिवेशियों के यहाँ काम करती है, खेतों में काम करके अपना जीवन निर्वाह करती है ।

‘‘दो सखियाँ’’ में सखुबाई विधवा बनजाने के बाद पढ़–लिखकर मास्टरनी बन जाती है । आत्मनिर्भर बनकर अपनी स्थिति सक्षम बनाती है । माँ–पिता बेटे को भी सुख–देती है ।

‘‘भैरवी’’ में राज–राजेश्वरी विधवा होने के बाद पढ़–लिखकर आत्म निर्भर बन जाती है ।

‘‘रतिविलाप’’ की विधवा अनसूया साड़ियों का बुटिक खोलकर आत्मनिर्भर बन जाती है ।

‘‘कालिंदी’’ में परित्यकता अन्नपूर्णा भाइयों की जिम्मेदारी खेतीबारी का काम संभाल लेती है ।

‘‘श्मशान चंपा’’ की विधवा भगवती भाई के गृहकार्य करने लगती है बाद में डॉक्टर चंपा के पास चली जाती है ।

“चौदह फेरे” की नंदी भी परित्यक्ता होकर भाई के घर गृहकार्य करती है ।

इसके अलावा उददंड, युवा नारियों में स्मशान चंपा की मयूरी, सुरंगमा की सखी मीरां आती है । हत्यारिन नारियों की श्रेणी में दीना बाटलीवाला, रतिविलाप की हीरा आती है ।

शिवानीजी ने इसाई मिशनरी की नारियों के चरित्र का उल्लेख भी किया है । जो पढ़ी-लिखी, होशियार, उदार, दयालु, कर्मठ, कर्तव्यपरायण, मानवतावादी तटस्थ, सौम्य और सुंदर रही है । जैसे कृष्णकली की, डॉ. रोझी पेट्रिक, सुरंगमा की बैरोनिका म्युरी, कृष्णकली की मादाम क्युरी, मादाम रेवरन्ड आदि ।

शिवानीजी के उपन्यासों में स्त्री-पुरुष संबंधों को लेकर नारी चरित्रों में नैसर्गिक रोमांस का भाव-कभी कभी नजर आता है । जो बिलकुल साहजिक है । शिवानी की नारियों ने स्त्री-पुरुष के शारीरिक संबंधों का विरोध नहीं किया । मगर उसे स्वीकृत किया है । परम संतुष्ठि पाई है । विरोध तो वहाँ पर है जहाँ शोषण हुआ है । इसके लिए एक उदाहरण अवश्य देना चाहूँगी । “विषकन्या” में कामिनी रोहित के साथ शारीरिक संबंध के बाद संतोष अनुभव करती है । “दिनभर छुट्टी लेकर वह फिर मुझे उस प्रेम के रस सागर में डुबकियाँ दिलाता, यथार्थ के धरातल से किसी जनशून्य एकांत में खींच ले गया, यहाँ न पैरों तले धरती थी, न सिर के ऊपर आकाश । जहाँ किसी अदृश्य आम्रकुंज की अमराइयों में बैठी शतसहस्त्र कोकिलाएँ एकसाथ टहूकती थी, जहाँ किसी शून्य महल-से टप-टप टपकती अमृत बूंदों-से नहाकर में निकली, तो वह कगार-बड़ी दूर छुट चुकी थी, जहाँ इतने वर्षों से मैं किसी ठूंठ वृक्ष-सी ही खड़ी थी” ।

राजा साहब के प्रस्ताव को कुमुद ने स्वीकार नहीं किया मगर राजा साहब कुमुद को अवश्य अच्छे लगते थे । चंपा को मधुकर और सुरंगमा को

दिनकर का सानिध्य अच्छा लगने लगा था । शोभा सतीश के ख्यालों में ही खोई रहती है ।

नंदी को सुरेश और कामिनी को रोहित का सांनिध्य अच्छा लगता है । अपने सामाजिक कर्तव्यों का ख्याल आते ही वह जागृत हो गई है ।

आलोच्य उपन्यासों के नारी पात्रों द्वारा शिवानी जी ने समाजहितकारी संदेश दिया है जो विश्व की प्रत्येक नारी के लिए महान संदेश है । और यह संदेश है नारी शिक्षा का संदेश । शिवानीजी के उपन्यासों की प्रत्येक नारी उच्च शिक्षा पाई हुई आत्मनिर्भर नारी है ।

जैसे कि 'गैंडा'' की राज रिसेपश्नीष्ट, 'विषकन्या'' की कामिनी एयरहोस्टेस । ''कृष्णकली'' की कली मोडल, रिसेप्शनीस्ट है । चल खुसरो घर आपने की कुमुद – डॉक्टर है । श्मशान चंपा में चंपा डॉक्टर है । कालिंदी की कालिंदी डॉक्टर है । ''कैंजा' की नंदी गायनेकोलोजिस्ट है । स्वयंसिद्धा की माधवी अफसर है । ''कृष्णकली'' में डॉ. रोझी पेट्रिक, ''सुरंगमा'' की सुरंगमा बैंक में नौकरी करती है – बैरोनिका गायनेकोलोजिस्ट है । विनीता कान्वेट शिक्षिता एम.ए., पीएच.डी. है । माणिक की नलिनी उच्च शिक्षा पाई हुई प्रिन्सीपाल है । दो सखियाँ की सखुबाई प्रिन्सीपाल है । भैरवी की राज–राजेश्वरी प्रिन्सीपाल है । सुरंगमा की राज–लक्ष्मी स्कूल में टीचर है । ''कृष्णवेणी'' उच्च शिक्षा प्राप्त एम.ए., पीएच.डी. है । मायापुरी की शोभा एम.ए. करती है । ''चौदह फेरे'' की मल्लिका सेक्रेटरी है । अहल्या, उच्च शिक्षा प्राप्त टीचर है । चंदन–मीनी मयूरी–मीरां–कालेज शिक्षा प्राप्त की हुई है ''रथ्या'' में वसंती डांसर है । दीना बाटलीवाला अंग्रेजी शिक्षा पाई हुई है ।

इस प्रकार कामकाजी नारियों की नौकरानियाँ भी अपनी मालकिन के यहाँ निष्ठा से कार्य करती हैं ।

इस प्रकार शिवानी जी ने स्त्री शिक्षा को महत्त्व दिया है । शिक्षा से ही समाज में उसका स्थान परिवर्तित होगा । शिक्षा की वजह से ही वह आर्थिक रूप–से आत्मनिर्भर होगी । उसकी सोच में भी परिवर्तन आयेगा ।

सदियों से स्त्री–पुरुषों की तुलना में स्वयं को हीन, कमजोर, सामान्य, असुरक्षित मानती रही, पुरुषों पर निर्भर रही, अपने आप को अबला समझती रही, लेकिन आधुनिक शिक्षा के प्रभाव, परिणाम से अपने आपको इस लघुताभाव से मुक्त कर पाई है । शिवानी के नारी चरित्रों की श्रृंखला कालिंदी माधवी, कली, नलीनी, अहल्या, शोभा, सुरंगमा, नंदी, बसंती, दिना रंभा, अनसूया, चंदन, राजलक्ष्मी, राजराजेश्वर, इस बात की पुष्टि करती है कि शिवानी की नारियाँ कर्म में विश्वास करनेवाली कर्मठ नारियाँ हैं । अपना कर्तव्य निभाते निभाते जहाँ पर भी अस्तित्व की रक्षा हेतु रूढ़ियों–मर्यादाओं का खंडन करना आवश्यक समझा वहाँ वह अपनी जागृति–चेतना अवश्य दिखलाती है ।

शिवानीजी के नारी चरित्रों की विशेषता यही है कि अपने अस्तित्व की रक्षा हेतु अपनी जागृति–चेतना दिखाने के लिए किसी वाद–संस्था–दल अभियान से जुड़ी नहीं है । समाज परिवार पुरुषों के साथ रहते–रहते अपना कर्तव्य निभाते–निभाते उसकी चेतना व्यक्त हुई है । कहीं–कहीं पर वह अपने आर्दर्शो के साथ अंत तक ताल–मेल नहीं रख पाई । टूटी भी है, झुकी भी है । जैसे, 'सुरंगमा' की सुरंगमा, 'चलखुसरों घर आपने' की कुमुद, 'श्मशान चंपा' की चंपा, 'कृष्णकली' की कली, 'स्वयंसिद्धा' की माधवी, 'कालिंदी' की कालिंदी, अहल्या, कामिनी, अनसूया आदि । मगर यह स्थिति स्वीकार्य है । प्रत्येक पात्र के सामाजिक–पारिवारिक कारण भिन्न भिन्न हैं । इसने जो संघर्ष किया, जागृत होने की चेष्टा की, जागृति दिखाई वहीं नारी चेतना–अभियान की महत्त्वपूर्ण शुरुआत है ।

शिवानीजी नर–नारी सहयोग में विश्वास रखनेवाली लेखिका है । पुरुषों ने सदैव ही स्त्रियों का विरोध किया, शोषण किया, परेशान किया ऐसा नहीं है । माता और पुत्री के रूप में अवश्य स्त्री को चाहा है । इन उपन्यासों में मातृहीना पुत्रियों को उनके पिता ने ही उच्च शिक्षा देकर आत्मनिर्भर बनाया है । जैसे की कैंजा की नंदी, सुरंगमा की विनीता, स्वयंसिद्धा की माधवी, माणिक की नलिनी, मायापुरी की शोभा, कृष्णवेणी की वेणी, राजलक्ष्मी, राजराजेश्वरी अनसूया आदि ।

इस प्रकार समाज में व्याप्त प्रत्येक समस्या में नारी की भूमिका क्या है, वह कैसे इन समस्याओं से समाधान प्राप्त करके अपना रास्ता तय करती है । ऐसे महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर शिवानीजी ने अपनी लेखिनी चलाई है ।

हमें यह भी स्वीकारना पड़ेगा कि आज भी कई स्त्रियाँ अपने स्वतंत्र अस्तित्व के प्रति जागृत नहीं हैं या अपनी क्षमता, गुणों, काबेलियत को दिखा नहीं पाई । और जो नारियाँ जागृत–स्वतंत्र हैं, उनके मार्ग में भी अनेक बाधाएँ हैं । लेकिन इन बाधाओं से इनका संघर्ष, प्रयास प्रशंसनीय है ।

वैयक्तिक स्तर पर देखा जाए तो व्यक्तित्व संपन्न नारी–पुरुष के थोथे अहं को नहीं सह सकती किन्तु स्वतंत्रता के नाम पर स्वच्छंदता भी अभीष्ट नहीं मानी जा सकती । ‘‘नारी स्वतंत्रता के नाम पर पुरुष विरोधी दृष्टिकोण स्वस्थ नहीं माना जा सकता । जर्जरित मान्यताओं और रुग्ण मानसिकता से मुक्ति ही नारी मुक्ति है न कि परंपरा पोषित पुरुष के व्यवहार की नकल या पुरुष जाति से विद्रोह ।’’[१]

डॉ. शिलारजवार भी समर्थन करते हुए लिखती हैं –

‘‘नारी सभ्यता, संस्कृति और समाज के विकास का अर्द्धांग है । नारी के लिए आशंकाओं, वर्जनाओं और कुंठाओं से मुक्त होना जरूरी है । लेकिन उच्छृंखल आचरण करना अथवा नारी की स्वाभाविक भावनाओं का नकार, न

समाज के लिए हितकर होगा न नारीत्व की पहचान । वह नर की समान धर्मिणी नारी है प्रतिस्पर्धिनी नहीं ।[२]

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् परिस्थितियों में परिवर्तन के कारण उपन्यास विद्या को समृद्ध करने में लेखिकाओं का प्रयास सराहनीय रहा है । नारी होने के नाते इन्होंने साहित्य के क्षेत्र में नारी चरित्रों का पुरुषों से भी अधिक सूक्ष्म चित्रांकन कर अपनी अपूर्व प्रतिभा का परिचय दिया है ।

डॉ. शैल रस्तोगी लिखते हैं कि –

''उपन्यासों और नाटकों आदि में स्त्रियों के चरित्र का जैसा अच्छा, चित्रांकन और विकास स्त्री लेखिकाओं के द्वारा होता है, वैसा अच्छा चित्रण और विकास पुरुष लेखकों के द्वारा नहीं होता ।''[३]

लेखिका स्वयं नारी है अतः नारी के स्वभाव उसकी समस्याओं का सजीव व सक्षम व इमानदार प्रस्तुतीकरण करने की क्षमता लेखकों की उपेक्षा उसमें अधिक रही है । स्वातंत्र्योत्तर कथा लेखिकाओं ने इस तथ्य को शत–प्रतिशत प्रमाणित किया है ।

महिला कथा साहित्य विकास का तीसरा चरण १९६० से लेकर अबतक माना गया है । १९५६ में हिन्दू कोड बिल के पास होने पर स्त्रियों को समानता के अधिक अवसर मिले । कई आर्थिक परिस्थितियों ने स्त्री को घर के बाहर जाने के लिए बाध्य किया । स्त्रियों ने परंपरागत बंधनों को छोड़कर जीविकोपार्जन के जो साधन मिलते हैं उन्हें स्वीकारना शुरू किया । महिलाओं का क्षेत्र व्यापक हो गया । शिक्षित महिलाओं के प्रति समाज के देखने की दृष्टि नजरिया बदल गया । लड़कियाँ विवाह बाद में, केरियर पहले यह सूत्र अपनाने लगी हैं । तीस प्रतिशत आरक्षण के कारण उसकी स्थिति में काफी परिवर्तन आ गया । बावजूद आज भी समाज में स्त्री की दोयम स्थिति को पूरी तरह नकारा नहीं जा सकता । समाज में, उपभोग, बलात्कार, भ्रूण हत्या स्त्री को मनोरंजन की चीज समझना ये सब हैं ही फिर भी ''स्त्रीवादी विचार

चेतना ने स्त्री को स्त्री होने का सलिका सिखाया है । पहले की तुलना में स्त्रियों की स्थिति में बहुत अधिक परिवर्तन आया है ।”[४]

मानवीय समाज में प्रत्येक मानव को एक–दूसरे से संबंध है – आदर्श, शाश्वत संबंध स्त्री–पुरुषों की पारिवारिक सामाजिक भूमिका में है । समाज के श्रेष्ठ नागरिक स्त्री–पुरुष हैं । समाज में रहनेवाले नागरिकों के बीच जब आपसी मीठास होती है, तभी समाज के संबंध सुदृढ़ स्थायी बनते हैं । किंतु जिन संबंधों में सरसता व मधुरता नहीं होती वे संबंध अस्थायी होते हैं । विश्व में रहनेवाला प्रत्येक मानव आज कुटुंब परिवार ही है । समानता में ही प्रसन्नता है यह बात नारी और पुरुष दोनों को समझनी चाहिए ।

नारी स्वतंत्रता, मुक्ति, चेतना सिर्फ यौन या देहगत नहीं है । किन्तु भावनागत भी है । समग्र विश्व नारी समाज की यह समस्या है ।

नारी में सिर्फ अधिकारों की ही चेतना नहीं होनी चाहिए, समान अधिकारों के साथ–साथ समान दायित्व भी जुड़े हुए हैं । और स्त्री होने के कारण कुछ अधिक भी, क्योंकि विश्व की भावी पीढ़ी कैसी होगी यह माताओं पर ही निर्भर है । वह आजीवन रमणी, ललना बनकर नहीं जी सकती, माँ बनकर वह पुरुष को संस्कार, आकार, कर्म, दिशा देती है । वह पथ–प्रदर्शक बन सकती है ।

स्त्रियों को अपनी योग्यता जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सिद्ध करनी है । उसको पत्नी–गृहिणी की भूमिका निभाती है तो संतान के प्रति भी उसे पूर्ण ममत्व भाव से समर्पित होना है । इसलिए स्त्री और पुरुष दोनों में सामंजस्य होना चाहिए, क्योंकि दोनों एक दूसरे के पूरक हैं, अत्याचार शोषण को रोकना होगा । स्त्रियों को सहभागी समभागी समझना होगा ।

पुरुषों को इमानदारी, वफा और दृढ़ता से यह संकल्प करना होगा कि स्त्री विकास के जितने भी कार्यक्रम हों उनमें मन, वचन, कर्म अपना सहयोग दे । नारी के व्यक्तित्व को पूर्ण अभिव्यक्त करने में पुरुष का भी सहयोग है,

पुरुष का सम्मान–प्रतिष्ठा भी नारी के द्वारा ही होगी । रूढ़िग्रस्त मानसिकता वाले पुरुषों को अपनी मानसिकता बदलनी चाहिए ।

पति–पत्नी के सहयोग से संतान नई पीढ़ी होगी, इसका कोई विकल्प नहीं है – किन्तु अपात्र कुपात्र का त्याग भी करना पड़ेगा । स्त्रियों को केवल भावना के स्थान पर विवेकपूर्ण संवेदनशील होना होगा, पुरानी मान्यता को त्यागकर नई बातों को स्वीकारने के लिए खुला दिमाग रखना होगा । विवाह भी एक परंपरा न होकर एक संस्था होनी चाहिए जो दो विपरीत लिंगी प्राणियों को भावनात्मक, आध्यात्मिक रूप से एक करे । नारी जब पुरुष को समर्पित है तो उसकी सहजता, सरलता का लाभ पुरुषों को नहीं उठाना चाहिए । सरलता अवश्य एक गुण है, मगर स्त्रियों को यह ख्याल रखना चाहिए कि अति सरलता भी योग्य नहीं है । सरलता भी विवेकयुक्त होनी चाहिए ।

नारी पुरुष को ही समर्पित है यह उसकी मानसिकता है – मगर वह पुरुष दृढ़ संकल्पी, वचनप्रिय, दयालु, पराक्रमी हो । युग की करवट के साथ नारी के विश्वास को भी करवट लेनी होगी, वह अवश्य अपना विकास पथ तय करे किन्तु पुरुषों को साथ रखकर । यदि उत्पीड़न शोषण होता है – तब अवश्य उसका त्याग करे । दोनों को एक दूसरे के प्रति वचनबद्ध होना चाहिए । और नारी का दृढ़ संकल्प ही उसे सुरक्षित बना सकता है ।

प्रभा खेतान के कथनानुसार,

‘‘हमें इस मिथक को भी तोड़ना होगा कि भारत में नारीवाद एक आयातित विचारधारा है । इस तरह देखें तो वेस्ट मिनिस्टर मोडल पर चलता हुआ लोकतंत्र एवं संसद भी आयातित है । संविधान की धाराएँ भी आयातित हैं, हमारी न्यायपालिका की पोशाक से लेकर न्यायालय के तौर–तरीके सभी तो अंग्रेजों से लिए गये हैं । इसी प्रकार हलवा जिलेबी आयातित है । कुर्ता पायजमा आयातित है । आयातित विचारधारा कहकर आज पश्चिम को अस्वीकार नहीं किया जा सकता, लेकिन शुद्धता का आग्रह हमें परंपराओं के

लौह शिकंजे से मुक्त नहीं होने देता । मैं न तो आयातित विचारधारा को स्वीकारने की प्रवृत्ति की आलोचना कर रही हूँ और नहीं किसी आयातित विचार को विकल्प के रूप में रख रही हूँ, बल्कि नारी मुक्ति से संबंधित जो भी विचार है, उन्हें भारतीय परिवेश में स्त्री–मुक्ति के कारक तत्त्व के रूप में सामने रख रही हूँ ।"[५]

परिवतर्तित समय के साथ–साथ पुरुष अपना, अहमी स्वार्थ परक दृष्टिकोण बदले नारी को सहधर्मिणी समझकर अपना उत्तरदायित्व वहन करे, सहधर्म का पालन करे । क्षणवादी आधुनिक युग की गति अत्यंत वक्र है तब सारे दोषारोपण, समता–विषमता को भूलकर आने वाली नई पीढ़ी के लिए संयमी सत्कार्य करें । नारी भी पुरुष के विपरीत समय में सहयोगी बने । पुरुषों को नारी के प्रति कृतज्ञता का भाव रखना चाहिए । नारी ही है, जो पुरुष बीज को मूर्त आधार देती है । सेवा, वात्सल्य स्नेह देती है ।

शिवानीजी की भाषा :

भाव आत्मा है तो भाषा शैली उसका शरीर । भाषा समाज सापेक्ष मानी गई है । समाज के परिवर्तन के साथ–साथ भाषा भी परिवर्तित होती रहती है ।

भाषा, मानवहृदय की अभिव्यक्तियों का साधन है । शैली लेखक की व्यक्तिगत भी हो सकती है और परंपरागत भी । भाषा भावानुगामिनी होनी चाहिए – क्योंकि भावों का संप्रेषण इसी के द्वारा होता है ।

इसमें भी कथा साहित्य जिंदगी का सीधा अनुवाद होता है । शब्द जिंदगी से उभरकर आते हैं तो लेखक और पाठक के बीच संप्रेषण आसान हो जाता है । शिवानीजी की भाषा जीवन संदर्भों से जुड़ी भाषा है । उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से नये भाव–बोध को अभिव्यक्ति दी है । भाषा भी इस भाव–बोध की अभिव्यक्ति करने में कहीं भी कमत्तर नहीं है ।

शिवानीजी की भाषा शैली सरल, सजीव और प्रभाव पूर्ण है । हिन्दी कथा साहित्य में उनकी भाषा शैली का अपना विशेष महत्त्व है पहाड़ी (कुमाऊँनी) बंगाली, अंग्रेजी, संस्कृत, पंजाबी, फारसी एवं उर्दू भाषाओं के शब्दों एवं मुहावरों से उन्होंने अपनी अभिव्यक्ति को विस्तार प्रदान किया है । उन्होंने अपनी भाषा में प्रकृति के बिम्बों और प्रतीकों का सौद्देश्य प्रयोग किया है । कहावतों और मुहावरों तथा अलंकारों के प्रयोग से उनके कथा साहित्य की भाषा सुंदर और ओजपूर्ण बन गई है । गुजराती, बंगला, हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी आदि भाषाओं का उन्हें अच्छा ज्ञान है ।

उन्होंने अपनी अभिव्यक्ति को सशक्त बनाने हेतु सूक्तियों का भी प्रयोग किया है । इस प्रकार उनकी अभिव्यक्ति की विशेषता के कारण पाठकों में भी विशेष स्थान पाया है । उन्होंने समस्त कथा साहित्य में उत्प्रेक्षा और उपमा अलंकारों का खुलकर प्रयोग किया है । जिससे उनकी भाषा बड़ी ही प्रभावपूर्ण बन पड़ी है । भाषा में स्वाभाविकता बढ़ाने के लिए उन्होंने अनेक लोक प्रचलित ठेठ पहाड़ी शब्दों का प्रयोग किया है – जैसे इजा, चेली, कंदरा चेहड़ी, चिट्ठी आदि । लेखिका ने परंपरागत वर्णनात्मक पद्धति को भी अपनाया है, प्रतीकात्मकता, सांकेतिकता, चित्रात्मकता के साथ गंभीर, चिंतन उनकी रचनाओं का आकर्षण रहा ।

लेखिका ने प्रकृति का भी सुंदर चित्रण किया है । जिससे उनके कथा साहित्य का प्रवाह और भी बढ़ गया है । शिवानी के अधिकांश कथोपकथन सरल, सजीब, स्वाभाविक और चुस्त है । किंतु कहीं–कहीं लम्बे, कहीं लघु, कहीं दीर्घ, कहीं भावपुर्ण, कहीं तर्कपूर्ण, कहीं सरस, कहीं नीरस, कहीं सारगर्भित, कहीं शिथिल कथोपकथनों का प्रयोग अपने कथा साहित्य में किया है ।

व्यंग्यात्मक और पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग उनके साहित्य की विशेषता है उनके पात्रों की भाषा स्त्री भाषा है ।

भाषा के बारे में, आँचलिकता के बारे में शिवानीजी ने स्वयं कालिंदी में लिखा है – 'कालिंदी को लिखना आरंभ किया तो पहाड़ी झरने–सी बहती चली गई । शायद इसका यह स्वच्छंद प्रवाह इसीलिए भी सहज बन गया कि मैंने इसमें अपने बचपन, कैशोर्य के अनुभवों का भरपूर प्रयोग किया है । कहीं कहीं तो नाम भी नहीं बदले एक बुजुर्ग ने मुझे रोक कर कहा, 'कालिंदी पढ़ रहा हूँ आहा कैसा चित्र खींचा है ! उन दिनों का । लगता है एकबार फिर उसी अल्मोड़ा में पहुँच गया हूँ । मुझे लगा, मुझे कुमाउ का सर्वोच्च साहित्य पुरस्कार मिल गया ।

भली बुरी जैसी भी है, यह मेरी भाषा है, मैं कोई शब्दकोष लेकर लिखने नहीं बैठती । यही भाषा मैं बोलती हूँ, यह मेरे सिरजे पात्र भी बोलेंगे, – पर एक प्रश्न मैं भी अपने आलोचकों से पूछूँगी, सहज भाषा आप किसे कहते हैं ? यदि सरलीकरण की गुहार लगानेवाले अपनी इस चीख–पुकार से, सामान्य शिक्षित जनता का हृदय विजित कर, लोकप्रियता हासिल करना चाहते हैं तो वे और जो कुछ भी हों, निश्चित रूप से हिन्दी के हितैषी कदापि नहीं हैं ? जो भाषा, स्वयं भावानुकूल बन कथानक के साथ कदम–पर कदम धर कर चलती है, वह भाषा गूढ़ किलष्ट होने पर भी स्वयं सहज बन जाती है । भाव यदि कठिन है, तो भाषा भी स्वयं चोला बदल लेगी । उसे कठिन या सरल बनाना फिर लेखक के हाथ में नहीं होता । प्रकृति की चाल के साथ–साथ भाषा जिस दिशा में जाए, प्राणशक्ति भी उसी भाषा में होगी ।

उपलब्धियाँ और सीमाएँ

प्रस्तुत शोध प्रबंध ''शिवानी के उपन्यासों में नारी चेतना'' – में आलोच्य उपन्यासों के समग्रावलोकन से निम्नलिखित उपलब्धियाँ–सीमाओं को रेखांकित किया जाता हैं :

(१) उपलब्धियाँ

१) शोधप्रबंध के १८ उपन्यासों में जितने भी तेजस्वी पुरुष पात्र आये वे सब उपन्यास के अंत तक जाते–जाते नारी पात्रों के सामने निस्तेज, कमजोर, सामान्य नजर आते हैं । इससे साबित हो जाता है कि शिवानी जी ने समाज के हर क्षेत्र में पुरुषों के सामने, पुरुषों के साथ, नारियों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान है – यह साबित करने के लिए ही उपन्यासों की रचना की गई है । शिवानी जी स्वयं नारीचेतना की उदाहरण है ।

२) ईर्षा–स्पर्धा से कुंठित व्यक्ति, (स्त्री–या पुरुष) मित्र कभी भी नुकसान पहुँचा सकता है ।

३) अकेली असहाय नारियों को सदेव अनजान व्यक्तियों पर भरोसा नहीं करना चाहिए । अगर करना पड़े तो उसका नाम–पता, टेलिफोन नंबर, व्यवहार, आदतें अपने रिश्तेदारों को बतानी चाहिए ।

४) बस्ती से दूर निर्जन जगह पर नहीं रहना चाहिए ।

५) अकेले रहने पर भी बातचीत का व्यवहार पास–पड़ोस के लोगों के साथ रखना चाहिए – ताकि निरसता, उबन के भावों का निरसन हो सके ।

६) समाज में जन्म लेने वाली अवैद्य संतानें लावारिस नहीं होतीं, उनके जनक सदैव घटिया किसम के नहीं होते, उच्च वर्ग के पढ़े–लिखे लोग भी इसमें जिम्मेदार होते हैं ।

७) उन्मादिनी, अकेली–पागल–अपाहिज, युवतियों का शोषण, पढ़े–लिखे लोग भी करते हैं, ऐसी युवतियों को बचाना, अथवा नारी संस्था में सलामत जगह पहुंचाना नारी धर्म है ।

८) मनोवैज्ञानिकों ने यह साबित कर दिया है कि 'काम' (SEX) स्त्री–पुरुष दोनों के लिए समान रूप–से महत्त्वपूर्ण है । सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए पति–पत्नी दोनों के काम–का साधारण करण आवश्यक है । स्त्रियाँ

कभी–कभी अपने आपको संस्कारयुक्त दिखाने के लिए या धार्मिकता की आड़ में अपने दाम्पत्य जीवन में शारीरिक संबंधों को महत्त्व नहीं देती । उसे अपनी संकीर्ण मानसिकता को बदल देना चाहिए ।

९) प्रेमानुभूति स्त्री–पुरुष दोनों करते हैं । अपने प्रेमभाव को व्यक्त करने की हिंमत स्त्रियों को रखनी चाहिए । सही–पात्र, परिवार की जाँच–पड़ताल के बाद परिवार बुजर्गों की संमति से आगे बढना चाहिए । अगर इसमें कुछ विरोधी बातें, कमियाँ नजर आईं तो बात अपने परिवार तक ही सीमित रखकर निर्णय लेने में समझदारी है ।

१०) आधुनिक माता–पिताओं को यह सीख है कि बच्चों के दिमाग में, अपने लिए माता–पिता ही सबकुछ है । जैसी परवरिश करेंगे वैसा विकास होगा, भेदभावपूर्ण परवरिश या निरतर दूसरे बच्चों से उसकी तुलना से बच्चा कुंठाग्रस्त, हीनता, लघुता–अनुभव करता है । बड़ा होने पर विद्रोही बन सकता है ।

११) आर्थिक असमानता की वजह से किसी के अहसानों के बोझ में इतना नहीं दबना चाहिए कि बदले में अपना शारीरिक शोषण होने दे, हिंमत से इस बात का सामना करके उससे दूर रहना चाहिए, पढ़ी लिखी स्त्री अर्थ उपार्जन के लिए दूसरे स्त्रोत ढूँढ सकती है ।

१२) अर्थ मानव जीवन की अति महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है, सामाजिक पारिवारिक, राजनैतिक, धार्मिक, सभी क्षेत्रों में स्त्री भी पुरुष के साथ अर्थ उपार्जन में अपना योगदान दे सकती है ।

१३) राजनीतिक क्षेत्रों में भी स्त्री अपनी कर्मठता, बुद्धि से काम कर सकती है । पुरुषों की संकीर्ण मानसिकता, बल और सत्ता के दुरुपयोग से उसे न मार दिया जाय ।

१४) आधुनिकता, शिक्षा और आत्मनिर्भरता के गुमान में अपना वैवाहिक जीवन बरबाद नहीं करना चाहिए । शादी खेल नहीं जिम्मेदारियों से भरा लम्बा सफर है ।

१५) आधुनिकता और आत्मनिर्भरता के नाम पर अविवाहित ही रहना जरूरी नहीं है । विवाह बायोलोजिकल नेसेसीटी है । वैवाहिक जीवन के बारे में दूसरों से सुनी हुई भ्रामक बातें गलत भी हो सकती हैं ।

१६) विवाह में कुंडलीदोष आदि से निराश न होकर आत्मनिर्भर बनकर जिया जा सकता है । कुंडली दोष, ज्योतिष, विवाह का संकीर्ण दायरा आदि मान्यताएँ काल परिवर्तन के साथ बदल सकती हैं ।

१७) अंतरजातीय विवाह करने से पहले परिवार को साथ रखकर पात्र, पात्र के परिवार के बारे में योग्य जानकारी प्राप्त करनी चाहिए ।

१८) मनुष्य जीवन में सिर्फ भोग–वासना ही महत्त्वपूर्ण नहीं है – आध्यात्मक रुचि, संस्कार भी मानवहितकारी है ।

१९) किसी संप्रदाय, मंदिर, मठ–मस्जिद के साधु–पीर–फकीरों, बाबाओं को अवतार न मानकर मानव माना जाय । इनकी बातें सदैव सही, धार्मिक हों ऐसे भम्र में रहना गलत है ।

२०) हमारे मातापिता ही हर हाल में हमारे हितैषी हैं और वृद्धावस्था में इन्हें हमारी सबसे ज्यादा जरूरत है । ऐसी नैतिक शिक्षा प्रत्येक स्त्री को अपने बच्चों को देनी चाहिए । अध्यापिकाएँ, शिक्षिकाएँ अपने शिक्षण कार्य द्वारा उसका प्रसार–प्रचार कर सकती है ।

२१) मातापिता को भी बच्चों को सिर्फ प्यार ही नहीं देना है, जिम्मेदारियों को उठाने की शिक्षा भी देनी चाहिए । नियमपालन, अनुशासन, संस्कार सिखाने में कठोरता से काम लेना पड़े तो अवश्य लेना ।

२२) गाँवों में रहनेवाली स्त्रियों को भी अपने आपको सुधारने के लिए शिक्षा, आभिजात्य जीवन शैली का मौका मिले तो अवश्य अपनाना चाहिए

क्योंकि जीवन में नवीनता परिवर्तन आवश्यक है और नवीनता में ही आकर्षण है ।

२३) उपन्यासों में चित्रित वेश्या नारियों के व्यक्तित्व से यह सिद्ध होता है कि वेश्याएँ भी मानवीय गुणों से (मातृत्व–गृहिणीत्व) संपन्न होती हैं । जरूरत है उन्हें बाहर लाकर आर्थिक सुरक्षा, व्यवसाय देने की जिससे वह स्वमान से जी सकें ।

२४) संपन्न मध्यमवर्गीय परिवारों की स्त्रियों में जीवट, संघर्षशीलता, सहनशीलता निर्णय लेने की क्षमता, समाज की रूढ़ियों से टकराने का साहस होता है ।

२५) मध्यमवर्ग, अमीर वर्ग और महानगरों में रहने वाली नारियों से भी ज्यादा नैतिक ताकत ग्रामीण स्त्रियों में होती है, संघर्षों से जूझने की, परिस्थितियों को स्वीकार करने का खुलापन उनमें ज्यादा होता है । सिर्फ, शिक्षा और आत्मनिर्भरता नहीं होने से उनके चरित्र का यह पक्ष दिखाई नहीं देता – उसे उजागर करने में मदद करना प्रत्येक शिक्षित नारी का फर्ज है ।

२६) इसाई मिशनरियों की नारियों ने हमारे समाज (भारतीय) की स्त्रियों के विकास के लिए महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है ।

२७) नारी के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण है शिक्षा । शिक्षा–पढ़ाई से ही जीवन के ध्येय, संभावनाएँ पूर्ण हो सकती हैं । जबतक पढ़ाई पूर्ण न हो स्त्रियों को शादी के बारे में नहीं सोचना चाहिए । भावी जीवन में आत्मनिर्भर बन सकें इतनी पढ़ाई अवश्य कर लेनी चाहिए । इस बात को अपने परिवार वाले पास पड़ोसियों को भी मानवहितार्थ समझाना चाहिए ।

२८) स्त्रियों की सुंदरता सिर्फ शरीर में नहीं उसके स्वभाव, संस्कार, वर्तन में है इतना प्रत्येक स्त्री को समझ लेना चाहिए ।

२९) नारी चेतना, मुक्ति व्यक्त करने के लिए सदैव पुरुषों का विरोध करना जरूरी नहीं है । उसके साथ रहते–रहते परिवार हितकारी निर्णय लेना चाहिए । जागृति की शुरुआत सबसे प्रथम परिवार से होनी चाहिए । जब संकीर्ण मानसिकता वाले पुरुष को समझाने के सारे प्रयत्न व्यर्थ हो जायें, तब उसे छोड़ने में हित है ।

३०) स्त्री–कोई दैवी–डाकिनी चुड़ैल नहीं है वह मानवीय गुणों–अवगुणों से युक्त मानव है । आदर्श नियमों का पालन उससे ही जबरदस्ती न करवाया जाय ।

३१) दलित–विमर्श स्त्री–विमर्श के साथ–साथ आज की नई लेखिकाओं को ''स्त्री भ्रूण हत्या'' विषयक कृतियों की रचना करनी चाहिए ।

सीमाएँ

१) शिवानीजी साठ के दशक की लेखिका हैं । तब स्वतंत्रता मिल गई थी । मगर कई उपन्यासों में विदेशी सभ्यता की टीकाएँ ही की गई हैं । आजाद भारत को मिले विदेशी सभ्यता के अच्छे योगदानों का चित्रांकन नहीं हुआ है ।

२) 'श्मशान चंपा'' उपन्यास की तीनों नारियाँ भगवती, जुही, और चंपा विशेष संदेश नहीं दे पाई । भगवती पारिवारिक संघर्षों, मजबूरियों से पीड़ित होकर क्षय रोग से मृत्यु को प्राप्त होती है ।

जुही अपना स्वच्छंदी नकारात्मक व्यक्तित्व स्थापित करते हुए, खून करके जेल में दिन काटती है ।

चंपा ने पारिवारिक आर्थिक संघर्षों का मुकाबला किया मगर अंत में अपने आपको श्री गुरुकेनाराम की दासी बना देती है ।

३) ''चल खुसरो घर आपने'' उपन्यास और श्मशान चंपा उपन्यास एक–जैसे ही लगते हैं । दोनों में पारिवारिक, आर्थिक समस्या, नायिका का घर–से

दूर, संपन्न घराने में नौकरी करना, वहाँ अपने मालिकों की बुरी नजरों का सामना करना ।

''श्मशान चंपा'' में मि. सेन गुप्त की पत्नी रानी कमलेश्वरी सुंदर है । अपने परिवारवालों की यादों से मनोरोगिणी है । बेटी मयूरी की चिंता है । अक्सर दौरा पड़ता है ।

'चल खुसरों घर आपने'' में राजा साहब की पत्नी मालती सुंदर है । राजा साहब के भाइयों के पारिवारिक कलह से दुःखी, बेटे की मृत्यु से उसकी यादों में मनोरोगिणी हो जाती है, दौरा पड़ता है । दोनों उपन्यासों में मालती, कमलेश्वरी के शयन खंडों के स्नानगृह का अद्‌भुत वर्णन है ।

४) कई उपन्यासों में नायिकाओं के नाम एक जैसे हैं । ''कैंजा'' में नंदी । ''चौदह फेरे'' में नंदी । ''कृष्णवेणी'' कृष्णकली'' । ''किशनुली'' ''कुमली'' । ''रामप्यारी रामकटोरी'' । राजलक्ष्मी राज–राजेश्वरी । चरन चंदन ।

५) कई उपन्यासों में स्थितियाँ समान हैं । राजलक्ष्मी वेश्या गौहरजान के संगीन मास्टर के साथ भाग गई ।

राज–राजेश्वरी वेश्या रामप्यारी के पुत्र के साथ भाग गई । ''सुरंगमा'' गजानन के अत्याचारों से खिड़की से कूद कर भाग गई । ''चंदन'' अघोरी से बचने के लिए खिड़की से कूद कर भाग गई ।

६) कई नायिकाओं की सुंदरता की तुलना फिल्म नायिकाओं के साथ की है । कृष्णकली माला सिंहा । चंपा, सुरंगमा सुचित्रा सेन ।

७) ''स्वयं सिद्धा में'' माधवी को ट्रेन में सफर करते हुए कौस्तुभ से मुलाकात हुई । जो लाइट चली जाने पर उसे बाहों में भर लेता है ।

''श्मशान चंपा'' में चंपा को ट्रेन में सफर करते हुए मधुकर से मुलाकात हुई । जो ज्वर ग्रस्त चंपा कों बाँहो में भर लेता है । घर लाता है ।

दोनों स्थितियाँ असाहजिक लगती हैं ।

८) ''कृष्णकली'' में कली अपने माता–पिता की खोज में, उसका प्रेम पाने व्याकुल है, एकाकिनी है, केंसर हो गया, निराशा में नींद की गोलियों का ओवरडोझ ले लेती है ।

९) ''स्वयंसिद्धा'' में माधवी मातृहीना है, पिता ने तिरस्कृत किया, प्रेम पाने के लिए व्याकुल है, एकाकिनी है, विद्रोह में पैथेडीन का ओवरडोझ ले लेती है ।

१०) ''रथ्या'' में विमल वसंती से प्यार करता है । दोनों की कुंडली में मेल नहीं है । कायरता की वजह से पिताजी के सामने बोल नहीं पाता ।

११) ''मायापुरी में'' सतीश शोभा से प्यार करता है । ऋृण बोझ से दबा है, कायरता की वजह से माता–पिता के सामने बोल नहीं सकता ।

१२) ''सुरंगमा'' में दिनकर ग्रामीण पत्नी को छोड़कर भागो मंत्री बन गया ।

१३) ''कृष्णकली'' में विद्युतरंजन पन्ना को छोड़कर चला गया मंत्री बन गया ।

संदर्भ संकेत :

१. डॉ. गीता सोलंकी : नारीचेतना और कृष्णा सोबती के उपन्यास – पृ.१६४

२. डॉ. शीला रजवार : स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य में बदलते सामाजिक संदर्भ, पृ. १९७

३. डॉ. दौजी रस्तोगी : हिन्दी उपन्यासों में नारी, पृ. २७

४. डॉ. रमा नवले : मृदुला गर्ग के कथा–साहित्य में नारी, पृ. ३६४

५. प्रभा खेतान : 'हंस', मई–१९९३

उपसंहार

उपसंहार

स्त्री और पुरुष दोनों मानव हैं । अतः उनमें मूल–भावना गत, मानवगत वृत्तियाँ समान होती हैं । परंतु दोनों के संस्कार, अनुभव, इच्छाएँ, अनुभूति, भिन्न होती है । क्योंकि कुछ विशेषताएँ पुरुषों में होती हैं, और कुछ विशेषताओं में से, अनुभवों में से केवल स्त्री ही गुजरती है । अनुभव का वह एकांकी, प्रकृति प्रदत्त अधिकार, विशेषता उसके विश्व को सीमित करती है, और उसे पुरुषों से अलग भी करती है । प्रस्तुत शोध प्रबंध में स्त्री के उस महत्त्व, भाव, विशेषता को रेखांकित करने का नम्र प्रयास हुआ है ।

प्रस्तुत शोध–प्रबंध का विषय 'शिवानी के उपन्यासों में नारी चेतना' से जुड़ा हुआ है ।

शिवानीजी का स्थान साठोत्तरी महिला कथाकारों में आता है । उन्होंने अपनी अमूल्य कृतियों द्वारा हिन्दी कथा साहित्य में प्रतिष्ठा प्राप्त की । सन् १९६० से लेकर मृत्यु तक (२००३) वह निरंतर लिखती आई हैं । आपकी प्रत्येक रचना में, कहानी हो या उपन्यास में नारी प्रमुख रही है । शिवानीजी ने नारी जीवन के हर पहलू का चित्रांकन किया है । जैसे कि जन्म, प्रेम, विवाह, विवाह विच्छेद, स्वाभिमान, संघर्ष, हार, जीत, घुटन, स्पर्धा, बलात्कार, शोषण, मातृत्व, आर्थिक तनाव, पारिवारिक जिम्मेदारी, राजनीति, शिक्षा, आदि क्षेत्रों में स्त्रियों का स्थान, भूमिका स्पष्ट की है । अपनी रचनाओं में सहभागी समभागी, सकारात्मक स्थान दिलवाया है । आपकी नारियाँ, रूढ़ियों, परंपराओं को तोड़कर, छोड़कर, विकास के पथ पर अग्रसर रहीं । आपने समाज के हर वर्ग से नारी पात्रों का चयन किया है । प्रत्येक पात्र की भूमिका से समाज को कुछ न कुछ मौलिक संदेश देकर लोकमंगल का कार्य किया है ।

मैंने अपने शोध प्रबंध को छहः अध्यायों में विभक्त किया है । शिवानीजी के कथा साहित्य, उपन्यास साहित्य पर पहले भी काम हुआ है – मगर मेरा दृष्टिकोण, नजरिया बिलकुल मौलिक है ।

नारी चेतना या नारी मुक्ति – कहीं पर भी पुरुषों का विरोध करने की बात नहीं है ।

नारी मुक्ति यानि की नारी के प्रति सोच की मुक्ति । शिवानीजी ने समाज के प्रत्येक वर्ग, संपन्न मध्यम वर्ग से पात्र लिए हैं । समाज में आर्थिक, पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक राजनैतिक आदि समस्याएँ मुँह बाये खड़ी हैं । ऐसे क्षेत्रों में शिवानी के पात्र किस तरह अपना अस्तित्व बनाये रखते हैं यह बात महत्त्वपूर्ण है ।

नारी मन और द्वंद्व सदैव जुड़े हुए हैं । नारी सदैव जीवन में दोहरी जिम्मेवारी उठाती आयी है । ऐसी स्थिति में वह मानसिक संघर्ष, द्वंद्व से गुजरती है, बिलकुल स्वाभाविक बात है । दमन, असलामती, असुरक्षा, अपमान रूढ़ि, परंपरा की वजह से मानसिक भाव, जैसे कि कुंठा, दंभ, भावुकता, निराशा, अकेलापन, स्पर्धा, जिज्ञासा, सहानुभूति, जिजीविषा, जिज्ञासा, संदेह, विश्वास, विद्रोह आदि मानसिक भावों के प्रति नारी चरित्र किस प्रकार व्यवहार करते हैं । इन भावों से प्रभावित होते हुए अपना अस्तित्व किस प्रकार बनाये रखते हैं । इसका चित्रण शिवानीजी ने अपने उपन्यासों में किया है ।

गृह, कामकाजी स्थल, परिवार, मित्र, समाज आदि क्षेत्रों में भी दोहरी समस्याओं का सामना करना पड़ता है ।

कृष्णवेणी, कैंजा, कालिंदी, किशनुली, स्वयंसिद्धा, भैरवी आदि उपन्यासों में नारियों ने समाज की उपेक्षा करके पारंपारिक दृष्टिकोण के बदले एक नया दृष्टिकोण उजागर किया है । और नारी चेतना जागृत रखी है ।

अर्थ जीवन में बहुत ही महत्त्वपूर्ण है । मगर आर्थिक समानता या आर्थिक विपन्नता को लेकर समाज में कई समस्याएँ खड़ी होती हैं । और वह

समस्या परिवार की स्त्रियों को भी प्रभावित करती हैं – अर्थाभाव में चोरी खून, हत्या, अनमेल–विवाह, दहेज, विवाह–विच्छेद, शोषण, बलात्कार, कंवारापन अभिमान, दंभ, परिवार विघटन – वृद्धाश्रम, नैतिक मूल्यहीनता आदि पारिवारिक समस्याओं में नारी जिस प्रकार अपना अस्तित्व बनाये रखती है वही नारी चेतना है ।

समाज में वृद्धाश्रम, वेश्यावृति, भ्रष्टाचार, राजनीति में शामिल होने से दाम्पत्य जीवन में दरार, हत्या, बलात्कार, शोषण, समाज में फैले विविध रोग महामारी, कुष्ठ रोग, उन्माद, कैंसर, ल्युकोमिया, क्षय, आदि की वजह से व्यक्तियों का सामाजिक तिरस्कार, बहिष्कार ऐसे समय में नारी का कर्तव्य क्या है उसकी चेतना को चित्रित किया है ।

समाज में आराध्य माने जाने वाले धार्मिक पंडित, साधु, अघोरी वर्ग आदि की ढोंगी मनोवृत्ति, वासनावृत्ति ने नारी को नारी न मानकर शोषण का साधन बना दिया है ।

राजनीति में आनेवाले नेताओं की नैतिक–चारित्रिक गिरावट, पतन, भ्रष्टाचार, सत्ता का दुरुपयोग, सरकारी वाहनों का दुरुपयोग आदि कई समस्याएँ जो परिवार को भी लागू होती हैं । नारी पात्र सूझ–बूझ और जागृति से अपना रास्ता निकालते हैं ।

शिवानीजी ने अपने उपन्यासों में कुमाउ अंचल की ग्राम्य परिवेश की नारी चेतना तथा नगरीय परिवेश की नारियों का चित्रण किया है । ग्राम्य परिवेश की कुछ नारियाँ तेज तर्रार हैं तो कुछ दब्बू किसम की भी है । प्रायः देखा गया है कि उच्चवर्गीय समाज में नारी का व्यक्तित्व कुछ दब सा गया है । जब कि निम्नवर्गीय समाज में नारी अपेक्षा कृत अधिक मुक्त है । क्योंकि परिवार के दायित्वों से उसका बराबर संबंध रहता है ।

शिवानीजी के अपने उपन्यासों में कामकाजी महिलाओं का एक रूप सामने आता है । कामकाजी महिलाओं को परिवार के आर्थिक दायित्व से सीधा संबंध है, जिनमें स्कूलों की शिक्षिकाएँ, नर्स, मिडवाईफ गृहिणियाँ आती हैं ।

नगरीय क्षेत्र की कामकाजी महिलाओं में उच्चपदाधिकारी, डाक्टर प्राध्यापिकाएँ, शिक्षिकाएँ, नाटक फिल्म मोडलिंग, डांसर एडवरटाइजर, मार्केटींग, आदि का काम करने वाली महिलाएँ बड़े–बड़े व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में ऊँचे ओहदों पर स्थित महिलाएँ, एयर होस्टेस, सेक्रेटरियाँ, राजनेत्री महिलाएँ–सदस्याएँ जिन्होंने विशिष्ट क्षेत्रों में अपना स्थान बनाया है । दोहरा दायित्व निभाया है ।

ऐसे नारी पात्रों का सर्जन करके शिवानीजी ने नारी शिक्षा का महत्त्व बताया है । शिवानीजी के उपन्यासों में चित्रित नारी पात्र इसाई मिशनरियों की कोन्वेट अंग्रेजी शिक्षा पाये हुए हैं । जो आत्म निर्भर बनकर घर परिवार समाज को सहायक बने हुए हैं ।

इसाई मिशनरियों के लोगों के गुणों का आलेखन भी किया है । जो दयालु, करुणामय, सेवाभावी, समाजोपयोगी कार्य करते हैं । इनसे जुड़ी नारियों में भी वैसे सद्‌गुण मौजूद है, शिष्ट, शालीन – होशियार और कर्मठ और ऐसी नारियाँ ही समाज का चित्र बदल सकती हैं ।

आर्थिक विपन्नता, संपन्नता से पुरुष जब परिवार को छोड़कर या भूल जाता है, तब नारी ही परिवार घर चलाती है । कभी–कभी अर्थ, या पढ़ाई कम होने से दहेज, अनमेल विवाह, शोषण, मूल्यहीनता के सामने भी नारी अपना अस्तित्व बनाये रखती है, अपनी आत्मनिर्भरता के कारण वह जिंदा रह सकती है ।

शिवानीजी के उपन्यासों की प्रत्येक स्त्री अपूर्व सुंदरी है, साथ–साथ रहस्यमयी भी ।

पुरानी, राजाशाही के जमाने की कोठियों का वर्णन ऐसा सुंदर, समृद्ध है कि एक बार अल्मोड़ा या नैनीताल जाकर घूमने, फिरने, देखने को जी ललचाता है ।

कई उपन्यास एक जैसे भी लगते हैं । जैसे कि श्मशान चंपा, चल खुसरो घर आपने, दोनों में पारिवारिक अर्थाभाव के कारण नायिकाएँ घर से दूर कमाने जाती हैं और अपनी बुद्धिमानी सूझ–बूझ से अपना अस्तित्व बनाये रखती हैं ।

पहाड़ी समाज में शराब, मद्यपान, मांसाहार, किया जाता था । नायिकाएँ भी उसमें रुचि रखनेवाली आधुनिकाएँ हैं ।

शिवानीजी ने अपने उपन्यासों की सुंदर स्त्री पात्रों के लिए सुंदर नाम, शब्दों का प्रयोग किया है जैसे कि तन्वंगी, तनुमध्या, तिलोत्तमा, मंदोदरी, कृशांगी, चतुरा, मूर्खा, चपला, विश्वसुंदरी, मृगनयनी, कृष्णकली, भूधरा, भीमोदरा, सुचित्रा, जधना, किन्नरी, सुललिता, जादूगरनी, भुवनमोहिनी, कृशोदरी, मुखरा, यौवना, छलना, शारवामृगी आदि । शिवानीजी की नारी, सुंदर, होशियार, स्पष्टवक्ता, सुंदर वस्त्र परिधान, गृह सजावट में रुचि रखनेवाली, उदार, भावनामयी, हंसी मनोरंजन में रुचि रखनेवाली, शरारती, चुहलबाज, आनंदप्रिया, जिज्ञासु, रोमेंटिक, रहस्यमयी रही है । जो सब को अपनी ओर आकृष्ट तो करती है मगर योग्यपात्र को ही मन–दिल–बुद्धि से प्रतिभाव देती है । इसी प्रकार शिवानीजी ने मानवीय नारी रूपों की श्रृंखला पेश की है ।

इस अध्ययन के दौरान नारी जीवन के विभिन्न पहलुओं, रूपों और मुद्राओं से गुजरने का अवसर मिला है । जिसके कारण नारी के कई चेहरे सामने आये हैं । जहाँ एक तरफ नारी का शोषित, दमित, पीड़ित, अति श्रमित रूप मिला है, वहाँ इन सबके बावजूद कुछ ऐसी तेज तर्रार, जूझारू और संघर्षशील नारियाँ भी हैं, जिनकी हिंमत, जीवट और जिजीविषा की जितनी तारीफ की जाय कम है ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध में व्यक्तित्व संपन्न नारियों की चेतना को समाज के सामने रखने का संनिष्ठ प्रयत्न हुआ है । समकालीन साहित्य में नारी चेतना, दलित विमर्श ये दो पहलू विशेषतः उभरकर आए हैं । लेखिका के उपन्यासों पर विभिन्न प्रकार का अन्वेषण कार्य संपन्न हुआ होगा और मुझे अपनी मेहनत, सामर्थ्य–शक्ति तथा बुद्धि प्रतिमा का अहसास है । अपनी मर्यादाओं को भी मैं जानती हूँ । इसलिए विद्वानों, मान्यवर समीक्षकों के सामने प्रथम ही नत मस्तक हूँ । वैसे कोई भी कार्य पूरा नहीं होता । मगर समाज के आधे अंग की चेतना को समाज के सामने रखकर श्रेष्ठ नारी पात्रों को जीने का बल मिले, प्रेरणा मिले यही मेरा मंगल अभियान है । अपनी क्षतियों के लिए क्षमा प्रार्थी हूँ । संभव है कि मेरे शोध कार्य से नारी चेतना के और भी आयाम खुलें तथा भविष्य के नारी पात्र अध्येता, अनुसंधित्सु लाभान्वित हों, तो मैं अपना परिश्रम सार्थक समझूँगी ।

ग्रंथानुक्रमणिका

१) आधारग्रंथ सूची
(उपन्यासकार शिवानी के उपन्यास)

२) सहायक ग्रंथ सूची

३) पत्र–पत्रिकाएँ

४) शब्दकोश

ग्रंथानुक्रमणिका

(१) आधार ग्रंथ (उपन्यासकार शिवानी के उपन्यास)

क्रम	उपन्यास का नाम	प्रकाशक	संस्करण –वर्ष
१.	भैरवी	शब्दकार, २२०–३, गली डकौतान, तुर्कमान गेट, दिल्ली–६	द्वितीय – १६७०
२.	रतिविलाप	राजपाल एण्ड सन्ज, कश्मरी गेट, दिल्ली	प्रथम – १६७४
३.	किशनुली	सरस्वती विहार, २१ दयानंद मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली–२	प्रथम – १६७६
४.	चल खुसरो घर आपने	सरस्वती विहार, २१ दयानंद मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली–२	प्रथम – १६८२
५.	गैंडा	सरस्वती विहार, जी. टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली–३२	तृतीय – १६८६
६.	स्वयंसिद्धा	सरस्वती विहार, जी. टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली–३२	द्वितीय – १६८७
७.	रथ्या	सरस्वती विहार, जी. टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली–३२	१६८६
८.	विषकन्या	हिन्द पोकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, दिलशाह गार्डन, शाहदरा, जी. टी. रोड, दिल्ली – ६५	नवीन – १६६०
६.	चौदह फेरे	विश्वविद्यालय, प्रकाशन चौक, वाराणसी – २२१००१	१६६२
१०.	कैंजा	हिन्द पोकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, दिलशाह गार्डन, शाहदरा, जी. टी. रोड, दिल्ली–६५	१६६३

११	माणिक	हिन्द पोकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, जे–४०, जोरबाग लेन, नई दिल्ली – ०३	नया – २००२
१२	दो–सखियाँ	हिन्द पोकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, जे–४०, जोरबाग लेन, नई दिल्ली – ०३	नवीन – २००२
१३	श्मशान चंपा	हिन्द पोकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, दिलशाह गार्डन, शाहदरा, जी. टी. रोड, दिल्ली – ६५	नवीन – २००२
१४	कृष्णकली	भारतीय ज्ञानपीठ, १८, इन्स्टीटयूशन बरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली ११०००३	सत्रहवाँ – २००३
१५	कृष्णवेणी	हिन्द पोकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, दिलशाह गार्डन, शाहदरा, जी. टी. रोड, दिल्ली – ६५	श्रद्धांजलि – २००३
१६	सुरंगमा	हिन्द पोकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, दिलशाह गार्डन, शाहदरा, जी. टी. रोड, दिल्ली – ६५	श्रद्धांजलि – २००३
१७	मायापुरी	शिवजी साहित्य प्रकाशन प्रा. लि., राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली ११०००२	पहलीबार – २००६
१८	कालिंदी	राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली ११०००२	पहलीबार – २००६

(२) सहायक ग्रंथ :

क्रम	ग्रंथ नाम	लेखक	प्रकाशक	संस्करण – वर्ष
१.	अमरकोश (द्वितीय खंड)	नारायण राम आचार्य 'काव्यतीर्थ'	भारतीय कला प्रकाशन, दिल्ली ११००३५	२००४
२.	अन्या से अनन्या	डॉ. प्रभा खेतान	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली ११०००२	प्रथम २००८
३.	अतीत के चलचित्र	महादेवी	राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली ११०००१	
४.	आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में नारी के विविध रूपों का चित्रण	डॉ. मोहम्मद अजहर देरीवाला	चिंतन प्रकाशन मछरिडया रोड, कानपुर २०८०२१	प्रथम २००१
५.	आधुनिक समाज की नारी चेतना	डॉ. शुशील वर्मा	आशा पब्लिशिंग कम्पनी, कमला नगर, आगरा–१	१९९८
६.	आदमी की निगाह में औरत	राजेन्द्र यादव	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली ११०००२	द्वितीय २००६
७.	आधुनिक हिन्दी कहानी में वर्णित यथार्थ	डॉ. ज्ञानचंद्र शर्मा	राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली ११०००१	प्रथम १९९९
८.	उपनिवेश में स्त्री	डॉ. प्रभा खेतान	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली ११०००२	प्रथम २००४

९.	औरत के हक में	तसलीमा नसरीन	वाणी प्रकाशन, दिल्ली ११०००२	२००२
१०.	गृहदाह	शरतचंद्र चट्टोपाध्याय	दूरदर्शन धारावाहिक	सोमवार ९–३० २००८
११	न यह लड़की – न यह गद्य	तसलीमा नसरीन	वाणी प्रकाशन, दिल्ली ११०००२	प्रथम १९९५
१२	नारी व्यथा (गुजराती)	डॉ. चंद्रिका रावल, डॉ. शैलजा ध्रुव	पार्श्व पब्लिकेशन, अहमदाबाद ३८०००१	प्रथम २००२
१३	नारी चेतना और कृष्णा सोबती के उपन्यास	डॉ. गीता सोलंकी	भारत पुस्तक भंडार, ३४३, ई. सोनिया विहार, दिल्ली – ९४	प्रथम २००४
१४	पंचामृत (भजनावली)	मनसुखरामभाई जोबनपुत्रा	शारदाग्राम संस्था (गुजरात)	
१५	प्राकृत विद्या	सं. सुरेशचंद्र जैन	श्री कुंद–कुंद भारती ट्रस्ट, दिल्ली ११००६७	अगस्ट अक्टूबर २००७
१६	भारतीय समाज में नारी	डॉ. नीरा देसाई	मेकमिलन इंडिया लिमिटेड	प्रथम १९८२
१७	भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र	डॉ. एम. एम. लवानिया	रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर	२००४
१८	महाभारत	नरेन्द्र कुमार – मयाशंकर जोशी	प्रवीण पुस्तक भंडार, राजकोट	

१९.	महिला और मानवाधिकार	एम. एम. अंसारी	ज्योति प्रकाशन, बरकतनगर, जयपुर	प्रथम २०००
२०.	महादेवी साहित्य समग्र–३	सं. निर्मला जैन	वाणी प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली ११०००२	प्रथम १९९९
२१.	महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में बदलते सामाजिक संदर्भ	डॉ. श्रीजी प्रभा वर्मा	विद्या–विहार, कानपुर	प्रथम १९८७
२२	महादेवी – नया मूल्यांकन	डॉ. गणपति चंद्र गुप्त		
२३.	मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में नारी	डॉ. रमानवले	विकास प्रकाशन, कानपुर २०८०२७	प्रथम २००७
२४.	महिला उपन्यासकार	डॉ. मधु संधु	निर्मल पब्लिकेशन्स, दिल्ली – ११०९४	प्रथम २०००
२५.	ॠग्वेद – भाग–४	सं. श्रीराम शर्मा आचार्य	ब्रह्मवर्चस, शांतिकुंज, हरिद्वार (उत्तरप्रदेश)	गुरूपूर्णिमा संवत २०५३
२६.	वर्तमान हिन्दी महिला कथा लेखन और दाम्पत्य जीवन	साधना अग्रवाल	वाणी प्रकाशन, दिल्ली ११०००२	प्रथम १९९५
२७.	वारिस (रणमां खीलेलुं पुष्प) 'ध डेझर्ट फलावर' के अंश वारिस डीरी की आत्मकथा	भावानुवाद – क्षमा कटारिया	ओएसिस सेल्फ लीडरशिप एज्युकेशन फोर कोम्युनिटी डेवलपमेन्ट, वडोदरा	प्रथम २००६

२८.	शिक्षा में क्रांति – ओशो रजनीश	स्वामी नरेन्द्र बोधिसत्व, आनंद सत्यार्थी, दयाल भारती	रेबजी पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि., पूणे	द्वितीय १९९९
२९.	शिवानी के कथा साहित्य में नारी का अस्तित्व	डॉ. रुबी जुत्शी	मोहिन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली ११० ००२	प्रथम २००३
३०.	शिवानी के उपन्यासों का रचना विधान	डॉ. शशिबाला पंजाबी	देवनागर प्रकाशन, जयपुर	१९८१
३१.	शिवानी के उपन्यास कथ्य और शिल्प	डॉ. रेणु हिंगोरानी	अप्रकाशित शोध प्रबंध	१९९५
३२.	समाज कल्याण (नारी दीक्षा संस्कृति)	डॉ. जयश्री भट्ट	आदित्य पब्लिशर्स, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली ११०००२	प्रथम २००३
३३.	साहित्यिक अनुसंधान के आयाम	डॉ. रवीन्द्र कुमार जैन	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली ११०००२	द्वितीय २००५
३४.	साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास में नारी के विविध रूप	डॉ. विमला शर्मा	संगम प्रकाशन, इलाहाबाद	प्रथम १९९२
३५.	साठोत्तरी महिला कहानीकार	डॉ. मधु संधु	सन्मार्ग प्रकाशन, बैंग्लो रोड, दिल्ली	प्रथम १९८४

३६.	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी के विविध रूप	डॉ. गणेशदास	अक्षय प्रकाशन, कानपुर	प्रथम १६६२
३७.	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य में बदलते सामाजिक संदर्भ	डॉ. शीला रजवार	इस्टर्न बुक किंकर्स, दिल्ली	प्रथम १६८६
३८.	स्त्री–पुरुष संबंधों का रोमांचकारी इतिहास	मन्मथनाथ गुप्त	वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली ११०००२	प्रथम २००५
३६.	स्त्री – भ्रूण हत्या अटकावीए (गुजराती)	डॉ. विनुभाई पटेल, डॉ. आरती कस्वेकर	स्वास्थ्य सेवा ट्रस्ट, नारणपुरा, अमदावाद	द्वितीय २००७
४०.	स्त्री उपेक्षिता	डॉ. प्रभा खेतान	हिन्द पोकेट बुक्स, दिल्ली	प्रथम १६६८
४१.	हिन्दू नारी कार्यशीलता के बदलते आयाम	डॉ. प्रभावती जड़िया	आकांक्षा पब्लिकेशन्स, बीना (मध्यप्रदेश)	२०००
४२.	हिन्दी साहित्य का समग्र इतिहास	डॉ. रमेशचंद्र शर्मा	विद्या प्रकाशन, कानपूर	प्रथम १६६०
४३.	हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास	डॉ. सुमन राजे	भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली	२००३
४४.	हिन्दी उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना	डॉ. उषा यादव	राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली	प्रथम १६६६
४५.	हिन्दी उपन्यासों में नारी	डॉ. शैल रस्तोगी	विभू प्रकाशन, साहिबाबाद	प्रथम १६७७
४६.	हिन्दी उपन्यास के सौ वर्ष	डॉ. रामदरश मिश्र	पिलाजी गंज, महेसाना, उ. गुजरात	प्रथम १६८४

(३) पत्र–पत्रिकाएँ :

१. ‘हिन्दुस्तानी जबान’ (त्रैमासिक)
१८ अप्रिल – जून – २००१
संपादक : डॉ. शुशीला गुप्ता

२. ‘हंस’
संपादक : राजेन्द्र यादव
अक्षर प्रकाशन, दिल्ली

३. ‘गुर्जर राष्ट्र वीणा’
नवम्बर २००५

४. ‘शब्द शिखर’
साहित्यिक संस्कृति संस्थान, फैजाबाद

५. दैनिक – गुजरात समाचार
तंत्री – प्रबंधक : श्रेयांस शाह
प्रजाबंधु प्रेस, राजकोट (सौराष्ट्र गुजरात)

(४) शब्दकोश :

१. हिन्दी शब्द कोश
डॉ. हरदेव बाहरी
पन्द्रहवाँ संस्करण – २०००
प्रकाशक : राजपाल एण्ड सन्स,
कश्मीरी गेट, दिल्ली

शिवानी के उपन्यासों में नारी चेतना

✩✩✩

सौराष्ट्र विश्वविद्यालय की पीएच.डी. (हिन्दी)
उपाधि के लिए प्रस्तुत

शोध-प्रबंध

✩✩✩

✩ *प्रस्तुतकर्त्री* ✩

प्रा. हंसा एम. सोलंकी

कुमारी आन्या बिनोयभाई गार्डी ग्रामविद्या महाविद्यालय
मांगरोल, शारदाग्राम

✩✩✩

✩ *निर्देशक* ✩

डॉ. एस. पी. शर्मा

पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष,
हिन्दी भवन,
सौराष्ट्र विश्वविद्यालय,
राजकोट

✩✩✩

वर्ष २००६

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **प्रा. हंसाबहन एम. सोलंकी** ने सौराष्ट्र युनिवर्सिटी, राजकोट की पीएच.डी. (हिन्दी) उपाधि के लिए मेरे निरीक्षण और निर्देशन में **''शिवानी के उपन्यासों में नारी चेतना''** शीर्षक शोध–प्रबंध तैयार किया है । इस शोध–प्रबंध में इन्होंने उक्त विषय का यथाशक्ति अध्ययन–अनुशीलन एवं शोधपरक विश्लेषण – विवेचन करके वैज्ञानिक ढंग से मौलिक निरूपण किया है । साथ ही, यह शोध–प्रबंध अथवा इसका कोई अंश अब तक न तो प्रकाशित हुआ है और न ही इसका कहीं कोई उपयोग हुआ है ।

राजकोट
दिनांक :

निर्देशक

डॉ. एस. पी. शर्मा

पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष,
हिन्दी भवन,
सौराष्ट्र विश्वविद्यालय,
राजकोट

भूमिका

शिवानी के उपन्यासों में नारी चेतना

(१) पूर्वसूत्र :

मेरे घर में सदैव शैक्षणिक – साहित्यिक माहौल रहा । कहानियाँ – उपन्यास पढ़ने में मेरी विशेष रुचि रही । हिन्दी भाषा–साहित्य की छात्रा होने से मेरा रुझान उपन्यास पढ़ने की ओर रहा ।

वर्ष २००३–०४ में शास्त्री मैदान, राजकोट में आयोजित पुस्तक प्रदर्शनी में मुझे शिवानीजी का 'कालिंदी' उपन्यास, निरव प्रकाशन, दिल्ली के स्टोल से मिला, पुरानी किताब थी, दो–तीन पन्ने वहाँ ही खड़े–खड़े पढ़े । खास करके स्त्री विषयक – नायिका प्रधान उपन्यास, काव्य मुझे विशेष रूप से अपनी ओर आकर्षित करते थे ।

'कालिंदी' उपन्यास भी 'कालिंदी' शीर्षक देखकर खरीद लिया । पढ़ने के बाद लगा कि इसमें तो ऐसी घटनाएँ हैं जो समाज में कहीं न कहीं घटित हुई हैं और आज भी घटित हो रही हैं – पहाड़ी ग्राम्य परिवेश, रीति–रिवाज, श्रद्धा, अंधश्रद्धा, जाति–भेद, बोली, परिवार, दहेज प्रथा, विवाह और प्रकृति वर्णन – ऐसा जीवंत चित्रण था कि दृश्य बिलकुल निगाहों के सामने आ गया । कतिपय ऐसे वर्णन थे जिन्हें प्रत्येक स्त्री ने उसके स्त्री होने के नाते भुगते हों ।

समाज में स्त्री का स्थान, भूमिका सदैव महत्त्वपूर्ण रही । समाज में पारिवारिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, शैक्षणिक और राजनीतिक आदि सभी

क्षेत्रों में नारी ने योगदान दिया है । कोई भी उसे नकारने का साहस नहीं कर सकता ।

समाज में भारतीय नारी से विभिन्न प्रकार की भूमिकाओं की, उत्तरदायित्वों की अपेक्षा की जाती है, जिसमें नारी सफल रही है ।

कालक्रमानुसार नारी के स्थान – स्थिति में परिवर्तन होते रहे हैं, कारण चाहे कोई भी हो, मगर आज हमारे सामने स्त्री सशक्तीकरण का ख्याल आया है, स्त्री भ्रूण हत्या की समस्या समाज में व्याप्त है । इस संदर्भ में नारी के अमूल्य योगदानों को याद करके नारी की महत्ता को फिर से समाज के सामने रखना आवश्यक है ।

आजादी के बाद भारतीय संविधान ने स्त्री–पुरुष को समान अधिकार देकर भारतीय नारी की अस्मिता को, हैसियत को नया मोड़ दिया । फिर भी लोगों की मानसिकता में नारी के दोयम दर्जे का ख्याल अब भी मौजूद है । परिणामस्वरूप समस्याएँ फिर से नए रूप में खड़ी हुई हैं ।

१९६० के दशक को हम वैश्विक रूप से नारीवादी आंदोलन का समय मानते हैं – परिणाम स्वरूप नारी से संबंधित विभिन्न समस्याओं और नारी दृष्टिकोण को लेकर विभिन्न किताबें लिखी गईं । उसमें महिला लेखिकाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है । महिला लेखिकाओं ने नारी के विभिन्न रूपों, स्थान, योगदान, आशा–आकांक्षाओं एवं महत्त्वाकांक्षाओं को अपने कृतित्व के माध्यम से अभिव्यक्त किया है । कई किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं । कई अनुसंधित्सुओं ने नारी जीवन, समस्या – विमर्श – विषयक शोध प्रबंध तैयार किए हैं, संख्या बढ़ती ही जा रही है ।

१९६० में नारीवादी लेखन की प्रक्रिया पूरे जोर–शोर से हुई । शिवानीजी १९६० के दशक की नारीवादी महिला लेखिका हैं । डॉ. सुमन राजे के शब्दों में कहें तो ‘‘अपनी समकालीनों से शिवानीजी का रचनात्मक व्यक्तित्व

विशिष्ट है । उनकी रचनायात्रा लम्बी है । लोकप्रियता के जो मानक उन्होंने बनाये हैं वे विरल हैं । भाषा की काव्यात्मकता की सक्षम अभिव्यंजना की लालित्यपूर्ण कालिदासीय शैली एवं कथानकों के आभिजात्य की आंचलिक गरिमा की व्याख्याता हैं शिवानी ।'' (हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास, डॉ. सुमन राजे, पृष्ठ –२८७–२८८)

शिवानीजी के प्रायः सभी उपन्यास स्त्री–जीवन विषयक हैं, स्त्री जीवन की समस्याओं की गाथा है । प्रत्येक स्त्री–पात्र सुंदर देदीप्यमान, देवोपम सुंदरता वाला है । कहीं पर भी सुंदरता का सस्ता प्रकटीकरण नहीं हुआ है । शालीनता – सभ्यता – मानसिक – बौद्धिक – वैचारिक गरिमा की ऊँचाई उनके पात्रों में इतनी घुलमिल गई है कि पढ़कर पाठक उसे मान–सम्मान दिये बिना नहीं रहता । सब उसकी और खींचे चले जाते हैं ।

शिवानीजी ने अपने उपन्यासों में नारी पात्रों के द्वारा शिक्षा और आर्थिक आत्मनिर्भरता की हिमायत की है । समाज में व्याप्त हर समस्या के सामने शिवानीजी के पात्र अपने पूरे अस्तित्व के साथ संघर्ष करते हैं, समाधान भी पाते हैं । ऐसा समाधान कि जिसकी जड़े वास्तविक जिंदगी के साथ, सामान्य से लेकर उच्चतर लोगों के साथ जुड़ी हों । बहुत ही शालीन भाव से प्रत्येक भूमिका में शिवानीजी के पात्रों ने अपना स्थान प्रस्थापित किया है । अपने व्यक्तित्व की चेतना जताई है । प्रत्येक पात्र हमें मौलिक संदेश दे जाता है ।

शिवानीजी ने मनोवैज्ञानिक, व्यक्तिगत, आर्थिक, पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक प्रत्येक क्षेत्र में नारी के योगदान, समस्या और संघर्ष को चित्रित किया है । इन्हीं क्षेत्रों के साथ जुड़े हुए नारी पात्रों की चेतना को रूपायित करने के लिए ''शिवानी के उपन्यासों में नारी चेतना'' शोध प्रबंध का प्रणयन किया गया है ।

(२) शोध–विषय चयन :

प्रकृति के दो रूप हैं – नारी और पुरुष । नारी सृष्टि के मानवों के लिए रहस्यपूर्ण रही । पुरुषों ने नारी को शक्ति–देवी, माँ, करुणामूर्ति, सहचरी, मायाविनी, ठगिनी, आदि अनेक रूपों में देखा । एक तरफ नारी को ऊँचे आसन पर बिठाया तो दूसरी तरफ शुद्रों की भांति, मारना, ताड़ना, प्रतारणा–शोषण भी किया । जो श्रद्धावान पुरुष मंदिर में देवीमाँ की मूर्ति की पूजा करता है, श्रद्धा व्यक्त करके नत–मस्तक होता है वहीं श्रद्धावान धर में, समाज में स्त्रियों को सिर्फ भोग्या या उपेक्षा की वस्तु मानता है । ऐसी दोहरी मान्यताओं से नारी को सदैव सहन करना पड़ा ।

जीवन–संदर्भ में नारी को सबकुछ समझा जाता है, परंतु मानव नहीं समझा जाता । और पुरुष प्रधान समाज स्त्री विषयक परिवर्तन को सहजता से स्वीकार नहीं कर पाता ।

प्रत्येक जिम्मेदारी को पूरे अस्तित्व एवं प्रामाणिकता के साथ वहन करने के बाद भी नारी को मिलती है प्रतारणा, अविश्वास, अपमान और दोयम दर्जे की स्थिति ।

नारी होने के नाते मैंने, ऐसी दोयम दर्जे की विडम्बनाओं से ग्रस्त नारियों के दुःखों को देखा है । नारी होने के नाते कभी कभार मैं स्वयं भी भुक्तभोगी रही हूँ ।

अतः मेरे मन में सदैव नारी विषयक साहित्य पर काम करने की इच्छा थी । मेरे कई स्नेही प्राध्यापक मित्रों ने मुझसे कहा था ‘‘नारी विमर्श, नारी चेतना को लेकर काम हो चुका है, ऐसा शोध विषय क्यों ले रही हो ?’’ मगर जिन विषमताओं को लेकर स्त्रियाँ आज भी शोषित हैं उन समस्याओं को बारबार, हजारबार नये नये ढंग से समाज के सामने रखना होगा ।

मैंने अपने मान्य गुरुवर डॉ. एस. पी. शर्मा साहब के सामने मेरी उक्त इच्छा रखी । अंततः दोनों ने मिलकर ''शिवानी के उपन्यासों में नारी चेतना'' विषय तय किया । मेरे शोध की सुविधा के लिए शिवानीजी के १८ उपन्यासों की संख्या निश्चित की गई ।

(३) शोध-विषय : महत्त्व :

विश्व को चलायमान, गतिशील रखने में नारी का जो योगदान है वह महत्त्वपूर्ण तो है ही - साथ ही अति आवश्यक भी है । यहाँ तक कि हमारे वैदिक साहित्य ऋग्वेद में स्त्री को अत्युच्च स्थान दिया गया है । वैदिक काल में कुमारी या विवाहित स्त्री दोनों का ही बहुत सम्मान था, उन्हें धार्मिक, सामाजिक कार्यों में पुरुषों के समान स्थान प्राप्त था । उपनिषद की महिला सांसारिक सुखों को त्याग कर आत्मज्ञान या ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने हेतु प्रयत्नशील रहती थी ।

नारी का सम्मान करना भारतीय संस्कृति का महत्त्वपूर्ण जीवनमूल्य रहा है । मनु भगवान ने यहाँ तक कहा है कि जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है वहाँ देवता रमण करते हैं । जहाँ इनकी पूजा नहीं होती है वहाँ सारी क्रियाएँ निष्फल हो जाती हैं । इस प्रकार सृष्टि का मूलाधार नारी है । भारतीय स्त्री की कहानी उत्थान एवं पतन की कहानी है । समय के दर्पण में भारतीय नारी का प्रतिबिम्ब उसके उत्थान एवं पतन की कहानी कहता है । रामायण में सीता-त्याग, महाभारत में द्रौपदी को जुए में दावँ पर लगाना नारी के सम्मान के पतन की करुण कहानी है । कैकेयी का चरित्र महान है - फिरभी उसे स्वार्थी मानकर प्रताड़ित किया गया है । भक्तिकाल में भक्तों ने नारी की समानता के प्रयास किये हैं । कबीर ने-नारी से दूर रहना और साथ ही मान-पूजा करना दोनों बातें कहीं है । मीरा ने सामन्ती परिवार में जन्म लेने

के बाद भी नारी को दासी समझी जानेवाली संस्कृतियों को चुनौती दी है – तो यह भी नारी विमर्श – चेतना ही है ।

वैदिक काल से आज तक साहित्य की सभी विद्याओं में महिलाओं ने पुरुषों के समान अपनी सर्जनात्मक शक्ति का परिचय दिया है । विश्व इतिहास साक्षी है कि इस पुरुष–प्रधान समाज में नारी प्राचीन काल से ही सामाजिक, नैतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक एवं राजनीतिक बंधनों से जकड़ी हुई है । सामाजिक खौफ से गुजरते हुए स्त्री खुद से डरकर खुद में विभाजित और शक्तिहीन हो जाती है । पुरुष ने स्त्री की जिस एक चीज को कुचला या पालतू बनाया है, वह है उसकी स्वतंत्रता, अपनी अखंडता और सम्पूर्णता में नारी दुर्जेय है । पुरुष ने हर सम्भव कोशिश की है कि उसे परतंत्र और निष्क्रिय बनाया जाय ।

एक पतिव्रत का पालन करना और वात्सल्य की प्रतिमूर्ति बनने में ही उसके जीवन की महत्ता मानी जाती है । उसकी कोई स्वतंत्र पहचान नहीं । आज नारी अपना अस्तित्व– अस्मिता एवं अपनी परवशता के प्रति जागृत हो गई है ।

स्वतंत्रता के आंदोलन में भी गांधीजी के विचारों से प्रभावित होकर कई नारियों ने राष्ट्रीय संघर्ष में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई । झाँसी की रानी, सरोजिनी नायडू, अरुणा आसफ अली, विजया लक्ष्मी पंडित, सुचित्रा कृपलानी, ईंदिरा गांधी प्रभृति नारियाँ आज भी स्मरणीय है ।

१९७० के बाद नारी–विश्व–चेतना, नारीवाद का ख़याल पश्चिम से आया है । वहाँ पर स्त्रियाँ अपने अधिकारों को लेकर लड़ रही है । हमारे यहां तो स्वतंत्रता के बाद नारी को अधिकार मिल ही गए है । कुन्दनिका कापड़िया रचित – ''सात पगलां आकाशमां'' उपन्यास में नारी विमर्श का भाव ही है जो काफी चर्चास्पद रहा । सदियों से स्त्रियाँ कहीं न कहीं दबाई गई हैं –

प्रताड़ित की गई हैं । साहित्यकारों ने अपने साहित्य में स्त्रियों के अधिकार, अस्तित्व आदि प्रश्नों को लेकर बातें कीं, फिर भी कोई ठोस समाधान नहीं मिला । साहित्य की विविध विद्याओं में उपन्यास सर्वाधिक लोकप्रिय विद्या है । इसके मूल में मानवजीवन को निकट से देखने की प्रवृत्ति रही है । शिवानीजी के आलोच्य १८ उपन्यासों के नारी चरित्रों में नारी चेतना निहित है । उनके उपन्यास मनोविश्लेष्णात्मक और व्यक्तिवादी, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक विचारधारा से संबंधित हैं । हिन्दी में जैनेन्द्र, अज्ञेय, इलाचंद्र जोशी, आदि ने मनोवैज्ञानिक भाव को शिखर तक पहुँचाया । फ्रायड, युंग आदि का प्रभाव भी मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में है । शिवानी के उपन्यासों में नारी चरित्र कुंठा–सहानुभूति, जिजीविषा, संदेह, भावुकता, विश्वास, विद्रोह, द्विधा आदि मानसिक भावों को लेकर अपने–अपने लक्ष्य तक पहुंचते हैं, यही नारी चेतना है । नारीपात्र पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, जिम्मेदारियों को वहन भी करते हैं, और इन बातों में वे पुरुषों से भी आगे हैं । धार्मिक व आर्थिक ऊँचाइयों पर नारी स्थित है । राजनीतिक दावँपेंच में शामिल होने के बाद भी अपना अस्तित्व अक्षुण्ण बनाया है – यह बात शिवानीजी के उपन्यासों में हमें देखने को मिलती है । आज नारी अपने अस्तित्व की सुरक्षा के लिए परंपरागत मूल्यों से लड़ रही हैं । महिला लेखिकाओं ने स्त्री को केन्द्र में रखकर अनेक समस्याएँ प्रस्तुत की हैं । महिलाएँ धीरे–धीरे यह महसूस करने लगी हैं कि इन्सान के रूप में उनका भी एक निजी व्यक्तित्व है । वह आर्थिक रूप से स्वावलंबी नारी है । प्रत्येक क्षेत्र में वह काम कर रही है । परिस्थितियों से लड़ती है । उषा प्रियंवदा, ऋता शुक्ल, कृष्णा अग्निहोत्री, कृष्णा सोबती, चित्रा मुद्‌गल, नासिरा शर्मा, पद्‌मा सचदेव, मन्नू भंडारी, मालती जोशी, मेहरुन्निसा परवेज, मैत्रेयी पुष्पा, मृदुला गर्ग, मृणाल पांडेय, शशिप्रभा शास्त्री, शिवानी जैसी विदुषी–नारियाँ समाज निर्माण के कार्य से जुड़ी हुई हैं । भारतवर्ष में स्त्री

संदर्भित समस्याओं, जैसे अंधविश्वास, तलाक, विधवा–विवाह, कुरीतियाँ, बलात्कार, जैसी महत्त्वपूर्ण बातों का चित्रण शिवानी के उपन्यासों में भी हुआ है ।

जैविक भिन्नता के बावजूद नारी–पुरुषों से कमजोर नहीं है । जब नारी अपने कामिनी भाव का त्याग करेगी, स्त्री–पुरुष में सहज मैत्रीभाव रहेगा, अधिकारों के साथ कर्तव्य पालन करने की दृढ़ इच्छा शक्ति होगी तो उत्पीड़न से नारी मुक्ति पा लेगी । उसके अधिकार न भिक्षावृति से मिले हैं, न मिलेंगे क्योंकि वे आदान–प्रदान योग्य वस्तुओं से भिन्न है । पुरुषों का विरोध करके, उन्हें मिटाकर या उनके बंधन को अस्वीकार करने से नारी–मुक्ति संभव नहीं है । सिमोन बोउवा का मानना है कि स्त्री और पुरुष के बीच कुछ मौलिक अंतर तो रहेंगे ही, उसकी संवेदनशीलता की दुनिया अलग है, यह तो पुरुष को स्थापित करना है कि स्त्री की इस दुनिया में स्वाधीनता का आधिपत्य रहे । कालजयी रचनाकार जयशंकर प्रसाद का मानता है कि – नर–नारी के संबन्धों के भावनात्मक तंतु सौहार्द और सामंजस्य पर टिके हुए हैं –

मनु तुम श्रद्धा को गये भूल,
उस पूर्ण आत्मविश्वासमयी को उड़ा दिया था समझ तूल,
तुम भूल गए पुरुषत्व मोह में, कुछ सत्ता है नारी की,
समरसता है, संबंध बनी, अधिकार और अधिकारी की ।

– कामायनी

आचार्य रजनीश के अनुसार अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए पुरुष को मिटाना नहीं है – आगे पीछे – नहीं चलना है । समानान्तर साथ–साथ युगपत चलना है ।

उपर्युक्त परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत शोध–विषय का महत्त्व स्वयं स्पष्ट हो जाता है । शिवानी के उपन्यासों में चित्रित नारी–पात्रों में प्रतिबिंबित नारी अस्मिता के स्वरों–तत्त्वों का आकलन करना तथा उनके आलोक में नारी–व्यक्तित्व

को प्रमाणित करने की दिशा को प्रशस्त करना प्रस्तुत शोध–प्रबंध का प्रतिपाद्य विषय है ।

(४) सामग्री संकलन :

शोधकार्य एवं तत्संबंधी सामग्री संकलन करना श्रमसाध्य, गुरुतर कार्य है । विशेषकर अहिन्दी भाषी प्रदेशों के लिए तो हिन्दी में शोधकार्य करना और तत्संबंधी पुस्तकें एवं साहित्य प्राप्त करना अति कठिन कार्य है ।

पूरे एक साल तक मुझे सामग्री संकलित करने में बहुत तकलीफें उठानी पड़ीं । १९६० के दशक की साहित्यकार शिवानीजी की कृतियों को प्राप्त करने के लिए बहुत पत्राचार करना पड़ा । दिल्ली के दो–तीन किताबघरों से निराशाजनक उत्तर मिले । कुछ प्राचीन प्रकाशक अब बन्द हो चुके थे और कुछने अपना नया नामकरण कर लिया था ।

मगर बाद में मुझे सबसे ज्यादा सहयोग मिला मेरी छात्रा पानसुरीया परीज्ञा से, जो २००५ में गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद में ह्युमन रीसोर्स डेवलोपमेण्ट का कोर्ष कर रही थी । जैसे ही मैंने उसे फोन पर मेरी तकलीफ सुनाई, एक सप्ताह में उसने मुझे गुजरात विद्यापीठ के ग्रंथालय से शिवानीजी के १० उपन्यास निकलवाकर फोटोकोपी करवा के, कुरियर द्वारा भेज दिये ।

दूसरे मेरे छात्र हैं मेहता मातंग और जादव योगेश, वे भी गुजरात विद्यापीठ में अध्ययन कर रहे थे, उन्होंने मुझे तीन उपन्यासों की फोटोकोपी करवाके कुरियर द्वारा भेजे । इन तीनों की मैं बहुत ऋणी हूँ ।

बाकी के पाँच उपन्यास मैंने –

(१) हिन्दी पॉकट बुकस – दिल्ली ।

(२) बुक–काफे – दिल्ली से प्राप्त किये ।

तीन संदर्भ पुस्तकें आदरणीय शर्मा साहब ने मुझे दीं ।

(१) साहित्यक अनुसंधान के आयाम - डॉ. रवीन्द्रकुमार जैन

(२) गुजरात में हिन्दी शोध का विकास - डॉ. अम्बाशंकर नागर

(३) शिवानी के उपन्यास - कथ्य और शिल्प - डॉ. रेणु हिंगोरानी

इस शोध-प्रबंध के लिए मैंने जिन ग्रंथालयों से संदर्भ पुस्तकें ली हैं उनके नाम नीचे दिये गये हैं -

(१) गुजरात विद्यापीठ ग्रंथालय - अहमदाबाद ।

(२) सैराष्ट्र विश्वविद्यालय ग्रंथालय - राजकोट ।

(३) कंपाणी आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज - मांगरोल, शारदाग्राम ।

(४) हिन्द पोकेट बुक्स- दिल्ली ।

(५) बुक काफे, दिल्ली

(६) राजकमल एवं वाणी प्रकाशन - दिल्ली ।

(७) कु. आन्या बिनोयभाई गारड़ी, ग्रामविद्या महाविद्यालय-शारदाग्राम ।

(५) प्रस्तुत शोध-प्रबंध द्वारा प्रस्तावित योगदान :

(१) प्रकृति के दो- शाश्वत रूप - स्त्री और पुरुष हैं । मानव जीवन को प्रभावित करनेवाली प्रेरणाप्रद जीवनदायिनी शक्ति के रूप में स्त्री की महत्त्वपूर्ण भूमिका को स्पष्ट करना ।

(२) स्त्री प्रेरणास्त्रोत - जीवनदायिनी है फिर भी उसके अस्तित्व को मिटाने की कोशिश क्यों ? यह जागरूकता समाज के समक्ष रखना ।

(३) भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टिकोण से शिवानी के उपन्यासों की नारी चेतना को चित्रित करना ।

(४) शिवानीजी के उपन्यासों में चित्रित मानसिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, पारिवारिक, धार्मिक धरातल पर स्त्री की सक्षम भूमिका को बताना ।

(५) घर को छोड़कर बाहर के क्षेत्रों में काम करने वाली – कामकाजी नारी के चरित्र में ही नारी चेतना है या गृहस्थी संभालने वाली नारी में भी नारी चेतना है – इस बात को शिवानीजी के उपन्यासों के नारीचरित्रों के माध्यम से बताना ।

(६) नारी चेतना के आंदोलनों से स्त्रियाँ क्या चरितार्थ करना चाहती हैं ? मानववाद या समाज के साथ अपने आपको जोड़कर अपने अधिकारों की मांग ? या सिर्फ विरोध – देखा–देखी से नारी आंदोलन – अपने अधिकारों की मांग ?

(७) उपभोक्तावादी पूंजी बाजार और मीडिया ने मिलकर नारी का वस्तुकरण कर दिया है । सैंदर्य स्पर्धा और भ्रूणहत्या जैसी धटनाएँ होती ही रहती हैं । तब नारी चेतना क्या चाहती है ? ऐसे विचारों के प्रति समाज/पाठकों को जाग्रत करना ।

(६) शोध– प्रबंध– परिचय :

"शिवानी के उपन्यासों में नारी–चेतना" प्रस्तुत शोध–प्रबंध छः अध्यायों में विभक्त किया गया है –

(१) प्रथम अध्याय :–

इस अध्याय में प्रकृति के रचयिता के शाश्वत और अनिवार्य दो – स्वरूप – स्त्री –पुरुष, भारतीय संस्कृति में स्त्री का स्थान, स्त्री की आवश्यकता, गति–प्रगति और आज की स्थिति का विश्लेषण किया गया है ।

(२) द्वितीय अध्याय :-

इस अध्याय में नारी चेतना माने क्या ? परिभाषा - शब्द - अर्थ - स्वरूप - इसके समर्थन में अन्य चिंतकों के, महिला रचनाकारों के विचार, भारतीय और पाश्चात्य अभिगम - आदि का विश्लेषण किया गया है ।

(३) तृतीय अध्याय :-

इस अध्याय में शिवानीजी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व (१८ उपन्यासों का कथ्य) का संक्षेप में अनुशीलन - विश्लेषण किया गया है ।

(४) चतुर्थ अध्याय :-

इस अध्याय में शिवानी के उपन्यास साहित्य में मनोवैज्ञानिक व व्यक्तिगत विचारधारा से सम्बन्धित उपन्यासों के पात्रों में मौजूद कुंठा, सहानुभूति, जिजीविषा, जिज्ञासा, संदेह, भावुकता, दंभ, विश्वास, विद्रोह, द्विधा, स्पर्धा, अकेलापन आदि मानसिक भावों के होते हुए भी अपना अस्तित्व किस प्रकार बनाये रखते हैं । इसका विस्तृत विश्लेषण नारी चेतना की दृष्टि से किया गया है ।

(५) पंचम अध्याय :-

इस अध्याय में शिवानी के पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं राजनीतिक विचारधारा से सम्बन्धित उपन्यासों के नारी-चरित्र - किस प्रकार अपना अस्तित्व कायम रखते हुए सामाजिक स्तर पर स्थापित होना - विषमताओं का सामना करना, पारिवारिक जिम्मेदारियों का वहन करना, आर्थिक स्वावलंबन होने के बाद भी समाज-परिवार के लिये अपना त्याग कर देना, सामाजिक दंभ का सामना करना, धार्मिक राजनीतिक हथकंडों में शामिल होने के बाद भी अपना चरित्र - अपना अस्तित्व बनाये रखते हैं, इन सारी बातों का विश्लेषण-विवेचन किया गया है ।

(६) षष्ठ अध्याय :

इस अध्याय में शिवानी के आलोच्य उपन्यासों में चित्रित नारी–पात्रों में प्रतिबिंबित नारी–चेतना के विभिन्न रूपों का समग्रतया मूल्यांकन करते हुए दर्शाया गया है कि वर्तमान नारी–विमर्श के संदर्भ में शिवानी के उपन्यास नयी दिशाएँ प्रशस्त करते हैं । अतएव प्रस्तुत शोध–कार्य की साहित्यिक एवं सामाजिक उपादेयता असंदिग्ध है ।

(७) उपसंहार :

प्रस्तुत शोध–प्रबंध के अंत में 'उपसंहार' है, जिसमें पूर्व विवेचित तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष–निष्पादन करते हुए उपन्यासकार शिवानी के महत्त्व एवं साहित्यिक अवदान को रेखांकित किया गया है ।

(७) कृतज्ञताज्ञापन

"शिवानी के उपन्यासों में नारी चेतना" शीर्षक विषय पर काम करना मेरे जीवन का ध्येय बन गया था । इस मंज़िल तक पहुँचने में कई हितचिन्तकों ने मेरी सहायता की है, जिनके प्रति मैं आभारी हूँ ।

सबसे पहले सृष्टि के रचयिता परमतत्त्व को करबद्ध वंदन करती हूँ जिनसे मेरा अस्तित्व है ।

प्रस्तुत शोध–प्रबंध परमादरणीय गुरुवर डॉ. एस. पी. शर्मा, पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष, हिन्दी भवन, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय के सुयोग्य निर्देशन में तैयार किया गया है । विषयचयन से लेकर शोध–प्रबंध की पूर्णता तक समय–समय पर उन्होंने जो अमूल्य निर्देश दिये हैं, उसी के फलस्वरूप यह शोध–प्रबंध इस रूप में प्रस्तुत हो सका है । इसके लिए मैं हृदय से उनकी अनुगृहीत हूँ ।

मेरे कॉलेज के प्रिन्सीपाल डॉ. दिलीपभाई मर्थक तथा हिन्दी भवन (सौराष्ट्र विश्वविद्यालय) के वर्तमान अध्यक्ष डॉ. बी. के. कलासवा, पूर्व प्रोफेसर

डॉ. जी. जे. त्रिवेदी एवं रीडर डॉ. शैलेश मेहता के प्रति आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने मेरा हैसला बढ़ाया ।

मेरे कॉलेज के अंग्रेजी विषय के अध्यापक डॉ. इन्द्रवदनभाई पुरोहित सदैव मुझे ''जल्दी शोध-प्रबंध पूरा करो'' कहते रहे । दूसरे हैं क्षेत्र व्यवस्था के अध्यापक धीरेनभाई वंद्रा । आपकी बेटी अहमदाबाद पढ़ती थी और आप उससे मिलने जाते, मैं जो भी किताबें मंगवाती, आप ले आते, आपके प्रति भी आभारी हूँ ।

मेरे उन छात्रों के प्रति भी कृतज्ञ हूँ जो मुझे पढ़ते देख ''यहाँ मेडम पढ़ रही हैं चलो यहाँ से'' कहकर चले जाते और मुझे शांति प्रदान करते ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध की सामग्री संकलित करने में जिन ग्रंथालयों से मुझे सहायता मिली है उनके नाम नीचे दिये गये हैं -

(१) गुजरात विद्यापीठ ग्रंथालय - अहमदाबाद ।

(२) सौराष्ट्र युनिवर्सिटी ग्रंथालय - राजकोट ।

(३) हिन्द पॉकेट बुक्स - दिल्ली ।

(४) बुक काफे - दिल्ली ।

(५) श्री कंपाणी आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज - मांगरोल-शारदाग्राम ।

(६) कु. आन्या बिनोयभाई गार्डी, ग्राम महाविद्यालय - मांगरोल-शारदाग्राम ।

इन सभी ग्रंथालयों के ग्रंथपालों के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करती हूँ । मैं सबसे ज्यादा ऋणी हूँ मेरे वंदनीय माता-पिता की, जिन्होंने मुझे जन्म देकर, पालन कर शिक्षा प्रदान की और इस मुकाम पर पहुंचाया । ईश्वर से मेरी करबद्ध प्रार्थना है कि वह मेरे पूज्य - माता-पिता को सुख-समृद्धि, शांति और निरामय आयुष्य प्रदान करे ।

मैं अपनी प्यारी-प्यारी सुंदर बेटियों - चि. डोली (हिमानी), चि. रोजी (कशिश) को कैसे विस्मृत कर सकती हूँ । जब मैं पढ़ने बैठती हूँ तो वे उम्र

के हिसाब से ज्यादा सयानी और बड़ी हो जाती थीं । दूसरे कमरे में जाकर खेलतीं, होमवर्क करतीं – उनकी परवरिश का पूरा समय मैंने शोधकार्य में दिया है । मेरे पति दक्षेशकुमार मकवाणा की मूक संमति मुझे मिली । मेरी बड़ी बहन श्रीमती गीता दिव्येशकुमार मकवाणा जिन्होंने कभी–कभार मेरी बेटियों को संभाला है उनके प्रति भी आभार प्रकट करती हूँ । सौराष्ट्र विश्वविद्यालय – राजकोट ने मुझे पीएच.डी. की शोध–छात्रा के रूप में स्वीकारा, इसके लिए मैं हृदय से आभारी हूँ ।

अंत में मैं उन सभी – गुरुजनों, सहकार्यकर मित्रों, सहृदय शुभचिंतकों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ जिन्होंनें मुझे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में इस कार्य में सहायता प्रदान की है ।

मांगरोल :
दिनांकः ७ जनवरी २००६

विनीता
हंसा सोलंकी

अनुक्रमणिका

शीर्षक		पृष्ठ क्रमांक
प्रथम अध्याय : प्रकृति के शाश्वत और अनिवार्य स्वरूप : स्त्री और पुरुष		१-४५
(अ)	वैदिक काल	२
(ब)	पुराणकाल	५
(क)	थेरी गाथाएँ	८
(ड)	संस्कृत महाकाव्य काल	६
(इ)	मध्यकाल	१५
(ई)	ब्रिटीशकाल में महिलाओं की स्थिति	१७
(उ)	आधुनिक काल	२४
(ऊ)	इक्कीसवीं सदी में नारी	३६
द्वितीय अध्याय : नारी चेतना		४६-७६
(क)	नारी चेतना – भूमिका	४७
(ख)	नारी चेतना – मुक्ति, ऐतिहासिक संदर्भ	५०
(ग)	अमरिका में नारी मुक्ति आंदोलन	५१
(घ)	भारतीय और पाश्चात्य अभिगम, दृष्टिकोण	५४
(ड)	नारी चेतना से तात्पर्य	५६
(च)	नारी चेतना, विषयक विभिन्न दृष्टिकोण	५८
तृतीय अध्याय : शिवानी का जीवन एवं व्यक्तित्व		७७-१२८
१.	शिवानी का जीवन : व्यक्तित्व	७६
२.	शिवानी का साहित्यिक व्यक्तित्व	८३

३.	शिवानी का साहित्य :	८५
१)	कहानी संग्रह	८५
२)	उपन्यास	८६
३)	*लघु उपन्यास एवं कहानियों पर आधारित संकलन*	८६
४)	यात्रावृत्त	८७
५)	संस्मरण	८७
४.	शिवानी के उपन्यासों का संक्षिप्त अनुशीलन	८८
१)	मायापुरी	८८
२)	चौदह फेरे	९०
३)	भैरवी	९२
४)	कृष्णकली	९४
५)	स्मशान चंपा	९७
६)	सुरंगमा	९९
७)	चल-खुसरो घर आपने	१०१
८)	कालिंदी	१०४
९)	दो सखियाँ	१०६
१०)	स्वयंसिद्धा	१०८
११)	गैंडा	१०९
१२)	माणिक	१११
१३)	विषकन्या	११२
१४)	कैंजा	११५
१५)	रतिविलाप	११६
१६)	किशनुली	११९
१७)	कृष्णवेणी	१२०
१८)	रथ्या	१२२

चतुर्थ अध्याय : शिवानी के मनोवैज्ञानिक एवं वैयक्तिक विचारधारा से संबंधित उपन्यासों में नारी चेतना		१२६-२२०
१.	'गैंडा' लघु उपन्यास के नारी पात्र	१३६
(१)	राज :	१३६
(१)	ईर्ष्या-स्पर्धा, विद्रोहीभाव रखनेवाली	१३६
(२)	स्पष्टभाषिणी	१४०
(३)	सौंदर्यवान नारी	१४०
(४)	होशियार, दंभी, कामकाजी नारी	१४१
(५)	पति की उपेक्षा करनेवाली नारी	१४२
(६)	लग्नेतर संबंध-अैय्याश नारी	१४२
(७)	असत्यवादिनी	१४३
(८)	फूड-पोइजिनींग से मृत्यु	१४३
(२)	सुपर्णा :	१४४
(१)	शांत, सुखी-आतिथ्यभाववाली गृहिणी	१४४
(२)	अदर्शी सौत को पहचाननेवाली	१४४
(३)	व्यवहारकुशल नारी	१४५
(४)	बुद्धिमान नारी	१४५
(५)	दुःखी पत्नी	१४६
(६)	प्रतिशोध लेनेवाली नारी	१४७
(७)	प्रायश्चित करनेवाली नारी	१४७
(८)	त्यागी नारी	१४७
२.	'माणिक' लघु उपन्यास के नारी पात्र	१४८
(१)	नलिनी :	१४८
(१)	जिम्मेदारी उठानेवाली नारी	१४९
(२)	अच्छी आर्किटेकट	१४९
(३)	संयमी दीर्घदृष्टिवाली व्यवहारपटु नारी	१४९
(४)	सामाजिक रिवाज - रूढ़ियों में विश्वास	१५०

(५)	कठोर अनुशासिका	१५०
(६)	मातृत्व के गुणों से युक्त	१५१
(७)	कुंठाग्रस्त एकाकिनी नारी	१५१
(२)	दीना बाटलीवाला :	१५२
(१)	मोहक व्यक्तित्ववाली	१५२
(२)	सौंदर्यवान	१५२
(३)	धूर्त, ढोंगी, दिखावेवाली नारी	१५२
(४)	क्रूर, चोर, ठग, पैशेवर हत्यारिन	१५३
(३)	रंभा :	१५४
(१)	तेज तर्रार आजाद खयालोंवाली	१५४
(२)	सुखी, संतुष्ट गृहस्थी	१५४
(३)	स्पष्टवक्ता	१५४
(४)	जागृत नारी	१५५
(५)	मानसिक अंतर्द्वन्द्व से पीड़ित	१५५
३.	'किशनुली' लघु उपन्यास के नारी पात्र	१५६
(१)	काखी :	१५७
(१)	आदर्श गृहिणी	१५७
(२)	स्त्री रक्षा की हिमायती	१५८
(३)	समाज की रूढ़ियों को तोड़नेवाली	१५८
(४)	मातृत्वभाव वाली	१६०
(५)	पति के प्रति अपार श्रद्धा	१६१
(६)	पति का मान प्राप्त करनेवाली	१६१
(२)	किशनुली	१६२
(१)	उन्मादिनी और सुंदर	१६२
(२)	शास्त्रीजी के प्रति लगाव	१६३
४.	'कृष्णवेणी' लघु उपन्यास के नारी पात्र	१६५
(१)	कृष्णवेणी	१६५
(१)	श्याम–सुंदरी नारी	१६५
(२)	दिव्य दृष्टि प्राप्त नारी	१६६

(३)	लाड़ली बेटी	१६६
(४)	रूढ़ि परंपरा का विरोध करनेवाली	१६६
(५)	आदर्श प्रेमिका	१६७
(६)	स्पष्टवक्ता	१६७
(७)	जागृत और स्वच्छताप्रिय नारी	१६८
(८)	परिस्थितियों से लड़नेवाली	१६८
(९)	वफादार नारी	१६९
५.	'विषकन्या' लघु उपन्यास के नारी पात्र	१७०
(१)	कामिनी :	१७०
(१)	चंचल शरारती	१७०
(२)	कुशल ऍरहोस्टेस	१७१
(३)	उपेक्षा, कुंठा, ईर्षा से पीड़ित	१७१
(४)	मायाविनी शक्तिवाली	१७२
(५)	प्रेम में निराशा–उपेक्षा	१७२
(६)	प्रतिशोध–विद्रोह	१७३
(७)	प्रेमिकारूप	१७४
(८)	आत्ममंथन करनेवाली	१७४
(९)	संदेह की शिकार	१७५
(१०)	आत्मग्लानि	१७६
(२)	दामिनी	१७७
६.	'मायापुरी' उपन्यास के नारी पात्र	१७७
(१)	शोभा :	१७८
(१)	शिक्षा, पढ़ाई में होशियार	१७८
(२)	आशावादी – व्यवहारिक नारी	१७८
(३)	सुंदरता	१७८
(४)	मिलनसार सेवाभावी	१७९
(५)	हीनता – लघुता की ग्रंथि से पीड़ित	१७९
(६)	प्रस्ताहिम्मत – प्रेमिका	१८०

(७)	कर्तव्य वचनपालक आज्ञाकारिणी	१८१
(८)	सेक्रेटरी के पद पर	१८२
(२)	सविता	१८२
(३)	गोदावरी, मंजरी	१८३
७.	'कृष्णकली' उपन्यास के नारी पात्र	१८४
(१)	कृष्णकली :	१८४
(१)	अवैध संतान	१८४
(२)	उच्च शिक्षा प्राप्त	१८५
(३)	माता–पिता की तलाश	१८५
(४)	विद्रोहिणी स्पष्टवक्ता	१८६
(५)	सुंदरता	१८७
(६)	मॉडलिंग, रिसेप्शनीस्ट का व्यवसाय	१८८
(७)	प्रेमिका कली	१८८
(८)	प्रामाणिक कली	१८९
(९)	निराशा और जागृति	१९०
(१०)	मृत्यु	१९०
(२)	पन्ना	१९१
(३)	डॉ. रोजी पेट्रिक	१९२
८.	'चल खुसरो घर आपने' उपन्यास के नारी पात्र	१९३
(१)	कुमुद :	१९३
(१)	छोटे भाई–बहन से परेशान	१९४
(२)	पारिवारिक जिम्मेदारी उठाना	१९५
(३)	उच्च शिक्षा प्राप्त कामकाजी नारी	१९५
(४)	भीरु–डरपोक फिर भी स्पष्टवक्ता	१९६
(५)	माता का विश्वास और उपेक्षा	१९७
(६)	त्यागमयी नारी	१९८

६.	'स्वयंसिद्धा' लघु उपन्यास के नारी पात्र	१६६
(१)	माधवी :	१६६
(१)	रूढ़िवादी परवरिश	१६६
(२)	शादी	१६६
(३)	गलतफहमी, वहम, भ्रम की शिकार	१६६
(४)	पिताजी–मौसी से तिरस्कृत	२००
(५)	उच्चशिक्षा प्राप्त, स्वाभिमानी, आत्मनिर्भर	२०१
(६)	विद्रोही ईर्षालु निराशावादी	२०२
(७)	पति की मृत्यु, आत्महत्या	२०२
१०.	'कैंजा' उपन्यास के नारी पात्र	२०४
(१)	नंदी :	२०४
(१)	उच्च कुल में जन्म	२०४
(२)	उच्च शिक्षा प्राप्त–आत्मनिर्भर	२०४
(३)	विवाह–संबंधी संकीर्णता	२०४
(४)	सुरेश भट्ट की प्रेमिका के रूप में	२०५
(५)	नंदी का प्रेम	२०६
(६)	कुंठा, नैराश्य, विवशतायुक्त सुरेश	२०६
(७)	सेवाभावी नंदी	२०७
(८)	मातृत्वभाव वाली नंदी	२०७
(६)	त्यागमयी नारी	२०८
पंचम अध्याय : शिवानी के पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं राजनीतिक विचारधारा से संबंधित उपन्यासों में नारी चेतना		२२१-३१२
	आलोच्य उपन्यास	२२६
१.	'चौदह फेरे' उपन्यास के नारी पात्र	२२६
(१)	नंदी	२२६
(१)	सेवा भावी – कम पढ़ी–लिखी	२२६

(२)	सहनशीला नारी	२३०
(३)	तिरस्कृत नारी	२३१
(४)	मजबूर नारी	२३१
(५)	उपेक्षिता नारी	२३१
(६)	गंवार–फूहड़ नारी	२३२
(७)	पति के व्यवहार से दुःखी	२३४
(८)	पति पर अधिकार	२३४
(९)	त्यागी, आध्यात्मिक नारी	२३५
(२)	मल्लिका	२३६
(१)	कामकाजी नारी	२३६
(२)	सुंदर–कुशल सेक्रेटरी	२३६
(३)	मातृत्वभाववाली	२३७
(३)	अहल्या	२३८
(१)	अभावपूर्ण बचपन	२३८
(२)	उच्च शिक्षा प्राप्त	२३८
(३)	आधुनिक, आज्ञाकारिणी	२३९
(४)	पस्तहिम्मत प्रेमिका	२३९
(४)	सुभद्रा ताई	२४०
(१)	गृहिणी	२४०
(२)	मुँह–फट उद्दंड़ औरत	२४१
(३)	मातृत्वभाववाली नारी	२४१
(४)	हिम्मतवान – विद्रोही नारी	२४२
२.	‘श्मशान चंपा’ उपन्यास के नारी पात्र	२४३
(१)	चंपा	२४३
(१)	उच्च शिक्षा प्राप्त, उच्च विचार, सुंदर नारी	२४३
(२)	पारिवारिक जिम्मेदारी उठानेवाली	२४४
(३)	आज्ञाकारिणी पुत्री	२४४
(४)	सामाजिक संकीर्णता की शिकार	२४४
(५)	जागृत नारी	२४५

(६)	स्पष्टवक्ता, सावधान नारी	२४६
(७)	मधुकर से पुनः मिलन	२४६
(८)	परिस्थितियों से शरणागति	२४७
(२)	भगवती	२४८
(१)	परंपरागत भारतीय नारी	२४८
(२)	प्रायश्चित करनेवाली	२४८
(३)	परिस्थिति से समाधान	२४९
(४)	संतानों का भला चाहनेवाली	२४९
(५)	दुःखी नारी	२४९
(३)	कमलेश्वरी	२५०
(१)	नृत्यांगना की बेटी	२५०
(२)	मनोरोगिणी	२५०
(३)	गृहिणी–चिंतित माँ	२५१
(४)	समृद्ध नारी	२५१
(५)	उदार नारी	२५२
(४)	जुही	२५२
(१)	चंचल शरारती	२५२
(२)	अंतरजातीय विवाह और दुःखी	२५२
(३)	केब्रे डांसर, खूनी नारी	२५२
(५)	मयूरी	२५३
३.	‘कालिंदी’ उपन्यास के नारी पात्र	२५४
(१)	अन्नपूर्णा	२५४
(२)	कालिंदी	२५५
(१)	समृद्ध बचपन, उच्च शिक्षा प्राप्त	२५५
(२)	कर्तव्यपरायण, उच्च विचार	२५५
(३)	स्पष्टवक्ता, हिंमतवान	२५५
(४)	दहेज प्रथा का विरोध	२५६
(५)	पुरुषविरोधी, विद्रोही नारी	२५७
(६)	सेवाभावी नारी	२५८

(७)	जिद्दी–अभिमानी	२५९
(८)	माँ–मामा की सीख	२५९
४.	'सुरंगमा' उपन्यास के नारी पात्र	२६१
(१)	गौहर जान	२६१
(२)	राजलक्ष्मी	२६२
(३)	सुरंगमा	२६३
(१)	समृद्ध बचपन	२६३
(२)	माँ–पिता का वैमनस्य	२६४
(३)	उदास धीर–गंभीर / उच्च शिक्षा प्राप्त	२६४
(४)	आर्थिक अभाव / कामकाजी नारी	२६५
(५)	दो–रंगी मंत्री का संपर्क	२६५
(६)	स्वमानी, सुंदर, विवाह विरोधी	२६६
(७)	स्पष्टवक्ता – सावधान नारी	२६७
(४)	विनीता	२६७
(१)	उच्च शिक्षा प्राप्त	२६८
(२)	स्त्री–शिक्षा की हिमायती	२६८
(३)	महत्त्वाकांक्षिणी नारी	२६८
(४)	अंतरजातीय विवाह	२६८
(५)	अहम् वाली नारी	२६९
(६)	पति पर अधिकारभावना	२७०
(७)	मंत्री–पत्नी के रूप में	२७०
(८)	भावुक पत्नी	२७१
(९)	दुःखी पत्नी	२७२
(१०)	प्रतिशोध लेनेवाली नारी	२७२
५.	'रतिविलाप' लघु उपन्यास के नारी पात्र	२७३
(१)	अनसूया	२७४
(१)	उच्च शिक्षा प्राप्त, कलाकार	२७४
(२)	जिम्मेदारी उठानेवाली	२७४
(३)	मामा के द्वारा धोखा	२७४

(४)	विवाहिता अनसूया	२७५
(५)	समाधानकारी वृत्ति वाली नारी	२७५
(६)	विधवा अनसूया	२७६
(७)	कामकाजी नारी	२७७
(८)	सेवाभावी, कर्तव्यपरायण नारी	२७७
(९)	हीरा के षड्यंत्र की शिकार	२७७
(१०)	हिम्मतवान नारी	२७८
(११)	उदार, क्षमाशील नारी	२७८
(२)	हीरा	२७९
६.	'रथ्या' लघु उपन्यास के नारी पात्र	२८०
(१)	जीवंती बूआ	२८०
(२)	वसंती	२८१
(१)	अनाथ वसंती	२८१
(२)	मुग्धा किशोरी	२८१
(३)	शरारती चंचल	२८२
(४)	गुमशुदा नायिका	२८२
(५)	निराश प्रेमिका के रूप में	२८२
(६)	शारीरिक शोषण की शिकार	२८३
(७)	विमल से मिलन	२८४
(८)	दंभी-विमल का व्यंग्य	२८४
(९)	स्पष्टवक्ता वसंती	२८५
७.	'भैरवी' उपन्यास के नारी पात्र	२८६
(१)	राज-राजेश्वरी	२८६
(१)	नादान किशोरी	२८६
(२)	अनमेल विवाह	२८६
(३)	सहनशीला नारी	२८७
(४)	चेतनासभर कामकाजी नारी	२८८
(५)	मातृत्व	२८९

(२)	चंदन	२८६
(१)	शादी	२८६
(२)	भैरवी चंदन	२६०
(३)	सुंदर नारी	२६०
(४)	अपराध बोध से युक्त	२६०
(५)	अघोरी की चुंगाल से भाग जाना	२६१
(३)	मायादीदी	२६२
(१)	शिव की शक्ति बनने की इच्छा रखनेवाली	२६२
(२)	व्यसनी मायादीदी	२६३
(३)	ईर्षा–अधिकार भाव	२६३
(४)	मायादीदी की मृत्यु	२६४
८.	'दो सखियाँ' उपन्यास के नारी पात्र	२६४
(१)	सखुबाई	२६५
(१)	हिंमतवान–चेतनापूर्ण नारी	२६५
(२)	उच्चशिक्षा प्राप्त कामकाजी नारी	२६५
(३)	बेटे के द्वारा उपेक्षा	२६६
(४)	वृद्धाश्रम में आगमन	२६६
(५)	उच्चविचार, बुद्धिमान नारी	२६७
(६)	तटस्थ विचारोंवाली	२६८
(२)	आनंदी	२६८
(१)	सुघड़ स्वच्छताप्रिय नारी	२६८
(२)	पारिवारिक कलह	२६६
(३)	बेटियों के घर रहना	२६६
(४)	वृद्धाश्रम में आगमन	३०१
(५)	सहिष्णु भावनाशील नारी	३०१
(६)	लापरवाह बेटियाँ, मृत्यु	३०१

षष्ठ अध्याय : शिवानी के उपन्यासों में नारी चेतना : समग्र मूल्यांकन		**३१३-३६०**
१.	*“शिवानी के उपन्यासों में नारी चेतना” समग्र मूल्यांकन*	३१४
२.	*शिवानी की भाषा*	३५०
३.	*उपलब्धियाँ और सीमाएँ*	३५२
उपसंहार		**३६१-३६७**
ग्रंथानुक्रमणिका		**३६८-३७६**
१)	आधारग्रंथ सूची (उपन्यासकार शिवानी के उपन्यास)	३६९
२)	सहायक ग्रंथ सूची	३७१
३)	पत्र–पत्रिकाएँ	३७६
४)	शब्दकोश	३७६

प्रथम अध्याय

प्रकृति के शाश्वत और अनिवार्य स्वरूप : स्त्री और पुरुष

(अ) वैदिक काल
(ब) पुराणकाल
(क) थेरी गाथाएँ
(ड) संस्कृत महाकाव्य काल
(इ) मध्यकाल
(ई) ब्रिटीशकाल में महिलाओं की स्थिति
(उ) आधुनिक काल
(ऊ) इक्कीसवीं सदी में नारी

प्रथम अध्याय
प्रकृति के शाश्वत और अनिवार्य स्वरूप : स्त्री और पुरुष

(अ) वैदिक काल

सृष्टि से वृष्टि तक की सभी वस्तुएँ प्रकृति परक हैं । अपूर्णता से पूर्णता एवं शाश्वत व आनिवार्य स्वरूप प्रकृति और पुरुष के मेल से ही है नारी वास्तव में विधाता की अद्‌भुत कृति है । वैदिक काल में नारी को सर्वोच्च स्थान की प्राप्ति हुई है ।

'ऋग्वेद' मंत्रों का संकलन है । मंत्र द्रष्टा ही ऋषि है । ऋषिका शब्द का प्रयोग परवर्ती है । ऋग्वेद में स्त्री-पुरुष दोनों के लिए ही 'ऋषि' शब्द का प्रयोग किया गया । कृतित्व के आधार पर ऋषियों के भी दो वर्ग हैं, एक तो एकाकी - दूसरे पारिवारिक । एकाकी ऋषि वे हैं । जिन्होंने स्वयं मंत्र रचना की, और पारिवारिक में अन्य मंत्र द्रष्टा भी हैं । इस दृष्टि से देखा जाए तो अदिति, अदिति दाक्षायणी, उर्वशी, गोधा, बहूब्रह्मजाया, रोमशां, वागाम्भृणी, श्रद्धा, कामायनी, सरमा देवशुती एवं सूर्या-सावित्री जुहु - एकाकी ऋषिकाएँ हैं ।[१]

वैदिक काल में नारी को सर्वोच्च स्थान की प्राप्ति हुई है । मैत्रेयी, गार्गी जैसी विदुषी नारियों ने अपने जीवन को एक यज्ञ की भाँति जिया है । वेदों के सहस्त्रों मंत्रों में नारी की गरिमामयी छवि को अंकित किया गया है । ऋग्वेद में स्त्री को यज्ञ में ब्रह्मा का स्थान ग्रहण करने योग्य स्वीकार किया गया है ।

सरस्वती, देवयन्तो, हवन्ते, सरस्वतीमध्वरे तायमाने,
सरस्वती सुकृतो अहुयन्त सरस्वती दाशुषे-वार्यदात् ।''[२]

देवी गुणों के इच्छुक मनुष्य, देवी सरस्वती का आह्वान करते हैं, यज्ञ के विस्तारित होने से, वे देवी सरस्वती की स्तुति करते है । श्रेष्ठ पुण्यात्माओं के द्वारा देवी सरस्वती का आह्वान करने से वे दानियों की आकांक्षाओं को परिपूर्ण करती हैं ।

अर्थात् दिव्य गुणों की कामना करनेवाली, विदुषी देवी को हम आमंत्रित करते हैं । यज्ञों के अवसर पर सरस्वती रूपी सुगठित देवी को हम बुलाते हैं । उत्तम कर्मवाली सन्नारी को हम आहूत करते हैं । वह ज्ञानशील व्यक्तियों को उत्तम ज्ञान देती है ।

वैदिक संहिताओं में नारी के गौरव तथा महत्त्व को सर्वत्र प्रस्थापित किया गया है तथा उस विदुषी को गृहस्थ आश्रम की एक धुरी के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है । वेदों में नारी को गृहस्थी की गुरूत्तर धुरा को वहन करने की प्रेरणा तो दी ही है, समय पड़ने पर स्त्री को वीर भावनाओं से युक्त होकर प्रचंड कर्मों में लग जाने का भी आदेश दिया है । ऋषिका–शची पौलोमी, वेद की इस ऋचा की ओजस्वी वाणी स्त्री की गरिमा को प्रकट करती है ।

''उदसौ सूर्यो अगदुध्यं माम को भगः ।
अहं तदिद्‌का पतिमभ्यसाक्षि विषासहिः ।।''[३]

द्युलोक में सूर्यदेव का उदय मेरे लिए ही है – उदय के साथ–साथ मेरे सौभाग्य की भी वृद्धि हो रही है । सूर्य की शक्ति से ही मैं अपने पति देव को प्राप्त करके विरोधियों को पराजित करने वाली, तथा सहनशीला बनी सपत्नियों को हरा दिया ।

''अहं केतुरहं मूर्धाहमुग्रा विवाचनी ।
ममदेनु क्रतुं पतिः सेहानाया उपाचरेत ।''[४]

स्त्री स्वीकार करती है तथा वह पूरे आत्म सन्मान के साथ कहती है मैं केतु (ध्वजा) तुल्य हूँ, समाज की मूर्धास्थानीय हूँ, तेजस्विनी बनकर सभाओं में

भाषण देनेवाली हूँ । मेरा पति, मेरी इच्छा, ज्ञान और कर्म के अनुरूप आचरण करता है ।

वैदिक स्त्री सुमंगला है । वह केवल स्वयं तक ही सीमित न रहकर अपने पति व संतान की शुभेच्छा एवं उन्नति की पराकाष्ठा तक पहुँचती है । उसका हृदय एवं मन सुकामनाओं एवं सुभावनाओं से परिपूर्ण है । वह 'स्वयं' है लेकिन केवल 'स्वयं' नहीं है । वह 'स्वाभिमान' से ओतप्रोत है परंतु अभिमान की सीमारेखा तक पहुँचने से पूर्व ही वह अपने मर्यादित संयम के गौरव को संभाल सकती है । इसीलिए वह पूज्य है ।

प्रत्येक–वस्तु में कारण निहित होता है । इस स्त्री के पूज्या होने में भी प्रमुख कारण है, उसका मर्यादित होना । मर्यादा में रहकर कोई भी कार्य सहनीय होता है... तथा मर्यादा की रेखा से बाहर जाकर वही कार्य अशोभनीय बन जाता है । वैदिक काल की यही स्त्री सशक्त है । ''उपनिषदों के समय की गार्गी जनक की सेना में याज्ञवल्क्य के दर्शन एवं अध्यात्म पर गंभीर संवाद करती है । गार्गी का उपनाम वाचक्वनी है । वे वचक्तु ऋषि की विदुषी पुत्री है । परंतु अनेकों विद्वानों द्वारा यह स्वीकार किया गया है कि वचकतु की पुत्री होने के कारण गार्गी का उपनाम वाचक्वनी नहीं पड़ा वरन् अपने समय की अत्यंत विदुषी एवं प्रखर वक्ता एवं वाद–विवाद में अप्रतिम योग्यता प्राप्त करने के कारण उनका नाम वाचक्वनी पड़ा । यहाँ पिता के कारण पुत्री को नाम व यश की प्राप्ति नहीं हुई वरन् पुत्री के कारण पिता को यश की प्राप्ति हुई ।

गार्गी के जैसी ही मैत्रेयी का प्रसंग भी उपनिषद में प्राप्त होता है । महिला विदुषियाँ मोक्ष अथवा अमरत्व प्राप्त करने तक के लिए सचेष्ट थीं । उपनिषद की महिला सांसारिक सुखों को त्यागकर आत्मज्ञान या ब्रह्मज्ञान की और उत्कृष्ट दिखाई देती है ।

याज्ञवल्क्य की एक पत्नी मैत्रेयी तथा दूसरी पत्नी का नाम कात्यायनी है । दोनों पत्नियों में अत्यंत विरोधाभासी स्वभाव निहित है । मैत्रेयी जहाँ विदुषी व दार्शनिक है वहीं दूसरी और कात्यायनी घरेलू, बुद्धि की अल्पभाषी स्त्री है । जब याज्ञवल्क्य को वैराग्य उत्पन्न हुआ तो उन्होंने अपनी संपत्ति को दो हिस्सों में बाँटने का निश्चय किया । कात्यायनी चुप रही परंतु विदुषी दार्शनिक पत्नी मैत्रेयी ने पूछा कि क्या संसार की समस्त संपत्ति मुझे अमरत्व दिला सकती है ? याज्ञवल्क्य का उत्तर था 'नेति' अर्थात् कभी नहीं, ''धन से सब प्रकार के सुख मिलते हैं, लेकिन अमरत्व तो नहीं मिल सकेगा ।'' मैत्रेयी ने कहा कि ''अहं तेन कुर्याय देनाहं ना मृत श्याम'' अर्थात् उस वस्तु का मैं क्या करूँ जो मुझे अमरत्व प्रदान न कर सके, मुझे अमरत्व प्राप्त करने का मार्ग बताये ।''[५]

(ब) पुराणकाल

पुराण साहित्य भी स्त्री उदाहरणों का खजाना है । पुराण अठ्ठारह हैं तथा वे उपनिषदों के कई गुना बड़े हैं । मदालसा भी अपने समय की अत्यंत विदुषी स्त्री हुई है । उनकी सोच, उनका चिंतन एवं दर्शन बिलकुल ही भिन्न था । अपने पुत्र अर्लक को स्वयं मदालसा ने ही धर्म–दर्शन नीति एवं वाग्व्यवहार की शिक्षा प्रदान की और मदालसा एवं ॠतुध्वज के इस पुत्र अर्लक ने ही बहुत उन्नति की ।

यदि गंभीरता पूर्वक चिंतन किया जाय तो हम देखेंगे कि अधिकांशतः आदरणीय एवं गरिमामय शब्द स्त्रीलिंग के हैं । भाषा स्वयं में स्त्रीलिंग है । वाणी के बारे में तो कितनी ही बातें समक्ष आती हैं । ॠग्वेद से लेकर कबीर तक वाणी की सुघडता के बारे में कितनी ज्ञान से ओतप्रोत बातें कही गई हैं ।

कबीर का यह दोहा तो सर्वविदित है ही, ऐसी बानी (वाणी) बोलिए, मन का आपा खोय, औरों को शीतल करे, आपहुँ शीतल होय ।''[६]

यह स्त्रीलिंग 'वाणी' न केवल स्त्री वरन् पुरुष के लिए भी उतनी ही सुखद एवं शीतल है, जितनी स्त्री के लिए । जीवन की गाड़ी के पहिए स्त्री एवं पुरुष दोनों के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है । हमने ऊपर देखा कि स्त्री को कितना महत्त्वपूर्ण स्वीकार किया गया । आगे भी हम कुछ अन्य स्त्रियों के प्रति समादार ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करेंगे, परंतु एक बात बीच में यह कहने की आवश्यकता महसूस हो रही है कि स्त्री जननी है तो पुरुष जनक । दोनों के योग से ही इस सृष्टि की रचना संभव है । सर्वविदित है कि पुरुष पिता के सहयोग एवं समभाव से ही स्त्री माँ के गर्भ से सृष्टि के नायक पुरुषों ने जन्म लिया तथा विश्व को एक नवीन, दिशा–दी । उन्होंने स्त्री के व्यक्तित्व को समुचित आदर प्रदान किया एवं गरिमामय पद पर प्रतिष्ठित किया । वास्तव में प्रकृति एवं पुरुष दोनों ही एक–दूसरे के पूरक हैं, दोनों एक–दूसरे के बिना अधूरे हैं । परंतु जब पुरुष प्रत्येक क्षेत्र में स्त्री पर हावी होने का प्रयास करता है तब परेशानी पैदा होती है । जब स्त्री केवल भोग्या बनती है तब मानसिक तनाव की शिकार होती है, जब कठपुतली की भाँति पुरुष के हाथ की डोरी पर नाचती है । तब से कचोट होती है जब वह समर्थ होने के बावजूद भी अपने निर्णय स्वयं नहीं ले पाती । तब उसे अपनी निरीहता पर बेचारगी का अहसास होता है ।

''पुरुष विष्णु है – स्त्री लक्ष्मी । पुरुष विचार है स्त्री भाषा । पुरुष धर्म है स्त्री बुद्धि । पुरुष तर्क है स्त्री भावना । पुरुष रचयिता है, स्त्री रचना । पुरुष मंत्र है, स्त्री उच्चारण, पुरुष धैर्य है, स्त्री शांति... ।''[७]

पुरुष प्रधान समाज तो सदियों से है । हमने कुछ चर्चा वैदिक युग की की है । इस पुरुष समाज ने उन्हें गौरव दिया व सम्मानित पद प्राप्त कराएँ । ऋषिकाएँ, ऋषि पत्नी न होकर वे विदुषी स्त्रियाँ थीं । जिन्हें वेदों की

ॠचाएँ बनाने का गौरव प्राप्त हुआ । ''प्राचीनतम ग्रंथ ॠग्वेद में ॠषियों के साथ–साथ अनेक ॠषिकाओं के उल्लेख भी मिलते हैं । महत्त्वपूर्ण बात यह है कि दोनों के संबंध में विवरण बराबर है । ॠग्वेद के प्रथम मंडल में रोमशा (सू. १२६) लोपामुद्रा (सु. १७६) एवं ममता(सू. १०) का उल्लेख है, दूसरे–तीसरे, और चौथे मंडल में किसी ॠषिका का नाम नहीं है । पंचम मंडल में विश्वारा (सू. २८) आठवें मंडल में अपाला (सू. ६१) एवं शाश्वती (सू. ३४) के मंत्र है । दशम मंडल में सबसे अधिक ॠषिकाएँ सम्मलित की गई हैं । श्रद्धा कामायनी (सू. १५१) यमी वैवस्ती (सू. १५४) धोषा (सू. ३६–४०), वाक् (१२५) एवं सूर्या (१०८२) की रचनाएँ हैं । ये सब स्त्री ॠषिकाएँ हैं ।''[८]

विदुषी स्त्रियों के अतिरिक्त घोषा, अपाला तथा सूर्या सावित्री आदि कई विदुषी स्त्रियों के द्वारा रचित सेंकड़ों मंत्रों को बड़े सम्मान सहित वेदों में सम्मिलित किया गया । ऐसी गुणवंती स्त्रियों को पुरुषों ने न केवल सम्मान प्रदान किया तथा अपने समक्ष बैठाया वरन् उन्हें उनके उत्तर के अनुरूप उच्च पद भी प्रदान किये गये । यहाँ पर सूर्या सावित्री के बारे में चर्चा करना उचित रहेगा । इन्होंने विवाह सूक्त की रचना की । उनके द्वारा रचित ४७ मंत्रों में से आज भी कई मंत्र विवाह के अवसर पर दोहराये जाते हैं । वर–वधू को शुभाशीर्वाद देते समय सूर्या सावित्री द्वारा रचयित मंत्र ही पढ़ा जाता है ।

सुमंङ्गलीरियं वधूरिमां समेत पश्यत ।
सौभाग्यमस्यै दत्वायाथास्तं वि परेतन ।।[९]

(यह नववधू मंगल चिह्न से सुसज्जित है । आर्शीवाद देने वाले सब आये, उसके दर्शन करें, इस विवाहिता को उत्तम सौभाग्यवती होने की शुभाशीष देने के बाद, सब अपने अने घर जायें)

सूर्या–सावित्री ने अपने पिता की पसंद के सोम से विवाह न करके पूषा से विवाह किया ।

दो ऋषिकाओं का व्यक्तित्व अलग से उभरकर सामने आता है । वीरता की दृष्टि से मुदगल पत्नी जिसने केवल एक बैल को गाड़ी में जोतकर चोरों का पीछा किया और चोरी गयी गाएँ वापस लौटायी । और दूसरी है – रोमशां जो अपने पति की गर्वोक्तियों के बाद कहती है – मेरे कार्यों को (काम को) अपने से छोटा मत समझो संभवतः यह नारी अस्मिता की प्राचीनतम आवाज है ।”[१०]

(क) थेरी गाथाएँ

ऋग्वेद के बाद, महिला लेखन के नमूने हमें थेरी गाथा के रूप में मिलते हैं । प्रथम भारतीय नवजागरण काल ई. पू. ४०० वर्ष माना जाता है । इस समय तक वैदिक धर्म कर्मकांड की सीमा तक पहुँचकर समाज की चुनौती को स्वीकार करने में असमर्थ हो चुका था ।”[११]

थेरी गाथाएँ ५२२ गाथाओं का संकलन है । जिसमें लगभग सौ थेरियों के उद्गार हैं । थेरी गाथा में विभिन्न वर्गों एवं वर्णों की महिलाएँ शामिल हैं, जिन्होंने भिक्षुणी बन अपने जीवन के संचित अनुभवों को इन गाथाओं में गाया है । खेमा, सुमना, शैला और सुमेधा – कौशल – मगध और आलवी के राजवंशों की महिलाएँ थीं । महाप्रजापती, तिष्या, अभिरूपा, नंदा, सुंदरी, जेंती, सिंहा, घीरा, मित्रा, भद्रा, उपथमा और अन्यतरा, उत्तमा, चाला, उपचाला, शिशूपचाला, रोहिणी, सुंदरी, शुभा, भद्रा, कापिलायिनी, मुक्ता, नंदा, सकुला, चंदा, गुप्ता, दन्तिका और सोमा, ब्राह्मण वंश की थीं । गृहपति और वैश्य–वर्ग की महिलाओंमें, पूर्णा चित्रा, श्यामा, उर्वरी, शुक्ला, धम्मदिन्ता, उतमा, भद्रा, कुंडलकेशा, पटचारा, सुजाता और अनोपमा के नाम लिये जा सकते हैं ।

अडदजासी, अभयमाता, विमला और अम्बपाली, गणिकाएँ है । सुभा सुतार की पुत्री है – और पूर्णिका दासी की ।

थेरी गाथाओं की अपनी पहचान है, यह पहचान अनेक मुखी है । सबसे पहली पहचान स्त्री होने की है । इसकी शुरुआत बाह्य प्रकृति के लगाव से होती है । थेरी गाथाएँ अपने भीतर की यात्राएँ हैं, जिसमे उनकी पूर्व स्मृतियाँ भी जुड़ी हैं ।''[१२]

(ड) संस्कृत महाकाव्य काल

रामायण–महाभारत युग, अर्थात् महाकाव्य युग की नारी भी कम शक्तिशाली एवं सम्माननीया नहीं है । दोनों महाकाव्य वैदिक युग की परंपरा को लेकर ही चलते हैं । मंथरा, कैकेयी तथा दशरथ कैकेयी प्रसंग इस तथ्य के परिचायक हैं कि स्त्रियों में विलक्षण तर्कशीलता होती है । रामायण की कैकेयी प्रसंग में अवश्य–दुर्घटना रोपण प्रदर्शित होता है । परंतु कैकेयी की तर्कशक्ति स्त्री की समर्थता का भी प्रदर्शन करती है । मंदोदरी का अपने पति रावण को समझाना, सुलोचना का राम से तर्क–वितर्क करना, सभी स्त्री की समृद्ध, परिकृष्त मानसिकता को प्रर्दशित करते हैं ।

महाभारत की स्त्री भी उसी वेदिक परंपरा से ओतप्रोत है – अर्थात् बुद्धिशालिनी है । यों तो समयानुसार अनेकों बदलाव आते रहते हैं । इसीलिए प्रत्येक युग में बदलाव दिखाई देते हैं । महाभारत स्वयं में संपूर्ण साहित्य है । सावित्री–सत्यवान का उपाख्यान आदि अत्यंत महत्त्वपूर्ण घटनाक्रम है ।

''नारदजी ने जब सावित्री सत्यावान को बताया कि एक वर्ष के बाद उसका (सत्यवान) आयुष्य समाप्त होता है – दूसरा वर ढूंढो ।'' सावित्री ने उत्तर दिया कि ''मैंने जिसका वरन किया है वो भले ही अल्पायु हो की दीर्घायु पर वहीं ही मेरा पति होगा, प्रथम मन से निश्चय करके, मैंने वाणी से कहा है – वहीं निश्चयात्मक है ।''[१३]

सावित्री अपनी इच्छाशक्ति एवं दृढ़ विश्वास के बल पर असंभव को संभव करने के लिए सत्यवान से विवाह कर लेती है । इस समस्त कथा में सावित्री ही सर्वत्र छाई रहती है । उसकी चतुराई, विवेक, संवाद वाग्मिता पूरे घटनाक्रम पर हावी रहती है । सावित्री बारंबार दोहराती है कि जहाँ मेरा पति है, वहीं मेरी गति है ।

सावित्री यम को कहती है कि आपने मुझे पुत्र प्राप्ति का वरदान दिया – मगर बिना पति के वो पूर्ण नहीं होगा, आप मेरे पति को जीवित कीजिए । पति बिना पतिव्रता स्त्री का जीवन निरर्थक है । सावित्री पर प्रसन्न होकर, सत्यवान को जीवित करके, यमराज चारसो साल का आयुष्य किर्ती का वरदान देकर चले गये ।"[१४]

सत्यवती, गांधारी, कुंती, द्रौपदी एवं उत्तरा भी निश्चय ही श्रेष्ठ नारीत्व की पहचान है । गांधारी की वाक्पटुता एवं चरित्र के पहलु को इस दृष्टांत से पहचानने की चेष्टा करते हैं । दुर्योधन ने जब अपने पिता धृतराष्ट्र से कहा कि वे फिर से युधिष्ठिर को जूआ खेलने का आदेश भेजे । पुत्र मोह से भ्रमित पिता ने यह त्रुटिपूर्ण कार्य किया, परंतु गांधारी ने अपने पति को बड़ें कटु शब्दों में चेतावनी दी ।

गांधारी ने पुत्र दुर्योधन को युद्ध के मार्ग से जाते हुए रोका, पुत्र ! तू मेरी बात सुन ले, तुम समझोगे ऐसी मुझे श्रद्धा नहीं है, क्योंकि स्वार्थवृत्ति से तुझमें धर्म के दर्पण में देखने की क्षमता नहीं है । कर्ण, दुःशासन अपने–अपने स्वार्थ से तुझे साथ देते हैं । उसे तेरे कल्याण में रस नहीं है । अपने स्वार्थ के लिए युद्ध खेलने अति तत्पर है ।

जिसे तुम राजधर्म कहते हो, वह राज्य से किया हुआ महा अधर्म है । द्रौपदी के संग किया अधर्म आचरण के बाद मेरा जीवन दुःखी हो गया है । धरती फट क्युं नहीं गई । तुम्हारी यह अधर्म–इच्छा कामना तुम्हारे अधर्मी–दुराचारी मानस की प्रतिध्वनि है ।[१५]

स्पष्ट है कि पत्नी न केवल पत्नी वरन् आवश्यकता पड़ने पर प्रत्येक क्षेत्र में पति की सहभागिनी दृढ़ विश्वासी, पति की गुरु भी बन सकती है । पति पुत्र को सुमार्ग पर ले जाने का प्रयत्न भी करती है । यह भी सत्य है कि स्त्री किसी भी युग की क्यों न हो समय आने पर वह अपने अधिकार के लिए दृढ़ बनी रही है ।

स्त्री बुद्धिहीन पति को भी जिस प्रकार विद्वान बनने पर विवश कर देती है, यह कालिदास के विद्वान बनने की घटना से सहज ही प्रत्यक्ष हो जाता है । महापंडिता विद्योत्तमा से अपमानित पराजित होकर ब्राह्मणों ने महामूर्ख कालिदास का विवाह विद्योत्तमा से करा दिया । विद्योत्तमा को जैसे ही मधुयामिनी से पूर्व ही पति की मूर्खता के बारे में ज्ञात होता है, वह क्रोध में भरकर पति को घर से बाहर फेंक देती है । माता काली की कृपा से कठिन परिश्रम द्वारा कालिदास जैसा महामूर्ख पंडित बनता है । तथा अपने आप को पत्नी के समक्ष खड़ा होने योग्य बनाने के पश्चात् ही वह पत्नी के पास आते है । विद्योत्तमा पूछती है – को भवान् ? के उत्तर में कालिदास 'अहं कालिदासोविम्' सुनकर पत्नी क्रोधित हो जाती है वह फिर से पूछती है ''अस्ति कश्चित् वाग् विशेष? (वाणी में कुछ विशेषता आई कि नहीं ?) इसके प्रत्युतर में इस महाकवि ने जो उत्तर दिया वह ग्रंथों के रूप में समस्त विश्व के समक्ष आज भी गौरव ग्रंथों के रूप में सुप्रतिष्ठित है – 'कुमारसंभवम् – मेघदूतम्, रघुवंशम्, तथा ऋतुसंहारम् । पत्नी पति की मार्गदर्शिका एवं गुरु के रूप में सुप्रतिष्ठित हुई है ।

तुलसीदास की पत्नी रत्नावली के धिक्कार से राम कथा का जन्म हुआ । तुलसीदास के बाद सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' को उनके स्तर का कवि माना गया है । 'राम की शक्ति पूजा' एवं 'तुलसीदास' जैसी रचनाओं के रचयिता को पहले बिलकुल भी हिन्दी का ज्ञान नहीं था, उन्हें उनकी धर्मपत्नी ने भाषा की शिक्षा दी । सन् १९३६ में जब निराला ने अपनी 'गीतिका' का

समर्पण लिखा तब अपनी पत्नी–मनोहरा देवी को अपनी हिन्दी काव्यसाधना की प्रेरणा के रूप में स्वीकार किया । मीरा हो या महादेवी वर्मा सब ने अपने आपको एक सशक्त स्त्री के रूप में प्रतिष्ठित किया है ।

नारी को अमरकोष कार ने ४३ पर्यायवादी शब्दों से अलंकृत किया है । स्त्री, पोषित, अबला, योषा, धोषा, सीमन्तिनी, वधू, प्रतीपदर्शिनी, वामा, वनिता, महिला, अंगना, भीरु कामिनी, वामलोचना, प्रमदा, मानिनी, कांता, ललना, नितंम्बिनी, सुंदरी, रमणा, रामा, कोयना, भामिनी, चंडी, वरारोहा, मतकामिनी, वरवर्णिनी, वृतामेषिका, महिषी, भोगिनी, पत्नी, सहधर्मिणी भार्या, कुटुम्बिनी पुरन्ध्री, अध्यूदा, अधिमिया, स्वयंवरा, पतिवरा, कुलपालिका ।[१६]

इस प्रकार विविध शब्दालंकारों से अलंकृत नारी की अस्मिता को गौरव प्रदान किया गया तथा उसके विविध स्वरूपों को सराहा गया । माता के रूप में उसे आदर प्रदान कर प्रथम गुरु की उपाधि से विभूषित किया गया । माता के रूप में नारी ने वंशवृद्धि की तथा परिवार को सशक्त बनाया । माता के रूप में प्रथम गुरु को श्रद्धा, स्नेह, विश्वास, करुणा, त्याग व ममता की मूर्ति के रूप में सराहा गया । माता का रूप सदैव ही आदरणीय निंदा मुक्त रहा है ।

चरित्र निर्माण का मूलाधार माता को ही स्वीकार किया गया । आदिकाल से लेकर आद्यपर्यंत एक उच्च पद पर आसीन रखा गया । स्त्री का कोई भी रूप कुछ मुटिपूर्ण हो सकता है परंतु माता का रूप सदा ही अपने बालकों के दिल रहता है । स्त्री को संप्रयास माता का पद संभालने की आवश्यकता नहीं होती वह माँ है जो प्रकृति प्रदत्त है । नारी की उपमा धरती से की जाती है । नारी भी अपनी संतानों का भार अपने में समाए रखती है । किंवदंती है कि दस बालक अपनी एक माँ का बोझ नहीं संभाल पाते जबकि एक माँ अपनी दस संतानों का बोझ हँसते–हँसते संभाल लेती है । कभी–कभी यह बात सुनकर मन असंयमित हो उठता है कि आज की स्त्री के चरित्र व

व्यक्तित्व पर कुठाराघात होता है । समय परिवर्तनशील है, यह तो वास्तविकता है, परंतु आवश्यक नहीं कि परिवर्तनशीलता "माँ" की परिभाषा ही बदल डाले ।

यदि ईश्वर के मन में नर एवं नारी के प्रति कोई भेदभाव की भावना होती तो वह नारी को केवल एक मशीन की ही भाँति पैदा करता, न कि एक मनुष्य की भाँति । जब हम मानव अथवा प्राणी की बात करते हैं । तो उस में सभी आत्माओं का समावेश हो जाता है ।

Human being उसमें स्त्री–व–पुरुष दोनों सम्मिलित होते हैं । फिर आखिर ऐसी क्या स्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं कि नर–नारी में भेदभाव उत्पन्न होने लगता है । एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न है कि यदि समाज केवल पुरुष बल पर ही चल सकता तो आखिर स्त्री की आवश्यकता समाज में क्यों और किसलिए है ?

सर्वविदित है कि माता के रूप में नारी का सम्मान इसीलिए श्रेष्ठ स्तर पर है क्योंकि नारी के बिना सृष्टि की रचना ही संभव नहीं है । पुरुष श्रेष्ठ हो अथवा अधम नारी कोख से ही उत्पन्न होता है । वह राजा हो अथवा रंक माँ की कोख से ही अंकुरित होता है, और एक नाजुक पौधे के समान पोषित–पल्लवित होता है । यदि माँ ही नहीं है तो सृष्टि का कोई भी प्राणी किस प्रकार अपनी पहचान बना सकता है ? इस प्रकार माता "मातृत्व" पुरुष की भाँति एक स्वतंत्र व्यक्तित्व की, अस्तित्व की अधिकारिणी है ।

या देवी सर्वभूतेषु, श्रद्धा रूपेण संस्थिता,

नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमो नमः ।[१७]

स्त्री को विद्या – धन – संतुष्टि, बुद्धि, शक्ति, आदि अनेकों अलंकारों से विभूषित किया है । यह स्त्री–दुर्गा माँ है जो समस्त प्राणियों में विभिन्न प्रकार से विद्यमान है । इस दुर्गा माँ की पूजा अर्थात् स्त्री की पूजा तभी प्रारंभ की गई होगी जब उसकी आवश्यकता महसूस की गई होगी ।

भारतीय सभ्यता के उषाकाल का सूत्रपात प्रागैतिहासिक काल में भारतीय संस्कृति के अभ्युदय को माना जा सकता है । सिंधु घाटी से प्राप्त अवशेषों से तत्कालीन मानव समाज की प्रगति का उल्लेख प्राप्त होता है । आधुनिक युग तक पहुँचते–पहुँचते नारी के मार्ग में जितने ही प्रस्तर पड़ाव आये ।

''द्वितीय भारतीय नवजागरण के साथ–साथ प्राकृत और संस्कृत की कुछ कवयित्रियों के छींटे साहित्येहास पर पड़े हैं । इसी युग में रामायण–महाभारत को अंतिम रूप प्रदान किया गया । स्मृतियों की रचना हुई, लघु उपनिषद एवं पुराणों को स्थान मिला । विभिन्न वर्गों को समाज में निर्धारित स्थान दिया गया, अवतारवाद की धारणा का विकास हुआ ओर एक बार फिर ब्राह्मण धर्म को प्रभुत्व प्राप्त हुआ । इस काल की विशेषता थी– गंभीर राजनीतिक बौद्धिक धार्मिक और कलात्मक सक्रियता । नव जागरण का प्रमुख संवाहक भाषा बनी संस्कृत भाषा । छह ब्राह्मण दार्शनिक संप्रदायों का जन्म हुआ, कालिदास, भारवि, बाणभट्ट, कुमारदास, दंडी और विशाखदत्त । मथुरा विदिशा सारनाथ और नालंदा की कला अस्तित्व में आई । गुप्तकाल तथा उसके बाद की तीन शताब्दियों में भारतीय जनता की संरचना में तेजी से परिवर्तन आया । साथ–साथ संप्रदायों तथा हिन्दू, बौद्ध और जैन दर्शन प्रणालियों की आश्चर्यजनक वृद्धि हुई । इस प्रकार नवब्राह्मण, नवजागरण का उद्देश्य था दुःखकातर–पृथ्वी पर सुव्यवस्था स्थायित्व, दारुण मलेच्छों को पराजित कर जन साधारण की सर्वोन्मुखी उन्नति और समृद्धि ।''[१८]

''गुप्त काल के समाप्त होने तक सामन्तीकरण एवं सांस्कृतिकीकरण की प्रक्रिया पूर्ण हो चुकी थी । संस्कृत भाषा को साहित्यिक प्रभुत्व प्राप्त था, किन्तु अपभ्रंश भाषाएँ विकसित हो रही थी । प्राकृत काल (१–५५० ई.) संस्कृत कविता का स्वर्ण युग है, 'गाथा सप्तशती' में लगभग सोलह कवयित्रियों की रचनाओं के उल्लेख टीकाकारों ने किये है । लगभग सभी कवयित्रियाँ सुशिक्षित राज–घरानों से संबंध रखती हैं ।''[१९]

(इ) मध्यकाल

"उतर भारत में हर्षवर्धन (सन् ६०६–६४७ ई.) और दक्षिण में पुलकेशिन द्वितीय (सन् ६१०–६४२ ई.) के बाद भारतीय उपमहाद्वीप में केन्द्रीय सत्ता कमजोर हो गयी थी । तेरहवीं सदी का पूर्वार्द्ध, दिल्ली पर सल्तनत सत्ता का क्रमशः मजबूत होने का समय है । हुमायु ने (१५५५ ई.) ने मुगल शासन को सुदृढ़ किया । उतर भारत खास तौर पर हिन्दी भाषी प्रदेश उनके सबसे अधिक प्रभावित हुआ ।"[२०]

हर्षवर्धन के साथ उसकी बहन राज्यश्री शासन में सहयोग करती थी – और दरबार पर उसकी काफी पकड़ थी ।

मुसलमान राजघरानों में भी स्त्रियों की पकड़ राजनीति और सत्ता पर थी । रजिया सुल्तान का नाम तो प्रसिद्ध ही है जिसने गद्दी पर बैठते ही सारी शक्ति अपने हाथों में ले–ली थी । जलालुद्दीन खिलजी की पत्नी मलेकजहाँ ने अपने दामाद अलाउद्दीन खिलजी को अपने नियंत्रण में रखने का प्रयास किया था । इस समय हिन्दू मुस्लिम विवाह की शुरुआत भी हो चुकी थी । स्वयं अलाउद्दीनने अपना प्रथम विवाह कमला देवी और दूसरा विवाह देवगिरि के शासक रामचन्द्र देव की पुत्री से किया था । फीरोज तुगलक की माँ एक हिन्दू महिला थी ।[२१]

मुगल काल में भी यह परंपरा चलती रही । कहा जाता है कि तैमूर की सेना में स्त्रियाँ भाला, तीर और तलवार चलाती थीं । बाबर की माँ कुतलुक निगार खानम सदैव अपने पुत्र के साथ रही और उसकी पत्नी महीम बैगम, उसकी मृत्यु के बाद भी राजनीति में भाग लेती रही । बाबर की पुत्री गुलबदन बेगम सबसे शिक्षित महिला थी, जिसने 'हुमायूँनामा' लिखा ।[२२]

सोलहवीं शताब्दी से लेकर १८वी शताब्दी तक का समय मध्यकाल में रखा जा सकता है । इस काल में महिलाओं की स्थितियों का जितना पतन हुआ उतना कभी नहीं हुआ ।

इस युग के स्मृतिकारों ने बार–बार इस बात पर जोर दिया कि पत्नी के लिए सबसे बड़ा धर्म पति की सेवा है ।[२३]

मत्स्यपुराण का कहना है कि ''पत्नी को सुधार ने के लिए उसे रस्सी से अथवा बाँस की फराटीं से पीटा भी जा सकता है । किन्तु चोट सिर पर या पीठ पर नहीं होनी चाहिए ।''[२४]

विधवा महिला की स्थिति में यह परिवर्तन अवश्य हुआ था कि उन्हें परिवार की संपत्ति में हिस्सा मिलने लगा था । इन सबके अतिरिक्त महिलाओं की स्थिति उत्तरोत्तर खराब होती गई । अतः धर्म की दृष्टि से वे शुद्रवत हो गई । महिलाओं के विवाह की उम्र ८ से १०, शिक्षा नहीवत् थी, उन्हें पूर्ण रूप से पति पर आश्रित रहना पड़ता था । ''माता का स्थान सन्माननीय था ।[२५]

११वीं शताब्दी के प्रारंभ से ही भारतीय समाज पर मुसलमानों का प्रभाव बढ़ने की वजह से हमारी संस्कृति की रक्षा करना जरूरी हो गया था । इसलिए ब्राह्मणों ने संस्कृति की रक्षा, महिलाओं के सतीत्व तथा रक्त की शुद्धता बनाए रखने के लिए महिलाओं के संबंध में नियमों को अधिक कठोर बना दिया । लेकिन वे इस बात को भूल गए कि महिला जिसका समाज एवं संस्कृति में अपना एक विशेष महत्त्व है उसके चेतना शून्य हो जाने पर समाज एवं संस्कृति अपने आप स्वतः ही समाप्त हो जाएँगे । सती प्रथा को धार्मिक आवरण प्रदान कर बढ़ावा दिया गया ।

इस प्रकार महिलाएँ अपने अस्तित्व के लिए पूर्णतया पुरुषों पर निर्भर हो गयी । अज्ञान के वशीभूत भारतीय समाज में इन्हीं कुरीतियों ओर मिथ्यावाद को भारतीय संस्कृति का अंग समझा गया ।

(ई) ब्रिटीशकाल में महिलाओं की स्थिति

अंग्रेजी शासन काल में भारतीयों द्वारा समाज सुधारने के अनेक प्रयत्न किए गए, लेकिन सरकार की ओर से महिलाओं का शोषित बने रहना अंग्रेजों के लिए भी लाभप्रद था । इसी का परिणाम यह हुआ कि २०वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक महिलाओं की निर्योग्यताओं के आधार पर उनकी दयनीय स्थिति थी ।[२६]

अंग्रेजों के आगमन का एक परोक्ष प्रभाव यहाँ स्त्रियों की स्थिति पर पड़ा । अंग्रेज पादरी अपने धर्म प्रचार के लिए हिन्दु धर्म की कुछेक कुरीतियों पर प्रहार करते थे । दूसरी तरफ अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार-प्रसार से यहाँ के कुछ लोग पाश्चात्य साहित्य एवं दर्शन से परिचित हुए । अतः अपने धर्म एवं समाज की रक्षा हेतु कुछ धार्मिक सामाजिक आंदोलन हुए जिनके कारण स्त्रियों की स्थिति में कुछ सुधार हुए । ऐसे महानुभावों में राजा राममोहनराय, केशवचंद्र सेन, दयानंद सरस्वती, महादेव गोविंद रानडे, गोपालकृष्ण गोखले, नवीन चंद्र राय आदि मुख्य है । बाद में ज्योतिबा फूले, महात्मा गाँधी तथा डॉ. बाबा साहब आँबेडकर आदि भी इस क्षेत्र में आये ।[२७]

सामाजिक क्षेत्र में महिलाओं को शिक्षा प्रदान करने, स्वतंत्र रूप से अपने अधिकारों की माँग करने और व्यवहार-नियमों में किसी प्रकार का परिवर्तन करने का अधिकार नहीं था । अज्ञानता ज्यादा थी साक्षरता का प्रतिशत ६ से भी कम था । शिक्षा भी केवल कामचलाऊँ ही थी । किसी भी महिला द्वारा बाल-विवाह अथवा पर्दा प्रथा का विरोध करना उसके चरित्र के लिए एक कलंक समझा जाता था । महिला के संबंध क्षेत्र, माता- पिता- परिवार- धर्म- परंपरा तक था । धार्मिक दायित्वों का निर्वाह करना ही उनके मनोरंजन का एक मात्र साधन था ।[२८]

परिवार में महिलाओं के अधिकार समाप्त हो गये थे । वह गृहकार्य करनेवाली संचालिका थी । सभी अधिकार-परिवार के 'प्रमुख कर्ता' पुरुषों को

प्राप्त हो गए । विवाह बहुत–छोटी आयु में हो जाने से उसका जीवन आरंभ में परंपरागत निषेधों और रूढ़ियों से युक्त हो गया । वैदिक काल की साम्राज्ञी अब सास की 'सेविका' बन गयी । परिवार में महिला का एक मात्र कार्य बच्चों को जन्म देना और पति के सभी संबंधियों की सेवा करना रह गया । दहेज द्वारा शोषण, गृहकार्यों में शोषण, धार्मिक कार्यों को लेकर महिला का शोषण, एक सामान्य–सी बात हो गई । सब से बड़ा दुर्भाग्य तो यह था कि महिलाएँ स्वयं भी इस अत्याचार को अपने पूर्वजन्म के कर्म का फल मानकर इससे संतुष्ट रहती थीं । इससे उनकी स्थिति में निरंतर ह्रास होता गया ।[२९]

आर्थिक क्षेत्र में उन्हें संयुक्त परिवार की संपत्ति में से हिस्सा प्राप्त करने से वंचित नहीं रखा गया – बल्कि महिलाओं को अपने पिता की संपत्ति में भी अधिकार नहीं था । महिलाओं के द्वारा कोई आर्थिक क्रिया करना एक अनैतिक कार्य के रूप में देखा जाने लगा, कुलीनता – स्त्रीत्व के विरुद्ध माना गया । परिणाम स्वरूप उन्हें पुरुषों की दया पर निर्भर रहना पड़ता था । आत्महत्या इस निर्भरता का एक मात्र समाधान रह गया ।[३०]

डॉ. के. एम. पनिकर ने लिखा है, कि हिन्दू समाज में पुत्री के अधिकार को कानून द्वारा समाप्त कर दिया गया था । पत्नी पति के परिवार का एक अंग बन गई थी – और विधवाओं को मृतक के समान माना जाता था ।[३१]

राजनीति में महिलाओं का कोई स्थान नहीं था । घर में पुरुष शोषण करता, वही पुरुष अंग्रेजों का गुलाम था । यद्यपि १९१९ के बाद महिलाओं को मताधिकार देने के प्रयत्न किए गए लेकिन इसमें कोई व्यावहारिक सफलता नहीं मिल सकी । सन् १९३७ के चुनाव में पति की शिक्षा और संपत्ति के आधार पर बहुत थोड़ी – सी महिलाओं को मताधिकार – प्रदान किया गया । महात्मा गांधी के नेतृत्व में सन् १९१९ के पश्चात् कुछ महिलाओं ने राजनीति में भाग अवश्य लिया, लेकिन कुलीन परिवार इसका सदैव विरोध करते रहे ।[३२]

महात्मा गांधी द्वारा चलाए गए विविध आंदोलनों में कुछ स्त्रियों ने भाग अवश्य किया था, परंतु वे तमाम स्त्रियाँ प्रायः उच्च वर्ग से संबंधित थीं । इसाई धर्म प्रचार के विरुद्ध जो पुनरुत्थानवादी, प्रवृत्तियाँ विकसित हुई । उसके कारण स्त्रियों को कुछ राहत मिली ।[३३]

धर्म के नाम पर स्त्रियों का शोषण हुआ दक्षिण के कई मंदिरों में 'देवदासी' प्रथा चलती थी । मठो, अखाड़ो में स्त्रियों का शोषण होता था ।

निम्न सामान्य दलित जाति की स्त्रियों का शोषण होता था, एकतरफ निम्नजाति शुद्र अश्पृश्य मानी जाती थी दूसरी तरफ उससे शारीरिक संबंध रखने मजबूर किया जाता था ।

डॉ. के. एम. पनिकर ने तो स्त्रियों की निम्न स्थिति के लिए संयुक्त परिवार प्रथा को ही उतरदायी माना है । संयुक्त परिवार में नारी चेतना को कुंठित करने वाली स्थितियाँ विद्यमान थीं । आज भी बहुत से माँ–बाप अपनी बेटियों के लिए छोटे परिवार या विभक्त परिवार पसंद करते है यह अकारण नहीं है ।[३४]

इसाई धर्म के साधु–पादरी अपने धर्म का प्रचार करते और दलित जातियों का शोषण करके धर्म परिवर्तन करवाते । इसे रोकने के लिए कई संस्थाओं ने विरोध किया, आंदोलन हुए, आंदोलनों में ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, आर्यसमाज, थियोसोफिकल सोसायटी आदि प्रमुख हैं ।

इतने उच्चपद पर आसीन स्त्री अथवा माता का जब अपमान होने लगा उसे तिरस्कृत किया जाने लगा, उसकी आवश्यकता जब शनैः शनैः फीकी पड़ते लगी, यद्यपि, ऐसा होना संभव ही नहीं था क्योंकि माता के बिना सृष्टि ही असंभव थी, परंतु जब ह्रास होने लगता है, विचारों में संकीर्णता आने लगती है, जब किसी भी व्यक्ति के 'अहं' के कारण समाज में पक्षपात होने लगता है वहाँ कटुता का पनपना स्वाभाविक हो जाता है । वह पुरुष को जन्म दे उसे

शक्तिशाली बनाने में पूर्ण सहयोग दे और फिर उसी के द्वारा पूरी उम्र प्रताडित होती रहे ? फिर आखिर क्यों आवश्यक है नारी ?

क्योंकि वह माता है – गर्भ पाल पोषकर पहले गर्भ में, फिर प्रसव पीड़ा में, और उम्र भर मानसिक तनाव में टूटती जुड़ती रहे उसी का नाम नारी, माता, बहन–बेटी या फिर केवल उपभोग्या ?

स्त्री भी इसको स्वीकार करती है कि उसे विभिन्न अवस्थाओं में विभिन्न पदों को संभालना होता है, अथवा कहें कि अपने बहुमुखी व्यक्तित्व से वह हृदयों को जीत सकती है । परंतु जैसा सर्वविदित है कि कोई भी मनुष्य संपूर्ण नहीं है – स्वभावतः नारी भी आवश्यक नहीं कि ऊपरोक्त समस्त गुणों से परिपूर्ण ही हो परंतु पुरुष समाज में कोई भी उसके व्यक्तित्व एवं अस्तित्व की आवश्यकता पर प्रश्न चिन्ह क्यों लगा देते हैं ? आखिर क्यों, या तो स्त्री को आसमान पर बिठा दिया जाता है – अथवा जमीन पर पटक दिया जाता है ।

यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवताः । उक्त पंक्ति में यही भाव है ।

आज की नारी स्वयं को देवी समझकर ध्यानावस्थित होकर बैठने की मानसिक स्थिति में नहीं है । और देवता कौन ? वह पुरुष वर्ग जब जब चाहे स्त्री को बना दे और जब चाहे उसे पतिता का आभूषण पहना दे ।

हमने क्रमशः नारी की स्थिति, उसकी अस्मिता के बारे में देखने का प्रयत्न किया है । यों तो नारी को महाभारत काल तक पर्याप्त आदर प्राप्त हुआ । यदि हम इस बात को इस प्रकार विश्लेषित करें कि यहाँ केवल नारी की बात न कर पूर्ण मानवजाति के संदर्भ में विचार करने पर देखेंगे कि कोई भी मनुष्य जब अपने धर्म से विमुख होता है, तब वह अनादर का पात्र होता है । यहाँ आपत्ति यह नहीं है कि यदि स्त्री त्रुटिपूर्ण कार्य करे, तब भी उसे समादर प्राप्त होना चाहिए । नहीं, कदापि नहीं । सीमाएँ तोड़ने का अधिकार तो किसी को नहीं है ये सीमाएँ समाज ही बनाता है और पुरुष और स्त्री

दोनों ही समाज की महत्त्वपूर्ण आवश्यक इकाइयाँ हैं । परंतु यदि एक इकाई किसी सीमा का उल्लंघन करती है तो उस पर दोषारोपण होता है, उसे दंडित किया जाता है, परंतु दूसरी इकाई पर किसी की दृष्टि ही नहीं पड़ती और यदि पड़ती भी है तो उसे अनदेखा कर दिया जाता है ।

वास्तव में परंपराएँ तो वही चली आ रही हैं । हम वैदिक युग से चलते हुए ही तो इस युग में पर्दापण कर रहे हैं । मानस मन वही है, सोच वही है, चिंतन वही है, बदलाव आया है समय में – जो स्वाभाविक ही है । हर समय में कुछ न कुछ बदलाव आते ही हैं – जो कुछ अच्छे लगते हैं, कुछ बुरे । कुछ गलत लगते हैं तो कुछ सही, कुछ उन्नति के मार्ग की ओर अग्रसर करते हैं तो कुछ अवनति की ओर । महाभारत ग्रंथ में नारी के सभी रूपों का चित्रण किया गया है । उस युग में नारी का 'गौरव पूर्ण' रूप तथा समस्त पाप का मूल दोनों रूपों में बड़ा स्पष्ट चित्रण प्राप्त होता है । नारी जहाँ एक ओर प्रशंसा की पात्र रही वहीं दूसरी और निंदित भी बनी रही ।

हिन्दी साहित्य कोश के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति के द्वारा धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की उचित रीति से प्राप्ति हेतु जिन विधि, निषेधमूलक – सामाजिक – व्यावहारिक, धार्मिक, राजनैतिक आदि–नियमों का विधान देशकाल तथा पात्र के संबंध में किया जाता है, वह नीति है । समाज के संतुलन हेतु नीति की आवश्यकता को स्वीकार किया गया है । नीति अर्थात् जो कर्तव्य एवं अकर्तव्य को स्पष्ट करती है । वही नीति होती है ।

नीतिकाल की परंपरा अत्यंत प्राचीन है तथा संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, आदि लगभग सभी भाषाओं में नीति विषयक सूक्तियों की रचना हुई है । शुक्रनीति में नारी की निंदा ही की गई ।

पुरुष को आवश्यकता पड़ने पर अपने शरीर सुख को भोगने के लिए नारी चाहिए भी और बाद में उसे नरक में ले जानेवाली मानकर उसका तिरस्कार भी । एक ओर उसे चंचल अपवित्र, नरक कुंड आदि कहा जाता

है । तो दूसरी ओर मीरा सहजोबाई तथा दयाबाई की भक्ति के उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं । आखिर स्त्री की महत्ता क्या ? क्या चाहता है समाज उससे ? अपनी कठिनाइयों की सीढ़ियों को पार करती हुई स्त्री जब अपने उद्देश्य को प्राप्त कर लेती है । तब भी उस पर कोई न कोई दोषारोपण कर ही दिया जाता है ।

आधुनिक युग में भी अनेकों बुराइयों, उपालंभों के बावजूद भी मातृत्व की महिमा को सही समझा गया । परिवार की महत्ता, माता अथवा स्त्री की आवश्यकता, एवं उसके बिना घर परिवार न होने के बराबर समझा गया । कितने लोगों ने समझा व कितनों ने विरोध किया अभी इसी बात पर चर्चा करना अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं है । नारी की स्थिति का अधिक सपष्ट रूप से अवलोकन करना यहाँ अभीष्ट है ।

यदि हम सिद्ध साहित्य में दृष्टिपात करें तो वहाँ नारी का भिन्न रूप देखने को मिलता है । प्रायः सिद्ध लोग अपनी वाणी को पहेली के रूप में प्रस्तुत करते थे । वाम मार्ग में पंचमकार साधना प्रचलित थी, पंचमकारों में मद्य का प्रमुख स्थान था । वारुणी के अतिरिक्त मैथुन इस साधना का दूसरा महत्त्वपूर्ण अंग है । इस दृष्टि से समाज की निम्न स्तर की स्त्रियों को साधन बनाया जाता था ।

उपनिषदों में ब्रह्मानंद के सुख के परिणाम का अंदाज कराने के लिए उसे सहवास सुख के समान बताया गया । इसका प्रतीक युगनद्धरूप माना गया । शक्तियों सहित देवताओं के युगनद्ध स्वरूप की भावना यथा और उनकी नग्न मूर्तियाँ सहवास की अनेक अश्लील मुद्राओं में बनने की सिद्धि प्राप्त करने के लिए किसी स्त्री, किसी शक्ति – योगिनी या महामुद्रा का–योग–या सेवन आवश्यक हो गया । इस प्रखर सिद्धों की देखा देखी जनसाधारण के लिए धर्म के नाम पर अनाचार फैला हुआ था ।[३५]

अपभ्रंश काल में नारी का सौंदर्य रहन–सहन, स्वभाव, नखशिख नायिकाभेद, आभूषण सज्जा, भोग निर्वाण, मिलन, हाव–भाव, विवाह, विरह वर्णन व सुखी घर में नारी के योगदान के साथ–ही कुत्सिता नारी की निंदा भी की गई है । तथा सदाचरण पर बल दिया गया है । इसके साथ ही नारियों के सामाजिक अधिकार तथा मातृवात्सल्य का अंकन भी किया है ।

''आदि काल में सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थिति को देखें तो विभिन्न धर्म पंथ इस संक्रांति काल खंड में नानारूप धारण कर मूल सिद्धांतों से विचलत होकर जनता के बीच आया है ।

बौद्ध मत से महायान, सहजयान, व्रजयान, मंत्रयान आदि भेदापभेद पैदा हुए । शाक्तो में आनंद भैरवी, त्रिपुर सुंदरी, ललिता आदि की अर्चना प्रणालियाँ, जैन संप्रदाय की नीतिक वामाचार पद्धति अंगीकार कर विकृत हो रहा था । अलौकिक शक्तियों की प्राप्ति और उनका प्रदर्शन सिद्धि समझा जाने लगा । विशेषकर निम्न वर्ग की स्त्रियों से भोग आदि, पंचमकारों की साधना स्वीकृत होने लगी । अर्थात् धर्म की आड में पाप पनपने लगा ।

नारी की पौराणिक अवधारणाओं में अंतर आ गया था । वह भोग्या मात्र रह गई थी तथा क्रय–विक्रय और अपहरण की सामग्री बन गई थी । विदेशी–स्वदेशी राजाओं, सामंतों और उनके कारगुजारों से नारी की इज्जत बचाने हेतु उस पर बंधन कडे हो गए थे । शिक्षा का अवसर नहीं दिया जाता था वह घर की दीवारों में बंद होकर रह गई । सती प्रथा और जौहर प्रथाएँ इसी काल में जनम लेने लगीं ।[३६]

परंतु इसी युग में वीरगाथाओं के माध्यम से नारी के वीरांगना रूप के दर्शन होते हैं । डिंगल काव्य में भी नारी का गरिमापूर्ण रूप चित्रित हुआ है तो ब्रजभाषा के वीरकाल में सहज रूप के भी दर्शन होते हैं ।

महाकवि तुलसीदास ने भारतीय संस्कृति की पावन विचारधारा के उजाले में नारी के मातृ स्वरूप का चित्रण किया है । 'रामचरितमानस' में नारी की

विभिन्न अवस्थाओं का चित्रण किया गया है । सत्–असत् गौण, प्रधान, राक्षसी–मानवी, देवी, ऋषि, वानरवर्गीय नारी पात्रों का हृदयस्पर्शी वर्णन, अहल्या, मंथरा, कैकेयी, तारा–मंदोदरी के पात्रों के माध्यम से किया गया है । कौशल्या, सीता, पार्वती, सुमित्रा, सुनयना आदि स्त्री पात्रों को कवि की लेखिनी ने अपनी श्रद्धा एवं विश्वास से चित्रित किया है । मातृस्वरूप का चित्रण–भारतीय संस्कृति के आलोक से सुरभित है तथा अच्छे–बुरे सभी पात्रों के चित्रण में संतुलन बनाकर एक स्वाभाविक गरिमा का प्रत्यारोपण किया है ।

(उ) आधुनिक काल

इस प्रकार भारतीय स्त्री प्रारंभिक एवं मध्यकालीन दौर से गुजरते हुए आज आधुनिक युग में अपने अस्तित्व को तलाश रही है । किसी भी युग में नारी की आवश्यकता के बारे में संशय किया ही नहीं जा सकता । उसकी आवश्यकता समाज को सृष्टि के प्रारंभ से ही है तथा जब तक दृष्टि रहेगी अथवा कहा जाय कि जब तक यह संसार रहेगा तब तक उसके 'होने' उसके 'व्यक्तित्व' को नकार पाना कठिन नहीं, असंभव है ।

यह बात अलग है कि नारी के 'स्वयं' को, उसके अस्तित्व को – किस दृष्टि से परखा जाय, देखा जाय तथा जहाँ स्थापित किया जाय । हमने देखा कि नारी को सदा ही समय के हिंडोले में झुलना पड़ा है । वह कभी ऊपर है तो कभी नीचे झूलती ही रही है । सटीक बात तो यह है कि नारी व पुरुष प्रत्येक वस्तु में एक दूसरे के भागीदार बनकर रहें । जिस प्रकार पुरुष भी पूर्ण संपन्न नहीं, नारी भी गुणों व दोषों से परिपूर्ण है । गृहस्थ जीवन में पति या पत्नी दोनों को एक दूसरे से संतुष्ट रहने की आवश्यकता है । कहीं पर पति गुरु पद पर आसीन होता है तो आवश्यकता पड़ने पर पत्नी भी पति को सहयोग देकर उसकी प्रेरणा बनती है ।

आधुनिक नारी की स्थिति के बारे में महर्षि दयानंद सरस्वती की चिंता सर्वोपरि रही । यह वह आधुनिक युग था, जब नारी की स्थिति सर्वथा नगण्य हो चुकी थी । सूर्यकांत त्रिपाठी निराला उन्होंने भी अपनी पत्नी मनोहरा को गुरु के रूप में स्वीकार कर नारी की बुझती हुई मंद रोशनी के दीपक में घृत डालकर उस ज्योति को जलाए रखा ।

डॉ. रामविलास शर्मा – 'निराला की साहित्य साधना' में लिखते हैं 'तुलसीदास को ज्ञान मिला, पत्नी के उपदेश से, निराला को हिन्दी सेवा के लिए प्रवृत्त किया मनोहरा देवी ने ।'[३७]

आत्मविश्वास से परिपूर्ण नारी किन विवशताओं के बीहड़ वनों में भटकने लगी । नारी की दुर्दशा से व्यथित महर्षि दयानंद तथा उनके द्वारा स्थापित 'आर्य समाज' ने नारी की प्रगति के लिए जो कार्य किये वे अत्यंत प्रशंसनीय तो हैं ही, विश्व इतिहास में उनका प्रतिष्ठित एवं अनूठा स्थान है । जब–जब समय में बदलाव आया है, एक इतिहास की रचना हुई है । स्वामी दयानंद का समय अत्यंत, ऊँच–नीच, बुराइयों, असंयमितताओं, अन्यायों, सामाजिक, कुरीतियों का समय था । सर्वविदित है कि अंग्रेजी शासन में महिलाओं पर कितने अत्याचार हो रहे थे । इससे पूर्व मुस्लिम–शासन में बुरखा (नकाब) गुलामी ने स्त्रियों को अपनी लपेट में ले रखा था ।

दयानंद सरस्वती ने स्त्री को पुरुष के समान ही यज्ञादि की वेदी पर बैठने की न केवल आज्ञा दी की वरन् उन्हें प्रोत्साहित किया । कि वे स्वयं को पहचाने । स्त्री ही घर व समाज की मुरध्वजा है । उसे मंत्र द्वारा वेदादि समस्त विद्याओं का अध्ययन करने का अधिकार प्रधान किया गया है । महर्षि दयानंद स्त्री अधिकारों का पक्ष लेते हुए पुरुष समाज को उनके विचारों को बदलने का आदेश दिया है । उन्होंने बड़े स्पष्ट शब्दों में नारी को बेचारी, बोझ, त्याज्य आदि उपालंभों के स्थान पर शक्ति एवं भक्ति की विचारधारा से सुशोभित किया है । स्वामी दयानंद ने अनेकानेक अवरोधों के बावजूद स्त्रियों

के लिए नई प्रकाशमयी, अलौकिक, सुबह का उजाला फैलाया । उनके व उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज के ठोस प्रयत्नों के फलस्वरूप विश्व का प्रथम कन्याविद्यालय पंजाब के हरियाणा – ग्राम में खोला गया । दयानंद स्वामी की सोच एवं श्रम के फलवस्वरूप ही स्त्रियों को बालहत्या, बाल विवाह, सती–प्रथा, आदि कुरीतियों से छुटकारा प्राप्त हुआ । तथा विधवाओं को पुनः विवाह करके पुनः प्रसन्नता प्राप्त करने का अधिकार प्राप्त हुआ ।

"आर्य समाज सर्वधर्म समानता का पक्षघर है – उसमें पुरुष–स्त्री आदि की कहीं अपेक्षा–उपेक्षा नहीं है । यह हमें ज्ञात ही है । आर्य समाज ने तो पूरी श्रद्धा एवं विश्वास से स्त्री को पुरुष के समान एक इकाई मानकर उसे जगाया । प्रयास किया कि जिस प्रकार ईश्वर ने स्त्री व पुरुष दोनों को ही एक आत्मा के रूप में उत्पन्न किया है उसी प्रकार वे दोनों इस भौतिक संसार में भी सहयोग से प्रेम से चलते रहे ।

ब्रह्म समाज के स्थापक राजा–राममोहन राय भारतीय जन–जागरण तथा आधुनिक चेतना के अग्रदूत माने जाते हैं । उन्होंने पूर्व और पश्चिम की वैचारिक, सामाजिक, धार्मिक प्रवृत्तियों के बीच एक मध्य मार्ग का निर्माण किया, सती प्रथा, बाल–विवाह का विरोध किया, विधवा विवाह को प्रोत्साहन दिया, बहुविवाह प्रथा एवं कुलीन विवाह प्रथा दोनों का विरोध किया । उन्होंने नारी अभ्युत्थान तथा उसकी आर्थिक स्वाधीनता के लिए भी आंदोलन किया । राजा राममोहन राय को विश्व मानवता का वृत बहुत अधिक विस्तृत है । पराधीन, समृद्ध, दलित और निषपेषित जातियों के लिए एक समान था ।"[३८]

"प्रार्थना समाज नामक संस्था के भी चार उद्देश्य थे । (१) जाति प्रथा का विरोध, (२) विधवा विवाह का समर्थन, (३) स्त्री शिक्षा का प्रचार (४) बाल–विवाह का विरोध । अतः प्रार्थना समाज के सुधारवादी नेताओ ने सर्व प्रथम इन चार मुदों पर ही अपना ध्यान केन्द्रित किया । ब्रह्म समाज के केशवचंद्र सेन जब बम्बई गये तो उनकी प्रेरणा से परमहंस संस्था ने प्राथना

समाज नामक संस्था की स्थापना की। उन्हीं दिनों में पंडित रमाबाई ने शारदासदन नामक एक संस्था स्थापित की थी जो स्त्रियों में नयी चेतना जगाने के उद्‌देश्य से शुरू हुई थी ।"[३६]

"थियोसोफिकल सोसायटी – इसकी स्थापना हैलेना पेत्रोवता ब्लेवास्की नामक एक रुसी महिला ने सात सितम्बर १८७५ ई. में की थी । यह संस्था संपूर्ण मानवता के हित में कार्य करने लगी । श्रीमती एनी बेसंट महान विदुषी थी । इन्होंने भारत में स्त्रियों की स्थिति को ऊपर उठाने में तथा उन्हें दिन–प्रतिदिन अधिक शिक्षित करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है ।"[४०]

बाद में महात्मा गांधी जैसे नेताओं ने स्त्रियों की स्थिति को सुधारने के भरसक प्रयत्न किये । राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा स्त्रियों को आगे लाने की यथेष्ट चेष्टाएँ हुईं जिनके कारण कई महिला नेता सामने आयीं, जिनमें कस्तूरबा, अरुणा आसफअली, विजया लक्ष्मी पंडित, सुचेता कृपालानी, इंदिरा गांधी आदि प्रमुख है ।

हिन्दी साहित्य की महान लेखिका श्रीमती महादेवी वर्मा ने 'श्रृंखला की कड़ियाँ' में पूर्व एवं पाश्चात्य दोनों ही समाजों की कमजोरियों एवं स्त्री की दशा तथा समस्याओं पर प्रकाश डाला है । महादेवीजी का मानना है कि स्त्री स्वभाव से कोमल है – अतः प्रेम व घृणा जैसे दोनों ही भाव अधिक स्थायी रूप से उसके हृदय में वास करते है । लेखिका इसे स्पष्ट करते हुए कहती है कि नारी की उपर्युक्त विशेषताओं के कारण ही उसका व्यक्तित्व समाज के उन अभावों की पूर्ति करता है जो पुरुषों के द्वारा संभव नहीं है । प्राचीन काल में समाज का स्त्री के प्रति स्नेह और सम्मान प्रकट करना इसी बात का द्योतक है कि स्त्री समाज का एक महत्त्वपूर्ण अंग थी । आर्य नारी ने वैदिक काल में सहधर्मिणी के रूप में पति का अंधानुकरण किया है, ऐसे प्रमाण कहीं प्राप्त नहीं होते है । महादेवीजी कहती है –

"छाया का कार्य आकार में अपने आपको इस प्रकार मिला देना है, जिससे वह उसी समान जान पड़े और संगिनी का अपने सहयोगी की प्रत्येक त्रुटि को पूर्णकर उसके जीवन को अधिक से अधिक पूर्ण बनाना ।"[४१]

महादेवीजी का मानना है कि स्त्री सहधर्मिणी से अधिक पुरुष की छाया है, इस सोच का जन्म शायद किसी अशांत् वातावरण की देन है, जिसने पुरुष की इस आपत्ति जनक धारणा को भी सैद्धांतिक रूप दे दिया तथा अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व को भुलाकर अपनी विवेक शक्ति को समाप्त कर दिया । इसके परिणाम स्वरूप स्थिति इतनी बिगड़ गई कि स्त्री ने अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व भुलाकर अपनी विवेक शक्ति ही खो दी । उसे अपना सर्वस्व केवल पुराण में ही दिखाई देने लगा । उनका मानना है कि भारतीय नारी की मूल समस्या असंतुलन है । उसमें कहीं असाधारण दीनता है तो कहीं असाधारण विद्रोह । स्वतंत्र व्यक्तित्व भुला देने के कारण स्त्री को अपना जीवन उद्देश्य हीन तथा पिंजरे में बंद पंछी की भाँति लगने लगा । उसे लगा कि यदि वह पुरुष के समान बन जाय तो उसकी समस्याओं का हल निकल सकेगा । परंतु प्रकृति की उपेक्षा करने से समस्याओं का हल नहीं होता वरन् अधिक समस्याएँ पैदा होती हैं ।

सृष्टि के रचनाकार ने कुछ सोचकर ही तो स्त्री व पुरुष को जन्म दिया होगा । यदि उसने स्त्री में स्त्रियोंचित गुण दिए हैं तो पुरुष में पुरुषोचित गुणों का संचार किया है । जो सृष्टि के लिए दो अति आवश्यक मूलभूत आधारशिलाएँ है । परंतु जब पुरुष के गुणों को ओढ़ लेने के दंभ में नारी ने अपनी सीमाएँ तोड़ने की चेष्टा की तो उसमें पुरुषोचित गुण समाने लगे । उसकी कोमल भावनाएँ विलीन होने लगी तथा कठोर व क्रूर भावनाओं का समावेश होने लगा । शनैः शनैः स्त्री अपनी नैर्सगिक भावनाएँ दबाने लगीं, भूलने का प्रयास करने लगी । और वह भी पुरुषों जैसी बनने एवं कार्य करने में ही अपने आप को सार्थक समझने लगी । फिर भी ऊँचे पदों पर आसीन

एवं, ग्राम्य घरों में स्थित महिलाओं की मानसिकता में थोड़ा ही फर्क है । दोनों स्थानों पर कहीं ये माना जाता है कि नारी का अस्तित्व पुरुषों के लिए ही है । नारी शुरु से ही आश्रिता थी, इसका कारण परिवेश और परंपराएँ थीं । आज भी परंपराओं से ग्रस्त मानसिकता समाज में है । वैसे वक्तव्य में या स्टेज पर नारी प्रगति दिखाने के लिए किरण बेदी, इंदिरा गांधी, मायावती, ममता बेनर्जी, मेघा–पाटकर, प्रतिभा पाटील, सुनिता विलियम्स् आदि के नाम गिना सकते हैं । सब को सुनकर खुशी होती है । मगर सुनीता विलियम्स या गाँव की ग्वाल बाला दोनों ही समान हकों की अधिकारी हैं – मानसिकता यही होनी चाहिए की स्त्रियाँ भी मुक्त जन्मी हैं – उन्हें भी पुरुषों के समान ही अधिकार मिलने चाहिए ।

पुरुष वर्ग ने स्त्री वर्ग पर अपने पति होने का नाजायज फायदा उठाया है । जिस कारण स्त्रियों को समानता के दर्जे में रखने के बदले उन्हें अधीन रखने का प्रयत्न किया ओर जिस कारण स्त्रियाँ भी अपने स्वतंत्र, अस्तित्व, स्वतंत्रता, नैतिकता आदि को पुरुष रूपी पति के दृष्टिकोण से देखने लगी है केवल मातृत्व तक, भाग्य को सीमित करते हुए अपना सुख मनाने लगी । क्योंकि माँ के रूप में वह पूज्य है जितना पत्नी प्रेयसी या भोग्या के रूप में नहीं थी । मध्यकाल में शिक्षा से वंचित होने के कारण गृहकार्यों तक सीमित रह गई शोषित भी हुई । मध्यकालीन नारी की इसी दुर्दशा को देखकर ही गुप्त जी को कहना पड़ा ।

“अबला, जीवन हाय, तुम्हारी यही कहानी,
आँचल में है दूध और आँखों में है पानी ।।”

लेकिन यह स्थिति अधिक समय तक नहीं रही । भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के समय महात्मा गांधी जैसे नेताओं ने नारी को सामाजिक न्याय दिलवाने व पुरुष के समान स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए आमंत्रित किया । सदियों से जकड़ी बेड़ियाँ कट रही हैं, और कटेंगी,

प्रयास जारी है । संघर्ष जारी है, भारतीय स्त्री शासक बनने की बात नहीं कर रही, वह शोषिता बनी रहने से इन्कार कर रही है, वह अपनी अस्मिता, योग्यता, दक्षता सिद्ध कर रही है ।

स्त्री चेतना का अर्थ यही है कि स्त्री स्वतंत्रचेता हो, आत्मनिर्भर हो, आत्मविश्वासी हो, और अधिकारों के प्रति जागरूक हो । इसी का नतीजा है कि समकालीन ऐतिहासिक बुनावट में एक ऐसी वैश्विक औरत की तस्वीर उभर रही है – जो शुद्ध रूप से केवल औरत होने की माँग कर रही है ।

"नारीवाद – या नारी चेतना एक स्वस्थ दृष्टिकोण है – जो एकांकी नहीं – यह पुरुषों का नहीं, उनकी मानवीयता घटानेवाले छद्म मुखौटे का प्रतिकार है, जो उसने मर्दानगी मर्दानगी कहकर पहन लिया है ।"

श्रीमती नाथीबाई दामोदर ठाकरसी यूनिवर्सिटी को अन्य विश्वविद्यालयों के समकक्ष घोषित करते समय विधानसभा में बी. जी. खेर ने कहा था – "मेरी दृष्टि से घर व्यवस्था, बच्चों का पालन पोषण तथा वर्तमान उपलब्धियों को सरलता से घर आंगन तक पहुँचाने में मात्र बौद्धिक श्रम की ही आवश्यकता नहीं होनी, वरन् निरंतर सेवा की आवश्यकता होती है, तथा दुःख दर्द सहन करने की असीम सामर्थ्य की आवश्यकता होती है, जो अप्रितम प्रतिभा का ही दूसरा नाम है । ऐसे क्षेत्र में महिला अभूतपूर्व शक्ति का परिचय देती है । मेरा ऐसा मत है कि रसोई तथा गृह व्यवस्था जैसे कार्यों में पुरुषों को भी हाथ बँटाना चाहिए जिससे यह विश्वास पैदा हो सके कि पुरुषवर्ग इस कार्य को निम्न या दूषित नहीं गिनते ।[४२]

प्रयाग महिला विद्यापीठ के उपाधि–वितरण–समारोह में भारत के राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने कुछ इससे मिलते–जुलते विचार व्यक्त किए थे – "दफतर तथा कारखानों से गृहस्थी का कार्य अधिक महत्त्वपूर्ण है । महिला की संपूर्ण स्वाधीनता का अर्थ यही हो सकता है कि वह नागरिक के शारीरिक, नैतिक तथा मानसिक चरित्र–निर्माण का संपूर्ण उत्तरदायित्व अपने

ऊपर ले ले । इस कार्य को सम्पन्न करने में जो बाधाएँ समाज के सामने आएँ उन्हें दूर करके यह कार्य सुचारु रूप से सम्पन्न हो सके, उसके लिए अवसर प्रदान करें ।[४३]

महिला शिक्षा के बारे में नियुक्त राष्ट्रीय समिति के विवरण में राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्ण कहते हैं –

''गृह सर्जन महिला का सर्वोच्च व्यवसाय है, और वह व्यवसाय चलता ही रहेगा ऐसी पूरी संभावना है । किंतु उसके विश्वास को मात्र इस संबंध तक ही सीमित नहीं रखना चाहिए ।''[४४]

नारी चेतना एक जागृत दृष्टिकोण है स्वस्थ–मानवीय–दृष्टिकोण है । नारी चेतना की माँग पुरुष से मुक्ति नहीं, बल्कि उन सड़ी, गली परंपराओं, रूढ़ियों से प्रत्येक मानव (स्त्री–पुरुष) की मुक्ति की जिससे पुरुष भी उतना ही प्रभावित है ।

आधुनिकता का अर्थ है अपनी पहचान । अपने बारे में एक स्पष्ट अभिमत और उसी के अनुसार – स्वयं का व्यक्तित्व विकास, क्षमता, सामर्थ्य, कर्मठता, निर्भीकता, और आत्मविश्वास से भरा ऐसा नारीत्व कि पुरुष उसका सम्मान करे, इसके लिए अपनी कमजोरियों पर विजय, चरित्रशक्ति, संकल्प शक्ति । बौद्धिक विकास ओर वैज्ञानिक तर्क सम्मत दृष्टिकोण, जिसमें मतभेद और सुधार–परिष्कार की गुंजाइश हो, ऐसा खुल्ला–सा हीनताओं से ऊपर, कुंठा रहित, उदार चेता व्यक्तित्व ही सही मायने में स्त्री अस्मिता का अर्थ होगा, स्त्री के प्रति समाज के दृष्टिकोण में परिवर्तन, जिसमें स्त्री का खुद का दृष्टिकोण भी शामिल है । पुरुषों के बराबर अधिकार, स्त्री के चयन–वरण और नकारने की स्वतंत्रता – नारी चेतना है । जो कर्मशील, मेहनती, विश्वसनीय–उदार सक्षम पुरुष को चाहती है ।

प्रगति और मुक्ति कौन नहीं चाहता ? नारी शक्ति को व्यावहारिक धरातल पर सामाजिक स्वीकृति मिली है, फिर भी पुरुष प्रधान, समाज की

दोहरी मानसिकता है । पुरुष मनुष्य है, मानव है, व्यक्ति है तो नारी व्यक्ति क्यों नहीं ? मानव क्यों नहीं ? आज स्त्री पुरुष सहकर्मी के रूप में साथ–साथ काम करते हैं तो उनके बीच सहकर्मियों जैसे व्यवहार की, आदान–प्रदान की सहज स्थिति क्यों नहीं कायम की जाती ? मित्रता के सहज संबंध विकसित नहीं हो पाए हैं । उसकी प्रतिभा कार्यकुशलता, समाज को कुछ अधिक दे सकने की संभावना को संदेह रूपी निगाहों से देखा जाता है । स्त्री व्यक्तित्व को जिस एक जगह पर सबसे अधिक कुचला, तोड़ा और समाप्त किया गया है, वह है 'सेक्स' । इसे लेकर ही मर्यादा–नियंत्रण की अलग–अलग तरकीबे हैं । हमारी संस्कृति में स्त्री सिर्फ देह ही है । उसका मान–अपमान चरित्र पवित्रता ये सब उसके शरीर को मद्देनज़र रखकर किया है – कभी धर्म, संस्कृति, समाज, देश, परिवार और रक्षा सुरक्षा के नाम पर स्त्री देह का इस्तेमाल किया जाता है । मातृत्व को भी इसी निगाहों से देखा जाता है । मानो उससे परे नारी देह का कोई अर्थ नहीं । भारत वर्ष आज भी ज्यों का त्यों गाँवों का देश है, मगर पुरुषों की निगाहों में स्त्री बस गई तो उसके लिए आर्या, प्रिया, सावित्री, सुंदरी, साध्वी जैसे शब्द है, नहीं बसी तो बाँझ, कुल्टा, कर्कशा–उत्श्रृंखल, स्वच्छंदी, व्यभिचारिणी, गुसैल, कलहप्रिया आदि शब्द है । ये भारतीय जन मानस की परंपरा के परिचायक हैं ।

लड़कों में ही अहं या उच्चता की गुरु ग्रंथि है, ऐसा नहीं, लड़कियाँ भी उन्हें, पति–प्रेमी या मित्र के रूप में 'स्वयं' से ऊँचा ही देखना चाहती है । गिनी चुनी लड़कियाँ होंगी जो कर्मठ–उदार पुरुष को चाहती है ।

नारी शोषण या पतन के लिए पुरुष को दोषी ठहराना गलत है । स्त्रियाँ भी स्वयं शोषण का मार्ग प्रशस्त करती हैं । दहेज के लिए जलाई जानेवाली बहुओं के पीछे, सास–ननद ही होती हैं । कामकाजी महिलाएँ भी आगे बढ़ने जी महत्त्वाकांक्षा में अपने ऊपरी बोस के इशारे पर नाचती रहती रहती हैं फिर पुरुष वर्ग को ही दोषी ठहराना जहाँ तक उचित है ?

संक्षेप में कहें तो पूरा दोष न तो पुरुषों का है और न स्त्रियों का । परिवेश, संस्कार और पुरुष प्रधान समाज की मानसिकता ने स्त्री–पुरुष दोनों की विचारधारा को निश्चित दायरों में बाँध दिया है । इस संबंध में नारी या तो पुरुष पर सर्वस्व न्यौछावर करने और सामाजिक अन्याय सहते जाने की परंपरागत भूमिका निभाती है या दमन के विरुद्ध विद्रोह का रुख अपनाती है । अन्याय सहना जड़ता की निशानी है और विद्रोह विध्वंस का रूप । आवश्यकता इस बात की है कि संतुलित दृष्टिकोण से मानसिकता को बदलने का प्रयास किया जाय । लड़कर नारी आज नर (या नारी से) कुछ नहीं पा सकती ।

न अकेला–पुरुष जीवन सार्थक है न अकेला स्त्री–जीवन । दोनों एक दूसरे के पूरक हैं – फिर भी किसी एक का दमन हुआ है । एक से अधिक लड़कियों से संबंध रखनेवाले युवक भी शादी के समय समझदार, प्रगतिशील, शिक्षित पत्नी की चाह छोड़कर घरेलू – गृहिणी जैसी लड़की को पसंद करता है, उसमें पितृसतात्मक परिवार व्यवस्था में सदियों से निहित भेद कारणभूत है ।

नारी स्वयं भी सास–ननद बनकर अन्य स्त्री का शोषण करती है – स्त्री अपने ही बेटें–बेटियों में भेदभाव रखकर पुरुष के अहं को बढ़ावा देती है, घर में बेटी पैदा होने पर पुत्रवधू को सताया जाता है । जो स्त्री चूपचाप सहन करती है, वहीं गुणवान अच्छे खानदान की । जो नहीं करती वह योग्य नारी नहीं है । घर में निष्क्रिय कमजोर – आलसी – पुरुष भी अपनी पत्नी को सताने का अधिकार रख सकता है, पुत्रवधू, ऊँची, आवाज से बोल नहीं सकती क्योंकि घर का बेटा हैं घर के प्रत्येक निर्णय करने का अधिकार आलसी – कमजोर – पुरुष को है पर अच्छा या बुरा कहने का अधिकार काम करनेवाली, कमानेवाली स्त्री को नहीं, अगर ऐसा करेगी तो उसे त्यकता बनकर उपेक्षा सहने के लिए तैयार होना पड़ता है ।

'इंडियन वायोलन्ट ऐक्ट' भी तब तक सक्रिय नहीं हो सकता जब तक कोई स्त्री खुद उसका अमल कराने की इच्छा न रखे । मान लो कोई स्त्री ऐसी परिस्थितियों से, दमन के सामने लड़ने का हौंसला रखे, आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो, मगर ऐसी आर्थिक स्थिरता भी उसे लगे हुए मानसिक जख्मों पर मरहम नहीं लगा सकती ।

आजीवन वह समाज के सामने उपेक्षा, प्रश्नार्थ बन जाती है – क्योंकि समाज ने उसकी सही व्यथा–दर्द को देखा नहीं, समझा नहीं ।.... राजकीय नेताओं के खोखले नारी सम्मेलन तो नेताओं का प्रभाव दिखाने का दिखावा है । इससे कुछ नहीं होगा ऐसी स्थिति में निर्लज्ज बनकर पूजा चौहाण या रीया सोनी जैसे केस गली–कूँचों में बनते रहेंगे ।

स्त्री–भ्रूण हत्या की समस्या आज समाज के सामने है उसमें भी पुरुषों की नारी के साथ की गई जबरदस्ती है । स्त्रियों ने अगर विरोध किया तो घरेलू कलह होंगे । हालाँकि परिवारवाले अच्छी तरह से जानते हैं कि बेटा–बेटी सब ईश्वर का दिया वरदान है उसमें स्त्री से भी ज्यादा जिम्मेवार पुरुष ही है – फिर भी सताया स्त्री को जाता है । और कई परिवारों में यह मानसिकता आज भी मौजूद है । यही मानसिकता रूढ़ होकर रिवाज बन गई है ।

रजतपट पर आने वाली स्त्रियाँ मुक्त हैं ऐसा नहीं है – आर्थिक रूप से संपन्न स्त्रियों का वहाँ शोषण होता है । कभी–कभी अपनी देह को सौंदर्य, अभिनय, नृत्य आदि अलग–अलग माध्यमों से दिखाना पड़ता है । बेचना पड़ता है । इसी में पुरुषों की रुचि भी है । वर्ना सुनीता विलियम्स् के आगमन पर क्यूं कोई नेता उपस्थित नहीं रहे ? अवकाश यात्री बनी सुनिता का खुरदरापन वैज्ञानिक बातें इतनी अधिक आकर्षक नहीं लगेंगी, जितना आकर्षण शिल्पा शेटी के बीग बॉस शो के न्यूज़ में है ।

जाहिर है कि कठोर – भूमिका निभानेवाली, खुरदरे व्यक्तित्व की स्वामिनी चाहे सत्य कहे तो भी कटु लगेगा – अस्वीकार्य लगेगा । जबकि सौंदर्य मंडिता स्त्री, अपनी हँसी के जाल में गलत भाषण करेगी तो भी सब आगे पीछे घूमकर स्वीकार कर लेंगे ।

स्त्री शरीर का आकर्षण आज भी है । आज के मीडिया की प्रत्येक विज्ञप्ति और सीरीयल्स् इन्हीं बातों के गवाह हैं ।

''पुरुष को आह्लादित करने के कारण वह 'प्रमदा' है, सौंदर्य को बुनने के कारण वयति सौंदर्यम् है, रम्या होने के कारण रमणी है, पति द्वारा भरण–पोषण होने के कारण 'भार्या' है, बल रहित होने के कारण वह 'अबला' है आंगन एवं महल से संबंधित होने के कारण 'अंगना' एवं महिला है । अगर नहीं है तो 'स्त्री' या केवल मनुष्य'' ।''[४५]

''इस समय हमारे समाज में केवल दो प्रकार की स्त्रियाँ मिलेंगी, एक–वे जिन्हें इसका ज्ञान ही नहीं है कि वे भी एक विस्तृत मानव समुदाय की सदस्य हैं और उनका भी एक ऐसा स्वतंत्र व्यक्तित्व है जिसके विकास से समाज का उत्कर्ष और संकीर्णता से अपकर्ष संभव है, दूसरी वे जो पुरुषों की समता करने के लिए उन्होंने दृष्टि कोण से संसार को देखने में उन्हीं के गुणावगुणों का अनुकरण करने में जीवन के चरम लक्ष्य की प्राप्ति समझती हैं । सारांश यह कि एक ओर अर्थहीन अनुसरण है तो दूसरी और अर्थमय अनुकरण और यह दोनों प्रयत्न समाज की श्रृंखला को शिथिल तथा व्यक्तिगत बंधनों को सुदृढ़ और संकुचित करते जा रहे हैं ।''[४६]

महादेवी वर्माने ठीक लिखा है –

''हमें न किसी पर जय चाहिए, न किसी से पराजय, न किसी पर प्रभुता चाहिए न किसी का प्रभुत्व । केवल वह स्थान व स्वत्व चाहिए जिनका पुरुषों के निकट कोई उपयोग नहीं है, परंतु जिनके बिना हम समाज का

उपयोगी अंग बन नहीं सकेगी । हमारी जाग्रत और साधन–सम्पन्न बहिनें इस दिशा में विशेष महत्त्वपूर्ण कार्य कर सकेंगी, इसमें संदेह नहीं ।''[४७]

''शिक्षा, चिकित्सा आदि विभागों में कार्य करनेवाली जाग्रत महिलाओं ने अपना एक भिन्न समाज बना डाला है । जिसने उन्हें गृहिणियों के प्रति स्नेह शून्य और गृहणियों को उनके प्रति संदिग्ध कर दिया है । इतनी शिक्षा, इतनी बुद्धि, इतने साधन, इतना अवकाश और स्वावलंबन पाकर भी यदि वे अन्य बहिनों की प्रतिनिधि न बन सकीं, यदि वे उनके त्यागमय जीवन को अवज्ञा से देखती रही तो सारे समाज का अनिष्ट होने की संभावना सत्य हुए बिना न रहेगी । उनके संकीर्ण समाज में प्रवेश न पा सकने के कारण अन्य स्त्रियाँ उनके गुरु उत्तरदायित्व से अनभिज्ञ रहकर केवल उनके बाह्य शांतिपूर्ण जीवन से ईर्षा कर अपने जीवन को दुर्वह बना डालती है ।''[४८]

''प्रत्येक पुरुष पत्नी के रूप में स्त्री को अंगीकार करते समय अनुभव करता है मानो यह कार्य वह केवल परोपकार के लिए कर रहा है । यदि उसे इतना अवकाश मिले कि वह आजीनव संगिनी के अभाव का अनुभव कर सके, उसे खोजने का प्रयास कर सके और उस उत्तरदायित्व के लिए अपने आप को प्रस्तुत कर सके तो यह उपकार की भावना एक क्षण भी न ठहरें जो अधिकांश घरों में दुःख का कारण बन जाती है ।''[४९]

''प्रत्येक भारतीय पुरुष चाहे वह जितना सुशिक्षित हो, अपने पुराने संस्कारों से इतना दुर नहीं हो सकता है कि अपनी पत्नी को अपनी, प्रदर्शनी न समझे । उसकी विद्या, उसकी बुद्धि, उसका कलाकौशल और उसका सौंदर्य सब उसकी आत्मश्लाघा के साधन मात्र है । जब कभी वह सजीव प्रदर्शन की प्रतिमा अपना भिन्न व्यक्तित्व व्यक्त करना चाहती है, अपनी भिन्न रुचि या भिन्न विचार प्रकट करती है, तो वह पहले क्षुब्ध, फिर असंतुष्ट हुए बिना नहीं रहता । कभी भारतीय पत्नी देश के लिए गरिमा की वस्तु रही होगी, परंतु आज तो विडंबना मात्र है । यदि समाज उसकी स्थिति को न समझेगा तो

अपनी दशा के प्रति असंतोष उसे वह करने पर बाध्य करेगा – जिससे उसकी शेष महिमा भी नष्ट हो जाये ।''[५०]

''आधुनिक भौतिकवाद प्रधान युग की नारी को यही दुःख है कि वह पुरुष के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता पाकर भी संसार के अनेक आश्चर्यों में एक बन गई है । उसके हृदय की एकांत श्रद्धा की पात्री बनने का सौभाग्य उसे प्राप्त न हो सका । संसार उसे देख, विस्मय से अभिभूत होकर चकित–सा ताकता रह जाता है, परंत नतमस्तक नहीं होता । इसका कारण उस व्यक्तित्व का अभाव है जिसके सम्मुख मानव समाज को बालक के समान स्वयं ही झुक जाना पड़ता है ।''[५१]

आर्थिक दृष्टि से आज की स्त्री को जो स्वतंत्रता प्राप्त हुई है, उसके विस्तार की असंख्य संभावनाएँ हैं । जैसे–जैसे उसके कर्मक्षेत्र की लक्ष्मण रेखा मिटती जाती है, वैसे–वैसे वह नवीन कर्तव्य संभालने की क्षमता प्राप्त करती जाती है । पर समाज की स्थिति के कारण यह आर्थिक स्वावलंबन भारतीय स्त्री को पारिवारिक सहानुभूति से वंचित अतः अकेला बनाता जाता है । पुरुष अकेला हो सकता है, परंतु स्त्री अनेक संबधों की केन्द्र होने के कारण एक संस्था के समान है । उसके लिए अकेलापन एक प्रकार का निर्वासन दंड बन जाता है, और उससे तनाव की स्थिति उत्पन्न होती है । उल्लास के साथ स्त्री शक्ति कितनी गरिमापूर्ण हो जाती है, कलान्ति या थकावट के साथ उतनी ही दयनीय ।[५२]

नए दशक में महिलाओं का स्थान इस संबंध में पश्चिम की नारी का जीवन भी द्रष्टव्य है । उसके पास शिक्षा है, स्वतंत्र जीवन है, विस्तृत कर्मबोध है, किन्तु गृह की इकाई टूट रही है और इस टूटने की रिक्तताने उसके मनोबल को भी तोड़ दिया है । आज वह जिस आत्मघाती उन्माद में क्रियाशील है, वह मानसिक निष्क्रियता का परिणाम है । भौतिक सुविधाएँ सुलभ करनेवाले कर्मक्षेत्र ने उसके जीवन को अपने भार से ही चूर–चूर कर डाला है ।[५३]

मन में सवाल उठते हैं कि हजारों सालों से यह शोषण क्यों जारी है ? प्रत्येक जाति और संप्रदाय का पुरुष स्त्री का शोषण क्यों करता है ? स्त्री को दलित अवस्था में रखने से समाज के किन उद्देश्यों एवं स्वार्थों की पूर्ति होती है ? इन प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ने का प्रयास कर रहा है स्त्रीवाद । इस आंदोलन के जरिये समाज में स्त्री की स्थिति, स्त्री जीवन के व्यापक फलक और उसकी अर्थवत्ता को समझने का प्रयास किया जा रहा है । प्राचीन काल में स्त्री–देह थी । आज भी देह ही है । और कल किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं हुआ जो वह देह–ही रहेगी । आज की व्यवस्था में भी वह सिर्फ देह ही है । स्त्री का अपमान किया जाता है, उसका चरित्र–हनन करके स्त्री से बदला लिया जाता है, उसे निर्वस्त्र, अधनंगा करके उसे बचाया जाता है, ऊपर से नीचे तक ढंक कर उसे पवित्र या अपवित्र कहा जाता है ।

इस देहवादी, उपभोक्तावादी, वस्तुवादी, मानसिकता को बताकर उसे मिटाने की कोशिश करना ही नारी चेतना है ।

१९५० में संविधान के लागू हो जाने पर संवैधानिक दृष्टि से तथा १९५० में हिन्दू कोडबिल के पारित होने पर कानूनी दृष्टि से भारतीय नारी को पुरुष की भाँति जीवन के विविध क्षेत्रों में प्रगति के समान अवसर उपलब्ध हुए । स्वतंत्रता के पश्चात् स्त्री पुरुष विवाहित अविवाहित का भेद किये बिना योग्यता के आधार पर नौकरी देने का प्रावधान करने के कारण महिलाओं में अनेक विध नौकरियों के प्रति आकर्षण बढ़ा ।[५४] प्रारंभ में महिलाओं का रुझान, डॉक्टरी, नर्सिंग, अध्यापन जैसे कार्यों को बीस प्रतिशत आरक्षण देकर सरकार ने प्रगतिशील कदम उठाया है । शिक्षा ने उसे अपनी परिस्थिति के प्रति सजग किया । वह अपने अधिकारों की माँग करने लगी । विविध नारी संगठनों की स्थापना हो गई । युग की आवश्यकता के अनुसार वह राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाने लगी । दूसरी और समाज में अपनी दोयम अवस्था का विरोध भी करने लगी ।

अतः सरकार को स्त्री संबंधी कानून बनाने पड़े, नारी को पुरुष के समान दर्जा देना पड़ा एवं स्त्री–पुरुष समानता की भावना को बल मिलने लगा । वह आत्मनिर्भर बन गई है । उसका अहं जाग्रत हो गया है । जो बात गलत है उसे मानने से वह इन्कार कर रही है । जो गलती उसने की ही नहीं है, उसके लिए वह सजा भुगतने के लिए तैयार नहीं है । पढ़ाई का कोई भी क्षेत्र उसके लिए अछूता नहीं है । कामवासना में वह पूरी रुचि रखती है । पत्रकारिता के जैसा अत्यंत चुनौतीपूर्ण कर्म भी बड़े साहस के साथ वह निभा रही है ।

(ऊ) इक्कीसवीं सदी में नारी

इक्कीसवीं सदी की पूर्व संध्या में नारी ने दीनता का रोना प्रायः बंद कर दिया है, उसका स्थान जीवन संघर्षों ने ले लिया है । उसका अबलापन बेचारगी, प्रतिशोध और विद्रोह में बदल गया है । समस्याओं को सुलझाना और उन्हें भूल जाना भी उसने सीख लिया है । बदला लेने और प्रेम करने में वह पुरुष से कहीं आगे निकल गई है । अब शादी अगर हादसा बन जाए तो उसे पुराने कोट की तरह उतार फेंका जा सकता है । जीवन की ट्रेजडी भी उसने ट्रेजडी धार्मिक रूप में लेना सीख लिया है ।[५५]

"आगामी दशक की युवती वर्तमान दशकों की बालिका है । अपने बाल्य काल में उसने जो संस्कार और अनुभव प्राप्त किए है – उन्हीं की आधारशिला पर उसके भविष्य का निर्माण होगा । अन्य देशों के ज्ञान विज्ञान उसके लिए त्याज्य नहीं होगे यह सत्य है, किन्तु भारत की धरती से उसका संबंध विच्छिन्न नहीं हो सकता । राजनीतिक, सामाजिक आर्थिक स्तरों पर उसकी स्थिति आज की महिला से उच्चतर होनी अनिवार्य है ।"[५६]

युगों से दलित पीड़ित रहने के कारण जो हीनता के संस्कार बन गए थे, उन्हें आधुनिक भारतीय महिला ने अपने रक्त और प्रस्वेद से इस प्रकार

धो दिया है कि आगामी युग की महिला को उस पर कोई रंग नहीं चढ़ाना पड़ेगा ।[५७]

"इक्कीसवीं शताब्दी में प्रवेश करते करते आजादी के बाद भारत की महिलाओं ने शिक्षा और साक्षरता के क्षेत्र में लंबी छलांग लगाई है । वर्ष १९५१ की जनगणना में जहाँ महिला साक्षरता मात्र ८.८६ प्रतिशत थी वह वर्ष २००१ में ५४.१६ प्रतिशत हो गई । आज वर्ष २००३ में लगभग एक करोड से अधिक बालिकाएँ विभिन्न कॉलेजों और शिक्षा संस्थानों में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही हैं । सरकार २००३ को महिला सशक्तीकरण वर्ष मना रही है । संविधान संशोधन द्वारा ग्रामीण और शहरी निकायों में महिलाओं को एक तिहाई आरक्षण मिल चुका है तथा संसद में विधान मंडलों में महिलाओं के एक तिहाई आरक्षण पर चर्चा हो चुकी है । तथा उन्हें आरक्षण मिलने की पूरी संभावना है । आज भारत में ४ राज्यों में महिला मुख्यमंत्री है तथा महिलाएँ विभिन्न प्रशासनिक और आर्थिक क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण पदों पर कार्यरत है । आज परिवार और समाज की विभिन्न संस्थाओं में महिला विरोधी परंपराओं की कठोरताओं में गंभीर रूप से शिथिलता आई है ।"[५८]

"भारतीय महिला का भविष्य जानने की जिज्ञासा होना स्वाभाविक है । भारतीय महिला के मुक्त विकास में दो बाधाएँ हैं । प्रतिक्रियावादी सामाजिक संस्थाएँ तथा रूढ़िगत रिवाज । जैसा कि पहले कहा जा चुका है, कानून की दृष्टि से महिला की स्थिति पुरुष के समकक्ष है, किन्तु दैनिक व्यवहार में जाति, पितृसत्तात्मक परिवार संस्था, धार्मिक परंपराएँ तथा सत्तावादी, सामाजिक मूल्यों का प्रभाव अभी बहुत व्यापक है तथा सब और पुरुष के प्रभुत्व दिखाई पड़ता है ।"[५९]

"नवजाग्रत महिलाओं का कर्तव्य है कि वे इन प्रतिक्रियावादी तत्त्वों के कारणों को ढूँढ कर उन्हें निर्मल करने का प्रयास करे । स्वयं अर्जित स्वतंत्रता

को सामाजिक संस्थात्मक प्रतिक्रियावादी शक्तियाँ बेकार न बना दे इसके लिए भी सतर्क अवं सावचेत रहना है ।''[६०]

''यदि स्त्रियों को मानव के प्राकृतिक एवं साहजिक अधिकार से वंचित रखना हो तो शासकों को पहले अन्याय और असंगति के आरोप से बचने के लिए यह प्रमाणित करना पड़ेगा कि स्त्रियों में बुद्धि का अभाव है, अन्यथा नया संविधान पुरुष के निरंकुश शासन का जीता–जागता प्रतीक बन जाएगा ।''[६१]

संदर्भ संकेत :

क्रम	पुस्तक का नाम –	लेखक का नाम	पृष्ठ संख्या
१	हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास	डॉ. सुमन राजे	८४
२	ऋग्वेद भाग–४, १०–१७–७ क्रमांक ८६४३	सं. श्रीराम शर्मा आचार्य	२७
३	ऋग्वेद भाग–४, १०–१५६–१, क्रमांक १०४१६	सं. श्रीराम शर्मा आचार्य	२६६
४	ऋग्वेद भाग–४, १०/१५६-२, कंमांक १०४२०	सं. श्रीराम शर्मा आचार्य	२६६
५	नारी की शाश्वत भूमिका और भविष्य का साहित्य	ज्योति शुक्ल, सरदार पटेल मेडिकल कॉलेज, बीकानेर, राजस्थान	लेख
६	पंचामृत – (कबीर दोहावली)	मनसुखराम जोबनपुत्रा शारदाग्राम, गुजरात	१७०
७	विष्णुपुराण – १–४ विष्णु भागवत ६–१६		१-४ ६-१६
८	हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास	डॉ. सुमन राजे	५२-५३
९	ऋग्वेद भाग–४, १०/८५/३३, क्रमांक ६६६६	सं. श्रीराम शर्मा आचार्य	१५५
१०	हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास	डॉ. सुमन राजे	८५
११	हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास	डॉ. सुमन राजे	८७
१२	हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास	डॉ. सुमन राजे	८६-६०
१३	महाभारत – वनपर्व क्रम २१५	नरेन्द्रकुमार मयाशंकर जोशी	२४३

१४	महाभारत – वनपर्व क्रम २१६	नरेन्द्रकुमार मयाशंकर जोशी	२४६
१५	गुजरात समाचार – धर्मलोक	कुमारपाळ देसाई	१८-१२-०४
१६	अमरकोष – द्वितीय खंड	नारायण राम आचार्य 'काव्य तीर्थ'	६१-६७
१७	दुर्गा सप्तदाती – पंचम अध्याय – श्लोक ४६		४६
१८	हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास	डॉ. सुमन राजे	१०६-११०
१६	हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास	डॉ. सुमन राजे	११०़११६
२०	हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास	डॉ. सुमन राजे	१३३़१३४
२१	हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास	डॉ. सुमन राजे	१३४
२२	हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास	डॉ. सुमन राजे	१३४
२३	भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र	डॉ.एम.एम. लवानिया	६
२४	भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र	डॉ.एम.एम. लवानिया	६
२५	भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र	डॉ.एम.एम. लवानिया	१०
२६	भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र	डॉ.एम.एम. लवानिया	११
२७	आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में नारी के विविध रूपों का चित्रण	डॉ. मोहम्मद अजहर ढ़ेरीवाला	२७
२८	भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र	डॉ.एम.एम. लवानिया	११
२६	भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र	डॉ.एम.एम. लवानिया	११
३०	भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र	डॉ.एम.एम. लवानिया	११
३१	आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में नारी के विविध रूपों का चित्रण	डॉ. मोहम्मद अजहर ढ़ेरीवाला	४६
३२	भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र	डॉ.एम.एम. लवानिया	१२

३३	आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में नारी के विविध रूपों का चित्रण	डॉ. मोहम्मद अजहर ढ़ेरीवाला	४६
३४	आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में नारी के विविध रूपों का चित्रण	डॉ. मोहम्मद अजहर ढ़ेरीवाला	४८
३५	हिन्दी साहित्य का समग्र इतिहास	डॉ. रमेशचंद्र शर्मा	२१-२२
३६	हिन्दी साहित्य का समग्र इतिहास	डॉ. रमेशचंद्र शर्मा	६७-६९
३७	निराला की साहित्य साधना	डॉ. रामविलास शर्मा	
३८	आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में नारी के विविध रूपों का चित्रण	डॉ. मोहम्मद अजहर ढ़ेरीवाला	५१-५२
३९	आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में नारी के विविध रूपों का चित्रण	डॉ. मोहम्मद अजहर ढ़ेरीवाला	५२
४०	आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में नारी के विविध रूपों का चित्रण	डॉ. मोहम्मद अजहर ढ़ेरीवाला	५४
४१	महादेवी साहित्य समग्र–३ श्रृंखला की कड़ियाँ	सं. निर्मला जैन	२९५
४२	भारतीय महिलाओं का समाज शास्त्र	डॉ.एम.एम. लवानिया	१३२
४३	भारतीय महिलाओं का समाज शास्त्र	डॉ.एम.एम. लवानिया	१३२
४४	भारतीय महिलाओं का समाज शास्त्र	डॉ.एम.एम. लवानिया	१३२
४५	महिला उपन्यासकार	डॉ. मधु संधु	४०
४६	महादेवी वर्मा साहित्य समग्र–३	सं. निर्मला जैन	२९५
४७	महादेवी वर्मा साहित्य समग्र–३	सं. निर्मला जैन	३०४
४८	महादेवी वर्मा साहित्य समग्र–३	सं. निर्मला जैन	३०५
४९	महादेवी वर्मा साहित्य समग्र–३	सं. निर्मला जैन	३४०
५०	महादेवी वर्मा साहित्य समग्र–३	सं. निर्मला जैन	३४४
५१	महादेवी वर्मा साहित्य समग्र–३	सं. निर्मला जैन	२९८

५२	महादेवी वर्मा साहित्य समग्र–३	सं. निर्मला जैन	३८५
५३	महादेवी वर्मा साहित्य समग्र–३	सं. निर्मला जैन	३८५
५४	महिला और मानवाधिकार	डॉ. एम.एम.अंसारी	१६३-१६५
५५	महिला उपन्यासकार	डॉ. मधु संधु	१५
५६	भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र	डॉ.एम.एम. लवानिया	२१
५७	भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र	डॉ.एम.एम. लवानिया	२१
५८	भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र	डॉ.एम.एम. लवानिया	२२
५९	भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र	डॉ.एम.एम. लवानिया	२२
६०	भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र	डॉ.एम.एम. लवानिया	२२
६१	भारतीय समाज में नारी	डॉ. नीरा देसाई	२११

द्वितीय अध्याय
नारी चेतना

(क) नारी चेतना – भूमिका
(ख) नारी चेतना – मुक्ति, ऐतिहासिक संदर्भ
(ग) अमरिका में नारी मुक्ति आंदोलन
(घ) भारतीय और पाश्चात्य अभिगम, दृष्टिकोण
(ड) नारी चेतना से तात्पर्य
(च) नारी चेतना, विषयक विभिन्न दृष्टिकोण

द्वितीय अध्याय
नारी चेतना

इस अध्याय में नारी चेतना से क्या तात्पर्य है ? नारी चेतना की परिभाषा, शाब्दिक अर्थ, स्वरूप तथा चेतना के संबंध में अन्य चिंतकों एवं महिला रचनाकारों के विचार, भारतीय और पाश्चात्य अभिगम आदि का विश्लेषण किया जायेगा ।

(क) नारी चेतना – भूमिका

साहित्य में से नारी शब्द अगर हटा दिया जाये तो समग्र साहित्य सौंदर्य रसहीन मुरझाये हुए पौधे जैसा हो जायेगा ।

नारी शब्द ही दिखाता है कि 'न विद्यते यस्याः अरिः सा नारी ।' अर्थात् दुनिया में जिसका कोई शत्रु नहीं है, वही नारी है ।

नारी के लिए दूसरा पर्याय है स्त्री । 'स्त्री' शब्द स्तृ धातु से बना है । स्तृ का अर्थ होता है – विस्तृत करना प्रसार करना, फैलाना, प्रेम को अगर प्रसारित करना है तो वह काम स्त्रियों के द्वारा ही होगा ।

''भारत में स्त्रियों को महिला भी कहा गया है – महान शक्तिमयी । हिन्दू परिवार में नारी को अनुचरी नहीं, सहचरी, मित्र माना है । ब्रह्मविद्या, श्रद्धा, शक्ति, पवित्रता, कला संसार में जो भी श्रेष्ठ है – सब कुछ नारी में विद्यमान है । अपनी सुशीलता के ऐश्वर्य से विद्या, ज्ञान की, सहनशीलता की ज्योति से समाज को उज्ज्वल करनेवाली नारी आशा उमंगों का केन्द्र, अखंड अदिति, शक्तिशालिनी, विविध रूपा, पियूष स्त्रोता, अंतःसलिला, दुष्टों को हरनेवाली प्रकृति स्वरूपा, अपराजिता नारी है ।[१]

दो मानव रूप–स्त्री और पुरुष । इस दुनिया में दोनों को, स्त्री–पुरुष को साथ–साथ रहना है – जीवन–मृत्यु के दौरान दोनों साथ हैं । जिन्दगी में आनेवाले संघर्ष, प्रेम, कर्तव्य, फर्ज, भावना, सहानुभूति, तादात्म्य और आत्मीयता इन सभी भावों को, बातों को दोनों अनुभव करते हैं और इन पर दोनों का अधिकार है ।

स्त्री पुरुष जब मिलते हैं, या साथ होते है तो दोनों को एक–दूसरे के प्रति अपेक्षा, इच्छाएँ, महत्त्वाकांक्षाएँ रहती हैं । इनमें कभी प्रेम–निवेदन है तो कभी हठाग्रह–दुराग्रह मिला हुआ होता है । विस्तृत रूप से फैले हुए, इन अभिन्न रूपों में जब किसी एक पक्ष में स्वार्थ, अहम् छल, दबाव या जबरदस्ती आ जाती है तो संघर्ष, दुःख–पीड़ा और अंत में अन्याय के विरुद्ध लड़ाई शुरू होती है । और यह लड़ाई समाज की, सब की, सार्वजनिक होती है, संकीर्ण मानसिकता, दृष्टिकोण के विरुद्ध वैचारिक उदारता–विस्तृत मानसिकता की आवश्यकता हो जाती है ।

सृष्टि में जो कुछ भी शाश्वत है उसके हकदार भागीदार स्त्री पुरुष दोनों हैं । फिर भी मानव समाज में स्त्रियों को जबरदस्ती क्यों दबाया जाता है ? इस अन्याय के प्रति आवाज ही चेतना है । किसी एक के प्रभुत्व से दूसरे का शोषण, दासत्व यह न्याय नहीं है ।

इस जीवन में स्त्री–पुरुष दोनों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है । एक अजीब सी रचना है, बाह्य रूप से दोनों के अंग–उपांग समान हैं । लेकिन उसका आंतरिक रूप भिन्न है । भीतर की रचना ऐसी है कि दोनों के शरीर की आंतरिक भिन्नता के सामंजस्य से ही तीसरे जीव को जन्म मिलता है । आश्चर्य की बात तो यही है कि दोनों के सामंजस्य के बाद भी तीसरा नया जीव दोनों में से एक ही होगा स्त्री या पुरुष । दोनों की शारीरिक भिन्नता के कारण ही एक दूसरे की जरूरत महसूस होती है । तब सहजीवन जीना अनिवार्य बन जाता है । सह जीवन के लिए शादी नामक बंधन और परिवार

नामक इकाई खड़ी हुई । जन्म हुआ समाज नामक संस्था का, दोनों की शारीरिक क्षमता भिन्न है । कमियाँ, चेतना, भिन्न है । शारीरिक रूप से पुरुष स्त्री से बलिष्ठ, स्त्री कोमल है । स्त्री–कोमलांगी है, जननी होने के कारण । पुरुष में शारीरिक क्षमता सुख–सुविधा साधन अर्जन करने हेतु है । संरक्षण और आत्मरक्षण का अधिकार दोनों को ही है । चेतना या मुक्ति की लड़ाई अधिकार या स्वामित्व पाने के लिए नहीं है । समान भाव, सम्मान, समानता के लिए है । यह जागृति या लड़ाई पुरुष की अन्यायकारी, अहंकारी, मानसिकता के प्रति जागृत होकर न्यायपूर्ण उत्तर पाने की है ।

आज के समय में ऐसा लग रहा है कि महिला किसी क्षेत्र में उपेक्षित रहना नहीं चाहती, पुरुष की स्वार्थवृत्ति उसकी समझ में आ गई है । वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समान सहभागिता चाहती है ।

''स्त्रियों की सदियों से, पुरुषों से यह अपेक्षा रही है, कि अब वह चैतन्य है प्रबुद्ध है, जो कुछ पुरुष उसे देना नहीं चाहता वह उसे लेना है, और यही जागृति ही चेतना है ।''[२]

संत विनोबा भावे का कहना है –

''स्वतंत्रता हमारा कर्म सिद्ध अधिकार है ।'' आज नारी कहती है कि वह जीवन के प्रत्येक कर्म में पुरुषों के साथ सहभागी रही है जीवन के प्रत्येक पहलूओं की जिम्मेदारी समान रूप से उठाती है तो भी जीवन में उसके साथ अन्याय क्यों ?[३]

हम जानते हैं कि सदियों से पुरुषों ने ही समाज के नीतिशास्त्र बनाये, उनमें पुरुष–स्वतंत्रता, पुरुष हित प्रधान हैं । और स्त्रियों को बंधन–दबाव में रखना चाहते हैं । नारी समाज का अंग होने के बाद भी उसका एक स्वतंत्र अस्तित्व है, उसकी भी आशाएँ, आकांक्षाएँ, इच्छाएँ, होती हैं । इस मनुष्य समाज में समरस, सुंदर, सफल जीवन जीना है तो किसी एक के स्वामित्व या दूसरे के दासत्व से नहीं होगा । ऐसा होगा तो जीवन में कष्ट–कलह और

कटु वैमनस्य पैदा होता है । ऐसे संबंधों को स्थिर बना नहीं सकते और जीवन असहय हो जाता है । इस भाव को हिन्दी साहित्य के प्रबुद्ध कवि मैथिलीशरण गुप्त जी ने इस प्रकार व्यक्त किया है –

''अधिकार खोकर बैठ रहना, यह महा दुष्कर्म है,
न्यायार्थ अपने बंधु को भी, दंड देना धर्म है ।
इस तत्त्व पर ही कौरवों से, पांडुओं का रण हुआ ।
जो भव्य भारत वर्ष के, कल्पान्त का कारण हुआ ।'' (४)

(ख) नारी चेतना – मुक्ति, ऐतिहासिक संदर्भ

विश्व की सभी नारियों ने सदैव ही अपने आपको समाज, धर्म, कानून, शिक्षा, अर्थ और संस्कृति आदि क्षेत्रों में उपेक्षित समझा है । वह पुरुषों के आश्रय में परतंत्र, पराश्रित और पराधीन महूस करती है ।

यह भावना धीरे धीरे सार्वजनिक बनकर समग्र नारी जगत की आवाज बन गई । स्त्रियाँ अपने आप के लिए जाग्रत हो गईं । उस जागृति को सबसे प्रथम अभियान का रूप दिया अमरिका की साराहहेल ने – जिसे नारी मुक्ति, चेतना आंदोलन की प्रथम प्रवर्तक महिला माना गया है । साराह हेल ने 'लेडीज़ मेगेज़ीन' नामक पत्रिका प्रकाशित की । इस पत्रिका के माध्यम से साराहहेल ने नारी मुक्ति, चेतना की आवाज पूरे विश्व में पहुँचा दी ।

२४ अक्तूबर–१७८८ को न्यू हेम्पशायर में साराह हेल का जन्म हुआ । उस समय पुरुष वर्चस्ववादी समाज था । स्त्रियों को गृहणी और पति संतान की सेवा तक मर्यादित माना जाता था । पुरुष प्रधान समाज के विरुद्ध साराह हेल ने अभियान शुरू किया – फलस्वरूप एलिजाबेथ नामक अमरीकी युवती को मेडिकल कालेज में प्रवेश दिलवाया वह प्रथम लेडी डॉक्टर बनी, यहाँ पर पुरुषों के प्रभाव पर साराह हेल ने विजय प्राप्त की ।

सारा हेल ने बोस्टन प्रांत की गरीब स्त्रियों के लिए काम किया । गंदगी, भुखमरी की जिंदगी से मुक्ति दिलाने के लिए उसे जागृत करने का काम किया । और सन् १८७६ में सारा हेल की मृत्यु हुई ।[५]

''आज अमरिका में चल रहे 'नारी मुक्ति आंदोलन-विश्व की बुद्धिमान स्त्रियों की जागृति, चर्चा का विषय रहा है । जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नीति-निर्धारण करते समय पुरुष-नारियों का सहयोग ले, दोनों मिलकर सहभागी, सुखद जीवन के नियमों को सामने रखते हुए अपनी सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक, सांस्कृतिक व्यवस्था बनाये ।''[६]

(ग) अमरिका में नारी मुक्ति आंदोलन

अमरिका में नारी मुक्ति आंदोलन का नेतृत्व करनेवाली बेट्टी फ्राइडन है । - उसका कहना है कि पुरुषों ने मनोवैज्ञानिक ढंग से मानसिक दबाव डालकर नारी समाज की मौलिक प्रतिभा को कुंठित कर दिया है । स्त्रियों को सेक्स, मातृत्व और परिवार की अन्य जिम्मेदारियों को निभाने के लिए ही योग्य माना है । परिणाम स्वरूप मजबूरन स्त्रियों की अन्य प्रतिभा कुंठित हुई है ।

बेट्टी फ्राइडन ने 'द फेमिनिन मिस्टिक' किताब लिखकर राष्ट्रीय महिला संगठन, नारी अधिकार, नारी चेतना, नारी मुक्ति आंदोलन की बातों को सक्रिय बनाने में योगदान दिया । फलस्वरूप २६ अगस्त, १९७० को अमरिकन स्त्रियों को मत देने का अधिकार मिला ।

'द फेमिनिन मिस्टिक के तथ्यों से यह बात साबित हुई कि विश्व युद्ध के बाद पुरुष समाज ने स्त्रियों को सेक्स, मातृत्व और गृहिणी की जिम्मेदारियों को वहन करने के लिए मानसिक रूप से मजबूर किया ।

बेट्टी फ्राइडन का मत है कि ''जननी रूप शारीरिक दृष्टि से प्रत्येक स्त्री-से जुड़ा है - इसलिए विवाह, SEX, मातृत्व और परिवार की भूमिका ही उसका क्षेत्र है - ऐसी मर्यादा लगाकर समाज में उसका स्थान दोयम दर्जे का,

सामान्य दुर्बल और दीन–हीन न माना जाये – अगर ऐसा है तो यह मानसिकता गलत–त्रुटि पूर्ण है ।''[७]

मीडिया का प्रभाव समाज पर ज्यादा है मीडिया अच्छी तरह से जानता है कि गृहिणी और अशिक्षित स्त्रियों को बाजारुं खरीददारी में ज्यादा रुचि है । व्यवसायों में जुड़ी नारियों को नहीं । कभी–कभी शिक्षित गृहिणियाँ भी अपने अकेलेपन से उबकर, मानसिक अभावों को भरने अपने अस्तित्व की रिक्तता को भरने मौज–शौक, भोग की विविध चीजें खरीदती रहती हैं ।

''घर–परिवार–बच्चे, इन सब के बीच में मेरा अस्तित्व क्या है ? या मेरी स्थिति क्या है ? यह प्रश्न सदा ही उसके भीतरी तत्त्व को झकझोरता है । अपनी स्थिति के प्रति जागृति ही नारी चेतना है ।''[८]

श्रीमती बेट्टी फ्राइडन का मानना है कि ''नारी मुक्ति आंादेलन का नारा समान काम के लिए समान काम के लिए समान वेतन ही नहीं है, उसके साथ अपने शरीर पर अपना वश हो । सजना है मुझे सजना के लिए वाले भाव शादी गर्भाधान–गर्भपात और गृहिणीत्व की जिम्मेदारियों का बोझ उन पर न लादा जाए । अपनी जीवन शैली तय करने का अधिकार मर्दों की तरह उसे भी मिले । जागरूक होकर देखें कि शिक्षा, साहित्य, पत्रकारिता या टी.वी. मिडिया के द्वारा नारी के शरीर को ही प्रकट किया जाता है । जैसे शरीर SEX ही उसकी पहचान है अपनी सार्थकता और जीवन का उद्‌देश्य है, ऐसे रूप के द्वारा ही समाज में नारियों की असुरक्षा उच्छृंखलता बढ़ी है ।''[९]

स्वामी विवेकानंद ने नारी स्वतंत्रता और स्त्री शिक्षा को महत्त्वपूर्ण माना है, कहा है कि ''संसार की सभी जातियाँ, नारियों का सम्मान करके ही महान हुई हैं, जो जाति नारी का सम्मान करना नहीं जानती वह न तो अतीत में उन्नति कर सकी है, और न आगे उन्नति कर सकेगी ।''[१०]

स्त्रियों के बारे में ओशो रजनीश के विचार कुछ इस प्रकार है – ''मैं कहना चाहता हूँ कि स्त्रियाँ न तो पुरुषों से हीन हैं और न समान हैं ।

स्त्रियाँ पुरुषों से भिन्न हैं, वे बिल्कुल भिन्न हैं । न उनके नीचे होने का सवाल है, न उनके समान होने का सवाल है, स्त्रियाँ पुरुषों से बिलकुल भिन्न हैं और जबतक स्त्रियाँ अपनी भिन्नता की भाषा में, अपने अलग व्यक्तित्व की भाषा में सोचना शुरू नहीं करेंगी तब तक या तो वे पुरुष की दास होंगी, या पुरुष की अनुयायी होंगी, और दोनों स्थितियाँ खतरनाक हैं ।''[११]

महात्मा गांधी के स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन में महिलाओं ने हिस्सा लिया, अपनी हिम्मत, साहस, शौर्य से आंदोलन को सफल बनाया । माँ कस्तुरबा, स्वरूपा रानी नहेरू, कमला नहेरू, सरोजिनी नायडू, अरुणा आसफअली, विजया लक्ष्मी पंडित, सुचित्रा कृपलानी, इंदिरा गांधी, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हजरतमहल, बेगम जीन्नत महल, अनंतीबाई लोधी, मेडम कामा आदि कई अनाम नारियों ने स्वतंत्रता संग्राम को सफल बनाने में अपना योगदान दिया ।

स्त्रियों की स्थिति में परिवर्तन सुधार, जागृति की प्रेरणा स्वाधीनता के दौरान ही मिली । इन महान नारियों ने रचनात्मक कार्य भी किये ।

''ब्रिटेन में महिलाओं को १९२८ में मताधिकार मिला । भारत में मताधिकार का आंदोलन १९१७ में हुआ, १९१९ में इस अधिकार को मान्य रखा । और १९२६ में पुरुषों के समान मताधिकार मिला । इसके लिए मार्गारेट कजिन्स ओर श्रीमती ऐनी बेसंटने कार्य किया । १८ दिसम्बर १९१७ में भारत में सरोजिनी नायडू के नेतृत्व में महिलाओं के पुनरुत्थान का प्रथम कार्य शुरू हुआ । लिंग के आधार पर भेदभाव दूर हो, समान वेतन, समान मताधिकार और उन्हें भी सामान्य नागरिक माना जाए, उन्हें भी शिक्षा प्राप्त करने का हक्क, सुविधा होनी चाहिए । फलस्वरूप – सन् १९५० में भारत के संविधान में महिलाओं को पूर्ण समान अधिकार दिये गये हैं ।''[१२]

''भारतीय नारी की वास्तविक स्थिति जानने के लिए जो प्रयत्न किये उससे यही तथ्य सामने आया कि हमारे देश के महिला जगत में नैतिक प्रबुद्धता है, किंतु आत्मनिर्भरता के साधन व कुशलता न होने से स्त्रियों में

स्वावलंबन, आत्मविश्वास के भाव नहीं हैं ''सबसे अधिक दुःख की बात यह है कि भारतीय स्त्रियों का जीवन विषमता की कहानी है ।''[१३]

(घ) भारतीय और पाश्चात्य अभिगम, दृष्टिकोण

दुनिया के नारी समाज को दो भागों में विभाजित कर सकते हैं । पूर्वी देश, पश्चिमी देश । पूर्वीय देशों की स्त्रियों की परिभाषा अलग है तो पश्चिमी देशों की स्त्रियों को भी अलग रूप से परिभाषित किया जा सकता है ।

पश्चिमी देशों की पहचान है, समृद्धि, विकास । वहाँ का समाज समृद्धि की दृष्टि से संपन्न है, परिणाम स्वरूप वहाँ भोगवाद विलासिता ही जीवनशैली है । वहाँ स्त्रियों की पहचान है, स्वतंत्रता, विलासिता, भोगवाद, मुक्त यौन जीवन और स्वच्छंदता । परिणाम स्वरूप वहाँ स्त्री समाज की नैतिकता की परिभाषा ही अलग है, वहाँ के स्त्री समाज में समस्याएँ ज्यादा हैं ।

वहाँ स्त्रियाँ, उपभोग, कामुकता, मुक्त यौन जीवन को ही स्वतंत्रता, बुद्धिमत्ता और सांस्कृतिक विकास मानकर, उसे ही नारी चेतना का नाम देकर अपने जीवन में अपना रही हैं । अपने आप को आधुनिक कहलाने के लिए यौन अतिरेक, नैतिकता का विरोध, स्वार्थी क्षणिक सुख के लिए देह को ही महत्त्वपूर्ण मान रही हैं ।

जबकि पूर्वीय देशों में सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण है परिवार, परंपरा, श्रद्धा और नैतिकता । इन्हीं बातों को ही धर्म और पवित्रता का दर्जा दिया जाता है । शालीनता और संयमी अनुशासनबद्ध जीवन, मर्यादित यौन जीवन, पतिव्रत धर्म आदि बातें पूर्वीय देशों की नारियों की पहचान है ।

पूर्वीय देशों की नारियों आधुनिक युग में शारीरिक रूप से अवश्य आधुनिक हैं । पर आत्मा की दृष्टि से पुरानी नैतिकतावादी हैं, मर्यादावादी हैं । व्यभिचार को पाप माना जाता है । वह भोग विलास के लिए नहीं, त्याग तृप्ति

के लिए जीती है । चारित्र्य भ्रष्ट होने पर अपने आप को खत्म कर देती हैं ।

पश्चिम की नारियों में देहिक नग्नता है । पुरुषों के प्रति उसका आकर्षण सिर्फ नये जूते, कपड़े, पुराने हो जाने पर उतार कर फेंक दिये जाते हैं उसी प्रकार है । पुरुष संग, दैहिक सुख, वैभवी जीवन को ही नैतिक मान रही है । पश्चिमी जगत में स्वच्छंदता, भोगवाद मुक्त यौनाचरण आदि ही संस्कार है । समाज में विकृतियाँ हैं । नारी भी कुंठा, उन्मुक्तता, अश्लीलता से ग्रस्त है । तो क्या यही नारी मुक्ति या चेतना है ?

नारी मुक्ति या चेतना में सिर्फ देह नहीं भावना, संस्कार और जिम्मेदारियाँ भी हैं । स्त्री–पुरुष दोनों एक तराजू के समान पलड़े हैं । भारत जैसे प्राचीन, सभ्य देश में नारी का शोषण, उत्पीड़न पश्चिम की तुलना में कम है । भारत में नारी सिर्फ शरीर नहीं है, वह आत्मा–मन–बुद्धि और शरीर है ।

पूर्वीय देशों और पश्चिमी देशों की नारियों की नारी चेतना की परिभाषा अलग है । दोनों के लिए समान मापदंड नहीं हैं ।

पूर्वीय देशों की स्त्रियों के पास अपने चरित्र के पवित्र संस्कार हैं । अपने अस्तित्व की पहचान के लिए, निर्भरता के लिए उसे जो न्यायपूर्ण हो, स्त्री–पुरुष दोनों को जोड़नेवाला हो, वही चाहिए । पश्चिमी देशों की नारियों के पास स्वतंत्रता, समृद्धि, समय सबकुछ है । मगर नारी चेतना मुक्ति स्वतंत्रता के नाम पर उसे जो कुछ चाहिए वह है, मुक्त यौनाचरण, भोग और स्वच्छंदता ।

जब कि भारतीय नारी अपने जीवन में पुरुष की सहधर्मिणी, सहभागी, जीवन सहचरी है । सुख में और दुःख में अपने जीवन के लिए, वह त्याग, संघर्ष करने के लिए तैयार है । पूर्वीय देशों की नारियाँ विश्व के लिए एक अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत करती हैं ।

''नारी समाज की महत्त्वपूर्ण इकाई है । अपने आप में पूर्ण व्यक्तित्व है । उसमें सज्जनता का प्रत्येक गुण मौजूद है, मनबुद्धि–आत्मा और दृढ़ संकल्प को लेकर वह ऐसा पथ प्रदर्शित करती है कि पुरुष अपने जीवन का मार्ग तय कर सके । और इसलिए आवश्यकता है कि ऐसे पूर्ण व्यक्तित्व को अभिव्यक्त होने का मौका दिया जाय ।

क्योंकि नारी जब दृढ़ संकल्पित होती है तो श्री से दुर्गा और सत्‌धर्म की रक्षार्थ वह देवी से महादेवी, महाकाली भी बन जाती है । वह साक्षात् क्रांति बन जाती है । तब विश्व का प्रत्येक जन उसकी पूजा करता है । उदाहरण के लिए मधर टेरेसा ।''[१४]

नारी भी अपने आप में वैश्विक हित की संभावना लेकर जिये, कि समाज उसके नेतृत्व से प्रेरणा ग्रहण करे, कायर पुरुषों की मानसिकता ऐसी जागृत नारियों से डर रही है । मगर तंदुरस्त मानसिकता वाला, कर्मशील, उदार, आत्मविश्वासी पुरुष नारी जागृति को अपनाता है, और नारी के साथ तादात्म्य पाकर संवाद करता है । कायर, निर्बल, कामचोर पुरुष ही परंपराओं के माध्यम से, स्त्रियों को बंधन में रखना चाहेगा । पुरुषों को अपनी संकीर्ण मानसिकता को छोड़ नारी जागृति के पक्ष में सहयोग देना चाहिए ।

(ड) नारी चेतना से तात्पर्य

नारी मुक्ति या चेतना में गांधीजी का योगदान भी रहा है । स्वतंत्रता पूर्व ही गांधीजी के नेतृत्व में राष्ट्रमुक्ति संघर्ष जब सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक पक्षों को लेकर चला तो नारी मुक्ति के लिए भी भारतीय जन–मानस में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ और इसका कारण गांधीजी की लेखनी और वाणी थी ।

''क्योंकि एकबार जब किसीने गांधीजी से पूछा कि स्त्रियों के सामाजिक कामों में आने से क्या घरेलू उत्तरदायित्वों की अवहेलना नहीं होगी ? तो

गांधीजी का उत्तर था ''मेरे विचार से महिलाओं की पारिवारिक गुलामी हमारी बर्बरता का उदाहरण है । अब वह समय है जब हमारा स्त्रित्व इन दुराग्रहों से मुक्त हो चुका है । स्त्रियों के जीवन का सारा समय पारिवारिक कर्तव्यों के लिए ही नहीं होना चाहिए ।[१५]

नारी मुक्ति स्वातंत्र्य, या चेतना की कल्पना और विचारधारा पश्चिमी चिंतन का ही प्रभाव है । नारी स्वतंत्रता का तात्पर्य यह नहीं है कि नारियों को पारिवारिक अथवा सामाजिक बंधनों से मुक्त होना है, और अपने दायित्वों से मुँह मोड़कर स्वच्छंद जीवन व्यतीत करना है, किंतु व्यक्ति स्वतंत्रता के युग में नारी को भी पुरुषों की तरह वैयक्तिक, स्वतंत्रता होनी चाहिए । अपने विचार, अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए उस पर किसी की मर्जी न लादी जाये । उसे परम्परा, रूढ़ियों की गुलामी जबरदस्ती न करनी पड़े । उसे अपने व्यक्तित्व के विकास के लिए पुरुष की भाँति ही सुविधा और अवसर प्राप्त हों । उसे भी मानवता की दृष्टि से देखा जाय उसे वस्तु की भाँति केवल उपयोग में न लाया जाये ।

नारी जागरण एवं नारी शिक्षाने नारी को जागरूक बनाया और विभिन्न व्यवसायों में पदार्पण करके नारी ने आत्मनिर्भरता प्राप्त की है । आज की कामकाजी, नौकरी पेशा व्यावसायिक नारी सिर्फ आत्मनिर्भर ही है ऐसा नहीं वरन पारिवारिक दायित्वों का भी निर्वाह करने में सक्षम है ।

महादेवी वर्मा का मानना है कि ''भारतीय नारी जिस दिन अपने संपूर्ण प्राणवेग–से जाग सके, उस दिन उसकी गति रोकना किसी के लिए संभव नहीं है । उसके अधिकार न भिक्षा वृत्ति से मिले हैं न मिलेंगे, क्योंकि वे उसकी आदान–प्रदान योग्य वस्तुओं से भिन्न हैं । समस्या का समाधान समस्या के ज्ञान पर निर्भर है ।''[१६]

''आधुनिक युग में नारी चेतना से प्रभावित नारी के पास अपने विचार है, व्यक्तित्व है, अनुभूति है, प्रश्न हैं, किंतु समस्याओं के लिए समाधान नहीं

है, किंतु अभिव्यक्ति का साहस है, यह साहस ही चेतना है, जीवंतता है जो समाधान की ओर अग्रसर है ।''[१७]

(च) नारी चेतना, विषयक विभिन्न दृष्टिकोण

प्रस्तुत अनुसंधान के विषय की केन्द्र उपन्यासकार श्री शिवानी जी ने नारी चेतना के बारे में अपना मत इस प्रकार दिया है –

''शिवानीजी का मानना है कि भारतीय नारी को वैयक्तिक स्वतंत्रता देने पर भी उसके मन में अनजाने ही परम्परागत पतिव्रत संस्कार इतने प्रबल हैं कि विषम से विषम परिस्थिति में भी वह अपनी स्वतंत्रता का दुरुपयोग नहीं करती ।''[१८]

तो यही है नारी चेतना जो स्वयं अपनी बुद्धि और भावों के द्वारा समझे, प्रत्येक वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति को तराजू में रखकर तोले, तय करे कि उसके लिए क्या योग्य है क्या नहीं !

शिवानीजी ने स्पष्ट किया है कि वर्तमान युग में नारी को पुरुष की भांति समान अवसर और स्थान मिलने लगा है । नारी पुरुष की अनुकर्ता मात्र–न होकर अपने स्वतंत्र अस्तित्व के प्रति जागरूक है । समाज के विभिन्न कर्मक्षेत्रों में आगे बढ़कर स्त्रीने परम्परागत अबला के मूल्य के स्थान पर सबला नारी के मूल्य की प्रतिष्ठा की है ।[१९]

हिन्दी साहित्य के जाने–माने लेखक राजेन्द्र यादव का मानना है कि ''आज स्त्री–सदियों के बाद एक भरपूर खुली साँस ले पाने में समर्थ है । परम्परागत समाज की नींव अगर स्त्री की शर्मिंदगी पर टिकी थी, तो वह हिल उठी है । यदि आर्थिक, आत्मनिर्भरता ही स्वाधीनता की कुंजी है तो जब तक स्त्री के पास देह है, और संसार के पास पुरुष तब तक स्त्री को चिंता की क्या जरूरत ? जरूरत है तो देह को पुरुष के स्वामित्व से मुक्त करके अपने अधिकार में लेने की क्योंकि यौन–सुचिता, पतिव्रत, सतीत्व जैसे मूल्य

स्त्री के सम्मान का नहीं, पुरुष के अहंकार का, हीनता और असुरक्षा का पैमाना तथा पितृसत्ता के मूल्य हैं – स्त्री की बेड़ियाँ हैं । जिसने ये बेडियाँ उतार दी हैं वह स्त्री विशिष्ट है ।[२०]

"डॉ. शशिप्रभा शास्त्री का मानना है कि नारी शिक्षित होने के कारण उसकी अपनी व्यक्तिगत मांगें हैं – वह अपने व्यक्तित्व को पति के साथ विलीन नहीं कर सकती, यह विलीन करना उसकी प्रकृति–से अनुकूल नहीं है । वह अपने व्यक्तित्व को अलग से रखना चाहती है ।"[२१]

नारी चेतना के बारे में लेखिका वीणा मिश्र अपने लेख में इस प्रकार उदाहरण देती है । "चेतना की आराधना के अध्याय में नई सदी की नौ जवान लेखिका कु. ज्योति शुक्ल की रचनाओं का उल्लेख अवश्य करूँगी, राष्ट्रीय संकट के रूप में कारगिल युद्ध के बाद के समय में महिला कौन–सी भूमिका ग्रहण करना चाहती है, उसका उदाहरण है, "एक और झाँसी की रानी" कहानी । जिस में एक डॉक्टर स्त्री अपने पति की मृत्यु का शोक ना मनाकर, कारगिल, सैनिक, मौर्चे पर, दाह संस्कार के बाद चली जाती है उसकी अलौकिक वीरता पर उसे राष्ट्रपति पुरस्कार देते हुए कहते है कि हमने १८५७ की झाँसी की रानी को तो देखा नहीं लेकिन १६१६ की झाँसी की रानी प्रत्यक्ष है । "इसी कहानी में नायिका अपने दृढ़ चरित्र का परिचय देती है । जो निश्चय ही आज की नारी का प्रतिबिम्ब है, वह नारी जो अन्याय नहीं सहती अपने कैरियर के प्रति सजग है, प्रेम के प्रति समर्पित तथा देश की आन–बान तथा शान के लिए आज–भी जीवन होम करने को तैयार है । इस कहानी को 'तारादेवी स्मृति' प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है ।"[२२]

गांधीजी औरत के हक का समर्थन करते हुए अपने लेख में लिखते हैं कि "आदमी ने औरत को अपने अधीन मान लिया है, और औरत ने भी सुविधा तथा सुरक्षा जानकर इस अधीनता को स्वीकार कर लिया है । इस प्रकार दोनों के लिए पतन का पथ पकड़ लेना सरल हो गया । नारी भूले कि

वह पुरुष के भोग की वस्तु है या हो सकती है । सैद्धांतिक रूप–से स्त्री–पुरुष जैसे एक हैं वैसे ही उनकी स्मस्याएँ तथा अनुभूतियाँ भी एक हैं दोनों में एक ही आत्मा है । पर स्त्री, पुरुष से अधिक उदार है क्योंकि वह आज भी आत्मबलिदान, मौन, कष्ट सहन कर नम्रता–विश्वास और ज्ञान की प्रतिमा है । पुरुष जिन बुराइयों के लिए जिम्मेदार है, उसमें सबसे बड़ी बुराई उसके द्वारा उसकी अर्धांगिनी का दुरुपयोग है ।''[२३]

''स्त्रियों के अधिकारों के प्रश्न पर तो मैं किसी प्रकार का समझौता करने के लिए तेयार नहीं हूँ । वह तो जन्मसिद्ध है, मेरी राय में उन्हें ऐसी किसी प्रकार की भी असुविधा नहीं होनी चाहिए, जो पुरुषों के लिए नहीं है । स्त्री घर की स्वामिनी है । पुरुष रोटी कमाता है वह उसे सबको बाँटती और खिलाती है । घर का, बच्चों का पालन करती है । राष्ट्र की वह माता है । यदि वह रक्षा न करे तो सारी जाति नष्ट हो जाय । अतः अधिकारों का प्रश्न ही कहाँ उठता है ?''

नारी यह न भूले कि घर उसका पहला कार्यक्षेत्र है । उसको शिक्षा ऐसी ही और इसलिए मिलनी चाहिए कि वह घर का कुशल संचालन कर सके और अपने बच्चों को श्रेष्ठ नागरिक बनाए । जीवन में जो कुछ शुद्ध और धार्मिक है उन सब की विशेष संरक्षिका है । वे त्याग–सेवा–धर्म का मूर्तिमंत स्वरूप है, प्रतीक है ।''[२४]

''स्त्रियों में प्रचलित तत्कालीन पर्दा प्रथा का विरोध करते हुए गांधीजी ने लिखा था – पर्दा वहम ही नहीं है उसमें मुझे पाप की बू आती है, पर्दा किस–से रखे ? क्या पुरुष मात्र विषयासक्त रहते हैं ? क्या स्त्री अपनी पवित्रता बगैर पर्दा नहीं रख सकती है ? पवित्रता मानसिक बात है, जो सभी पुरुषों में होनी चाहिए । यदि इस बुद्धि प्रधान युग में स्त्री–धर्म की रक्षा करना चाहती है तो उसे दरिद्र नारायण की सेवा करनी होगी, शिक्षण लेना होगा । दरिद्र नारायण की सेवा करने का अर्थ खादी प्रचार, कांतना इत्यादि,

हरिजन सेवा का अर्थ अस्पृश्यता रूपी कलंक धोना, ये दो बड़े भगवान के कार्य हैं और विद्या पाने का कार्य, परदा रखने के साथ कभी नहीं चल सकता है । पर्दा रखकर सीता रामजी के साथ जंगलों में भटकी होंगी ? सीता से पवित्र स्त्री जगत में कभी हुई है ? बहनो पर्दा तोड़ो, धर्म रखो ।''[२५]

श्री अनुराधा देरासरी का मानना है कि आज की आधुनिक भारतीय स्त्रियों को अपने ध्येय के लिए स्त्री पुरुष के 'जेन्डर' भेदभावों को हटाकर जीवन में सक्रिय होना जरूरी है । यह जानकर भी आश्चर्य होगा कि आज २००७ में विश्व में सबसे ज्यादा वेतन प्राप्त करनेवाली ओपराहन विनफ्रे भी स्त्री हैं ।

''सामान्य भारतीय स्त्री अपनी सामान्य स्थितियों में भी दृढ़ संकल्प, खंत, विश्वास और समझदारी से काम करके चुनौतियों को भी पार कर सकती है ।''[२६]

सौंदर्य और चेतना के बारे में भी अनुराधा देरासरी का मानना है कि सौंदर्य का संबंध चेतना के साथ जुडा है । इसलिए सौंदर्य में भी आंतरिक चेतना आवश्यक है । जो स्त्रियों के आत्मविश्वास को बढ़ावा दे ।

पुराने समय में, शायद २००० तक नारीत्व की यही व्याख्या थी कि जो रोजमर्रा की पारिवारिक जिम्मेदारियों को अच्छी तरह उठाती है – वही स्त्रीत्व से परिपूर्ण नारी है । स्त्रियों का आंतरिक सौंदर्य परिवार तक ही मर्यादित था और नारी को बाह्य सौंदर्य में उसका वर्ण आता था ।

''आज स्त्री पारिवारिक जिम्मेदारियों के साथ अपने सौंदर्य के प्रति भी जागृत हो गई है । गृह, परिवार, समाज और नौकरी, इन्हीं बातों में वह संतुलन भी करने लगी है । सौंदर्य और आत्मविश्वास को चोली दामन का रिश्ता है यह वह समझ चुकी है और यह जागृति सिर्फ अमीर वर्गों तक मर्यादित है ऐसा नहीं, उच्च, मध्यम वर्ग की और सामान्य वर्ग की स्त्रियाँ भी

अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों के साथ स्वच्छता सुंदरता को महत्त्वपूर्ण मानने लगी हैं ।"[२७]

"भारत के महान–तत्त्वचिंतक ओशो रजनीशजी का मानना है कि दुनियाँ के सभी अमानवीय व्यवहार स्त्रियों के साथ ज्यादा हुए हैं रजनीशजी का कहना है कि इस समस्या का एक ही समाधान है कि शादी लग्न ही बंद कर देना ।" हजारों सालों से यातनाओं को सह रही स्त्रियाँ, स्वतंत्रता और समानता की बातें करती हैं तो वह बिलकुल साहजिक है । मगर रजनीशजी का कहना है कि अब जो स्त्री मुक्ति का आंदोलन चल रहा है मैं उसके पक्ष में नहीं हूँ । उसने प्रतिक्रियात्मक रूप ले लिया है । तो यह वास्तविक क्रांति नहीं है – यह तो पुरुषों की नकल (प्रतिलिपि) बनने का प्रयास है – याद रखना कि नकल आपको समान नहीं बनाती । नकल आपको प्रतिलिपि बना देती है । मौलिकता मौलिक ही होनी चाहिए । प्रत्येक कार्य पुरुषों की तरह करने में स्वतंत्रता अवश्य होगी लेकिन उसमें आकर्षण नहीं होगा, प्रणय नहीं होगा, काव्य नहीं होगा ।

"समानता एक बात है – समरूपता बिलकुल अलग बात है । अलग दृष्टि है । रजनीश जी ने कहा है कि स्त्रियाँ पुरुष जैसी बनने का प्रयास न करें, आपके विकास के लिए, समान अवसर उपलब्ध हैं, मगर उसका अर्थ यही है कि स्त्रियों को अद्वितीय, अलग बनकर रहना होगा आप पुरुष नहीं है और स्त्रियों को पुरुष बनने की जरूरत भी नहीं है । क्योंकि पुरुषों के पास विशेष कुछ नहीं है ।"[२८]

मनोचिकित्सक – हरेन्द्र रावल नारी चेतना के बारे में लिखने हैं कि – "विशेषज्ञों का मानना है कि स्त्रियों के दिमाग को उद्दीप्त करने के लिए चिंतित, विक्षिप्त करने के लिए कई कारण हैं – स्थितियाँ हैं । मगर आज की पढ़ी लिखी बौद्धिक स्त्रियाँ अपनी विपरीत परिस्थितियों में भी समाधान, मार्ग, हल ढूँढ़ लेती हैं । प्रथम वह बनी हुई घटना, बात पर पर्दा डाल देती

है, दूसरे वह भावना के वश में नहीं होती । तीसरे असहाय परिस्थितियों में वह स्थिर होने के लिए तैयार नहीं है । किसी भी प्रकार के अभिप्राय नहीं देती । चौथे अस्वस्थता छुपाना नहीं चाहती, पाँचवे पतिदेवों से मुक्त होना भी नहीं चाहती । लेकिन इतना जरूर कि वह असामान्य असाहजिक परिस्थितियों में लम्बे समय तक रहना नहीं चाहती ।

''तत्त्वचिंतकों का मानना है कि आज की बौद्धिक नारी कठिनाइयों से मार्ग निकालने के लिए, असामान्य से सामान्य बनने के लिए मेन्युअल वर्क (गृहकार्य) कर लेती है ।''[२६]

और जाने माने मनोचिकित्सक डॉ. हंसल भचेच कुछ इस प्रकार कहते हैं – ''मानव जाति के इतिहास से ही प्रेम की नैसर्गिक ताकत स्त्रियों के पास रही है, मगर अब स्त्रियों की मानसिकता में जो बदलाव आ रहे हैं, उससे वह यह ताकत गँवा रही है, एक निश्चित वर्ग ऐसा है जिसमें स्त्रियाँ भी शामिल हैं वह अपने दिमाग से सोचती है और यह परिवर्तन स्त्रियों को लाभदायी है – क्योंकि भावनाओं के वेग और बहकावे में जो दुःख उठाती है, उससे मुक्ति मिल जायेगी । लेकिन हमें यह याद रखना आवश्यक है कि व्यक्तित्व के पूर्ण विकास के लिए, दिमाग की नैसर्गिक स्वस्थता के लिए भावना सभर स्त्री–पुरुष संबंध अनिवार्य है ।

''वैवाहिक जीवन का अर्थ एक–दूसरे के साथ रहना–ही नहीं है, एक–दूसरे को उष्मा, हुँफ, प्रसन्नता–विश्वास देना है इसी तरह जीना ही जीवन है ऐसी मानसिकता स्त्री–पुरुष दोनों में विकसित होनी चाहिए और यह कोई कठिन कार्य नहीं है ।''[३०]

आधुनिक युग की महिला लेखिका ज्योति शुक्ल का मानना है कि '' अपने नारीत्व स्त्रीत्व के प्रति जागरूक, आग्रहशील नारी से रूढ़ीवादी लोग डरते हैं । फिर भी उसके न्यायपूर्ण अधिकारों को पुरुष प्रधान समाज ने सदियों से मान्यता नहीं दी है । उल्टा उसका शील–चरित्र स्त्रीत्व–शंका के दायरे में आ

जाता है । सामाजिक तौर पर स्त्री का स्थान उसकी नियति आदि के बारे में सोचने का सिलसिला आधुनिक युग में शुरू हुआ उसके प्रणेता समाज सुधारक ही थे । स्त्री जीवन, स्त्री अस्मिता के कई त्रासद पक्षों को उभारा गया किंतु इन सब में स्त्री सिर्फ सहानुभुति ही पा सकी है । प्रत्येक बड़ी रचनाकार के मन में स्त्री की एक आदर्श प्रतिमा ही है, जिसमें नारी जीवन के साथ, समाज, घर, परिवार है । उसमें ही स्त्री का जीवन है ।''[३१]

''नारी चेतना की पक्षधर डॉ. रंजनाजी अरगडे नारी चेतना के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखती हैं कि ''नारी चेतना की बात हिन्दी साहित्य के देशकाल में एक नई बात है एक हजार वर्षों के साहित्येतिहास में नारी चेतना की बात नई है, 'चेतना' अर्थात् अपने होने, अपने अस्तित्व के प्रति जागृति ।''[३२]

''साहित्य में नारी चेतना का अर्थ है नारी चित्रण और नारी लेखन । पुरुष रचनाकारों में व्यक्त नारी चेतना स्त्री रचनाकारों में व्यक्त नारी चेतना । आज नारी विमर्श की बोलबाला है । हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में – गद्य साहित्य में नारी चेतना की झलक कई दृष्टियों से देखने को मिली है । नारी का एक स्वतंत्र व्यक्तित्व नागरिक अधिकारों से युक्त रूप ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर एक नई घटना ही है । स्त्रियों को केवल शरीर प्रकृति और धर्म में न बाँधकर, सांस्कृतिक रूप से सीमित न करके विस्तृत सामाजिक परिवेश में देखने की आवश्यकता है ।''[३३]

हिन्दी साहित्य के साहित्यकारों ने नारी चरित्र को लेकर कलम चलाई इसके बारे में वीणा मिश्र ने इस प्रकार लिखा है – ''भारतेन्दु हरिश्चंद्र, जयशंकर प्रसाद, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी या प्रेमचंदजी आदि अनेक साहित्यकारों ने स्त्री के चरित्र पर अनेक दृष्टिकोणों से लिखा – गृहस्थी, पति–सास–ससुर–पारिवारिक जिम्मेदारी, अतिथि सेवा आदि अवधारणाओं पर कहानी, उपन्यास लिखे गए । नारी शिक्षा, विधवाओं की दुर्दशा, दहेज समस्या,

विधवा विवाह जैसे सम्यक् विषयों को लेकर हिन्दी साहित्य में लिखा गया । और समाज को सोचने के लिए मजबूर किया । सांस्कृतिक संक्रमण को लेकर साहित्य में नारी के बदले हुए स्वरूप अंतर्द्वन्द्व को प्रस्तुत किया गया । प्रेमचंदजी के साहित्य की प्रत्येक स्त्री–पात्र आदर्शवादी व्यवहारिक और गांधीजी के प्रभाव में राजनैतिक क्षेत्र में समाज सुधारक दिखाई दियो ।"[३४]

"प्रेमचंदोत्तर काल में साहित्यकारों की धारणा में परिवर्तन हुआ था । रूढ़ियाँ, सामाजिक बंधन के बोझ से स्त्रियाँ मृतः प्राय हो गई थीं । साहित्यकारों को भी इस दायित्व का भी बोध हुआ कि समाज के आधे भाग को यदि इसी प्रकार निष्प्राण होने दिया तो देश की प्रगति अधूरी ही रह जायेगी । इसलिए उन्होंने नारी जीवन की विषमताओं को चित्रित किया । जिससे उसे समाज की सहानुभूति और सराहना मिले तथा अपनी शक्ति, सामर्थ्य का उन्हें बोध हो । इस दायित्व को सर्वाधिक वहन किया नारी लेखिकाओं ने । नारी की स्मस्याओं के चित्रण में उसके जीवन के अभावों और आवश्यकताओं को मुक्त हृदय से व्यक्त किया । आर्थिक–सामाजिक पारिवारिक–सांस्कृतिक बंधनों का भी वर्णन किया ।"[३५]

और नारी लेखिकाओं ने अपनी पहचान बनाई है । आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नारी के दर्शन हो रहे हैं । उषा–प्रियंवदा, ऋता शुक्ला, श्रीमती कमल कुमार, कुसुम अंसल, कृष्णा अग्निहोत्री, चित्रा मुद्गल, कृष्णा सोबती, दीप्ति खंडेलवाल, नमितासिंह, नासिरा शर्मा, पदमा सचदेवा, प्रभा खेतान, मन्नूभंडारी, मंजुल भगत, मणिका मोहिनी, मालती जोशी, महेरुन्निसा परवेज, मैत्रेयी पुष्या, मृदुला गर्ग, मृणाल पांडे, राजी सेठ, शिवानी, शशिप्रभा शास्त्री, सूर्यबाला जैसी विदुषी नारियाँ समाज निर्माण के कार्य में जुड़ी हुई हैं, भारत वर्ष में स्त्री से संबंधित समस्याओं जैसे अंधविश्वास, तलाक, विधवा विवाह, कुरीतियों और महत्त्वपूर्ण कानूनों की भूमिकाओं को लेकर लेखिकाओं ने गहन

चिंतन किया है । अपने मन को, अपनी इच्छा, अपेक्षाएँ, अस्मिता से जुड़े सवालों को, अपने जीवन संघर्षों को, अपने ढंग–से अपनी भाषा में लिखना शुरू किया । यह वास्तविकता के खिलाफ एक अभियान था । अपने वजूद के प्रति जागरूक सजग–स्त्री सामने आई । और इस प्रकार स्त्री लेखन को नई पहचान मिली, स्त्री जीवन के कई पहलू–संदर्भ मुददे उभारे गए हैं ।

नारी अस्तित्व को लेकर डॉ. हेमा देवरानी जी लिखती हैं कि – ''आज नारी अपने अस्तित्व की सुरक्षा के लिए परम्परागत मूल्यों से लड़ रही है । इन लेखिकाओं की नारियाँ आँचल में दूध और आँखों में पानी लेकर नहीं बढ़ती, इनके साहित्य की नारी अंगारों के बीच दहकती है । लेखिकाओं ने 'स्त्री' केन्द्र में रखकर अनेक स्मस्याएँ प्रस्तुत की हैं । महिलाएँ धीरे धीरे यह महसूस करने लगी हैं कि इन्सान के रूप में उनका भी एक निजी व्यक्तित्व है ।

जैसे नासिरा शर्मा के ''ठीकरे की मँगनी'' उपन्यास की नायिका कहती है – एक घर औरत का अपना भी हो सकता है – जो उसके बाप और शौहर के घर से अलग उसकी मेहनत और पहचान का हो ।''[३६]

कामकाजी नारियों के बारे में वीणा मिश्र जी कहती हैं कि – ''हालाँकि छठे दशक में भी नारियों का नौकरी करना हमारे भारतीय समाज में अच्छा नहीं माना जाता था, लेकिन फिर भी वह स्वीकार्य होने लगा था । समाज में एक वर्ग शिक्षित गृहिणी चाहता था, जो गृहिणीत्व का उत्तरदायित्व निभाये और घर में आर्थिक बोझ भी उठाये । बाहर निकलकर नौकरी करनेवाली स्त्रियों के प्रति हकारात्मक अभिगम रखा गया । नारी को घर–परिवार की चार दिवारी लाँधकर बाहर की दुनिया के कर्मक्षेत्र में पदार्पण करना पड़ा । सामान्य गरीब वर्ग की नारियाँ तो बहुत समय से अर्थोपाजन में जुड़ी हुई हैं । कई नारियों को पिता या पति का निखटू–शराबीपन, कामचोरी आदि कारणों से काम करना

पड़ता था । कामकाजी नारी की अपनी कई समस्याएँ हैं । घर, बाहर दोनों की जिम्मेदारी वह उठाती है कभी कभी पारिवारिक जिम्मेदारियों को अविवाहित रहकर भी उठाती है, यह उसका हौंसला चेतना, अस्मिता है ।"[३७]

कभी कभी महिलाएँ, अशिक्षित हों या शिक्षित घर की सारी व्यवस्था का दायित्व उठाने में वह तन–मन–से घर के लिए समर्पित होती हैं । घर में खाना बनाना, कपड़े, बर्तन, अतिथियों की व्यवस्था, स्वागत, सत्कार, सामाजिक व्यवहार, लेन–देन, सबकुछ उसे देखना पड़ता है । भारतीय समाज में उच्चशिक्षा प्राप्त करने के बाद भी स्त्रियों को ही पारिवारिक दायित्वों को वहन करना पड़ता है । घरेलू स्त्रियों की भी एक विशेषता होती है कि लेन–देन, रूपये–पैसे खर्च करने में कुशल, सावधान, जागृत होती है, दुरंदेशी होती है । साथ साथ उसमें आत्मीयता भी बिलकुल साहजिक, प्राकृतिक रूप से होती है । बनाव, शृंगार, पति, बच्चे, पास पड़ोश में व्यवहार रखती है, सास–ससुर की सेवा और बच्चों के भविष्य की भी चिंता उसे रहती है ।

अशिक्षित होते हुए भी कई स्त्रियाँ उनके नैर्सगिक संस्कारों के कारण सुशिक्षित महिलाओं से भी अधिक उदार, सहनशील और न्याय संगत हैं । ऐसी महिलाएँ अपने जीवन में संपूर्ण गरिमा और ममत्व का परिचय देती हैं अपनी भावनाओं एवं विचारात्मक स्तर पर वे कमजोर नहीं हैं । उनमें भी अपनी निजी चेतना सामर्थ्य है ।

मजदूरी करके अपना जीवन निर्वाह करने वाले वर्गों की नारियों की चेतना कुछ अलग है । कई बार पति कामचोर, आलसी, झूठा, शराबी, बेशरम, निकम्मा है, तो स्वयं तो कुछ करता नहीं, पत्नी को मारपीट करके शराब के पैसे भी उससे छीन लेता है । तब कई नारियाँ ऐसी भी है जो अपने शराबी पति को पैसे नहीं देती, वरन् घर से मार भगाती है । अपने बच्चों को मजदूरी करके, दूसरे लोगों के घरकाम करके पालती है । कभी–कभी मजदूरी

करने अपने छोटे बच्चों को कोठरी में बंद करके, या दूसरों के भरोसे छोड़कर काम करने जाती है ।

क्योंकि आर्थिक अभाव के समय में उसे अपने हाथ–पैर के अतिरिक्त उन्हें किसी का सहारा नहीं दिखाई पड़ता । दूसरों के घर का काम, घर की सफाई, खाना बनाना, खेत–खलिहानों में पिसाई, कटाई आदि सबकुछ करके परिवारवालों के लिए रोटी लाती है । पास–पड़ोस या बड़े घरों में अच्छे बुरे प्रसंग पर काम करके अपने आर्थिक अभावों को मिटाती है ।

फिर भी अब परंपरा और रूढ़िवाद, संस्कार आदि को ही सहारा मानकर जिन्दगी जीनेवाली औरत बदल चुकी है । परंपरा को भी अपने दिमाग से समझती है, दूसरों को भी समझाती है । अब सिर्फ ब्रत, अनुष्ठान, रीति–रिवाज उसके जीवन में इतने महत्त्वपूर्ण नहीं हैं । ऐसी पारंपारिक धार्मिक बातों को भी अपने समय, संजोग, जरूरतों के अनुसार ही अपनाती है । थोड़ा संघर्ष आधुनिकता और परंपरा को लेकर उसके दिमाग में है । यौन स्वतंत्रता आधुनिक युग के अंतर्गत है । किन्तु नैतिक मानदंड के आधार पर आज भी उसे जल्दी नहीं अपनाती ।

''मन्नू भंडारी ने 'बंद दराजों के साथ' उपन्यास में मंजरी नामक पात्र से कहलवाया है कि ''आज के युग में समाधान, संतोष की आशा करना ही मूर्खता है, क्योंकि आज जिंदगी का हर पहलू समस्या होकर ही आता है जिसे सुलझाया नहीं जा सकता । केवल भोगा–जा सकता है ।''[३८]

आज भी संपूर्ण रूप से समय नहीं बदल गया पढ़ी लिखी, नौकरी करनेवाली, कामकाजी नारी और पढ़ी लिखी गृहिणियाँ भी कभी–कभी कहीं पर असंतुष्ट हैं, पति का विरोध भी करना चाहती हैं । तो सोचती है समाज, घर, परिवार, रिश्तेवालें क्या कहेंगे ? उसमें हिंमत होने के बावजूद भी ये पारंपरिक बंधन, मर्यादाएँ उसे दबाते हैं, और इन्हीं बातों को लेकर ही कभी वह रोती

है, तो कभी समाधान करती है, विद्रोह भी करती है, विद्रोह के बाद भी बच्चों को मद्दे नज़र रखते हुए समझौता करती है । और अपनी चेतना को ''स्त्री का जीवन तो ऐसा ही है, मानकर दबाती है । अगले जन्म में अच्छे जीवन की प्रार्थना करके इंतजार करती है, गौरतलब बात यह है कि वर्तमान में उसका जो शादीशुदा जीवन है अगर बच्चे ना होते तो उसे बदल देने में उसे कोई परेशानी नहीं होती ।

''स्वातंत्र्योत्तर कथा साहित्य में अनेक रचनाकारों ने नारी स्वातंत्र्य की विचारधारा को व्यक्त किया है । नारी स्वतंत्रता ने ही स्त्रियों को स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता प्रदान की है, चाहे वह निर्णय विवाह, केरियर, नौकरी पैशा करने का या अविवाहित रहने का हो । समाज उसे स्वीकृति दे-या न दे मगर अपने जीवन को वह जी लेती है । श्री अमृता प्रीतम ने 'गुलियाना एक खत' नामक कृति में जिस नारी स्वतंत्रता की बात कही है उसका समर्थन तो हर शिक्षित-अशिक्षित, समर्थ-असमर्थ नारी एवं प्रत्येक प्रबुद्ध व्यक्ति करेगा । उन्होंने कहा है कि ''यह सभ्यता का युग नहीं । सभ्यता का युग तब आएगा जब औरत की मर्जी के बिना कोई उसके जिस्म को हाथ नहीं लगाएगा । वह स्वतंत्रता तो नारी को मिलनी ही चाहिए ।''[३९]

''हमारे भारतीय संविधान के १५ वें अनुच्छेद में स्पष्ट घोषणा की गई है - ''राज्य किसी नागरिक के विरुद्ध केवल धर्म, मूलवंश जाति-लिंग, जन्मस्थान, अथवा इनमें से किसी के आधार पर भेदभाव नहीं करेगा'' । लोकतंत्रात्मक संविधान द्वारा घोषित इस समताधिकारने समाज और स्त्री की मानसिकता को प्रभावित किया, समाज के पारस्पारिक आर्थिक, सामाजिक और वैचारिक ढाँचे में परिवर्तन आने लगे हैं ।''[४०]

आज समय ऐसा है कि स्त्रियों में अपनी स्वतंत्रता, अस्तित्व, अस्मिता, चेतना को महत्त्वपूर्ण मानकर जागृति आई है । इसके लिए आंदोलन अभियान

शुरू किया है – अपनी मजबूरी, असहाय अवस्था और अपनी आंतरिक शक्ति दोनों के प्रति सचेत है, जाग्रत है अपने उपेक्षित जीवन से मुक्त होना चाहती है ।

फिर भी हमारी भारतीय संस्कृति के अनुसार नारी चेतना यानि सद्‌गुणों का विकास । दूसरे पक्ष से लड़ाई या स्पर्धा नहीं । अतः सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक मूल्यों में भी सहेतुक परिवर्तन वैचारिक ऊँचाई के आधार पर होना चाहिए ।

समाज का प्रत्येक व्यक्ति नारी को लेकर पुरानी जड़तावाली मान्यता के आधारपर उसे निम्न, तुच्छ, हीन न समझे, उस पर अनावश्यक दबाव न डाले । नैतिकता का प्रश्न है तो स्त्री और पुरुष दोनों ही समाज के आधार स्तंभ हैं, दोनों को नैतिकता अपनानी चाहिए । जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नारी सफल हुई है उसने अपनी सार्थकता, कुशाग्र बुध्दि का परिचय दिया है । उसने अपनी विवेकबुध्दि शक्ति, शारीरिक, मानसिक संतुलन शक्ति का परिचय भी दिया है । इसलिए नारी को स्वयं, बंधन दासता की जड़ें काटनी होंगी । पुराने ख्यालात, रूढ़िवादी मान्यता, आदर्श नहीं बंधन हैं । सबसे प्रथम परिवार में ही स्त्री जन्म को सम्मान मिलना चाहिए । नर–नारी के भावनात्मक सौजन्यपूर्ण, व्यवहार पर समाज टिका है । दोनों अपने अपने अलग अस्तित्व को बनाये रखते हुए सौजन्यपूर्ण व्यवहार संबंध रख सकते हैं । नारी चेतना, मुक्ति का शत्रु, पुरुषों का अहम्, पुरुष वर्चस्व और कई अंश तक पितृसत्तात्मक समाज रचना है । उससे भी स्त्रियों को मुक्त होना होगा ।

‘‘श्री महादेवी वर्मा का मानना है ‘‘संसार में मानव–समुदाय में वहीं व्यक्ति स्थान और सम्मान पा सकता है । वहीं जीवित कहा जा सकता है, जिसके हृदय और मस्तिक ने समुचित विकास पाया हो और जो अपने व्यक्तित्व द्वारा मनुष्य समाज से रागात्मकता के अतिरिक्त बौध्दिक संबंध स्थापित कर सकने में समर्थ है ।’’[४१]

"नेपोलियन बोनापार्ट, जो विश्व विजय का स्वप्न देखता था जिसके शब्दकोश में असम्भव शब्द नहीं था, उसने भी माता की महिमा को स्वीकारा है उसने जो कुछ कहा है वह नारी जाति के इतिहास में एक स्वर्णिम वाक्य है । मुझे एक योग्य माता दो, मैं तुम्हें एक योग्य राष्ट्र दूंगा ।"[४२]

यह मातृत्व का सन्मान है, स्त्रियों को अपने मातृत्व की योग्यता जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सिद्ध करनी होगी । माता, गृहिणी, मित्र–पत्नी प्रत्येक क्षेत्र में अपने व्यक्तित्व की गरिमा को दिखाना होगा ।

आधुनिक युग के समाज में थोड़ा बदलाव भी आया है – आज स्त्रियों ने अपनी मजबूरी को लेकर अपने आप को विवश असहाय मानना बंद कर दिया है और संघर्ष करने के लिए तैयार हो गई हैं । कोई भी स्थिति समस्या रूप लगे तो उसे सुलझाने में अपना समय बरबाद नहीं करतीं उसे छोड़ देती हैं । प्रतिशोध और प्रेम करने के मामले में वह पुरुषों से भी आगे निकल गई हैं । शादी में भी पति अगर उसकी बुद्धिमता, अस्मिता को नहीं स्वीकारता तो वह स्वतंत्र, अकेली रहने के लिए समाज से नहीं डरती ।

स्त्री विमर्श की जानी–मानी लेखिका प्रभा खेतान ने ठीक ही कहा है – "नारी आंदोलन वास्तव में व्यक्ति होने का सलीका है ।"

प्रभा खेतान का यह वाक्य साम्यवादी विचार प्रवाह का केन्द्रीय मुद्दा है – "स्त्रीवाद नारी को केवल 'नारी के रूप में देखने का तौर–तरीका सिखलाता है' जो नारी को पारंपारिक रूढ़ियों, मान्यताओं, अंध–विश्वासों के शोषण से मुक्त कर उसके स्वतंत्र व्यक्तित्व को समाज में प्रतिष्ठित करता है ।"[४३]

मृदुला गर्ग का कथन है – स्त्री कहीं की हो, किसी वर्ग की हो, पुरुष के लिए वह सिर्फ शरीर है, उसका मानसिक शारीरिक शोषण उसकी नियति है मृदुला जी का मानना है कि स्त्रियों को आत्मनिर्भर बनकर अपने बल–बूते पर स्वाभिमान के साथ जीवन जीना चाहिए ।

धैर्य और लम्बे संघर्ष तथा गहरे संकल्पों के साथ जूझने की जरूरत है स्त्री की यातना का बहुत लम्बा इतिहास है । अपनी अस्मिता की निरंतर जागृति के साथ स्त्री को सामने आना पड़ेगा । ताकि स्त्री–पुरुष दोनों समरस जीवन–जी सकें ।[४४]

''वर्तमान युग में नारीवाद की नहीं, वरन नारी चेतना की बात की जानी चाहिये, ताकि वह स्वयं के रूप को पुनर्परिभाषित कर सके । कारण यह है कि स्त्री केवल देह मात्र ही नहीं है वह देह के अलावा, मन, आत्मा, प्रज्ञा, चेतना – व विचार भी है, इस सभी से मिलकर नारी शक्ति रूपी बनती है । सत्ता द्वारा जिन मूल्यों का प्रतिपादन किया जाता है, साहित्य के माध्यम से उन्हें जाँचा परखा जाता है ।''[४५]

नारी चेतना, दमन, जड़ता और शोषण की बात विश्व की प्रत्येक स्त्री ने महसूस की है । और पूरे विश्व की स्त्रियों ने प्रत्येक देश में विविध रिवाज, अत्याचार और परंपराओं के सामने आवाज उठाई है । फैशन की दुनिया की जानीमानी मॉडल वारिस डीरीने भी उसमें अपना योगदान दिया है । स्त्री सुन्नत का विरोध करके ''स्त्री–सुन्नत नो रिवाज मुख्यत्वे आखा आफ्रिका खंडमां लगभग २८ देशोंमां प्रचलित है – युरोप अने अमेरिकामां पण आवा किस्सा नोंधाया छे. कारण के त्यां घणा आफ्रिकनो आवीने वस्या छे. आखा विश्वमां नहीं नहीं तोय १ करोड ३० लाख छोकरीओ अने स्त्रीओ आ रिवाजनो भोग बनी छे.[४६]

वारिस डीरीनुं नाम फेशन जगत मां अजाण्युं नथी, वारिस डीरी एटले रेवलोन, लेवीस जेवी ब्रान्डनो चेहरो अने जेम्स बोन्डनी हीरोइन । चाहती है कि हुं इच्छु छुं के एक दिवस आ रिवाजनो अंत आवे अने कोई स्त्रीने क्यारेय आवी यातना, पीडा भोगववी न पड़े । जे दिवसे ईश्वरे मने सिंहथी बचावी त्यारे ज मने जीवती राखवा पाछळ तेनो कोई उद्देश्य छे तेवुं मने समजायुं हतुं.

हवे तेणे मने शुं काम सोंप्यु छे ते पण समजाइ गयु छे अने ते पुरुं करवा, स्त्री–सुन्नत नामशेष करवा हुं तैयार छुं ।"[४७]

इस प्रकार दुनिया की प्रसिद्ध स्त्रियों ने नारियों की यातनाओं को मिटाने के लिए नारी–चेतना की जाग्रति पर विशेष बल दिया तथा अपनी रचनाओं के माध्यम से स्त्री–पुरुष के समान महत्त्व को उजागर करते हुए स्वस्थ, समृद्ध व सुसंस्कृत समाज की संरचना में अपना विशेष योगदान दिया ।

संदर्भ संकेत :

क्रम	पुस्तक नाम – लेखक नाम	पृ.संख्या
१	ओळख– ओळख गुजराती नवेम्बर २००७ 'वेदों में नारी के विविध रूप', हरीश भारतेन्दु शुक्ल	३३
२	महिला और मानव अधिकार एम.एम. अंसारी	३
३	महिला और मानव अधिकार, एम.एम. अंसारी	३
४	जयद्रथवध – मैथिलीशरण गुप्त	४
५	महिला और मानव अधिकार, एम. एम. अंसारी	१२
६	महिला और मानव अधिकार, एम. एम. अंसारी	११
७	महिला और मानव अधिकार, एम. एम. अंसारी	१३-१४
८	महिला और मानव अधिकार, एम. एम. अंसारी	१५
९	महिला और मानव अधिकार, एम. एम. अंसारी	१५
१०	हमारी राष्ट्रिय अस्मिता और नारी का भविष्य, डॉ. हेमा देवरानी	२
११	शिक्षा में क्रांति – ओशो रजनीश	६१
१२	महिला और मानव अधिकार, एम. एम. अंसारी	१६-२०
१३	महिला और मानव अधिकार, एम. एम. अंसारी	३७
१४	महिला और मानव अधिकार, एम. एम. अंसारी	६७
१५	आधुनिक समाज की नारी चेतना, डॉ. सुशीला वर्मा	१५४
१६	श्रृंखला की बेड़ियाँ, महादेवी वर्मा, भूमिका से	-
१७	आधुनिक समाज की नारी चेतना, डॉ. सुशीला वर्मा	१६७
१८	गुर्जर राष्ट्रवीणा – नवम्बर–२००५, डॉ. मकरन्द भट्ट स्त्री विमर्श की लेखिका शिवानी	१६
१९	गुर्जर राष्ट्रवीणा – नवम्बर–२००५, डॉ. मकरन्द भट्ट	१६
२०	हंस फरवरी – २००० राजेन्द्र यादव	

२१	हमारी राष्ट्रीय अस्मिता और भविष्य का नारी साहित्य, डॉ. हेमादेवरानी	२
२२	सांस्कृतिक संक्रमण में नारी का अंतर्द्वन्द्व और साहित्य वीणा मिश्र, का लेख	२
२३	प्राकृतविद्या अक्टूम्बर–२००७, डॉ. सत्यप्रकाश जैन, गांधीजी एवं अहिंसा विशेषांक	८
२४	प्राकृतविद्या अक्टूम्बर–२००७, डॉ. सत्यप्रकाश जैन, गांधीजी एवं अहिंसा विशेषांक	८
२५	प्राकृतविद्या अक्टूम्बर–२००७, डॉ. सत्यप्रकाश जैन, गांधीजी एवं	८
२६	गुजरात समाचार – शतदलपूर्ति – ४–७–२००७ – अनुराधा देरासरी	
२७	गुजरात समाचार – शतदलपूर्ति – २२–८–२००७ – अनुराधा देरासरी	
२८	गुजरात समाचार – असामान्य स्तंभ शतदलपूर्ति नरेश शाह, २४–१०–२००७	
२९	गुजरात समाचार शतदलपूर्ति, हरेन्द्र रावल, ७–११–७	
३०	गुजरात समाचार – शतदलपूर्ति – हंसल भचेच बुधवार ४–७–२००७	
३१	नारी की शाश्वत भूमिका और भविष्य का साहित्य, ज्योति शुक्ल का लेख	१
३२	हिन्दी कविता में व्यक्त नारी चेतना – रंजना अरगडे हिन्दुस्तानी जबान १८ एप्रिल – जून – २००१	१८
३३	हिन्दी कविता में व्यक्त नारी चेतना – रंजना अरगडे हिन्दुस्तानी जबान १८ एप्रिल – जून – २००१	१८-१९

३४	सांस्कृतिक संक्रमण में नारी का अंतर्द्वन्द्व और साहित्य डो. वीणा मिश्र	२
३५	आधुनिक समाज की नारी चेतना डॉ. सुशीला वर्मा	१८७
३६	हमारी राष्ट्रीय अस्मिता और भविष्य का नारी साहित्य, डॉ. हेमा देवरानी	२
३७	सांस्कृतिक संक्रमण में नारी का अन्तर्द्वन्द्व और साहित्य / वीणा मिश्र	२
३८	आधुनिक समाज की नारी चेतना डॉ. सुशीला वर्मा	१८६
३६	आधुनिक समाज की नारी चेतना डॉ. सुशीला वर्मा	११२
४०	महिला और मानवाधिकार, एम.एम. अंसारी	१६३-१६४
४१	महादेवी समग्र साहित्य भाग–३ संपादक निर्मला जैन	२६३
४२	महिला और मानवाधिकार – एम.एम. अंसारी	६६
४३	हंस सितम्बर–१६६६, प्रभा खेतान स्त्री विमर्श के अंतर्विरोध	२७
४४	मृदुला गर्ग के साहित्य में नारी, डॉ. रमानेवले	१०
४५	दैनिक नव ज्योति – १६ दिसम्बर १६६८, मृदुला गर्ग	६
४६	वारिस – रणमां खीलेलूं पुष्प, अनुवादक क्षमा कटारिया	३६
४७	वारिस – रणमां खीलेलूं पुष्प, अनुवादक क्षमा कटारिया	३७

तृतीय अध्याय
शिवानी का जीवन एवं व्यक्तित्व

१. शिवानी का जीवन : व्यक्तित्व

२. शिवानी का साहित्यिक व्यक्तित्व

३. शिवानी का साहित्य :
   १) कहानी संग्रह
   २) उपन्यास
   ३) यात्रावृत्त
   ४) संस्मरण

४. शिवानी के उपन्यासों का संक्षिप्त अनुशीलन
   १) मायापुरी
   २) चौदह फेरे
   ३) भैरवी
   ४) कृष्णकली
   ५) स्मशान चंपा

६) सुरंगमा
७) चल–खुसरो घर आपने
८) कालिंदी
९) दो सखियाँ
१०) स्वयंसिद्धा
११) गैंडा
१२) माणिक
१३) विषकन्या
१४) कैंजा
१५) रतिविलाप
१६) किशनुली
१७) कृष्णवेणी
१८) रथ्या

तृतीय अध्याय
शिवानी का जीवन एवं व्यक्तित्व

पूर्व अध्यायों में मानव-संस्कृति में नारी की प्रकृति, पहचान एवं महत्त्व पर ऐतिहासिक दृष्टि से दृष्टिपात करते हुए नारी अस्मिता-चेतना के स्वरूप को सुस्पष्ट किया गया है । प्रस्तुत अध्याय में आलोच्य लेखिका शिवानी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालकर उनके उपन्यासों में अनुस्यूत नारी चेतना के तत्त्वों-सूत्रों का समाकलन किया जाएगा ।

(१) शिवानी का जीवन-व्यक्तित्व :

आधुनिक महिला रचनाकारों में शिवानीजी (जिनका पूरा नाम गौरापन्त शिवानी है) का योगदान सर्जन क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण है । स्वतंत्रता के बाद के हिन्दी कथा साहित्य की वह अच्छी सशक्त लेखिका है, मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार हैं ।

गौरा पंत 'शिवानी' का जन्म १७ अक्टबर १९२३ को विजयादशमी के दिन राजकोट (गुजरात) में हुआ ।[१]

स्वयं शिवानीजी के शब्दों में देखे तो "मेरा जन्म हुआ स्वदेश से दूर, सौराष्ट्र के राजकोट नगर में । घर में गुजराती बोली जाती थी, बोल फूटते ही हमने माँ को 'बा' कहना सीखा । पहाड़ी रस-भात का स्थान गुजराती खट्टमिठ्ठी कोकम डली दाल ने ले लिया था । पहाड़ से साथ आये पहाड़ी नौकर भी अपनी मातृभाषा भूलने लगे थे । राजकोट की मुझे अभी भी खूब याद है । सामने ही नागर ब्राह्मणों की ऊँची हवेली की खिड़की हमारी खिड़की से सटी-सटी थी । वहीं से गुजराती गांठिया और 'गोड़केरी नुं अथाणुं' (आम

की मीठी अचारी) के साथ पहाड़ी अखरोटों का आदान–प्रदान चलता रहता । रसिकभाई, कोकिलभाई, उर्मिलाबेन और हरिच्छाबेन के गोल–लम्बे चेहरे अभी भी स्मृतिपटल पर धुँधले पेन्सिलस्केच से उभर आते हैं ।”[२]

आधुनिक अग्रगामी विचारों के समर्थक पिताश्री अश्विनीकुमार पांडे राजकोट स्थित राजकुमार कॉलेज के प्रिन्सीपाल थे । “मेरे पिताजी राजकुमार कॉलेज में कई राजकुमारों के गार्जियन ट्यूटर थे । उन दिनों राजकुमार कॉलेज अपने ढ़ंग की अनोखी संस्था मानी जाती थी । मेरे पिताजी अपनी विदेश की शिक्षा, रोबीले व्यक्तित्व और कठोर अनुशासन के कारण प्रिन्स वर्ग में बहुत जनप्रिय थे । उन दिनों कुछ राजकुमारों को पब्लिक स्कूल की भाँति एक हाउस मास्टर के अनुशासन में रहना होता था । माणावदर, रामपुर, जूनागढ़, मैसूर, जसदन, औरछा, द्रंतिया आदि के अनेक राजकुमार उनके छात्र थे ।”[३]

“पहले पिताजी माणावदर के नवाब के यहाँ उच्च पद पर नियुक्त हुए । माणावदर रहने के पश्चात् रामपुर में पिताजी की नियुक्ति हुई गृहमंत्री के पद पर । मेरे पितामह (दादाजी) काशी विश्वविद्यालय में धर्म–प्रचारक के पद पर थे । वे कुमाऊँ के पहले ग्रेजुएट थे, साथ ही संस्कृत के धुरन्धर विद्वान अैर एक दबंग वकील । उन्हें पिताजी की इस ऊँची नौकरी से प्रसन्नता नहीं हुई । महामना मदन मोहन मालवीयजी पितामह के मित्र थे । उनकी भी इच्छा थी पिताजी राजकोट ही रहे ।”[४]

“शिवानीजी की माताजी का नाम लीलावती पांडे था । वह एक पढ़ी–लिखी महिला थी । उनके घर में हिन्दी–गुजराती और संस्कृत की किताबों का भंडार था ।”[५]

“हमारे दीवानखाने में चारों और किताबों का अम्बार चुना रहता, घर का प्रत्येक व्यक्ति पढ़ने के पीछे दीवाना था । हमारी माँ की गुजराती पुस्तकों का भंडार नित्यनवीन रहता । मुंशी, मेघाणी उनके प्रिय लेखक थे । एक बार

छिपाकर 'सरस्वतीचंद्र' पढ़ने पर माँ का जो करारा चाँटा पड़ा था, वह अब भी नहीं भूलता ।''[६]

इसी प्रकार विद्वान माता–पिता की पुत्री शिवानी की शिक्षा–दीक्षा भी अंग्रेजी और संस्कृत दोनों में हुई ।

''हम भाई–बहनों की साहिबी–शिक्षा भी पितामह के आदर्शों के विपरीत हो रही थी । नैनीताल में एक अंग्रेज गवर्नेस मिस ममफर्ड की देख–रेख में शिक्षा चल रही थी । मिसेज स्मिथ भी नित्य पढ़ाया करती थी । शिवानीजी ने सिकंदर मियाँ से घुड़सवारी की शिक्षा भी पाई ।''[७]

शिवानीजी का घर–परिवार सदैव अतिथियों से हराभरा रहता था । ''पिताजी अपने आतिथ्य और ऊँची पसंद के 'सेलर' के लिए प्रसिद्ध थे । डॉ. वहीदी, डॉ. कुरेशी, सर गिरजाशंकर बाजपेयी, सर सुल्तान अहमद पिताजी के विशेष मित्रों में से थे ।''[८]

''शिवानी के दादाजी हरिराम पांडे एक चर्चित व्यक्ति थे । अल्मोड़ा में जब विवेकानंद आए थे तब उन्हें (दादाजी को) संस्कृत भाषा में मानपत्र दिया गया था । दादाजी की इच्छा थी कि हम बच्चों की शिक्षा संस्कृत में हो और पहाड़ी संस्कृति से भी जुड़े रहे ।''[९]

''दादाजी के बार–बार आग्रह करने पर हमें अल्मोड़ा भेज दिया गया । हमारे सनातनी पितामह ने अपने अनुशासन की पकड़ और कड़ी कर दी थी । हमारी शिक्षाप्रणाली में आमूल परिवर्तन कर दिया गया था । सुबह उठते ही संस्कृतके पंडित गंगादतजी आ जाते । नित्य उन्हें अमरकोश के पाँच श्लोक कंठस्थ कर सुनाने होते । फिर हमें शांतिनिकेतन भेज दिया गया । आठ वर्ष तक केवल ग्रीष्मावकाश में ही पहाड़ जाते, पिताजी ने हमारे शांतिनिकेतन के अतिथियों के लिए छोटी–सी अतिथिशाला भी बनवा दी थी, प्रायः हमारे विदेशी मित्र वृंद, अध्यापक आते रहते ।''[१०]

“शिवानी शांतिनिकेतन में नौ बरस रहीं । सातवीं कक्षा से लेकर बी.ए. तक वहीं शिक्षा प्राप्त की । शांतिनिकेतन के सौम्य वातावरण ने उन्हें अत्यंत प्रभावित किया । शांतिनिकेतन में उन्होंने आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी से हिन्दी भाषा एवं साहित्य की शिक्षा प्राप्त की । “उन्होंने ही मुझे मेरे कान पकड़कर लेखनी की सही पकड़ सिखायी ।” सुप्रसिद्ध सिने कलाकार बलराज साहनी की भी छात्रा रही । सत्यजित रे जैसे सिने निर्देशक उनके सहपाठी रहे । शांतिनिकेतन में ही उन्होंने रवीन्द्र और हिन्दुस्तानी संगीत भी विधिवत् सीखा । नृत्य शिक्षक थे शांति दा तथा मृणालिनी स्वामीनाथन (अब मृणालिनी साराभाई) ।”[११]

“इस बीच पिताजी ओरछा में दीवान के पद पर नियुक्त हुए । सहसा चौबीस वर्ष की पुत्री और जवान जामाता की नैनीताल के ताल में डूब जाने से मृत्यु के धक्के से वे शोक विह्वल हो उठे । एक दिन कुमाऊँ के मोह की बेड़ियाँ काटकर हम चले गये बैंगलोर । वहाँ पिताजी कुछ दिन महर्षि रमण के साथ रहे, फिर बहुत बड़े परिवार की चिंता से उनको नौकरी करनी पड़ी । कुछ वर्ष तक वहीं पर सेक्रेटरी के पद पर रहे । वहीं सिलोन यात्रा में उन्हें कारबंकल हुआ । सैंट मार्था अस्ताल की मृदुभाषिणी नर्स भी उनकी पीड़ा दूर नहीं कर सकी । वहीं उनकी मृत्यु हुई और हम एक बार फिर कुमाऊँ लौट आये ।”[१२]

“छोटी अवस्था में ही इनका विवाह एक ऐसे पुरुष के साथ कर दिया गया जिनको आपने पहले कभी नहीं देखा था, लेकिन फिर भी लेखिका अपने वैवाहिक जीवन से संतुष्ट है । उन्हीं के शब्दों में फिर उनकी अंतिम साँस तक मुझे संतोष रहा कि शायद ‘लवमैरिज’ करती तो भी इतना अच्छा पति नहीं मिलता ।

उनके पति श्रीयुत पंत उत्तर प्रदेश के शिक्षा विभाग में उच्चाधिकारी थे । शिवानीजी ने लेखक कार्य को धनोपार्जन का माध्यम कभी नहीं बनाया ।

उनके शब्दों में मैंने अपने आपको कभी इस प्रकार के व्यावसायिक लेखन से जुड़ा हुआ नहीं माना । न कभी यह महसूस किया है कि मेरे लेखन से मेरे चिंतन में कोई अवरोध आया है । साहित्य और व्यवसाय दो विरोधी तत्त्व है । व्यावसायिक दृष्टिकोण कभी–किसी साहित्य को समृद्ध नहीं कर सकता ।''[१३]

शिवानीजी की तीन संतानें हैं । छोटी पुत्री मृणाल पांडे आधुनिक युग की उभरती हुई लेखिका है । साथ–साथ हिन्दुस्तान टाइम्स की संयुक्त संपादिका है । मृणालजी का नाम कथा–साहित्य के क्षेत्र में बहुचर्चित–प्रसिद्ध रहा है । इनकी रचनाएँ हिन्दी साहित्य में एक अलग स्थान रखती हैं ।

''पति के असामयिक निधन के बाद लम्बे समय तक लखनऊ दिल्ली अपनी बेटियों के पास रही, अमरिका अपने पुत्र के परिवार के बीच रही । नारी चेतना के विभिन्न स्वरों को मुखरित कर शिवानीजी २१ मार्च २००३ को दिव्य चेतना में अंतर्लीन हो गईं ।''[१४]

(२) शिवानी का साहित्यिक व्यक्तित्व :

''शिवानी की पहली रचना अल्मोड़ा से निकलने वाली 'नटखट' नामक एक बाल–पत्रिका में छपी थी । तब वे मात्र बारह वर्ष की थीं । शांति निकेतन में स्कूल तथा कॉलेज की पत्रिकाओं में बांग्ला में उनकी रचनाएँ नियमित रूप से छपती रहीं । गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर उन्हें 'गौरां' पुकारते थे । उनकी ही सलाह, कि हर लेखक को मातृभाषा में ही लेखन करना चाहिए, शिरोधार्य कर उन्होंने हिन्दी में लिखना प्रारंभ किया । 'शिवानी' की पहली लघु रचना ''मैं मुर्गा हूँ'' १९५१ में धर्मयुग में छपी थी । इसके बाद आई उनकी कहानी 'लाल हवेली' और तब से जो लेखन क्रम शुरू हुआ, उनके जीवन के अंतिम दिनों तक अनवरत चलता रहा । उनकी अंतिम दो

रचनाएँ 'सुनहुँ तात यह अकथ कहानी' तथा 'सोने दे' उनके विलक्षण जीवन पर आधारित आत्मवृत्तात्मक आख्यान है ।''[९५]

प्रेमचंद, टैगोर, जोर्की के अतिरिक्त महिला कहानीकारों में मन्नूभंडारी, मंजुल भगत, बिंदु सिंहा से भी आप प्रभावित दिखाई देती हैं । इस्मत चुगताई बचपन से ही उनकी आदर्श रही हैं ।

लेखिका को आज तक अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है । १९७९ में शिवानीजी को पद्मश्री से अलंकृत किया गया । लखनऊ से निकलनेवाले पत्र 'स्वतंत्र भारत' के लिए 'शिवानी' ने वर्षों तक एक चर्चित स्तंभ 'वातायन' भी लिखा ।''[९६]

राज्य साहित्य पुरस्कार	–	१९७०–७१
प्रेमचंद पुरस्कार	–	१९७४–७५
विशेष पुरसकार	–	१९७६–७७
स्तरीय पुरस्कार	–	१९७८–से ७९ प्रतिवर्ष
महादेवी पुरस्कार, बिहार	–	१९९० १९७९ पद्मश्री से अलंकृत
सुब्रह्मण्य भारती–पुरस्कार	–	१९९३
वीरेन्द्र स्मृति पुरस्कार	–	१९९३
बंकिम पुरस्कार, कलकत्ता	–	१९९४
यश भारतीय सम्मान	–	१९९५
अखिल भारतीय	–	–
महाराष्ट्र भारती पुरस्कार	–	१९९७

शिवानीजी कई भाषाओं को अच्छी तरह लिख–पढ़ बोल सकती हैं, गुजराती बंगला, हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी आदि पर उन्हें पूर्ण अधिकार था । इसी कारण वे जिस क्षेत्र, जिस प्रदेश को अपनी कहानी का आधार बनाती है, अत्यंत प्रभावशाली ढ़ंग से अपनी बात को जनता तक पहुँचाने में सफल हो जाती हैं । उन्होंने अपनी इस भाषा बहुज्ञता को अपनी सफलता क रहस्य

बतलाते हुए लिखा है, ''मैंने बंगला के अनेक सुहावने मुहावरों से अपनी कहानियों को सँवारा है । गुजराती का पानेतर, बंदेलखंड जी कंकरेजी, कुमाऊँ की मक्खी बेल तथा सोलह पाटों का लहराता लहंगा बंगला के लाल पाड की गरद, सबकी छटाओं से अपने पाठकों को मोहने की चेष्टा मैंने की है ।''[१७]

''शिवानीजी की प्रशंसा में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है – 'गौरा शांति निकेतन की छोटी सी मुन्नी, मेरी परम प्रिय बहिन और छात्रा । बचपन में ही बड़ी सूक्ष्म बुद्धि की थी, उसकी दृष्टि बड़ी पैनी थी । मेरे परख–पारखी मित्र और गौरा के दूसरे अध्यापक पंडित निताई, विनोद रस्तोगी कहा करते थे कि यह लड़की अवसर मिलने पर बहुत प्रतिभा शालिनी सिद्ध होगी । वे गौरा की भाषा और प्रकाशन भंगिमा को तभी बहुत दाद देते थे ।''[१८]

हिन्दी साहित्य को शिवानी का महत्त्वपूर्ण योगदान है । यहाँ आलोच्य विषय की परिधि में आनेवाले उपन्यासों का ही विश्लेषण किया गया है ।

(३) शिवानी का साहित्य :

(१) कहानी संग्रह :

१.	पुष्पहार सन्	सन् १६६६
२.	करिये छिमा	सन् १६७१
३.	लाल हवेली	सन् १६७३
४.	मेरी प्रिय कहानियाँ	सन् १६७३
५.	उपहार	सन् १६७७
६.	टोला	सन् १६८२

इनमें से पुष्पहार, मेरी प्रिय कहानियाँ, टोला और उपहार कहानी संग्रह अप्राप्य हैं, किंतु इन सभी संग्रहों में प्रकाशित कहानियाँ पूर्व प्रकाशित हैं ।

(२) उपन्यास :

१.	मायापुरी	सन् १९६१
२.	चौदह फेरे	सन् १९६७
३.	भैरवी	सन् १९६८
४.	कृष्णकली	सन् १९६९
५.	स्मशान चम्पा	सन् १९७२
६.	सुरंगमा	सन् १९७८
७.	चल खुसरो घर आपने	सन् १९८२
८.	विवृत	सन् १९८४
९.	कालिंदी	सन् १९९१
१०.	कस्तूरी मृग	सन् १९९४

(३) लघु उपन्यास एवं कहानियों पर आधारित संकलन :

१.	विषकन्या	सन् १९७०
२.	कैंजा	सन् १९७२
३.	रतिविलाप	सन् १९७४
४.	स्वयंसिद्धा	सन् १९७५
५.	रथ्या	सन् १९७७
६.	गैंडा	सन् १९७७
७.	किशनुली	सन् १९७९
८.	कृष्णवेणी	सन् १९८१
९.	उपप्रेती	सन् १९९१
१०.	माणिक	सन् १९९४
११.	मणिमाला की हँसी	सन् १९९४

(४) यात्रावृत्त :

१	बचपन की याद	सन् १९७८
२	राधिका सुंदरी	सन् १९७९
३	यात्रिक (बाल साहित्य)	सन् १९८१
४	हर हर गंगे, अल्विदा, भतअकल, आइसक्रीम महज आदि	

(५) संस्मरण :

१	आमादेर	सन् १९६१
२	अपराधिनी	सन् १९७१
३	चारदिन की	सन् १९७३,
४	झरोखा	सन् १९७५,
५	बिल्लू	सन् १९७८
६	झूला	सन् १९७९
७	मंजीर	सन् १९८०
८	क्यों ?	सन् १९८१
९	लोक साहित्य है दत्तात्रेय	सन् १९८६
१०	स्मृति कलश : सनु हुतात	सन् १९९७

इस प्रकार हिन्दी साहित्य की प्रत्येक विद्या को अपनी लेखिनी के माध्यम से उज्ज्वल करने वाली लेखिका जनप्रिय थी । "उनके लखनऊ स्थित आवास ६६, गुलिस्ताँ कॉलोनी के द्वारा लेखकों, कलाकारों, साहित्य प्रेमियों के साथ समाज के हर वर्ग से जुड़े उनके पाठकों के लिए सदैव खुले रहे थे ।"[२०]

४. शिवानी के उपन्यासों का संक्षिप्त अनुशीलन

(१) मायापुरी :

(मायापुरी यानी धन की नगरी । आर्थिक संपन्नता–विषमता को लेकर व्यक्ति के संबंध जिस प्रकार बनते–बिगडते हैं इसका लेखा जोखा इस उपन्यास में है । अर्थ को लेकर कैसे मानसिक अंतर्द्वन्द्व होते हैं इसकी कथा इस उपन्यास में है ।)

मध्यमवर्गीय समाज का जीवन चित्रण इसमें हुआ है । इस उपन्यास की कथा का केन्द्र नायिका शोभा है ।

गरीब परिवार की शोभा के पिता की मृत्यु, लू लगने से हुई । माँ और तीन भाइयों को लेकर काठगोदाम नामक गाँव में रहती है । शोभा के पिता चाहते थे कि शोभा उच्च शिक्षा प्राप्त करे । पिता की मृत्यु के बाद माँ उसके सपने पूरे करना चाहती है । मगर घर की विपन्न आर्थिक स्थिति के कारण शोभा माँ को खेती–बारी गृहकार्य में हाथ बँटाती है । दुर्गा की लखनऊ स्थित सखी गोदावरी का पत्र आया कि शोभा लखनऊ में रहकर पढ़े । माँ के कहने पर स्वमानी शोभा लखनऊ जाती है । वहाँ वह परिवार का हिस्सा बन गई ।

गोदावरी मौसी का वैभव देखकर शोभा लघुता अनुभव करती है । गोदावरी मौसी शोभा का सौंदर्य देखकर चिंतित हो जाती है । गोदावरी के दो संतानें – सतीश और मंजरी थीं ।

सतीश डॉक्टरी पढ़ने के बाद एम.डी. करने विदेश गया, तिवारीजी की सहाय से । तिवारीजी ने अपनी बेटी सविता की शादी सतीश से हो – ऐसी लालच में सतीश को विदेश भेजा और उसके परिवार का आर्थिक ऋण अदा कर दिया । सतीश–गोदावरी दोनों ही मन ही मन शोभा को बहु के रूप में चाहते थे । मगर तिवारीजी के आर्थिक उपकारों के तले दब गये थे ।

परिणाम स्वरूप सतीश के पिता जनार्दन भी सतीश की शादी तिवारी की बेडोल पुत्री सविता से हो ऐसा चाहते थे ।

गोदावरी मौसी के कहने पर शोभा लखनऊ से काठगोदाम अपने घर चली जाती है ताकि सतीष शोभा को भूल जाय – सविता से शादी कर ले ।

शोभा जब घर पहुँची तो तीनों भाई बिमारी से मर गये थे, माँ आघात से पागल होकर मरी । शोभा मामा के घर आई । मामा ने नैनीताल के राजवंश में रानी की सेक्रेटरी की नौकरी दिलवा दी ।

शोभा को मंजरी अविनाश के पत्र मिलते है जिसने शोभा को ही कायर ठहराया था । यहाँ तक की सतीश भी – शोभा को ही निकम्मी, कायर नाहिम्मत ठहराता है । जब कि वह स्वयं माँ के सामने अपने प्यार को स्वीकार करने की हिम्मत नहीं कर सका था । फिर भी शोभा को ही कायर कहता है । नैनीताल में एक राजकीय पार्टी में मंजरी अविनाश और सतीश से शोभा की मुलाकात हुई । शोभाने जाना कि सतीश–सविता से शादी करके सुखी नहीं है – कारण है सविता का स्वच्छंदी, स्वतंत्र स्वभाव । मंजरी के पति को भी तिवारीजी की कृपा से रोकफेलर स्कोलरशीप मिली है । सतीश भी उनकी सिफारिश से दिल्ली में आ गया है और अब काबुल जा रहा है । फिर से सतीश शोभा अपने पुरानी प्यार भरी स्मृतियों में खो जाते हैं । रेडियो पर से शोभाने समाचार सुना की सतीश को लेकर काबुल जानेवाला हवाईजहाज अस्कमात–से टूट गया । शोभा रानीमाँ के साथ सतीश को देखने दिल्ली पहुँचती है । सतीश बेहोशी में भी शोभा को याद कर रहा था । और ऐसी ही अवस्था में उसकी मृत्यु हुई, शोभा को लगा कि वह विधवा हो गई । इस प्रकार आर्थिक अभाव के कारण, विषमता के कारण शोभा को अपना प्यार गंवाना पड़ा ।

(२) चौदह फेरे

(अनमेल विवाह की समस्या, पहाड़ी वैवाहिक रीति–रिवाजों को प्रस्तुत करता हुआ उपन्यास)

चौदह फेरे में नायक कर्नल शिवदत्त कुमाऊ (अल्मोड़ा) का निवासी है। एम.ए. और वकालत करने के बाद, पिताजी के विदेशी मित्र विल्सन साहब की कृपा से विदेश घूमा और सफल व्यापारी बन गया। शिवदत का नाम – 'कर्नल', उसकी छः फूटी देह कदावर शारीरिक आकृति के आधार पर पड़ा था।

पढ़ा लिखा – आधुनिक रहन–सहन वाले कर्नल के पिताजी पहाड़ी रीति–रीवाज, परंपरा में मानने वाले थे। जिन्होंने अपने ब्राह्मण कुल में नहान की एक कम पढ़ी लिखी लड़की नंदी से बेटे की शादी की। शादी के बाद वह नंदी को अपने संयुक्त परिवार की सेवा के लिए छोड़, स्वयं अकेला, कलकत्ता चला आया। ग्रामीण नंदी आधुनिक कर्नल का मेल बहुत कम होता था, धीरे धीरे कर्नल छुट्टियों में भी घर नहीं आता था – यहाँ तक की अपनी बेटी अहल्या के जन्म पर भी घर नहीं आया। – पिताजी की मृत्यु पर घर आया। कर्नल अपनी पत्नी नंदी को साथ कलकत्ता नहीं ले जाता। बल्कि मायके भेज देता है। वहाँ नंदी और पुत्री अहल्या का भाई भाभी ने स्वागत किया मगर थोड़े दिनों बाद वह भी उपेक्षित व्यवहार करने लगे। समृद्ध पति की पत्नी नंदी और अहल्या उपेक्षित जीवन जीने लगे, भाभी के साथ नंदी का रोज कलह होने लगा।

थककर नंदी पुत्री अहल्या को लेकर पूर्व सूचना दिये बिना कलकत्ता कर्नल के घर पहुँची।

जो कर्नल को अच्छा नहीं लगा। पत्नी के गँवारूपन, रंगढंग, उदासी, फूहड़पन से कर्नल नाराज था। मगर पुत्री को प्यार करता था। इसलिए नंदी को बिना बताये अहल्या को मद्रास के कोन्वेट स्कूल में दाखिल कर आया।

कर्नल नंदी को सुधारने का प्रयत्न करता है । मगर नंदी अपने रुक्ष स्वभाव-व्रत अनुष्ठानों के एकांगी आदर्श से पति से दूर होती गई ।

कर्नल अंग्रेजी रहन सहन, परिवेश का आदमी था । आये दिन उसके घर में दावत पार्टियाँ, शराब, खाना पीना चलता रहता था । ऐसी ही एक पार्टी में नंदी ने कर्नल की सेक्रेटरी मल्लिका सरकार को देखा, जो पति के अपाहिज होने के बाद कर्नल की ऑफिस में सेक्रेटरी बन गई थी । नंदी अपने आप को कर्नल की इच्छानुसार बदलना चाहती थी । मगर कर्नल मल्लिका का खिलवाड़ विलासिता सहन नहीं कर पाई । सोचा कि बेटी भी बाप के कदमों पर चलेगी - यह सोचकर कर्नल के नाम पर एक चिठ्ठी लिखकर, महल छोड़कर, गुरुजी के आश्रम में चली गई ।

मल्लिका ने कर्नल के रोजमराँ के व्यवहार संभाल लिये थे, अहल्या को वह माता जैसा ही प्यार देती है । वह चाहती है कि अहल्या की शादी उसकी बहन के पुत्र रौनन से हो, मगर कर्नल यह नहीं चाहता । वह अपनी बेटी की शादी अपने अनेक विदेशी, विधर्मी मित्रों से दूर पहाड़ पर जाकर अपने समाज में करना चाहता है ।

अपने बड़े भाई की बेटी बसंती की शादी में कर्नल अहल्या को लेकर पहाड़ जाता है, वहाँ अहल्या को कुमाउ अल्मोड़ा के ग्राम्य माहौल में समायोजित होने में थोड़ी मुश्किले आईं । ताई सुभद्रा भाभी तुहिना उससे व्यंग्य करते हैं ।

वहाँ अहल्या की भेट बसंती के मामा का बेटा राजू से हुई, जो फोजी था दोनों एक दूसरे के प्रति आकर्षित हुए ।

मगर कर्नल ने अहल्या को पूछे बिना उसकी शादी पहाड़ का ही लड़का आई.एस. सर्वेश्वर से निश्चित की । सर्वेश्वर दंभी था अहल्या उसे पसंद नहीं करती मगर पिताजी के सामने कुछ नहीं बोल पाई ।

कलकत्ता आने पर घर में शादी की तैयारियाँ होने लगीं, गाँव से आई सुभद्राताई अहल्या की उदासी जान जाती है । उसने उसे फौज से लापता – राजू की वापस आने की खबर दी और भाग जाने के लिए कहा ।

अहल्या घर छोड़ कर राजू के घर आ गई वहाँ बसंती धरणीधर की सहाय से उसकी शादी राजू से कर दी गई । राजू की पागल आमा अहल्या को राजू की पत्नी ही समझ बैठी है वह पूछती है – सात फेरे तो हो गये थे, ये दूसरी बार शादी क्यूं ? तब बसंती धरणीघर जवाब देते हैं कि राजू की भगोड़ी बहू घर में रहे, और राजू युद्ध से सलामत, बचकर आया है इसलिए दूसरी बार सात फेरे करवायेंगे । उन्मादी अम्मा बार बार दोहराती है चोदहफेरे !!!!

(३) भैरवी :

(वेश्याजीवन की समस्या और धार्मिक ढोंग, दिखावा, षडयंत्रों की समस्या ।

कुमाऊँ अल्मोड़ा के उच्च्य कुलीन ब्राह्मण महिमचंद्र तिवारी दो–शादियों के बाद भी निःसंतान थे । परिणाम स्वरूप उस समय की ख्यातनाम वारांगना रामप्यारी के यहाँ पड़े रहते थे । तीसरी शादी के बाद सुंदर कन्या रत्न (राज–राजेश्वरी) की प्राप्ति हुई । परिणाम स्वरूप – रामप्यारी को भूल–घरेलू बन गये ।

बेटी (राज–राजेश्वरी) को ईसाई मिशनरियों की विदेशी अंग्रेजी शिक्षा दी । वहाँ उसकी मित्रता रामप्यारी की बेटी चंद्रिका से हुई । महिमचंद्र तिवारी के मना करने पर भी राज–राजेश्वरी रामप्यारी के बेटे कुंदनसिंह के साथ भाग जाती है । महिमचंद्रने दोनों को पकड़वा लिया ।

सुंदर चंदन की शादी के लिए शाहजहाँपुर से राजेश्वरी पहाड़ पर लड़का ढूँढ़ने आई । एक रात पर्वतारोही–दल आँधी तूफान–से बचने उसकी कोठी पर

आश्रय पाने आया । दिल्ली के बारह पर्वतारोही लड़के थे । जिनमें एक लड़की भी थी सोनिया । चंदन और सोनिया मित्र बन गये ।

चंदन विक्रम शादी के बाद हनीमून पर निकले, घूमते घूमते एक दिन कलकत्ता जा रहे थे । किसी स्टेशन पर ट्रेन रुकी और चार फौजी जवान ट्रेन में घूसे, चंदन विक्रम के डिब्बे में बैठे, ट्रेन चलने के बाद शराब पीकर, बत्ती बुझा दी, विक्रम को मार कर बाँध दिया, और चंदन की छेडखानी करने लगे । बलात्कार की चेष्टा की । उससे बचने के लिए, अँधेरे में ही चंदन चलती गाड़ी का दरवाजा ढूँढकर गाड़ी से नीचे कूद गई ।

शिवपुकुर के महाश्मशान में बैठे लोग उसे उडती लाश समझ कर भूत भूत करके डरके मारे भाग गए । किंतु बेहोश चंदन को वहाँ आराधना करने वाले अघोरीने उठा लिया और अपनी संकरी गुफा में ले आये । जहाँ सेविका चरन ने चंदन की सुश्रूषा की । जहाँ अघोरी की साधिका मायादीदी थी, जो अघोरी गुरु की पार्वती शक्ति बनना चाहती थी । वहाँ ही गुरु ने चंदन को दीक्षा देकर नाम दिया 'भैरवी' । मायादीदी चंदन से ईर्षा करने लगी, क्योंकि वह जान गई थी कि अघोरी गुरु चंदन पर मोहित हो गये हैं अतः उसने चंदन को समझाकर भाग जाने के लिए कहा, और नहीं गई तो अपनी गुरु बहन विष्णुप्रिया के पास भेजने का प्रबंध किया ।

नित्य के समय गुरु द्वारा मंत्राभिषिक्त साँप को दूध पिलाते समय, साँपने मायादीदी को काट लिया, और वह तत्काल मर गई । मरते-मरते मायादीदी ने चंदन को अघोरी भैरवानंद के बारे में बताकर चंदन को भाग जाने के लिए कहा । गुरु मायादीदी के शब को कंधे पर उठाकर जल-समाधि देने चले गये । चंदन को भीतर से द्वार पर कुंडी लगा लेने का आदेश दे गये । स्वयं बाहर से कुंडी लगाकर गये । चंदन खिड़की से कूदकर भाग गई । जब ससुराल पहुँची तो कोई उसे गेरुए वस्त्र में पहचान नहीं पाया । वह जब विक्रम के पास पहुँची तो पता चला कि अभी-अभी उसकी दूसरी पत्नी दर्शन

ने पुत्र को जन्म दिया है । अतः वह द्वार भी उसके लिए बंद हो गये । वह दिशाविहीन चलती जा रही थी ।

(४) कृष्णकली :

(कुष्ठरोग, अवैधसंतान, वेश्या–स्त्रियों के जीवन की समस्या को चित्रित करता हुआ उपन्यास)

यह शिवानीजी का बहुचर्चित उपन्यास है । अभी वर्ष २००७ में दूरदर्शन पर सप्ताह में प्रति सोमवार ६–३० बजे सिरीयल के रूप में प्रसारित हुआ ।

कृष्णकली जो इस उपन्यास की नायिका है, साँवली होने पर भी अत्यंत सुंदर है । वह स्पष्टवकता भी है । थोड़ी स्वच्छंदी भी है । पूरी जिंदगी अपने माता–पिता कौन है ? इस रहस्य को जानने के लिए दुःखी रही ।

कली की माँ पार्वती, पिता असददुल्ला खान दोनों कुष्ठ रोगी थे । कुष्ठरोगियों के आश्रम में ही दोनों के बीच संबंध हुआ, जब असददुला खान को जब पता चला कि पार्वती गर्भवती है तो उसे छोड़कर भाग जाता है । दुःखी पार्वती बच्चे को जन्म देते ही मार देना चाहती है । किंतु ईसाई मिशनरी की उदार डॉक्टर रोझी पेट्रिक समय पर आकर बच्ची को बचा लेती है । और उसे अपनी सखी पन्ना की गोद में डाल देती है । क्योंकि दो दिन पहले ही पन्ना की गोद में मरी हुई बच्ची पैदा हुई थी । रोझी के समझाने पर पन्ना इस बच्ची को लेकर अपनी बड़ी दीदी माणिक के पास जाती है । माणिक और पन्ना दोनों कोठे पर मुजरा करने वाली स्त्रियाँ हैं । मगर दोनों के स्वभाव में अंतर है । पन्ना का प्रेमी विद्युतरंजन मजमूदार जिसको लेकर पन्नाने अपने व्यवसाय में ध्यान नहीं दिया था । विद्युतरंजन पन्ना को छोड़कर चला गया था । मगर अब इस बच्ची को लेकर पन्ना माणिक के पास गई

तो माणिक ने दोनों का सहर्ष स्वागत किया । माणिक की पीली कोठी में रहनेवाली लड़कियों ने ही बच्ची का नाम रखा कृष्णकली ।

पन्ना और रोझी के बीच पत्र–वयवहार होते रहते थे । रोझी चाहती थी कि कली की पढ़ाई ईसाई मिशनरियों वाली सकूल में हो, ताकि उसके जन्म की कलंकित कथा उज्जवल हो जाय ।

कली पाँच साल की हो गई रोझी उसे लेने आई । साथ में पन्ना भी जाना चाहती थी, माणिक को ये बात अच्छी नहीं लगी । वह कली को भी ये व्यवसाय सिखाकर बुढ़ापे का सहारा बनाना चाहती थी ।

दोनों बहनों में कलह हुआ इसी के साथ ही बिदाई हुई । कली को डॉ. रोजी ने मिशनरी स्कूल बोर्डिंग में भेज दिया । पन्ना के रहने के लिए नैनीताल के सीमांत पर देवदार की कोठी किराये पर ले ली ।

कली बोर्डिंग में पढ़ाई कम करती थी, चोरियाँ करती, लूक छिपकर दूसरों की बातें सुनती, बनने संवरनें में ज्यादा रुचि रखती । बार बार अपने डेडी के बारे में मधर को पूछती । मधर ने ये सब पन्ना को लिख भेजा परिणाम स्वरूप पन्ना दुःखी होती है ।

सिनीयर केम्ब्रिज की पढ़ाई पूर्ण कर कली जब घर आई, माँ से भी अपने पिता के बारे में पूछती रहती । पन्ना अलग अलग बातें बताकर उसे शांत करती मगर कली अंतर्द्वन्द्व से पीड़ित रहती ।

एक दिन पन्ना को छोड़कर चले जाने वाला प्रेमी विद्युत रंजन पन्ना को मिलने आया । पन्ना जब गर्भवती थी तब विद्युतरंजन ने उसे छोड़ दिया था । उसे मिलते ही पन्ना फिर से पुरानी यादों में बह गई वह अपनी अवस्था, मृत बच्ची, दीदी से कलह और कली के जन्म का इतिहास सारी बातें विद्युत रंजन को बता रही थी कि अचानक घुमने गई कली आ पहुँची और लूक–छिपकर दोनों की बातें सुनने लगी । अपने जन्म की कथा, सच्चाई, माता–पिता की जानकारी सब जानकर, अपने को कली विद्युतरंजन मजमूदार

नाम देने के लिए विद्युतरंजन का आभार व्यक्त करके, पन्ना को अकेला छोड़कर गुस्से में घर छोड़कर निकल गई । बाद में आजीविका के लिए कभी मोडलिंग, कभी रिशेप्सनियट का काम करती है । अपने मन–दुःख को शांत करने के लिए विदेशी प्रवासियों की गाईड बनकर स्मशान में भी घूमती है ।

कलकत्ता में रेवतीशरण तिवारी और उसकी सरल पत्नी अम्मा से परिचय हुआ, उसके मकान में किराये पर रहती है । अम्मा की दोनों बेटियाँ शादी सुता थी । बड़ा बेटा प्रवीर कँवारा था । छोटा बेटा सुवीर लड़ाई में मारा गया था । इसकी विधवा बहु को बेटी की तरह रखते थे मगर वह भी कीर्तन करने घर आये साधु के साथ भाग जाती है ।

कली मन ही मन अम्मा के बड़े बेटे प्रवीर को चाहने लगी थी, मगर अपने जन्म की गलित कथा से प्रवीर को कुछ कह नहीं पाई । प्रवीर भी कली से नाराज ही रहता था । प्रवीर की शादी जब कुन्नी से हो गई तो निराश कली घर छोड़ देती है ।

एक दिन प्रवीर को अपने जन्म का पूरा इतिहास बताकर लौरीन आँटी के यहाँ अलाहाबाद चली जाती है ।

प्रवीर के मन में अब कली के प्रति धारणा बदल गई थी । वह लौरींन आटीं के यहां उसे मिलने जाता है । एक दिन बुखार की वजह से पता चला की कली को कैंसर है ।

कली ने अब माँ पन्ना को भी बुला लिया । दूसरे दिन प्रवीर को मिलने बुलाया, उसे मिलने के बाद रात में अपने अभिशिप्त जीवन को समाप्त करने के लिए, किसी को कुछ कहे बिना नींद की गोलियों का ओवरडोझ ले लिया । आत्महत्या कर ली । पन्ना दुःख से स्तब्ध हो गई । विधाताने उसे फिर से संतान हीन बना दिया । सब स्मशान यात्रा की तैयारी करते है । प्रवीण अकेला गंगातट जाकर उस अनाम कुल गोत्र कली को पानी की अंजलि देता है ।

(५) स्मशान चंपा

(पारिवारिक, आर्थिक, सामाजिक संघर्षों से लड़ती हुई नारी की कथा और भ्रष्टाचार की समस्या का निरूपण)

धरणीधर की मृत्यु दो दो आघात एक साथ लगने से हुई । सरकारी नौकरी में उस पर भ्रष्टाचार और सरकारी गाडियों का दुरपयोग करने का आरोप लगाया था, परिणाम स्वरूप सस्पेंड कर दिया था । दूसरा आघात छोटी बेटी जुही अपने मुसलमान सहपाठी तनवीर बेग से शादी करके घर से चली गई ।

पत्नी भगवती और बड़ी बेटी चंपा अकेले हो गये । बड़ी बेटी चंपा डॉकटरी की पढ़ाई में व्यस्त थी । उसके लिए लड़का ढूँढ़ने भगवती अपनी ननंद को बताती है ।

रुक्की कुछ कहे बिना डॉक्टर मधुकर को लेकर रिश्ता पक्का करने आ गई । मगर अब घर की स्थिति बदल गई थी । माँ–बेटी दोनों जुही की कलंक कथा, छुपाना चाहती है । चंपा ऐसे वातावरण में रुकको बुआ को योग्य जवाब न दे सकी, होस्टेल चली जाती है ।

रुक्की बुआ जुही की अनुपस्थिति के बारे में पूछती है तो भगवती ने पैर की हड्डी टूटने पर अस्पताल में है ऐसा बहाना बता दिया ।

पति की मृत्यु के बाद भगवती ने देखा बेंक बैलेन्स शून्य है । उसने अपनी सारी संपत्ति बेचकर पति का कर्जा चुकाया, बाद में भाई के यहाँ रहने चली गई । वहाँ भाभीने उसे गृहकार्य करने वाली आया ही बना दिया ।

रुक्की एक दिन भगवती को मिलने आती है, उससे अपनी भाभी की दयनीय स्थिति देखी नहीं जाती, साथ में ये भी बताती है कि चंपा के अशिष्ट व्यवहार के बाद भी मधुकर को ये रिश्ता मंजूर है । भगवती के समजाने पर चंपा ने सगाई के लिए हाँ कह दी और रुक्की ने सगाई की आर्थिक व्यवस्था

की थी । भगवती पर कोई बोझ नहीं आने दिया । सगाई के बाद मधुकर ने चंपा को अंगूठी और कई उपहार भेजे थे । चंपा भी खुश रहने लगी ।

मगर एक दिन मधुकर के पिता रामगुप्त को जुही के मुसलमान के साथ भागकर शादी कर लेने की बात पता चल गई, धरणीधर के सस्पेंड होने का पता भी चल गया, परिणाम स्वरूप वह रिश्ता तोड देते है । रुक्की बुआ ने भी चंपा और भगवती को बुरा भला कहा ।

थककर चंपा अपने गांव, समाज से दूर बीरभूमि के सीमांत पर एक अस्पताल में नौकरी करने आ जाती है । चंपा को अस्पताल के मालिक मि. सेनगुप्त की पत्नी रानी कमलेश्वरी को संभालना था । उसे दौरे पड़ते थे, बेहोश हो जाती थी । चंपा को पहले ही मि. सेनगुप्त रहस्यमयी व्यक्ति लगा । रानी कमलेश्वरी अपनी पुत्री मयुरी को लेकर चिंतित है जो पश्चिमी रंग में रंगी हुई है । उद्दंड बन गई है

चंपा को देखकर कमलेश्वरी को अपनी माँ का चेहरा याद आ गया । वह अपने जीवन की पुरी कथा चंपा को बताती है । उसकी माँ और नानी पेशेवर नर्तकियाँ थीं । मासी के देवर सेनगुप्त घर–भर का विरोध मौल कमलेश्वरी को ब्याह कर ले आये थे । मगर कमलेश्वरी अपना अतीत नहीं भूल पाई थी । चंपा को अपनी बेटी ही मानती है ।

भगवती का स्वास्थ्य बिगड़ने लगा था चंपा उसे सेनेटोरीयम छोड़ने गई, वहाँ उसे पता चला की मधुकर की शादी रुकक्की बुआ की पुत्री जया से हो गई है ।

अस्पताल वापस आने पर कमलेश्वरी चंपा को कोठी पर ले जाने आई, क्योंकि मयुरी उसे मिलना चाहती थी, मयुरी चाहती थी कि उसकी सखी का गर्भपात चंपा कर दे, मयुरी की सखी और कोई नहीं मगर जुही थी । जुही चंपा को बताती है कि वह अपने पति से असंतुष्ट है जिठानी उसे क्लबो में ले जाती है वहाँ जुही नाचती है, अनचाहे गर्भ से मुक्त होना चाहती है ।

चंपा ऐसे अनैतिक कार्यो में साथ नहीं देती । मुंबई चली जाती है ट्रेन में चंपा को बुखार आया, वहाँ ट्रेन में ही उसकी मधुकर से मुलाकात हो जाती है । वह उसकी परवरिश करता है ठीक होने पर चंपा वापस अस्पताल आती है । उसे खबर मिली की जुही की तबियत बिगड़ गई थी, डॉ. मिनी ने बचा लिया । मयुरी और सेनगुप्त जुही को लेकर दिल्ली जा रहे थे वहाँ ट्रेन अकस्मात में मारे गये ।

कमलेश्वरी ने अपनी सारी संपत्ति चंपा के नाम कर दी । और उसको कोठी में रहने ले आई । एक दिन चंपा को पत्र मिला की जुही ने अपने प्रेमी की हत्या कर दी, क्योंकि उसने विश्वासघात किया था परिणाम स्वरूप जुही जेल में थी । चंपा चाहे तो पैसा खर्च करके छुडवा सकती थी । मगर चंपा कुछ नहीं करती, क्योंकि खूनी की बहन कहलाना नहीं चाहती ।

चंपा और कमलेश्वरी दोनों लम्बी तीर्थयात्रा पर निकल गयी थीं । एक दिन मधुकर के पिता ने आकर उसे वेश्या की बेटी बनने का, जुही की कलंक कथा और पिताजी के सस्पेंशन की बात याद करवाके बहुत ही अपमानित किया । मधुकर का पीछा छोड़ देने के लिए कहा ।

दुःखी चंपा अपनी बाँह पर लिखती है कि –

श्री श्री गुरु केनाराम की अधम दासी चंपा ।

(६) सुरंगमा

(वेश्याजीवन, अवैधसंतान, राजनैतिक हथकंडे, भ्रष्टाचार, अनमेल विवाह आदि समस्याओं का निरूपण करता उपन्यास)

सुरंगमा के जीवन की करुण गाथा इस उपन्यास में चित्रित है । राजा प्रबोधरंजन पत्नी पुत्री लक्ष्मी के साथ वैभवपूर्ण जीवन जी रहे थे । बीमार पत्नी की सेवा के लिए विदेशी नर्स रखी थी जो लक्ष्मी पर कडा अनुशासन रखती और पूरा घर संभालती थी ।

लक्ष्मी को संगीत की शिक्षा दिलवाने के लिए राजा प्रबोधरंजन ने गौहरजान नामक गायिका का संगीत मास्टर गजानन को नियुक्त किया । गजानन नाबालिग राजलक्ष्मी को फँसाकर साथ लेकर भाग जाता है । लक्ष्मी को थोड़े दिनों में ही गजानन की शोषित, दुष्ट मनोवृत्ति का पता चल गया । जो उस पर संदेह करता था, शराब पीकर मारता था । उससे छूटने के लिए लक्ष्मी खिड़की से कूद कर आत्महत्या करने ट्रेन की पटरी पर चली जाती है । मगर वहाँ भी उसे ट्रेन का गार्ड बचा लेता है और अपनी बहन बेरोनिका के घर ले जाता है । बेरोनिका निदोर्ष लक्ष्मी को घर में आने देती है मगर उसे पता चला कि वह गर्भवती है, माँ बनने वाली है तो उसकी अवैध संतान को बचा लेने के लिए रोबर्ट को लक्ष्मी के साथ शादी कर लेने के लिए कहती है ।

शादी के बाद लक्ष्मी आगे पढ़ाई करके एम.ए. करती है, स्कूल में ही अध्यापिका बन जाती है । एक बेटी को जन्म देती है जिसका नाम सुरंगमा रखा, रोबर्ट सुरंगमा को बहुत ही प्यार करता था, सुरंगमा भी रोबर्ट को ही अपने डैडी समझ रही थी ।

एक दिन अचानक शराबी गजानन लक्ष्मी को ढूँढ़कर रोबर्ट के घर आ पहुंचा, मारपीट गाली–गलोच किया । और राजलक्ष्मी – सुरंगमा को जबरदस्ती अपने साथ ले गया । राजलक्ष्मी बिलकुल निर्जीव, चूप बनकर गजानन के साथ उसके घर में रहती है, क्षय रोग से बिमार हो जाती है । परिणामस्वरूप मृत्यु हुई, माँ के मरने के बाद सुरंगमा अकेली हो गई ।

माँ की मृत्यु के बाद सुरंगमा बैंक में नौकरी करने लगी । और अपनी सखी मीराँ के पिता की सिफारिश से मंत्री दिनकर की बेटी मीनी के टयुशन भी मिले । सूंरगमा के सौंदर्य ने दिनकर को आकर्षित किया, दिनकर की पत्नी विनीता जो समाज सेविका थी, जिसके सहारे ही दिनकर मंत्री बना था । विनीता सुरंगमा पर संदेह करने लगी थी ।

पत्नी के विदेशगमन पर दिनकर मीनी और सुरंगमा को लेकर नैनीताल घूमने जाता है । वहाँ सुरंगमा के सामने अपना प्यार व्यक्त करता है । मंत्री बनने से पहले छोटे से गाँव में रहनेवाले दिनकर की शादी बचपन में एक बदसूरत लड़की से हुई थी । जिसे छोड़कर भाग आया था और मंत्री बन गया । मंत्री बनने के बाद वह अपनी बदसूरत पत्नी को असमय पदोन्नति करवा देता है । श्रेष्ठ शिक्षिका का एवोर्ड भी दिलवा देता है । मगर इसी षड्यंत्रों में ही उसके पी. ए. ने उसकी बदसूरत पत्नी को जहर देकर मार डाला । यह बात दिनकर नहीं भूल पाया था ।

दिनकर अपने आपको मित्र के रूप में स्वीकार कर लेने लिए, सुरंगमा से निवेदन करता है । वह आधी–आधी रात उपहार लेकर सुरंगमा के घर पहुंच जाता है । विदेश से लौटी विनीता को जब ये बात पता चली तो वह सुरंगमा के घर पहुँची और सुरंगमा को धमकी दे आई कि अगर उसने दिनकर का पीछा नहीं छोड़ा तो, वह उसका खुबसूरत चेहरा तेजाब डलवा कर खराब करवा देगी ।

जब वह जाने लगी तो सुरंगमा ने दिनकर के दिए हुए उपहारों की गठरी थमा दी । जिसका उपयोग सुरंगमा ने कभी नहीं किया था ।

सबकुछ छोड़कर दूर चली जाने का निर्णय सुरंगमा करती है और जब घर लौटती है तो दरवाजे के पास किसी गठरी से टकरा गई वह और कोई नहीं गजानन नशे में चूर बेहोश पड़ा था ।

(७) चल खुसरो घर आपने

(पारिवारिक, आर्थिक समस्या में स्त्री के योगदान की कथा)

इस उपन्यास में एक ऐसी लड़की की कथा है जो पिता की मौत के बाद माँ, भाई–बहन पूरे परिवार की जिम्मेदारी अपने कंधों पर ले लेती है । नायिका का नाम है कुमुद । पढ़ी लिखी होने के कारण अध्यापिका की नौकरी

कर लेती है साथ में टयुशन भी कर लेती है । घर में लकड़ी से लेकर अनाज, भाई बहन की फीस, किराया, बिजली का बिल, बाबूजी का पेंशन, सब कुछ कुमुद करती है । इतना ही नहीं छोटी बहन उमा के म्यूज़िक का शौक भी पूरा करती है । मगर कभी अपने बारे में नहीं सोचती ।

कुमुद की माँ सदैव उमा–लालू की ही फिक्र किया करती थी । कुमुद के बारे में कभी नहीं सोचती, माँ के लाड़ प्यारने ही लालू को आवारा बना दिया । कॉलेज में दो मास से फीस नहीं दी, जब कि घर से ले गया था । सीगारेट जुए में मस्त रहता है, इम्तहान में भी कई विषयों में फैल होता है ।

एक दिन पुलिस घर पर आकर बताती है कि कुख्यात अड्ड़े पर छापा मारने से चार लड़कियाँ पकड़ी गईं, जिनमें एक उमा है । कुमुद जिस माथुर साहब की बेटियों का टयूशन करवा रही थी, उन्हीं के प्रयत्नों से उमा को छुड़वा लिया गया, बाद में माथुर साहब ने टयूशन के लिए मना कर दिया ।

बाद में माँ को उमा के विवाह की चिंता रहा करती थी । कुमुद अपने प्रति माँ की लापरवाही देख बहुत दुःखी होती है । घर के सदस्यों के लिए कुमुद ने अपने जीवन के बारे में नहीं सोचा, मगर माँ का ज्यादा लाड़प्यार ही उमा–लालू को पथभ्रष्ट कर देता है । कुमुद उमा को मामा के घर छोड़ देती है । उसके लिए घर का माहोल दमघोंटू हो गया था । इसलिए माँ के नाराज होने पर भी वह लखनऊ राजा कमलसिंह की बीमार पत्नी मालती की सेवा करने की नौकरी स्वीकार कर लखनऊ चली जाती है ।

यहाँ कुमुद के लिए उन्मादिनी मालती को संभालना बहुत कठिन है । राजा साहब को भी ज्वर की वजह से सन्निपात हो गया, कुमुद दोनों की सेवा एक साथ करती है । सन्निपात में राजा साहब ने कुमुद को मालती समजकर गले लगा लिया । मालती इस दृश्य को देखकर जल उठी । वह कुमुद का गला दबाने लगी मगर राजा साहब ने उसे बचा लिया ।

कुमुद अपने मन में नौकरी छोड़ देने की बात सोचती है, उससे पहले आने वाली डॉ. मरियम ने यहाँ आत्महत्या कर ली थी । ऐसी बातें वह नौंकरों से सुन चुकी थी । मगर कुमुद को बार–बार अपने घर की स्थिति और माँ के कृतज्ञता भरे आशीर्वाद याद आये । क्योंकि इस नौकरी के बाद कुमुदने माँ को घर को, बहुत ही सुख दिया था

इतना सबकुछ करने के बाद भी माँ कुमुद को छोड़कर, उमा के विवाह की तैयारियाँ करती है, कुमुद को ये कहकर समझाती है कि मुझे विश्वास है कि तू ऐसे वैसे कोई गलत काम नहीं करेगी, तेरी और से में निश्चिंत हूँ । उमा के विवाह के लिए कुमुद राजा साहब से पैसे माँगती है, पिताजी के बीमे की रकम मिलते ही चुका देने का वादा करती है ।

राजा साहब अपने भाइयों के साथ कोठी की संपत्ति को लेकर सदैव चिंतित रहते – कलह होता रहता । ऐसे दुःख में वह एक दिन कुमुद के कमरे में चले आये । अपने जीवन की कथा बताकर कुमुद से प्यार की याचना करने लगे अपने साथ रहने का वचन माँगने लगे ।

कुमुद घबरा गई, रात्री के समय राजा साहब का कमरे में आना उसे अच्छा नहीं लगा । वह तुरंत संभलकर उसे समझा बुझा कर उसके कमरे में भेज देती है । रात में ही उसने एक पत्र लिखकर तैयार किया जिसमें उसने राजा साहब से क्षमा मांगी थी और उससे लिए हुए पैसे चुका देने का वादा किया था ।

सुबह उठते ही नौकर को ये पत्र दिया कि राजा साहब तक पहुँचा दे और किसी से कुछ कहे बिना चली जाती है । छः मास पहले नौकरी के लिए इसी स्टेशन पर अकेली उतरी थी आज भी अकेली ही घर जा रही है ।

(८) कालिंदी

(विवाह को लेकर पहाड़ी कायदे–कानून और दहेज प्रथा आदि रूढ़ियों के सामने जूझती हुई नायिका की जीवंत कथा)

इस उपन्यास में दहेज की समस्या के सामने लड़ने वाली नारी की कथा है । अन्नपूर्णा का विवाह हुआ मगर पति के अन्य गायिका स्त्री से संबंध थे । परिणाम स्वरूप अन्नपूर्णा मायके आई । उसकी कुंडली में भी परित्यक्ता होने का दोष था ।

पिताजी ने उसे पढ़ाया–लिखाया, अन्नपूर्णा ने पिताजी की खेतीबारी, भाइयों की परवरिश आदि संभाल लिया, उसने सुंदर लड़की को जन्म दिया नाम रखा कालिंदी ।

अन्नपूर्णा के दूसरे भाई–भाभी देवेन्द्र–शीला निःसंतान थे । फलस्वरूप कालिंदी को गोद लिया । संपन्न घर में कालिंदी की परवरिश हुई । पुलिस अफसर बनने के बाद देवेन्द्र, पत्नी–बहन–पुत्री कालिंदी को लेकर दिल्ली चला आया । वहाँ कालिंदी को डॉक्टरी की उच्च शिक्षा दिलवाई । बड़ी होने पर उसके लिए लड़का ढूंढ़ने लगे ।

कैनेडा स्थित भारतीय डॉक्टर से कालिंदी का रिश्ता तय किया । कालिंदी माँ–मामा–मामी की कृतज्ञता के लिए हाँ कहती है । मगर वह विवाह करना नहीं चाहती थी ।

विवाह के दिन ही कालिंदी के पिता शराब पीकर आये और हंगामा मचाने लगे । अपनी बेटी का हक माँगने लगे । कालिंदी ने अपने मामा देवेन्द्र भट्ट को ही अपना पिता बताया । और देवेन्द्र ने उस शराबी व्यक्ति को पुलिस के हवाले कर दिया ।

विवाह के दिन ही कालिंदी को किसी ने बताया कि वर के पिता द्वारचार के समय ही ५० हजार रुपया दहेज लिये बिना विवाह करने राजी

नहीं है । देवेन्द्रमामा–मामी, माँ हाथ–जोड़े उसके सामने खड़े है, मामा रुपयों की व्यवस्था करने घर के भीतर आये ।

तभी ही सिंहनी जैसी कालिंदी द्वार पर आई, मामा को रोककर बारात को लौट जाने के लिए कहा, वर के पिता को बताया कि "हमें आपका बेटा नहीं खरीदना है जहाँ उसके मुँह माँगे दाम मिलें, जाकर बेच आइए ।"

समाचार पत्रों में कालिंदी के अपूर्व साहस की खबर छपी ।

कालिंदी जैसे कुछ नहीं हुआ हो, ऐसी स्वस्थता से दिल्ली जाकर नौकरी करने लगी ।

देवेन्द्र मामा–मामी माँ पहाड़ पर अपने पुश्तैनी मकान में रहने आये । अब कालिंदी को पुरुषों के प्रति घृणा हो गई थी । एक घटना ऐसी बनी कि वह पुरुष विरुद्ध विद्रोहिणी बन गई ।

कालिंदी की डाकटर सखी माधवी का मंगेतर अखिलेश वर्मा माधवी की अनुपस्थिति में कालिंदी को बाँहों में भर लेता है । जब कि माधवी और अखिलेश दोनों प्रेम विवाह करने वाले थे ।

कालिंदी के नाराज होने पर, अखिलेश ने कालिंदी के विरुद्ध माधवी के कान भरे । परिणाम स्वरूप माधवी अखिलेश की बात मानकर कालिंदी को भला बुरा कहती है ।

कालिंदी थोड़े दिन छुट्टी लेकर मामा के पास आ गई । छुट्टियों में गाँव में रहकर वृद्ध–बुजुर्गों की सेवा करना चाहती है । पहाड़ पर कालिंदी के दिन अच्छे व्यतीत होने लगे, बचपन के मित्र बिरजू से मुलाकात हुई । माँ को कुछ आशा बंधी । मगर कालिंदी उसे अपना मित्र, भाई ही समझती थी, बिरजू की मौत भी अकस्मात से हो गई ।

पहाड़ पर देवेन्द्र मामा के मित्र, वसंत मामा का बेटा पिन्टू विदेश से विवाह–विच्छेद करके लौटा है । उसने कालिंदी के समक्ष विवाह का प्रस्ताव रखा, कालिंदी उसे स्वीकार नहीं करती ।

एक दिन शाम को मंदिर से लौटी कालिंदी ने देखा कि डॉ. जोशी विदेश से ३० हजार रूपये, जो दहेज में एडवान्स लिये थे लौटाने, वापस देने आये थे । कालिंदी को पता चला कि दहेज की लेन–देन में डॉ. जोशी का कोई दोष नहीं है, जो कुछ किया था उसके पिताजी ने किया था । फिर भी कालिंदी उससे अच्छा व्यवहार नहीं करती । दिल्ली पहुँचती है तब डॉ. जोशी के कई पत्र आये थे, जिसमें उसने अपने निर्दोष होने की बात बताई थी । कालिंदी सभी पत्रों को बिना पढ़े फाड़ देती है ।

एक दिन अन्नपूर्णा अकेली कालिंदी के पास दिल्ली आई । वह उसे ये समझाना चाहती थी कि संसार की कोई भी स्त्री मायके का सुख भोगने पर भी एक दिन उबने लगती है । अहँकार को अपना शत्रु मत बनने देना । इसीलिए जो भी निर्णय करें, सोच समझकर करें ।

अंत में अन्नपूर्णा अपना भविष्य देखनेवाली यक्षिणी माता से प्रार्थना करती है कि ''उसकी ललाट लिपि उसकी पुत्री के ललाट पर मत उतारो माई ।''

(६) दो सखियाँ – लघु उपन्यास

(पारिवारिक असंतोष, प्रेम का अभाव – परिणाम स्वरूप – वृद्धाश्रम की कथा)

सखुबाई और आनंदी की भेंट वृद्धाश्रम में हुई । दोनों अपनी संतानों के होते हुए भी वृद्धाश्रम में अकेली जीवन व्यतीत करती है । सखुबाई संसार से उबकर, प्रिंसीपाल के पद से स्वेच्छा से अवकाश ग्रहण कर, किसी को कुछ कहे बिना आश्रम में चली आई थी ।

सखुबाई पति की मृत्यु के बाद पिता के घर चली आई । पढ़ लिखकर अपने पैरों पर खड़ी हो गई । बेटे को पढ़ा लिखाकर विदेश भेजा । माता पिता की सेवा की, सुख दिया ।

विदेश स्थित बेटा विदेश में ही माँ को पूछे बिना तीन–तीन शादियाँ करता है । तीसरी शादी एक हब्शी काली महिला से की । परिवार में दो बेटे हुए । बेटे के परिवार की तस्वीर देखकर नाराज होकर सखुबाई आश्रम में चली आई ।

आनंदी को अपनी दो बेटियाँ राधा–रुकमनी ही वृद्धाश्रम में छोडने आई थी । उसे अपने बेटे – बेटीयों की याद सताती है । विधवा आनंदी को एक बेटा था, जिसकी बहू आनंदी ने ही पसंद की थी । मगर शादी के बाद बहू का राधा–रुकमनी से निर्वाह नहीं हो सका । कलह से तंग आकर पुत्र अपनी पत्नी सास–ससुर को लेकर विदेश चला गया । कभी माँ को याद भी नहीं करता । आनंदी अकेली ही किराये पर रहने लगी । जिनका पूरा खर्चा बेटियाँ उठाती है ।

बेटियाँ अब माँ से तंग आकर बारी–बारी माँ को अपने घर पर रखती है । जहाँ आनंदी दोनों जामाता और उनके पुत्र–पुत्रियों को अवरोध लगती है । फल स्वरूप दोनों बेटियोंने उसके लिए ‘आश्रय’ आश्रम ढूंढ़ निकाला ।

‘आश्रय’ वृद्धाश्रम में आनंदी–सुखबाई एक ही कमरे में रहती है । दोनों के बीच मित्रता हो जाती है । आनंदी इश्वर भकत, श्रद्धावान नारी है । सखुबाई तटस्थ, बौद्धिक, स्वच्छताप्रिय नारी है । आनंदी भी स्वच्छताप्रिय है । अपने जीवन की प्रत्येक बात दोनों एक दूसरे से कहती हैं ।

आनंदी को मृत्यु से पहले अपनी मृत्यु का स्वप्न आता है और वह सखुबाई को सोने के दो भारी गोखरु दोनों बेटियों को देने के लिए देती है । और माणिक की अंगूठी सखुबाई को देती है ।

आनंदी ने जिस प्रकार चाहा था उसी ही प्रकार सखुबाई ने मृत्यु के समय बिदा दी ।

आनंदी के मृत्यु पर उसकी दोनों बेटियों को बुलाया मगर वह परिवार के साथ कहीं घूमने गई थी । बाद में उसका सामान लेने आती है । मगर

अपनी माँ की सखी–सखुबाई को जानते हुए भी अनजान बनी रही, अपनी माँ के बारे में एक शब्द भी नहीं पूछा ।

सखुबाई दुःखी हुई । गुस्से में उसने गोखरु बेटियों को नहीं दिये । दूसरे दिन सखुबाई गोखरु थैली में रखकर उस समुद्र तट पर आई जहाँ दोनों बैठकर अंतरंग बातें किया करती थीं । दोनों गोखरुओं की थैली पत्थर से बाँध कर समुद्र की लहरों में बहा दिया । तब तक देखती रही जब तक वह पानी में विलीन न हो जाय, अंगूठी सखुबाई ने अपनी सखी को याद करके अंगुली में पहन ली । आनंदी के मृत्यु के बाद अकेली हो गई थी । परिणामस्वरूप आनंदी की मृत्यु पर भी न रोनेवाली, लौहस्तंभ सी मास्टरनी सखुबाई फूट फूट कर रोने लगी ।

(१०) स्वयंसिद्धा (लघु उपन्यास)

(आत्मसम्मानी – जिद्दी नारी की कथा)

इस लघु उपन्यास में एक आत्मसम्मानी नारी की कथा है । माधवी का विवाह कौस्तुभ के साथ कुंडली देखकर ही हुआ था । स्वयं कौस्तुभ के माता–पिताने माधवी को देखकर पसंद किया था ।

माधवी की मौसी कह रही थी कि आषाढ़ में जिस नारी का ब्याह होता है वह दुःखी होती है, पिताने एक भी बात नहीं सुनी विवाह हो गया ।

मगर माधवी को विवाह की पहली रात ही आधात मिला । पहली ही रात एक अनाम चिटठी मिली कि ''तुम्हारे पति को मैं पहले ही अपने रूप की शराब पिलाकर अपना बना चुकी हूँ'' – राधिका । कौस्तुभ माधवी को बहुत ही समझाता है । कौस्तुभ कहता है ''मैं राधिका को बचपन से जानता हूँ उसे उटांगपटांग मजाक करने की आदत है । मैं जरूर जानता था कि वह मूर्ख तुम्हें कुछ लिखेगी । मगर माधवी उसकी बात का विश्वास नहीं करती और जिद में कौस्तुभ को छोड़कर पिता के घर आ जाती है ।

रात्रि में पति के घर से आनेवाली बिन माँ की पुत्री को पिता घर में नहीं आने देते । माधवी माँ को याद करके रोने लगती है । बाद में मौसी के घर जाती है – उन्होंने भी उसे घर में नहीं आने दिया । फलस्वरूप माधवी अपनी सहपाठीनी रचेल एन्ड्रुज के घर गई, वह उसे अपने घर रखती है । रचेल के पिताने माधवी की एम.ए. की पढ़ाई का एडमिशन ले दिया ।

बुद्धिशाली माधवी पढ़लिखकर स्वयं अपने पैरों पर खड़ी हो गई । उसने अपने रिश्तेदारों से संबंध काट दिये । सबकुछ होने पर माधवी के पास शांति नहीं है । वह अकेलापन महसूस करती है । अतीत की बातें उसे अनिद्रा की रोगी बना देती हैं । माधवी को कभी कभी अपनी गलती पर पश्चाताप होता है । वह नींद की गोलियाँ खाने लगती है ।

एक दिन उसे पिताजी का पत्र मिला, जिसमें कौस्तुभ की बिमारी की खबर थी । पिताजी चाहते थे कि वह कौस्तुभ को देखने जाय । माधवी को ट्रेन में ही कौस्तुभ से मुलाकात हुई थी जो पत्नी के साथ सफर कर रहा था । उसे लगा कि कौस्तुभ निर्दोष था उसने अकारण ही उस पर संदेह किया था । बिजली चली जाने पर कौस्तुभ उसे चुंबन कर देता है । यह बात माधवी को पिताजी का पत्र मिलने पर याद आ गई ।

वह ससुराल जाती है । घर पहुँची तो देखा कौस्तुभ के घर भीड़ विचित्र विलाप कर रही थी । मृत पति को वह एकटक देखती ही रही उसे आँसू बहाने का कोई अधिकार नहीं था । वहाँ से निकलकर घर आई और नींद की गोलियां खाकर कभी–न टूटने वाली निद्रा में डूब गई ।

(११) गैंडा – लघु उपन्यास

(इस लघु उपन्यास में स्पर्धा का मानसिक अंतर्द्वन्द्व और अंत में मौत प्राप्त करती राज की कहानी है ।)

राज–सुपर्णा बचपन से कालेज तक पढ़ाई, खेलकूद इम्तहान, संगीत, सौंदर्य प्रत्येक में एक दूसरे की प्रतिस्पर्धी रहीं । राज–सदैव विजयी बनती । फिर भी दोनों सखियाँ थीं । मैत्री बनी रही ।

मगर वैवाहिक जीवन के क्षेत्र में सुपर्णाने राज को हरा दिया था । क्योंकि सुपर्णा का पति खूबसूरत राजकुमार जैसा था । जबकि राज का पति काला बदसूरत बौने कद का था । जिसे राज गैंडा कहकर बुलाती थी ।

विवाह के बाद दोनों सखियाँ पहली बार सपरिवार मिलीं । और तब से दोनों के जीवन का दूसरा अध्याय शुरू हुआ ।

राज के ससुराल वाले, पति, धनिक होने के बाद भी राज होटलों में रिसेप्शनिष्ट की नौकरी करती थी, सिर्फ समय व्यतित करने के लिए । अपनी दोनों बेटियाँ अपने माता–पिता के यहाँ छोड़ आई थी । बेटियाँ भी पिता जैसी बदसूरत थी जिसे राज नफरत करती थी । राज पर पश्चिमी दुनिया का प्रभाव था । उसके रंग–ढंग पहनावा रुचि में आभिजात्य, पश्चिमीकरण की छाप थी ।

सुपर्णा भारतीय घरेलू गृहिणी थी बेटा–बेटी दो संतान थे । पति उसके लिए सबकुछ था, वह राज की तरह स्वच्छंदी, स्वतंत्र नहीं है । दोनों की मैत्री फिर से हुई ।

राज धीरे–धीरे सुपर्णा के सास–ससुर बच्चों का मन जीत लेती है । बच्चों को मिठाई – प्यार देती है सुपर्णा के सास ससुर की सेवा करती है । यहाँ तक की रोहित को भी राज अच्छी लगने लगी थी । सुपर्णा को इस बात का पता चला गया था । राज के पति वेद का तबादला हो गया तब सुपर्णा उसे समझाती है कि वह राज को साथ ले जाय । वह भी यही चाहता था मगर राज नहीं जाती ।

वेद के जाने के बाद राज सुपर्णा के घर उसके बच्चों के कमरे में रहने आ जाती है । और राजने अपनी होटेल में ही एक कमरा बुक करवा

के रखा था जहाँ राज–रोहित दोनों मिलते हैं । यह बात पास पड़ोशवाले भी जानते थे । राज ने एक दिन सुपर्णा को नवरत्नों का सेट दिखाया । तब सुपर्णा को पता चला कि राज ने उसके पति को जीत लिया है । सुपर्णा के पूछने पर राज किसी जौहरी का नाम बता देती है ।

सुपर्णा इतना बड़ा आघात–विश्वासघात, राज की स्पर्धा सहन नहीं कर पाई । और एक मौलवी से मंत्रित ताविज ले आती है । उसके घातक असर से फूड पोइजीनींग से राज की मृत्यु हो जाती है । रोहित को संदेह था कि राज को सुपर्णा ने ही मारा था । सुपर्णा रोहित का दिया हुआ नौरत्न हीरों का सेट, गरीब मौलवी की बेटी के ब्याह के लिये उपहार में दे आती है ।

(१२) माणिक – लघु उपन्यास :

(यह एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है)

माता–पिता की मृत्यु के बाद नलिनी मिश्रा अपनी छोटी बहन रंभा मिश्रा के माता और पिता बन जाती है । नलिनी शांत, एकांत प्रिय, विवेकी, बुद्धिमान है । रंभा चंचल, जिद्दी मिलनसार है ।

नलिनी नौकरी करती है अपनी अवकाश प्राप्ति के पहले ही अपने आवास 'वाटिका' की व्यवस्था कर लेती है । निर्जन स्थली में वाटिका होने से एकांत की आदि बन जाती है वह विवाह करना नहीं चाहती । पिता ने भी नलिनी के विवाह की ओर ध्यान नहीं दिया था । धन संचय में ही लगे थे ।

नलिनी रंभा की प्रत्येक इच्छा, शौक पूरा करती है । संगीत का शौक भी पूरा करती है । मगर रंभा, जब संगीत मास्टर के साथ भाग जाती है तो उसे समझा बूजाकर घर लाती है और रमेन्द्र के साथ उसकी शादी कर ढेर सारे गहने दिये ।

अपनी इच्छा, अपना प्रेम कभी भी नलिनी ने छोटी बहन के सामने नहीं रखा । मकान भी रंभा के नाम कर दिया । रंभा के जब बेटा पैदा हुआ तो

उसे भी अपने घर ले आई उसकी पढ़ाई, बोर्डिंग स्कूल का खर्चा, स्वयं उठाती थी ।

एक दिन बारिस में दीनाबाटली वाला नामक अनजान स्त्री नलिनी के घर आई, नलिनी उसे अपने अकेलेपन का सहारा बना लेती है । दीना अपने व्यक्तित्व के जादू, अंग्रेजी भाषा, कला मर्मज्ञता से नलिनी को जीत लेती है ।

यहाँ तक की नलिनी अपनी प्यारी बहन रंभा को भी भूल जाती है । आजन्म कौमार्य वैरागी नलिनी की प्रत्येक बात में परिवर्तन आ गया था । खाने–पीने कपड़ों में भी परिवर्तन आ गया था । मानो नलिनी ने प्रकृति को जो चुनौती दी थी उसका प्रतिशोध ले रही थी प्रकृति, दीना को भेजकर ।

दीना नलिनी के आगे–पीछे घुमा करती थी । और धीरे धीरे दीना नलिनी का बैंक बेलेन्स, गहनें और एक दिन नलिनी की हत्या करके, रंभा के हिस्से में गई माणिक की अंगूठी में से माणिक लेकर फरार हो जाती है । पुलिस को पता चला कि वह एक पेशेवर हत्यारिन थी, और सात साल पहले पति की हत्या करके उसका बीमा लेकर भागी हुई स्त्री है दीना बाटलीवाला ।

(१३) विषकन्या : (लघु उपन्यास)

कामिनी–दामिनी दोनों जुडवाँ बहनें थीं । दोनों के रूप में समानता होने के बावजूद स्वभाव में बहुत विरोधाभास था । दामिनी शांत, विनम्र, सुसंस्कृत, आस्तिक – माता पिता की प्यारी थी । इससे कामिनी ईर्षा करती थी । ईर्षा ने उसके दिल में विद्रोह भर दिया था । वह जिद्दी हठ्ठी, असभ्य, अशिष्ट बन गई थी ।

कामिनी अपनी बड़ी बहन की हमशकल होने का फायदा उठाती थी । बिना पूछे पिकचर देखने जाना, अपने सहपाठी मित्रों द्वारा दी गई दावतों के निमंत्रण में जाना । प्रत्येक बात में छल कपट से कामिनी बाहर निकल जाती । माता–पिता के द्वारा पकड़े जाने पर वह साफ इन्कार कर देती ।

माता–पिता चिंता में डूब जाते कि दोष, सजा किसे दें ? दामिनी सबकुछ जानती थी पर कभी माता–पिता से कामिनी के विरुद्ध शिकायत नहीं करती ।

कामिनी के स्वभाव में एक विशेष शक्ति जुड़ी थी, वह जिस वस्तु, व्यक्ति की प्रशंसा करती, प्रेम से देखती, उसका सर्वनाश हो जाता । उससे माँ सदैव डरती रहती–कहती है कि तेरी जबान काली है बेटी ! सब चीजें कामिनी की नजरों से बचा कर रखती थी । माँ की शिफोन की साड़ी की प्रशंसा की, आया ने उसे इस्त्री से जला दिया । बुआ के खूबसूरत चेहरे की प्रंशसा की, तीसरे दिन प्रेशर कुकर का ढकना उड़कर मुँह पर गिरा, चेहेरा बदसूरत हो गया ।

इस अद्‌भुत शक्ति पर विश्वास कर कामिनी को प्लेन अकस्मात के समय हुआ । कामिनी एर होस्टेस होने से उसे पायलोट डिसुजा के साथ आये दिन जाना पड़ता । डिसुजा कामिनी को वासना–लोलुप दृष्टि से देखता था । प्लेन अकस्मात में दोनों एक जंगल में गिरे, वहाँ लाशों के ढेर के बीच डिसुजा कामिनी को पाना चाहता है । कामिनी कुछ क्षण उस पर मोहित हो गई – उसकी तारीफ कर दी ‘‘तुम कितने सुदंर हो जोन !!’’ डिसुजा प्यास लगने पर झील पर गया वापस आकर कामिनी के पैरों के पास दम तोड़ दिया । कामिनीने माना कि झील–का पानी गंदला–विषैला होगा, मगर जब उसने पिया तो स्फूर्ति का अनुभव हुआ । कामिनी आराम करने लंबी छुटियाँ लेकर घर आई ।

घर पहुँच कर देखा कि उसके बचकर आने का कोई महत्त्व नहीं है । घर में सब बड़ी दीदी दामिनी के विवाह की तैयारियाँ कर रहे थे । उस लड़के रोहित के साथ कि जिसे देखकर कामिनी भी उसे मन ही मन चाहने लगी थी । कामिनी बहुत दुःखी होती है, माँ भी शादी की सब चीजें कामिनी की नजरों से बचाकर रखती है ।

दामिनी शादी के बाद ससुराल चली गई । कामिनी अपने काम पर गई । कई दिनों के बाद कामिनी – दामिनी के ससुराल उससे मिलने गई तो देखा की दामिनी मम्मी डैडी से मिलने मायके गई है ।

नौकर उसे मालकिन समझकर स्वागत करता है । रोहित भी उसे दामिनी समझकर बाँहों में भर लेता है । कामिनी बहन के प्रति ईर्षा की वजह से कोई स्पष्टता नहीं करती । थोड़े दिनों वह रोहित के साथ पत्नी बन कर रहती है ।

दामिनी जब मायके से आई, कामिनी को देखकर सारी बातें समझ गई । बहुत दुःखी हुई । कामिनी के समझाने पर भी वह फिर से घर छोड़ मायके चली गई ।

यहाँ पर कामिनी से रोज कोई न काई गलती होती रहती है । यहाँ तक की रोहित को भी धीरे धीरे संदेह होने लगा । उसे दूर करने वह कामिनी को झील में तैरने ले जाता है । कामिनी पानी में नहीं जाती वह जानती थी कि दामिनी को पानी से डर लगता था । मगर रोहित उससे बहाना बताता है कि तीन महीने पहले मैंने ही तुम्हें तैरना सिखाया है भूल गई क्या ? जैसे ही कामिनी पानी में उतरी रोहित को पता चल गया कि वह उसकी पत्नी दामिनी नहीं कामिनी है । कामिनी वहाँ रोहित की खुली देह देखकर उस पर मोहित हो जाती है । रोहित कामिनी को दूर कर के किनारे पर आता है । वहाँ कहीं से कोबराने आकर उसे डँस लिया । रोहित बेहोश हो जाता है कामिनी अपने माँ–पिता–बहन को खबर कर देती है ।

दामिनी अपने पति की छाती पर सिर रखकर रोते हुए उसकी पत्नी होने का प्रमाण देती है । रोहित की मृत्यु हो जाती है माता–पिता को सारी बातें बाद में समझ में आती हैं कि यह सब कामिनी की अभद्रता थी ।

कामिनी भी अपने प्रेमी का शोक मनाना चाहती थी मगर वह रो नहीं पाई । क्योंकि बहन परिवार तथा समाज ने उसे समझने की कोशिश नहीं की सब गलत ही समझते थे ।

कामिनी किसी से कुछ कहे बिना घर छोड़ देती है जंगल में किराये पर एक कोठी लेकर रहने लगती है ।

वह दामिनी और उसके बेटे के सामने नहीं जाना चाहती । शायद बेटा भी उसे अपनी माँ समझने की गलती कर दे । बिलकुल अपने पिता की तरह तो ?

(१४) कैंजा (सौतेली माँ) लघु उपन्यास

(पहाड़ के वैवाहिक कायदे कानूनों का लेखा जोखा, रीति-रिवाज, परंपरा को प्रस्तुत करता हुआ लघु उपन्यास । पूरी कथा नायिका नंदी के जीवन से जुडी है ।)

मातृहीना नंदी सर्वगुणसंपन्न है । मगर उसकी कुंडली में वैधव्य योग होने के कारण पिताजी उसकी शादी करना नहीं चाहते, पढ़ा लिखाकर आत्मनिर्भर बनाना चाहते हैं । नंदी डॉक्टर बन जाती है और पिताजी की बातों को आदर्श पुत्री बनकर स्वीकार कर लेती है ।

गाँव का युवान सुरेश भट्ट बचपन से नंदी को चाहता है । वैधव्य योग होने के बाद भी नंदी से शादी करना चाहता है । मगर नंदी के पिताजी उसे शराबी जुआरी कह के निकाल देते है । नंदी के पिता की ओर से निराशाजनक उत्तर प्राप्त करके सुरेश भट्ट और भी गुनाह करने लगता है, वह सेक्स मैनियाक हो जाता है । एक भी गलत कर्म उससे नहीं छुटा - रेप, हत्या, शराब, जुआ, बलात्कार ।

गाँव की मालदारिन की पागल बेटी पर बलात्कार करके भाग जाता है । वह लड़की माँ बनने वाली है । नंदी उसके बेटे को महा प्रयत्न से बचा

पाई । मगर पगली की मृत्यु हो गई । अनाथ अवैध बच्चे को नंदी ले आई । माता–पिता दोनों का प्यार दिया । उसे लेकर दूर गाँव में डॉक्टरी करने चली जाती है ।

नंदी को सदैव ये डर लगता है कि रोहित को इसी बात का पता न चल जाय कि वह उसकी सगी माँ नहीं है । मगर हुआ यही । दस साल के रोहित को स्कूल में सब पूछने लगे कि तेरे पिता कौन है ? वह नंदी से अपने पिता के बारे में पूछता है । नंदीने नाम बता दिया सुरेश भट्ट ।

अब नंदी रोहित को लेकर गाँव आई वह सुरेश भट्ट से शादी कर लेना चाहती थी क्योंकि रोहित को वह माता और पिता दोनों का प्यार देना चाहती थी ।

सुरेश भट्टने शराब–पी–पीकर अपनी हालत और भी खराब कर दी थी, नंदी को उसके प्रति दया भी है प्रेम भी है । विवाह मंडप में ही वह बार बार उसका इलाज करती है । मगर सुरेश भट्ट अचेत हो जाता है । नंदी अपने आपको विधवा हालत में पाती है ।

अचानक नंदी के सामने पगली की माँ मालदारिन आ गई । यानी रोहित की नानी जिसने अपने पति को जहर देकर मारा डाला था । वह रोहित को बता देती है कि नंदी उसकी सगी माँ नहीं है कैंजा है । रोहित यह सुनकर आघात से शीशा तोडने लगता है रोता है मगर फिर भी दसवर्षीय बालक अपनी माँ नंदी के साथ रहने के लिए तैयार हो जाता है ।

(१५) रतिविलाप (लघु उपन्यास)

(संपत्ति के लालच में नैतिक मूल्यों से गिरावट, अनमेल विवाह की समस्याओं का चित्रण)

नायिका अनसूया पटेल शांति निकेतन की छात्रा है । कुशल नृत्यांगना, अभिनय कुशला है । श्रीमंत व्यापारी पिता की पुत्री है । मगर पिताजी की

मृत्यु के बाद घर और व्यापार का उत्तरदायित्व अपने कंधों पर उठा लेती है । थोड़े दिन मामा ने सहकार दिया मगर बाद में उनकी कुदृष्टि भानजी की संपत्ति पर पड़ी ।

अनसूया को दूर करने के लिए मामाने उसका विवाह अपने मित्र के उन्मादी, पागल पुत्र से तय कर दिया । अनसूया को सिर्फ लड़के की तस्वीर दिखाकर रिश्ता स्वीकार करवा लिया । अनसूया कुटिल मामा पर भरोसा करती है उसकी चाल नहीं समझ पाई ।

विवाह की पहली रात अनसूया को पता चला कि उसका पति मानसिक रूप–से स्वस्थ नहीं है । आघात से मुढ़ हो गई ।

पश्चाताप से ससुरजी ने सारी संपत्ति अनसुया के नाम कर दी । उन्मादी पति को कमरे में कैद करके रखा जाता था । ससुरजी उसे पुत्रीवत् स्नेह करते थे । एक दिन उसका पति अनसूया को बाँहों में भरकर छत की ऊँची मुंडेर पर चढ़ जाता है । वह अनसूया को लेकर नीचे कुद जाने की धमकी देने लगा । पिताजी ने अनसूया को पाँव खींचकर बचा लिया मगर विक्रम छत के नीचे जा गिरा और प्राण गँवा दिये ।

रिश्तेदार बातें करने लगे स्वरूपवान युवा बहु से रंग रेलियाँ मनाने पुत्र को मार दिया । फलस्वरूप अनसूया को लेकर करशनदास भोगीदास कापडिया मुंबइ चले आये । वहाँ अनसूया को साड़ियों का बुटिक ‘इन्द्रधनुष’ खोल दिया । ऊँचे घराने की समृद्ध स्त्रियाँ अनसूया की ग्राहक थीं । घर का काम पिताजी संभालते, अनसूया व्यवसाय ।

मगर पिताजी की तबियत का ख्याल करके उसकी परवरिश के लिए अनसूया हीरा नामक लड़की को नौकरानी के रूप में घर ले आई । जिसने अपनी १८ वर्ष की उम्र में अपने वृद्ध आतताई पति की हत्या करके जेल काटी थी ।

हीरा की सेवा लेना पिताजी मना करते थे । मगर बाद में मान गये, हीराने अपनी वाक्पटुता, काम-से अनसूया तथा पिताजी को जीत लिया था । और अनसूया को सहाय करने दुकान पर भी जाती थी ।

अनसूया हीरा पर विश्वास करके घर-दुकान-पिताजी को हीरा के हवाले करके, फरजाना बेग की साड़ियाँ खरीदने दक्षिण चली गई ।

हीरा का जीवन अभावों में बीता था, खानेपीने की चीजें, बनाव श्रृंगार के लिए उसका मन लालायित रहता था । अनसूया साड़ियाँ लेकर वापस आई तो दामी साड़ियाँ देकर हीरा के मनमें लालच जगा । उसने साड़ियाँ दुकान पर नहीं भिजवाई । फरजाना बेग घर पर ही लेगी, ऐसा फोन आया था ऐसा बहाना किया । दोपहर में तबीअत का बहाना करके घर चली आयी । अनसूया ने घर आकर दरवाजे पर ताला देखा तो आश्चर्य लगा । दूसरी चाभी से दरवाजा खोला, कुछ अशुभ बनने का संदेह हुआ । घर में भीतर जाकर देखा कमरे में पिताजी नहीं थे । आलमारी में साड़ियाँ नहीं थीं, हीरा दोनों को लेकर भाग गई थी । पिताजी की चिट्ठी में हीरा के प्रति प्रेम होने से जाने की बात लिखी थी । अनसूया फिर से अनाथ हो गई । मगर अपने आप को संभाल लेती है ।

कुछ महिनों बाद अनसूया को पुलिस से सूचना मिली कि उसके ससुर का शब होटल के कमरे में से मिला । उसके साथवाली लड़की गायब हो गई है । होटल से मिली डायरी में से अनसूया का पता मिला था । अनसूया ने जाकर पिताजी के अंतिम संस्कार किये ।

एकबार अनसूया साड़ियाँ खरीदने दिल्ली गई । वहाँ एक होटल में उसकी नजर एक युवती पर गई, साथ में एक युवक और छोटा बच्चा था जो खाना खा रहे थे । युवती ने जो दामी साड़ी पहनी थी उसे पहचान कर पता लग गया कि वह हीरा ही थी । छोटा बच्चा खेलता-खेलता अनसूया के टेबल के पास आया, जिसकी शकल बिलकुल पिताजी से मिलती थी । अनसूया समझ

गई कि हीरा का बेटा उसके ससुर का ही बेटा है । हीरा अपने बेटे को ढूंढ़ती हुई उसे लेने आई तो अनसूया को देखकर साथवाले युवक और बच्चे को लेकर भाग निकली ।

अनसूया चाहती तो पुलिस में खबर कर सकती थी मगर वह अपने नन्हें देवर को मातृहीन अनाथ बनाना नहीं चाहती थी ।

(१६) किशनुली (लघु उपन्यास) :

(अवैध संतान, बलात्कार, पंत–पांडे ब्राह्मणों के धार्मिक ढोंग की कथा ।)

यह एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है । किशोरवय की एक उन्मादिनी, पगली, सुंदर किशोरी समाज की घटिया मनोवृत्ति का शिकार हुई है । गली गली में पगली ठोकरें खाती है गाँव के मनचले लड़के उसे देखकर सीटी बजाते, उसे चिढ़ाते रहते हैं । छेड़ँते रहते थे ।

गांव के संस्कृत पढ़ाने वाले पंडित परमानंद पांडे की पत्नी पगली किशनुली को बचाती है, प्यार से किशना नाम देती है । नहला–धुलाकर सँवार देती है । शास्त्रीजी अपनी निःसंतान पत्नी की भावना को नहीं समझते । किशनुली को रखने से मना करते हैं ।

मगर काखी उसकी बात नहीं सुनती, घर में रखती है । नहाने बैठे शास्त्रीजी को किशनुली देखा करती है, शास्त्रीजी उसे मार भगाते हैं । एक दिन किशनुली किसी को कुछ कहे बिना चली गई । जब वापस आई तो उसे सात महनिों का गर्भ था । काखी ने उसे घर में रखा, समाजवालों ने उससे व्यवहार बंद कर दिया था । किशनुली को बेटा हुआ काखी उसे संभाल लेती है नाम रखा था कर्ण ।

शास्त्रीजी छुप–छुपकर कर्ण को उठाते, प्यार करते, गले लगाते, आंसू बहाते थे । काखी उसे ममता, पश्चाताप के आँसू समझती है । मगर व्यथा शास्त्रीजी जानते थे कर्ण अपना बेटा था मगर पतिव्रता पत्नी को कुछ कहने की

हिंमत नहीं कर पाते । एकबार रात में किशनुली काखी–शास्त्रीजी के बीच में आकर सो गई । काखी बताती है कि आपसे पिताजी जैसा प्यार करती है उस पर पंडित उसे थप्पड़ मार देते हैं । काखी को कुछ समझ में नहीं आया । और शास्त्रीजी कुछ कहे बिना घर छोड़कर चले जाते हैं । किशनुली बीमार हो जाती है । दवाइयों से कुछ फायदा नहीं हुआ और चल–बसी । कर्ण भी पढ़–लिखकर बड़ा अफसर बन गया जो काखी को शहर में बुला रहा है । मगर काखी अपने पूर्वजों का घर छोड़कर जाना नहीं चाहती ।

लेखिका को शास्त्रीजी का पत्र मिला उसमें कर्ण अपना बेटा है, ऐसी सारी बातें लिखी थीं, काखी को बताने को कहा था मगर लेखिका काखी की श्रद्धा, विश्वास तोड़ नहीं पाई ।

(१७) कृष्णवेणी (लघु उपन्यास)

(मन की दिव्यदृष्टि से भविष्य को देखना, समृद्धि प्राप्त करना, मगर प्रेम में निराशा प्राप्त करनेवाली युवती के मनोद्वंद्व की कथा ।)

इस लघु उपन्यास में नायिका कृष्णवेणी को ऐसी दिव्य दृष्टि प्राप्त है कि वह आँखें बंद करके किसी का भविष्य देख सकती है ।

कृष्णवेणी समृद्ध पिता आई.सी.एस. ऑफिसर नटराजन् की बेटी थी । जिनकी अपनी टर्क कलब थी, अपना अस्तबल था, प्रतिवर्ष अपने घोडों को रेस में लगाने का उन्हें शौक था ।

वेणी को अपनी दिव्यदृष्टि का ज्ञान आठ साल की थी तब हुआ । थोड़े दिन पहले उसके मामा को सामान्य एपेंडिकस की वजह से अस्पताल में भर्ती किया था, यह सब जानते थे ।

नींद में वेणी ने जो देखा उठकर कहने लगी । आवाज बदल गई थी । एकदम भारी होगई थी ‘‘मामी बेहोश पड़ी है । मामा के शरीर पर सफेद चादर ढांक दी है । सब रो रहे है । माता–पिता ने जाकर देखा कि

वही बातें, दृश्य था, जो वेणी ने बताया था । मगर पिता नटराजन के कहने पर ये बातें छिपा-दी गईं, ताकि बेटी तमाशा न बन जाय ।

थोड़े दिनों बाद पिताने वेणी को पूछा कि कौन-सा घोड़ा रेस में लगाया जाय ? जो जीतकर आये । वेणीने आँखें बंद करके कहा "ब्लैक प्रिन्स" जो अस्तबल का सबसे दुर्बल घोड़ा था । वेणी के कहने पर रेस में लगाया और जीतकर आया । बाद में वेणी की दिव्यदृष्टिने अपने समृद्ध पिता को और भी समृद्ध बना दिया । नटराजन्‌ने नौकरी छोड़ दी और घोड़ों की रेस के पीछे भागने लगे ।

वेणी के जन्म के तीसरे साल दक्षिणी परंपरा के अनुसार उसका रिश्ता उसके मझले मामा से तय कर दिया था । जो विदेश स्थित थे । बड़ी होने के बाद वेणी ने उसका विरोध किया । मगर थोड़े दिनों के बाद माँ ने वेणी को मामा के वैभव को लेकर उसके प्रति आकर्षित करने के लिए भविष्य को देखने के लिए कहा । वेणीने देखा कि मामा बड़ी बड़ी लोह श्रृंखला को पकड़े, सलाखों के पीछे खड़े हैं । वस्त्र अस्तव्यस्त हैं । दूसरे ही वर्ष, मामा को पागल हो जाने से पागल खाने में भर्ती करवाना पड़ा ।

कृष्णवेणी शांतिनिकेतन में पढ़ने गई । वहाँ उसकी मुलाकात एक निर्धन कलाकार छात्र भास्करन् से हुई । बंशी बजाने वाला भास्करन् चित्रकार था । वेणी उसे प्यार करने लगी । मगर उसकी गरीबी के कारण पिता को उसका रिश्ता मंजूर नहीं था । और भास्करन् के माता-पिता को कोढ़ था ।

वेणी इस कुष्ठ रोग की बात से बहुत उदास हो जाती है अपना ख्याल रखती है । मगर भास्करन् से ही शादी करना चाहती है । परिणाम स्वरूप पिताजी उसे वहाँ ले जाते है, जहाँ भास्करन् के माता-पिता रहते थे । रोग-हद से आगे बढ़ गया था । भास्करन् भी गायब था ।

माँ के कहने पर वेणी भास्करन् का भविष्य देखती है, वह अल्मोड़ा के कुष्ठाश्रम में टीन की बैरेक में बैठा है । चेहरा बीभत्स हो गया है । बंशी नहीं उठा पाता । मगर वेणी यह बात माँ को नहीं बताती ।

सब का भविष्य देखनेवाली वेणी अपना भविष्य नहीं देख पाती जब देखती है, तो अंधेरा ही दिखाई पड़ता है । और एक दिन तेज रफतार में गाड़ी चलाते वक्त किडनी रच्चर से गाड़ी गहरी खाई में जा गिरी । वेणी की मृत्यु हो गई । एक महीने के बाद पिताजी भी लाखों की संपत्ति छोड़कर चल बसे । माँ दृष्टिहीन हो गई । नौकर चाकर सब काम करते थे ।

(१८) रथ्या – लघु उपन्यास

(कुंडली में विवाह योग नहीं होने से निराश युवती डांसर बन गई ।)

उपन्यास की नायिका बसंती के पिता जुए में सबकुछ हार गए । परिणाम स्वरूप नदी में कूदकर जान दे देते है । माँ भी उसके पीछे आत्म हत्या कर लेती है । अनाथ बसंती की परवरिश विधवा जीवंती बूआ करने लगती है ।

बचपन से बसंती बिमार ही रहती है । मगर उसके व्यक्तित्व में एक विशेषता है कि वह खरगोश की तरह भागती है उसके शरीर में से कस्तुरी जैसी सुगंध आती है । गाँव के वैद्यजी बसंती का इलाज करते हैं । बसंती बार–बार उससे चूरन माँगने जाया करती है । वैधजी का बेटा विमल बचपन से ही वसंती का मित्र था । दोनों बड़े होने पर एक–दूसरे के प्रति आकर्षित होते हैं ।

बूआ ने बसंती की कुंडली वैद्यजी को दिखा दी । अगर विमल की कुंडली से उसका मेल हो गया तो दोनों की शादी करके जिम्मेदारी से मुक्त होना चाहती है ।

वैद्यजी ने दोनों की कुंडली देखी, दोनों में कोई विवाह योग नहीं था । निराश वसंती भी बाद में कभी वैद्यजी से चूरन मांगने नहीं गई । और ना ही विमल से मिली ।

अल्मोड़ा में एक दिन सरकस का खेल आया । तीन दिन तक लगातार बसंती और बूआ देखने जाते है । चंचल वसंती शेर के पिंजड़े के पास खड़ी होकर उसे चिढ़ाती रहती है । एक दिन विमल ने यह देखा और ऐसा करने से मना किया । मगर बसंती उसकी बात सुनती ही नहीं ।

एक दिन विषैली जंगली सब्जी खाने पर सरकस के कई सदस्यों की मौत हो जाती है । मेनेजर ने अपना खेल समाप्त करने डेरा तंबू उठा लिया, चला गया । मगर तब से बसंती भी गायब हो गई । लोग मानने लगे कि उसे शेर खा गया है बूआ भी रो–धोकर भूल गई । मगर बिमल का दिल यह बात स्वीकार नहीं कर सकता था ।

बड़े वैद्यने बिमल की शादी गाँव की मोटी–बदसूरत सुरसती से कर दी, क्योंकि उसके पिताने दहेज में तीन भैंसे दी थीं । बदसूरत सुरसती का गृहिणीरूप खूबसूरत था । बिमल भी संस्कृत पाठशाला में अध्यापक बन गया था । उसके घर पर भी सात साल का बेटा था ।

एक दिन अचानक बूआ के नाम बंसती ने मनीओर्डर भेजा, मिठाइयाँ कपड़े, शाल सब कुछ था । गाँववालों को प्रणाम कहा था । विमल के लिए उपहार में चुड़ियाँ भेजी थीं, विमल समझ गया था कि प्रेम में निराश वसंती ने उसकी कायरता पर व्यंग किया था ।

विमल ने मर्नीओर्डर की चिट्‌ठी पर से बसंती का पता लिख लिया । जब राज्य के श्रेष्ठ शिक्षक का एवोर्ड पाने दिल्ली गया, तब वसंती को भी ढूँढ़ निकाला, उससे मिलने गया ।

विमल बसंती का वैभव देखकर चकित रह गया और अपने आप पर लघुता अनुभव करने लगा । बसंतीने विमल की अच्छी खातिरदारी की । दूसरे

दिन बाजार जाकर ढेर सारे उपहार, कपड़े, मिठाइयाँ, जूते ले आई । रात में अपने जीवन की सारी आपबीती बताई । सर्कस के मैनेजर ने उसका शारीरिक शोषण किया था । वहाँ से भागकर डाँस सिखा, अलग अलग नाम धारण करके, बड़े–बड़े शहरों में नाचती है । उसे चाहनेवाले अनेक है । तेज गाड़ी चलाती है । हवाई जहाज में उड़ती है । मगर विमल को नहीं भूल पाई थी । उसी रात विमल बसंती दो मिटकर एकदूसरे में समा गये ।

दूसरे दिन आधुनिक बनी बसंती, अपना नृत्य दिखाने विमल को साथ ले गई । दंभी विमल को वहाँ अच्छा नहीं लगा । घर आकर गाँव जाने की तैयारी करता है । बसंती को भी साथ आने के लिए कहता है । बसंती ने उसे बहुत समझाया कि अब वह संभव नहीं, गाँव वालों के सामने तुम मेरा स्वीकार नहीं कर पाओगे । हमारे रास्ते अलग है । मैं कुछ नहीं चाहती तुम्हारी स्मृति में मेरे घर तक आनेवाली कच्ची सड़क पककी बनने वाली है उसका अच्छा नाम देते जाओ ।

जवाब में विमल ने कहा कि नाम तो विधाता ने रखा है – 'रथ्या'' । यानी वेश्या के घर तक जानेवाली कच्ची सड़क को रथ्या कहते हैं । अंत में विमल बसंती का अपमान करके, दुःख पहुँचाकर अपने दंभ को व्यकत–कर धुल भरी रथ्या को कुचलता हुआ चला जाता है ।

संदर्भ संकेत :

क्रम	पुस्तक नाम, लेखक नाम	पृष्ठ क्रमांक
१	'कालिंदी' उपन्यास के फलैप पर से – शिवानी	-
२	'चौदह फेरे' उपन्यास – शिवानी	६
३	'चौदह फेरे' उपन्यास – शिवानी	७
४	'चौदह फेरे' उपन्यास – शिवानी	७
५	शिवानी के कथा साहित्य में नारी का अस्तित्व – डॉ. रुबी जुत्शी	१
६	'चौदह फेरे' उपन्यास – शिवानी	९
७	'चौदह फेरे' उपन्यास – शिवानी	८
८	'चौदह फेरे' उपन्यास – शिवानी	९
९	शिवानी के कथा साहित्य में नारी का अस्तित्व – डॉ. रुबी जुत्शी	२
१०	'चौदह फेरे' उपन्यास – शिवानी	११-१२
११	शिवानी के कथा साहित्य में नारी का अस्तित्व – डॉ. रुबी जुत्शी	२
१२	'चौदह फेरे' उपन्यास – शिवानी	१२
१३	शिवानी के कथा साहित्य में नारी का अस्तित्व – डॉ. रुबी जुत्शी	२
१४	'कालिंदी' उपन्यास – शिवानी – फलैप पर से	-
१५	'कालिंदी' उपन्यास – शिवानी – फलैप पर से	-
१६	'कालिंदी' उपन्यास – शिवानी – फलैप पर से	-
१७	शिवानी के कथा साहित्य में नारी का अस्तित्व – डॉ. रुबी जुत्शी	३

१८	शिवानी के कथा साहित्य में नारी का अस्तित्व – डॉ. रुबी जुत्शी	३
१६	शिवानी के कथा साहित्य में नारी का अस्तित्व – डॉ. रुबी जुत्शी	३
२०	'कालिंदी' उपन्यास – शिवानी – फलैप पर से	-

१. शिवानी के कथा साहित्य में नारी का अस्तित्व ।
डॉ. रुबी जुत्शी–२००३
प्रकाशक : मोहित पब्लिकेशन्स नई दिल्ली ११०००२

१. मायापुरी उपन्यास – शिवानी – २००६
प्रकाशक : शिवानी साहित्य प्रकाशन प्रा. लि.
राधाकृष्ण प्रकाशन दरियागंज, नई दिल्ली ११०००२

२. चोदह फेरे उपन्यास – शिवानी – १६६२
प्रकाशक : विश्व विद्यालय प्रकाशन चौक, वाराणसी २२०००१

३. भैरवी उपन्यास – शिवानी – १६७० – द्वितीय संस्करण
प्रकाशक : शवदकार, २२०३ गली डकौतान, तुर्कमान गेट दिल्ली–६

४. कृष्णकली – उपन्यास – शिवानी – सत्रहवां संस्करण
प्रकाशक : भारतीय, ज्ञानपीठ १८, इन्स्टीटयुशन वरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली ११०००३

५. श्मशान चंपा – उपन्यास – शिवानी – नवीन संस्करण २००२
प्रकाशक : हिन्दी पोकेट बुकस, प्राईवेट लि. दिलशाद गार्डन शाहदरा, जी.टी. रोड, दिल्ली ६५

६. सुरंगमा : उपन्यास – शिवानी – २००३
प्रकाशक : हिन्दी पोकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, दिलशाद गार्डन शाहदरा, जी.टी. रोड दिल्ली–६५

७. चल खुसरो घर आपने – उपन्यास – प्रथम – १६८२
प्रकाशक : सरस्वती विहार, २१–दयानंद मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली ११०००२

८. कालिंदी – उपन्यास – शिवानी प्रथम संस्करण – २००६
प्रकाशक : राधाकृष्ण प्रकाशान, दरियागंज नई दिल्ली ११०००२

६. दो सखियाँ – लघु उपन्यास – शिवानी – उपप्रेती संकलन
प्रकाशक : हिन्द पोकेट बुक्स प्राइवेट लिमीटेड, जे–४० जोरबाग लेन, नई दिल्ली–०३

१०. स्वयंसिद्धा – लघु उपन्यास – शिवानी – १६८७
प्रकाशक : सरस्वती विहार, जी.टी. रोड शाहदरा, दिल्ली ३२

११. गैंडा – लघु उपन्यास – शिवानी – तृ. सं. १६८६
प्रकाशक : सरस्वती विहार, जी.टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली ।

१२. माणिक – लघु उपन्यास – शिवानी – २००२
प्रकाशक : हिन्द पोकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड जे–४०, जोरबाग लेन, नई दिल्ली–०३

१३. विषकन्या – लघु उपन्यास – शिवानी – १६६०
प्रकाशक : हिन्द पोकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, दिलशाह गार्डन, शाहदरा, जी.टी. रोड दिल्ली ६५

१४. कैंजा – लघु उपन्यास – शिवानी – १६६३
प्रकाशक : हिन्द पोकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, दिलशाद गार्डन, शाहदरा, जी.टी. रोड दिल्ली–६५

१५. रति–विलाप – लघु उपन्यास – शिवानी – १६६४
प्रकाशक : राजपाल एंड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली

१६. किशनुली – लघु उपन्यास – शिवानी – प्र. सं. १६६६
प्रकाशक : सरस्वती विहार दरियागंज नई दिल्ली–१

१७. कृष्णवेणी – लघु उपन्यास – शिवानी – २००३
प्रकाशक : हिन्द पोकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, दिलशाद गार्डन, शाहदरा, जी.टी. रोड, दिल्ली ९५

१८. रथ्या – लघु उपन्यास – शिवानी – १९८९
प्रकाशक : सरस्वती विहार, जी.टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली–३२

चतुर्थ अध्याय
शिवानी के मनोवैज्ञानिक एवं वैयक्तिक विचारधारा से संबंधित उपन्यासों में नारी चेतना

१. 'गैंडा' लघु उपन्यास के नारी पात्र

(१) राज :

(१) ईर्षा–स्पर्धा, विद्रोहीभाव रखनेवाली
(२) स्पष्टभाषिणी
(३) सौंदर्यवान नारी
(४) हाखशियार, दंभी, कामकाजी नारी
(५) पति की उपेक्षा करनेवाली नारी
(६) लग्नेतर संबंध–अैय्याश नारी
(७) असत्यवादिनी
(८) फूड–पोइजिनींग से मृत्यु

(२) सुपर्णा :

(१) शांत, सुखी–आतिथ्यभाववाली गृहिणी
(२) अदर्शी सौत को पहचाननेवाली
(३) व्यवहारकुशल नारी
(४) बुद्धिमान नारी
(५) दुःखी पत्नी
(६) प्रतिशोध लेनेवाली नारी
(७) प्रायश्चित करनेवाली नारी
(८) त्यागी नारी

२. 'माणिक' लघु उपन्यास के नारी पात्र

(१) नलिनी :

(१) जिम्मेदारी उठानेवाली नारी
(२) अच्छी आर्किटेकट
(३) संयमी दीर्घदृष्टिवाली व्यवहारिक नारी
(४) सामाजिक रिवाज - रूढ़ियों में विश्वास
(५) कठोर अनुशासिका
(६) मातृत्व के गुणोंसे युक्त
(७) कुंठाग्रस्त एकाकिनी नारी

(२) दीना बाटलीवाला :

(१) मोहक व्यक्तित्ववाली
(२) सौंदर्यवान
(३) धूर्त, ढोंगी, दिखावेवाली नारी
(४) क्रूर, चोर, ठग, पैशेवर हत्यारिन

(३) रंभा :

(१) तेज तर्रार आजाद खयालोंवाली
(२) सुखी, संतुष्ट गृहस्थी
(३) स्पष्टवक्ता
(४) जागृत नारी
(५) मानसिक अंतर्द्वन्द्व से पीड़ित

३. 'किशनुली' लघु उपन्यास के नारी पात्र

(१) काखी :

(१) आदर्श गृहिणी
(२) स्त्री रक्षा की हिमायती
(३) समाज की रूढ़ियों को तोड़नेवाली
(४) मातृत्वभाव वाली
(५) पति के प्रति अपार श्रद्धा
(६) पति का मान प्राप्त करनेवाली

(२) किशनुली

(१) उन्मादिनी और सुंदर

(२) शास्त्रीजी के प्रति लगाव

४. 'कृष्णवेणी' लघु उपन्यास के नारी पात्र

(१) कृष्णवेणी

(१) श्याम–सुंदरी नारी

(२) दिव्य दृष्टि प्राप्त नारी

(३) लाड़ली बेटी

(४) रूढ़ि परंपरा का विरोध करनेवाली

(५) आदर्श प्रेमिका

(६) स्पष्टवक्ता

(७) जागृत और स्वच्छताप्रिय नारी

(८) परिस्थितियों से लड़नेवाली

(९) वफादार नारी

५. 'विषकन्या' लघु उपन्यास के नारी पात्र

(१) कामिनी :

(१) चंचल शरारती

(२) कुशल ॲरहोस्टेस

(३) उपेक्षा, कुंठा, ईर्षा से पीड़ित

(४) मायाविनी शक्तिवाली

(५) प्रेम में निराशा–उपेक्षा

(६) प्रतिशोध विद्रोह

(७) प्रेमिकारूप

(८) आत्ममंथन करनेवाली

(९) संदेह का शिकार

(१०) आत्मग्लानि

(२) दामिनी

६. 'मायापुरी' उपन्यास के नारी पात्र

(१) शोभा :

(१) शिक्षा, पढ़ाई में होशियार

(२) आशावादी – व्यवहारपटु नारी

(३) सुंदरता

(४) मिलनसार सेवाभावी

(५) हीनता – लघुता की ग्रंथि से पीड़ित

(६) प्रस्ताहिम्मत – प्रेमिका

(७) कर्तव्य वचनपालक आज्ञाकारिणी

(८) सेक्रेटरी के पद पर

(२) सविता

(३) गोदावरी, मंजरी

७. 'कृष्णकली' उपन्यास के नारी पात्र

(१) कृष्णकली :

(१) अवैद्य संतान

(२) उच्च शिक्षा प्राप्त

(३) माता–पिता की तलाश

(४) विद्रोहिणी स्पष्टवक्ता

(५) सुंदरता

(६) मॉडलिंग, रिसेप्शनीस्ट का व्यवसाय

(७) प्रेमिका कली

(८) प्रामाणिक कली

(९) निराशा और जागृति

(१०) मृत्यु

(२) पन्ना

(३) डॉ. रोजी पेट्रिक

८. 'चल खुसरो घर आपने' उपन्यास के नारी पात्र

(१) कुमुद :

(१) छोटे भाई–बहन से परेशान
(२) पारिवारिक जिम्मेदारी उठाना
(३) उच्च शिक्षा प्राप्त कामकाजी नारी
(४) भीरु–डरपोक फिर भी स्पष्टवक्ता
(५) माता का विश्वास और उपेक्षा
(६) त्यागमयी नारी

९. 'स्वयंसिद्धा' लघु उपन्यास के नारी पात्र

(१) माधवी :

(१) रूढ़िवादी परवरिश
(२) शादी
(३) गलतफहमी, वहम, भ्रम की शिकार
(४) पिताजी–मौसी से तिरस्कृत
(५) उच्चशिक्षा प्राप्त, स्वाभिमानी, आत्मनिर्भर
(६) विद्रोही ईर्षालु निराशावादी
(७) पति की मृत्यु, आत्महत्या

१०. 'कैंजा' उपन्यास के नारी पात्र

(१) नंदी :

(१) उच्च कुल में जन्म
(२) उच्च शिक्षा प्राप्त–आत्मनिर्भर
(३) विवाह संबंधी संकीर्णता
(४) सुरेश भट्ट की प्रेमिका के रूप में
(५) नंदी का प्रेम
(६) कुंठा, नैराश्य, विवशतायुक्त सुरेश
(७) सेवाभावी नंदी
(८) मातृत्वभाव वाली नंदी
(९) त्यागमयी नारी

चतुर्थ अध्याय
शिवानी के मनोवैज्ञानिक एवं वैयक्तिक विचारधारा से संबंधित उपन्यासों में नारी चेतना

प्रस्तुत अध्याय में शिवानी के आलोच्य उपन्यासों एवं लघु उपन्यासों का शोधपरक अनुशीलन करते हुए उनमें प्रतिबिंबित नारी चेतना को रेखांकित करना शोधार्थी का अभीष्ट है ।

शिवानी के उपन्यासों का कथ्यपक्ष मनोवैज्ञानिक, वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक विचारधारा से अनुप्राणित है ।

इन सभी में नारी पात्र जिस प्रकार अपनी चेतना, शक्ति कायम रखते हैं यह बताना मेरा अभीष्ट है ।

नारी सहज एवं कोमल तो है ही, विभिन्न परिस्थितियों के सामने वह अपने प्रकृतिदत्त स्वरूप के बलबूते ही जूझती है, संघर्ष करती है ।

आलोच्य उपन्यासों में चित्रित नारी पात्रों में कुंठा, सहानुभूति, जिजीविषा, जिज्ञासा, संदेह, भावुकता, दंभ–विश्वास, विद्रोह, द्विधा, स्पर्धा, अकेलापन आदि भाव मन के साथ जुड़े हैं । इन मानसिक भावों के प्रति नारी चरित्र किस प्रकार व्यवहार करते हैं, इनसे प्रभावित होकर अपना अस्तित्व किस प्रकार बनाये रखते हैं इसका विस्तृत विश्लेषण करना प्रस्तुत अध्याय का प्रतिपाद्य है ।

गैंडा, माणिक, किशनुली, विषकन्या, कृष्णवेणी स्वयंसिद्धा – आदि लघु उपन्यासों एवं मायापुरी, कैंजा, कृष्णकली, चल खुसरो घर आपने, आदि उपन्यासों में कुंठा, सहानुभूति, संदेह, जिजीविषा, भावुकता, विश्वास आदि भावों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया गया है । साथ ही जीवन के कई पहलुओं

जैसे कि व्यक्तिगत विचार, विवाह, दाम्पत्यजीवन, नारी का एकांकी जीवन, व्यक्ति की स्वच्छंदता, यौन स्वच्छंदता, निष्फल (असफल) प्रेम, सुंदरता और दिव्य, गूढ़शक्ति चमत्कार आदि पर प्रकाश डाला है। कृष्णकली, चलखुसरो घर आपने, गैंडा मायापुरी, किशनुली, स्वयंसिद्धा, कृष्णवेणी आदि उपन्यासों में नारी चरित्रों का व्यक्तिवादी दृष्टिकोण ज्यादा उभरकर सामने आया है। इन नारी पात्रों ने समाज का डटकर मुकाबला करके, संघर्ष करके प्रेम, सेक्स, नैतिकता, रूढ़ियों, परंपराओं, रिवाजों में परिवर्तन की कामना करते हुए नई दिशाएँ प्रशस्त की हैं।

"उपन्यास अब समाज की बाह्य घटनाओं को अंकित करने में ही काव्य की इतिश्री न मानकर व्यक्ति के मनोव्यापार, चेतना अंतःप्रेरणा व्यक्ति की समस्या आदि के सूक्ष्म अवलोकन का पथग्रहण करता है – ऐसे उपन्यासकारों में जैनेन्द्र अग्रणी माने जाते हैं। अतः इन्हें अंतर्मन का कलाकार कहना अधिक संगत लगता है।

चरित्र चित्रण में मनोविश्लेषण की ओर हिन्दी में सर्वप्रथम जैनेन्द्र ही अग्रसर हुए हैं।"[१]

इलाचंद्र जोशी, जैनेन्द्र, भगवतीप्रसाद वाजपेयी जैसे उपन्यासकारों ने प्रेमचंद युग में रहकर भी स्वतंत्र पथ निर्माण का श्री गणेश किया। उन्होंने चित्रण की शैली को युग के अनुरूप रूप देने का प्रयास किया।

इलाचंद्र जोशी तथा जैनेन्द्र के कथ्य को स्पष्ट प्रभावशाली बनाने के हेतु, फ्रॉयड, युंग, एडलर, गेस्टाल्ट आदि मनोवैज्ञानिक संप्रदायों तथा सिद्धांतों का आधार ग्रहण किया।

लगभग सन् १९३० के आसपास जैनेन्द्र का हिन्दी उपन्यास साहित्य में आगमन हुआ, उन्होंने लघु उपन्यास की विद्या को नवीन जीवन प्रदान किया। शिल्प की दृष्टि से इस विद्या में तात्त्विक सौष्ठव की उपलब्धि जैनेन्द्र के आगमन पर ही संभव हो सकी।

जैनेन्द्र को हिन्दी के सर्वप्रथम लघु उपन्यासकार कहा जा सकता है । उनके आगमन से युगीन परिस्थितियों के परिवर्तन तथा मनोविज्ञान एवं यथार्थ के प्रभाव के कारण हिन्दी लघु उपन्यास के शिल्प में क्रांतिकारी परिवर्तन आया ।[२]

अंग्रेजी शासन का प्रभाव, मशीनी तकनीकी हमारे जीवन का अंग बन गई । मशीनीकरण के युग में महाकाव्य के स्थान पर उपन्यास और पद्य के बदले गद्य की लोकप्रियता बढ़ने लगी । इसके साथ–साथ उपन्यास का आकार भी घटने लगा । प्रारंभ में उपन्यास अपने युग के संपूर्ण प्रतिबिंब होते थे । उपन्यास के लिए यह आवश्यक भी था ''मानव जीवन की समग्रता एवं यथार्थ परिवेश ही उपन्यासों में चित्रित होते हैं और एक विराट कैनवास में युगीन एवं समकालीन जीवन चिंतन के विविध पक्ष उसमें कलात्मक अभिव्यक्ति पाते हैं ।''[३]

इस कारण उपन्यास का आकार बड़ा होता था । परंतु आज का जीवन सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक क्षेत्रों में टूटकर बिखरता जा रहा है । अतः अराजकता का यह संपूर्ण परिवेश अपनी समग्रता के साथ एक उपन्यास में समेटा नहीं जा सकता । डॉ. इन्द्रनाथ मदान के मतानुसार –

''आधुनिक जीवन में जो अकुलाहट छटपटाहट, कसमसाहट है, इसे आंशिक अभिव्यक्ति मिल रही है । और आंशिक इसीलिये कि इसकी समग्रता को आज के उपन्यास में अभी तक समेटा नहीं गया ।''[४]

कहा जा सकता है कि साहित्यकार का युगीन दृष्टिकोण समाज सापेक्ष न होकर व्यक्ति सापेक्ष बनता गया । कई सामाजिक विकृतियों का निदान–व्यक्ति मानस में मिल सकता है । पहले व्यक्ति का जीवन संपूर्ण वर्ग का इतिहास प्रस्तुत करने में सक्षम था, किन्तु आज व्यक्ति के जीवन में कई समस्याएँ, पहलू हैं, उसके व्यक्तित्व के भी कई पहलू है, खंडित व्यक्तित्व है – परिणाम स्वरूप उपन्यास में भी घटना, रचना, शिल्प, विषय, बोध नीति–उद्देश्य को लेकर परिवर्तन आयेगा ।

आज का पाठक अधिक परिपक्व हो गया है । किसी स्थिति अथवा घटना को समझने हेतु उसके लिये संकेत मात्र ही पर्याप्त होता है । उपन्यास में वर्णनात्मकता घटने लगी है । मनोविश्लेषण वैयक्तिकता, खंड जीवनानुभूति, लेखन रुचि आदि विभिन्न कारणों से उपन्यास के आकार, और शिल्प में विशेष परिवर्तन हो गया है ।

''उपन्यास तथा लघु उपन्यास में सबसे पहला तथा महान अंतर संपूर्ण तथा खंड जीवन के प्रतिबिंब का है ।''[५]

लघु उपन्यास में उपन्यास की अपेक्षा वैयक्तिकता अधिक होती है । ''लघु उपन्यास रचयिता के जीवन में घटित होने वाली किन्हीं विशिष्ट घटनाओं का संवेदनशील और अनुभूतिबद्ध लेखा–जोखा होता है । इस दृष्टि से बृहद उपन्यास उससे भिन्न हो जाता है क्योंकि, उसमें वैयक्तिकता का समावेश और उसकी प्रधानता भले ही हो परंतु आनुपातिक दृष्टि से वह उस मात्रा में नहीं रहती जितनी लघु उपन्यासों में ।''[६]

आचार्य विनय मोहन शर्मा लघु उपन्यास की परिभाषा देते हुए लिखते हैं – ''कुछ उपन्यास ऐसे होते हैं जो जीवन की व्यापकता का बंधन स्वीकार नहीं करते । वे जीवन के एक अंग का ही तनिक विस्तार पाकर उपन्यास बन जाते हैं । इन्हें अंग्रेजी में 'नावलेट' और हिन्दी में ''लघु उपन्यास'' कहते है । इनमें पात्रों की सख्या बहुत कम होती है, उनका संकेतात्मक चरित्रांकन होता है, वातावरण के घटाटोप से कथा बोझिल नहीं हो पाती और उनकी घटना बहुत छोटी और मामूली भी हो सकती है ।''[७]

जैनेन्द्र कुमार के सभी उपन्यासों का कथानक बहुत ही संक्षिप्त है । कहना चाहें तो कह लें कथानक है ही नहीं उन्होंने कुछ घटनाएँ ऐसी चुन ली हैं, जिनके बीच अपने पात्रों को बहा देते हैं – और उन घटनाओं के थपेड़े सहते हुए उनके मानसिक घात–प्रतिघात को स्पष्ट करना ही उनका लक्ष्य होता है ।[८]

मनोवैज्ञानिक खोजों से पूर्व उपन्यासों में समाज एवं वर्ग–संघर्ष के चित्रण की प्रधानता थी । मध्य युग में प्राचीन जीवन मूल्यों में आस्था, संगठन में विश्वास और मनोवृत्तियों की एकता के कारण पारिवारिक जीवन समृद्ध था, वैज्ञानिक विकास एवं औद्योगिक क्रांति की बौद्धिकता और विभिन्न अन्वेषणों के प्रभाव से व्यक्ति पुरातन जीवन मूल्यों एवं नैतिकता के प्रति विरक्त होकर स्वातंत्र्य की आवश्यकता अनुभव कर रहा है ।

मनुष्य की आस्था अपने परिवेश, समाज वर्ग तथा परिवार से हटकर अपने में ही केन्द्रित होती गई । उसकी बहिर्मुखता घटने लगी, और वह अंतर्मुखी होता गया । उसके जीवन में व्याप्त बाह्य संघर्ष का स्थान मानसिक संघर्ष ने ले लिया ।[६]

हिन्दी में मनोवैज्ञानिक उपन्यासों का जन्म जैनेन्द्र के आगमन से हुआ तथा इलाचन्द्र जोशी एवं अज्ञेयजी ने इसे उच्चता के शिखर तक पहुँचाया ।

मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में समाज की समस्याओं से अलग व्यक्ति की मूल चेतना को अभिव्यक्त किया जाता है । मनोवैज्ञानिक व्यक्ति को समाज के आधिपत्य से छुटकारा दिलाना चाहता है, इसमें मनुष्य का मन केन्द्र में होता है, उपन्यासकार व्यक्ति के आंतरिक जीवन को उजागर कर उसमें निहित शक्ति को पहचानने का प्रयास करता है ।

महिला उपन्यासकारों ने व्यक्ति की भावनाओं, कुंठा, विद्रोह, तनाव, संदेह, विश्वास, प्रेम आदि का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया है । नारी स्वातंत्र्य की चेतना से यौन मान्यताओं के प्रति विद्रोह व्यक्त किया जाने लगा है । नारी पुरुष का पारस्परिक आकर्षण और उनकी परस्पर व्यवस्था मानवजीवन का मूलाधार है । इन्हें विधिवत बनाए रखने के लिये ही समाज में विवाह संस्था को विकसित किया गया था, किन्तु प्रेम–जैसे मानसिक भावों के संबंधों में नारी का दृष्टिकोण स्वतंत्र एवं स्वच्छंद भी हो गया है । शिवानी के उपन्यासों में हमें यह विचारधारा देखने को मिलती है ।

आलोच्य उपन्यासों के नारी पात्र विभिन्न मानसिक भावों के प्रति अपना बिलकुल अलग दृष्टिकोण रखते हैं ।

१. 'गैंडा' लघु उपन्यास के नारी पात्र :

इस लघु उपन्यास में मानसिक (मनोवैज्ञानिक) समस्या है, स्पर्धा का भाव । प्रत्येक इन्सान सदैव विजयी रहना चाहता है । सबकुछ पाना चाहता है । हमने आजतक युद्ध की, कॉम्पीटीशन की, व्यवसाय की, उन्नति की बातें सुनी हैं । जिनमें अक्सर पुरुष विजयी रहना चाहता है, या विजयी होता है । जीवन का कोई भी क्षेत्र हो – धर्म राजनीति, अर्थव्यवस्था, समाज या परिवार उसमें पुरुष अग्रता पर रहना चाहता है । यह भाव स्पर्धा का भाव है ।

उक्त लघु उपन्यास में दो अंतरंग सहेलियों की कथा है, जो जीवन के हर क्षेत्र में पढ़ाई से लेकर विवाह तक प्रतिस्पर्धी रहीं, स्त्रियों की मानसिकता भी विजयी होने की होती है । अपने स्वभाव, चेतना, शक्ति से चाहे छल कपट से, या मित भाषी बनकर भी वह विजयी होना चाहती है । सदैव आगे रहनेवाली राज–महेरा विवाह के क्षेत्र में सुपर्णा के सामने हार जाती है । बाद में राज में यह स्पर्धा का भाव ईर्षा–विद्रोह बनकर सुपर्णा का जीवन बरबाद करता है, और सुपर्णा भी तीव्र प्रतिशोध की ज्वाला में जलकर नागिन–सा तीक्ष्ण डंक देकर बदला लेती है ।

(१) राज :

(१) ईर्षा–स्पर्धा, विद्रोहीभाव रखनेवाली राज

सुपर्णा का सुंदर पति देखकर राज का मन विद्रोह कर उठा । किसी भी प्रकार रोहित को हासिल करना, राज ने मन से निर्णय कर लिया था । सदैव प्रथम रहनेवाली राज को सुपर्णा कैसे हरा सकती है ? । राज महेरा चालाकी, होशियारी से मितभाषी बनकर, वह सुपर्णा के सास–ससुर की सेवा

करती है । बच्चों को चोकलेट, मिठाइयाँ देकर, रोहित को मनचाहे व्यंजन खिलाकर अपना बना लेती है ।

राज रोहित को फसाने अपनी घरेलू, व्यावहारिक, सेवाभाव की चेतना का उपयोग करती है ।

"चतुरा, व्यवहारपटु राज कभी खाली हाथ नहीं आती थी । रोहित की प्रत्येक दुर्बलता को वह जैसे डायरी में नोट करके घर ले जाती, उसके लिए डिब्बे में रोस्ट मुर्ग, प्रौन्ज, बच्चों के लिए दामी उपहार, मिठाइयाँ, माता–पिता के लिए बंगाली व्यंजन, बंगाली मछलियाँ, टेबल पर सजा जाती, बुजुर्ग माता–पिता का भी मानना था कि "तुम्हारी सखी कैसी लक्ष्मी है बहू, जैसा रूप वैसे ही गुण ।""[१०]

(२) स्पष्टभाषिणी

शिवानीजी ने राज को आधुनिक नारी बताया है । स्पष्ट भाषण भी राज के व्यक्तित्व का सबसे बड़ा आकर्षण था । पति की बदसूरती को लेकर अपना आक्रोश इस प्रकार निकालती है, "दोनों चुडेलें बाप पर पड़ी हैं, बेटा भी होता तो क्या पता बाप पर ही पड़ता, एक और उन्हें गेंडे को पृथ्वी पर लाकर करती भी क्या ?""[११]

सौंदर्य प्रतियोगिता में प्रथम आनेवाली राज अपने पति, पुत्रियों की बदसूरती से नाराज है । नफरत उदासी का भाव रखती है । इसलिए अपनी दोनों पुत्रियों को नाना–नानी के पास केनैडा में छोड़ देती है । आधुनिका राज का यह दुर्बल मातृपक्ष है ।

(३) सौंदर्यवान नारी

स्कूल से लेकर कॉलेज की सौंदर्य प्रतियोगिता में राज सदैव विजयी रही है । शादी के बाद दो बेटियों की माँ बनने के बाद भी राज सुंदर ही रही

है । अपनी सुंदरता के आधार स्तंभ पर ही रोहित को अपने जाल में फँसाती है ।

"राज के शरीर से आती मन मोहक सुंगध, साड़ी के अमरीकी ज्योंजट, अँगुली में चमकती विदेशी हीरों की प्लाटिनम अंगूठी, आँखों के नकली पश्म, हाथ में झूल रहा धूप का चश्मा प्रत्येक प्रसाधन में आधुनिक आभिजात्य की सुस्पष्ट छाप थी ।"[१२]

(४) होशियार, दंभी कामकाजी नारी

गैंडा उपन्यास अस्सी के दशक में लिखा गया है । अस्सी के दशक में स्त्रियाँ घर से बाहर निकल कर ऊँचे पदों पर नौकरियाँ करने लगी थीं । गैंडा की राज बिलकुल आधुनिका नारी है । राज घर में रहना नहीं चाहती, समय व्यतीत करने के लिए ही होटल में रिसेप्शनीस्ट की नौकरी करती है ।

"यह नौकरी मैंने वक्त काटने के लिए ले ली है 'सू' । वैसे वेद की फर्म की नौकरी में हमें सब सुख हैं । फ्री फर्निश्ड बंगला, शोफर ड्रिंवन कार, पर मेरा तो दिन काटे नहीं कटता था, इसीसे वक्त काटने के लिए यह नौकरी ले–ली यहाँ फाइव स्टार होटल है, उसी में रिसेप्टनिस्ट हूँ ।"[१३]

"होटल वाले ही मुझे सर आँखों पर रख लेंगे । वहाँ मेरी स्थिति अब इतनी मजबूत है, 'सू' कि अपना मूहमाँगा दाम माँग सकती हूँ । अंग्रेजी, हिन्दी, पंजाबी, बंगला, फ्रेंच, सुहाली, भाषा जानने वाली मुझ जैसी लिंगिवस्ट रिसेप्शनिस्ट कहाँ जुटेगी उन्हें ? राज की दम्भी मुस्कान से पूरा चेहरा दमक उठा ।"[१४]

प्रमिलाकपूर ने अपने अध्ययन में बताया है कि "आर्थिक लाभ की वजह से स्त्रियाँ नौकरी नहीं करतीं, बल्कि इसके पीछे अन्य दूसरे सामाजिक, मनोवैज्ञानिक कारण भी हैं, जैसे अपनी प्रतिभा का सदुपयोग करना, अपने लिये उच्चदर्जा प्राप्त करना, आर्थिक रूप से स्वावलंबी होना, लोगों से मिलने–जुलने

की स्वतंत्रता प्राप्त करना, घर की चार दीवारी के ऊबने वाले वातावरण से राहत पाना, समाज के लाभार्थ काम करना, अपने विशेष व्यवसाय के प्रति मोह, अपना मनचाहा, पेशा अखित्यार करने की भावना की पूर्ति आदि ।''[१५]

(५) पति की उपेक्षा करनेवाली नारी

राज को अपने पति के प्रेम की कोई कीमत नहीं है वह उसे निर्वीय, दब्बू, गैंडा समझती है ।

''बदसूरत पति की पत्नी होने में जो सुख है वह तू कभी समझ ही नहीं सकती, कोई भी फरमाइश मुँह से निकलते ही पूरी !! हाथ की हथेली में पति ऐसे उठाकर चलता है, जैसे काँच की गुड़ियाँ हूँ ।''[१६]

पति वेद की नौकरी का तबादला अफ्रीका हो गया, और वेद की तबीयत भी ठीक नहीं तो भी इस प्रकार लापरवाह रहती है ।

''हमने वेद से कह दिया है, हम अपनी नौकरी नहीं छोड़ेंगे । अरे चिंता मत कर 'सू' ''मेरे गैंडे का चमड़ा भी निखालस गैंडे का है ।''[१७]

मगर राज के पति वेद का मानना था कि बड़ी मेहनत करनी पड़ती है बेचारी को, एकदम थककर चूर हो जाती है । रात को दो बजे लौटेगी तो मुझे जगा जगाकर आफत कर देगी, 'दूध पिया या नहीं, इन्सुलिन लिया था ? गरम वेस्ट पहनी है या नहीं ?

(६) लग्नेतर संबंध, ऐय्याश नारी

पढ़ी-लिखी, स्वतंत्र, आधुनिक, स्वछंदी नारी का प्रतिनिधित्व राज ने किया है । अपनी इच्छानुसार मनचाहे व्यक्तियों से शारीरिक संबंध रखती है । राज, सुपर्णा के सुंदर पति को देख नहीं सकी । मन से उसे फँसाने की चाल करती है । वेद अकेला ही अफ्रिका चला गया । राज गिरगिट की तरह रंग बदलना जानती है । बच्चों के कमरे में उसके साथ रहने लगी, शांत-शिष्ट, सौम्य बन जाती है । मगर रंगे हाथों पकड़े बिना, सुपर्णा को बंगाली पडोशन

ने बताया कि अपने होटल के कमरे में ही एक रूम रोहित के लिए बुक करवा के रखा था ।

मिलटरी अस्पताल की डॉक्टर पदमा बर्वे के रीपोर्ट ने बताया था कि राज गर्भवती है । ''पिछले पाँच महीनों में न उसका पति अफ्रीका से उससे मिलने आया था, न वह उससे मिलने गई थी । रोहित से उसकी प्रगाढ़ मैत्री का रहस्य खुल गया था ।''[१८] फोन करके बताती है कि आज घर नहीं आऊँगी, तीन चार दिन के लिए बाहर जा रही हूँ । अपने अनचाहे गर्भ से मुक्ति पाकर घर आई थी ।

(७) असत्यवादिनी

रोहित से संबंध रखने के बाद राज असत्य भी बोलने लगी थी, ताकि सुपर्णा संदेह न करे । मगर अंत में सही बात सुपर्णा के सामने आ ही गई थी । एक दिन नवरत्न जड़े रिवर्सिबल मीना का जयपुरी सेट पहनकर राज ने सुपर्णा को दिखाया । कहा कि चौक के जोहरी की दुकान से लिया है । सुपर्णा ने मखमली केस से पता पाकर दुकान का पता लगाया तो वह रोहिताश्व दत्ता ने खरीदा था । इस प्रकार झूठ बोलकर सुपर्णा का संदेह मजबूत करती है ।

(८) फूड-पोइजिनींग से मृत्यु

सुपर्णा का गाड़ा हुआ तावीज राज लाँध जाती है । और होटल से फोन आया था कि फूड पोइनिंग से मृत्यु हुई है ।

समाज में राज-जैसी स्वछंदी स्त्रियों ने अगर अपनी मर्यादा तोड़ दी तो परिणाम बुरा आता है ।

(२) सुपर्णा :

सुपर्णा राज की सखी है । दोनों एक दूसरे की स्पर्धक रही थीं । मगर शादी के बाद वह अच्छी गृहिणी बनकर सुख पाती है । मगर पति रोहित और राज धोखा देते हैं तो बदला लेने की जागृति भी है उसमें ।

(१) शांत, सुखी–आतिथ्यभाववाली गृहिणी

मेजर जनरल रोहितश्व दत्ता की सुदीर्घ देह की छाया में राज के बौने कदर्य, गंजे पति को देख, सुपर्णा को एक पल को गहरा आत्मिक संतोष हुआ था, जिस प्रतिद्वंदिनी ने उसे शैशव से लेकर कैशोर्य की प्रत्येक प्रति द्वंद्वता में पछाड़ा था, वह आज उसके वैवाहिक जीवन में हार गई थी ।''[१९]

मगर सुपर्णा आतिथ्य भावना से राज और उसके पति को घर ले आती है । धीरे–धीरे राज और वेद उनके परिवार के अंग बन गये थे । वेद रोहित के लिए 'जीन' (ड्रींक) का इंतजाम भी करती है । मगर कभी वह अपने एकांत को तरसने लगती थी । क्योंकि राज ने उसके जीवन को अशांत कर दिया था । और इसी चिंता में वह अपने सुदर्शन बेटों के प्रति भी लापरवाह हो गई थी ।

(२) अदर्शी सौत को पहचाननेवाली

मेजर रोहिताश्व दत्ता राज के पति को इस प्रकार मानते है । ''ऐसा मेरुदंड हीन अतिथि क्या पहले कभी आया था ? मेरे यहाँ, सुपर्णा देख लेना, एक दिन तुम्हारी राज के इस गैंडे को पुरुष बनकर जीना सीखा दूँगा ।''[२०]

मगर वेद को पुरुष बनाने में मेजर रोहिताश्व दत्ता, स्वयं पशु बन जाते है । आधुनिक सुंदर स्त्री कठोर पुरुष को भी अपने जाल में फँसा लेती है । रोहित उसका उदाहरण है ।

सुपर्णा की सास राज को लक्ष्मी जैसी कहकर तारीफ करती है । मगर सुपर्णा ने इस लक्ष्मी के असली रूप को देख लिया था, ''सुपर्णा ने देख लिया था कि पति के नथुने केवल सुव्यंजनों की सुगंध पाकर ही ऐसे नहीं फडक रहे

हैं, उन्हें नारी देह गंध ने भी व्याकुल कर दिया है । संसार की मूर्खनारी भी अपनी अदर्शी सौत की देह गंध को नर भक्षिणी शेरनी की ही भाँति बड़ी दूर से सूंघ लेती है ।"[२१]

कहा जाता है कि स्त्रियों में पुरुषों की वृत्तियों को जानने की अतिन्द्रिय शक्ति जागृत होती है । सुपर्णा को आनेवाली विपत्ति का ज्ञान हो गया था यही उसके गृहिणी रूप की जागृति, चेतना, अनुभव है ।

(३) व्यवहारकुशल नारी

राज के पति वेद का तबादला हो गया, और राज साथ जाना नहीं चाहती, राज–रोहित का लगाव सुपर्णा जान गई है । इसलिए वह वेद को समझाती है कि राज को भी साथ ले जाओ और नारी की चितवृत्ति के बारे में बताती है ।

"वेद नारी कभी कायर का प्रेम स्वीकार नहीं करती । उसके जीवन में पति के लाड दुलार का जितना महत्त्व है, उसके पैर की ठोकर का भी उतना ही महत्त्व है । वेद केवल मीठा ही मीठा खाने में किसे आनंद आ सकता है ?"[२२]

(४) बुद्धिमान नारी

सुपर्णा कालेज का शिक्षण प्राप्त की हुई, सुखी संपन्न नारी है । अपने व्यक्तित्व की गरिमा, सौम्यता, गृहिणीपन का अनुभव दाम्पत्य जीवन के अनुभव के आधार पर अपने जीवन में आनेवाले तूफान का पता लगा देती है ।

"डॉक्टर बर्वे के रीपोर्ट ने राज को गर्भवती बताया तब से वह राज की हाल–चाल गतिविधियों के पीछे जागृत रही है । राज ने जब फोन करके बताया कि दिन चार दिन बाहर जा रही है । वापस आने पर सुपर्णा को लगा कि उसकी मतली, कै करना, चेहरे का पीलापन, अलस अंगडाईयाँ, न जाने किस शून्य में विलीन हो गई थी । पीठ से लगा पेट, उत्फुल चेहरा,

स्निग्ध दृष्टि कहीं भी संभवित मातृत्व का कोई चिन्ह नहीं था । जब वह चार पाँच दिन के लिए बाहर गई थी, तब ही अपने बोझिल शरीर को भार मुक्त कर आई थी ।''[२३]

''इतनी बड़ी प्रवंचना ! निर्लज्जा, बेहया, बेशर्म । जिसकी थाली में खाया उसी में छेद ! कौन नहीं जानता था कि पिछले पाँच महीनों में न उसका पति उसे मिलने आया था, न वह गई थी ।''[२४]

रोहित से राज की मैत्री है – इसका रहस्य दूसरे प्रमाण से मिल गया । राज ने नवरत्न जड़े रीवर्सिबल मीना का जयपुरी सेट पहनकर सुपर्णा को दिखाया था । कहा था चौक में से किसी जौहरी की दुकान से लिया है ।

सुपर्णा शिकारी कुत्ते जैसी उसके पीछे लगी रहती, राज के कमरे में से सेट का मखमली पता मिला वह दुकान अमीना बाद में थी, जौहरी ने बताया कि वह राज ने नहीं रोहिताश्व दत्ता ने खरीदा है ।

सुपर्णा की बँगाली सखी राज–रोहित को होटल के कमरे में से उसे रंगे हाथ पकड़ लेने की सीख देती थी । मगर सुपर्णा को घर बैठे ही पति के दिये हुए धोखे के दो–दो प्रमाण मिल जाते हैं ।

''ओफ ! इतना बड़ा विश्वास घात और इस निर्लज्ज सौत की ऐसी स्पर्धा !!! उसी के पति के उपहार के माध्यम से क्या वह उसे ही अंगूठा दिखाने आई थी ।''[२५]

(५) दुःखी पत्नी

सुपर्णा को अपने आप पर ही गुस्सा आता है, उसने ही राज–वेद को अतिथि बनने का निमंत्रण दिया था । अब क्या लाभ ? दुःखी सुपर्णा प्रतिपल अपने सौभाग्य को भस्मीभूत होते देख रही थी । ''छप्पन व्यंजनों का थाल सजाए वह जिसकी प्रतीक्षा में स्वयं भूखी बैठी रहती थी, वह किस किस की जूठी पत्तलों की जूठन खाकर ऐसी परम परितृप्ति में डूबा सो रहा था ।''[२६]

(६) प्रतिशोध लेनेवाली नारी

भारतीय नारी सबकुछ बाँट सकती है । मगर अपने पति का बँटवारा नहीं होने देती पति दूसरी स्त्री के पास जाता है तो वह मारने – मरने तैयार हो जाती है । दुःखी मन वाली सुपर्णा का दया, करुणा संयम का बाँध टूट गया । प्रतिशोध की तीव्र ज्वाला लपलपा उठी । मौलवी बाबा से अभिमंत्रित तावीज ले आई । दरवाजे के बाहर ही गाड़ दिया । राज का होटल से आने का समय था । राज ने उस लक्ष्मण रेखा को लांघ दिया । दोपहर के बाद होटल से फोन आया, डॉक्टरों ने उसे फूड पौइजनिंग की वजह से मृत्यु घोषित की ।

(७) प्रायश्चित करनेवाली नारी

सुपर्णा ने अभिमंत्रित तावीज से अपने दुःख का बदला ले लिया । मगर रोहित को सदैव संदेह रहा । ‘‘सुपर्णा तुमने कहीं इसे कुछ खिला तो नहीं दिया था ।’’[२७] वह बार–बार अपने पति से कहती है कि मैं निर्दोष हूँ । वैसे सुपर्णा राज की मृत्यु तो नहीं चाहती थी । पति के संदेह को मिटाने । सुपर्णा ने तय किया कि ‘‘पति के पाप का प्रायश्चित अब मुझे ही करना होगा, तब ही शायद मेरे अंदर में उठ रहा यह घृणा का चिंता दाह शांत होगा ।’’[२८]

भारतीय नारी प्रतिशोध लेने पर खुश नहीं होती, मगर जो प्रतिशोध उसे अनिवार्य रूप से लेना पड़ा है । उसका प्रायश्चित भी करना जानती है । किसी को सताना वह नहीं जानती, त्याग करना ही जानती है ।

(८) त्यागी नारी

होंगकोंग से तीन दिन बाद राज का पति–वेद आया । उसने ही कहा था ‘‘राज की सब चीजें गरीबों में बाँट देना ।’’[२९] सुपर्णा ने सब कुछ दे दिया था । ‘‘मगर वो सेट नहीं दिया था । रोहित के उस उपहार की अधिकारी अब वह थी ।’’[३०] वहीं नवरत्न हीरों का सेट लेकर वह मौलवी बाबा के घर

आई उसे यह कहकर देती है – कि "जब आप की बेटी की शादी हो मेरी और से उसे पहना देना ।"[३१]

इस प्रकार सुपर्णा ने अपने पति का उपहार पाकर भी अपनी नुमाइश के लिए नहीं रखा । मगर गरीब को ही दे दिया ।

श्री रामदरश मिश्र ने ठीक लिखा है "महिला लेखिकाओं द्वारा इधर जो उपन्यास लिखे गए हैं । उनका विशेष महत्त्व है । उन्होंने अपने अनुभवों के आधार पर आज की नारी की सामाजिक नियति और मानसिकता को बड़ी गहराई से उभारा है । न तो ये लेखिकाएँ पुरुष लेखकों की तरह नारी को महिमान्वित करती और न उन्हें नकली रूप में पीड़ित । अपनी समूची परिणतियों के साथ एक विशेष दायरे की, आज जो नारी है उसकी पहचान ये उभारती हैं ।"[३२]

समाज में आज भी राज रोहित जैसे संबंध होते हैं । घटनाएँ होती रही हैं । सुपर्णा जैसी स्त्रियाँ अपनी गंभीरता शक्ति अनुभव से व्यवहार करती हैं । दुःखी होने के बाद भी अपने घर में रहती हैं ।

२. 'माणिक' लघु उपन्यास के नारी पात्र :

(१) नलिनी :

यह मनोवैज्ञानिक लघु उपन्यास है । नलिनी, रंभा, दिना बाटलीवाला तीन पात्र हैं । तीनों के स्वभाव, प्रकृति, चेतना जागृति अलग–अलग है । हमारे समाज से जुड़ी हुई कथा है । परिवार या छोटे भाई–बहनों की जिम्मेदारी उठाने के लिए बड़ी बहन अपनी जिंदगी की खुशियाँ त्याग दे या दबा दे । मगर छोटी बहन की शादी हो जाती है तो वह अकेलापन नहीं सहन कर पाती और कोई न कोई सहारा ढूँढ लेती है ।

(१) जिम्मेदारी उठानेवाली नारी

नलिनी के पिता जब तक जीवित थे । धन कमाने में ही ध्यान दिया । नलिनी की शादी के बारे में सोचा ही नहीं । दोनों बहनें पढ़ रही है – साथ में शादी करेंगे । इस प्रकार लापरवाह रहे । मगर पिताजी के मृत्यु के बाद नलिनी बेटे जैसा कर्तव्य अदा करती है । घर का पूरा कार्यभार यहाँ तक की छोटी बहन रंभा के माता–पिता बन जाती है । स्वयं नौकरी करके रंभा का प्रत्येक शौक पूरा करती है ।

(२) अच्छी आर्किटेकट

नलिनी स्कूल में प्रिन्सीपाल के पद पर है । साथ–साथ एक अच्छी आर्किटेकट भी है । जो आजकल की पढ़ी लिखी आधुनिक नारी का गुण है । जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में वह पूरे प्लानिंग आयोजन के साथ चलती है । ‘‘अपने अवकाश के दिनों के पहले ही उसने आवास ‘वाटिका’ का अद्भुत नकशा कितनी रातें जाग–जागकर बनाया था कि लोग आश्चर्य चकित रह गये । अंधविश्वासों में वह विश्वास नहीं रखती, बिना गृहपूजन के ही नये गृह ‘वाटिका’ में प्रवेश कर लेती है ।’’[३३]

डॉ. जयश्री भट्ट ने ठीक ही कहा है – ‘‘नारी को शिक्षित करने से पूरा परिवार शिक्षित होता है, इसी तरह किसी समाज में नारी की स्थिति को ज्ञात करने के लिए नारी की शिक्षा की स्थिति को देखकर उसे ज्ञात किया जा सकता है । शिक्षा के समान अवसर, नारियों की सम्मान जनक स्थिति दर्शाता है ।’’[३४]

(३) संयमी दीर्घदृष्टिवाली व्यवहारपटु नारी

नलिनी अपनी बहन रंभा के प्रत्येक शौक पूरा करना चाहती है । संगीत की शिक्षा दिलवाना चाहती है । मगर नादान रंभा अपने संगीत मास्टर के साथ भाग जाती है । तो मानो कुछ नहीं हुआ जैसे उसे होस्टेल से वापस ला रही

है उसी प्रकार घर ले आती है । आज भी आम परिवार में मानो ऐसी घटना होती तो हंगामा मच जाता है – खुद परिवार वाले भी बात को गुप्त नहीं रख सकते । मगर यहाँ शिवानीजी के शब्दों में ‘‘किसी को कानों तक खबर नहीं हुई । ‘‘बड़े संयम से काम लेती है, और परिस्थितियों की गंभीरता जानकर एक अच्छे लड़के से शादी करवा देती है ।’’[३५]

(४) सामाजिक रिवाज – रूढ़ियों में विश्वास

नलिनी अपने जीवन की स्थिति को जान गई है । और सबसे बड़ा त्याग कर देती है । नलिनी ने रंभा की जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए अपना निजी जीवन बिलकुल शुष्क सादगीपूर्ण बना दिया था । जैसे – ‘‘कभी किसी ने रंगीन चट्‌ख साड़ी पहने नहीं देखा ।’’[३६]

वह सदैव रंभा की खुशी के लिए सोचती है । इसलिए सब गहने रंभा के नाम कर देती है ।

‘‘एक–एक गहना रंभा को पहनाकर बिदा करेगी, जिससे सोने से लदी, सोने की उस प्रतिमा को उसका दूल्हा जीवनभर पूजता रहे ।’’[३७]

(५) कठोर अनुशासिका

नलिनी कॉलेज में प्रिन्सीपाल है । वह कठोर अनुशासन के पक्ष में है । उसके कठोर अनुशासन के कारण कॉलेज का एक–एक सदस्य सहमा सहमा रहता था । लड़कियाँ छिछोरे कपड़े पहनकर नहीं आ सकती थीं । ऐसा करने पर कठोर सजा देती । ‘‘पदोन्नति के बाद वह जिस जिल्ले में जाती वहाँ एक ही सप्ताह में उसके तबादले के लिए मनौतियाँ मनाई जातीं । शासन करने का गुण उसमें मौजूद हैं ।’’[३८]

(६) मातृत्व के गुणों से युक्त

स्वभाव से उदार नलिनी में मातृत्व भाव कूट–कूट कर भरा है । वह माता–पिता विहीन रंभा की माँ बन जाती है । मगर बाद में ''रंभा के बेटे बिन्नू को भी अपना ही मानती है । बिन्नू के दामी पब्लिक स्कूल का पूरा खर्चा नलिनी ही उठाती थी । यही नहीं उसके स्कूल के लेजर, दर्जनो गर्म पैंट, कंबल, उसके स्कूल के विदेशी पादरियों के लिए मौसमी फल के पेक भेजने का पूरा कर्तव्य भार जिस औदार्य से नलिनी ने आजतक निभाया था वह शायद कोई माँ भी नहीं निभा सकती थी ।''[३९]

रंभा जब भी घर आती नलिनी टेबल पर मनचाहे व्यंजन खाने के लिए रख देती थी ।

(७) कुंठाग्रस्त एकाकिनी नारी

रंभा के चले जाने के बाद जिंदगी के अकेलेपन से नलिनी उब गई थी । पढ़ी लिखी नलिनी अपनी दबाई गई प्रकृति दत्त इच्छाओं के सामने हार जाती है । भावुक मानसिकता वाली एकाकिनी नलिनी उदार बनकर अपरिचित दीना को घर में आने देती है ।

''अपरिचित पारसी युवती को बिना उसका अतीत टटोले, कैसे अपने साथ रहने का निमंत्रण दे दिया, इसकी कैफियत यदि वह स्वयं भी अपने हृदय से माँगती तो नहीं पा सकती थी ।''[४०]

पहले दीना को दीवानखाने में प्रवेश दिया, थोड़े ही दिनों में अपने शयन खंड तक ले गई । कभी उसका सिर गोदी में रखती, कभी गले में बाँहे डाल देती ।

अंत में वही दीना उसकी हत्या करके चली जाती है ।

(२) दीना बाटलीवाला :

दीना का पात्र इस उपन्यास में एक ठग पात्र है । इसके अनुसार उसने भूमिका अदा की । मानो शिवानीजी ने आधुनिक समय में आने वाले धारावाहिकों की खलनायिकाओं का चित्रण किया है । वह सुंदर तो होती है, मगर भूमिका नकारात्मक, धूर्त, ढोंगी, ठग और चोर की निभाती है । संस्कार, स्वभाव – प्रकृति का सुंदरता के साथ कोई संबंध नहीं है । व्यक्ति के मन में चल रहे भावों को, दुष्ट विचारों को सुंदर शरीर से नहीं जाना जा सकता । सुंदर दीना के मन में बैठे शत्रुचोर को पढ़ी लिखी नलिनी नहीं जान पाई ।

(१) मोहक व्यक्तित्ववाली

“दीना बाटलीवाला मोहक व्यक्तित्व की स्वामिनी है । अपने जाल में नलीनी को फँसा देती है । उसकी लच्छेदार अंग्रेजी, उसकी कला मर्मज्ञता, उसका गहन अध्यन, सबकुछ ने मिलकर उसे लाखों में एक बना दिया था ।”[४१]

(२) सौंदर्यवान

रंभा भी दीना को देखकर लघुता अनुभव करती है “कितनी सुंदर थी कमबख्त, सुंदर चेहरा, वह संगमरमर से तराशी गई देह–सी कोमलता, सौकुमार्य और भी उसके कपड़े पहनने का सर्वथा अनूठा लटका, किसी के भी निरामिष भोजी सात्विकी पति को आमिष भोजी बनाने मं समर्थ था ।”[४२]

(३) धूर्त, ढोंगी, दिखावेवाली नारी

दीना बाटलीवाला ने एक कुशल मनोवैज्ञानिक की भाँति, अपने दिखावे, ढोंग, प्यार, झूठी सहानुभूति से एकांकिनी नलिनी के मन और अकेलेपन को जीत लिया था ।

"दीना ने केवल उसके दीवानखाने की सज्जा को ही नहीं बदला था, समय से पूर्व ही बूढ़ी हो रही, स्वामिनी के शरीर पर लगे उदासीनता के, मकड़ी के से जालों को भी एक ही झटके से झाड बुहार कर दूर फैंक दिया था ।"[४३]

और नलिनी को भी विश्वास हो गया था कि "जीवन की म्लान गोधूलि में ही क्या विधाता ने उसे नलिनी के कलातृषित चित की तृषा बुझाने इस अरण्य में भेजा था ?"[४४]

नलिनी को दीना पर इतना भरोसा था कि अपने जीते जी बैंक में रहे रूपये दीना के नाम कर देती है । वैसे भी जीवन के उत्तरार्ध में प्रतिष्ठा, पैसा सबको छोड़कर, अकेलापन मिटाने की, सहानुभूति की सहकार सलामती की भावना ज्यादातर बलवत्तर होती है ।

नलिनी ने रंभा को भी दीना का परिचय अपनी छोटी वहन कहकर दिया । धूर्त दीना को पता चल गया कि अपनी चाल में वह कामयाब होती जा रही है । तो रंभा और नलिनी को जरा भी अकेला नहीं छोड़ती, स्टेशन तक रंभा को छोड़ने वह नलिनी के साथ साथ रही ।

(४) क्रूर, चोर, ठग, पैशेवर हत्यारिन

नलिनी को दीना पर विश्वास था पर दीना के मन में चोर था, वह सदैव मौके की तलाश में रहती है । उदार भोली प्रौढ़ा नलिनी के प्रति उसे जरा भी दया नहीं । वह मौका मिलते ही नलिनी और नौकरानी लक्ष्मी की हत्या कर देती है ।

"डॉक्टर का कहना था कि गला घोंटकर नलिनी की हत्या की गई है । लक्ष्मी को भी आघात से दिल का दौरा पड़ा था । मृत्यु हुई ।"[४५]

दीना बाटलीवाला का कहीं पता नहीं था । "नलिनी के कला कोष का बहुमूल्य झाड़ फानूस, इधर–उधर से बटोरी गई अलभ्य देवमूर्तियाँ भी गायब थीं । पूरा बैंक बैलेन्स अंगूठी का माणिक भी गायब था ।"[४६]

"ढूँढ़ने पर पता लगा कि मद्रास की पुलिस उसे सात सालों से ढूँढ़ रही है । सात साल पहले वह पति का भारी बीमा हथियाकर त्रिपुर में पति की हत्याकर गायब हो गई थी ।"[४७]

(३) रंभा :

(१) तेज तर्रार आजाद खयालोंवाली

रंभा नलिनी की छोटी बहन है । लाड़ प्यार में पली है । अपनी आज़ादी के कारण कौशोर्य में संगीत मास्टर के साथ भाग गई थी ।

(२) सुखी, संतुष्ट गृहस्थी

आजाद स्वछंदी रंभा शादी के बाद अपनी गृहस्थी में सुखी संतुष्ट है । कैसे ? यह तो नलिनी की समझ में भी नहीं आता । नलिनी ने कभी रवीन्द्रनाथ टैगोर की एक कहानी में पढ़ा था, नारी को आम तौर पर तीन वस्तुएँ विशेष रूप से प्रिय होती हैं ।

"कच्ची अमिया, तीखी तैज मिर्ज और कठोर पति शायद यही कारण था कि रंभा अपनी गृहस्थी में इतनी सुखी संतुष्ट थी ।"[४८] शिवानीजी ने रंभा के माध्यम से उन आधुनिक, आजाद लड़कियों का चित्रण किया है जो युवावस्था में चंचल हिरनी की तरह अपने युवा मित्रों के साथ भागती हैं । मगर शादी के बाद पति की ही होकर स्थिर हो जाती हैं ।

(३) स्पष्टवक्ता

नलिनी ने जब दीना बाटलीवाला के घर में छोटी बहन का स्थान दे दिया था । तब अपनी बड़ी बहन के प्यार का बँटवारा उसे अच्छा नहीं लगता, वह नलिनी को कहती है ।

"तुमने बुढ़ौती में एक नई बहन को गोद लिया है । लगता है सगी बहन से उब गई हो ।"[४६]

(४) जागृत नारी

रंभा बम्बई में पली-बड़ी हुई है । नलिनी से छोटी होने के बाद भी अनजान व्यक्तियों को लेकर जागृत है ।

"जीजी तुम मुझ से बहुत बड़ी हो, उपदेश देना उचित नहीं लगता, पर तुम्हारी अफसरी ने तुम्हें शायद जीवन की वह अभिज्ञता नहीं दी । जो तुम से छोटी होने पर भी बड़े शहरों के प्रवास ने मुझे दी है ।

मैं भी बम्बई में दस साल गुजार चुकी हूँ । जीजी । बम्बई संतों की तीर्थभूमि नहीं है, इतना ही याद रखना ।"[५०]

रंभा के कथनों में बड़े शहरों की वास्तविकता और बड़े शहरों में बसने वाले लोगों की मानसिकता का परिचय मिलता है और अकेली रहनेवाली स्त्रियों के लिए उपदेश है ।

(५) मानसिक अंतर्द्वन्द्व से पीड़ित

जब रंभा नलिनी से मिलने आती है । तब सोचती रही है कि छोटी बहन का स्थान पानेवाली स्त्री कौन-कैसी होगी ?

"कम से कम उस दस्यु कन्या को तो अपनी आँखों से देख लेगी, जिसने दो सगी बहनों को अपनी मैत्री की आरी से चीरकर दूर पटक दिया था ।"[५१]

रंभा ने जब देखा दीदी का सिर दीना की गोदी में है, दीदी की बाँहे दीना के गले में है । अपनी दीदी का यह परिवर्तित रूप और दीना के व्यक्त्वि को संदेह की नजरों से देखती है ।